



کشف الکنای
عنه
صحیح البخاری

کتاب
حضرت امام ابو حنیفہ
رحمۃ اللہ علیہ



مجلد اول
مطبعہ دار الفکر
لبنان



کشف الباری

عمافی

صحیح البخاری

کتاب الخمس

تالیف ← صدر وفاق المدارس مولانا سلیم اللہ خان مدظلہ العالی

شیخ الحدیث جامعہ فاروقیہ کراچی

ترتیب و تحقیق ← مولانا حبیب اللہ زکریا صاحب استاذ جامعہ فاروقیہ کراچی

ترجمہ ← مولانا شامہ فیصل فاضل وفاق المدارس، امداد العلوم

خصوصیات

① دا حدیثو تخریج

② د تعلیقات بخاری تخریج کول

③ د اسماء الرجال مختصر تعارف

④ د گرانو لغاتو لغوی صرفی او نحوی حل

⑤ ماقبل باب سره د ربط په باره کښې پوره تحقیق

⑥ د شرحې د هرې خبرې په حاشیہ کښې حواله ورکول

⑦ د ترجمه الباب مقصد په بیانولو کښې پوره تحقیق

⑧ د مختلفو مذاہبو تحقیقی بیان او بیا د مذهب حنفی ترجیح

⑨ د حدیث اطراف بیانول چه په بخاری کښې دا حدیث په کوم کوم ځای کښې دي

جلد ۸

فیصل کتب خانہ محلہ جنگی پېښور

خوړونکی

موبائل:- ۰۳۲۱۹۰۹۱۸۳۵

فهرست مضامین

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|-------|------|
|-------|-------|------|

٢١) ابواب الخمس

| | | |
|----|------------------------|----|
| ٥٥ | تیرشوی باب سره مناسبت: | ٥٥ |
| ٥٥ | د نسخو اختلاف: | ٥٥ |

① باب: فرض الخمس

| | | |
|----|--|----|
| ٥٥ | د خمس لغوی او اصطلاحی تعریف: | ٥٥ |
| ٥٥ | د ترجمه الباب مقصد: | ٥٥ |
| ٥٥ | د جاهلیت دستور او د خمس ابتداء: | ٥٥ |
| ٥٢ | د خمس فرضیت کله او شو؟: | ٥٢ |
| ٥٧ | د علامه ابن بطال رائی: | ٥٧ |
| ٥٧ | د حافظ ابن حجر رائی او ابن بطال ته جواب: | ٥٧ |
| ٥٨ | د باب احادیث مبارک: | ٥٨ |
| ٥٨ | رجال الحديث: | ٥٨ |
| ٥٨ | ① عبدان: | ٥٨ |
| ٥٨ | ② عبد الله: | ٥٨ |
| ٥٨ | ③ یونس: | ٥٨ |
| ٥٩ | ④ الزهري: | ٥٩ |
| ٥٩ | ⑤ علی بن الحسین: | ٥٩ |
| ٥٩ | ⑥ حسین بن علی: | ٥٩ |
| ٥٩ | ⑦ علی: | ٥٩ |
| ٥٩ | د حدیث ترجمه: | ٥٩ |
| ٦٠ | ترجمه الباب سره د حدیث مبارک مطابقت: | ٦٠ |
| ٦١ | رجال الحديث: | ٦١ |
| ٦١ | ① عبد العزيز بن عبد الله: | ٦١ |
| ٦١ | ② ابراهيم بن سعد: | ٦١ |
| ٦١ | ③ صالح: | ٦١ |
| ٦١ | ④ ابن شهاب: | ٦١ |
| ٦١ | ⑤ عروة: | ٦١ |
| ٦١ | ⑥ عائشه: | ٦١ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| ۲۱ | ترجمة الباب سره د حديث مبارک مطابقت: | ۲۱ |
| ۲۲ | د يو تفسيرى قول اضافه: | ۲۲ |
| ۲۴ | رجال الحديث: | ۲۴ |
| ۲۴ | ① اسحاق بن محمد الفروى: | ۲۴ |
| ۲۴ | خبرداري (يو اهم وضاحت): | ۲۴ |
| ۲۴ | ② مالک بن انس: | ۲۴ |
| ۲۵ | ③ ابن شهاب: | ۲۵ |
| ۲۵ | ④ مالک بن اوس بن الحدثان: | ۲۵ |
| ۲۵ | قوله: وكان محمد بن جبير ذكر لي ذكر امين حديثه ذلك، فانطلقت معه حتى أدخل على مالك بن | ۲۵ |
| ۲۲ | أوس، فسألته عن ذلك الحديث: | ۲۲ |
| ۲۲ | قوله: بينا أنا جالس في أهلي حين متع النهار: | ۲۲ |
| ۲۲ | قوله: اذ ارسل عمر بن الخطاب يأتيني، فقال: أجب أمير المؤمنين: | ۲۲ |
| ۲۲ | قوله: فانطلقت معه حتى أدخل على عمر، فاذا هو جالس على رمال سرير، ليس بينه وبينه | ۲۲ |
| ۲۲ | فراش، متكئ على وسادة من آدم: | ۲۲ |
| ۲۷ | قوله: فسلمت عليه، ثم جلست، فقال: يا مال: | ۲۷ |
| ۲۷ | قوله: إنه قدم علينا من قومك أهل أبيات: | ۲۷ |
| ۲۸ | قوله: وقد أمرت فيهم برضخ، فأقبضه، فأقسمه بينهم: | ۲۸ |
| ۲۸ | قوله: فقلت: يا أمير المؤمنين، لو أمرت به غيري؟: | ۲۸ |
| ۲۸ | قوله: فقال: هل لك في عثمان وعبد الرحمن بن عوف والزبير وسعد بن وقاص يستأذنون؟ | ۲۸ |
| ۲۹ | قال: نعم. فأذن لهم، فدخلوا، فسلموا وجلسوا: | ۲۹ |
| ۲۹ | قوله: ثم جلس يرفأيسرا، ثم قال: هل لك في علي وعباس؟ قال: نعم. فأذن لهما، فدخلوا، | ۲۹ |
| ۷۰ | فلما، فجلسا: | ۷۰ |
| ۷۰ | قوله: فقال عباس: يا أمير المؤمنين، اقض بيني وبين هذا...: | ۷۰ |
| ۷۱ | آيا حضرت عباس <small>عليه السلام</small> واقعی دا کلمات و نیلی دی؟: | ۷۱ |
| ۷۲ | په روایت کښې اختصار: | ۷۲ |
| ۷۳ | د تیدکم ضبط او معنی: | ۷۳ |
| ۷۳ | قوله: أنشدكم بالله الذي بأذنه تقوم السماء والأرض، هل تعلمون أن رسول الله صلى الله عليه | ۷۳ |
| ۷۳ | وسلم قال: لا نورث، ما تركنا صدقة؟.....: | ۷۳ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| ۷۴ | انبياء وارثان کيدې شي؟ | ۷۴ |
| ۷۵ | د شوافعو او موالکو مذهب: | ۷۵ |
| ۷۵ | د حضرت گنگوهی راتې: | ۷۵ |
| ۷۶ | يو سوال او د هغې جواب: | ۷۶ |
| ۷۶ | د "صدقه" اعراب: | ۷۶ |
| ۷۷ | قوله: فأقبل عمر على علي وعباس، فقال: أنشدكم الله، أتعلمان أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قد قال ذلك؟ قالوا: قد قال ذلك...: | ۷۷ |
| ۷۷ | قوله: قال عمر: فأنى أحدكم عن هذا الأمر: إن الله قد خص رسوله صلى الله عليه وسلم في هذا الشيء لم يعطه أحد غيره، ثم قرأ (وما آفأء الله على رسوله منهم - ألى قوله - قدير): | ۷۷ |
| ۷۸ | د مختلفو الفاظو ضبط او معنی: | ۷۸ |
| ۷۹ | قوله: حتى بقي منها هذا المال، فكان رسول الله صلى الله عليه وسلم ينفق على أهله نفقة سنتهم من هذا المال، ثم يأخذ ما بقي، فيجعله فجعل مال الله: | ۷۹ |
| ۷۹ | يو اشكال او د هغې جواب: | ۷۹ |
| ۸۰ | قوله: فعلم رسول الله صلى الله عليه وسلم بذلك حياته، أنشدكم بالله، هل تعلمون ذلك؟ قالوا: نعم: | ۸۰ |
| ۸۰ | قوله: ثم قال لعلي وعباس: أنشدكم بالله، هل تعلمان ذلك؟: | ۸۰ |
| ۸۲ | قوله: ثم جئتماني تكلماني، وكلمتكم واحدة، وأمركم واحد، جئتنى يا عباس تسألني نصيبك من ابن أخيك، وجاءني هذا - يريد علياً - يريد نصيب امرأته من أبيها: | ۸۲ |
| ۸۲ | د باب حديث او امام عبد الرزاق: | ۸۲ |
| ۸۴ | د ابن شاذان او د ابن المعلم مناظره: | ۸۴ |
| ۸۷ | يو اشكال او د هغې جواب: | ۸۷ |
| ۸۷ | يو سوال او د هغې جواب: | ۸۷ |
| ۸۸ | د انكار څه وجه وه؟: | ۸۸ |
| ۸۹ | قوله: "كان ذلك على رأس الماتين، ثم تغيرت الامور، والله المستعان": | ۸۹ |
| ۸۹ | ترجمة الباب سره د حديث مناسبت: | ۸۹ |
| ۸۹ | يو اهمه فائده: | ۸۹ |
| ۹۰ | د حديث شريف نه مستنبطي فائدي: | ۹۰ |
| ۹۱ | د ترجمة الباب مقصد: | ۹۱ |
| ۹۱ | د ترجمې د تکرار اشکال او د هغې جواب: | ۹۱ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|--|--|------|
| | رجال الحديث | ٩١ |
| ① | ابوالنعمان | ٩١ |
| ② | حماد | ٩٢ |
| ③ | ابو حمزه | ٩٢ |
| ④ | ابن عباس | ٩٢ |
| | ترجمة الباب سره مناسبت | ٩٢ |
| ⑤ باب: نفقة نساء النبي صلى الله عليه وسلم بعد وفاته | | |
| | د ترجمه الباب مقصد | ٩٢ |
| | رجال الحديث | ٩٢ |
| ① | عبد الله بن يوسف | ٩٢ |
| ② | مالك | ٩٢ |
| ③ | ابو الزناد | ٩٢ |
| ④ | الاعرج | ٩٣ |
| ⑤ | ابو هريره | ٩٣ |
| | قوله: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: لا يقتسم ورثتي ديناراً: | ٩٣ |
| | قوله: ما تركت بعد نفقة نسائي، ومؤنة عاملي، فهو صدقة: | ٩٤ |
| | د نفقة نسائي وضاحت: | ٩٤ |
| | د عامل نه خه مراد دي؟: | ٩٤ |
| | په طاعاتو (عباداتو) باندې اجرت اخستل جائز دي: | ٩٥ |
| | مالونه جمع كول جائز دي: | ٩٥ |
| | مال جمع كول د نهري لوړې اختيارولو نه غوره دي: | ٩٦ |
| | ترجمة الباب سره د حديث مناسبت: | ٩٦ |
| | رجال الحديث | ٩٦ |
| ① | عبد الله بن ابي شيبة: | ٩٦ |
| ② | ابو اسامه: | ٩٧ |
| ③ | هشام بن عروه: | ٩٧ |
| ④ | أبيه: | ٩٧ |
| ⑤ | عائشه: | ٩٧ |
| | قوله: قالت: توفي رسول الله صلى الله عليه وسلم وما في بيتي من شيء يأكله ذوكبد، الا شطر شعير | |
| | في رجلي: | ٩٧ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| | یو اشکال او د هغې جواب: | ۹۷ |
| | قوله: فاکلت منه حتی طال علی: | ۹۸ |
| | د اوربشو د ختمیدلو وجه: | ۹۸ |
| | ترجمة الباب سره د حدیث مناسبت: | ۹۸ |
| | رجال الحديث: | ۹۹ |
| | ① مسدد: | ۹۹ |
| | ② یحیی: | ۹۹ |
| | ③ سفیان: | ۹۹ |
| | ④ ابواسحاق: | ۹۹ |
| | ⑤ عمرو بن الحارث: | ۹۹ |
| | د حدیث شریف ترجمه: | ۹۹ |
| | ترجمة الباب سره د حدیث مناسبت: | ۱۰۰ |
| | د حدیث سند سره متعلق یو خبرداري: | ۱۰۰ |
| | ④ باب: ما جاء فی بیوت ازواج النبی صلی الله علیه وسلم | |
| | وما نُسِبَ من البيوت اليهن | |
| | د ترجمه الباب مقصد: | ۱۰۱ |
| | د ازواج مطهراتو قیام د اوسیدلو په حیثیت سره وویا د ملکیت په حیثیت سره؟: | ۱۰۱ |
| | د امام بخاری او د حضرت گنگوهی رائي: | ۱۰۲ |
| | یو اهم خبرداري: | ۱۰۳ |
| | رجال الحديث: | ۱۰۴ |
| | ① حبان بن موسی: | ۱۰۴ |
| | ② محمد: | ۱۰۴ |
| | ③ عبد الله، ④ معمر، ⑤ یونس: | ۱۰۴ |
| | ⑥ الزهري: | ۱۰۴ |
| | ⑦ عبید الله بن عبد الله بن عتبه بن مسعود: | ۱۰۴ |
| | ⑧ عائشه: | ۱۰۴ |
| | قوله: أن عائشة زوج النبی صلی الله علیه وسلم قالت: لما نزل رسول الله...: | ۱۰۴ |
| | رجال الحديث: | ۱۰۵ |
| | ① ابن ابی مریم: | ۱۰۵ |
| | ② نافع: | ۱۰۵ |

| شُمیره | مضمون | صفحه |
|--------|--|------|
| ٣ | ابن ابی ملیکہ | ١٠٥ |
| ٣ | عائشہ | ١٠٥ |
| | قوله: قالت عائشة رضي الله عنها: توفي النبي صلى الله عليه وسلم في بيتي..... | ١٠٥ |
| | رجال الحديث | ١٠٦ |
| ١ | سعيد بن عفیر | ١٠٦ |
| ٢ | الليث | ١٠٦ |
| ٣ | عبد الرحمن بن خالد | ١٠٦ |
| ٣ | ابن شهاب | ١٠٦ |
| ٥ | علي بن حسين | ١٠٦ |
| ٦ | صفیه | ١٠٦ |
| | د حديث شريف ترجمه | ١٠٧ |
| | مختصر تشریح | ١٠٧ |
| | رجال الحديث | ١٠٨ |
| ١ | ابراهيم بن المنذر | ١٠٨ |
| ٢ | انس بن عیاض | ١٠٨ |
| ٣ | عبید الله | ١٠٨ |
| ٣ | محمد بن يحيى بن حبان | ١٠٨ |
| ٥ | واسع بن حبان | ١٠٨ |
| ٦ | عبد الله بن عمر | ١٠٨ |
| | قوله: عن عبد الله بن عمر رضي الله عنهما قال: ارتقيت فوق بيت..... | ١٠٨ |
| | رجال الحديث | ١٠٩ |
| ١ | ابراهيم بن المنذر، انس بن عیاض | ١٠٩ |
| ٣ | هشام | ١٠٩ |
| ٣ | ابیہ | ١٠٩ |
| ٥ | عائشہ | ١٠٩ |
| | قوله: أن عائشة رضي الله عنها قالت: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم..... | ١٠٩ |
| | رجال الحديث | ١٠٩ |
| ١ | موسی بن إسماعیل | ١٠٩ |
| ٢ | جویریہ | ١٠٩ |
| ٣ | نافع | ١٠٩ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|-------|---|--|
| ۳ | عبد الله: قوله: قال: قام النبي صلى الله عليه وسلم خطيباً، فأشار نحو مسكن عائشة، فقال: هنا الفتنة. ثلاثاً من حيث يطلع قرن الشيطان: نبي دا خبره جرت له ارشاد او فرمائيله؟ نبي اشاره كوم طرفته كړې وه؟ د مشرق نه خه مراد دي؟ د دواړو قولونو مينځ كښې تطبيق: د فتنې نه خه مراد دي؟ د قرن معنی او مراد: قرن الشيطان به كله ښكاره كيږي؟ يوه فائده: رجال الحديث: ① عبد الله بن يوسف: ② مالك: ③ عبد الله بن ابي بكر: ④ عمرة: ⑤ عائشة: د حديث شريف ترجمه: د باب د حديثونو ترجمه الباب سره مناسبت: ⑤ باب: ما ذكر من درع النبي ﷺ وعصاة وسيفه وقدره وخاتمته، د ترجمه الباب مقصد: رجال الحديث: د حديث شريف ترجمه: ترجمه الباب سره د حديث شريف مطابقت: رجال الحديث: ① عبد الله بن محمد: ② محمد بن عبد الله الاسدي: ③ عيسى بن طهمان: ④ انس: ⑤ ثابت البناني: د حديث شريف ترجمه: | ۱۱۰ ۱۱۰ ۱۱۱ ۱۱۱ ۱۱۲ ۱۱۳ ۱۱۵ ۱۱۵ ۱۱۵ ۱۱۲ ۱۱۲ ۱۱۲ ۱۱۲ ۱۱۲ ۱۱۲ ۱۱۲ ۱۱۲ ۱۱۷ ۱۱۹ ۱۱۹ ۱۱۹ ۱۲۰ ۱۲۰ ۱۲۰ ۱۲۰ ۱۲۲ ۱۲۲ ۱۲۳ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| ۱۲۳ | د جرداوين تحقيق | ۱۲۳ |
| ۱۲۳ | د قبالان معنی | ۱۲۳ |
| ۱۲۳ | د فحدثی ثابت البنانی بعد مقصد | ۱۲۳ |
| ۱۲۳ | ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت | ۱۲۳ |
| ۱۲۴ | رجال الحديث | ۱۲۴ |
| ۱۲۴ | ① محمد بن بشار | ۱۲۴ |
| ۱۲۴ | ② عبد الوهاب | ۱۲۴ |
| ۱۲۴ | ③ ایوب | ۱۲۴ |
| ۱۲۴ | ④ حمید بن هلال | ۱۲۴ |
| ۱۲۴ | ⑤ ابو برده | ۱۲۴ |
| ۱۲۴ | ⑥ عائشة | ۱۲۴ |
| ۱۲۴ | قوله: قال: أخرجت إينا عائشة رضى الله عنها كساء ملبدا | ۱۲۴ |
| ۱۲۴ | د كساء ملبدا معنی | ۱۲۴ |
| ۱۲۵ | نبی ﷺ به دا خادر ولې استعمالوو؟ | ۱۲۵ |
| ۱۲۵ | قوله: وقالت: في هذا نزع روح النبي صلى الله عليه وسلم | ۱۲۵ |
| ۱۲۵ | د مذكوره تعليق مقصد | ۱۲۵ |
| ۱۲۵ | د مذكوره تعليق تخريج | ۱۲۵ |
| ۱۲۶ | ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت | ۱۲۶ |
| ۱۲۶ | رجال الحديث | ۱۲۶ |
| ۱۲۶ | ① عبدان | ۱۲۶ |
| ۱۲۶ | ② ابو حمزه | ۱۲۶ |
| ۱۲۶ | ③ عاصم | ۱۲۶ |
| ۱۲۶ | ④ ابن سيرين | ۱۲۶ |
| ۱۲۶ | ⑤ انس بن مالك | ۱۲۶ |
| ۱۲۶ | د حدیث شریف سند سره متعلق یو اهم خبرداري | ۱۲۶ |
| ۱۲۸ | قوله: ان قدح النبي صلى الله عليه وسلم انكسر، فأتخذ مكان الشعب سلسلة من فضة: پیالی چا صحیح کړې وه؟ | ۱۲۸ |
| ۱۲۹ | قوله: قال عاصم: رأيت القدح، وشربت فيه: | ۱۲۹ |
| ۱۲۹ | د سرو زرو او د چاندی د جوړ او د زنخیر لگولو حکم | ۱۲۹ |
| ۱۳۰ | ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت | ۱۳۰ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|--|-------|------|
| رجال الحديث | | ۱۳۰ |
| ① سعید بن محمد الجرمی | | ۱۳۰ |
| ② یعقوب بن ابراهیم | | ۱۳۰ |
| ③ أبی | | ۱۳۱ |
| ④ الولید بن کثیر | | ۱۳۱ |
| ⑤ محمد بن عمرو بن حلحلة الدؤلی | | ۱۳۱ |
| ⑥ ابن شهاب | | ۱۳۱ |
| ⑦ علی بن حسین | | ۱۳۱ |
| قوله: أن علی بن حسین حدثه أنهم حين قدموا المدينة من عند يزيد بن معاوية مقتل حسين بن علی رضی الله عنه لقيه مسور بن مخرمة: | | ۱۳۱ |
| قوله: فقال له: هل لك إلى من حاجة تأمرني بها؟ فقلت له: لا: | | ۱۳۱ |
| قوله: فقال له: فهل أنت معطى سيف رسول الله صلى الله عليه وسلم؟: | | ۱۳۲ |
| قوله: فاني أخاف أن يغلبك القوم عليه: | | ۱۳۲ |
| قوله: وأيم الله، إن أعطينته لا يخاض إليهم أبدا حتى تبلغ نفسي: | | ۱۳۲ |
| يو سوال او د هغي جواب: | | ۱۳۳ |
| قوله: إن علی بن ابی طالب خطب ابنة أبی جهل علی فاطمة رضی الله عنها | | ۱۳۳ |
| د ابنة ابی جهل نه خوک مراد دی؟ | | ۱۳۳ |
| د نبی کریم ﷺ د خطبی سبب خه وو؟ | | ۱۳۴ |
| د دواړو قولونو مینځ کښې تطبیق: | | ۱۳۴ |
| د نکاح پیش کش د چاله طرفه وو؟ | | ۱۳۵ |
| قوله: فسمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يخطب الناس في ذلك على منبره هذا: | | ۱۳۶ |
| د حضرت مسور عمر هغه وخت خه وو؟ | | ۱۳۶ |
| قوله: فقال: ان فاطمة منی، وانا اتخوف ان تفتن فی دینها: | | ۱۳۷ |
| قوله: ثم ذكر صهره من بنی عبد شمس، فأنش عليه في مصاهرته آية، قال: حدثني فصدقني ووعدني فوفی لی: | | ۱۳۷ |
| حضرت ابو العاص بن الربیع رضی الله عنه: | | ۱۳۷ |
| قوله: وإنی لیست أحرم حلالاً، ولا أحل حراماً، ولكن واللّه، لا تجتمع بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم وبنت عدو الله أبداً: | | ۱۴۱ |
| د منع کولو وجه خه وه؟ | | ۱۴۲ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| | یو سوال او د هغې جواب | ۱۴۲ |
| | د حضرت فاطمه <small>(علیها السلام)</small> خصوصیت ولې بیان کړې شو؟ | ۱۴۳ |
| | یو اشکال او د هغې جوابونه: | ۱۴۳ |
| | ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: | ۱۴۴ |
| | د حدیث شریف نه مستنبط شوې فاندې | ۱۴۵ |
| | شریف مرتضی او د حضرت مسور بن مخرمه حدیث: | ۱۴۷ |
| | رجال الحديث | ۱۴۸ |
| | ① قتیبه بن سعید: | ۱۴۸ |
| | ② سفیان: | ۱۴۸ |
| | ③ محمد بن سوه: | ۱۴۸ |
| | ④ منذر: | ۱۴۸ |
| | ⑤ ابن الحنفیه: | ۱۴۸ |
| | ⑥ علی: | ۱۴۸ |
| | ⑦ عثمان: | ۱۴۸ |
| | قوله: لو کان علی رضی الله عنه ذاکراً | |
| | د حدیث پس منظر: | ۱۴۸ |
| | قوله: فقال لی علی: اذهب إلى عثمان، فأخبره أنها صدقة رسول الله <small>(ﷺ)</small> ،.... الخ: | ۱۴۹ |
| | قوله: فأتيتها بها، فقال: أغنها عنا:..... | ۱۴۹ |
| | د أغنها لغوی او صرفی تحقیق | |
| | قوله: فأتيت بها علياً، فأخبرته، فقال: ضعها حيث أخذتها: | ۱۵۲ |
| | حضرت عثمان رضی الله عنه دهغه صحیفې نه اعراض ولې کړې وو؟ | |
| | د حضرت شیخ الحدیث صاحب رائي | |
| | د مذکوره تعلیق مقصد: | ۱۵۳ |
| | د مذکوره تعلیق تخریج | |
| | د مذکوره صحیفې مضمون څه وو؟ | |
| | ترجمة الباب سره د حدیث مطابقت | |
| | ترجمة الباب سره متعلق یو بحث: | ۱۵۴ |
| | د ترجمة الباب نحوی تحلیل او مفهوم | ۱۵۵ |
| | د ترجمة الباب لغوی تحقیق | ۱۵۶ |
| | د ترجمة الباب مقصد: | ۱۵۶ |
| | خمس به کومو خلقو ته ورکولې شی؟ | ۱۵۶ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|--|
| | د مذهبونو ماخذ: | ۱۵۸ |
| | په آيت کریمه کښې د لفظ "الله" معنی: | ۱۵۸ |
| | د سهم الرسول معنی او په هغې کښې اختلاف: | ۱۲۰ |
| | د رشته دارو حصه او په دې کښې اختلاف: | ۱۲۱ |
| | په خمس کښې د مستحق کیدو بنیاد څه دی؟ | ۱۲۲ |
| | د خلفاء راشدينو اجماع: | ۱۲۴ |
| | په مصرف او استحقاق کښې فرق: | ۱۲۵ |
| | د بحث خلاصه: | ۱۲۵ |
| | يو سوال او د هغې جواب: | ۱۲۵ |
| | يو بل اشکال او د هغې جوابونه: | ۱۲۲ |
| | د ذوی القربى نه کوم خلق مراد دی؟ | ۱۲۷ |
| | ذوی القربى سره متعلق احکامات: | رجال الحديث |
| | رجال الحديث: | ۱۲۸ |
| | ① بدل بن المحبر: | ۱۲۸ |
| | ② شعبه: | ۱۲۸ |
| | ③ الحكم: | ۱۲۹ |
| | ④ ابن ابی لیلی: | ۱۲۹ |
| | ⑤ علی: | ۱۲۹ |
| | ⑥ فاطمه: | ۱۲۹ |
| | د باب د حدیث شریف ترجمه: | ۱۷۰ |
| | د حدیث د بعضې حصو تشریح: | قوله: فاتانا وقد دخلنا مضاجعنا، فذهبا النجوم، فقال: على مكانكما،... الخ: |
| | قوله: فقال: الا ادلكما على خير مما سالتما؟: | ۱۷۲ |
| | د تلقین کرده کلماتو حکمت او خاصیت: | ۱۷۳ |
| | ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: | ۱۷۴ |
| | يو اهم خبرداري: | باب: قول الله تعالى: فان لله خمسة وللرسول |
| | د ترجمه الباب مقصد: | ۱۷۴ |
| | د آيت کریمه په تفسیر کښې اختلاف: | ۱۷۵ |
| | د (وللرسول) د تخصیص بالذکر وجه: | ۱۷۲ |
| | د تعلیق مقصد: | ۱۷۲ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| | د مذکورہ تعلیق موصولاً تخریج | ۱۷۷ |
| | ترجمة الباب سره د مذکورہ تعلیق مطابقت | ۱۷۷ |
| | رجال الحديث | ۱۷۸ |
| | ① ابو الوليد | ۱۷۸ |
| | ② شعبه | ۱۷۸ |
| | ③ سليمان | ۱۷۸ |
| | ④ منصور | ۱۷۸ |
| | ⑤ قتاده | ۱۷۸ |
| | ⑥ سالم | ۱۷۹ |
| | ④ جابر بن عبد الله | ۱۷۹ |
| | ⑧ حصين | |
| | ⑨ عمرو | ۱۷۹ |
| | رجال الحديث | ۱۷۹ |
| | ① محمد بن يوسف | ۱۷۹ |
| | ② سفيان | ۱۷۹ |
| | روایت دريو طرقو سره د راوړلو وجه | ۱۷۹ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت | ۱۸۰ |
| | رجال الحديث | ۱۸۱ |
| | ① حبان | ۱۸۱ |
| | ② عبد الله | ۱۸۱ |
| | ③ يونس | ۱۸۱ |
| | ④ الزهري | ۱۸۱ |
| | ⑤ حميد بن عبد الرحمن | ۱۸۱ |
| | ⑥ معاوية | ۱۸۱ |
| | د حديث شريف ترجمه | ۱۸۱ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت | ۱۸۱ |
| | رجال الحديث | ۱۸۲ |
| | ① محمد بن سنان، ② فليح، ③ هلال | ۱۸۲ |
| | ④ عبد الرحمن بن ابي عمرة | ۱۸۲ |
| | ⑤ ابو هريره | ۱۸۲ |
| | قوله: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: ما أعطيتكم، ولا أمنعكم، أنا قاسم أضع حيث أمرت: ۱۸۲ | |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: | ۱۸۳ |
| | رجال الحديث: | ۱۸۳ |
| ① | عبد الله بن يزيد: | ۱۸۳ |
| ② | سعيد بن ابي ايوب: | ۱۸۳ |
| ③ | ابو الاسود: | ۱۸۳ |
| ④ | ابن ابي عياش النعمان: | ۱۸۳ |
| ⑤ | خوله الانصاريه: | ۱۸۴ |
| | قوله: قالت: سمعت النبي ﷺ يقول: ان رجلاً لا يتخوضون في مال الله بغير حق... الخ: | ۱۸۴ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ۱۸۵ |
| | د حديث نه مستنبطي فائدي: | ۱۸۲ |
| | ⑤ باب: قول النبي ﷺ: (احلت لكم الغنائم) | |
| | د نسخو اختلاف: | ۱۸۲ |
| | د ترجمة الباب مقصد: | ۱۸۷ |
| | رجال الحديث: | ۱۸۸ |
| ① | مسدد: | ۱۸۸ |
| ② | خالد: | ۱۸۸ |
| ③ | حصين: | ۱۸۸ |
| ④ | عامر: | ۱۸۸ |
| ⑤ | عروه البارقي: | ۱۸۸ |
| | ترجمة الباب سره مناسبت: | ۱۸۸ |
| | رجال الحديث: | ۱۸۸ |
| ① | ابو اليمان: | ۱۸۸ |
| ② | شعيب: | ۱۸۹ |
| ③ | ابو الزناد: | ۱۸۹ |
| ④ | الاعرج: | ۱۸۹ |
| ⑤ | ابو هريره: | ۱۸۹ |
| | د حديث شريف ترجمه: | ۱۸۹ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: | ۱۸۹ |
| | رجال الحديث: | ۱۹۰ |
| ① | اسحاق: | ۱۹۰ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|---|-------|------|
| ۲) جریر: | | ۱۹۰ |
| ۳) عبد الملك: | | ۱۹۰ |
| ۴) جابر بن سمره: | | ۱۹۰ |
| رجال الحديث | | ۱۹۰ |
| ۱) محمد بن سنان: | | ۱۹۰ |
| ۲) هشيم: | | ۱۹۰ |
| ۳) سيار: | | ۱۹۰ |
| ۴) يزيد الفقير: | | ۱۹۱ |
| ۵) جابر بن عبد الله: | | ۱۹۱ |
| غنيمت او سابقه امتونه: | | ۱۹۱ |
| ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: | | ۱۹۲ |
| رجال الحديث | | ۱۹۲ |
| ۱) اسماعيل: | | ۱۹۲ |
| ۲) مالك: | | ۱۹۲ |
| ۳) ابو الزناد: | | ۱۹۲ |
| ۴) الاعرج: | | ۱۹۲ |
| ۵) ابو هريره: | | ۱۹۲ |
| د حديث شريف ترجمه: | | ۱۹۳ |
| خبرداري: | | ۱۹۳ |
| ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: | | ۱۹۳ |
| رجال الحديث | | ۱۹۳ |
| ۱) محمد بن العلاء: | | ۱۹۳ |
| ۲) ابن المبارك: | | ۱۹۴ |
| ۳) معمر: | | ۱۹۴ |
| ۴) همام بن منبه: | | ۱۹۴ |
| ۵) ابو هريره: | | ۱۹۴ |
| قوله: عن أبي هريرة رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: غزاني من الانبياء: | | ۱۹۴ |
| دا نبي څوك وو؟ | | ۱۹۴ |
| آيا د نمر او دريدل (نه ډوبيدل) صرف حضرت يوشع عليه السلام سره خاص دي؟ | | ۱۹۵ |
| د حصر حديث او د مذكوره واقعاتو مينځ كېنې تطبيق: | | ۱۹۶ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| ۱۹۷ | د نمر د واپس کیدو واقعات: | ۱۹۷ |
| ۱۹۹ | امام طحاوی او حدیث رد الشمس لعلی | ۱۹۹ |
| ۲۰۰ | قوله: فقال لقومه: لا يتبعني رجل ملك بضم امرأة وهو يريد أن يبنى بها، ولما بين بها...: | ۲۰۰ |
| ۲۰۱ | قوله: ولا أحد بنى بيوتاً ولم يرفع سقوفها: | ۲۰۱ |
| ۲۰۱ | قوله: ولا أحد اشترى غنماً أو خلفات وهو ينتظر ولادها: | ۲۰۱ |
| ۲۰۱ | د خلفات معنوی تحقیق: | ۲۰۱ |
| ۲۰۲ | د دې کسانو د منع کولو حکمت: | ۲۰۲ |
| ۲۰۳ | قوله: فدنا من القرية صلاة العصر أو قريباً من ذلك: | ۲۰۳ |
| ۲۰۴ | جباره قوم سره د حضرت یوشع عليه السلام جهاد: | ۲۰۴ |
| ۲۰۵ | قوله: فقال للشمس: انك ما مورة، وأنا ما مورة، اللهم احبسها علينا، فحبست حتى فتح الله عليهم: | ۲۰۵ |
| ۲۰۵ | نمر ته د خطاب کولو حقیقت: | ۲۰۵ |
| ۲۰۶ | د نمر منع کیدو په کیفیت کښې اختلاف: | ۲۰۶ |
| ۲۰۶ | قوله: فجمع الغنائم، فجاءت - یعنی النار - لتأكلها، فلم تطعمها: | ۲۰۶ |
| ۲۰۷ | قوله: فقال: ان فيكم غلواً: | ۲۰۷ |
| ۲۰۷ | قوله: فليبايعني من كل قبيلة رجل فلزقت يدرجل بيده فقال: فيكم الغلول، فليبايعني قبيلتك، فلزقت يدرجلين أو ثلاثة بيده، فقال: فيكم الغلول: | ۲۰۷ |
| ۲۰۸ | قوله: فجاء برأس مثل رأس بقرة من الذهب، فوضعوها، فجاءت النار فاكلتها: | ۲۰۸ |
| ۲۰۹ | قوله: ثم أحل الله لنا الغنائم، رأى ضعفنا وعجزنا، فأحلها لنا: | ۲۰۹ |
| ۲۰۹ | ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: | ۲۰۹ |

① باب: الغنيمة لمن شهد الواقعة

| | | |
|-----|--------------------------------|-----|
| ۲۰۹ | د ترجمه الباب مقصد: | ۲۰۹ |
| ۲۱۱ | د باب د حدیث شریف مسئله: | ۲۱۱ |
| ۲۱۱ | د احنافو دلیلونه: | ۲۱۱ |
| ۲۱۲ | د ائمه ثلثه د دلیلونو جوابونه: | ۲۱۲ |
| ۲۱۳ | رجال الحديث | ۲۱۳ |
| ۲۱۳ | ① صدقة: | ۲۱۳ |
| ۲۱۳ | ② عبد الرحمن: | ۲۱۳ |
| ۲۱۴ | ③ مالك: | ۲۱۴ |
| ۲۱۴ | ④ زيد بن أسلم: | ۲۱۴ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| ۵ | اسلم | ۲۱۴ |
| ۶ | عمر | ۲۱۴ |
| | قوله: قال عمر رضي الله عنه لولا آخر | |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت | ۲۱۴ |
| ۷ | بَابُ: مَنْ قَاتَلَ لِلْمَغْنَمِ، هَلْ يَنْقُصُ مِنْ أَجْرِهِ؟ | |
| | د ترجمه الباب مقصد | ۲۱۵ |
| | رجال الحديث | ۲۱۶ |
| ۱ | محمد بن بشار | ۲۱۶ |
| ۲ | غندر | ۲۱۶ |
| ۳ | شعبه | ۲۱۶ |
| ۴ | عمرو | ۲۱۷ |
| ۵ | ابو وائل | ۲۱۷ |
| ۶ | ابو موسى اشعري | ۲۱۷ |
| | خبر داري | ۲۱۷ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت | ۲۱۷ |
| ۸ | بَابُ: قِسْمَةُ الْإِمَامِ مَا يَقْدُمُ عَلَيْهِ، وَيُخْبَأُ لِمَنْ لَمْ يَحْضُرْهُ أَوْ غَابَ عَنْهُ | |
| | د ترجمه الباب مقصد | ۲۱۷ |
| | رجال الحديث | ۲۱۸ |
| ۱ | عبد الله بن يوسف | ۲۱۸ |
| ۲ | حماد | ۲۱۸ |
| ۳ | ايوب | ۲۱۸ |
| ۴ | عبد الله بن ابي مليكه | ۲۱۸ |
| | قوله: أن النبي صلى الله عليه وسلم أهديت له أقيية من هياج مذردة بالذهب | ۲۱۹ |
| | د مذكوره تعليقاتو مقصد | ۲۲۰ |
| | د مذكوره تعليقاتو تخريج | ۲۲۰ |
| | د مذكوره متابعت مقصد | ۲۲۰ |
| | د مذكوره متابعت تخريج | ۲۲۰ |
| | د اصيلي يوهم | ۲۲۱ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت | ۲۲۱ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| | باب: كيف قسم النبي ﷺ قريظة والنضير، وما أطي من ذلك في نوائبه | |
| ٢٢١ | د ترجمه الباب مقصد: | ٢٢١ |
| ٢٢١ | رجال الحديث | ٢٢١ |
| ٢٢١ | ① عبد الله بن أبي الاسود: | ٢٢١ |
| ٢٢١ | ② معتمر: | ٢٢١ |
| ٢٢١ | ③ أبيه: | ٢٢١ |
| ٢٢٢ | ④ انس بن مالك: | ٢٢٢ |
| ٢٢٢ | د حديث شريف ترجمه: | ٢٢٢ |
| ٢٢٢ | د حديث شريف مختصره تشریح: | ٢٢٢ |
| ٢٢٢ | ترجمه الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ٢٢٢ |
| | باب: بركة الغازی فی ماله حیا ومیتاً، مع النبي ﷺ وولاة الامر | |
| ٢٢٣ | د ترجمه الباب مقصد: | ٢٢٣ |
| ٢٢٣ | يو خبرداري: | ٢٢٣ |
| ٢٢٤ | رجال الحديث | ٢٢٤ |
| ٢٢٤ | ① اسحاق بن ابراهيم: | ٢٢٤ |
| ٢٢٤ | ② ابواسامه: | ٢٢٤ |
| ٢٢٥ | ③ هشام بن عروة: | ٢٢٥ |
| ٢٢٥ | ④ عروة بن زبير: | ٢٢٥ |
| ٢٢٥ | ⑤ عبد الله بن زبير، ⑥ زبير بن العوام رضی الله عنهما | ٢٢٥ |
| ٢٢٥ | قوله: قال: لما وقف الزبير يوم الجمل دعاني فقمتم الى جنبه: | ٢٢٥ |
| ٢٢٥ | يوم الجمل (د جمل جنگ): | ٢٢٥ |
| ٢٢٧ | قوله: فقال: يا بني، لا يقتل اليوم الا ظالم أو مظلوم: | ٢٢٧ |
| ٢٢٧ | د دي جملي مختلف مطلبونه: | ٢٢٧ |
| ٢٢٨ | قوله: واني لأراني الاساقتل اليوم مظلوماً: | ٢٢٨ |
| ٢٢٨ | قوله: وان من أكبر همي لديني، أفترى يبقى ديننا من مالنا شيئاً؟: | ٢٢٨ |
| ٢٢٩ | قوله: فقال: يا بني، بعم مالنا، فاقض ديني، وأوصي بالثلث، وثلثه لبنيه. يعني بنى عبد الله بن الزبير، يقول: ثلث الثلث. فان فضل من مالنا فضل بعد قضاء الدين فثلثه لولدك: | ٢٢٩ |
| ٢٣٠ | قوله: قال هشام: وكان بعض ولد عبد الله قد وازى بعض بنى الزبير خبيب وعباد: | ٢٣٠ |
| ٢٣٠ | د دي جملي مطلب: | ٢٣٠ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| ٢٣١ | خبیب: | ٢٣١ |
| ٢٣٣ | قوله: وله يومئذ تسعة بنين وتسع بنات: | ٢٣٣ |
| ٢٣٤ | د حضرت عبد الله د حیرانه کیدلو وجه: | ٢٣٤ |
| ٢٣٤ | قوله: فقتل الزبير رضي الله عنه، ولم يدع ديناراً ولا درهماً، إلا أرضين منها: الغابة، وأحدى عشرة داراً بالمدينة، ودارين بالبصرة، وداراً بالكوفة، وداراً بمصر: | ٢٣٤ |
| ٢٣٥ | قوله: قال: وإنما كان دينه الذي عليه أن الرجل كان يأتيه بالمال فيستودعه أياه، فيقول الزبير: لا، ولكنه سلف، فأني أخشى عليه الضيعة: | ٢٣٥ |
| ٢٣٥ | د حضرت زبير <small>رضي الله عنه</small> احتياط كمال او تقوى: | ٢٣٥ |
| ٢٣٦ | قوله: وما ولي أماراة قط، ولا جباية خراج، ولا شيئاً إلا أن يكون في غزوة مع النبي <small>ﷺ</small> ... الخ: | ٢٣٦ |
| ٢٣٦ | قوله: قال عبد الله بن الزبير: فحسبت ما عليه من الدين، فوجدته ألفي ألف، ومائتي ألف: | ٢٣٦ |
| ٢٣٧ | قوله: فكتمه، فقال: مائة ألف: | ٢٣٧ |
| ٢٣٧ | آيا دا دروغ او غلط بيانى نه ده؟ | ٢٣٧ |
| ٢٣٧ | د قرض د اصل مقدار پتولو وجه: | ٢٣٧ |
| ٢٣٨ | قوله: فقال حكيم: والله، ما أرى أموالكم تسع لهذه، فقال له عبد الله: أرأيتك إن كانت ألفي ألف ومائتي ألف؟ قال: ما أراكم تطيقون هذا، فإن عجزتم عن شيء منه فاستعينوا بي: | ٢٣٨ |
| ٢٣٨ | قوله: وكان الزبير اشترى الغابة بسبعين ومائة ألف، فباعها عبد الله بألف ألف وستمائة ألف: | ٢٣٨ |
| ٢٣٨ | قوله: ثم قام، فقال: من كان له على الزبير حق فليوافنا بالغابة: | ٢٣٨ |
| ٢٣٩ | قوله: قال: فباع منها، فقصى دينه، فأوفاه، وبقي منها أربعة أسهم ونصف...: | ٢٣٩ |
| ٢٤٠ | قوله: فقدم على معاوية -وعنده عمرو بن عثمان، والمندربن الزبير، وابن زمعة: | ٢٤٠ |
| ٢٤٠ | قوله: المندربن الزبير: | ٢٤٠ |
| ٢٤١ | ابن زمعه: | ٢٤١ |
| ٢٤٣ | قوله: قال: ويأع عبد الله بن جعفر نصيبه من معاوية بستمائة ألف: | ٢٤٣ |
| ٢٤٣ | قوله: فلما فرغ ابن الزبير من قضاء دينه قال بنو الزبير: اقسم بيننا ميراثنا. قال: لا والله، لا أقسم بينكم حتى أنادي بالموسم أربع سنين: ألا من كان له على الزبير دين، فليأتنا، فلنقضه: | ٢٤٣ |
| ٢٤٤ | قوله: قال: فجعل كل سنة ينادى بالموسم. فلما مضى أربع سنين قسم بينهم: | ٢٤٤ |
| ٢٤٤ | قوله: قال: وكان للزبير أربع نسوة: | ٢٤٤ |
| ٢٤٥ | قوله: فجميع ماله خمسون ألف ألف ومائتي ألف: | ٢٤٥ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| | اشکال او د هغې جوابات | ۲۴۶ |
| | د حديث شريف متن سره متعلق يو وضاحت | ۲۴۸ |
| | د استفهام د جواب ذکر | ۲۴۸ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت | ۲۴۹ |
| | ۱۵ باب: اذ ابعث الی ما یرسلوا فی حاجة، وأمره بالمقام، هل یُسهم له | |
| | د ترجمة الباب مقصد | ۲۴۹ |
| | د ائمه ثلثه دليل | ۲۴۹ |
| | د احنافو دليل | ۲۵۰ |
| | د جمهورو له طرفه جواب | ۲۵۰ |
| | د احنافو له طرفه جمهورو ته جواب | ۲۵۱ |
| | رجال الحديث | ۲۵۱ |
| | ① موسى | ۲۵۱ |
| | ② ابو عوانه | ۲۵۱ |
| | ③ عثمان بن موهب | ۲۵۱ |
| | خبرداري | ۲۵۱ |
| | ④ ابن عمر | ۲۵۲ |
| | قوله: قال: إنما تغيب عثمان عن بدر، فإنه كانت تحته بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم وكانت مريضة، فقال له النبي صلى الله عليه وسلم: إن لك أجر رجل من شهد بدرًا وسهمه: | ۲۵۲ |
| | د باب د حديث شريف پس منظر | ۲۵۲ |
| | د باب د حديث شريف د بعضي حصو تشريح | ۲۵۳ |
| | حضرت رقيه رضي الله عنها | ۲۵۳ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت | ۲۵۴ |
| | ۱۶ باب: ومن الدليل على أن الخمس لنواب المسلمين | |
| | د ترجمة الباب مقصد | ۲۵۵ |
| | د ترجمة الباب نحوي تحليل | ۲۵۶ |
| | واو عاطفه يا استفتاحيه | ۲۵۶ |
| | د ترجمة الباب مقصد | ۲۵۷ |
| | د تعليقاتو مقصد | ۲۵۷ |
| | د تعليقاتو موصولاً تخریج | ۲۵۷ |
| | د مذکورہ تعليقاتو ترجمې سره مناسبت | ۲۵۸ |
| | د باب اولي حديث | ۲۵۸ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| | رجال الحديث | ۲۵۸ |
| ① | سعيد بن عفير: | ۲۵۸ |
| ② | الليث: | ۲۵۹ |
| ③ | عقيل: | ۲۵۹ |
| ④ | ابن شهاب: | ۲۵۹ |
| ⑤ | عروة: | ۲۵۹ |
| ⑥ | مروان بن الحكم: | ۲۵۹ |
| ⑦ | المسور بن مخرمه: | ۲۵۹ |
| | خبرداري: | ۲۵۹ |
| | ترجمة الباب او د باب حديث: | ۲۵۹ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ۲۲۰ |
| | رجال الحديث | ۲۲۱ |
| ① | عبد الله بن عبد الوهاب: | ۲۲۱ |
| ② | حماد: | ۲۲۱ |
| ③ | ايوب: | ۲۲۱ |
| ④ | ابو قلابه: | ۲۲۱ |
| ⑤ | قاسم بن عاصم الكليبي: | ۲۲۲ |
| ⑥ | زهدم: | ۲۲۲ |
| ⑦ | ابو موسى: | ۲۲۲ |
| | قوله: قال: وحدثني القاسم بن عاصم الكليبي، وأنا الحديث القاسم أحفظ عن زهدم: | ۲۲۲ |
| | خبرداري: | ۲۲۳ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: | ۲۲۳ |
| | رجال الحديث | ۲۲۳ |
| ① | عبد الله بن يوسف: | ۲۲۳ |
| ② | مالك: | ۲۲۳ |
| ③ | نافع: | ۲۲۳ |
| ④ | ابن عمر: | ۲۲۴ |
| | د نفل لغوی او اصطلاحی تعریف: | ۲۲۴ |
| | د نفل مشروعیت: | ۲۲۵ |
| | د نفل صورتونه: | ۲۲۵ |
| | د نفل محل: | ۲۲۶ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| | د نفل مقدار | ۲۶۷ |
| | قوله: فكانت سهماً ثم اثني عشر بغيراً أو أحد عشر بغيراً: | ۲۶۸ |
| | د شریکانو په حصه کښې څومره څومره اوښان راغلل؟ | ۲۶۸ |
| | د اثني عشر بغيراً مراد: | ۲۶۸ |
| | يو اعتراض او د هغې جوابات: | ۲۶۸ |
| | فائده: | ۲۷۰ |
| | قوله: ونفلوا بغيراً بغيراً: | ۲۷۰ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ۲۷۱ |
| | يوه فائده: | ۲۷۱ |
| | رجال الحديث | ۲۷۲ |
| | ① يحيى بن بكير: | ۲۷۲ |
| | ② الليث: | ۲۷۲ |
| | ③ عقيل: | ۲۷۲ |
| | ④ ابن شهاب: | ۲۷۲ |
| | ⑤ سالم: | ۲۷۲ |
| | ⑥ ابن عمر: | ۲۷۲ |
| | د باب د حديث نه د حافظ صاحب استدلال: | ۲۷۲ |
| | د حافظ د مذكوره استدلال وجه: | ۲۷۳ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: | ۲۷۳ |
| | رجال الحديث | ۲۷۴ |
| | ① محمد بن العلاء: | ۲۷۴ |
| | ② ابو اسامه: | ۲۷۴ |
| | ③ بريد بن عبد الله: | ۲۷۴ |
| | ④ ابوبرده: | ۲۷۴ |
| | ⑤ ابو موسى: | ۲۷۴ |
| | قوله: فخرنا مهاجرين اليه، أنا وأخوان لي، أنا أصغرهم، أحدهما: ابوبردة، والآخر أبو رهم: | ۲۷۵ |
| | ابوبرده: | ۲۷۵ |
| | خبرداري: | ۲۷۵ |
| | قوله: إنا قال في بضع، وإنا قال في ثلاثة وخمسين أو اثنين وخمسين رجلاً من قومي: | ۲۷۲ |
| | دا حضرات ټول څومره وو؟ | ۲۷۲ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| | قوله: فركبنا سفينة، فالقنا سفينتنا إلى النجاشي بالحبشة، ووافقنا جعفر بن أبي طالب وأصحابه عنده، فقال جعفر: إن رسول الله صلى الله عليه وسلم بعثنا ههنا، وأمرنا بالاقامة..... الخ: ٢٧٢ | ٢٧٢ |
| | قوله: فأقمنا معه، حتى قد منا جميعاً: ٢٧٧ | ٢٧٧ |
| | دا شرکت د کوم مد نه وو؟: ٢٧٧ | ٢٧٧ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: ٢٧٨ | ٢٧٨ |
| | رجال الحديث: ٢٧٩ | ٢٧٩ |
| | ① علي: ٢٧٩ | ٢٧٩ |
| | ② سفيان: ٢٧٩ | ٢٧٩ |
| | ③ محمد بن المنكدر: ٢٧٩ | ٢٧٩ |
| | ④ جابر: ٢٧٩ | ٢٧٩ |
| | قوله: قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لو قد جاءنا مال البحرين لقد أعطيتك هكذا وهكذا وهكذا: ٢٧٩ | ٢٧٩ |
| | قوله: فلم يجرى حتى قبض النبي صلى الله عليه وسلم: ٢٧٩ | ٢٧٩ |
| | قوله: فلما جاء مال البحرين أمر أبو بكر منادياً، فنادى: من كان له عند رسول الله صلى الله عليه وسلم دين أو عدة فليأتنا: ٢٧٩ | ٢٧٩ |
| | قوله: فأتيته، فقلت: إن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لي كذا وكذا، فحشالي ثلاثاً: ٢٨٠ | ٢٨٠ |
| | قوله: وجعل سفيان يحثوبكفيه جميعاً، ثم قال لنا: هكذا قال لنا ابن المنكدر: ٢٨٠ | ٢٨٠ |
| | قوله: وقال مرة: فأتيت أبا بكر، فسئلت، فلم يعطني، ثم أتيته، فلم يعطني، ثم أتيته الثالثة، فقلت: سئلتك، فلم تعطني، ثم سئلتك فلم تعطني، ثم سئلتك فلم تعطني،..... الخ: ٢٨٠ | ٢٨٠ |
| | قوله: قال: قلت تبخل علي، ما منعك من مرة إلا وأنا أريد أن أعطيك: ٢٨١ | ٢٨١ |
| | د منع کولو وجه څه وه؟: ٢٨١ | ٢٨١ |
| | قوله: وقال: يعني ابن المنكدر: وأي داء أدوى من البخل؟: ٢٨٢ | ٢٨٢ |
| | دا جمله د چا ده؟: ٢٨٢ | ٢٨٢ |
| | د أدوی د لفظ تحقیق: ٢٨٢ | ٢٨٢ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: ٢٨٣ | ٢٨٣ |
| | رجال الحديث: ٢٨٣ | ٢٨٣ |
| | ① مسلم بن ابراهيم: ٢٨٣ | ٢٨٣ |
| | ② قرة بن خالد: ٢٨٣ | ٢٨٣ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| ۳ | عمرو بن دينار: | ۲۸۴ |
| ۴ | جابر بن عبد الله رضي الله عنهما: | ۲۸۴ |
| | دا واقعہ د کوم وخت ده؟ | ۲۸۴ |
| | قوله: اذ قال له رجل: اعدل: | ۲۸۴ |
| | دا سړې څوک وو؟ | ۲۸۴ |
| | قوله: قال: لقد شقيتُ ان لم اعدل: | ۲۸۵ |
| | د شقيت معنی: | ۲۸۶ |
| | ترجمة الباب سره د حديث مبارك مطابقت: | ۲۸۶ |
| ۳ | باب: ما من النبي صلى الله عليه وسلم على الأسارى من غير ان يخمس | |
| | د ترجمة الباب مقصد: | ۲۸۷ |
| | غانمين كله د غنيمت مالكان جوړېږي؟ | ۲۸۷ |
| | رجال الحديث: | ۲۸۸ |
| ① | اسحاق بن منصور: | ۲۸۸ |
| ② | عبد الرزاق: | ۲۸۸ |
| ③ | معمر: | ۲۸۸ |
| ④ | الزهري: | ۲۸۸ |
| ⑤ | محمد بن جبير: | ۲۸۸ |
| ⑥ | أبيه: | ۲۸۸ |
| | قوله: أن النبي صلى الله عليه وسلم قال في أسارى بدر: لو كان المطعم بن عدي حياً، ثم | |
| | كلني في هؤلاء لنتني لتركهم له: | ۲۸۸ |
| | د مطعم بن عدي د خاص کولو وجه: | ۲۸۸ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ۲۸۹ |
| ④ | باب: ومن الدليل على أن الخمس للامام، | |
| | وأنه يعطى بعض قرابته دون بعض | |
| | د ترجمة الباب مقصد: | ۲۸۹ |
| | د مذکوره تعليق لغوی او نحوی تحلیل: | ۲۹۰ |
| | د مذکوره تعليق مطلب: | ۲۹۱ |
| | د مذکوره تعليق مقصد: | ۲۹۱ |
| | ترجمې سره د تعليق مناسبت: | ۲۹۱ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| | د ذکر کړې شوی تعلیق تخریج | ۲۹۲ |
| | رجال الحديث | ۲۹۲ |
| | ① عبد الله بن يوسف | ۲۹۲ |
| | ② الليث، ③ عقیل، ④ ابن شهاب | ۲۹۲ |
| | ⑤ ابن المسيب | ۲۹۲ |
| | ⑥ جبیر بن مطعم | ۲۹۳ |
| | د حدیث مبارک ترجمه | ۲۹۳ |
| | ترجمة الباب سره د حدیث مطابقت | ۲۹۳ |
| | خبرداري | ۲۹۳ |
| | په شی واحد کښې د نسخو او د روایتونو اختلاف | ۲۹۳ |
| | واحد یا أحد | ۲۹۴ |
| | د مذکوره تعلیق تخریج | ۲۹۴ |
| | د مذکوره تعلیق مقصد | ۲۹۴ |
| | ترجمة الباب سره د تعلیق مناسبت | ۲۹۴ |
| | قوله: وقال ابن اسحاق: عبد شمس وهاشم والمطلب إخوة لامر، وأمه عاتكة بنت مرة، وكان نوفل أخاهم لأبيهم | ۲۹۵ |
| | د بیتونو ترجمه | ۲۹۶ |
| | د تعلیق مقصد | ۲۹۶ |
| | د مذکوره تعلیق تخریج | ۲۹۶ |

⑱ باب: من لم یُخمس الاسلاب، ومن قتل قتيلاً

فله سلبه من غیر أن یخمس وحکم الامام فیه

| | | |
|--|----------------------------|-----|
| | لغوی او اصطلاحی اسلاب | ۲۹۶ |
| | تکلیفی حکم (د سلب مشروعیت) | ۲۹۷ |
| | د امامانو دلیلونه | ۲۹۷ |
| | د جمهورو دلائل | ۲۹۷ |
| | د احنافو دلیلونه | ۲۹۸ |
| | د استدلال وجه | ۲۹۹ |
| | د سلب مستحق څوک وی؟ | ۲۹۹ |
| | ① جمهور فقهاء | ۲۹۹ |
| | ② موالک | ۲۹۹ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| ۳۰۰ | خپل خان په خطر د کښې واچوی | ۳۰۰ |
| ۳۰۰ | د مقتول د قتل کولو شرعی اجازت وی | ۳۰۰ |
| ۳۰۰ | قتل نې کړی یا | ۳۰۰ |
| ۳۰۰ | د جنگ دوران کښې نې قتل کړی | ۳۰۰ |
| ۳۰۰ | آیا د سلب د مستحق کیدو دپاره گواهان ضروری دی؟ | ۳۰۰ |
| ۳۰۱ | د گواهانو نه څه مراد دی؟ | ۳۰۱ |
| ۳۰۲ | په سلب کښې به تخمیس جاری کیږي یا نه؟ | ۳۰۲ |
| ۳۰۳ | په سلب کښې به کوم کوم څیزونه ملایږي؟ | ۳۰۳ |
| ۳۰۴ | د ترجمه الباب مقصد | ۳۰۴ |
| ۳۰۴ | قوله: ومن قتل قتيلاً فله سلبه: | ۳۰۴ |
| ۳۰۵ | قوله: من غير أن يخمس: | ۳۰۵ |
| ۳۰۵ | قوله: وحكم الامام فيه: | ۳۰۵ |
| ۳۰۶ | رجال الحديث | ۳۰۶ |
| ۳۰۶ | ① مسدد: | ۳۰۶ |
| ۳۰۶ | ② يوسف بن العاجشون: | ۳۰۶ |
| ۳۰۶ | ③ صالح بن ابراهيم بن عبد الرحمن بن عوف: | ۳۰۶ |
| ۳۰۶ | ④ أبيه: | ۳۰۶ |
| ۳۰۶ | ⑤ جده: | ۳۰۶ |
| ۳۰۶ | قوله: قال بينا أنا واقف في الصف يوم بدر.....: | ۳۰۶ |
| ۳۰۷ | قوله: تمنيت أن أكون بين أضلع منها: | ۳۰۷ |
| ۳۰۷ | د أضلع لغوی او صرفی تحقیق: | ۳۰۷ |
| ۳۰۷ | په أضلع کښې د نسخو اختلاف: | ۳۰۷ |
| ۳۰۸ | قوله: لا يفارق سوادى سواده: | ۳۰۸ |
| ۳۰۸ | قوله: حتى يموت الا عجل منا: | ۳۰۸ |
| ۳۰۸ | قوله: فلم أشب أن نظرت إلى أبي جهل يحول في الناس: | ۳۰۸ |
| ۳۰۹ | قوله: فابتدراه بسيفيها: | ۳۰۹ |
| ۳۰۹ | قوله: فنظر في السيفين، فقال: كلاهما قتله: | ۳۰۹ |
| ۳۰۹ | قوله: سلبه لمعاذ بن عمرو بن الجموح: | ۳۰۹ |
| ۳۱۰ | قوله: وكانا معاذ بن عفراء، ومعاذ بن عمرو بن الجموح: | ۳۱۰ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| ۳۱۰ | معاذ بن عفراء: | ۳۱۰ |
| ۳۱۱ | معاذ بن عمرو بن الجموح: | ۳۱۱ |
| ۳۱۱ | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ۳۱۱ |
| ۳۱۱ | قوله: قال محمد: سمع يوسف صالحاً، وإبراهيم أباه: | ۳۱۱ |
| ۳۱۲ | د مذكوره جملې مطلب: | ۳۱۲ |
| ۳۱۲ | د مذكوره جملې مقصد: | ۳۱۲ |
| ۳۱۳ | رجال الحديث: | ۳۱۳ |
| ۳۱۳ | ① عبد الله بن مسلمة: | ۳۱۳ |
| ۳۱۳ | ② مالك: | ۳۱۳ |
| ۳۱۳ | ③ يحيى بن سعيد: | ۳۱۳ |
| ۳۱۳ | ④ ابن افلح: | ۳۱۳ |
| ۳۱۳ | ⑤ أبي محمد: | ۳۱۳ |
| ۳۱۳ | ⑥ أبو قتاده: | ۳۱۳ |
| ۳۱۳ | د حديث مبارك ترجمه: | ۳۱۳ |
| ۳۱۴ | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ۳۱۴ |
| ۳۱۴ | سلب شرعی حق دي يا د امامت حق؟: | ۳۱۴ |

①۹ باب: ما كان النبي صلى الله عليه وسلم

يعطى المؤلفه قلوبهم وغيرهم من الخمس ونحوه

| | | |
|-----|--|-----|
| ۳۱۷ | د ترجمة الباب مقصد: | ۳۱۷ |
| ۳۱۷ | مؤلفه القلوب چاته وئيلي کيری؟: | ۳۱۷ |
| ۳۱۸ | د مؤلفه القلوب حصه اوس باقی ده یا نه؟: | ۳۱۸ |
| ۳۱۹ | خبرداري: | ۳۱۹ |
| ۳۱۹ | مؤلفه القلوب ته به د کوم څانگي نه ورکړي کیده؟: | ۳۱۹ |
| ۳۱۹ | قوله: رواه عبد الله بن زيد، عن النبي صلى الله عليه وسلم: | ۳۱۹ |
| ۳۲۰ | د مذكوره تعليق مقصد: | ۳۲۰ |
| ۳۲۰ | د مذكوره تعليق تخريج: | ۳۲۰ |
| ۳۲۰ | ترجمة الباب سره د تعليق مناسبت: | ۳۲۰ |
| ۳۲۱ | رجال الحديث: | ۳۲۱ |
| ۳۲۱ | ① محمد بن يوسف: | ۳۲۱ |
| ۳۲۱ | ② الاوزاعي: | ۳۲۱ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| ④ | الزهري | ۳۲۱ |
| ⑤ | سعيد بن المسيب | ۳۲۱ |
| ⑥ | عروه بن الزبير | ۳۲۱ |
| ⑦ | حكيم بن حزام | ۳۲۱ |
| | د حديث شريف ترجمه: | ۳۲۱ |
| | خبرداري: | ۳۲۲ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ۳۲۲ |
| | رجال الحديث | ۳۲۲ |
| ① | ابو النعمان | ۳۲۲ |
| ② | حماد بن زيد | ۳۲۲ |
| ③ | ايوب | ۳۲۲ |
| ④ | نافع | ۳۲۳ |
| ⑤ | عمر بن الخطاب | ۳۲۳ |
| | قوله: أن عمر بن الخطاب رضي الله عنه قال: يا رسول الله: | ۳۲۳ |
| | يو حديث او درې احكامات: | ۳۲۳ |
| | قوله: وأصاب عمر جارتين من سبي حنين، فوضعهما في بعض بيوت مكة.....: | ۳۲۳ |
| | وينزي دوه وي يا يوه؟: | ۳۲۴ |
| | قوله: وزاد جرير بن حازم، عن ايوب، عن نافع، عن ابن عمر قال: من الخمس: | ۳۲۴ |
| | د مذكوره تعليق مقصد: | ۳۲۴ |
| | د مذكوره تعليق تخريج: | ۳۲۵ |
| | قوله: ورواه معمر، عن ايوب، عن نافع، عن ابن عمر في النذر، ولم يقل: يوم: | ۳۲۵ |
| | د مذكوره تعليق مقصد: | ۳۲۵ |
| | د تعليق تخريج: | ۳۲۵ |
| | ترجمة الباب سره د حديث مناسبت: | ۳۲۵ |
| | رجال الحديث | ۳۲۶ |
| ① | موسى بن اسماعيل | ۳۲۶ |
| ② | جرير بن حازم | ۳۲۶ |
| ③ | حسن | ۳۲۶ |
| ④ | عمرو بن تغلب | ۳۲۶ |
| | قوله: فقال: إني أعطى قوماً أخاف ظلمهم وجزعهم: | ۳۲۶ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| ۳۲۶ | قوله: وأكل أقواماً إلى ما جعل الله في قلوبهم من الخير والغنى: | ۳۲۶ |
| ۳۲۷ | قوله: منهم عمرو بن تغلب: | ۳۲۷ |
| ۳۲۷ | قوله: فقال عمرو بن تغلب: ما أحب أن لي بكلمة رسول الله صلى الله عليه وسلم حمراً النعم: | ۳۲۷ |
| ۳۲۷ | ددې جملې دوه مطلبونه دي: | ۳۲۷ |
| ۳۲۸ | قوله: وزاد أبو عاصم، عن جرير قال: سمعت الحسن يقول: حدثنا عمرو بن تغلب: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم أتى بمال أوبسبى فقسمه، بهذا: | ۳۲۸ |
| ۳۲۸ | د مذكوره تعليق مقصد: | ۳۲۸ |
| ۳۲۸ | د مذكوره تعليق تخريج: | ۳۲۸ |
| ۳۲۸ | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ۳۲۸ |
| ۳۲۹ | رجال الحديث: | ۳۲۹ |
| ۳۲۹ | ① أبو الوليد: | ۳۲۹ |
| ۳۲۹ | ② شعبه: | ۳۲۹ |
| ۳۲۹ | ③ قتاده: | ۳۲۹ |
| ۳۲۹ | ④ أنس: | ۳۲۹ |
| ۳۲۹ | د حديث شريف ترجمه: | ۳۲۹ |
| ۳۳۰ | رجال الحديث: | ۳۳۰ |
| ۳۳۰ | ① أبو اليمان: | ۳۳۰ |
| ۳۳۰ | ② شعيب: | ۳۳۰ |
| ۳۳۰ | ③ زهري: | ۳۳۰ |
| ۳۳۰ | ④ أنس: | ۳۳۰ |
| ۳۳۰ | خبرداري: | ۳۳۰ |
| ۳۳۱ | رجال الحديث: | ۳۳۱ |
| ۳۳۱ | ① عبد العزيز بن عبد الله الأويسى: | ۳۳۱ |
| ۳۳۱ | ② إبراهيم بن سعد: | ۳۳۱ |
| ۳۳۱ | ③ صالح: | ۳۳۱ |
| ۳۳۱ | ④ ابن شهاب: | ۳۳۱ |
| ۳۳۱ | ⑤ عمر بن محمد بن جبیر بن مطعم: | ۳۳۱ |
| ۳۳۱ | ⑥ محمد بن جبیر: | ۳۳۱ |
| ۳۳۱ | ⑦ جبیر بن مطعم: | ۳۳۱ |
| ۳۳۱ | د حديث شريف ترجمه: | ۳۳۱ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت | ٣٣١ |
| | رجال الحديث | ٣٣٢ |
| ① | يحيى بن بكير | ٣٣٢ |
| ② | مالك | ٣٣٢ |
| ③ | اسحاق بن عبد الله | ٣٣٢ |
| ④ | انس بن مالك | ٣٣٢ |
| | قوله: قال: كنت أمشي مع النبي صلى الله عليه وسلم، وعليه برد نجراني غليظ الحاشية: | ٣٣٢ |
| | قوله: فادركه أعرابي، فجذبه جذبة شديدة، حتى نظرت إلى صفحة عاتق النبي صلى الله عليه وسلم، قد أثرت به حاشية الرداء، من شدة جذبته: | ٣٣٣ |
| | قوله: ثم قال: مر لي من مال الله الذي عندك: | ٣٣٣ |
| | قوله: فالتفت إليه، فضحك، ثم أمر له بعطاء: | ٣٣٣ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ٣٣٤ |
| | يو اهمه فائده: | ٣٣٤ |
| | رجال الحديث | ٣٣٥ |
| ① | عثمان بن أبي شيبة: | ٣٣٥ |
| ② | جرير: | ٣٣٥ |
| ③ | منصور: | ٣٣٥ |
| ④ | ابو وائل: | ٣٣٥ |
| ⑤ | عبد الله: | ٣٣٥ |
| | قوله: قال: لما كان يوم حنين، أثر النبي صلى الله عليه وسلم أنا سألني القصة، فأعطى الأقرع | ٣٣٥ |
| | بن حابس مئة من الإبل، وأعطى عيينة مثل ذلك: | ٣٣٥ |
| | أقرع بن حابس: | ٣٣٦ |
| | عيينة: | ٣٣٦ |
| | ترجمة الباب سره مطابقت: | ٣٣٦ |
| | رجال الحديث | ٣٣٧ |
| ① | محمود بن غيلان: | ٣٣٧ |
| ② | ابو اسامه: | ٣٣٧ |
| ③ | هشام: | ٣٣٧ |
| ④ | أبي: | ٣٣٧ |
| ⑤ | اسماء بنت أبي بكر: | ٣٣٧ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| ۳۳۷ | د حديث شريف ترجمه: | ۳۳۷ |
| ۳۳۷ | قوله: وقال أبو حمزة عن هشام عن أبيه أن النبي صلى الله عليه وسلم أقطع الزبير أرضاً من | ۳۳۷ |
| ۳۳۷ | أموال بني النضير: | ۳۳۷ |
| ۳۳۸ | د مذكوره تعليق مقصد: | ۳۳۸ |
| ۳۳۹ | يو اشكال او د هغې جواب: | ۳۳۹ |
| ۳۳۹ | د مذكوره تعليق تخريج: | ۳۳۹ |
| ۳۴۰ | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ۳۴۰ |
| ۳۴۰ | رجال الحديث: | ۳۴۰ |
| ۳۴۰ | ① احمد بن المقدام: | ۳۴۰ |
| ۳۴۰ | ② فضيل بن سليمان: | ۳۴۰ |
| ۳۴۰ | ③ موسى بن عقبه: | ۳۴۰ |
| ۳۴۰ | ④ نافع: | ۳۴۰ |
| ۳۴۰ | ⑤ ابن عمر: | ۳۴۰ |
| ۳۴۰ | د حديث شريف ترجمه: | ۳۴۰ |
| ۳۴۰ | د حديث د بعضو حصو تشريح: | ۳۴۰ |
| ۳۴۱ | د اشكال جوابات: | ۳۴۱ |
| ۳۴۱ | قوله: تيماء وأريحا: | ۳۴۱ |
| ۳۴۱ | ترجمة الباب سره د حديث مطابقت: | ۳۴۱ |
| | ⑥ باب: ما يصيب من الطعام في أرض الحرب | |
| ۳۴۲ | د ترجمة الباب مقصد: | ۳۴۲ |
| ۳۴۳ | رجال الحديث: | ۳۴۳ |
| ۳۴۳ | ① ابو الوليد: | ۳۴۳ |
| ۳۴۴ | ② شعبه: | ۳۴۴ |
| ۳۴۴ | ③ حميد بن هلال: | ۳۴۴ |
| ۳۴۴ | ④ عبد الله بن مغفل: | ۳۴۴ |
| ۳۴۴ | قوله: قال: كنا محاصرين قصر خيبر، فرمى إنسان بجراب فيه شحم: | ۳۴۴ |
| ۳۴۴ | قوله: فنزوت لأخذه: | ۳۴۴ |
| ۳۴۴ | قوله: فالتفت، فإذا النبي صلى الله عليه وسلم، فاستحييت منه: | ۳۴۴ |
| ۳۴۵ | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ۳۴۵ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| | رجال الحديث | ۳۴۵ |
| ① | مسدد | ۳۴۵ |
| ② | حماد بن زيد | ۳۴۶ |
| ③ | ايوب | ۳۴۶ |
| ④ | نافع | ۳۴۶ |
| ⑤ | ابن عمر رضی الله عنه: | ۳۴۶ |
| | قوله: ولا ترفعه: | ۳۴۷ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: | ۳۴۷ |
| | رجال الحديث | ۳۴۷ |
| ① | موسى بن اسماعيل | ۳۴۷ |
| ② | عبد الواحد | ۳۴۷ |
| ③ | الشيواني | ۳۴۷ |
| ④ | ابن ابي اوفى: | ۳۴۸ |
| | خبرداري: | ۳۴۸ |
| | قوله: قال عبد الله: فقلنا إنما نهى النبي صلى الله عليه وسلم، لأنها لم تخمس. قال: وقال آخرون: حرمها البتة: | ۳۴۸ |
| | قوله: وسئلت سعيد بن جبير فقال: حرمها البتة: | ۳۴۸ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ۳۴۸ |
| | ۲۲. أبواب الجزية والموادعة | |
| | د نسخو اختلاف: | ۳۴۹ |
| ① | باب: الجزية والموادعة مع أهل الذمة والحرب | |
| | د ترجمة الباب مقصد: | ۳۴۹ |
| | د جزية لغوى معنى: | ۳۴۹ |
| | اصطلاحى معنى: | ۳۵۰ |
| | د موادعة معنى او مراد: | ۳۵۰ |
| | د جزية مشروعيت: | ۳۵۰ |
| | يو شبهه او د هغې جواب: | ۳۵۱ |
| | د آيت كريمه شان نزول او مختصر تشریح: | ۳۵۲ |
| | قوله: ولم يذهب إلى السكون: | ۳۵۳ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| ۳۵۲ | ترجمة الباب سره د ایت کریمه مناسبت: | ۳۵۲ |
| ۳۵۳ | قوله: وما جاء في أخذ الجزية من اليهود والنصارى والمجوس والعجم: | ۳۵۳ |
| ۳۵۳ | جزیه به د چانه اخستلې شی؟ | ۳۵۳ |
| ۳۵۵ | د مشرکینو د عرب د تخصیص وجوهات: | ۳۵۵ |
| ۳۵۶ | د کومو خلقو نه به جزیه نه اخستلې کیږي؟ | ۳۵۶ |
| | قوله: وقال ابن عيينة، عن ابن أبي نجيح: قلت لمجاهد: ما شان أهل الشام عليهم أربعة | |
| | دنانير، وأهل اليمن عليهم دينار؟ قال: جعل ذلك من قبل اليسار: | |
| ۳۵۷ | د مذکوره تعلیق تخريج: | ۳۵۷ |
| ۳۵۷ | د مذکوره تعلیق مقصد: | ۳۵۷ |
| ۳۵۸ | د مذهبونو دلائل: | ۳۵۸ |
| ۳۶۰ | د جمهورو له طرفه جواب: | ۳۶۰ |
| ۳۶۱ | د شوافعو دليل: | ۳۶۱ |
| ۳۶۱ | د شوافعو د دليل جواب: | ۳۶۱ |
| ۳۶۲ | د مالکيه دليل: | ۳۶۲ |
| ۳۶۳ | د مالکيه د دليل جواب: | ۳۶۳ |
| ۳۶۳ | ترجيح راجح: | ۳۶۳ |
| ۳۶۴ | رجال الحديث | ۳۶۴ |
| ۳۶۴ | ① علی بن عبد الله: | ۳۶۴ |
| ۳۶۴ | ② سفیان: | ۳۶۴ |
| ۳۶۴ | ③ عمرو: | ۳۶۴ |
| ۳۶۴ | قوله: قال: كنت جالساً مع جابر بن زيد وعمر بن أوس: | ۳۶۴ |
| ۳۶۴ | قوله: فحدثهما بجملة سبعين عام حجة مصعب بن الزبير أهل البصرة عند درج زمزم: | ۳۶۴ |
| ۳۶۴ | بجالة: | ۳۶۴ |
| ۳۶۶ | مصعب بن الزبير: | ۳۶۶ |
| ۳۶۷ | حديث شريف سره متعلق يو اصولی بحث: | ۳۶۷ |
| ۳۶۷ | د "درج" معنی: | ۳۶۷ |
| ۳۶۸ | قوله: قال: كنت كاتباً لجزء من معاوية عم الاحنف: | ۳۶۸ |
| ۳۶۸ | جزء من معاوية: | ۳۶۸ |
| ۳۶۸ | الاحنف: | ۳۶۸ |
| ۳۶۸ | قوله: فاتانا كتاب عمر بن الخطاب قبل موته بسنة: | ۳۶۸ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| | عمر بن الخطاب: | ۳۶۸ |
| | قوله: فرقوا بين كل ذي محرم من المجوس: | ۳۶۹ |
| | آيا مجوس په اهل کتابو کښې داخل دي؟ | ۳۶۹ |
| | يو اشکال او د هغې جواب: | ۳۷۲ |
| | قوله: ولم يكن عمر اخذ الجزية من المجوس حتى شهد عبد الرحمن بن عوف: | ۳۷۳ |
| | مذکوره جمله باندې سندې بحث: | ۳۷۳ |
| | هجر: | ۳۷۳ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ۳۷۴ |
| | رجال الحديث: | ۳۷۴ |
| | ① ابو اليمان، ② شعيب: | ۳۷۴ |
| | ③ زهري: | ۳۷۵ |
| | ④ عروة بن الزبير: | ۳۷۵ |
| | ⑤ مسور بن مخرمة: | ۳۷۵ |
| | ⑥ عمرو بن عوف الانصاري: | ۳۷۵ |
| | دې ولي انصاري دي؟ | ۳۷۵ |
| | يو اهم خبرداري: | ۳۷۲ |
| | قوله: ان رسول الله بعث ابا عبيدة بن الجراح الى البحرين ياتي بمزيتها: | ۳۷۲ |
| | قوله: وكان رسول الله صلى الله عليه وسلم هو صالح اهل البحرين، وأمر عليهم العلاء بن الحضرمي: | ۳۷۲ |
| | د مذکوره واقعي تفصيل: | ۳۷۷ |
| | قوله: فقد ما أبو عبيدة بمال من البحرين: | ۳۷۷ |
| | د حديث نه مستنبط يوه فائده: | ۳۷۸ |
| | قوله: قالوا: أجل يا رسول الله: | ۳۷۸ |
| | قوله: قال: فابشروا، وأملوا ما يسركم: | ۳۷۹ |
| | قوله: فوالله، لا الفقرا أخشى عليكم، ولكن أخشى عليكم أن تبسط عليكم الدنيا، كما بسطت على من كان قبلكم، فتنافسوها كما تنافسوها، وتهلككم كما أهلكتهم: | ۳۷۹ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: | ۳۷۹ |
| | رجال الحديث: | ۳۸۰ |
| | ① الفضل بن يعقوب: | ۳۸۰ |
| | ② عبد الله بن جعفر الرقي: | ۳۸۰ |
| | ③ المعتمر بن سليمان: | ۳۸۱ |

| شُميره | مضمون | صفحه |
|--------|---|------|
| ٤ | سعيد بن عبيد الله الثقفي: | ٣٨٢ |
| ٥ | بكر بن عبد الله المزني: | ٣٨٣ |
| ٦ | زياد بن جبير: | ٣٨٣ |
| ٦ | جبير بن حيه: | ٣٨٣ |
| | قوله: قال: بعث عمر الناس في أفناء الامصار يقاتلون المشركين: | ٣٨٥ |
| | قوله: فاسلم الهرمزان: | ٣٨٦ |
| | د هر مزان د اسلام د قبلولو واقعه: | ٣٨٦ |
| | قوله: فقال: اني مستشيرك في مغازتي هذه: | ٣٩٠ |
| | قوله: قال: نعم، مثلها ومثل من فيها من الناس من عدو المسلمين مثل طائرله رأس، وله جناحان، وله رجلان: | ٣٩٠ |
| | قوله: فان كسر أحد الجناحين نهضت الرجلان بجناح والرأس، فان كسر الجناح الآخر نهضت الرجلان والرأس، وان شدخ الرأس، ذهبت الرجلان والجناحان والرأس: | ٣٩١ |
| | قوله: فالرأس كسرى، والجناح قصير، والجناح الآخر فارس: | ٣٩١ |
| | يو اشكال او د هغې جوابات: | ٣٩١ |
| | قوله: فمر المسلمين فلينفروا الى كسرى: | ٣٩٢ |
| | قوله: وقال بكر وزياد جميعاً: عن جبير بن حيه، قال: فندبنا عمر: | ٣٩٣ |
| | قوله: واستعمل علينا النعمان بن مقرن: | ٣٩٣ |
| | حضرت نعمان بن مقرن: | ٣٩٣ |
| | قوله: حتى إذا كنا بأرض العدو: | ٣٩٥ |
| | د نهاوند تعارف: | ٣٩٥ |
| | قوله: وخرج علينا عامل كسرى في أربعين ألفاً: | ٣٩٥ |
| | قوله: فقام ترجمان، فقال: ليكلني رجل منكم، فقال البغيرة: سل عما شئت: | ٣٩٦ |
| | قوله: قال: ما أنتم؟: | ٣٩٦ |
| | قوله: قال: نحن أناس من العرب، كنا في شقاء شديد، نمص الجلد والنوى من الجوع ونلبس الوبر والشعر، ونعبد الشجر والحجر: | ٣٩٦ |
| | قوله: فبينما نحن كذلك، إذ بعث رب السموات ورب الارضين - تعالى ذكره - وجلت عظمته - إلينا نبيا من أنفسنا، نعرف أباه وأمه: | ٣٩٧ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| | قوله: فامر نبينا ورسول ربنا صلى الله عليه وسلم أن نقا تلکم حتى تعبدوا لله وحده،..... الخ: ۳۹۷ | ۳۹۷ |
| | قوله: وأخبرنا نبينا عن رسالة ربنا أنه من قتل مناصرا إلى الجنة في نعيم لم ير مثله قط، ومن بقي مناصرك رقابكم: | ۳۹۷ |
| | د حضرت نعمان بن مقرن مذکوره ارشاد کتبی د شارحینو اختلاف | ۳۹۸ |
| | د "حتى تمرب الارواح" معنی او مطلب: | ۴۰۱ |
| | د "وتحضر الصلوات" مراد: | ۴۰۱ |
| | د غزوة نهاوند اختتام: | ۴۰۱ |
| | د حدیث شریف نه مستنبط فائدي: | ۴۰۳ |
| | ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: | ۴۰۴ |
| | ② باب: إذا وادع الامام ملك القرية، هل يكون ذلك لبقيتهم؟ | |
| | د ترجمة الباب مقصد: | ۴۰۴ |
| | رجال الحديث: | ۴۰۷ |
| | ① سهل بن بكار: | ۴۰۷ |
| | ② وهيب: | ۴۰۷ |
| | ③ عمرو بن يحيى: | ۴۰۷ |
| | ④ عباس الساعدي: | ۴۰۷ |
| | ⑤ ابو حميد الساعدي: | ۴۰۷ |
| | د حدیث شریف ترجمه: | ۴۰۷ |
| | قوله: وكساه بردا: | ۴۰۷ |
| | د بحر نه خه مراد دي؟: | ۴۰۸ |
| | ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: | ۴۰۸ |
| | ⑥ باب: الوصايا بأهل ذمة رسول الله صلى الله عليه وسلم | |
| | د ترجمة الباب مقصد: | ۴۰۹ |
| | د الوصاة معنی: | ۴۰۹ |
| | د الذمة او د ال معنی: | ۴۰۹ |
| | رجال الحديث: | ۴۱۰ |
| | ① آدم بن أبي إياس: | ۴۱۰ |
| | ② شعبه: | ۴۱۰ |
| | ③ أبو جمره: | ۴۱۰ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| ۴۱۰ | جوریه بن قدامة التیمی | ۴۱۰ |
| ۴۱۱ | عمر بن الخطاب | ۴۱۱ |
| ۴۱۱ | د باب د حدیث شریف ترجمه | ۴۱۱ |
| ۴۱۱ | د حدیث شریف مزید تفصیل | ۴۱۱ |
| ۴۱۲ | فائده | ۴۱۲ |
| ۴۱۳ | د "ورزق عیالکم" مطلب | ۴۱۳ |
| ۴۱۳ | ترجمه الباب سره د حدیث مناسبت | ۴۱۳ |
| ۴۱۳ | د ترجمه الباب وضاحت او مقصد | ۴۱۳ |
| ۴۱۳ | د "إقطاع" لغوی او اصطلاحی معنی | ۴۱۳ |
| ۴۱۴ | د امام بخاری <small>رحمته الله</small> د استدلال طریقه | ۴۱۴ |
| ۴۱۵ | رجال الحديث | ۴۱۵ |
| ۴۱۵ | ① احمد بن یونس | ۴۱۵ |
| ۴۱۵ | ② زهیر | ۴۱۵ |
| ۴۱۵ | ③ یحیی بن سعید | ۴۱۵ |
| ۴۱۵ | ④ انس | ۴۱۵ |
| ۴۱۵ | د اثره ضبط او معنی | ۴۱۵ |
| ۴۱۶ | ترجمه الباب سره د حدیث شریف مناسبت | ۴۱۶ |
| ۴۱۶ | رجال الحديث | ۴۱۶ |
| ۴۱۶ | ① علی بن عبد الله | ۴۱۶ |
| ۴۱۶ | ② اسماعیل بن ابراهیم | ۴۱۶ |
| ۴۱۶ | خبرداري | ۴۱۶ |
| ۴۱۷ | ③ روح بن القاسم | ۴۱۷ |
| ۴۱۷ | ④ محمد بن المنکدر | ۴۱۷ |
| ۴۱۷ | ⑤ جابر بن عبد الله رضی الله عنهما | ۴۱۷ |
| ۴۱۷ | ترجمه الباب سره د حدیث شریف مناسبت | ۴۱۷ |
| ۴۱۷ | د مال فی تعریف | ۴۱۷ |
| ۴۱۸ | مال فی به څنگه تقسیمولې شی؟ | ۴۱۸ |
| ۴۱۹ | په مال فی کنبې به خمس ویستلې شی یا نه؟ | ۴۱۹ |
| ۴۱۹ | رجال الحديث | ۴۱۹ |
| ۴۱۹ | ① ابراهیم بن طهمان | ۴۱۹ |
| ۴۲۰ | ② عبد العزيز بن صهيب | ۴۲۰ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|-------|-------|------|
|-------|-------|------|

۴۲۰ ۴ انس

۴۲۰ ترجمه الباب سره د حدیث شریف مناسبت

۵ باب: اثم من قتل معاهداً بغير جرم

۴۲۰ د ترجمه الباب مقصد:

۴۲۰ يوه اهمه فائده:

۴۲۱ رجال الحديث

۴۲۱ ① قيس بن حفص:

۴۲۱ ② عبد الواحد:

۴۲۱ ③ الحسن بن عمرو:

۴۲۳ ④ مجاهد:

۴۲۳ ⑤ عبد الله بن عمرو:

۴۲۳ د حدیث شریف سند سره متعلق يو اهم بحث:

۴۲۴ د أصيلي يو تسامح:

۴۲۴ قوله: عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: "من قتل معاهداً لم يرح رائحة الجنة":

۴۲۴ د "يروح" معنى او ضبط:

۴۲۵ قوله: وإن ربحها توجد من مسيرة أربعين عاماً:

۴۲۵ په حدیث کښې په مذکوره عدد کښې د راویانو اختلاف او ددې د اعداد توجیه:

۴۲۲ ترجمه الباب سره د حدیث مناسبت:

۶ باب: إخراج اليهود من جزيرة العرب

۴۲۲ د ترجمه الباب مقصد:

۴۲۲ د جزيرة العرب تعريف او په دې کښې د کفارو د اقامت حکم:

۴۲۲ يو اهم خبرداري:

۴۲۷ د فريقينو دليلونه:

۴۲۹ د علامه طبري خاص رائي:

۴۲۹ په حرم مکي او په نورو مساجدو کښې د کفارو داخله:

۴۳۰ د جمهورو دليلونه:

۴۳۱ د امام اعظم دلائل:

۴۳۱ د احنافو د مذهب تحقيق:

۴۳۳ د جمهورو د دليلونو جواب:

۴۳۴ د غير مسلمو عبادت خانو ته د تلو حکم:

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| ۴۳۴ | قوله: وقال عمر، عن النبي ﷺ: (أقرکم ما أقرکم الله به): | ۴۳۴ |
| ۴۳۴ | د مذکورہ تعلیق تفصیل او مقصد: | ۴۳۴ |
| ۴۳۵ | د مذکورہ تعلیق تخریج: | ۴۳۵ |
| ۴۳۵ | ترجمة الباب سره د تعلیق موافقت: | ۴۳۵ |
| ۴۳۵ | رجال الحديث: | ۴۳۵ |
| ۴۳۵ | ① عبد الله بن يوسف: | ۴۳۵ |
| ۴۳۵ | ② الليث: | ۴۳۵ |
| ۴۳۵ | ③ سعيد المقبري: | ۴۳۵ |
| ۴۳۶ | ④ أبيه: | ۴۳۶ |
| ۴۳۶ | ⑤ ابوهريره: | ۴۳۶ |
| ۴۳۶ | قوله: قال: بينما نحن في المسجد خرج النبي صلى الله عليه وسلم، فقال: انطلقوا إلى يهود: | ۴۳۶ |
| ۴۳۶ | په حدیث شریف کښې د يهوديانو نه څوک مراد دی؟ | ۴۳۶ |
| ۴۳۷ | قوله: فخرجنا حتى جئنا بيت المدراس: | ۴۳۷ |
| ۴۳۷ | د بيت المدراس معنی: | ۴۳۷ |
| ۴۳۸ | قوله: فمن يجد منكم بماله شيئاً فليبعه: | ۴۳۸ |
| ۴۳۸ | د يجد مشتق منه او معنی: | ۴۳۸ |
| ۴۳۹ | قوله: وإلا فاعلموا أن الأرض لله ورسوله: | ۴۳۹ |
| ۴۳۹ | ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: | ۴۳۹ |
| ۴۴۰ | رجال الحديث: | ۴۴۰ |
| ۴۴۰ | ① محمد: | ۴۴۰ |
| ۴۴۰ | ② ابن عيينه: | ۴۴۰ |
| ۴۴۰ | ③ سليمان: | ۴۴۰ |
| ۴۴۰ | ④ سعيد بن جبیر: | ۴۴۰ |
| ۴۴۰ | ⑤ عبد الله بن عباس: | ۴۴۰ |
| ۴۴۱ | خبرداري: | ۴۴۱ |
| ۴۴۱ | ترجمة الباب سره د حدیث شریف موافقت: | ۴۴۱ |
| ۴۴۱ | باب: إذا غدر المشركون بالمسلمين، هل يُعفى عنهم | ۴۴۱ |
| ۴۴۱ | د ترجمة الباب مقصد: | ۴۴۱ |
| ۴۴۱ | د مذکورہ مسئلې تفصیل: | ۴۴۱ |
| ۴۴۳ | په چا باندې زهر خوړلو سره د قتلولو حکم: | ۴۴۳ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| | خبرداري | ۴۴۴ |
| | په حديث شريف كښي د مذكوره واقعي تفصيلات: | ۴۴۴ |
| | قوله: قال: لما فتحت خيبر اهديت للنبي صلى الله عليه وسلم شاة. فيها اسم: | ۴۴۵ |
| | د كلمه سم تحقيق: | ۴۴۵ |
| | د "تخلفونا" لغوی او صرفی تحقيق: | ۴۴۶ |
| | قوله: فقال النبي صلى الله عليه وسلم: اخسؤا فيها: | ۴۴۶ |
| | قوله: والله، لا تخلفكم فيها ابداً: | ۴۴۷ |
| | يو سوال او د هغې جواب: | ۴۴۸ |
| | ايا دې ښځې اسلام قبول كړې وو؟ | ۴۴۹ |
| | نبي بشري: | ۴۴۹ |
| | د نبي ﷺ معجزه: | ۴۵۰ |
| | حقيقي مؤثر د الله تعالى ذات دې: | ۴۵۰ |
| | ترجمة الباب سره د حديث باب مطابقت: | ۴۵۰ |

۸ باب: دعاء الامام علي من نكث عهداً

| | | |
|--|-------------------------------------|-----|
| | د ترجمة الباب مقصد: | ۴۵۱ |
| | رجال الحديث | ۴۵۱ |
| | ① ابو النعمان: | ۴۵۱ |
| | ② ثابت بن يزيد: | ۴۵۱ |
| | ③ عاصم: | ۴۵۱ |
| | ④ انس: | ۴۵۱ |
| | خبرداري: | ۴۵۱ |
| | يوه اهمه فائده: | ۴۵۱ |
| | دويمه فائده: | ۴۵۲ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف موافقت: | ۴۵۲ |

۹ باب: أمان النساء وجوارهن

| | | |
|--|---------------------|-----|
| | د ترجمة الباب مقصد: | ۴۵۲ |
| | د جوار معنى: | ۴۵۲ |
| | رجال الحديث | ۴۵۳ |
| | ① عبد الله بن يوسف: | ۴۵۳ |
| | ② مالك: | ۴۵۳ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|------------------------------------|------|
| ۴۵۳ | ۴ ابو النضر | ۴۵۳ |
| ۴۵۳ | ۴ ابو مره | ۴۵۳ |
| ۴۵۳ | ۵ ام هانی | ۴۵۳ |
| ۴۵۳ | د حدیث شریف ترجمه | ۴۵۳ |
| ۴۵۳ | بنیخه امان ورکولې شی | ۴۵۳ |
| ۴۵۴ | ترجمه الباب سره د حدیث شریف مناسبت | ۴۵۴ |

۱۰ باب: ذمه المسلمين وجوارهم واحدة يسعى بها أدناهم

| | | |
|-----|------------------------------------|-----|
| ۴۵۴ | د ترجمه الباب مقصد | ۴۵۴ |
| ۴۵۵ | آیا د غلام امان ورکول معتبر دی؟ | ۴۵۵ |
| ۴۵۵ | د ماشوم امان ورکول | ۴۵۵ |
| ۴۵۶ | د مجنون امان ورکول | ۴۵۶ |
| ۴۵۶ | رجال الحديث | ۴۵۶ |
| ۴۵۶ | ① محمد | ۴۵۶ |
| ۴۵۶ | ② وکیع | ۴۵۶ |
| ۴۵۶ | ③ الاعمش | ۴۵۶ |
| ۴۵۶ | ④ ابراهیم التیمی | ۴۵۶ |
| ۴۵۶ | ⑤ أيه | ۴۵۶ |
| ۴۵۶ | ⑥ علی | ۴۵۶ |
| ۴۵۷ | خبرداري | ۴۵۷ |
| ۴۵۷ | ترجمه الباب سره د حدیث شریف مناسبت | ۴۵۷ |

۱۱ باب: إذا قالوا صبانا ولم يحسنوا أسلمنا

| | | |
|-----|---------------------------------------|-----|
| ۴۵۷ | د ترجمه الباب مقصد | ۴۵۷ |
| ۴۵۸ | د کلمه "صبا" صرفی او لغوی تحقیق | ۴۵۸ |
| ۴۵۸ | د مذکوره تعلیق تخریج | ۴۵۸ |
| ۴۵۸ | په تعلیق کښې د مذکوره واقعي تفصیل | ۴۵۸ |
| ۴۵۹ | د حدیث شریف نه مستنبطه یو مسئله | ۴۵۹ |
| ۴۵۹ | ترجمه الباب سره د مذکوره تعلیق مناسبت | ۴۵۹ |
| ۴۶۰ | د مذکوره تعلیق تخریج | ۴۶۰ |
| ۴۶۰ | د حضرت عمر رضی الله عنه مکمل فرمان | ۴۶۰ |
| ۴۶۰ | د "مترس" لغوی تحقیق او ضبط | ۴۶۰ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|---|--|------|
| ۴۲۱ | قوله: وقال: تكلم لا بأس: .. | ۴۲۱ |
| ۴۲۱ | د مذکوره اثر تخریج | ۴۲۱ |
| ۴۲۲ | د مذکوره اثر نه یوه مستفاد مسئله | ۴۲۲ |
| ۴۲۲ | ترجمة الباب سره د تعلیق مطابقت | ۴۲۲ |
| (۱۲) باب: الموادعة والمصالحة مع المشركين | | |
| بالمال وغيره، وإثم من لم يف بالعهد | | |
| ۴۲۲ | د ترجمة الباب مقصد | ۴۲۲ |
| ۴۲۳ | قوله: وقوله: "وإن جنحوا للسلم فاجنح لها وتوكل على الله: | ۴۲۳ |
| ۴۲۳ | د آیت کریمه تفسیر | ۴۲۳ |
| ۴۲۳ | د آیت مبارکه نه د امام بخاری استدلال او ترجمه سره انطباق | ۴۲۳ |
| ۴۲۳ | فائده: | ۴۲۳ |
| ۴۲۳ | ترجمة الباب کښي د ذکر شوي مسئلې تفصیل: | ۴۲۳ |
| ۴۲۵ | د صلحې په بدله کښي مشرکانو ته د مال د ادا کولو مثالونه: | ۴۲۵ |
| ۴۲۵ | رجال الحديث | ۴۲۵ |
| ۴۲۵ | ① مسدد: | ۴۲۵ |
| ۴۲۶ | ② بشر: | ۴۲۶ |
| ۴۲۶ | ③ يحيى: | ۴۲۶ |
| ۴۲۶ | ④ بشير بن يسار: | ۴۲۶ |
| ۴۲۶ | ⑤ سهل بن ابي حنمه: | ۴۲۶ |
| ۴۲۶ | قوله: قال: انطلق عبد الله بن سهل ومحبيصة بن مسعود بن زيد إلى خيبر وهي يومئذ صلح: | ۴۲۶ |
| ۴۲۶ | قوله: فتنفر قاتى محبيصة إلى عبد الله بن سهل، وهو يتشخط فى دم قتيلاً، فدفنه ثم قدم المدينة: | ۴۲۶ |
| ۴۲۷ | د "يتشخط" معنى: | ۴۲۷ |
| ۴۲۷ | قوله: فانطلق عبد الرحمن بن سهل ومحبيصة وحويصة ابناً مسعود إلى النبي صلى الله عليه وسلم: | ۴۲۷ |
| ۴۲۷ | حضرت عبد الرحمن بن سهل | ۴۲۷ |
| ۴۲۸ | د حافظ ابن حجر رائي | ۴۲۸ |
| ۴۲۹ | حويصة بن مسعود: | ۴۲۹ |
| ۴۲۹ | د دوى د اسلام قبلولو واقعه: | ۴۲۹ |
| ۴۷۰ | خبرداري: | ۴۷۰ |
| ۴۷۰ | وهم چاته لاحق شوي دي؟ | ۴۷۰ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| ۴۷۱ | د باب په حدیث شریف کښې د مذکوره صحابه کرامو رسته وار نوعیت | ۴۷۱ |
| ۴۷۲ | قوله: فقال: أتخلفون وتستحقون قاتلكم أو صاحبكم؟ قالوا: وكيف نخلف ولم نشهد، ولم نر؟ | ۴۷۲ |
| ۴۷۲ | قوله: قال: فتبريكم بهود بخمين. فقالوا: كيف نأخذ أيمان قوم كفار؟ فعقله النبي ﷺ.. الخ: | ۴۷۲ |
| ۴۷۳ | قوله: فذهب عبد الرحمن يتكلم: فقال: كبر، كبر.. وهو أحدث القوم فسكت، فتكلم: | ۴۷۳ |
| ۴۷۳ | د حدیث نه مستفاد یو حکم: | ۴۷۳ |
| ۴۷۳ | یو اعتراض او د هغې جوابونه: | ۴۷۳ |
| ۴۷۳ | په ترجمه الباب باندې یو اشکال: | ۴۷۳ |
| ۴۷۳ | د مذکوره اشکال جوابونه: | ۴۷۳ |
| ۴۷۴ | ترجمه الباب سره د حدیث شریف مطابقت: | ۴۷۴ |

۱۳ باب: فصل الوفاء بالعهد

| | | |
|-----|--|-----|
| ۴۷۵ | د ترجمه الباب مقصد او ما قبل سره مناسبت: | ۴۷۵ |
| ۴۷۵ | رجال الحديث: | ۴۷۵ |
| ۴۷۵ | ① يحيى بن بكير: | ۴۷۵ |
| ۴۷۵ | ② الليث: | ۴۷۵ |
| ۴۷۵ | ③ يونس: | ۴۷۵ |
| ۴۷۵ | ④ ابن شهاب: | ۴۷۵ |
| ۴۷۲ | ⑤ عبيد الله بن عبد الله بن عتبة: | ۴۷۲ |
| ۴۷۲ | ⑥ عبد الله بن عباس: | ۴۷۲ |
| ۴۷۲ | ⑦ ابوسفیان: | ۴۷۲ |
| ۴۷۲ | د باب د حدیث ترجمه: | ۴۷۲ |
| ۴۷۲ | ترجمه الباب سره د حدیث مطابقت: | ۴۷۲ |

۱۴ باب: هل يعفى عن الذمى إذا سحر

| | | |
|-----|-----------------------------------|-----|
| ۴۷۷ | د ترجمه الباب مقصد: | ۴۷۷ |
| ۴۷۷ | د امت د فقهاؤ د اختلاف تفصیل: | ۴۷۷ |
| ۴۷۸ | د امام اعظم رحمه الله دلائل: | ۴۷۸ |
| ۴۷۹ | د ائمه ثلثه دلیلونه: | ۴۷۹ |
| ۴۷۹ | د ائمه ثلثه د دلیلونو نه جوابونه: | ۴۷۹ |
| ۴۸۰ | د مسلمان جادوگر حکم: | ۴۸۰ |
| ۴۸۱ | د ائمه ثلاثه دلیلونه: | ۴۸۱ |
| ۴۸۱ | د اختلاف مدار: | ۴۸۱ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---------------------------------|------|
| | یو اہم خبرداري | ۴۸۲ |
| | یو دویم خبرداري | ۴۸۲ |
| | د ساحر توبه به قبلولي شی یا نه؟ | ۴۸۲ |
| | رجال الحديث | ۴۸۳ |
| ① | ابن وهب: | ۴۸۳ |
| ② | یونس: | ۴۸۳ |
| ③ | ابن شهاب: | ۴۸۳ |
| | د مذکورہ تعلیق مقصد: | ۴۸۳ |
| | د مذکورہ تعلیق تخریج: | ۴۸۳ |
| | ترجمة الباب سره د تعلیق مناسبت: | ۴۸۴ |
| | رجال الحديث | ۴۸۴ |
| ① | محمد بن المثنی: | ۴۸۴ |
| ② | یحیی: | ۴۸۵ |
| ③ | هشام: | ۴۸۵ |
| ④ | ابی: | ۴۸۵ |
| ⑤ | عائشة: | ۴۸۵ |
| | ترجمة الباب سره د حدیث مطابقت: | ۴۸۵ |

⑤ باب: ما يُحذر من الغدر

| | | |
|---|--|-----|
| | د ترجمه الباب مقصد: | ۴۸۲ |
| | قوله: وقوله تعالى: وإن يريدوا أن يخدعوك فإن حسبك الله: | ۴۸۲ |
| | د ترجمه الباب او آیت کریمه مینځ کښي مناسبت: | ۴۸۷ |
| | رجال الحديث | ۴۸۸ |
| ① | الحمیدی: | ۴۸۸ |
| ② | الولید بن مسلم: | ۴۸۸ |
| ③ | عبدالله بن العلاء بن زبر: | ۴۸۸ |
| | خبرداري: | ۴۹۰ |
| ④ | بسر بن عبیدالله: | ۴۹۰ |
| | خبرداري: | ۴۹۱ |
| ⑤ | ابو ادریس: | ۴۹۱ |
| ⑥ | عوف بن مالک: | ۴۹۱ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| ۴۹۱ | د حدیث شریف سند سره متعلق یوه فائده: | ۴۹۱ |
| ۴۹۲ | قوله: قال: أتيت النبي صلى الله عليه وسلم في غزوة تبوك: | ۴۹۲ |
| ۴۹۲ | قوله: وهو في قبة من أدم: | ۴۹۲ |
| ۴۹۳ | قوله: فسلمت، فرد، وقال: ادخل، فقلت: أكلى يا رسول الله! قال: كلك، فدخلت: | ۴۹۳ |
| ۴۹۳ | قوله: فقال: اعد دستابين يدي الساعة موتى ثم فتح بيت المقدس: | ۴۹۳ |
| ۴۹۳ | قوله: ثم موتان يأخذ فيكم كقصاص الغنم: | ۴۹۳ |
| ۴۹۳ | د موتان ضبط: | ۴۹۳ |
| ۴۹۴ | د موتان معنی: | ۴۹۴ |
| ۴۹۴ | د قعاص ضبط: | ۴۹۴ |
| ۴۹۴ | د قعاص معنی: | ۴۹۴ |
| ۴۹۵ | د "ثم موتان....." مطلب: | ۴۹۵ |
| ۴۹۵ | قوله: ثم استفاضة المال حتى يعطى الرجل مائة دينار فيظل ساخطا: | ۴۹۵ |
| ۴۹۶ | قوله: ثم فتنة لا يبقى بيت من العرب إلا دخلته: | ۴۹۶ |
| ۴۹۶ | قوله: ثم هدة تكون بينكم وبين بني الاصفريغدرتون فيأتونكم تحت ثمانين غاية تحت كل غاية اثنا عشر الفا: | ۴۹۶ |
| ۴۹۶ | د هدة معنی او ضبط: | ۴۹۶ |
| ۴۹۶ | د غاية معنی او د روايتونو اختلاف: | ۴۹۶ |
| ۴۹۷ | شپږمه نېټه: | ۴۹۷ |
| ۴۹۷ | د قيامت د علامتونو ترتيب زمانې: | ۴۹۷ |
| ۴۹۸ | د امام مهدي تلاش: | ۴۹۸ |
| ۴۹۸ | امام مهدي به اوپيژندلې شي: | ۴۹۸ |
| ۴۹۹ | د امام مهدي فوج: | ۴۹۹ |
| ۴۹۹ | د اهل خراسان لښکر: | ۴۹۹ |
| ۴۹۹ | د عيسائي فوجونو اجتماع: | ۴۹۹ |
| ۴۹۹ | عيسايانو سره د امام مهدي جنگ: | ۴۹۹ |
| ۵۰۰ | د امام مهدي فتح: | ۵۰۰ |
| ۵۰۰ | د قسطنطينيه آزادي او د دجال ښکاره کيدل: | ۵۰۰ |
| ۵۰۰ | د دجال بد صورتې، بداخلاقي او د چالاکي حرکتونه: | ۵۰۰ |
| ۵۰۱ | دجال به حرمينو ته نه شي داخلېدې: | ۵۰۱ |
| ۵۰۲ | د عيسى عليه السلام نازلېدل او امام مهدي سره ملاقات: | ۵۰۲ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| ۵۰۲ | د اسلامي لښکر او د دجالي فوج مقابله | ۵۰۲ |
| ۵۰۲ | د دجال تختيدل | ۵۰۲ |
| ۵۰۳ | د متاثره ښارونو نوې تعمير او د انصاف قانمول | ۵۰۳ |
| ۵۰۳ | په حضرت عيسى <small>عليه السلام</small> باندې وحی | ۵۰۳ |
| ۵۰۴ | د ياجوج وماجوج راوتل | ۵۰۴ |
| ۵۰۴ | د ياجوج وماجوج تباه کاري | ۵۰۴ |
| ۵۰۴ | د حضرت عيسى <small>عليه السلام</small> دعا او د ياجوج وماجوج هلاکت | ۵۰۴ |
| ۵۰۴ | د امن و برکت اووه کاله او د حضرت عيسى <small>عليه السلام</small> وفات | ۵۰۴ |
| | شپه اوږديدل او د توبې دروازه بنديدل | |
| ۵۰۲ | د دابة الارض ښکاره کيدل | ۵۰۲ |
| ۵۰۲ | د ايماندارو د مرگ هوا | ۵۰۲ |
| ۵۰۷ | د حبشيانو غلبه او په شام کښې د خلقو اجتماع | ۵۰۷ |
| ۵۰۷ | اور به خلقو لره په شام کښې جمع کړي | ۵۰۷ |
| ۵۰۸ | د شپيلۍ آواز، مرگونه او د کائنات د نظام فنا کيدل | ۵۰۸ |
| ۵۰۹ | ترجمة الباب سره د حديث مناسبت | ۵۰۹ |

باب: كيف يُنبذُ إلى أهل العهد

| | | |
|-----|---|-----|
| ۵۰۹ | د ترجمه الباب مقصد | ۵۰۹ |
| ۵۰۹ | قوله: وقوله: (وإما تخافن من قوم خيانة فأنبذ إليهم على سواء) | ۵۰۹ |
| ۵۰۹ | د "نبذ" معنی | ۵۰۹ |
| ۵۰۹ | د سواء معنی او د آيت تفسير | ۵۰۹ |
| ۵۱۰ | رجال الحديث | ۵۱۰ |
| ۵۱۰ | ① أبو اليمان | ۵۱۰ |
| ۵۱۰ | ② شعيب | ۵۱۰ |
| ۵۱۰ | ③ زهري | ۵۱۰ |
| ۵۱۰ | ④ حميد بن عبد الرحمن | ۵۱۰ |
| ۵۱۰ | ⑤ ابو هريره رضى الله عنه | ۵۱۰ |
| ۵۱۰ | د حديث شريف ترجمه | ۵۱۰ |
| ۵۱۰ | د مشرکانو د منع کولو وجه | ۵۱۰ |
| ۵۱۱ | ترجمة الباب سره د آيت او د حديث مناسبت | ۵۱۱ |

| شمیره | مضمون | صفحه |
|-------|-------|------|
|-------|-------|------|

١٤ باب: اثم من عاهد ثم غدر

| | | |
|-----|--|-----|
| ٥١٢ | د ترجمه الباب مقصد | ٥١٢ |
| ٥١٢ | قوله: وقوله: والذين عاهدت منهم ثم ينقضون عهدهم في كل مرة وهم لا يتقون: | ٥١٢ |
| ٥١٢ | د آیت کریمه شان نزول او تفسیر: | ٥١٢ |
| ٥١٢ | د آیت کریمه او ترجمه الباب مینځ کښې مناسبت: | ٥١٢ |
| ٥١٣ | رجال الحديث | ٥١٣ |
| ٥١٣ | ١ قتيبه بن سعيد | ٥١٣ |
| ٥١٣ | ٢ جرير | ٥١٣ |
| ٥١٣ | ٣ الاعمش | ٥١٣ |
| ٥١٣ | ٤ عبد الله بن مره | ٥١٣ |
| ٥١٣ | ٥ مسروق | ٥١٣ |
| ٥١٣ | ٦ عبد الله بن عمرو | ٥١٣ |
| ٥١٣ | د حديث مبارك ترجمه: | ٥١٣ |
| ٥١٤ | ترجمه الباب سره د حديث شريف مطابقت: | ٥١٤ |
| ٥١٤ | رجال الحديث | ٥١٤ |
| ٥١٤ | ١ محمد بن كثير | ٥١٤ |
| ٥١٤ | ٢ سفيان | ٥١٤ |
| ٥١٤ | ٣ الاعمش | ٥١٤ |
| ٥١٥ | ٤ ابراهيم التيمي | ٥١٥ |
| ٥١٥ | ٥ أبيه | ٥١٥ |
| ٥١٥ | ٦ علي | ٥١٥ |
| ٥١٥ | ترجمه الباب سره د حديث مطابقت: | ٥١٥ |
| ٥١٦ | رجال الحديث | ٥١٦ |
| ٥١٦ | ١ ابو موسى | ٥١٦ |
| ٥١٦ | ٢ هاشم بن القاسم | ٥١٦ |
| ٥١٦ | ٣ اسحاق بن سعيد | ٥١٦ |
| ٥١٦ | ٤ ابيه | ٥١٦ |
| ٥١٦ | ٥ ابو هريره | ٥١٦ |
| ٥١٦ | دا حديث موصول دي يا معلق؟ | ٥١٦ |
| ٥١٦ | پورتني صيغه به په سماع باندې محمول وي يا نه؟ | ٥١٦ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| ٥١٧ | د مذكوره تعليق تخريج: | ٥١٧ |
| ٥١٧ | قوله: قال: كيف أنتم إذا لم تجتنبوا ديناراً، ولا درهماً؟ فقيل له: وكيف ترى ذلك كأننا يا أبا هريرة؟ | ٥١٧ |
| ٥١٧ | د تجتنبوا صرفي او لغوي تحقيق: | ٥١٧ |
| ٥١٧ | قوله: قال: إني والذي نفس أبي هريرة بيده عن قول الصادق المصدوق: | ٥١٧ |
| ٥١٧ | قوله: قالوا: عم ذاك؟ | ٥١٧ |
| ٥١٧ | قوله: قال: تنتهك ذمة الله وذمة رسوله صلى الله عليه وسلم فيشد الله عز وجل قلوب أهل الذمة | ٥١٧ |
| ٥١٨ | فيمنعون ما في أيديهم: | ٥١٨ |
| ٥١٨ | ددې معني نور احاديث: | ٥١٨ |
| ٥١٩ | فائدة: | ٥١٩ |
| ٥١٩ | ترجمة الباب سره د تعليق مناسبت: | ٥١٩ |
| ٥٢٠ | باب بلا ترجمة: | ٥٢٠ |
| ٥٢٠ | د ترجمې مقصد: | ٥٢٠ |
| ٥٢٠ | رجال الحديث: | ٥٢٠ |
| ٥٢٠ | ① عبدان: | ٥٢٠ |
| ٥٢٠ | ② أبو حمزة: | ٥٢٠ |
| ٥٢٠ | ③ الأعمش: | ٥٢٠ |
| ٥٢٠ | ④ أبو وائل: | ٥٢٠ |
| ٥٢٠ | ⑤ سهل بن حنيف: | ٥٢٠ |
| ٥٢١ | قوله: قال: سئلت أبا وائل شهدت صفين؟ قال: نعم: | ٥٢١ |
| ٥٢١ | صفين: | ٥٢١ |
| ٥٢١ | قوله: فسمعت سهل بن حنيف يقول: اتمهوا رأيكم.....: | ٥٢١ |
| ٥٢٢ | رجال الحديث: | ٥٢٢ |
| ٥٢٢ | ① عبد الله بن محمد: | ٥٢٢ |
| ٥٢٢ | ② يحيى بن آدم: | ٥٢٢ |
| ٥٢٢ | ③ يزيد بن عبد العزيز: | ٥٢٢ |
| ٥٢٣ | ④ عبد العزيز: | ٥٢٣ |
| ٥٢٤ | ⑤ حبيب ابن أبي ثابت: | ٥٢٤ |
| ٥٢٤ | ⑥ أبو وائل: | ٥٢٤ |
| ٥٢٥ | ترجمة الباب سره مناسبت: | ٥٢٥ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| | رجال الحديث | ۵۲۵ |
| ① | قتيبة بن سعيد | ۵۲۵ |
| ② | حاتم بن اسماعيل | ۵۲۵ |
| ③ | هشام بن عروة عن أبيه | ۵۲۵ |
| ⑤ | أسماء بنت أبي بكر | ۵۲۵ |
| | قوله: قالت: قدمت على أمي: | ۵۲۲ |
| | د حضرت اسماء د مور بی بی مختصر تعارف: | ۵۲۲ |
| | قوله: وهي مشركة: | ۵۲۷ |
| | قوله: في عهد قريش إذ عاهدوا رسول الله صلى الله عليه وسلم ومدتهم: | ۵۲۷ |
| | مع أيها: | ۵۲۷ |
| | قوله: فاستفتت رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالت: يا رسول الله ﷺ، إن أمي قدمت على | |
| | وهي راغبة أفصلها؟ قال: نعم، صليها: | ۵۲۷ |
| | ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: | ۵۲۸ |
| | د حضرت شيخ الحديث صاحب رأي: | ۵۲۹ |

⑧ باب: المصالحة على ثلاثة أيام أو وقت معلوم

| | | |
|---|--------------------------------|-----|
| | د ترجمة الباب مقصد: | ۵۲۹ |
| | د صلحي زيات مدت خومره دي؟ | ۵۲۹ |
| | رجال الحديث | ۵۳۱ |
| ① | احمد بن عثمان بن حكيم | ۵۳۱ |
| ② | شريح بن مسلمه | ۵۳۱ |
| ③ | ابراهيم بن يوسف | ۵۳۱ |
| ④ | أبي: | ۵۳۱ |
| ⑤ | ابو اسحاق: | ۵۳۱ |
| ⑥ | البراء: | ۵۳۱ |
| | د باب د حديث شريف ترجمه: | ۵۳۱ |
| | د جلبان معنی او د دي ضبط: | ۵۳۲ |
| | ترجمة الباب سره د حديث مناسبت: | ۵۳۲ |

⑨ باب: المودعة من غير وقت

| | | |
|--|---------------------|-----|
| | د ترجمة الباب مقصد: | ۵۳۲ |
|--|---------------------|-----|

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|-------------------------------|------|
| ۵۳۲ | په مذکورہ مسئلہ کنبی اختلاف | ۵۳۲ |
| ۵۳۳ | د مذکورہ تعلیق مقصد | ۵۳۳ |
| ۵۳۳ | د مذکورہ تعلیق تخریج | ۵۳۳ |
| ۵۳۳ | ترجمة الباب سره د تعلیق ماسبت | ۵۳۳ |

۲۰ باب: طرح جیف المشرکین فی البئر، ولا یؤخذ لهم ثمن.

| | | |
|-----|--|-----|
| ۵۳۳ | د ترجمه الباب مقصد | ۵۳۳ |
| ۵۳۳ | د جیف ضبط او معنی | ۵۳۳ |
| ۵۳۴ | د جمهورو دلیلونه | ۵۳۴ |
| ۵۳۵ | د حدیث مبارک ترجمه | ۵۳۵ |
| ۵۳۶ | د حدیث شریف د آخری جزء "فانه كان رجلا...." تشریح | ۵۳۶ |
| ۵۳۶ | ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت | ۵۳۶ |
| ۵۳۷ | د باب د حدیث نه مستنبطه یوه فائده | ۵۳۷ |

۲۱ باب: إثم الغدر للبر والفاجر

| | | |
|-----|--|-----|
| ۵۳۸ | د ترجمه الباب مقصد | ۵۳۸ |
| ۵۳۸ | قوله: "أى: سواء كان من يرفل فاجر أو بر، ومن فاجر لبر أو فاجر". | ۵۳۸ |
| ۵۳۹ | رجال الحديث | ۵۳۹ |
| ۵۳۹ | ① ابو الوليد | ۵۳۹ |
| ۵۳۹ | ② شعبه | ۵۳۹ |
| ۵۳۹ | ③ سليمان الاعمش | ۵۳۹ |
| ۵۳۹ | ④ ابو وائل | ۵۳۹ |
| ۵۳۹ | ⑤ عبد الله | ۵۳۹ |
| ۵۳۹ | ⑥ ثابت | ۵۳۹ |
| ۵۳۹ | ⑦ انس | ۵۳۹ |
| ۵۴۰ | د حدیث شریف سند سره متعلق یو اهم وضاحت | ۵۴۰ |
| ۵۴۰ | قوله: عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: لكل غدر لواء يوم القيامة: | ۵۴۰ |
| ۵۴۰ | قوله: قال أحدهما ينصب وقال الآخر: يرى يوم القيامة يعرف به: | ۵۴۰ |
| ۵۴۱ | رجال الحديث | ۵۴۱ |
| ۵۴۱ | ① سليمان بن حرب | ۵۴۱ |
| ۵۴۱ | ② حماد | ۵۴۱ |

| شماره | مضمون | صفحه |
|-------|---|------|
| ۳ | ایوب: | ۵۴۱ |
| ۴ | نافع: | ۵۴۱ |
| ۵ | ابن عمر: | ۵۴۱ |
| | قوله: قال: سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول: لكل غادر لواء ينصب لغدرته: | ۵۴۱ |
| | د "بغدرته" په باء کښې احتمالات: | ۵۴۲ |
| | بیرغ به چرته لگولې شی؟: | ۵۴۲ |
| | د "لکل غادر لواء" مختلفې معنې او مطلبونه: | ۵۴۲ |
| | ترجمة الباب سره د درې وارو احادیثو مناسبت: | ۵۴۳ |
| | د حدیث نه راوتلې شوې بعضې فائدې: | ۵۴۳ |
| | غدر او وعده خلافې کول حرام دی: | ۵۴۳ |
| | د قیامت په ورځ به کوم نسبت سره آواز کولې شی؟: | ۵۴۴ |
| | رجال الحديث: | ۵۴۲ |
| ۱ | علی بن عبد الله: | ۵۴۲ |
| ۲ | جریر: | ۵۴۲ |
| ۳ | منصور: | ۵۴۲ |
| ۴ | مجاهد: | ۵۴۲ |
| ۵ | طاوس: | ۵۴۲ |
| ۶ | ابن عباس رضی الله عنهما: | ۵۴۲ |
| | ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: | ۵۴۲ |
| | براعت اختتام: | ۵۴۹ |
| | د فرض الخمس والجزية والموادعة خلاصه: | ۵۴۹ |

....

فهرس اسماء من ترجم لهم علي حروف الهجاء

| صفحه | مضمون | صفحه | مضمون |
|------|--|------|-------|
| ٢٤٠ | ابن زمعه (اوگوري عبد الله بن زمعه): | | |
| ٢٧٣ | (١) حضرت ابوبرده بن قيس رضي الله عنه: | | |
| ٢٧٣ | (٢) حضرت ابورهم بن قيس رضي الله عنه: | | |
| ١٣٢ | (٣) حضرت ابوالعاص بن الربيع بن عبد العزى رضي الله عنه: | | |
| ٣٣٥ | (٤) حضرت أقرع بن حابس رضي الله عنه: | | |
| ٣٢٤ | (٥) بجاله بن عبده سالم: | | |
| ٤٩٠ | (٦) بسر بن عبيد الله الشامي: | | |
| ٣٨٣ | (٧) جبير بن حيه ثقفى: | | |
| ٣٢٨ | (٨) حضرت جزء بن معاويه: | | |
| ١٣٢ | (٩) حضرت جويريه بنت ابني جهل رضي الله عنها: | | |
| ٤١٠ | (١٠) جويريه بن قدامة: | | |
| ٤٢١ | (١١) الحسن بن عمرو الفقيمي: | | |
| ٤٢٩ | (١٢) حضرت حويصه بن مسعود رضي الله عنه: | | |
| ٢٣٠ | (١٣) خبيب بن عبد الله بن زبير: | | |
| ١٨٣ | (١٤) حضرت خوله بنت ثامر رضي الله عنها: | | |
| ٢٥٢ | (١٥) حضرت رقيه رضي الله عنها بنت سيد البشر صلى الله عليه وسلم: | | |
| ٣٨٢ | (١٦) سعيد بن عبيد الله الثقفي: | | |
| ٣٨٠ | (١٧) عبد الله بن جعفر الرقي: | | |
| ٢٤٠ | (١٨) حضرت عبد الله بن زمعه رضي الله عنه: | | |
| ٤٢٧ | (١٩) حضرت عبد الرحمن بن سهل رضي الله عنه: | | |
| ٥٢٣ | (٢٠) عبد العزيز بن سياه: | | |
| ٤٨٨ | (٢١) عبد الله بن العلاء بن زبر: | | |
| ٣٧٥ | (٢٢) عمرو بن عوف الانتصاري رضي الله عنه: | | |
| ١١٩ | (٢٣) عيسى بن طهمان الجشمي: | | |
| ٣٣٥ | (٢٤) حضرت عيينه بن حصن: | | |
| ٢٢١ | (٢٥) قاسم بن عاصم كليبي: | | |
| ٢٤ | (٢٦) مالك بن اوس: | | |
| ٣٢٢ | (٢٧) مصعب بن الزبير: | | |
| ٣٠٩ | (٢٨) حضرت معاذ بن عفراء: | | |
| ٣١٠ | (٢٩) حضرت معاذ بن عمرو بن الجموح: | | |
| ٢٣٩ | (٣٠) المنذر بن الزبير بن العوام: | | |
| ٣٩٣ | (٣١) حضرت نعمان بن مقرن رضي الله عنه: | | |
| ٣٨٢ | (٣٢) هرمزان: | | |
| ٦٧ | (٣٣) يرفا مولى عمر: | | |
| ٥٢٢ | (٣٤) يزيد بن عبد العزيز بن سياه: | | |

(۶۱) ابواب الخمس

تیز شوي باب سره مناسبت: کتاب الجهاد چونکه ختم شوي دي او د جهاد په ملحقاتو کښې ابواب الخمس هم راځي، په دې وجې امام بخاري به اوس د خمس احکامات بيانوي. د نسخو اختلاف: د اسماعيلي په نسخه کښې عنوان په "کتاب سره معنون دي او اکثر و نسخو کښې د باب لفظ دي او په بعضو نسخو کښې عنوان کښې صرف د "فرض الخمس" کلمات دي، نه د کتاب کلمات شته او نه د باب. بيا په نسخو کښې بسمله هم موجود ده (۱)، البته راجحه داده چې عنوان په "کتاب سره معنون وي. ددې يو وجه خو داده چې امام بخاري وړاندې مختلف بابونه قائم کړي دي چې په هغې کښې د ډيرو موضوع او مقصد د خمس د احکاماتو بيان دي، لهدا ددې ټولو بابونو د يو کتاب لاندې راتلل غوره دي. دويم دا چې مصنف عليه الرحمة عموماً بسمله هم د کتاب د پاره ذکر کوي، نه چې د بابونو د پاره او ددې مقصد ددې بابونو اهميت ښودل دي چې دا بابونه څومره اهم دي چې دا جدا عنوان سره ذکر کول پکار دي.

① باب: فرض الخمس

د خمس لغوي او اصطلاحي تعريف: خمس - بضم الخاء والييم - معنی ده پنځمه حصه يا پنځم جز، لکه څنگه چې ربع يا ثلث وي. او د شريعت په اصطلاح کښې خمس د غنيمت هغه پنځمې حصې ته وئيلې شي چې هغه د تقسيم نه جدا کولې شي (۲)، او باقي څلور حصې په مجاهدينو باندې تقسيمولې شي، د خمس د مصارفو تفصيل په آئنده بابونو کښې راځي. د ترجمه الباب مقصد: حافظ ابن حجر فرمائي چې دلته د ترجمه الباب درې مقصدونه کيدې شي: ① امام بخاري د خمس د فرضيت وخت او تاريخ بيانول غواړي چې د خمس فرضيت کله شوي دي؟

② د خمس د فرضيت کيفيت بيانول غواړي چې په اول وختونو کښې د خمس د فرضيت کيفيت څه وو؟

③ صرف د خمس فرضيت ثابتول او بيانول غواړي چې د غنيمت په مال کښې د خمس ويستل فرض او ضروري دي (۳)، هم دا دريمه رائي د علامه عيني هم ده (۴). د جاهليت دستور او د خمس ابتداء: په جاهليت کښې به د څلورمې حصې دستور وو، يعنې عربو ته به چې په جنگ کښې کوم غنيمت حاصل شو هغه به ئې څلور حصې کولې، درې

(۱) فتح الباري: ۱۹۸/۶، وعمدة القاري: ۱۷/۱۵، والقسطلاني: ۱۸۹/۵، والابواب والتراجم: ۱/۲۰۵ -

(۲) فتح الباري: ۱۹۸/۶، والقاموس الوحيد، مادة خمس، ولسان العرب: ۷۰/۶، مادة خمس، وفيه لغة اخرى، وهي اسكان الميم -

(۳) فتح الباري: ۱۹۸/۶ -

(۴) عمدة القاري: ۱۷/۱۵ -

حصې به د غانمینو وې او یوه حصه به جدا کولې شوه، چې د قبیلې د سردار به وه هغې حصې ته به ئې رباعه وئېله، د بنو نمیر یو شاعر وائی (۱)

انا ابن الرابعین من آل عمرو و فرسان المناهر من جناب

چې زه د آل عمرو د سردارانو او د جناب قبیلې د منبر د شهبسوارانو څوې یم. لیکن حضرت عبدالله بن جحش په یو سريه کښې داسې اوکړل چې هغوی ته کوم مال غنیمت حاصل شو هغه ئې پنځه حصې کړې، څلور حصې خو ئې په غانمینو کښې تقسیم کړې او یوه حصه ئې جدا کړه چې د حضور اقدس ﷺ په خدمت کښې ئې پیش کړه، دا ددې ابتداء ده. (۲)

د خمس فرضیت کله او شو؟ اوس پاتې شوه دا مسئله چې د خمس فرضیت کله او شو په دې کښې اختلاف دې، پورته چې د حضرت عبدالله بن جحش رضی الله عنه د سريې تذکره راغلې ده هغه د دویمې هجری د رجب ده یعنی د غزوة بدر نه دوه میاشتې وړاندې (۳)، په دې سريه کښې چې حضرت عبدالله بن جحش رضی الله عنه د مال غنیمت کومه پنځمه حصه ویستلې وه دا د هغوی خپل اجتهاد وو، دغه وخته پورې د خمس د فرضیت حکم نازل شوې نه وو، ابن اسحاق نقل کړې دی:

”وقد ذکر لی بعض آل عبدالله بن جحش ان عبدالله قال لاصحابه: ان لرسول الله صلى الله عليه وسلم ما غنمنا الخمس، وذلك قبل ان يفرض الله تعالى الخمس من الغنائم، فعزل له الخمس، وقسم سائر الغنیمة بین اصحابه، قال: فوقم رضا الله بذلك“ (۴)

ددې خلاصه دا ده چې حضرت عبدالله خپلو ملگرو مجاهدینو ته اووئیل چې زمونږ په غنیمت کښې به د رسول اکرم پنځمه حصه وی چې هغوی جدا هم کړه او باقی غنیمت ئې تقسیم کړو. فرمائی چې ددې نه پس د دوی په موافقت کښې د الله تعالی حکم هم راغې چې خمس دې ویستلې شی.

لیکن دا حکم کله راغی نو په دې کښې قاضی اسماعیل فرمائی چې د بعضو حضراتو د قول مطابق د خمس د فرضیت حکم د بنو قریظه د غزوې په دوران کښې نازل شوې وو او د بعضو نورو وینا داده چې ددې نه پس دا حکم نازل شوې دې لیکن د قاضی اسماعیل د وینا مطابق زما په خیال کښې ددې واضح حکم د حنین د غنیمتونو په موقع باندې راغلې دې (۵)

(۱) دیوان الحماسة، باب الحماسة: (۱۲۰)۔

(۲) تفسیر ابن کثیر: ۱/۲۵۵، سورة البقرة (۲/۱۷)۔

(۳) فتح الباری: ۶/۱۹۹، ددې غزوې د تفصیلاتو دپاره اوگوری، کشف الباری، کتاب المغازی: ۴۲-۴۶)۔

(۴) فتح الباری: ۶/۱۹۹، والسیرة النبویة لابن هشام: ۲/۶۰۳، سريه عبدالله بن جحش، وطرح التثريب فی شرح التقریب: ۶/۱۹۸)۔

(۵) فتح الباری: ۶/۱۹۹، وشرح ابن ابطال: ۵/۲۴۸)۔

د علامه ابن ابطال رائي: د باب په اولنی حدیث کښې دا راغلې دی، "وكان النبي صلى الله عليه وسلم اعطاني شارقاً من الخمس" حضرت علي فرمائي چې نبي عليه السلام په خمس کښې يوه اوښه ما ته راکړه، ددې په تشریح کښې علامه ابن ابطال فرمائي چې ددې حدیث د ظاهر نه دا معلومېږي چې د خمس مشروعیت په بدر کښې شوې دې لیکن د اهل سیر په دې خبره باندې اتفاق دې چې د بدر په موقع باندې خمس مشروع شوې نه وو.

بیا ابن ابطال د قاضي اسماعیل قول ته ترجیح ورکړې ده چې د غزوه حنین په موقع باندې د خمس د فرضیت حکم نازل شوې وو او د حضرت علي په دې حدیث کښې ئې دا تاویل اوکړو چې په دې حدیث شریف کښې د کومې اوښې ذکر دې نو دا د هغه خمس په اوښانو کښې وه کوم خمس چې د عبدالله بن جحش په سریه کښې ویستلې شوې وو (هم دا موقف

د ابن الملقن هم دې چې هغوی د ابن ابطال په اتباع کښې اختیار کړې دې) د حافظ ابن حجر رائي او ابن ابطال ته جواب: د حافظ ابن حجر رائي دا ده چې د غزوه بدر په موقع باندې د خمس د فرضیت حکم راغلې وو، دا ځکه چې سورة الانفال د بدر په موقع باندې نازل شوې دې او په دې سورت کښې د خمس د فرضیت وضاحت راغلې دې، په دې وجه امام داوودي مالکي په دې باندې یقین کړې دې چې د خمس آیت د بدر په ورځ نازل شوې دې، د تاج السبکی هم دا قول دې، فرمائي چې:

”ثَلَاثُ الْانْفَالِ فِي بَدْرٍ وَغَنَائِمِهَا“^(۲)

د امام کلبی قول هم ددې چې د خمس فرضیت د بدر په موقع باندې نازل شوې وو^(۴) هرچه د ابن ابطال قول دې نو هغه څه عجیبه دې ځکه چې په دې کښې تضاد موندلې کیږي هغه داسې چې په خپله ابن ابطال دا تسلیموي چې د عبدالله بن جحش رضي الله عنه په سریه کښې کوم خمس ویستلې شوې وو او دا سریه لکه څنگه چې وړاندې تیر شو چې د غزوه بدر نه هم وړاندې ده نو بیا به په غزوه بدر کښې د خمس نه کیدلو څه وجه وي؟^(۵)

(۱) قال ابن ابطال رحمه الله: اما قول علي: اعطاني النبي عليه السلام شارقاً من الخمس يومئذ يعني: يوم بدر، فظاهره ان الخمس قد كان يوم بدر، ولم يختلف اهل السير ان الخمس لم يكن يوم بدر، ذكر اسماعيل..... (القاضي) قال: في غزوة بني قريظة حين حكم سعد بن تقيت المقاتلة، وتسبى الذرية - قيل: انه اول يوم جعل فيه الخمس. قال: و احسب ان بعضهم قال: نزل امر الخمس بعد ذلك، ولم يات في ذلك من الحديث ما فيه بيان شرف، و انما جاء امر الخمس يقيناً في غنائم حنين، وهي آخر غنيمة حضرها رسول الله..... واذا لم يختلف ان الخمس لم يكن يوم بدر، فيحتاج قول علي: اعطاني رسول الله شارقاً من الخمس الى تاويل لا يعارض قول اهل السير..... "شرح ابن ابطال: ۵/ ۲۴۸) -

(۲) ارشاد الساري: ۵/ ۱۸۹) -

(۳) فتح الباري: ۶/ ۱۹۹، وارشاد الساري: ۵/ ۱۸۹، وتفسير المنار: ۱۰/ ۵، الانفال: ۴۱) -

(۴) التفسير الكبير للرازي: ۱۵/ ۱۶۶، والكشاف: ۲/ ۲۲۲) -

(۵) فتح الباري: ۶/ ۱۹۹، وارشاد الساري: ۵/ ۱۸۹) -

په دې وجه راجح قول هم هغه دې چې کوم د عامو مفسرينو او د ابن حجر دې.
 د باب احاديث مبارک: ددې نه پس په دې ځان پوهه کړې چې امام بخاري دلته په باب کنبې
 درې احاديث مبارک ذکر کړې دي، چې په هغې کنبې اولنې حديث د حضرت علي عليه السلام دې.
 ۲۹۲۵: (۱) حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ
 الْحُسَيْنِ أَنَّ حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيًّا قَالَ كَانَتْ لِي شَارِفٌ مِنْ
 نَصِيبِي مِنَ الْمَغْنَمِ يَوْمَ بَدْرٍ، وَكَانَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَعْطَانِي شَارِفًا مِنَ
 الْخُمْسِ، فَلَمَّا أَرَدْتُ أَنْ أُبْتَنِي بِفَاطِمَةَ بِنْتِ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَاعَدْتُ رَجُلًا
 صَوَاعًا مِنْ بَنِي قَيْنِقَاعٍ، أَنْ يَرْتَحِلَ مَعِيَ فَنَاتِي بِأَذْخِرٍ أَرَدْتُ أَنْ أُبِيعَهُ الصَّوَاعِينَ،
 وَأُسْتَعِينَ بِهِ فِي وَلِيمَةِ عَرْسِي، فَبَيْنَا أَنَا أَجْمَعُ لِشَارِفِي مَتَاعًا مِنَ الْأَقْتَابِ وَالْفَرَابِ وَالْحِبَالِ،
 وَشَارِفَايَ مُنَاخَانٍ إِلَى جَنْبِ حُجْرَةِ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ، رَجَعْتُ حِينَ جَمَعْتُ مَا جَمَعْتُ، فَإِذَا
 شَارِفَايَ قَدْ اجْتَبَّ أَسْمَتَهُمَا وَبَقَرَتْ خَوَاصِرُهُمَا، وَأَخَذَ مِنْ أَكْبَادِهِمَا، فَلَمَّ أَمْلِكُ عَيْنِي حِينَ
 رَأَيْتُ ذَلِكَ الْمَنْظَرَ مِنْهُمَا، فَقُلْتُ مَنْ فَعَلَ هَذَا فَقَالُوا فَعَلَ حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، وَهُوَ فِي هَذَا
 الْبَيْتِ فِي شَرْبٍ مِنَ الْأَنْصَارِ. فَأَنْطَلَقْتُ حَتَّى أَدْخُلَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -
 وَعِنْدَهُ زَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ، فَعَرَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فِي وَجْهِ الَّذِي لَقِيتُ، فَقَالَ
 النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «مَا لَكَ» فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، مَا رَأَيْتُكَ كَالْيَوْمِ قَطُّ، عَدَا حَمْزَةُ
 عَلَى نَاقَتِي، فَأَجَبْتُ أَسْمَتَهُمَا وَبَقَرْتُ خَوَاصِرَهُمَا، وَهَذَا هُوَذَا فِي بَيْتٍ مَعَهُ شَرِبْتُ. فَدَعَا النَّبِيُّ - صَلَّى
 اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بِرِدَائِهِ فَارْتَدَى ثُمَّ انْطَلَقَ يَمْشِي، وَاتَّبَعْتُهُ أَنَا وَزَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ حَتَّى جَاءَ الْبَيْتَ
 الَّذِي فِيهِ حَمْزَةُ، فَاسْتَاذَنَ فَأَذِنُوا لَهُمْ فَإِذَا هُمْ شَرِبُوا، فَطَفِقَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -
 يَلُومُ حَمْزَةَ فِيمَا فَعَلَ، فَإِذَا حَمْزَةُ قَدْ ثَمِلَ مُحْمَرَّةً عَيْنَاهُ، فَنَظَرَ حَمْزَةُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
 وَسَلَّمَ، ثُمَّ صَعَدَ النَّظَرَ فَنَظَرَ إِلَى رُكْبَتَيْهِ، ثُمَّ صَعَدَ النَّظَرَ فَنَظَرَ إِلَى سُرَّتِهِ، ثُمَّ صَعَدَ النَّظَرَ فَنَظَرَ إِلَى
 وَجْهِهِ ثُمَّ قَالَ حَمْزَةُ هَلْ أَنْتُمْ إِلَّا عَيْدٌ لِأَبِي فَعَرَفَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَنَّهُ قَدْ ثَمِلَ
 ، فَتَكَصَّ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَلَى عَقْبِيهِ الْقَهْقَرَى وَخَرَجْنَا مَعَهُ. (ر: ۱۹۸۳)

رجال الحديث

- ① عبدان: دا عبد الله بن عثمان ملقب په عبدان دې.
- ② عبد الله: دا مشهور محدث حضرت عبد الله بن مبارک دې.
- ③ يونس: دا يونس بن يزيد الايلي دې، ددې درې واړو حضراتو تذکره د بدء الوحي د
 الحديث الخامس لاندې راغلې ده (۲)

(۱) قوله: إِنْ عَلِيًّا.....: الحديث، مر تخريجه في البيوع، باب ما قيل في الصواع -
 (كشف الباري: ۱/ ۴۶۱، ۴۶۳، د يونس ايلي نور حالاتو دپاره اوگوري، كشف: ۳/ ۲۸۲).

۴) الزهري: دا ابن شهاب زهري دي، د دوی تذکره د "بدء الوحى" لاندې تیره شوې ده (۱)

۵) على بن الحسين: دا د حضرت على بن نوسي على بن حسين بن على دي چې زين العابدين علیه السلام سره مشهور دي (۲)

۶) حسين بن على: د نبی کریم ﷺ نوسي مبارک، حضرت حسين بن على علیه السلام دي (۳)

۷) على: دا د نبی کریم ﷺ نوم، حضرت على بن ابی طالب دي، د دوی پوره او تفصیلی حالات په کتاب العلم، باب کتابه العلم کښې تیر شوې دي (۴)

د حديث ترجمه: د حضرت على د پورته حديث تشریح چونکه په مغازی (۵) کښې تیره شوې ده، په دې وجه دلته صرف د هغې په ترجمه باندې اکتفاء کولې شی.

حضرت على علیه السلام فرماني چې ماسره يوه اوښه وه چې د بدر په غنيمت کښې ماته ملاؤ شوې وه، يو دويمه اوښه هم وه چې نبی عليه السلام ما ته په خمس کښې را کړې وه چې کله ما د فاطمه بنت رسول الله ﷺ د رخصتۍ اراده اوکړه نو د بنو قينقاع يو زرگر سره مې دا خبره اوکړه چې هغه ما سره لار شي چې مونږ اذخر گيا راوړو، زما اراده دا وه چې زه به دا گيا (اوښه) په زرگرانو باندې خرڅ کړم او ددې په ذريعې سره به د خپل واده په وليمه کښې څه مدد حاصل کړم.

نو دې دوران کښې چې ما د خپلو دواړو اوښو دپاره پالان، بورئ او بياستي جمع کولې او زما اوښې د يو انصاري په حجره کښې ناستې وې، نو څه چې مې جمع کول هغه مې جمع کړل او واپس شوم نو ناگهانه ما اوکتل چې..... زما د اوښانو گوهانونه (قبونه) پرې کړې شوې دي، د هغوی خيټې خپرلې شوې دي او گولمې، لری وغيره ئې راويستلې شوې وو. ما چې کله دا منظر اوليدو نو په خپلو سترگو مې قابو اونه ساتلې شو ما تپوس اوکړو چې دا کار چا کړې دي؟ خلقو اووئيل چې دا حمزه بن عبدالمطلب کړې دي او هغه د انصارو يو شرابي جماعت (دلي) سره په دې مکان کښې موجود دي.

ددې حالت په ليدلو سره زه د نبی کریم ﷺ په خدمت کښې حاضر شوم، هغوی سره حضرت زيد بن حارثه علیه السلام هم وو، نبی ﷺ زما مخ ليدلو سره زما په غم او خفگان باندې پوهه شو او وې فرمائيل: "مالك؟" په تا څه شوې دي؟ ما ورته اووئيل، يا رسول الله ﷺ! ما د نن ورځ په شان منظر کله هم نه دي ليدلې، حمزه نن زما په دوو اوښو باندې ظلم کړې دي د هغوی قبونه ئې پرې کړې دي او د هغوی خيټې ئې خپرلې دي حمزه او د هغه ملگری دلته په يو کور کښې موجود دي (زما په خبرو اوريدو سره) نبی کریم ﷺ خپل خادر طلب کړو، هغه ئې په سر

(۱) کشف الباری: ۱/۳۲۶، الحديث الثالث.

(۲) د دوی د حالات کتلو دپاره اوگوری، کتاب الفسل، باب الفسل بالصاع ونحوه.

(۳) د دوی د حالاتو کتلو دپاره اوگوری، کتاب التهجد، باب تحريض النبی صلی الله عليه وسلم علی صلوة اللیل.

(۴) کشف الباری: ۴/۱۴۹.

(۵) کشف الباری، کتاب المغازی: ۱۵۶، ۱۶۰.

کړو او روان شو، زه او حضرت زید بن حارثه رضی الله عنهما هم نبی ﷺ پسې وروستو روان شو تردې چې هغه کور ته راغلو چرته چې حمزه رضی الله عنه موجود وو، نبی ﷺ دننه د تلو اجازت طلب کړو نو هغوی ته اجازت ملاؤ شو، وې لیدل چې ټول هلته د شراب نوشی دپاره جمع شوي وو، نبی ﷺ حضرت حمزه رضی الله عنه لره د هغه په دې کار باندې ملامته کول شروع کړل لیکن هغه په نشه کښې وو، د هغه سترگې سرې کیدلې نو هغه نبی ﷺ اولیدو، بیا ئې نظر لږ نور اوچت کړو او د نبی کوندو طرفته ئې اوکتل، بیا ئې نظر لږ نور هم اوچت کړو او د نبی ﷺ د ناف (نوم) طرفته ئې اوکتلو، بیا ئې نظر نور هم اوچت کړو او د نبی ﷺ مخ مبارک طرفته ئې اوکتل، بیا حمزه رضی الله عنه او وئیل "تاسو خلق خو بس هم زما د پلار غلامان یی کنه! نبی ﷺ پوه شو چې اوس په نشه کښې ډوب دې نو نبی ﷺ د هغه ځانې نه واپس شو او مونږ دواړه هم ورسره بهر راووتلو.

ترجمة الباب سره د حدیث مبارک مطابقت: ترجمة الباب سره د حدیث مناسبت په "وكان النبي صلى الله عليه وسلم اعطاني شارقاً من الخمس" کښې دې (۱) چې ددې نه د خمس مشروعیت واضحه کیږي. د باب دویم حدیث مبارک د حضرت عائشه دې

۲۹۲۲: (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ أَبِي شَهَابٍ قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ أُمَ الْمُؤْمِنِينَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - أَخْبَرَتْهُ أَنَّ فَاطِمَةَ - عَلَيْهَا السَّلَامُ - ابْنَةَ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - سَأَلَتْ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ بَعْدَ وَفَاةِ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَنْ يَقْسِمَ لَهَا مِيرَاثَهَا، مَا تَرَكَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - مِنْ أَفْءَاءِ اللَّهِ عَلَيْهِ، قَالَ لَهَا أَبُو بَكْرٍ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ «لَا تُورَثُ مَا تَرَكَنَا صَدَقَةً». فَغَضِبَتْ فَاطِمَةُ بِنْتُ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَهَجَرَتْ أَبَا بَكْرٍ، فَلَمْ تَزَلْ مَهَا جِرَتَهُ حَتَّى تُوَفِّيَتْ وَعَاشَتْ بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - سِتَّةَ أَشْهُرٍ. قَالَتْ وَكَانَتْ فَاطِمَةُ تَسْأَلُ أَبَا بَكْرٍ نَصِيبَهَا مِمَّا تَرَكَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - مِنْ خَيْرٍ وَقَدْ كُنِيَ وَصَدَّقَتْهُ بِالْمَدِينَةِ، فَأَبَى أَبُو بَكْرٍ عَلَيْهَا ذَلِكَ، وَقَالَ لَسْتُ تَارِكًا شَيْئًا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَعْمَلُ بِهِ إِلَّا عَمِلْتُ بِهِ، فَأَبَى أَخْشَى أَنْ تَرَكْتُ شَيْئًا مِنْ أَمْرِهُ أَنْ

(۱) عمدة القارى: ۱۷/۱۵، وارشاد السارى: ۱۹۱/۵۔

(۲) قوله: إن عائشة.....: الحديث، أخرجه البخارى أيضاً، كتاب فضائل اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم، باب مناقب قرابة رسول الله.....، رقم (۳۷۱۱-۳۷۱۲) والمغازى، باب حديث بنى النضير.....، رقم (۴۰۳۵-۴۰۳۶)، و باب غزوة خيبر، رقم (۴۲۴۰-۴۲۴۲) والفرائض، باب قول النبي صلى الله عليه وسلم: لانورث..... (۶۷۲۵-۶۷۲۶) ومسلم، كتاب الجهاد والسير، باب قول النبي صلى الله عليه وسلم: لانورث..... (۴۵۴۵-۳۵۴۳) و ابو داود، كتاب الخراج.....، باب فى صفايا رسول الله.....، رقم (۲۸۹۸-۲۹۶۹) والنسائى، قسم الفئ، رقم (۴۱۴۶)۔

أَزِيغَ. فَأَمَّا صَدَقَّتُهُ بِالْمَدِينَةِ فَذَفَعَهَا عُمَرُ إِلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ، فَأَمَّا خَيْبَرُ وَفَدَكَ فَأَمْسَكَهَا عُمَرُ وَقَالَ هَذَا صَدَقَةٌ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - كَانَتْ لِحَقُوقِهِ الَّتِي تَعْرُوهُ وَنَوَائِبِهِ، وَأَمَرُهَا إِلَى مَنْ وَلِيَ الْأَمْرَ. قَالَ فَهَمَّا عَلَى ذَلِكَ إِلَى الْيَوْمِ. ٣٥٠٨١، ٣٨١٠، ٣٩٩٨، ٤٣٤٦، ٤٣٤٩

رجال الحديث

- ① عبدالعزیز بن عبدالله: دا عبدالعزیز بن عبدالله اویسی عامری رضی اللہ عنہ دې د دوی تفصیلی حالات په کتاب العلم، "باب الحراس علی الحديث" کښې تیر شوې دي. (١)
 - ② ابراهیم بن سعد: د ابراهیم بن سعد بن ابراهیم بن عبدالرحمن بن عوف قرشي زهري رضی اللہ عنہ دې
 - ③ صالح: دا صالح بن کيسان رضی اللہ عنہ دې ددې دواړو حضراتو تذکره په کتاب الایمان، "باب من کراه ان يعودنی الکفر کما یکره....." کښې تیره شوې ده. (٢)
 - ④ ابن شهاب: د ابن شهاب زهري رضی اللہ عنہ تذکره د بدء الوحی د "الحديث الثالث" لاندې تیره شوې ده. (٣)
 - ⑤ عروة: دا عروة بن الزبير بن العوام قرشي رضی اللہ عنہ دې.
 - ⑥ عائشه: دا حضرت عائشه صديقه بنت ابوبکر صديق رضى الله عنهما ده د دواړو ترجمه د بدء الوحی د "الحديث الثاني" لاندې تیره شوې ده. (٤)
- خبرداري: د حضرت عائشې رضی اللہ عنہا دا حديث چې په دې کښې د حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ او د حضرت فاطمه رضی اللہ عنہا مينځ کښې د فدک او د خيبر د زمکو د وراثت په باره کښې تذکره راغلې ده په کتاب المغازی کښې هم راغلې دي، په دې باندې هلته تفصیلی بحث راغلې دي. (٥)
- ترجمة الباب سره د حديث مبارک مطابقت: دلته دا اعتراض شوې دي چې په حديث شريف او ترجمه کښې څه مطابقت نشته ځکه چې په دې کښې د خمس تذکره نشته لیکن ددې جواب دادې چې حضرت فاطمه رضی اللہ عنہا چې د ميراث کومه مطالبه او کره په دې کښې خيبر هم شامل وو، امام زهري رحمته اللہ علیہ ذکر کړې دي چې خيبر د صلح او عنوه په دواړو طريقو سره فتح شوې وو ځکه چې ددې په بعضو علاقو کښې قتال او شو او بعضې علاقې د قتال نه بغير په صلح سره حاصلې شوې، ب: کاره خبره ده چې کومه حصه په قتال سره حاصله شوه په هغې کښې به

(١) کشف الباری: ٤/٤٨ -

(٢) کشف الباری: ٢/١٢٠-١٢٢ -

(٣) کشف الباری: ١/٣٢٦ -

(٤) کشف الباری: ١/٢٩١، د عمروۃ دپاره نور اوگوري، کشف الباری: ٢/٤٣٦ -

(٥) کشف الباری، کتاب المغازی ٤٥٤-٤٦٦

خمس هم جاری شوې وی، دغه شان مطابقت او موندلې شو(۱)
ددې نه علاوه چې ددې حدیث کوم طریق امام بخاری رحمته الله علیه په مغازی کښې ذکر کړې دې، په
هغې کښې د خمس د الفاظو وضاحت موجود دې، "ارسلت (فاطمة) ال ابی بکر تساله مبادئها من
رسول الله صلى الله عليه وسلم، مما اقام الله عليه بالمدينة وفدك، وما بقى من خمس خيبر" (په دې وجه
امام بخاری ددې روایت طرفته اشاره او کړه چې معامله چونکه مشهوره ده، په دې وجه دلته
په اختصار باندې اکتفاء او کړې شو(۲))

د یو تفسیری قول اضافه: د بخاری شریف په ډیرو نسخو کښې دلته د یو تفسیری قول اضافه
هم ده، هغه داسې چې: قال ابو عبد الله: اعتراك: افتعلت، من عورته، فاصبته، ومنه يعرّوه واعتراي.
د ابو عبد الله نه مراد امام بخاری په خپله دې او ددې تفسیری جملې غرض په دې حدیث
کښې وارد شده د یو لفظ "تعروه" وضاحت، ددې مشتقات او معنی بیانول دي.

په دې وجه فرمائی چې تعروه په اصل کښې د عروث یعروه نه دې، نصر ددې باب دې، ددې
معنی ده حاصلول او پتول، ددې نه تعروه دې او اعتراي دې دغه شان د قرآن کریم آیت شریفه: ان
تقول الا اعتراك بعض آلهم تنابؤا (۳) کښې چې کوم لفظ اعتراك دې، ددې اصل هم دا لفظ دې او دا
د امام بخاری عادت دې چې هغه د حدیثو د غریب الفاظو تفسیر د قرآن کریم په غریب
الفاظو سره کوي(۴)

ددې نه علاوه په دې باندې هم ځان پوهه کړې چې دا تفسیر د ابو عبیده د "المجاز" نه نقل
کړې شوې دې لیکن بهر حال د بخاری په نسخو کښې د اعتراك وزن افتعلت ښودلې شوې دې
او په "المجاز" کښې وزن افتعلك ذکر دې او د مذکوره لفظ حقیقی وزن هم دادې(۵)
دریم حدیث د حضرت مالک بن اوس بن حدثان دې.

ددې حدیث نه مخکښې په بعضو نسخو کښې د "قصة فدك" په عنوان سره یو عبارت هم
شته(۶) لیکن ددې عنوان دلته حقیقه څه ضرورت نشته ځکه چې په تیر شوې حدیث کښې

(۱) عمدة القاری: ۱۹/۱۵، وشرح ابن ابطال: ۲۵۲/۵.

(۲) صحیح بخاری، کتاب المغازی، باب غزوة خیبر، رقم (۴۲۴۰-۴۲۴۱).

(۳) عمدة القاری: ۱۹/۱۵.

(۴) هود: ۵۴.

(۵) فتح الباری: ۶/۲۰۴، وارشاد الساری: ۵/۱۹۳، قال العینی فی العمدة (۲۱/۱۵): وقال الجوهری: عرانی هذا الامر، واعتراي: اذا غشيك. وعروت الرجل اعروه عروا: اذا ألمت به، و آتیته طالبا، فهو معرو. وفلان تعروه الاضياف ويعتريه أي: تغشاه. والصحاح للجوهري: ۶۸۴، مادة عر، عری.

(۶) فتح الباری: ۶/۲۰۴، وارشاد الساری: ۵/۱۹۳.

(۷) اوگوری، عمدة القاری: ۲۱/۱۵.

حرف د فدك واقعه مذکور ده، علامه قسطلانی فرمائی، و زاد ابو ذر فی رواية الحموی هنا ترجمة، فقال: "قصة فدك"، وهي زيادة مستغنى عنها بما سبق في الحديث المتقدم^(١)

٢٩٢٧: (٢) حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْقُرَوِيُّ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ أُوَيْسِ بْنِ الْحَدَّاثِ، وَكَانَ مُحَمَّدُ بْنُ جَبْرِ ذَكَرَ لِي ذِكْرًا مِنْ حَدِيثِهِ ذَلِكَ، فَأُتِلَتْ حَتَّى أَذْخَلَ عَلَى مَالِكِ بْنِ أُوَيْسٍ، فَسَأَلْتُهُ عَنْ ذَلِكَ الْحَدِيثِ فَقَالَ مَالِكُ بَيْنَا أَنَا جَالِسٌ فِي أَهْلِ حِينَ مَتَّعَ النَّهَارُ، إِذَا رَسُولُ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ يَأْتِينِي فَقَالَ أَجِبْ أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ. فَأُتِلَتْ مَعَهُ حَتَّى أَذْخَلَ عَلَى عُمَرَ، فَإِذَا هُوَ جَالِسٌ عَلَى رِمَالٍ سَرِيرٍ، لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ فِرَاشٌ مَتَكِيٌّ عَلَى وَسَادَةٍ مِنْ أَدَمٍ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ ثُمَّ جَلَسْتُ فَقَالَ يَا مَالِ، إِنَّهُ قَدِمَ عَلَيْنَا مِنْ قَوْمِكَ أَهْلُ أَيْيَاتٍ، وَقَدْ أَمَرْتُ فِيهِمْ بِرَضَخٍ فَأَقْبِضُهُ فَأَقِيمُهُ بَيْنَهُمْ. فَقُلْتُ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، لَوْ أَمَرْتُ بِهِ غَيْرِي. قَالَ أَقْبِضُهُ أَيُّهَا الْبَرُّ. فَبَيْنَا أَنَا جَالِسٌ عِنْدَهُ أَنَا هُنا حَاجِبُهُ يَرَفَا فَقَالَ هَلْ لَكَ فِي عُثْمَانَ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ وَالزُّبَيْرِ وَسَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ يَسْتَأْذِنُونَ قَالَ نَعَمْ. فَأَذِنَ لَهُمْ فَدَخَلُوا فَسَلَّمُوا وَجَلَسُوا، ثُمَّ جَلَسَ يَرَفَا يَسِيرًا ثُمَّ قَالَ هَلْ لَكَ فِي عَلَى وَعَبَّاسٍ قَالَ نَعَمْ. فَأَذِنَ لَهُمَا، فَدَخَلَا فَسَلَّمَا فَجَلَسَا، فَقَالَ عَبَّاسٌ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، أَقْبِضْ بَيْنِي وَبَيْنَ هَذَا. وَهُمَا يَخْتَصِمَانِ فِيمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ - صلى الله عليه وسلم - مِنْ بَنِي النَّضِيرِ. فَقَالَ الرَّهْطُ عُثْمَانُ وَأَصْحَابُهُ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، أَقْبِضْ بَيْنَهُمَا وَأَرِحْ أَحَدَهُمَا مِنَ الْآخَرِ. قَالَ عُمَرُ تَيْدُكُمْ، أُنْشِدْكُمْ بِاللَّهِ الَّذِي يَأْذِنُهُ تَقُومُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ، هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صلى الله عليه وسلم - قَالَ «لَا تُورِثُ مَا تَرَكَنَا صَدَقَةً». يُرِيدُ رَسُولُ اللَّهِ - صلى الله عليه وسلم - عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - نَفْسَهُ. قَالَ الرَّهْطُ قَدْ قَالَ ذَلِكَ. فَأَقْبَلَ عُمَرُ عَلَى عَلَى وَعَبَّاسٍ فَقَالَ أُنْشِدْكُمْ مَا اللَّهُ، أَتَعْلَمَانِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صلى الله عليه وسلم - قَدْ قَالَ ذَلِكَ قَالَا قَدْ قَالَ ذَلِكَ. قَالَ عُمَرُ فَإِنِّي أَحَدُ ثَلَاثَةٍ عَنْ هَذَا الْأَمْرِ، إِنَّ اللَّهَ قَدْ خَصَّ رَسُولَهُ - صلى الله عليه وسلم - فِي هَذَا الْفَى عِشَى لَمْ يُعْطِهِ أَحَدًا غَيْرَهُ - ثُمَّ قَرَأَ (وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ) إِلَى قَوْلِهِ (قَدِيرٌ) - فَكَانَتْ هَذِهِ خَالِصَةً لِرَسُولِ اللَّهِ - صلى الله عليه وسلم - وَاللَّهُ مَا اخْتَارَهَا دُونَكُمْ، وَلَا اسْتَأْثَرَهَا عَلَيْكُمْ قَدْ أَعْطَاكُمْ مَوَهُ، وَبَثَّهَا فِيكُمْ حَتَّى يَبْقَى مِنْهَا هَذَا الْمَالُ، فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ - صلى الله عليه وسلم - يُنْفِقُ عَلَى أَهْلِهِ نَفَقَةً سَتَرَهُمْ مِنْ هَذَا الْمَالِ، ثُمَّ يَأْخُذُ مَا بَقِيَ فَيَجْعَلُهُ لِمَنْ جَعَلَ مَالُ اللَّهِ، فَعَمِلَ رَسُولُ اللَّهِ - صلى الله عليه وسلم - بِذَلِكَ حَيَاتِهِ، أُنْشِدْكُمْ بِاللَّهِ هَلْ تَعْلَمُونَ ذَلِكَ قَالُوا نَعَمْ. ثُمَّ قَالَ لِعَلِي وَعَبَّاسٍ أُنْشِدْكُمْ مَا بِاللَّهِ هَلْ

(١) ارشاد الساري: ١٩٣/٥ -

(٢) قوله: عن مالك بن اوس..... الحديث. مر تخريجه في كتاب الجهاد. باب المجن، ومن..... -

تَعْلَمَانِ ذَلِكَ قَالَ عُمَرُ ثُمَّ تَوَفَّى اللَّهُ نَبِيَّهٗ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ أَنَا وَلِي رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَبَضَهَا أَبُو بَكْرٍ، فَعَمِلَ فِيهَا بِمَا عَمِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -، وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَنَّهُ فِيهَا لَصَادِقٌ بَارٌّ رَاشِدٌ تَائِبٌ لِلْحَقِّ، ثُمَّ تَوَفَّى اللَّهُ أَبَا بَكْرٍ، فَكُنْتُ أَنَا وَلِي أَبِي بَكْرٍ، فَقَبَضْتُهَا سَنَتَيْنِ مِنْ إِمَارَتِي، أَعْمَلُ فِيهَا بِمَا عَمِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَا عَمِلَ فِيهَا أَبُو بَكْرٍ، وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنِّي فِيهَا لَصَادِقٌ بَارٌّ رَاشِدٌ تَائِبٌ لِلْحَقِّ، ثُمَّ جِئْتُمَانِي تُكَلِّمَانِي وَكَلِمَتُكُمَا وَاحِدَةٌ، وَأَمْرُكُمَا وَاحِدٌ، جِئْتَنِي يَا عَبَّاسُ تَسْأَلْنِي نَصِيْبَكَ مِنْ ابْنِ أَخِيكَ، وَجَاءَنِي هَذَا يُرِيدُ عَلَيَّ أَنْ يُرِيدَ نَصِيْبَ أَمْرَاتِهِ مِنْ أَبِيهَا، فَقُلْتُ لَكُمَا إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ «لَا تُورِثُ مَا تَرَكَنَا صَدَقَةٌ». فَلَمَّا بَدَأَ لِي أَنْ أَدْفَعَهُ إِلَيْكُمَا قُلْتُ إِنَّ شَيْئًا دَفَعْتُهَا إِلَيْكُمَا عَلَى أَنْ عَلَيْكُمَا عَهْدُ اللَّهِ وَمِيثَاقُهُ لَتَعْمَلَانِ فِيهَا بِمَا عَمِلَ فِيهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَبِمَا عَمِلَ فِيهَا أَبُو بَكْرٍ، وَبِمَا عَمِلْتُ فِيهَا مُنْذُ وَلِيْتُهَا، فَقُلْتُمَا أَدْفَعُهَا إِلَيْنَا. فَبِذَلِكَ دَفَعْتُهَا إِلَيْكُمَا، فَأَنْشِدُكُمُ بِاللَّهِ، هَلْ دَفَعْتُهَا إِلَيْهَا بِذَلِكَ قَالَ الرَّهْطُ نَعَمْ. ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيَّ عَلِيٌّ وَعَبَّاسٌ فَقَالَ أَنْشِدُكُمَا بِاللَّهِ هَلْ دَفَعْتُهَا إِلَيْكُمَا بِذَلِكَ قَالََا نَعَمْ. قَالَ فَتَلْتَمِسَانِ مِنِّي قَضَاءَ غَيْرِ ذَلِكَ قَوْلَ اللَّهِ الَّذِي يَأْذِنُهُ تَقْوَمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ، لَا أَقْضِي فِيهَا قَضَاءَ غَيْرِ ذَلِكَ، فَإِنْ عَجَزْتُمَا عَنْهَا فَادْفَعَاهَا إِلَيَّ، فَأَتَى أَكْفِيكُمَا هَا. (ر: ۲۷۴۸)

رجال الحديث

- ① اسحاق بن محمد الفروي: دا اسحاق بن محمد الفروي رحمته الله. د فاء په فتحې، د راء او د واؤ په سکون سره دې (۱)
- خبرداري (يو اهم وضاحت): د فريزي او د قابسي په نسخو کښې دلته قلب واقع شوې دې نو په دې نسخو کښې محمد بن اسحاق الفروي رحمته الله مذکور دې چې وهم دې، صحيح نوم اسحاق بن محمد رحمته الله دې (۲)
- ددې نه علاوه اسحاق بن محمد رحمته الله د امام بخاري رحمته الله داسې شيخ دې چې د هغوی نه دوی په واسطې سره او بغير د واسطې نه دواړو طريقو سره روايت کوي، کتاب الصلح (۳)، کښې يوځانې کښې امام بخاري رحمته الله د اسحاق بن محمد نه د محمد بن عبدالله په واسطې سره روايت نقل کړې دې (۴)
- ② مالک بن انس: دا امام دارالهجرة مالک بن انس دې د دوی تذکره په "بدء الوحي" کښې

(۱) د دوی د حالاتو کتلو دپاره اوگوري، کتاب الصلح، باب قول الامام لاصحابه، اذهبوا بنا نصلح)۔

(۲) عمدة القاری: ۲۳/۱۵، وفتح البای: ۶/۲۰۴، وارشاد الساری: ۵/۱۹۳۔

(۳) کتاب الصلح، باب قول الامام لاصحابه: اذهبوا بنا نصلح، رقم (۲۶۹۳)۔

(۴) فتح الباری: ۶/۲۰۴۔

تیره شوي ده (١)

③ ابن شهاب: د ابن شهاب زهري رضي الله عنه اجمالی تذکره په بدء الوحي کښې تیره شوي ده (٢)
 ④ مالک بن اوس بن الحدثان: دا مشهور تابعي حضرت ابو سعيد مالک بن اوس بن حدثان بن عوف نصري دي (٣)

قوله: وكان محمد بن جبیر ذکر لی ذکرا من حدیثه ذلك، فانطلقت معه حتى

أدخل علی مالک بن أوس، فسألته عن ذلك الحديث: او محمد بن زبیر د هغوی د حدیث څه تذکره ماته کړې وه نو زه هم هغوی سره د مالک بن اوس خدمت ته لاړم او هلته حاضر شوم، بیا مې د هغوی نه د حدیث متعلق پوښتنه او کړه.

محمد بن جبیر نه مراد مشهور تابعي محمد بن جبیر بن مطعم رضي الله عنه دي (٤)
 پورته ذکر شوي عبارت د امام زهري دي واقعه داده چې د باب لاندې ذکر کړې شوي حدیث هغوی د محمد بن جبیر نه هم اوریدلي وو لیکن خواهش دا وو چې د واقعي والا نه ئې هم واوري، ددې دپاره ئې محمد بن جبیر ځان سره کړو او د مالک بن اوس په خدمت کښې حاضر شو، مقصد واضح دي چې امام زهري خپل سند او چټول غوښتل، حافظ فرمائي:

”وفي صنيع ابن شهاب ذلك اصل في طلب علو الاسناد، لانه لم يقتنع بالحديث عنه، حتى دخل عليه، ليشافه

به، وفيه حرص ابن شهاب على طلب الحديث وتحصيله“ (٥)

دلته د ذلك مشاراليه محذوف ده اي الاقي ذکره (٦) يعنى آئنده کړخو کښې چې د کوم حدیث ذکر راځي هغه ما د محمد بن جبیر نه اوریدلي وو.

د ادخل په اعراب کښې دوه احتمالات دي:

① مرفوع دي په دي وجه چې حتی عاطفه ده. مطلب دا دي چې: انطلقت قد خلت،

② منصوب دي، چې حتی د ”إلى أن“ په معنی کښې وی. ابن مالک د نصب وجه راجحه گرځولي ده (٧)

حافظ فرمائي چې د ماضی په ځانې د مضارع صيغه استعمالول د مبالغې په طور دی چې دي وخت کښې ټول صورت حال په پوره توگه ماته حاضر دي (٨)

(١) کشف الباری: ٢٩٠/١، الحديث الثاني: ٨٠/٢ _

(٢) کشف الباری: ٣٢٦/١، الحديث الثالث

(٣) د دوی د حالاتو کتلو دپاره اوگوري، کتاب البيوع، باب ما يذکر فی بيع الطعام والحکرة _

(٤) د دوی د حالاتو کتلو دپاره اوگوري، کتاب الاذان، باب الجهر فی المغرب _

(٥) فتح الباری: ٢٠٤/٦ _

(٦) پورته حواله و ارشاد الساری: ١٩٣/٥ _

(٧) پورته حواله جات، وعمدة القاری: ٢٣/١٥ _

(٨) فتح الباری: ٢٠٤/٦ _

تقال مالک: مالک بن اوس او فرمائیل:

حضرت مالک بن اوس په مشرانو تابعینو کښې دې. د حضرت عمر رضی الله عنه نه کثرت سره روایت کوي، د هغوی په صحبت کښې اختلاف دې، بعضې علماؤ د دوی شمار په صحابه کرامو رضی الله عنه کښې کړې دې لیکن د راجح قول مطابق دوی ته د نبی صلی الله علیه و آله صحبت حاصل شوې نه دې البته د دوی والد صاحب حضرت اوس رضی الله عنه بالاتفاق صحابی دې. د حضرت مالک بن اوس په بخاری شریف کښې دوه روایتونه دي، یو خو د باب حدیث دې، دویم روایت په بیوع^(۱) کښې تیر شوې دې^(۲).

قوله: بینا أنا جالس فی اهلی حین متع النهار: دې دوران کښې چې زه خپل اهل و عیال سره ناست ووم او ورځ شوې وه.

متع. بالیم والتاء المثناة..... والعین المهملة المفتوحات^(۳) معنی ده، "ارتفع" یعنی اوچته شوه، صاحب العین فرمایلې دی چې متع النهار هغه وخت وئیلې کیږي چې کله ورځ او خپږی او د زوال نه مخکښې وخت وی^(۴).

دمسلم او ابوداؤد^(۵) په روایت کښې د "حین تعال النهار" الفاظ راغلې دي^(۶)، معنی واضحه ده. قوله: اذا رسول عمر بن الخطاب یأتیني، فقال: أجب أمير المؤمنين: اچانک ماته د عمر بن خطاب رضی الله عنه قاصد راغی او وې وئیل چې امیر المؤمنین ته حاضر شه. حافظ فرمائی چې ددې قاصد نوم ماته معلوم نه شو، لیکن دا احتمال دې چې مراد یرفا دربان وی، چې د هغه ذکر وړاندې راروان دې^(۷)، حافظ خو دلته احتمالاً یرفا قاصد ګرځولې دې لیکن په هدی الساری کښې ئې په خپله ددې نفی هم کړې ده، او ګوري، هدی الساری: ۳۹، فرض الخمس.

قوله: فانطلقت معه حتی أدخل علی عمر، فاذا هو جالس علی رمال سریر، لیس بینہ و بینہ فراش، متکئ علی وسادة من آدم: نوزده هغې قاصد سره لارم او

(۱) صحیح بخاری، کتاب البیوع، باب ما یذکر فی بیع الطعام والحکرة، رقم (۲۱۳۴).

(۲) فتح الباری: ۲۰۴/۶، وعمدة القاری: ۲۳/۱۵، والانساب للسمعانی: ۴۹۴/۵، النوری، باب النون والصاد (المهملة).

(۳) عمدة القاری: ۲۳/۱۵.

(۴) پورته حواله، و ارشاد الساری: ۱۹۳/۵، و کتاب العین، ۸۳/۲، باب العین والتاء والمیم معهما.

(۵) صحیح مسلم، کتاب الجهاد والسير، باب حکم الفی، رقم (۴۵۷۷)، وسنن ابی داؤد، کتاب الخراج.....، باب فی صفایا رسول الله صلی الله علیه وسلم من الاموال، رقم (۲۹۶۳).

(۶) عمدة القاری: ۲۳/۱۵، وفتح الباری: ۲۰۴/۶-۲۰۵.

(۷) فتح الباری: ۲۰۵/۶.

حضرت عمر رضی الله عنه ته حاضر شوم، نو اومې لیدل چې د کهجورو د ښاخونو نه جوړ شوي کټ باندې هغوی ناست وو، د هغوی او د کټ مینځ کښې څه بستره نه وه، د خرمن نه جوړه شوي تکیې ته ئې ډډه لگولې وه.

فانطلقت معه..... کښې هم هغه خبره ده چې کومه اوس وړاندې تیره شوه، د رفع او نصب په حوالې سره او د مبالغې په حوالې سره چې څنگه زهری ته د خپل ملاقات هره جزئیه یاده ده، دغه شان مالک بن اوس ته هم د خپل او د حضرت عمر رضی الله عنه مینځ کښې چې کوم ملاقات شوي وو، د هغې یو یو جزء یاد او مستحضر دي.

رُمال د راء په ضمې او کسرې سره، جوړ کړې شوې څيز، د رمال سرپر معنی ده هغه کټ چې د کهجوري د ښاخونو نه جوړ شوي وی (۱)

د لیس پینه وپینه فراش دا وضاحت ئې دې دپاره اوکړو چې عموماً او عادة په کټ باندې بستره وي (۲)، لیکن د وخت خلیفه او د نیمې دنیا بادشاه چې په کوم کټ باندې ناست وو نو هغه د بستري نه هم محروم وو. الله اکبر

قوله: فسلمت عليه، ثم جلست، فقال: يا مال! ما ورته سلام اوکړو، بیا کیناستم. حضرت اوفرمائیل اي مالک!

مال په اصل کښې مالک وو، د ترخیم په وجه باندې مال شوې دي. لام لره کسرې سره لوستل هم جائز دی ځکه چې اصل هم دا ده او په لام باندې ضمه وئیل هم جائز دی ځکه چې د ترخیم نه پس دا مستقل اسم جوړ شوې دي، په دې وجې د منادی مفرد اعراب دي ته ورکړې شو (۳)

قوله: إنه قدم علينا من قوم أهل أيبات: ستاسو د قوم څو کورونو والا مونږ ته راغلې دي.

د قوم نه مراد بنو نصر بن معاویه بن بکر بن هوازن دي، د حضرت مالک بن اوس تعلق هم ددې قبیلې سره وو (۴)

د مسلم شریف د جویریې عن مالک په طریقه کښې د "وف أهل أيبات" (۵) الفاظ دي، ددې مطلب دادې چې هغوی په لږه لږه راغلې دي، غالباً ددې خلقو وطن اصلی د قحط ښکار شوې وو، په دې وجې دوی د معاش په تلاش کښې مدینې منورې ته راغلې وو (۶)

(۱) فتح الباری، ۲۰۵/۶، وعمدة القاری: ۲۳/۱۵.

(۲) پورته حواله جات.

(۳) عمدة القاری، ۲۴/۱۵، وفتح الباری: ۲۰۵/۶، والقسطلانی: ۱۹۳/۵، والکرماني: ۷۷/۱۳.

(۴) فتح الباری: ۲۰۵/۶، وارشاد الساری: ۱۹۳/۵.

(۵) صحيح مسلم، کتاب الجهاد والسير، باب حکم الفی، رقم (۴۵۷۷).

(۶) فتح الباری: ۲۰۵/۶، وارشاد الساری: ۱۹۳/۵، وعمدة القاری: ۲۴/۱۵.

قوله: وقد أمرت فيهم برضخ، فاقبضه، فاقسمه بينهم: يقيناً ما د هغوی دپاره د څه امداد حکم جاری کړې دې، د هغې قبضه تاسو واخلي، بیا ئې هغوی کښې تقسیم کړئ.

رضخ: بفتح الراء، وسكون المعجمة، بعدما جاء معجبة. ورکړې او امداد ته وئيلې شی، چې ډیر زیات وی، مقرر شوې نه وی^(۱)

قوله: فقلت: يا أمير المؤمنين، لو أمرت به غیری؟ نو ما او وئیل، امیر المؤمنین! زمانه علاوه بل چاته دا ذمه داری ورکړئ (نو ډیر غوره به وی،

چونکه د امانت د معاملې برداشت کول وو او ذمه داری لویه وه، په دې وجه مالک بن اوس د عذر پیش کولو کوشش او کړو^(۲)

قال: اقبضه أيها البرء: حضرت عمر (حکماً)، او فرمائیل ای سرپه! دا په خپله قبضه کښې واخله. دویم ځل باندې حضرت عمر حکماً حضرت مالک بن اوس ته او فرمائیل چې دا کار به هم تاسو کوئ، نو هغوی د حضرت عمر حکم منلو سره مذکوره امداد په خپله قبضه کښې واخستلو او د خپل قوم په کسانو کښې ئې تقسیم کړو، چونکه قرینه په دې باندې موجود وه په دې وجه هغوی دا تفصیل حذف کړې دې^(۳)

فبيننا انا جالس عند انا حاجبه يرفا: دې دوران کښې چې زه هرکله هغوی سره ناست ووم چې د هغوی دربان یرفا دننه راغی.

يرفا: دا نوم همزه سره او د همزه نه بغير دواړو طريقو سره لوستلې شوې دې لیکن د همزې نه بغير ډیر مشهور دی^(۴)

دا د حضرت عمر رضي الله عنه مولى او دربان وو دوى د نبى ﷺ زمانه موندلې ده بلکه د جاهليت زمانه ئې هم ليدلې ده، لیکن صحبت ئې ثابت نه دې^(۵)

د حضرت ابوبکر صدیق رضي الله عنه د خلافت په زمانه کښې دوى د حضرت عمر فاروق رضي الله عنه سره د حج سعادت هم حاصل کړو^(۶)

حضرت عمر فاروق رضي الله عنه ته په څه طریقي سره دا خبره معلومه شوه چې حضرت یزید بن ابی سفیان رضي الله عنه په یو وخت کښې مختلف او قسماً قسم خوراکونه کوي چې دا کار د زهد او تقوی خلاف دې، ددې وجې نه هغوی یرفا ته او وئیل چې کله د یزید رضي الله عنه د شپې خوراک راشی نو ماته او وایه. د حکم مطابق د خوراک په رارسیدو سره یرفا امیر المؤمنین ته اطلاع

^(۱) پورته حواله جات)۔

^(۲) پورته حواله جات)۔

^(۳) پورته حواله جات)۔

^(۴) عمدة القاری: ۱۵/۲۴)۔

^(۵) پورته حواله، وفتح الباری: ۶/۲۰۵، والاصابة: ۳/۶۷۲، وشرح القسطلانی: ۵/۱۹۴)۔

^(۶) فتح الباری: ۶/۲۰۵، والاصابة: ۳/۶۷۲)۔

ورکړه نو هغوی راغلل او اجازت ئې طلب کړو، په اجازت ملاویدو باندې دننه راغلل، اول ورته د غوښې ثرید پیش کړې شو، چې هغې کښې ورسره حضرت عمر رضی الله عنه هم خوراک اوکړو. بیا ورته کړې شوې غوښه پیش کړې شوه نو حضرت یزید خپل لاس وراوږد کړو لیکن حضرت عمر رضی الله عنه اودریدو او وې فرمائیل، ائې یزیده! دا څه دی؟ د خوراک نه پس بیا خوراک؟ قسم دې د هغې ذات چې د هغه د قدرت په قبضه کښې د عمر ساه ده! که تا د هغه د طریقې مخالفت اوکړو نو ته به هم د هغه د طریقې نه لرې کړې شې! (۱)

د یرفا ذکر د مصنف ابن ابی شیبې رحمته الله د کتاب الصلوة په یو حدیث کښې هم راغلې دې لکه ابن ابی شیبې د یحیی بن سعید عن عیدالله بن عبدالله عن ابيه "د طریق نه نقل کړې دی، هغوی فرمائی، "جئت إلى عمر، وهو يصلي، فجعلني عن يمينه، فجاء یرفا، فجعلنا خلفه" (۲)

د سعید بن منصور رحمته الله د یو حدیث نه معلومیږي چې حضرت یرفا د حضرت امیر معاویه رضی الله عنه په خلافت کښې هم ژوندې وو لکه ابواسحاق (۳) د یرفا نه روایت کوی،

"قال: قال لي عمر: اني ائذلت نفسي من مال الله بمنزلة ولي اليتيم، ان احتجت اخذت منه، وان ايسرت رددته، و ان استغنيت استغنفت" (۴)

قوله: فقال: هل لك في عثمان وعبد الرحمن بن عوف والزبير وسعد بن وقاص يستأذنون؟ قال: نعم. فاذن لهم، فدخلوا، فسلموا وجلسوا: یرفا او وئیل چې (امیر المؤمنین) ایا تاسو ته د عثمان، عبدالرحمن بن عوف، زبیر بن عوام او سعد بن ابی وقاص رضی الله عنهم په ملاقات کښې څه رغبت شته ځکه چې دا حضرات د ملاویدو اجازت غواړي؟ هغوی او فرمائیل بالکل. نو یرفا هغوی ته اطلاع ورکړه، دا حضرات دننه راغلل، سلام ئې اوکړو او کیناستل.

د حضرت عمر رضی الله عنه دربار ته راتلونکي حضرات ټول څومره وو، په دې باره کښې حافظ فرمائی چې ددې حدیث په ټولو طرقو کښې ددې څلورو نه علاوه د بل چا نوم مالیدلې نه دې، سوا د نسائی شریف (۵) او د عمر بن شبة (۶) په یو روایت کښې، چې د عمرو بن دینار عن

(۱) کتاب الزهد لابن المبارك، الجزء الرابع، باب ماجاء فی الفقر: ۲۰۳-۲۰۴، رقم (۵۷۸)۔

(۲) المصنف لابن ابی شیبې: ۵۶۸/۳، کتاب الصلوة، باب ما قالوا: اذا كانوا ثلاثة..... رقم (۴۹۸۲)۔

(۳) د حضرت ابواسحاق عمرو بن عبید الله سبيعي رحمته الله ولادت د عثمانی دور په آخری کلونو کښې شوې دې. کشف الباری: ۲۷۱/۲۔

(۴) السنن الکبری للبيهقي: ۳۵۴/۶، کتاب قسم الفی..... رقم (۱۲۷۹۰) ومعرفة السنن والآثار: ۱۶۴/۵، کتاب قسم الفی..... باب رزق الوالی، رقم (۴۰۱۲) دې اثر لره ابن ابی شیبې هم نقل کړې دې لیکن په هغې کښې د یرفا په ځانې حارثه بن مضرب عبدی دا اثر د حضرت عمر رضی الله عنه نه نقل کړې دې. انظر المصنف: ۴۹۱/۱۷، کتاب السير، باب ما قالوا فی عدل الولی..... رقم (۳۳۵۸۵) رحمه الله تعالى رحمة واسعة۔

(۵) سنن النسائی الکبری، کتاب الفرائض، باب ذکر موارث الانبياء، رقم (۶۳۰۹)۔

(۶) اخبار المدينة: ۱۲۸/۱، رقم (۵۶۵)، خصومة علي و العباس رضي الله عنهما إلى عمر.....۔

ابن شهاب د طریق نه دې، په دې کښې د طلحه بن عبید الله رضی الله عنه د نوم اضافه هم موندلې کيږي. ددې نه علاوه امامی عن ابن شهاب په طریق کښې هم د طلحه بن عبید الله رضی الله عنه ذکر موندلې شوې دې. دغه شان دا روایت ابوداؤد د ابوالبختری د طریق نه نقل کړې دې^(۱) په دې کښې هم د طلحه ذکر موجود دې البته په دې کښې د حضرت عثمان بن عفان ذکر نشته^(۲)

قوله: ثم جلس يرفايسيرا، ثم قال: هل لك في علي وعباس؟ قال: نعم.

فاذن لهما، فدخلوا، فجلسا، فجلسا: بيا يرفا لې ساعت کيناستو، بيا ئې اووئيل آيا تاسو د حضرت علي رضی الله عنه او حضرت عباس رضی الله عنه سره ملاویدل خوښوئ؟ امير المؤمنين او فرمائيل آوجي! نو يرفا دواړو ته دننه د راتلو اووئيل نو دا دواړه حضرات دننه راغلل، سلام ئې اوکړو او کيناستل.

د شعیب بن ابی حمزه د مغازی په روایت کښې "هل لك في علي وعباس" نه پس د "يستاذنان"^(۳) اضافه هم ده چې "هغه دواړه دننه د راتلو اجازت غواړي".

قوله: فقال عباس: يا امير المؤمنين، اقض بيني وبين هذا...: حضرت عباس بن عبدالمطلب رضی الله عنه او فرمائيل، امير المؤمنين زما او د دوی مینځ کښې فيصله اوکړئ.

دلته د باب روایت داسې دې چې "اقض بيني وبين هذا" لیکن د شعیب بن ابی حمزه د روایت الفاظ داسې دی چې "فاستب علي وعباس"^(۴) او د عقيل عن ابن شهاب په طریق کښې د "اقض بيني وبين هذا الظالم، استبا"^(۵) الفاظ دی او د جویریة په روایت کښې "وبين هذا الكاذب، الاثم، الغادر، الخائن"^(۶) الفاظ دی.

ددې ټولو طرقو حاصل دادې چې د حضرت عمر رضی الله عنه او نورو مشرانو په موجودگي کښې حضرت عباس رضی الله عنه حضرت علي رضی الله عنه ته بد رد اووئيل او د هغوی په حق کښې ئې د کاذب، آثم او غادر په شان سخت کلمات استعمال کړل لیکن حضرت علي رضی الله عنه چې حضرت عباس رضی الله عنه ته هرڅه وئيلې وی نو په روایاتو کښې د هغې څه وضاحت نشته، د حافظ د قول مطابق صرف د عقيل یو روایت دې، چې په هغې کښې د "استبا" کلمات دی چې دې دواړو یو بل ته بد رد اووئيل، لکه حافظ وائی:

^(۱) سنن أبی داود، کتاب الخراج.....باب فی صفایا رسول الله صلی الله علیه وسلم.....رقم (۲۹۷۵)۔

^(۲) فتح الباری: ۲۰۵/۶، وشرح القسطلانی: ۱۹۴/۵۔

^(۳) صحيح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث بنی النضیر، ومخرج رسول الله.....رقم (۴۰۳۳)۔

^(۴) پورته حواله۔

^(۵) صحيح بخاری، کتاب الاعتصام بالکتاب والسنة، باب ما یکره من التعمق.....رقم (۷۳۰۵)۔

^(۶) صحيح مسلم، کتاب الجهاد والسير، باب حکم الفی، رقم (۴۵۷۷)۔

“ولم أرى شي من الطرق أنه صدر من علي بن حق العباس شيء، بخلاف ما يفهم قوله في رواية عقيل: استبأ” (۱)
ددې نه علاوه د شعیب روایت هم په دې خبره دلالت کوی چې دې دواړو یو بل ته بدرد
وئیلې دی، “فاستب علي وعباس”

لیکن راجحه خبره داده چې په دې موقع باندې حضرت عباس (علیه السلام) دا مذکوره کلمات وئیلې
دی نه چې حضرت علی (علیه السلام) وئیلې دی، په دې شرط چې ددې صحت تسلیم کړې شی چې
حضرت عباس (علیه السلام) واقعي هم دا کلمات وئیلې دی او حضرت علی (علیه السلام) ته یې بد وئیلې دی.
ایا حضرت عباس (علیه السلام) واقعي دا کلمات وئیلې دی؟ اوس سوال دا دی چې آیا واقعي حضرت
عباس دا مذکوره کلمات وئیلې دی او حضرت علی ته یې بدرد وئیلې دی؟ نو په دې کښې د
علماؤ مختلف اقوال دی:

① علامه عینی فرمائی چې دلته د عبارت تقدیر داسې دي: الکاذب إن لم ينصف (۲) چې دې
دروغزن دي، خیانت گر دي..... که چرته ماسره انصاف اونکړی یعنی د حضرت عباس (علیه السلام)
دا مذکوره کلمات په شرط سره مقید دی.

② علامه مازری دې کلماتو لره د حذف کولو صورت جوړ کړې دي، هغوی فرمائی چې
غالباً دلته بعضې راویانو ته وهم شوې دي او علامه عینی خو دې کلماتو لره حذف کول
واجب گنړی، “يجب إزالة هذه اللفظة عن الكتاب” (۳)

③ مازری مزید دا هم فرمائی چې که دا کلمات محفوظ هم وی نو دا به داسې حمل کړې شی
چې حضرت عباس (علیه السلام) دا مذکوره کلمات د ناز و ادا په طریقه باندې فرمائیلي دي ځکه چې
حضرت علی (علیه السلام) د حضرت دپاره د ځوی په منزله دي ځکه چې حضرت عباس یې خپل سکه
تره وو، د پلار ځوی او د تره وراره ترمینځه داسې کلمات څه لرې خبره نه ده، حضرت عباس
(علیه السلام) چونکه حضرت علی (علیه السلام) په غلطی باندې گنړلو په دې وجه د هغوی غرض دا وو چې
حضرت علی (علیه السلام) منع کړې شی.

④ دغه شان د حضرت عباس (علیه السلام) غرض دا هم کیدې شی چې حضرت علی (علیه السلام) څه کوی نو
که دا ټول قصداً عمداً کوی نو بیا خو په دې مذکوره صفاتو سره متصف دي، او که قصداً نه
وی نو بیا مذکوره صفاتو سره متصف نه دي.

مزید فرمائی چې دا تاویل ځکه ضروري دي چې څه هم اوشو نو دا ټول هرڅه د صحابه
کرامو (علیهم السلام) د یو جماعت په موجودگي کښې اوشو، چې په هغوی کښې د حضرت عمر فاروق
(رضی الله عنه) په شان شخصیت هم وو او نور جلیل القدر صحابه کرام (رضی الله عنهم) او لوښې لوښې هستي هم
موجود وي، ددې ټولو حضراتو په موجودگي کښې ددې واقعي پېښیدل او ددې حضراتو
پرې تنبیه او خبرداري نه کول په سمجه او پوهه کښې نه راځي، مازری لیکي:

① (فتح الباری: ۶/۲۰۵)۔

② (عمدة القاری: ۱۵/۲۴)۔

③ (پورته حواله)۔

ولا بد من هذا التاويل، لوقوع ذلك ببعض الخليفة ومن ذكر معه، ولم يصدر منهم إنكار لذلك، مع ما علم من تشددهم في إنكار المنكر^(١)، وهما يختصان فيما أفاء الله على رسوله صلى الله عليه وسلم من بقى النضير او دې دواړو د بنو نضير په هغې مال فې کښې جهگړه کوله کوم چې الله تعالى نبي کريم ﷺ ته ورکړې وو.

په روايت کښې اختصار: دلته په روايت کښې اختصار دې ځکه چې په دې کښې صرف د بنو نضير د مال فې ذکر دې او مراد ترينه د نبي کريم ﷺ ملکيتي زمکې دي، چې په هغې کښې د بنو قريظه، بنو نضير زمکې چې په مدينه منوره کښې وې، د فدک او د خيبر خمس وغيره هم شامل دي، علامه عيني د امام نسفي په حوالې سره فرمائي:

وقال ابن عباس في قوله (وما أفاء الله على رسوله منهم) هو من أموال الكفار، وأهل القرى. وهم بنو قريظة والنضير وهما بالمدينة، وفدك، وخيبر، وقرى عريضة، وينبع^(٢) فقال الرهط عثمان وأصحابه: يا امير المؤمنين، اقض بينهما، وأرح أحدهما من الآخر

جماعت يعنی حضرت عثمان رضی اللہ عنہ او د هغوی ملگرو او وئیل، امیر المؤمنین! ددې دواړو حضراتو مینځ کښې فیصله او کړئ او یو ته د بل نه آرام ورکړئ.

دلته په روايت کښې د "الرهط" لفظ دې او د مسلم شريف په روايت کښې "القوم" راغلې دې، دغه روايت کښې ددې کلماتو اضافه هم نقل ده، "فقال مالك بن اوس: يخيّل الى أنهم قد كانوا قد موهوم لذلك"^(٣) او د ابوداؤد شريف په روايت کښې دې: "فقال العباس: يا امير المؤمنين، اقض بيني وبين هذا. يعني عليا. فقال بعضهم: أجل يا امير المؤمنين، فاقض بينهما وأرحهما"^(٤) ددې نه ددې حضراتو د تشریف راوړلو مقصد واضحه کيږي چې دا حضرات د سفارش دپاره راغلې وو، چې د حضرت عباس رضی اللہ عنہ او د حضرت علي رضی اللہ عنہ مینځ کښې څه واضحه فیصله او کړي شي چې دا جهگړه ختمه شي او خپل مینځ کښې تعلقات نور خراب نه شي^(٥) حافظ ابن حجر د مسند ابن ابي عمر د يو روايت چې د معمر عن الزهري د طريق نه روايت دې په حوالې سره ليکلي دي چې حضرت زبير بن العوام رضی اللہ عنہ "اقض بينهما" فرمائي وې، په

(١) پورته حواله، وفتح الباری: ۲۰۵/۶، وشرح النووی علی مسلم: ۹۰/۲، وكذا انظر حاشية السندی علی صحيح مسلم، المطبوعة مع مسلم: ۳۶۶/۲.

(٢) الحشر/۶.

(٣) عمدة القاری: ۲۴/۱۵، وتنوير المقياس من تفسير ابن عباس، الحشر/۳، ۸۶/۲، وأحكام القرآن للرازي:

۵۷۴/۳، ومن سورة الحشر

(٤) مسلم شريف، كتاب الجهاد والسير، باب حكم الفئ: رقم (۴۵۷۷).

(٥) سنن أبي داود، كتاب الخراج والفئ و الامارة، باب فی صفایا رسول الله صلى الله عليه وسلم رقم (۲۹۶۳)

(٦) فتح الباری: ۲۰۵/۶، وعمدة القاری: ۲۴/۱۵، وتكملة فتح الملهم: ۴۹/۳.

دې سره ددې خبرې تعین او شو چې په قوم (وله) کښې خبره چا شروع کړې وه (۱)
 فقال الرهط عثمان واصحابه کښې عثمان واصحابه د محذوف مبتدا دپاره خبر دې، ای: هم عثمان
 واصحابه المذکورون.

البته دا د الرهط نه بدل یا عطف بیان هم کیدې شی (۲)
 وار د امر صیغه ده. د اراحه افعال نه او و او عاطفه دې. مطلب دادې چې دا دواړه په کومه
 جهگړه کښې دی، ددې نه ورته آرام ورکړی (۳)
 قال عمر: تیدکم: حضرت عمر او فرمائیل، لږ صبر او کړی.

د تیدکم ضبط او معنی: تیدکم د تاء مثناة د فتحې او د کسري سره او یاء ساکنه ده او دال
 مفتوحه یا مضمومه. یعنی تیدکم، دا اسم فعل دې د روید په شان، ددې معنی ده صبر او کړی.
 د ابوذر په روایت کښې دا کلمه تیدکم. بفتح المثناة وکس التحتانية مهموز وفتح الدال. مروی ده.
 ابن التین فرمائی چې ددې اصل تیدکم دې چې د التؤدة مصدر نه مشتق دې. ددې معنی
 نرمی ده. ابن الاثیر هم دا خبره اختیار کړې ده (۴)

قوله: أنشدکم بالله الذی بأذنه تقوم السماء والأرض، هل تعلمون أن رسول
 الله صلی الله علیه وسلم قال: لا نورث، ما ترکنا صدقة؟ یرید رسول الله صلی
 الله علیه وسلم نفسه. قال الرهط: قد قال ذلك: زه ستاسو نه د هغې ذات په

واسطه درکولو سره پوښتنه کوم چې د چا په حکم سره زمکې او اسمانونه قائم دی چې آیا
 تاسو ته پته لگی چې نبی کریم ﷺ فرمائیلې وو چې مونږ نه کومه ترکه پاتې شی نو په
 هغې کښې وراثت نه جاری کیږي، هغه خو صدقه ده؟ ددې نه نبی ﷺ خپل ذات مبارک مراد
 اخستلې وو، حاضرینو او وئیل، بالکل، نبی کریم ﷺ دغه شان فرمائیلې وو.

انشدکم کښې روایت د شین د ضمی سره دې، دا باء سره او د باء نه بغیر دواړو طریقو سره
 مستعمل دې نشدتک الله او نشدتک بالله ددې معنی ده استلکم بالله چې زه د الله تعالی په نوم
 مبارک سره تپوس کوم، درخواست کوم او د هغه واسطه درکوم.
 ددې نه علاوه دا لفظ د باب افعال نه هم مستعمل دې، یعنی د همزه په ضمی او د شین په
 کسري سره (مضارع متکلم) نووی ددې وضاحت کړې دې (۵)

(۱) فتح الباری: ۲۰۵/۶.

(۲) عمدة القاری: ۲۴/۱۵.

(۳) پورته حواله و. تکمله فتح الملهم: ۴۹/۳.

(۴) عمدة القاری: ۲۴/۱۵. وفتح الباری: ۲۰۶/۶. والنهایة فی غریب الحدیث.....: ۱/۱۷۸. باب التاء مع
 الهمزة. مادة تند. وشرح القسطلانی: ۱۹۴/۵.

(۵) عمدة القاری: ۲۴/۱۵. وارشاد الساری: ۱۹۴/۵. وشرح النووی علی مسلم: ۹۰/۲.

په لاثوړ کښې روایت د نون سره دې، یعنی د جمع متکلم صیغه ده، امام قرطبی فرمائی چې ددې نه مراد د انبیاء کرامو ﷺ جماعت دې^(۱)، لکه په یو روایت کښې دا الفاظ هم راغلې دي، «إنا معشر الانبياء لاثوړ»^(۲) ددې نه علاوه ابن عبدالبر د ابن شهاب عن مالک بن اوس عن عمر د طریق نه یو حدیث نقل کړې دې، د هغې الفاظ نور هم زیات واضح دي، فرمائی، «إنا معشر الانبياء، ماترکنا صدقة»^(۳).

البته د حضرت حسن بصری رحمته الله مذهب دادې چې دا د حضرت نبی کریم ﷺ سره خاص دې، په دې کښې نبی سره نور انبیاء ﷺ شامل نه دي، د هغوی استدلال د قرآني آیتونو پورې ورېځ من آل یعقوب^(۴) او (دورث سلیمان داود)^(۵) نه دې.

لیکن د امت جمهور علماؤ دې آیتونو لره د میراث علم، نبوت، حکمت، یحیی علیه السلام دپاره، او د مارغانو خبرې اترې د حضرت سلیمان دپاره، باندې حمل کړې دي، لهذا راجحه خبره هم داده چې د انبیاء کرامو ﷺ په مال کښې میراث نه جاری کیږي، هغه صدقه وی^(۶) انبیاء وارثان کیدې شی؟ پورته تفصیل په دې باره کښې وو چې د انبیاء کرامو ﷺ څوک وارث کیدې شی یا نه، د هغوی په مال کښې وراثت جاری کیږي یا نه. اوس سوال دادې چې آیا انبیاء کرام ﷺ هم وارثان نه شی کیدې چې د خپل مورثینو د میراث نه مال اومومی؟

په دې مسئله کښې زمونږ د حضراتو احنافو، کثالثه سوادهم، اقوال دوه قسمه دي: علامه شامی په خپلو رسالو کښې فرمایلې دي چې نبوت د ارث نه مانع دې البته دا د وارثیت یا موروثیت دواړو نه مانع دې یا صرف د موروثیت نه؟ نو د شوافعو حضراتو میلان دویم طرفته دې چې نبوت صرف د موروثیت نه مانع دې د وارثیت نه مانع نه دې..... لیکن په دې مسئله کښې زمونږ د امامانو اقوال مختلف دي:

لکه د ابن نجیم د عبارت نه دا معلومیږي چې انبیاء کرام ﷺ نه وارثان جوړیدې شی او نه مورثین، فرمائی، «کل إنسان يرث ويورث، الا الانبياء عليهم السلام لا يرثون ولا يورثون» دغه شان فرمائی چې دا خبره چې منقول ده چې نبی د حضرت خدیجه د مال وارث جوړ شوې و نو دا خبره صحیح نه ده، بلکه هلته خو داسې شوې وه چې هغې خپل ټول مال د صحت په وخت کښې نبی ته هبه کړې وو^(۷).

(۱) عمدة القاری: ۲۴/۱۵، والمفهم للقرطبی: ۸۵/۱۱، باب ما یصرف فیہ الفی.....

(۲) وتامه: ماترکنا فهو صدقة انظر سنن النسائی الکبری، کتاب الفرائض، باب ذکر موارث الانبياء، رقم (۶۳۰۹) وفتح الباری: ۸/۱۲، کتاب الفرائض.

(۳) التمهید لابن عبدالبر: ۱۷۵/۸، حدیث ثامن لابن شهاب عن عروة.

(۴) مریم/۶.

(۵) النمل/۱۶.

(۶) عمدة القاری: ۲۴-۲۵، وارشاد الساری: ۵/۱۹۴، و التمهید لابن عبدالبر: ۸/۱۷۴-۱۷۵.

(۷) الاشباه والنظائر مع شرحه للحموی: ۲/۴۹۶، الفن الثانی، کتاب الفرائض، رقم (۱۷۸۲).

بل طرفته د ابن الکمال او سكب الانهر د عبارتونو نه معلومېږي چې انبياء کرام ﷺ هم د عوامو په شان وارثان جوړېدې شي (۱)

د شوافعو او موالکو مذهب پورته د علامه شامی په عبارت کښې تیر شو چې شافعيه د انبياء کرامو دپاره وارثيت صحيح گنړي، صاحب د "الاقتناع" علامه شربيني فرمائي:

"..... أن الناس في الارث أربعة أقسام: منهم من يرث ويورث، وعكسه فيهما، ومنهم من يرث ولا يرث، وعكسه..... والرابع الانبياء عليهم السلام، فانهم يرثون ولا يورثون" (۲)

د موالکو مذهب هم په دې مسئله کښې د شوافعو په شان دې، د هغوی په نزد هم دا راجحه ده چې انبياء کرام ﷺ وارثان کيدې شي، علامه دردير په الشرح الكبير کښې د نبی ﷺ په خصوصياتو کښې ليکلې دي: "وبان لا يرث، وكذا غيره من الانبياء" (۳)، ددې په وضاحت کښې علامه دسوقي فرمائي چې ددې عبارت تقاضه داده چې هغوی وارثان کيدې شي، ځکه چې دردير دلته په "لا يرث" باندې اقتصار کړې دې چې ددې مقتضى "يرث" ده. هم دا راجحه هم ده ځکه چې دا خبره ثابته ده چې نبی کریم ﷺ ته د خپل والد محترم په ميراث کښې ام ايمن برکته حبشه ملاؤ شوې وه، او دې سره سره څه چيلی وغيړه هم ملاؤ شوې وې (۴) ابن سعد د ام ايمن په باره کښې فرمائي:

"قالوا: وكان رسول الله صلى الله عليه وسلم ورثها عن ابيه.....، فاعتق رسول الله صلى الله عليه وسلم ام ايمن حين تزوج خديجة..... رضى الله عنها" (۵)

د حضرت گنګوهی وائي: زمونږ په مشائخو کښې حضرت گنګوهی ﷺ هم په دې مسئله کښې د شوافعو او موالکو په شان ددې خبرې قائل دي چې انبياء کرام ﷺ وارثان کيدې شي، مورث کيدې نه شي، فرمائي:

"اختلف العلماء في توريث الانبياء من غيرهم، فقال بعضهم: لا يرثون كما لا يورثون، وروا نحن معاشر الانبياء، لا يرث ولا يورث، والصحيح ان هذه اللفظة غير ثابتة....." (۶)

(۱) رسائل ابن عابدين: ۲/۲۰۲، الرحيق المختوم شرح قلاند المنظوم، فصل في موانع الارث، ورد المختار، كتاب الفرائض، (تمه): ۵/۵۴۳، جملة الموانع حينئذ ستة.....)

(۲) الاوجز: ۱۷/۵۴۴، والاقتناع: ۲/۲۸۵، كتاب بيان احكام الفرائض، القول في موانع الارث الحقيقية) _

(۳) الشرح الكبير مع الدسوقي: ۲/۵۴۱، باب الخصائص) _

(۴) پورته حواله، والاوجز: ۱۷/۵۴۴، وفي السيرة الحلية: ۱/۵۲، باب وفاة والده صلى الله عليه وسلم: وترك عبدالله خمسة اجمال، وقطعة من غنم، فورث ذلك رسول الله صلى الله عليه وسلم من ابيه (۳) _

(۵) الطبقات الكبرى لابن سعد: ۸/۲۲۳، ذكرا ام ايمن، والاصابة: ۴/۴۳۲، فصل فيمن عرف بالكنية من النساء، الا ان فيه ورثها عن امه (۳) _

(۶) الكوكب الدرر: ۳/۱۰۳-۱۰۴، كتاب الفرائض، تحت رقم (۲۱۰۵) _

په دې عبارت کښې د هغه اللفظة نه مراد "لانوړث" دې، دا غیر ثابت دې او عام روایات ددې لفظ د اضافې نه خالی دی، په عامو روایاتو کښې صرف د لانوړث کلمات موندلې کېږي^(۱)

دغه شان علامه گنګوهی د حدیث نبوی "سلونی من مالی" په تشریح کښې فرمائی:

"والایراد بانه صلى الله عليه وسلم لم یکن له مال سیاهمکه توهم، أفلم یکن له صلى الله عليه وسلم مافیہ اکلہ

وشربه، والترکة القأصابه من اییه؟ وما اشتهر من "إدالانوړث، ولانوړث" فالکلمة الأولى منها لم تثبت"^(۲)

خلاصه دا شوه چې د حضرت گنګوهی موقف په دې مسئله کښې هم هغه دې چې کوم موقف د شوافعو او د موالکو دې چې انبیاء کرام عليهم السلام وارثان کیدي شي^(۳)

یو سوال او د هغې جواب: په دې پورته مذکوره موقف باندې سوال اعتراض کېږي چې د نبی کریم صلی الله علیه و آله د دریو لونړو مبارکو حضرت زینب، حضرت رقیه او حضرت ام کلثوم رضی الله عنهن وفات خو د نبی صلی الله علیه و آله په ژوند مبارک کښې شوې وو لیکن په روایاتو کښې دا خبره چرته هم نشته چې نبی کریم صلی الله علیه و آله د هغوی په میراث کښې څه حصه اخستلې وی.

نو علماو د سیرت ددې جواب دا ورکړې دې چې اول خو دا خبره تسلیمه نه ده چې نبی کریم صلی الله علیه و آله د هغوی په میراث کښې څه حصه نه ده اخستلې.

دویمه دا چې که دا دعوی تسلیمه هم کړې شي چې نبی د هغوی میراث نه وو اخستلې نو کیدي شي چې د استغناء په طور ئې نه وی اخستلې لیکن بهر حال په دې سره د وارثیت نفی نه شي کیدي^(۴)، والله اعلم بالصواب

د "صدقة" اعراب: حدیث نبوی "لانوړث ما ترکنا صدقة" کښې لفظ د صدقة مرفوع دې، ملاعلی قاری فرمائی، دا رفعي سره دې او جمله مستانفه ده، گویا که نبی صلی الله علیه و آله چې کله او فرمائیل، "لانوړث" نو قدرتی طور باندې دا سوال پیدا شو چې بیا به ستاسو د ترکې څه کیږي؟ نو جواب اوکړې شو چې "ما ترکنا صدقة" چې مونږ څه پریرېدو نو هغه صدقه ده.

دا لفظ د نصب سره هم مروي دې، په دې صورت کښې به د عبارت تقدیر داسې شي "ما ترکناه مهذول صدقة" نو خبر (مهذول) حذف کړې شو او صدقه (د نصب په صورت کښې) حال شو او د خبر په عوض کښې باقی پاتې شو.....

د شیعہ شنیعه دا وینا چې په دې جمله کښې ما نافیہ ده او لفظ د صدقة د ترکنا مفعول به

^(۱) تعليقات الكوكب الدرر للکاندهلوی: ۳/ ۱۰۴، وكذا انظر اوجز المسالك: ۱۷/ ۵۴۵) _

^(۲) الكوكب الدرر: ۴/ ۲۲۹، كتاب التفسير، سورة الشعراء، تحت قوله صلى الله عليه وسلم: سلونی من مالی

^(۳) تعليقات الكوكب: ۴/ ۲۲۹، والاوجز: ۱۷/ ۵۴۵) _

^(۴) تعليقات الكوكب: ۴/ ۲۳۰، والبذل: ۱۰/ ۷۳، كتاب الفرائض، باب: فی میراث ذوی الارحام، رقم (۲۹۰۲)، والاوجز: ۱۷/ ۵۴۶، والسيرة الحلبية: ۱/ ۵۲، باب وفاة والده صلى الله عليه وسلم) _

کیدو په وجه منصوب دې نو دا بهتان او افتراء ده، د هغوی د رد دپاره دا هم کافی ده چې په اکثر روایاتو کېنې تر ګناه د ضمیر منصوب سره راغلې دې چې ضمیر عائد دې او ددې مرجع ما موصوله ده.

ددې نه علاوه په بعضې روایتونو کېنې "فهو صدقة" راغلې دې^(۱) ددې خو په مرفوع کیدو کېنې څه شک نشته چې هو ضمیر مبتداء ده او صدقة ئې خبر دې. دغه شان هغه احادیث چې په هغې کېنې ددې قسمه صراحت راغلې دې: **إنا معشر الانبياء، لا نورث** ددې ټولو خلاصه داده چې دلته لفظ صدقة اکثر روایتونو کېنې مرفوع دې او ما موصوله ده، نه چې مانافیه ده^(۲).

قوله: فأقبل عمر على علي وعباس، فقال: أنشدكم الله، أتعلمان أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قد قال ذلك؟ قالوا: قد قال ذلك...: بيا حضرت عمر رضي الله عنه د حضرت علي رضي الله عنه او حضرت عباس رضي الله عنه طرفته متوجه شو او وې فرمائیل، زه ستاسو دواړو نه د الله تعالی په نامه سره تپوس کوم چې آیا تاسو دواړو ته معلومه ده چې نبی کریم صلی الله علیه و آله مذکوره خبره ارشاد فرمائیلې وه؟ هغوی دواړو او فرمائیل، بالکل ئې ارشاد فرمائیلې وه. اول حضرت عمر رضي الله عنه د سفارشیانو وړاندې مذکوره سوال کیخودو چې آیا تاسو د نبی صلی الله علیه و آله دا فرمان اوریدلې وو چې "لا نورث، ماترکنا صدقة؟" چې هرکله هغوی د اوریدلو اقرار او کړو نو هم دا سوال ئې د حضرت علي رضي الله عنه او حضرت عباس رضي الله عنه نه هم او کړو، چې د هغې جواب دې دواړو حضراتو هم دا ورکړو چې مونږ دا خبره د نبی کریم صلی الله علیه و آله نه اوریدلې ده، مونږ ددې تصدیق کوو. دا د وړاندې خبرې دپاره یو قسمه تمهید دې د **ذلك** مشارالیه حدیث لا نورث، ماترکنا صدقة^(۳) ده.

قوله: قال عمر: فأنى أحدكم عن هذا الأمر: إن الله قد خص رسوله صلى الله عليه وسلم في هذا الفئ بشئ لم يعطه اخدا غيره، ثم قرء (وما أفاء الله على رسوله منهم - ألى قوله - قدیر) فكانت هذه خالصة لرسول الله صلى الله عليه وسلم: حضرت عمر او فرمائیل، زه تاسو ته په دې معامله کېنې وایم، الله تعالی د خپل

^(۱) انظر الموطأ، کتاب الکلام، باب ماجاء فی تركة النبی صلی الله علیه وسلم، رقم (۱۸۰۸)۔

^(۲) مرقاة المفاتیح: ۱۲۹/۱۱-۱۳۰، کتاب الفضائل والشمائل، رقم (۵۹۷۶)، وشرح الطیبی: ۱۹۵/۱۱، والواجز: ۵۳۵/۱۷، والتعلیق المجد: ۳۱۹۔

^(۳) عمدة القاری: ۲۵/۱۵، وارشاد الساری: ۱۹۴/۵۔

رسول پاک ﷺ دپاره په دغه مال فی کنبې څه مخصوص حصه مقرر کړې وه، چې په هغې کنبې هغوی چاته هم ورکړې نه وه په دې وجه داصرف او صرف د نبی کریم ﷺ سره خاص وه. په عبارت کنبې ذکر کړې شوې آیت پوره دغه شان دې:

وما افاء الله على رسوله منهم فمأ او جفتم عليه من خيل ولا ركاب ولكن الله يسلط رسله على من يشاء، والله على كل شيء قدير^(۱)

او کوم مال چې الله تعالی خپل رسول پاک ﷺ ته د دوی نه ورکړې دې، په دې باندې تاسو نه اسونو ته منډه ورکړې ده او نه اوبنانو ته، لیکن خپلو رسولانو ته په چا باندې چې او غواړي غلبه ورکوي او الله پاک ته په هر هر څیز باندې پوره قدرت حاصل دې.

پورته آیت کریمه چې څنگه د مال فی تعریف ته شامل دې نو دغه شان په دې کنبې ددې خبرې وضاحت هم راغی چې دا مال به د نبی کریم ﷺ دپاره خالص وو او په دې کنبې د هیچا څه حق نه وو، نبی ﷺ چې دا مال څنگه صرف کوي نو هغوی ته ددې اختیار وو او په هغوی باندې دا منحصر وه، د باب د حدیث د جملې "فكانت هذه خالصه لرسول الله صلى الله عليه وسلم" مطلب هم دا دې^(۲)

اوس دا خبره ذهن ته راځي چې نبی کریم ﷺ به په دې مال باندې څه کول؟ نو ددې جواب دادې چې دا مال به د هغوی په نان نفقه او د هغوی د اهل و عیال په نان نفقه کنبې استعمالیده او څه به چې باقی پاتې شو نو هغه به ئې د مسلمانانو په مصلحتونو کنبې خرچ کوو لکه څنگه چې وړاندې روایت کنبې راځي.

والله ما احتازها دونکم، ولا استاثريها علیکم، قد اعطاکموها، وبشها فیکم لیکن په الله قسم نبی کریم ﷺ دا مال صرف د خپل ځان دپاره جمع کړې نه وو او نه ئې خپل ذات ته په تاسو باندې ترجیح ورکړې وه، بلکه دا مال هغوی هم تاسو ته درکړو او په تاسو کنبې ئې تقسیم کړو.

د مختلفو الفاظو ضبط او معنی: احتاز کنبې دوه روایتونه دي:

① خاء مهمله او زاء معجمه سره ددې مصدر حیالۃ دې، ددې معنی ده جمع کول. د اکثر روایت هم دادې.

② د کشمیهني په روایت کنبې دا لفظ خاء معجمه او راء مهمله سره دې، یعنی اختار، ددې معنی ده اختیارول^(۳)

د استاثرمعنی ده خپل ځان ته ترجیح ورکول^(۴)

^(۱) الحشر/۶-

^(۲) عمدة القاری: ۲۵/۱۵-

^(۳) پورته حواله، وفتح الباری: ۲۰۶/۶، وارشاد الساری: ۱۹۵/۵-

^(۴) عمدة القاری: ۲۵/۱۵، وارشاد الساری: ۱۹۵/۵-

په اعطا کړو، کښې هم دوه روايتونه دي:

① اعطا کړو، په دې صورت کښې به د ضمير مرجع اموال الفی وی.

② اعطا کړو، په دې صورت کښې به مرجع فی وی^(۱)، په دواړو صورتونو کښې څه قباحت نشته.

د بشپړه معنی ده: فرقها یعنی تقسیم ئې کړل، چې د بثیث بشپړه (ثاء مثله مشدده سره) نه دي^(۲) او مطلب دادې چې دا اموال فی اگرچه د نبی کریم د ذات اقدس سره خاص وو لیکن په دې سره به نبی کریم درشته دارو او غیررشته دارو دواړه قسمه خلقو معاونت او امداد فرمائیلو، د نسائی شریف^(۳) د عکرمه بن خالد عن مالک بن اوس د طریق نه ددې تأیید کړې^(۴).

قوله: حتی بقي منها هذا المال، فكان رسول الله صلى الله عليه وسلم ينفق على أهله نفقة سنتهم من هذا المال، ثم يأخذ ما بقي، فيجعله يجعل مال

الله: تردې چې په هغې کښې دا موجوده مال (زمکې) باقی پاتې شوې دی، په دې کښې به نبی کریم ﷺ د اهل عیال دپاره د ټول کال نفقه ویستله، بیا به چې څه باقی پاتې شو نو هغه به ئې د الله تعالی د مال په طور باندې ساتلو.

یو اشکال او د هغې جواب: پورته عبارت بالکل واضح دي، لیکن د حضرت عائشه صدیقه رضی الله عنها په یو حدیث کښې "توفي رسول الله صلى الله عليه وسلم ودرعه مرهونة عند يهودي بثلاثين صاعاً من شعير"^(۵)، وارد شوې دي چې د نبی ﷺ د وفات په وخت د هغوی مبارک یو زره د یهودی سره د دیرش صاعو اوریشو په بدله کښې گانډه کیخودلې شوې وه.

سوال دا دي چې هرکله خپل ذاتی مال دومره فراخه وو چې د کور والاد خرج د جدا کولو نه پس به هم ډیر مال بچ پاتې شو، کوم به چې بیا په بیت المال کښې جمع کیدې شو نو د حضرت عائشه صدیقه ددې حدیث څه مطلب دي او د قرض (هغه هم زرعه په رهن کښې کیخودل) اخستلو ضرورت ولې پېښ شو؟

ددې جواب دادې چې عام معمول خو دا وو چې د ټول خرج به ئې جدا کوو لیکن کال تیریدلو سره سره نبی کریم ﷺ نور د خیر کارونو او خارجي ضروریاتو کښې به هم ددې نه صرف کوو، دغه شان د کال په پوره کیدو باندې به مقررہ نفقه ختمه شوه او د قرض اخستلو ضرورت به پېښ شو، علامه قسطلانی فرمائی:

^(۱) ارشاد الساری: (۱۹۵/۵)۔

^(۲) پورته حواله، و عمدة القاری: (۲۵/۱۵)۔

^(۳) سنن النسائی، أول کتاب قسم الفی، رقم (۴۱۵۳)۔

^(۴) فتح الباری: (۲۰۶/۶)۔

^(۵) انظر صحيح البخاری، کتاب الجهاد والسير، باب ما قبل فی درع النبی صلى الله عليه وسلم.....، رقم (۲۹۱۶)

وهذا لا يعارضه حديث عائشة أنه صلى الله عليه وسلم تولى ودرعه مرهونة على شعير، لأنه يجتمع بينهما بأنه كان يدخر لاهله قوت سنتهم، ثم في طول السنة يحتاج لمن يطرقه إلى إخراج شيء منه، فيخرجه، فيحتاج إلى تعويض ما أخذ منها، فلذلك استدان^(١)

مجعل مال الله كبنی مجعل د میم د فتحی سره د ظرف صیغه ده، بیت المال ترینه مراد دې چې په هغې سره به اسلحه وغیره اخستی کیده او د مسلمانانو په نورو مصلحتونو باندې به دغه مال خرچ کولې شو^(٢)

قوله: فعلم رسول الله صلى الله عليه وسلم بذلك حياته، أنشدكم بالله، هل تعلمون ذلك؟ قالوا: نعم: نو د نبی کریم ﷺ په خپل ژوند مبارک کبنې هم دغه معمول وو، تاسو خلقو ته د الله تعالی واسطه درکولو سره ستاسو نه تپوس کوم چې آیا تاسو خلقو ته ددې علم شته؟ جماعت او وئیل، بالکل، مونږ ته ددې معلومات شته.

په عمل کبنې میم مکسور دې، دا دلته د باب سمع نه مستعمل دې^(٣)

قوله: ثم قال لعلي وعباس: أنشدكما بالله، هل تعلمان ذلك؟: بیا حضرت عمر رضی الله عنه او حضرت عباس رضی الله عنه طرفته متوجه کیدو سره او فرمائیل..... آیا تاسو دواړو ته هم ددې خبرې معلومات شته؟

دلته په روایت کبنې سوال خو مذکور دې لیکن دې دواړو حضراتو په جواب کبنې څه او فرمائیل ددې تذکره نشته، نو د کتاب الفرائض د عقیل په روایت^(٤) کبنې ددې نه پس دا اضافه هم روایت شوي ده، "قالا: نعم"^(٥)

قال عمر: ثم توفي الله نبيه صلى الله عليه وسلم، فقال ابوبكر: أنا ولي رسول الله صلى الله عليه وسلم، فقبضها ابوبكر، فعمل فيها بما عمل رسول الله صلى الله عليه وسلم، والله يعلم أنه فيها لصادق، بار، راشد، تابع للحق، ثم توفي الله ابابكر، فكننت أنا ولي أبي بكر، فقبضتها سنتين من أمارتي، أعمل فيها بما عمل رسول الله صلى الله عليه وسلم وما عمل فيها ابوبكر، والله يعلم أنني فيها لصادق، بار، راشد، تابع للحق

حضرت عمر رضی الله عنه او فرمائیل، بیا الله تعالی خپل نبی پاک ﷺ پورته کړو نو حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه او فرمائیل چې زه د رسول الله مبارک ﷺ نائب یم، نو دغه مال هغوی په خپل

(١) ارشاد الساری: ۱۹۵/۵، وایضاً فی الفتح: ۲۰۶/۶، والعمدة: ۱۲۵/۱۵

(٢) پورته حواله جات

(٣) ارشاد الساری: ۱۹۵/۵

(٤) صحيح البخاری، کتاب الفرائض، باب قول النبی.....: لا نورث..... رقم ((۶۷۲۸))

(٥) ارشاد الساری: ۱۹۵/۵، وفتح الباری: ۲۰۶/۶

تصرف کښې واخسته، او هغوی په دې کښې هم په دغه معمول باندې روان وو، کوم معمول چې د نبی کریم ﷺ وو. الله تعالی ته ښه علم دې چې هغوی ددې مال په معامله کښې رښتونی، نیک، هدایت یافته او د حق تابع وو. بیا الله تعالی حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه خپل ځان ته او غوښتلو نو زه د ابوبکر صدیق رضی الله عنه ولی او نائب جوړ شوم، ما د خپل خلافت (ابتدائی)، دوو کالو پورې دا مال په خپل تصرف کښې اوساتلو، ما هم په دې کښې خپل هغه معمول اوساتلو کوم چې د نبی کریم ﷺ او د هغوی نه پس د حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه وو، الله تعالی ته ښه معلومه ده چې زه ددې مال په معامله کښې رښتونی، نیک، هدایت یافته او د حق تابع یم.

بار راء مشدده سره، د بریر نه دې، ددې معنی ده نیک. "امارتی" د همزه کسري سره، خلافت او حکومت ته وائی، یو بل لفظ دې اماره د همزه د فتحې سره، د هغې معنی ده علامت او نشانی (۱).

د کتاب الاعتصام په روایت، چې د عقیل ابن شهاب د طریق نه دې، کښې "قال ابوبکر: أنا ولی.....فعل فیها بیا عمل رسول الله صلی الله علیه وسلم" الفاظو نه پس دا کلمات هم موندلې شی، "واتمها حیثنذا. واقبل علی علی وعباس. تزعمان أن أبابکر کذا وکذا" (۲) او د مغازی د شعیب بن ابی حمزه په روایت کښې د "تذکران أن أبابکر فیه کما تقولان" (۳) الفاظ دی، ددې دواړو روایتونو نه واضح روایت هغه دې کوم چې په مسلم شریف کښې دې، په هغې کښې په دې دواړو روایتونو کښې مذکور د مبهم کلماتو وضاحت هم کړې شوې دې چې د کذا وکذا او "کما تقولان" مراد څه دې، په دې روایت کښې مذکوره اضافه لاندې ذکر کولې شی.

"فجئتها، تطلب میراثک من ابن أخیک، ویطلب هذا میراث امراته من أیيها، فقال ابوبکر: قال رسول الله صلی الله علیه وسلم: "ماورث، ما ترکنا صدقة"، فرایتها کاذباً أثمها غادرًا حائناً" (۴) ددې درې واړو طرق نه دا لاندې فائدي مستنبط شوې:

① ددې حدیث مدار چونکه امام زهري دې نو په دې سلسله کښې د هغوی کار دادې چې هغوی د مذکوره کلماتو، کوم چې د ابوبکر صدیق رضی الله عنه په باره کښې او ویلې شو، روایت به کله صراحة کوه، کله به ئې مبهم کلمات استعمالول، هم دا حال د حضرت مالک ابن اوس هم دې چې کله صراحت کوی او کله کنایه کوی.

② هم دا روایت اسماعیلی وغیره هم درج کړې دې، د هغوی د بشر بن عمر په طریق کښې دا کلمات بالکل نشته، محذوف دی، ددې مثال هم هغه دې کوم چې د روایت په ابتداء کښې

(۱) ارشاد الساری: ۵/۱۹۵.

(۲) صحیح البخاری. کتاب الاعتصام بالکتاب والسنة، باب ما یکره من التعمق.....رقم (۷۳۰۵).

(۳) صحیح البخاری. کتاب المغازی، باب حدیث بنی النضیر، ومخرج رسول الله.....رقم (۴۰۳۳).

(۴) صحیح مسلم. کتاب الجهاد والسير، باب حکم الفی، رقم (۴۵۷۷).

دې چې حضرت عباس عليه السلام حضرت علي عليه السلام ته بد رد وئيلې وو، په دې کښې تاويل هم هغه دې چې غوره او بهتره خبره هم ددې کلماتو حذف کول دي.

قوله: ثم جئتماني تكلماني، وكلمتكما واحدة، وامركما واحد، جئتماني يا عباس

تسألني نصيبك من ابن اخيك، وجاءني هذا - يريد عليا - يريد نصيب امراته

من ايها: بيا تاسو دواړه ماته په دې معامله کښې ماسره خبره کولو دپاره راغلې، ستاسو دواړو خبره يوه وه او معامله هم يوه وه، ائې عباس! ته ماته د خپل وراره صلى الله عليه وسلم حصه اخستلو دپاره راغلې او دې علي هم ماته راغئ چې دوی ته د خپلې بې بې حصه ورکړې شي.

د باب حديث او امام عبدالرزاق: علامه عقيلي^(۱) نقل کړې دی چې امام عبدالرزاق بن همام، چې مشهور محدث، صاحب د مصنف او د اصحاب سته راوی دي، هغوی دې مقام ته رارسيدو باندې يوه ډيره بې مناسبه جمله استعمال کړه، اگرچه دا وئيلې کيږي چې دا جمله هغوی د حضور اقدس صلى الله عليه وسلم د محبت نه د مجبوره کيدو په وجه وئيلې ده ليکن بهر حال د حضرت عمر رضي الله عنه په باره چونکه دا جمله استعمال شوې ده او د حضرت عمر فاروق رضي الله عنه چې د حضور اقدس سره کوم تعلق او د زړه تړون وو نو هغه معلوم او مشهور دي، په دې وجه د امام عبدالرزاق په دې جمله باندې د افسوس د اظهار نه سوا بله څه لاره نشته.

هغه حضرت عمر فاروق باندې تنقيد کښې ليکي: "انظر الى هذا الاثوك، يقول: من ابن اخيك، من

ايها، لا يقول: رسول الله صلى الله عليه وسلم" (اللفظ للذهبي^(۲))

پورته چې کوم روايت تير شو، په هغې کښې حضرت عمر فاروق رضي الله عنه د نبی کریم ذکر حضرت عباس سره اوکړو نو ابن اخيك ئې او فرمائيل او حضرت علي سره ئې اوکړو نو يريد نصيب امراته من ايها ئې او فرمائيلو، په دې باندې امام عبدالرزاق خفه شوې دي چې دې بيوقوف ته اوگوره! حضور اقدس په من ابن اخيك او من ايها سره رابلي او د رسول الله الفاظ نه لولي.

اثوك بيوقوف ته وئيلې شي، په دې کلام کښې ددې نه مراد حضرت عمر رضي الله عنه دي دا لفظ نوك د ينوك نوكا و نواکا (س) نه مشتق دي، د انوك جمع نوك او نوكي راځي^(۳)

علي بن عبد الله بن مبارك صنعاني وائي چې زيد بن المبارك به د امام عبدالرزاق د حديث

(۱) فتح الباري: ۲۰۶/۶ -

(۲) الضعفاء الكبير: ۱۱۰/۳ -

(۳) ميزان الاعتدال: ۶۱۱/۲ -

(۴) القاموس الوحيد، باب النون، مادة نوك، والنهاية للجزري: ۱۲۹/۵، باب النون والواو..... وغريب الحديث

للخطابي: ۱۴۹/۲، وتاج العروس: ۳۷۸/۲۷، مادة (ن و ك) -

په مجلسونو کښې پابندۍ سره شرکت کوو او د هغه نه به ئې ښه روایتونه نقل کول لیکن بیا د عبدالرزاق نه نقل کړې شوې ټول کتابونه زید بن المبارک اوسیزل او د محمد بن ثور حلقو ته به تلو، چا ترینه د وجې تپوس او کړو نو وې فرمائیل چې مونږ یو ځل د هغه په درس کښې شریک وو چې هغه د ابن الحدثن حدیث (د باب حدیث) روایت کړو، چې کله د حضرت عمر رضی الله عنه دې کلماتو فحش انت تطلب میراثک من ابن اخیک..... ته راوړسیده نو پورته ذکر کړې شوې کلمات ئې او وئیل انظر الی هذا الاثнок.... زید بن المبارک فرمائی چې زه د هغه د مجلس نه پاسیدم او دوباره د هغه طرفته لانه ړم او نه اوس د هغه نه روایت کوم (۱)

حافظ شمس الدین ذهبی په میزان الاعتدال کښې ددې حکایت نقل کولو نه پس دا وئیلې دی چې اول خو دا کلام مرسل دې، ددې په ثبوت کښې اشکال دې چې عبدالرزاق دا خبره کړې هم ده که نه

که اومنلې شی چې دا خبره هغوی کړې ده نو بیا د حضرت عمر فاروق رضی الله عنه له طرفه حافظ ذهبی په جواب کښې فرمائی چې حضرت عمر رضی الله عنه دلته د اصحاب المیراث په ژبه کښې خبره کړې ده لکه د هغوی مقصد "من ابن اخیک" وئیلو سره هغه د میراث تعلق ښکاره کول وو ځکه چې حضرت عباس رضی الله عنه په عصبه کښې داخل وو او "من ایها" وئیلو سره د حضرت فاطمة الزهرا رضی الله عنها د نیمې حصې ذکر مقصود وو، چې کله لور یواځې وی نو هغه د پلار په میراث کښې د نیمې وارثه وی. په دې وجه هغوی د اصحاب المیراث په ژبه کښې "من ابن اخیک" او "من ایها" وئیلې دی. خداخواسته تحقیق خو ترې نه هڅو هم نه دې مقصود.

"قلت: فی هذه الحکایة إرسال، والله أعلم بصحتها، ولا اعتراض على الفاروق رضی الله عنه فیها، فانه تکلم بلسان قسمة التركات" (۲)

په میزان الاعتدال کښې خو ذهبی د امام عبدالرزاق څه حده پورې دفاع کړې ده لیکن په سیر کښې هغوی امام عبدالرزاق لره هم په دغه مذکوره کلماتو باندې د سخت تنقید نشانه کړې دې، د هغې وجه ښکاره ده ځکه چې حضرت عمر فاروق رضی الله عنه په دې حدیث کښې هر ځانې د حضور اکرم صلی الله علیه وسلم عظمت او توقیر سره ذکر کړې دې او موقع په موقع ئې د نبی کریم صلی الله علیه وسلم د تقلید او اتباع ذکر کړې دې، په دې وجه دا ولې په بې ادبۍ او گستاخانې باندې حمل کولې شی؟ او مونږ دا هم وایو چې چا دا په بې ادبۍ باندې حمل کړې ده هغه یا خو په خپله مغلوب الحال دې یا هغه په خپله د بې ادبۍ ارتکاب کړې دې.

لکه حافظ ذهبی په سیر کښې لیکي: "قلت: هذه عظيمة، وما فهم قول أمير المؤمنين عمر، فانك يا هذا، لوسکت، لکان اولی بک، فان عمر انما کان فی مقام تبیین العمومة والبنوة، والا فعمیر رضی الله عنه أعلم بحق

(۱) کتاب الضعفاء الكبير للعقيلي: ۱۱۰/۳، ومیزان الاعتدال: ۱۱/۳، وسیر اعلام النبلاء: ۵۷۲/۹ -

(۲) میزان الاعتدال: ۶۱۱/۳ -

المصطفى وبتوقيده وتعظيمه من كل متحذلق^(۱)، متطعم^(۲)، بل الصواب أن نقول عنك: انظروا إلى هذا الاتوك
الفاعل. عفا الله عنه. كيف يقول عن غيره هذا، ولا يقول: قال أمير المؤمنين الفاروق؟! وبكل حال فنستغفر الله
لنا ولعبد الرزاق، فإنه مأمون على حديث رسول الله صلى الله عليه وسلم، صادق^(۳).

قلت لكما: إن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: لا نورث ما تركنا صدقة
هغه وخت ما تاسو دواړو ته وئيلې وو چې نبی کریم ﷺ فرمائیلې دی چې زمونږ په ترکه
کښې میراث نه جاری کیږي، مونږ چې کومه ترکه پرېږدو نو هغه صدقه ده.

د نبی کریم د فرمان "لا نورث ما تركنا صدقة" څه تشریح خو مونږ ددې باب د حدیث په شروع
کښې بیان کړې وه چې په دې مسئله کښې د اهل سنت مسلک دا دی چې دا حکم صرف د
نبی ﷺ سره خاص نه دی بلکه ټول انبیاء کرام ددې حکم په عموم کښې داخل دی، صرف
حسن بصری رحمته الله علیه او ورسره ابن علیه رحمته الله علیه (۴) دې لره د نبی ﷺ سره خاص کوي.

او د شیعه امامیه (عليهم لعائن الله والبلائكة والناس اجمعين) عقیده داده چې د عامو خلقو په شان
د انبیاء کرامو ﷺ په مال کښې هم میراث تقسیمېږي او په حدیث شریف کښې مختلف
قسم لري لري تاویلات کوي، مونږ لاندې د اهل علم دپاره یو واقعہ ذکر کوو، چې د خوند
سره سره د لوی فائدي نه هم خالی نه ده.

د ابن شاذان او د ابن المعلم مناظره: علامه باجی د ابو جعفر سماني په حوالې سره لیکلي دي
چې ابوعلی بن شاذان چې لوڼې عالم او امام وو لیکن هغوی ته په عربي علومو باندې
مهارت حاصل نه وو، هغوی په دې پورته مسئله باندې د امامیه یو عالم ابو عبد الله بن
المعلم سره مناظره او کړه چې د خپل وخت د امامیه د امام کیدو سره سره ورته په عربي
علومو باندې هم لوی مهارت حاصل وو.

ابن شاذان په خپل موقف باندې د نبی کریم ﷺ دا حدیث مبارک پیش کړو:
"إنا معاشرا الانبياء، لا نورث، ما تركنا صدقة"^(۵)

(۱) دا لفظ د تحذلق نه مشتق دي، ددې معنی ده پوتې ایشتل (یعنی لوڼې لوڼې خبرې کول مترجم د
المتحذلق معنی شوه پوتې ایشتونکي: القاموس الوحيد، باب الحاء، مادة حذلق)۔

(۲) ددې لفظ معنی ده غالی، د حد نه تجاوز کوونکې وغیره، د نبی کریم د حدیث: هلك المتنطعون
[مسلم، رقم (۶۷۲۵)، وابوداود، رقم (۴۶۰۸)] په شرح کښې علامه ابن الاثير جزري فرمائي
هم المتعمقون، المغالون في الكلام، المتكلمون باقصی حلو قهم، ماخوذ من النطع، وهو الغار الاعلى من الفم، ثم
استعمل في كل تعمق، قولاً وفعلاً. انظر النهاية: ۷۴/۵، باب النون مع الطاء)۔

(۳) سير أعلام النبلاء: ج ۹ ص ۵۷۲-۵۷۳)۔

(۴) المنتقى: ۵۰۰/۹-۵۰۱، تلخيص الحبير: ۲/۲۸۵، كتاب النكاح، الواجبات، رقم (۱۴۵۹)، دار الكتب، والوجز:
۵۲۵/۱۷، والتعليق المجدد: ۳۱۹، كتاب الفرائض، باب النبي صلى الله عليه وسلم هل يورث؟)۔

(۵) سنن النسائي الكبرى، كتاب الفرائض، ذكر موارث الانبياء، رقم (۶۳۰۹)، والكامل لابن عدي: ۲/۸۶، رقم (۳۰۷)

په دې باندې ابن المعلم په جواب کښې او وئیل چې دا کلمه د "صدقة" منصوب ده د حال واقع کیدو په وجه، چې ددې تقاضه داده چې نبی کریم کوم خیزونه د صدقې په طور پریخودلې وو نو په هغې کښې به میراث نه جاری کیږي، د هغې به څوک وارث نه وي، ددې نه مونږ هم منع نه کوو، البته کوم خیزونه چې ئې د صدقې په طور نه دی پریخودلې نو په هغې کښې به میراث جاری کیږي.

ابن المعلم دا استدلال دې دپاره کړې وو چې هغه ته دا خبره معلومه وه چې ابن شاذان په عربي علومو باندې ډیر نه پوهیږي او په دې کښې ډیر مهارت نه لري او نه د حال او د غیر حال فرق باندې پوهیږي، لیکن ددې هرڅه باوجود ابن شاذان ابن المعلم لږه لاجواب کړو. هغه داسې چې ابن شاذان ابن المعلم ته او وئیل ستا گمان دادې چې دا لفظ د "صدقة" منصوب دې او ته دا وائي چې کوم خیزونه نبی کریم ﷺ د صدقې په طور پریخودلې وي په هغې کښې مونږ هم تاسو سره موافق یو چې په هغې کښې میراث نه جاری کیږي لیکن واوړه! ماته د نصب او د رفع فرق معلوم نه دې دغه شان په دې مسئله کښې د نصب او د رفع په فرق باندې د ځان پوهولو ضرورت هم نه محسوسوم البته یو خبره ده چې نه په هغې کښې ماته څه قسم شک شته او نه تا ته چې حضرت فاطمه عليها السلام افصح العرب وه، دغه شان "صدقة" منصوب دې یا مرفوع، په دې باندې هم د ټولو نه زیاته پوهیدله، هم دا صورت د حضرت عباس عليه السلام هم دې هغه هم په میراث کښې مستحق وو، که نبی موروث وو، هم دغه حال د حضرت علی عليه السلام هم دې ځکه چې د هغوی شمار هم د قریشو په فصیحو علماؤ کښې کیږي بلکه د هغوی نه هم په مرتبه کښې اوچت او لوئې وو.

او واوړه! چې کله حضرت فاطمه عليها السلام د خپلې حصې طلب کولو دپاره حضرت ابوبکر صدیق رضي الله عنه ته تشریف راوړلو نو هغوی چې حضرت فاطمه الزهرا عليها السلام ته کوم جواب ورکړو، ددې نه هغوی هم دا او گنړل چې د نبی ﷺ په میراث کښې هغوی دپاره هیڅ هم نشته او د خپلې دعوی نه وروستو شوه، هم دغه شان حضرت عباس عليه السلام هم دا او گنړل، هم دغه شان حضرت علی عليه السلام او نورو صحابه کرامو رضي الله عنهم هم او گنړل، په هغوی کښې چا هم دا اعتراض اونکړو کوم اعتراض چې تاسو کوئ. دغه شان حضرت ابوبکر صدیق رضي الله عنه چې ددې حدیث نه کوم استدلال کوی نو هغوی هم ددې حدیث دا مفهوم نه اخلی کوم چې تاسو اخلئ، بلکه د هغوی مقصد هم د ممانعت تقاضه ښکاره کول دی، حال دادې چې د حضرت ابوبکر صدیق رضي الله عنه په اهل عربو کښې د فصیح اولوئې عالم کیدو کښې د چا هم څه اختلاف نشته، که د حدیث کلماتو په ممانعت باندې دلالت نه کوو نو دا به هغوی هیڅکله په دلیل کښې پیش کړې نه وو.

اوس دوه صورتونه دي، صدقة منصوب دې لکه څنگه چې ستاسو دعوی ده لیکن ددې نه هغه مفهوم او مطلب چاهم نه دې اخستلې کوم چې تاسو اخلئ، حالانکه دغه ټول حضرات د عربو فصیح خلق وو لهذا د نصب تقاضه هم هغه ده چې کومه دغې حضراتو گنړلې وه چې میراث نه جاری کیږي، په دې وجه ستاسو دعوی باطله ده.

یا دا لفظ مرفوع دې، داسې کیدل پکار هم دی او هم دغه شان مروی هم دې په دې وجه په

دې کښې د نصب دعوی باطله ده.....^(۱)

فلما بدا لي أن أدفعه إليكما، قلت: إن شئتما دفعتهما إليكما، على أن عليكما عهد الله وميثاقه لنعلمان فيها بما عمل فيها رسول الله صلى الله عليه وسلم وبما عمل فيها أبو بكر، وبما عملت فيها منذ وليتها، فقلتما: ادفعها إلينا، فبذلك دفعتهما إليكما، فأنشدكم بالله، هل دفعتهما إليهما بذلك؟ قال الرهط: نعم.

چې هر کله زما سينه په دې خبره کهلاؤ شوه چې دا مال تاسو دواړو ته حواله کړم نو ما تاسو ته وئيلې وو چې که تاسو دواړه غواړئ نو دا مال تاسو ته حواله کوم په دې شرط چې د الله تعالی د عهد او د وعدې پابندي به په تاسو باندې لازم وي چې تاسو دواړه به ددې زمکو په خدمت کښې هغه معمول اختياروي کوم معمول چې د نبی کریم ﷺ وو، کوم چې د حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه وو او کوم معمول او طريقه چې زما راروانه ده د کوم وخت نه چې ما ددې ذمه داری قبوله کړې ده. نو هغه وخت تاسو دواړو وئيلې وو چې په دې شرط باندې، دا زمکې مونږ ته حواله کړه لهدا ما په دې شرط باندې تاسو دواړو ته دا زمکه حواله کړې وه، زه تاسو ته د الله تعالی واسطه درکولو سره ستاسو نه تپوس کوم چې آیا ما دا زمکې دي دواړو حضرت علي و عباس ته په دې شرط باندې حواله کړې وې؟ د صحابه کرامو رضی الله عنهم جماعت او وئيل، آوجی ا هم دغه شان وه.

مطلب دادې چې دا زمکې ددې دواړو حضراتو په حواله باندې د تمليک په غرض سره نه وې شوې بلکه د تصرف او د فائدي په غرض سره ورته حواله کړې شوې وې چې تاسو دواړه په دې کښې تصرف کولې شئ او خومره چې ستاسو دواړو حق دي د هغې په اندازه ددې زمکو نه فائده هم حاصلولې شئ ځکه چې ددې صدقو تمليک په هيڅ طريقې سره نه شی کيدې، دا حرام دي^(۲).

ثم أقبل على علي وعباس، فقال: أنشدكما بالله، هل دفعتهما إليكما بذلك؟ قال: نعم، قال: فقلت لسان مني قضاء غير ذلك؟ فوالله الذي بأذنه تقوم السماء والأرض، لا أقتض فيهما قضاء غير ذلك، فإن عجزتما عنها فادفعاهما إلي، فإن أكيكماها.

بيا حضرت عمر رضی الله عنه د حضرت علي رضی الله عنه او حضرت عباس رضی الله عنهم طرفته متوجه شو، وې فرمائيل زه تاسو ته د الله تعالی واسطه درکولو سره ستاسو نه تپوس کوم چې آیا دا زمکې ما تاسو دواړو ته په دې شرط باندې حواله کړې نه وې؟ دواړو حضراتو او وئيل، او جی! حضرت عمر رضی الله عنه او فرمائيل، اوس تاسو د تيرې شوې فيصلې نه اوږئ او ما باندې بله څه فيصله کول غواړئ؟ نو واوړئ! قسم دي د هغه ذات چې د هغه په حکم سره زمکې او آسمانونه قائم دي، زه به په دې زمکو کښې ددې نه علاوه هيڅ فيصله نه کوم که تاسو دواړه

^(۱) أوجز المسالك: ۱۷/۵۳۵-۵۳۶، والمتنقى: ۹/۵۰۰، كتاب الجامع من السوط).

^(۲) ارشاد الساري: ۵/۱۹۵.

ددې زمکو په خدمت او خیال کولو باندې تنگ شوې ئې نو دا ماته واپس کړې، زه به ستاسو دواړو له طرفه ددې زمکو دپاره یواځې کافی شم.

یو اشکال او د هغې جواب دلته اشکال دا کیږي چې د حضور اقدس ﷺ ارشاد دې لا ثورث، ما ترکنا صدقه^۱ نو حضرت عباس رضی الله عنه و حضرت علی رضی الله عنه دا کلام د حضور اقدس ﷺ نه اوریدلې وو یا د حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه نه. دې دواړو د نبی ﷺ دا حدیث اوریدلې وو. لکه څنگه چې هغوی په خپله د باب په حدیث کښې د اوریدلو تصدیق کړې دې که دا اووئیلې شي چې د نبی کریم ﷺ نه ئې دا حدیث اوریدلې وو نو حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه ته د میراث د طلب کولو دپاره ولې ورغلې وو او که دا اووئیلې شي چې د حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه نه ئې دا حدیث اوریدلې وو نو حضرت عمر فاروق رضی الله عنه ته د میراث د طلب دپاره ولې ورغلل ځکه چې دا خو د حدیث شریف خلاف ورزی ده؟

ددې جواب دا دې چې دې حضراتو دا حدیث مبارک اوریدلې وو، په دې باندې د دوی عمل هم وو لیکن ددې حضراتو موقف او نقطه نظر دا وه چې د حضور اقدس ﷺ میراث به په منقولی څیزونو کښې نه جاری کیږي البته په غیر منقولی څیزونو کښې به جاری کیږي. نو په دې وجه اول دا حضرات حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه ته ورغلل او هغوی انکار او کړو چونکه د هغوی رائي دا وه چې دا حکم عام دې، منقولی او غیر منقولی دواړو او ټولو پریخودلې شوې څیزونو ته شامل دې نو چې کله د حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه انتقال او شو او د حضرت عمر فاروق رضی الله عنه دور راغی نو د دوی خیال شو چې دوی طرفته به رجوع او کړو، ممکنه ده چې د دوی موقف هم هغه وی کوم موقف چې زموږ دې لیکن حضرت عمر فاروق رضی الله عنه هم د "لا ثورث، ما ترکنا صدقه" په عموم باندې عمل او کړو او دې حضراتو ته ئې د میراث نه د څه ورکولو نه انکار او کړو^(۱).

یو سوال او د هغې جواب: البته دلته دویم سوال ذهن کښې دا پیدا کیږي چې حضرت عمر رضی الله عنه هر کله دا دواړه حضرات یو ځل منع کړې وو چې زه دا پریخودلې شوې څیزونه د میراث په طور تقسیمولې نه شم نو دوباره دا حضرات د حضرت عمر رضی الله عنه دربار ته ولې راغلل؟ ددې جواب امام دارقطنی د قاضی اسماعیل په حوالې سره دا ورکړې دې چې دا دوباره راتلل د میراث دپاره نه وو، بلکه ددې مقصد ددې جهګړي دفع کول وو چې کومه جهګړه ددې دواړو حضراتو حضرت علی رضی الله عنه و حضرت عباس رضی الله عنه مینځ کښې ددې زمکو په تصرف او ولایت کښې شوې وه^(۲).

واقعہ اصل کښې داده چې دا دواړه حضرات کله د حضرت عمر رضی الله عنه خوا ته په اول ځل باندې راغلل نو حضرت عمر رضی الله عنه دوی د میراث ورکولو نه خو منع کړې وو لیکن د صدقاتو

(۱) فتح الباری: ۶/۲۰۷.

(۲) فتح الباری: ۶/۲۰۷. وبسته قال الخطابی ایضاً، انظر اعلام الحديث: ۲/۱۴۴۰-۱۴۴۱، وعمدة القاری:

۱۵/۲۵، والتمهید لابن عبد البر: ۸/۱۶۸.

دغه زمکې ئې د تصرف او د خیال ساتلو په غرض سره دوی ته حواله کړې وې چې ددې انتظام به دا تره او وراره کوی او دا زمکې به سمبالې کړی، تره حضرت عباس عليه السلام وو او وراره حضرت علی عليه السلام وو لیکن په مزاج کښې اختلاف وو، حضرت علی عليه السلام سخی سړې وو او د ضرورت او حاجت دپاره د مال د جمع کولو به ئې څه اهتمام او پرواه نه کوله او حضرت عباس عليه السلام مدبر او د سوچ خاوند وو او دنیا ئې لیدلې وه، هغوی به بې خایه د مال خرچ کول نه خوښول نو څو څو ځله دغه شان اوشو چې یوځانې حضرت علی عليه السلام خرچ کول غواړی او حضرت عباس عليه السلام مزاحمت کوی، یوځانې حضرت عباس عليه السلام مال محفوظ کول غواړی او حضرت علی عليه السلام په خرچ کولو باندې اصرار کوی.

ددې اختلاف په وجه باندې دا حضرات بیا حضرت عمر عليه السلام ته راغلل او د هغوی په وړاندې ئې خپله مسئله پیش کړه او وې وئیل چې تاسو نیمې نیمې زمکې مونږ ته راکړئ، حضرت عمر فاروق عليه السلام انکار او کړو.

د انکار څه وجه وه؟ اوس سوال دا پیدا کیږي چې ددې دواړو حضراتو مطالبه خو په ظاهره معقوله وه چې دا زمکې دې د تصرف دپاره نیمې نیمې تقسیم کړې شی، ددې باوجود حضرت عمر عليه السلام ولې انکار او کړو؟

ددې جواب امام ابوداؤد ورکړې دې چې اصل کښې د حضرت عمر عليه السلام په وړاندې دا خبره وه چې دا زمکه تقسیمیدل پکار نه دی ځکه چې دا څوک او نه وائی چې نیمه خو ئې حضرت عباس عليه السلام ته ورکړه او نیمه ئې حضرت علی عليه السلام ته ورکړه او زمکه ئې تقسیم کړه، چونکه په دې باندې د تقسیم اطلاق اوشی نو خلق به صبا وائی چې هغه خو په میراث کښې تقسیم شوې وه او حضرت عمر عليه السلام د تقسیم د لفظ اوریدلو دپاره بالکل تیار نه وو، په دې وجه دوی صفا انکار او کړو او قسم ئې او خوړلو چې داسې نه شی کیدې، که تاسو ددې خدمت او خیال نه شی ساتلې نو واپس ئې کړئ، دا معاملات به زه جاری ساتم، تاسو خپل کار کوئ^(۱) د عمر بن شبه د روایت په آخره کښې دا الفاظ راغلې دي، "فاصلحا امرکما، والالم یرجع. والله.

ایکما، ققاما و ترکا الخصومة، و امضیت صدقة" (۲) چې حضرت عمر عليه السلام او فرمائیل چې خپل معاملات صحیح ساتئ، ورنه په خدائې قسم دا به تاسو دواړو ته حواله نه کړې شی. ددې په اوریدلو سره دواړه حضرات پاسیدل، جهگړه ئې ختمه کړه او ددې زمکې د صدقې والا حیثیت برقرار پاتې شو.

(۱) قال ابوداؤد: إنما ان يكون يصيره بينهما نصفين، لا أنهما جهلان أن النبي صلى الله عليه وسلم قال: لا نورث. ما تركنا صدقة فأنهما كانا لا يطلبان إلا الصواب، فقال عمر: لا أوقع عليه اسم القسم، أدعه على ما هو عليه. انظر سننه، كتاب الخراج..... باب في صفايا رسول الله صلى الله عليه وسلم، رقم (۲۹۶۳)، دغه شان اوگورئ: عمدة القاری: ۲۵/۱۵، وفتح الباری: ۲۰۷/۶، ارشاد الساری: ۱۹۵/۵، وتحفة الباری: ۵۳۴/۳. —

(۲) فتح الباری: ۲۰۷/۶، و اخبار المدينة لابن شبه: ۱۳۰/۱، خصومة علی و العباس..... رقم (۵۷۱). —

وروستو بیا (۱) دا زمکه حضرت علی (علیه السلام) ته راغلي وه، د هغوی نه پس د حضرت حسن (علیه السلام) بیا د حضرت حسین (علیه السلام) بیا د حضرت علی بن الحسین (زین العابدین) (علیه السلام) بیا د حسن بن حسن (علیه السلام) بیا د زید بن حسن (علیه السلام) په تصرف کښې راغلي وه، دې حیثیت سره چې دا د صدقې زمکه ده (۲) معمر فرمائی چې د زید بن حسن نه پس دا زمکه د عبدالله بن حسن په تصرف کښې راغلي وه تردې چې دا خلق یعنی بنو العباس امیران جوړ شو نو هغوی په دې باندې قبضه او کړه (۳)

د عمر بن شبه د قول مطابق دا زمکه نن سبا د خلیفه په تصرف کښې ده، هم هغه ددې دپاره نگران مقررې او د مدینې منورې په حاجتمندو کښې ددې پیداوار تقسیموی، ددې کار دپاره هغه جدا وکیلان مقرر کړي دي (۴)

حافظ فرمائی چې عمر بن شبه د کومو ورځو خبره کوی نو هغه د دویمې صدې هجری آخری ورځې دي، بیا معاملات خراب شو.

قوله: "كان ذلك على راس الماتين، ثم تغيرت الامور، والله المستعان" (۵)

ترجمة الباب سره د حدیث مناسبت: ترجمه الباب سره ددې حدیث په مناسبت کښې هم هغه تفصیل دې کوم چې مونږ وړاندې د حضرت عائشه صدیقه (رضی الله عنها) په حدیث کښې بیان کړو چې په کومو زمکو او صدقاتو کښې دې حضراتو د میراث مطالبه کوله، په هغې کښې د خیر خمس هم شامل وو، دغه شان ترجمه الباب سره ددې حدیث مناسبت هم موجود دي (۶)

یواهمه فائده: د بعضې خلقو خیال دې چې امام زهري ددې حدیث په روایت کښې متفرد دي، د هغوی نه علاوه د بل چا نه دا روایت منقول نه دي، علامه ابو علی کرابیسی فرمائی یو قوم ددې روایت انکار کړي دي، د هغې خلقو دا وینا ده چې دا روایت د ابن شهاب په مستنکر روایتونو کښې دې البته دا خبره صحیح نه ده، ددې وجې نه دلته دوه صورتونه دي:

① دې مغترضینو ته که چرته دا خبره معلومه ده چې زهري دلته متفرد نه دي نو دا ممکن نه ده (بلکه دوی ته ښه معلومه ده چې متفرد نه دي).

② که دوی ته معلومه نه ده نو دا جهل دي، د جاهل سړی اعتراضات معتبر نه وي.

(۱) دا د عثمانی دور خبره ده، قاله اسماعیل القاضي، فتح الباری: ۶/۲۰۷.

(۲) فكانت هذه الصدقة بيد علي، منعها علي عباسا، فغلبه عليها، ثم كان بيد حسن بن علي، ثم بيد حسن بن علي، ثم بيد علي بن حسين، وحسن بن حسن، كلاهما كانا يتداولانها، ثم بيد زيد بن حسن.....^۳ انظر صحيح بخاري، كتاب المغازی، باب حديث بني النضير..... رقم (۴۰۳۴).

(۳) مصنف عبدالرازق: ۵/۳۲۷، كتاب المغازی، خصومة علي والعباس، رقم (۹۸۳۵)، واخبار المدينة: ۱/۱۳۰، رقم (۱۷۲).

(۴) فتح الباری: ۶/۲۰۷، وكتاب اخبار المدينة: ۱/۱۳۵، رقم (۵۸۰).

(۵) فتح الباری: ۶/۲۰۸.

(۶) عمدة القاری: ۱۵/۲۳، وفتح الباری: ۶/۲۰۸، وشرح ابن ابطال: ۵/۲۵۲.

بیا امام کرابیسی د هغه حضراتو نومونه شمارلې دی کومو چې دا حدیث د حضرت مالک بن اوس نه روایت کړې دې یعنی عکرمه بن خالد، ایوب بن خالد، محمد بن عمرو بن عطاء رضی الله عنه وغیره وغیره.

په دې وجه بالکل د روایت انکار کول او امام زهري لره نښه گرځول بالکل صحیح نه ده^(۱)، والله اعلم بالصواب.

د حدیث شریف نه مستنبطې فائدې: ① حدیث نه یو دا خبره معلومه شوه چې د هیڅ یو قبیلې یا جماعت یا ډلې د معاملاتو وغیره ذمه داری د هغوی سردارانو یا د حیثیت خاوندانو ته حواله کول پکار دی، ځکه چې هغوی دغه ټول کسان پیژنی کوم کسان چې د هغوی ماتحت وی، دغه شان د هر سړي څومره حق دې نو دا هم د هغوی په علم کښې وی.

② دغه شان د حدیث شریف ددې خبرې جواز هم معلومېږي چې که امام یو سړي ته ذمه داری حواله کړي نو په نرم کلامی سره دا ذمه داری د خپل ځان نه د جدا کولو کوشش کوي، په دې کښې هیڅ قباحته نشته^(۲) په دې شرط چې د ذمه داری اهل بل څوک موجود وی، ورنه بیا صحیح نه ده.

③ سړي خپل تعریف او صفات بیانولې شی په دې شرط چې رښتیا وی.

④ دا خبره هم معلومه شوه چې سړي د خپل ځان او خپل اهل و عیال دپاره غله ذخیره کولې شی اگرچه هغه د ټول کال دپاره وی، دا کار د توکل خلاف نه دې ځکه چې ښکاره خبره ده چې د نبی کریم صلی الله علیه و آله نه زیات نور څوک متوکل کیدې شی! په دې کښې د هغه جاهل صوفیانو رد او شو چې مذکوره عمل لره د توکل خلاف منی، علامه ابن ابطال فرمائی:

“وفيه جواز ادخار الرجل لنفسه واهله قوت السنة، وان ذالك كان من فعل الرسول حين فتح الله عليه من النصير وفدك وغيرهما، وهو خلاف قول جهلة الصوفية، المنكرة للادخار، الزاعمين: أن من ادخر فقد اساء الظن بربه، ولم يتوكل عليه حق توكله“^(۳)

⑤ د حدیث نه دا هم معلومه شوه چې که په واقعه او معامله کښې په حاکم باندې د هغې حقیقت واضح او کهلاؤ شی چې حق دادې نو هغه ته په هغې باندې عمل کول پکار دی، د هغې تقاضې ته کتل پکار دی، د بل چانه په دغه معامله کښې د رائي اخستلو ضرورت نشته^(۴)، والله اعلم بالصواب.

(۱) فتح الباری: ۲۰۴/۶.

(۲) شرح ابن ابطال: ۲۵۴/۵، وعمدة القاری: ۲۶/۱۵.

(۳) العمدة: ۲۶/۱۵، والفتح: ۲۰/۶، وابن ابطال: ۲۵۴-۲۵۵، والتمهید لابن عبدالبر: ۱۷۶/۸.

② باب: آداءُ الخمس من الدین

د ترجمه الباب مقصد: دلته امام بخاری دا فرمائی چې د خمس ادا کول د دین یو حصه ده او د دین په شعبو کښې یو اهمه شعبه ده^(۱)

د ترجمې د تکرار اشکال او د هغې جواب: مصنف په کتاب الایمان کښې یو ترجمه قائمه کړې وه، "باب اداء الخمس من الایمان"^(۲) او دلته ترجمه د "اداء الخمس من الدین" ده، دغه شان دا خبره هم په کتاب الایمان کښې تیره شوې ده چې امام بخاری د ایمان، اسلام او د دین وغیره د ترادف قائل دې^(۳) ددې وجې نه دلته د ترجمې د تکرار اشکال کیږي چې ایمان او دین یو څیز دي؟

د اشکال جواب دادې چې دلته د حیثیتونو فرق دې، په کتاب الایمان کښې ئې چې کومه ترجمه قائمه کړې وه د هغې غرض د ایمان امور بیانول وو، هلته د ایمانیاتو د بحث په ضمن کښې مذکوره ترجمه قائمه کړې شوې وه، ددې ځانې ترجمه د مال غنیمت احکامات بیانولو دپاره ذکر کړې شوې ده چې د غنیمت د مال په تقسیم کښې خمس ویستل هم شامل دی او دا اهمه معامله ده، لکه شیخ الحدیث صاحب فرمائی:

"ولا يتوهم التكرار، لان المقصود هناك بيان امور الایمان، والغرض ههنا بيان اداء الخمس اهتماما له"^(۴) حیثیت چونه بدل شوې دې، ددې وجې نه د تکرار اشکال پاتې نه شو.

۲۹۲۸: (۵) حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ الضُّبَيْعِيِّ قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - يَقُولُ قَدِمَ مَوْقُدُ عَبْدُ الْقَيْسِ فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّا هَذَا الْحَيُّ مِنْ رِبْعَةٍ، بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ كُفَّارٌ مُضَرٌّ، فَلَسْنَا نَصِلُ إِلَيْكَ إِلَّا فِي الشَّهْرِ الْحَرَامِ، فَمَرْنَا بِأَمْرٍ نَأْخُذُ مِنْهُ وَنَدْعُو إِلَيْهِ مَنْ وَرَاءَنَا. قَالَ «أَمْرُكُمْ بِأَرْبَعٍ، وَأَنْهَاكُمْ عَنْ أَرْبَعٍ، الْإِيمَانُ بِاللَّهِ شَهَادَةٌ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ - وَعَقْدُ يَدَيْهِ - وَإِقَامُ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءُ الزَّكَاةِ وَصِيَامُ رَمَضَانَ، وَأَنْ تُوَدُّوا لِلَّهِ خُمْسَ مَا غَنِمْتُمْ، وَأَنْهَاكُمْ عَنِ الدُّبَاءِ وَالنَّقِيرِ وَالْحَنْتَمِ وَالْمُرْقَتِ». [ر: ۵۳]

رجال الحديث

① ابوالنعمان: دا ابوالنعمان محمد بن الفضل السدوسي دې د دوی تذکره په کتاب الایمان، "باب قول النبی صلی الله علیه وسلم: الدین النصیحة....." کښې تیره شوې ده^(۶)

(۱) عمدة القاری: ۲۶/۱۵ -

(۲) صحیح البخاری: ۱۳/۱، قدیمی کتب خانه کراچی -

(۳) کشف الباری: ۶۰۹/۱ -

(۴) الابواب والتراجم: ۲۰۵/۱ -

(۵) قوله: ابن عباس رضى الله عنهما: الحديث، مر تخريجه في الایمان، کشف الباری: ۶۹۶/۲ -

(۶) کشف الباری: ۷۶۸/۲ -

② حماد: دا حماد بن زید دې. د دوی حالات په کتاب الایمان، "باب وان طائفتان من المؤمنین اقتتلوا.... الخ" کښې بیان شوې دی (۱)

③ ابو حمزه: دا ابو حمزه نصر بن عمران ضبعی دې. د دوی ترجمه په کتاب الایمان، "باب اداء الخمس من الایمان" کښې تیره شوې ده (۲)

④ ابن عباس: د حضرت عبد الله بن عباس رضی الله عنهما حالات د بدء الوحي لاندې تیر شوې دی (۳)
خبردارې: د حضرت ابن عباس د وفد عبد القیس سره متعلق د باب د حدیث مکمل تشریح په کتاب الایمان کښې تیره شوې ده (۴)

ترجمة الباب سره مناسبت: ترجمې سره د حدیث مناسبت په دې جمله کښې دې، "وان تؤدوا لله خمس ما غنمتم" (۵)

③ باب: نَفَقَةُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ وَفَاتِهِ

د ترجمة الباب مقصد: دلته امام بخاری د نبی کریم صلی الله علیه وسلم د وفات نه پس د هغوی د بیبیا نو د نفقې مسئله بیانوي (۶) تفصیل وړاندې راځي.

۲۹۲۹: (۷) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ «لَا يَقْتَسِمُ وَرَثَتِي دِينَارًا، مَا تَرَكْتُ بَعْدَ نَفَقَةِ نِسَائِي وَمَثُونَةِ عَامِلِي فَهُوَ صَدَقَةٌ». [ر: ۲۶۲۴]

رجال الحديث

① عبدالله بن يوسف: دا عبد الله بن يوسف تنيسي دې.

② مالک: دا امام دارالهجرة حضرت امام مالک بن انس دې. ددې دواړو حضراتو تذکره

د بدء الوحي په اولنۍ حدیث کښې تیره شوې ده (۸)

③ ابو الزناد: دا ابو الزناد عبد الله بن ذکوان دې.

(۱) کشف الباری: ۲/۲۱۹-

(۲) کشف الباری: ۲/۷۰۱-

(۳) کشف الباری: ۱/۴۳۵ و ۲/۲۰۵-

(۴) کشف الباری: ۲/۷۰۴-۷۲۹-

(۵) عمدة القاری: ۱۵/۲۶-

(۶) عمدة القاری: ۱۵/۲۷-

(۷) قوله: عن أبي هريرة رضى الله عنه. الحديث، مر تخريجه فى الوصايا، باب نفقة القيم للوقف. -

(۸) کشف الباری: ۱/۲۸۹-۲۹۰. امام مالک دپاره مزید اوگوری: ۲/۸۰-

④ الاعرج: دا امام عبدالرحمن بن هرمز الاعرج دې. ددې دواړو حضراتو حالات په کتاب الايمان، "باب حب الرسول صلى الله عليه وسلم من الايمان" کښې تیر شوې دي.

⑤ ابوهريره: د ابوهريره حالات په کتاب الايمان، "باب أمور الايمان" کښې تیر شوې دي. قوله: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: لا يقتسم ورثتي دينار: دينار: حضرت ابوهريره نه روايت دي چې رسول الله فرمايلې دي چې زما وارثان به هيڅ دينار نه تقسيموي مطلب دادې چې زما په پريخودلې شوې مال کښې به وراثت نه جاري کيږي، لکه څنگه چې عموماً د نورو خلقو په وفات باندې د هغوی په متروکه مال کښې وراثت جاري کيږي. د صحيحينو دا روايت چې د مالک عن ابی الزناد د طريق نه روايت دي، په دې کښې صرف لفظ د "دينار" راغلي دي^(۱) او د مسلم شريف په يو روايت چې د ابن عيينه عن ابی الزناد د طريق نه مروی دي، هغې کښې "دينار اولادرها" دي^(۲).

د مالک عن ابی الزناد والا روايت په اعتبار سره به د حديث معنی دا شی چې که زما مال متروکه يو دينار هم وی نو بيا هم په هغې کښې به ميراث نه جاري کيږي، چې ددې نه زیات وی نو بيا خو په طريقه اولی به په کښې نه جاري کيږي، ددې وجې نه دا د تنبيه بالافق علی الاعلی "د قبیل نه دي، ددې په شان د الله تعالی دا فرمان هم دي چې (ومنهم من ان تامنه بدينار.....)" چې په دې يهوديانو کښې داسې بدبخت هم دی چې که تاسو هغوی سره يو دينار هم د امانت په طور باندې کيږدئ نو هغوی ئې نه واپس کوی. دلته هم تنبيه الادنی بالاعلی^(۳) ده چې کوم کس يو دينار واپس کولو ته تیار نه وي، نو هغه به ددې نه زیات مال څنگه واپس کړې شی؟^(۴)

^(۱) کشف الباری: ۱۰/۲-۱۱.

^(۲) کشف الباری: ۱/۶۵۹.

^(۳) اوگوري، صحيح بخاری، کتاب الوصایا، باب تفقه القيم للوقف، رقم (۲۷۷۶) وکتاب الفرائض، باب قول النبی صلی الله عليه وسلم: لا نورث، رقم (۶۷۲۹)، وکتاب الجهاد والسير، باب قول النبی صلی الله عليه وسلم: لا نورث.....، رقم (۴۵۸۳).

^(۴) هذا ما قاله الحافظ رحمه الله، ولكني لم أجد هذا اللفظ عند مسلم. والله أعلم، ثم وجدته في التمهيد لابن عبد البر: ۱۷۳/۸.

^(۵) آل عمران: ۷۵.

^(۶) شرح التلويح علی التوضيح ۲۶۳، فصل: مفهوم المخالفة، والتقرير والتحبير: ۱/۴۸، انقسام المفهوم إلى مفهوم موافقة..... ورفع الحاجب عن مختصر ابن الحاجب: ۳/۴۹۲، المطلق والمقيد.

^(۷) فتح الباری: ۶/۲۰۹، وعمدة القاری: ۱۵/۲۷، والاوجز للکانهلوی: ۱۷/۵۴۸، والتمهيد لابن عبد البر: ۱۸/۱۷۱، ش - الک مان: ۱۳/۸۱.

او د مسلم د ابن عیینہ عن ابی الزناد والا روایت په باره کښې حافظ صاحب فرمائی چې دا زیاتوالې غوره ده، دا ابلغ فی النفی ده چې مال متروکه خواه درهم وی یا دینار، په هغې کښې وراثت نه جاری کیږي. او ددې زیاتوالې متابعت هم په شمائل ترمذی کښې موجود دي.

قوله: ما ترک بعد نفقة نسائی، ومؤنة عاملی، فهو صدقة: زما د بیبیانو او زما د خلیفه د خرچ نه علاوه چې کوم مال زه پریرم هغه به صدقه وی.

د نفقة نسائی وضاحت: حضور اکرم ﷺ د وفات نه پس د هغوی په مال کښې د بیبیانو نفقه واجب وه، ددې څه وجه وه، په دې کښې مختلف اقوال دي:

① ځکه چې ازواج مطهرات د نبی ﷺ په حق کښې محبوس (بندي) وې، هغوی د معتداتو په حکم کښې وې، ښکاره خبره ده چې هغوی نکاح خو کولې نه شوه، نو کوم سړې چې د چا په حق کښې محبوس (بندي) وې په هغه باندې دده نفقه واجب وه.

② دغه شان دا خبره هم ده چې حضور اقدس په خپل قبر کښې ژوندې دي، "ان الله حرم علی الارض ان تاكل اجساد الانبياء، فنبی الله سی یزق" (۴) نو ددې وجې نه هم د سرکار دو عالم ﷺ د بیبیانو نفقه د دوی په ذمه باندې واجب وه (۵).

دلته بیا په دې خبره باندې ځان پوهه کړئ چې لفظ د "نفقة" د ژوند ټولو ضروریاتو او لوازماتو ته شامل دي، هم دا وجه وه چې د نبی ﷺ د وفات نه مخکې ازواج مطهرات ﷺ په کومو کورونو کښې مقيمي وې، د وفات نه پس هم هغه د هغوی په ملکیت کښې وو (۶) والله اعلم بالصواب.

د عامل نه څه مراد دي؟ په دې کښې پنځه اقوال دي:

① ددې نه د نبی پاک ﷺ خلیفه مراد دي، حافظ ابن حجر فرمائی "وهذا هو المعتمد، وهو الذي يوافق ما تقدم في حديث عمر" (۷).

(۱) فتح الباری: ۲۰۹/۶.

(۲) پورته حواله، والشمال المحمدية، باب ماجاء فی میراث رسول الله صلى الله عليه وسلم، رقم (۴۰۴).

(۳) قال الله تعالى: (ولا ان تنكحوا ازواجه من بعده ابدأ، ان ذلكم كان عند الله عظيماً) الاحزاب (۵۳).

(۴) سنن ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ذكر وفاته و دفنه صلى الله عليه وسلم، من رواية ابی الدرداء رضی الله عنه، رقم (۱۶۳۷) والحديث صحيح، كما نبه عليه ابن حجر الامام فی التهذيب: ۳/۳۱۸، ترجمة زيد بن ارمين.

(۵) الكرمانی: ۸۲/۱۳، والعمدة: ۲۷/۱۵، والفتح: ۲۰۹/۶، والاوز: ۵۴۸/۱۷، والديباج علی مسلم: ۷۲۴/۲، دغه شان اوگوري، خصائل نبوی اردو: (۲۵۲).

(۶) قاله السبکی والحافظ، انظر فتح الباری: ۸/۱۲، مزيد تفصيل د باب ماجاء فی بیوت ازواج النبی لتندې راخی.

(۷) فتح الباری: ۲۰۹/۶، وعمدة القاری: ۲۷/۱۵، والاوز: ۵۴۹/۱۷.

- چې هم دا معتمد او صحيح خبره ده، وړاندې چې کوم حديث تير شو د هغې موافق هم ده:
- ② ددې نه عامل على النخل مراد دې، يعنى کوم کس چې به د نبى کریم ﷺ د کهجورو د باغونو خيال ساتلو په دې باندې ابن ابطال او امام طبرى يقين کړې دې^(۱)
- ③ د نبى ﷺ قبر مبارک کنستونکى ترينه مراد دې، دا احتمال حافظ لري گرځولې دې.
- ④ د نبى پاک ﷺ خادم ترې نه مراد دې، دا د ابن دحيه قول دې.
- ⑤ عامل على الصدقات ترينه مراد دې^(۲)

په طاعاتو (عباداتو) باندې اجرت اخستل جائز دی: امام طبرى فرمائى چې ددې حديث نه دا فائده معلومه شوه چې هيڅ يو سړې هم چې په کوم نيک کار کښې مشغول وي او د هغې په ذريعې سره د مسلمانانو په مشقت او تکليف کښې سپکوالې او کمې راځي، په هغوى باندې لازمه شوې ذمه وارى کميرې نو په دې باندې دې انسان ته اجرت او معاوضه اخستل جائز دی، لکه مؤذن ته په اذان ونيولو باندې اجرت اخستل او معلم ته د تعليم اجرت اخستل جائز دی.

دې سره چې کوم خلق په اعمالو باندې اجرت اخستلو ته حرام وائى د هغوى د قول بطلان هم ددې حديث نه کيږي.

ددې وجه داده چې نبى کریم ﷺ د باب په حديث کښې خپل پريخودلې شوې مال د هغې کار ولى ته د حواله کولو حکم کړې دې، چې کوم کس به د نبى پاک ﷺ نه پس د مسلمانانو د ټولو کارونو نگران وي، هم دغه نگرانى او مصروفيت ده لره د مال متروکه حقدار جوړوي، ددې وجې نه اوس دا خبره واضحه شوې ده چې هر هغه سړې چې د مسلمانانو د څه معاملې ذمه دار وي، چې د هغې نفع ټولو خلقو ته رسيږي نو ده دپاره به هم هغه لاره اختيارولې شي چې کومه د نبى د عامل (ولى الامر) دپاره اختيار کړې شوې وه چې دده وظيفه وغيره به هم د بيت المال نه وي ترڅو چې دا کس دا ذمه وارى سر ته رسوي، لکه عالمان، قاضيان، د سلطنت اميران او نور ډير هغه حضرات چې د عامو مسلمانانو په کارونو کښې مشغول دي^(۳)

مالونه جمع کول جائز دي: ددې نه علاوه د حضرت ابوهريره د باب په حديث کښې ددې خبرې هم واضح دلالت دې چې الله تعالى مسلمانانو دپاره دومره قدرې مال و دولت جمع کول حلال گرځولې دي چې د دوى او د دوى د اهل و عيال د رزق و خوراک دپاره كافى وي، چې ددې په ذريعې سره دوى د مختلف قسمه حوادثو او آفاتو مقابله کولې شي او د دوى د ضرورياتو نه زياتى وي، د نبى کریم ﷺ خپل فعل مبارک هم دا وو چې د خپل کوروالو غيره دپاره به ئې د يو کال خرچ جمع ساتلو، دې سره سره خپله نفقه او مصرفونه هم..... او

(۱) شرح ابن ابطال: ۲۵۹/۵. ددې قول نسبت د حافظ طبرى طرفته حافظ مېړه کړې دې، او په شرح ابن ابطال کښې ددې برخلاف (ولى الامر) قول د حافظ طبرى طرفته منسوب دې. والله اعلم -

(۲) الفتح: ۲۰۹/۶، والعده: ۲۷/۱۵، والديباچ على مسلم للسيوطى: ۷۲۴/۲، والکرماني: ۸۲/۱۳ -

(۳) شرح ابن ابطال: ۲۵۹/۵ -

خه به چې پاتې کيدل نو هغه به ئې د مسلمانانو په نفع کښې استعمالول. اسلحه وغيره به ئې اخستله، ښکاره خبره ده چې دا ټول هرڅه يوځانې شي نو د مال و متاع يو لويه مجموعه ده او په دې باندې بېشکه د مال کثير اطلاق کيدې شي.

ددې ټول تفصيل نه دا خبره ښه معلومه شوه چې مال جمع کول جائز دی ليکن چې نيت د نورو خلکو په وړاندې د سوال د لاس خورولو نه ځان بچ کول، د نفس عزت لره برقرار ساتلو سره د نبی کریم ﷺ اقتداء وي (۱).

مال جمع کول د نهرې لوړې اختيارولو نه غوره دي: د باب د حديث نه دا خبره هم معلومه شوه چې د مال و متاع جمع کول د نهرې لوړې اختيارولو نه غوره دي. په دې شرط چې بنده په مال کښې هغه حقوق هم ادا کوي کوم چې د الله تعالی حقوق دي.

که نهره لوړه غوره وي نو نبی کریم ﷺ به کله هم مال و سامان وغيره جمع کړې نه وو. بلکه ورسره به چې خه وو نو هغه به ئې په خپلو ملگرو خصوصاً په ضرورت مندو کښې تقسيمول. په خپل ملکيت کښې به ئې هيڅ هم نه ساتل حالانکه حديث مبارک ددې برخلاف دي. ددې وجې نه ابن ابطال فرمائي:

وان ذلك اى اتخاذ الاموال واقتناؤها افضل من الفقر والفاقة اذا ادى حق الله منها، ولو كان الفقر افضل لما كان الرسول يختار احسن المنزلتين عند الله على ارفعهما، بل كان يقسم امواله واصوله على اصحابه، ولا سيما بين ذوى الحاجة منهم (۲).

ترجمة الباب سره د حديث مناسبت: ترجمه الباب سره د حديث مناسبت واضح دي (۳) چې ترجمه د ازواج مطهرات د نفقې وه، په حديث شريف کښې هم دا مضمون دي چې د نبی پاک ﷺ په متروکه مال کښې به د ازواج مطهرات ﷺ حصه د نفقې په طور باندې وي والله اعلم ۲۹۳۰: (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ تَوَفَّى رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- وَمَا فِي بَيْتِي مِنْ شَيْءٍ يَأْكُلُهُ ذُو كَبِدٍ، إِلَّا شَطْرُ شَعِيرَفِي رَقِيْلِي، فَأَكَلْتُ مِنْهُ حَتَّى طَالَ عَلَى، فَكَلَّتُهُ فَقِنِي. [۶۰۸۶]

رجال الحديث

① عبدالله بن ابی شيبه: دا ابوبکر عبد الله بن محمد بن ابی شيبه دي (۵)

(۱) شرح ابن ابطال: ۲۵۹/۵-۲۶۰

(۲) شرح ابن ابطال: ۲۶۰/۵-

(۳) عمدة القاری: ۲۷/۱۵-

(۴) قوله: عن عائشة رضى الله عنها: الحديث. اخرجه البخارى. كتاب الرقاق ايضا. باب فضل الفقر. رقم (۶۴۵۱). ومسلم. اوانل كتاب الزهد. رقم (۷۴۵۱). والترمذی. كتاب صفة القيامة. باب حديث عائشة: توفى رسول الله..... رقم (۲۴۶۷). وابن ماجه. الاطعمة. باب خبز الشعير. رقم (۳۳۴۵).
(۵) د دوى حالات كتلو دپاره اوگورى، كتاب العمل فى الصلوة. باب لا يرد السلام فى الصلوة.

۲) ابواسامه: دا ابواسامه حماد بن اسامه دي. د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب فضل من علم وعلم" کښې تیره شوې ده.^(۱)

۳) هشام بن عروه: دا مشهور محدث حضرت هشام بن عروه دي.

۴) ابيه: دا اب نه مراد حضرت عروه بن الزبير بن العوام دي.

۵) عائشه: دا حضرت عائشه صديقه کبریٰ بنت محمد اکبر ﷺ ده. د دې درې وارو حضراتو

تذکره د "بدء الوحي" د "الحديث الاول" لاندې تیره شوې ده.^(۲)

قوله: قالت: توفي رسول الله صلى الله عليه وسلم ومافي بيتي من شيء ياكله

ذوکېد، الا شطر شعير في رف لي: حضرت عائشه فرمائی چې کله رسول الله مبارک ﷺ وفات شو نو زما په کور کښې داسې څه هم نه وو چې هغه څه ساه لرونکې څيز او خوری، سوا د لږو شان او ربشو نه چې زما په یو تاخ کښې پرته وي.

"ذوکېد" نه مراد ساه لرونکې ذی روح دي، خواه انسان وي یا بل یو ځناور.^(۳)

د "شطر" نه مراد د حافظ بن حجر د قول مطابق بعض دي. البته د دې اطلاق په نیم یا په معین جهت باندې هم کیږي لیکن دلته آخری دواړه معنې مرادې نه دي.^(۴)

او قاضی عیاض د شطر تفسیر "نیم وسق" بیان کړې دي. د دې نه علاوه د دې کلمې په تفسیر کښې نور اقوال هم دي.^(۵) د دې ټولو خلاصه داده چې دغه اوربشې په ډیر کم مقدار کښې وي. "رف" په دیوال کښې دننه تاخ ته وئیلې شی او دیوال سره لگیدلې تختې ته هم وائی چې په هغې باندې د کور سامان کیږي، حافظ فرمائی:

"قال الجوهري: "الرف: شبه الطاق في الحائط". وقال عياض: "الرف: خشب يرتفع عن الارض في البيت، يوضع فيه ما يراود حفظه". قلت: والاول اقرب للبراد"^(۶)

د دې جمع رفوف او رفاف راځي.^(۷)

یو اشکال او د هغې جواب: د کتاب الوصایا یو حدیث چې د حضرت عمرو بن الحارث مصطلقی دي (چې د هغې بعضې حصه هم د باب حدیث دي) په هغې کښې راغلې دي:

^(۱) کشف الباری: ۴۱۴/۳ _

^(۲) کشف الباری: ۲۹۱/۱، هشام او عروه دپاره مزید او گوري، کشف الباری: ۴۳۲/۲-۴۴۰ _

^(۳) فتح الباری: ۱۱/۲۸۰، وعمدة القاری: ۲۸/۱۵ _

^(۴) فتح الباری: ۱۱/۲۸۰ _

^(۵) پورته حواله، وعمدة القاری: ۲۸/۱۵، واکمال المعلم للقاضی: ۲۶۶/۸، کتاب الزهد، رقم (۲۷) _

^(۶) فتح الباری: ۱۱/۲۸۰، والصاح للجوهري: ۴۱۹، مادة رف _

^(۷) عمدة القاری: ۲۷/۱۵ _

«ما ترک رسول الله صلی الله علیه وسلم عند موته دینارا، ولا درهما، ولا عهداً، ولا امة، ولا شیئاً، الا.....» (۱)
چې نبی کریم ﷺ د خپل وفات په وخت کېنې نه څه دینار په ترکه کېنې پریخودلې وو نه درهم، نه ئې غلام پریخودلې وو او نه وینزه، نه بل څه څیز، سواء د یو سپینې خچرې، اسلحې او زمکې نه چې هغه ئې په صدقه کېنې جمع کړې وو.

او د باب په حدیث شریف کېنې حضرت عائشه رضی الله عنها دا فرمائی چې هغوی لږې اوربشې هم پریخودلې وې نو پورته د شې «نفي وه او دلته د شې» د وجود اثبات دي.

ددې سوال جواب ډیر آسان دي، هغه دا چې د حضرت عمرو بن الحارث په حدیث کېنې د هغې څیزونو ذکر دي چې کوم د نبی کریم سره خاص وو چې په هغې کېنې پیغمبر پاک هیڅ یو څیز هم پریخودو او د حضرت عائشه صدیقه رضی الله عنها په حدیث کېنې د هغې څیز ذکر دي چې کوم د هغې د نفقې حصه وه او هغې سره خاص وو چونکه مورد جدا جدا دي، ددې وجې نه د اشکال هیڅ وجه نه شی کیدي (۲).

قوله: فاکلت منه حتى طال علي: نو ما د هغې نه خوراک کوو تردې چې معامله په ما باندې اوږده شوه.

یعنی حضرت عائشې رضی الله عنها د دغې اوربشو نه خوراک کوو تردې چې په دې کېنې څه موده تیره شوه لیکن هغه اوربشې ختمې نه شوې.

فکلته ففقي: نو ما د هغې وزن او کړو ددې وجې نه هغه ختمې شوې.

«کلته» د کاف په کسرې سره (۳) د کال یکیل نه د ماضی واحد متکلم صیغه ده.

د اوربشو د ختمیدلو وجه: علامه ابن ابطال فرمائی چې حضرت عائشې سره کومې اوربشې وې هغه چونکه وزن کړې شوې نه وې، ددې وجې نه په هغې کېنې برکت هم وو، ځکه چې هغې ته د هغې د وزن علم نه وو، د هغې کمی طرفته کتلو سره به حضرت عائشې رضی الله عنها روزانه دا خیال کوو چې دا اوربشې به ډیرې زر ختمې شی ددې وجې نه هغې ته دا معامله اوږده ښکاره شوه لیکن هرکله چې هغې وزن او کړو نو د باقی پاتې کیدو مدت معلوم شو نو د

هغه مودې په پوره کیدو باندې هغه اوربشې هم ختمې شوې (والله اعلم).

ترجمة الباب سره د حدیث مناسبت: حضرت عائشې رضی الله عنها د حدیث مناسبت ترجمه الباب

سره په دې جمله کېنې دي «فاکلت منه حتى طال علي، فکلته ففقي» او حضرت عائشې رضی الله عنها دلته دا اونه فرمائیل چې هغې دا اوربشې په خپله حصه کېنې اخستلې وې، ځکه چې که په نفقه کېنې د هغې استحقاق نه وو نو موجوده اوربشې به ئې په بیت المال کېنې جمع کړې وې یا

(۱) صحیح البخاری، کتاب الوصایا، وقول النبی صلی الله علیه وسلم..... رقم (۲۷۳۹)۔

(۲) فتح الباری: ۱۱/۲۸۰۔

(۳) فتح الباری: ۱۱/۲۸۰۔

(۴) شرح ابن ابطال: ۵/۲۶۱۔

به نې د وارثانو مینځ کښې تقسیم کړې وې، په وارثانو کښې هغه هم وه او داسې اونه شونو معلومه شوه چې دا نفقه وه، میراث نه وو.

لکه ابن المنیر فرمائی: "وجه مطابقة الترجمة لحديث عائشة، قولها: "فاكلت منه حتى طال علي، فمكته ففني" ولم تذكر أنها أخذته في نصيبها، إذ لو لم تكن لها النفقة لكان الشعيبر الموجود لبیت المال، أو مقسوما بين الورثة، وهي إحداهن" (۱)

۲۹۳۱ (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ سَمِعْتُ عَمْرَو بْنَ الْحَارِثِ قَالَ مَا تَرَكَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - إِلَّا سِلَاحَهُ وَبَغْلَتَهُ الْبَيْضَاءَ، وَأَرْضًا تَرَكَهَا صَدَقَةً. [ر: ۱۲۵۸۸]

رجال الحديث

① مسدد: دا مسدد بن مسرهد بن مسربل دي. د دوی تذکره په کتاب الایمان، "باب من الایمان أن يحب لأخيه....." کښې تیره شوې ده (۳)

② يحيى: د امام يحيى بن سعيد تذکره هم د کتاب الایمان مذکورده باب کښې تیره شوې ده (۴)

③ سفيان: دا امام المحدثين حضرت سفيان ثوري دي. د دوی حالات په کتاب

الایمان، "باب ظلم دون ظلم" کښې تیر شوې دي (۵)

④ ابواسحاق: دا ابواسحاق عمرو بن عبيد الله السبيعي دي. د دوی حالات په کتاب

الایمان، "باب الصلوة من الایمان" کښې تیر شوې دي (۶)

⑤ عمرو بن الحارث: دا د نبی ﷺ نسبتی ورور حضرت عمرو بن الحارث خزاعي مصطلقي دي (۷)

د حديث شريف ترجمه: دا حديث چونکه اوس نزدې په کتاب الوصايا کښې تیر شوې دي، ددې وجې نه دلته صرف په ترجمه باندې اکتفاء کولې شي.

(۱) المتواری: ۱۸۵، وفتح الباری: ۲۰۹/۶، وعمدة القاری: ۲۷/۱۵، وقال القاضي في إكمال المعلم (۲۶۶/۸):

وفي هذا أن البركة أكثر ما توجد في المجهولات والمبهات، وأما ما حصر بالعدد أو بالكيل فمعرف قدره (۲)

(۲) قوله: عمرو بن الحارث رضي الله عنه: الحديث، مر تخريجه في كتاب الوصايا، باب الوصايا..... (۳)

(۳) كشف الباری: ۲/۲ -

(۴) پورته حواله -

(۵) كشف الباری: ۲/۲۷۸ -

(۶) كشف الباری: ۲/۳۷۰ -

(۷) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الزکوة، باب الزکاة علی الزوج والایتام..... -

حضرت عمرو بن الحارث فرمائی چې نبی کریم ﷺ د وفات په وخت کښې دا لاندینی خیزونه پریخودلې وو:

اسلحه، سپینه خچره او څه زمکې چې دا نبی د صدقې په طور باندې پریخودلې وو. ترجمه الباب سوه د حدیث مناسبت: ترجمه الباب سره د حدیث مناسبت په دې معنی کښې دې چې نبی کریم ﷺ کومې زمکې د صدقې په طور پریخودلې وې، د هغې نه به د ازواج مطهرات ﷺ نفقه ورکولې شوه. دا روایت صراحتاً خو د مصنف مدعی نه ثابتوی لیکن د مصنف عادت دې چې هغوی داسې کوی چې بعضې داسې روایات نقل کوی چې صراحتاً د مدعی دپاره مفید وی او بعضې روایات داسې وی چې هغه په خپله خو مدعی نه ثابتوی لیکن نورو روایتونو سره چې ملاؤشی اویا ورته اوکتلې شی نویا ترینه د مدعی اثبات کیږي، دلته هم دغه شان ده، نورو روایتونو سره د ملاویدلو نه پس ددې نه د مدعی اثبات کیږي.

علامه ابن المنیر فرمائی: "وجه مطابقتها للحديث..... قوله: "وارضا تركها صدقة"، لانها الارض التي أنفق على نسائه منها بعد وفاته صلى الله عليه وسلم، على ما هو مشهور في الحديث" (۱) او علامه عینی فرمائی:

"مطابقته للترجمة تؤخذ من قوله: "وارضا تركها صدقة"، وذلك، لان نفقة نسائه صلى الله عليه وسلم بعد موته كانت مباحصة الله به من الفی، ومنه فذك، وسهمه من خيبر" (۲) والله اعلم بالصواب.

د حدیث سند سره متعلق یو خبرداري: امام قابسی دا حدیث د "حدثنا يحيى عن سفيان....." د طریق نه نقل کړې دې، دغه شان د هغوی نه د بخاری د شیخ حضرت مسدد نوم پاتې شوې دې حالانکه ددې نوم نه بغیر بله څه لاره نشته ځکه چې يحيى بن سعيد القطان د امام بخاری شیخ نه دې، نه د هغوی نه د مصنف سماع ثابته ده، امام جیانی په دې باندې خبرداري کړې دي.

البته د امام قابسی وینا که صحیح هم او ګرځولې شی نو د يحيى نه به مراد ابن موسی یا ابن جعفر وی او د سفيان نه به ابن عیینه، چونکه ابن موسی او ابن جعفر دواړه د امام بخاری شیخان دي (۳)، لیکن دا خبره د احتمال د حده پورې ده، صحیح خبره هم هغه ده کومه چې جیانی کړې ده والله اعلم.

(۱) المتواری: (۱۸۵)۔

(۲) عمدة القاری: ۲۸/۱۵، وبه قال القسطلانی، انظر ارشاد الساری: ۱۹۷/۵۔

(۳) فتح الباری: ۶/۲۱۰، وعمدة القاری: ۲۸/۱۵۔

باب: ما جاء في بيوت ازواج النبی صلی الله علیه وسلم وما نسب من البيوت اليهن

وقول الله تعالى: "وقرن في بيوتكن" / الاحزاب: ۳۳. و: "لا تدخلوا بيوت النبی الا ان يؤذن لکم" / الاحزاب: ۵۳.

د ترجمه الباب مقصد: حضرت امام بخاری دلتہ دا فرمائی چې څنگه د حضور اقدس د وفات نه پس د هغوی په مال کښې د هغوی د ازواج مطهرات عليهن السلام نفقه واجب وه، دغه شان د نبی عليه السلام د وفات نه پس د هغوی د ازواج مطهرات عليهن السلام دپاره اوسیدل هم د نبی عليه السلام په کورونو کښې واجب وو، ځکه چې دا ټولې بیبیانې د نبی عليه السلام په حق کښې محبوسې (قید) وې، ددې وجې نبی اکرم عليه السلام چې په کومو کورونو کښې دا ازواج مطهرات ساتلې وې نو د نبی عليه السلام د وفات نه پس هم دوی په دغه کورونو کښې اوسیدلې.

دغه شان دا ازواج مطهرات عليهن السلام څنگه چې په ژوند کښې د نفقې مستحقې وې نو دغه شان د اوسیدلو (د مکان) هم مستحقې وې (۱).

د ازواج مطهراتو قیام د اوسیدلو په حیثیت سره وو یا د ملکیت په حیثیت سره؟ اصل مسئلې طرفته د تللو نه وړاندې په دې باندې ځان پوهه کړئ چې امام بخاری دلتہ د ترجمه الباب لاندې دوه آیتونه ذکر کړي دي، یو (وقرن في بيوتكن) او دویم (لا تدخلوا بيوت النبی الا ان يؤذن لکم) په اولنۍ آیت کښې د بیوت نسبت ازواج مطهرات عليهن السلام طرفته او په دویم آیت کښې د نبی کریم عليه السلام طرفته دي.

امام بخاری غالباً ددې په ذریعې سره هغه اختلاف طرفته اشاره کړې ده کوم چې په دې عنوان کښې ذکر دي چې د ازواج مطهرات عليهن السلام په مذکوره کورونو کښې قیام صرف د اوسیدلو په حیثیت سره وو یا د ملکیت په حیثیت سره، یا داسې اووایی چې دا کورونه دوی ته صرف د اوسیدلو دپاره ورکړي شوي وو یا دوی ددې کورونو مالکان جوړ کړي شوي وو.

د قرآن پاک مشهور مفسر علامه جمل د آیت کریمه (لا تدخلوا بيوت النبی الا ان يؤذن لکم) تفسیر کښې فرمائی:

په دې آیت کښې ددې خبرې دلیل دي چې کور د سړي وی او هغه دپاره به ددې فیصله کولې شي ځکه چې الله تعالی په خپله د کور نسبت د سړي (نبی کریم عليه السلام) طرفته کړې دي.

لیکن په دې باندې اعتراض دا دی چې په یو بل آیت (واذکرن ما یتلین فی بیوتکُن) کښې خو د

(۱) المتواری: ۱۸۶، وفتح الباری: ۲۱۱/۶، وعمدة القاری: ۲۹/۱۵، وتعلیقات اللامع: ۷/۲۹۴. —

(۲) الاحزاب: ۳۳. —

(۳) الاحزاب: ۵۳. —

(۴) الاحزاب: ۳۴. —

کورونو نسبت د بنحو ازواج مطهرات عليه السلام طرفته کړې شوې دې، ددې وجې نه دا وینا خو صحیح نه شوه چې کور د سړی وی.

ددې جواب دادې چې د بیوت (کورونو) اضافت د نبی عليه السلام طرفته د ملکیت په اعتبار سره دې او د ازواج مطهرات عليه السلام طرفته د محل په اعتبار سره دې چې دا د دوی د اوسیدلو ځایونه دی. ددې دلیل دادې چې په آیت کریمه کښې د داخلیدو اجازت د نبی عليه السلام فعل ښودلې شوې دې او اجازت صرف د مالک حق وی.

بیا په دې ځان پوهه کړئ چې د نبی عليه السلام په کورونو کښې د علماؤ اختلاف دې، او په دې مسئله کښې د هغوی دوه اقوال دی:

① د یو جماعت وینا ده چې دا کورونه د ازواج مطهرات عليه السلام ملکیت وو، هغوی په دې کښې د ملکیت په اعتبار سره اوسیدل. ددې خبرې دلیل ددې حضراتو د وینا مطابق دا دې چې د نبی عليه السلام د وفات نه پس هم ازواج مطهرات عليه السلام په دغه کورونو کښې اوسیدل تردې چې وفاتې شوې، ددې وجه دا وه چې نبی عليه السلام په خپل ژوند مبارک کښې دا کورونه ازواج مطهرات عليه السلام ته هبه کړې وو.

② او یو بل جماعت دا وائی چې دا اوسیدل وو، هبه نه وه او ازواج مطهرات عليه السلام د ژوند پورې دغلته اوسیدل ځکه چې دا د هغې "مؤنة" حصه وه کوم چې نبی کریم عليه السلام مستثنی گرځولې وه، لکه څنگه چې ئې د هغوی نفقه مستثنی گرځولې وه چې ماترکت بعد نفقة اهل و مؤنة عامل فهو صدقة^(۱)، هم دا د اهل علمو قول دې او هم دې لره امام ابن عبدالبر^(۲) او ابن العربی وغیره غوره کړې دې.

ددې دلیل دادې چې ازواج مطهرات عليه السلام په کومو کورونو کښې مقیمې وې، د هغوی د وفات نه پس دغه کورونه د هغوی د وارثانو طرفته منتقل نه شو، ددې وجې نه دا ددې خبرې واضحه دلیل دې چې دا کورونه د دوی په ملکیت کښې نه وو، صرف مسکن (د اوسیدلو دپاره) وو چې کله دوی وفات شوې نو دغه کورونه د مسجد نبوی عليه السلام حصه او گرځولې شو او ددې کورونو په ذریعې سره د مسجد نبوی توسیع او کړې شوه^(۳).

د امام بخاری او د حضرت کنکوهی رائي: د حضرت شیخ الحدیث د قول مطابق د امام بخاری رائي دا معلومېږي چې هغوی ددې کورونو د ملکیت قائل وو چې ازواج مطهرات عليه السلام په دې کورونو کښې د ملکیت په حیثیت سره مقیمې وې، لکه مصنف ومانسب الیهن من البيوت^(۴).

(۱) الحدیث، مر تخریجه فی الباب السابق عن أبی هريرة رضي الله عنه.

(۲) التمهيد لابن عبد البر: ۱۷۲/۸-۱۷۴، واحكام القرآن لابن العربي: ۱۲/۳-۱۳، المسئلة الثالثة، سورة الاحزاب، الآية: ۵۳.

(۳) انتهى ما قاله سليمان الجمل رحمه الله مختصراً، نقلاً عن تعليقات اللامع: ۲۹۵/۷، والابواب والتراجم للشيخ الكاندهلوي: ۲۰۵/۱، وحاشية الجمل على الجلالين: ۱۹۲/۶-۱۹۳، سورة الاحزاب: ۵۳، دغه شان اوگوري، ابن ابطال: ۲۶۳/۵، والديباج للسيوطي: ۷۲۴/۲.

وئیلو سره غالباً ددې خبرې طرفته اشاره کړې ده.

لیکي: "وقول البخاری فی الترجمة: "وما نسب اليهن" لعله إشارة إلى ترجيح ملكهن" (۱)
او هم دا رائي د حضرت گنگوهی هم ده، ارشاد فرمائي:

"يعنى بذلك أن إضافتها إليهن تبليكة، وإليه صلى الله عليه وسلم لادنى ملايسة، فكان قد ملكهن إياها قبل الموت، فلا يعترض على قوله: "لأنورث، ما تركناه صدقة" (۲)

او ابن المنير ددې خلاف رائي اختياره کړې ده او فرمائي چې امام بخاری دلته دا وئیل غواړي چې دې کورونو کښې ازواج مطهرات عليه السلام ته د اوسیدلو اختیار وو، مالکانه اختیارات ورته نه وو، فرمائي:

"وساق البخاری الأحاديث التي تنسب إليهن البيوت فيها تنبيهها على أن هذه النسبة تحقق دوام استحقاقهن للبيوت مابقين" (۳)

یو اهم خبرداري: حافظ ابن حجر، علامه قسطلانی او شیخ الاسلام زکریا انصاری وغیره په کتاب الوضوء (۴) کښې پورته ذکر شوي اولنې احتمال چې نبی کریم صلی الله علیه و آله دا کورونه ازواج مطهرات عليه السلام ته هبه کړې وو او د دغه کورونو ئې مالکاني جوړې کړې وې، ذکر کړې دې او دا قول ئې هلته اختیار کړې دې، او دلته کتاب الخمس ته رارسیدلو سره دې حضراتو دلته ددې خبرې وضاحت کړې دې چې حضور اکرم صلی الله علیه و آله کوم کورونه ازواج مطهرات عليه السلام ته ورکړې وو نو هغه د هغوی ملکیت نه وو بلکه هلته د هغوی قیام صرف د اوسیدلو په حیثیت سره وو، لکه څنگه چې نسخې ته نفقه ورکولې شی او د اوسیدلو دپاره ورته کور ورکولې شی نو هغه د هغې مالکانه نه وی او دې حضراتو دا وضاحت هم کړې دې چې هم دا وجه ده چې د هغوی د وارثانو طرفته دغه کورونه منتقل نه شو (۵)

په حافظ صاحب، علامه قسطلانی او شیخ زکریا انصاری ټولو باندې دا اعتراض کیږي چې هلته په کتاب الوضوء کښې مو څه وئیل او دلته په کتاب الخمس کښې څه وائي، لیکن دا اشکال په علامه عینی (۶) باندې نه کیږي ځکه چې هغوی دا احتمال په کتاب الوضوء کښې نه دي ذکر کړې چې د ازواج مطهرات عليه السلام قیام په دغه کورونو کښې په مالکانه حیثیت سره وو (۷)

(۱) تعليقات اللامع: ۲۹۵/۷، والابواب والتراجم: ۲۰۵/۱.

(۲) لامع الدرري: ۲۹۴/۷، والابواب والتراجم: ۲۰۵/۱.

(۳) المتواری: ۱۸۶-۱۸۷.

(۴) فتح الباری للعسقلانی، کتاب الوضوء، باب من تبرز علی لبنتين، رقم (۱۴۵)، وشرح القسطلانی: ۲۳۸/۱، باب التبرز فی البيوت، وتحفة الباری: ۱۵۸/۱، باب التبرز فی البيوت.

(۵) فتح الباری: ۲۱۱/۶، وتحفة الباری: ۵۳۷/۳، وشرح القسطلانی: ۱۹۷/۵.

(۶) عمدة القاری: ۲۸۶/۲، کتاب الوضوء، باب التبرز فی البيوت.

(۷) عمدة القاری: ۲۹/۱۵.

دې نه پس خان په دې پوهه کړې چې امام بخاری د ترجمه الباب لاندې اووه احادیث مارکه ذکر کړې دي، اولنې حدیث د حضرت عائشې صدیقې رضی الله عنها دې ۲۹۳: (۱) حَدَّثَنَا حَبَانُ بْنُ مُوسَى وَفَحْمَدٌ قَالَا أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ وَيُونُسُ عَنْ زُهْرِي قَالَ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ عَائِشَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - زَوْجَ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَتْ لَمَّا ثَقُلَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - سَأَذَنَ أَزْوَاجَهُ أَنْ يُمَرَّضَ فِي بَيْتِي فَأَذِنَ لَهُ. [ر: ۱۱۹۵]

رجال الحديث

- ① حبان بن موسی: دا د امام بخاری شیخ حبان بن موسی السلمی المروزی دې (۲)
 - ② محمد: د محمد نه مراد ابن المقاتل مروزی دې، د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب ما یدکر فی المناولة، و کتاب أهل العلم....." کښې بیان شوې ده (۳)
 - ③ عبدالله، ④ معمر، ⑤ یونس: د عبدالله نه مراد ابن المبارک، د معمر نه ابن راشد او د یونس نه مراد ابن یزید ایلی دې. د دې ټولو حضراتو ترجمه د "بدء الوحي" د "الحديث الخامس" لاندې تیره شوې ده (۴)
 - ⑥ الزهري: دا امام محمد بن مسلم ابن شهاب الزهري دې. د دوی حالات د "بدء الوحي" په "الحديث الاول" کښې تیر شوې دي (۵)
 - ⑦ عبيدالله بن عبدالله بن عتبة بن مسعود: دا د مدینې منورې مشهور فقیه حضرت عبيدالله بن عبدالله بن عتبة بن مسعود دې. د دوی حالات هم د "بدء الوحي" په "الحديث الخامس" کښې تیر شوې دي (۶)
 - ⑧ عائشه: د حضرت عائشې صدیقې رضی الله عنها حالات د "بدء الوحي" په اولنې حدیث کښې تیر شوې دي (۷)
- قوله: أن عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم قالت: لما ثقل رسول الله...:

① قوله: عائشة رضي الله عنها.....: "مر تخريجه في الوضوء، باب الغسل والوضوء في المخصب....." _
 ② د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الاذان، باب يسلم حين يسلم الامام _
 ③ (كشف الباري: ۲۰۶/۳) _
 ④ (كشف الباري: ۴۶۲/۱-۴۶۶، يونس بن يزيد دپاره مزید اوگوري: كشف الباري: ۲۸۲/۳) _
 ⑤ (كشف الباري: ۳۲۶/۱) _
 ⑥ (كشف الباري: ۴۶۶/۱ و ۳۷۹/۳) _
 ⑦ (كشف الباري: ۲۹۱/۱) _

حضرت عبیدالله بن عبدالله فرمائی چې حضرت عائشه او فرمائیل چې کله د رسول الله مبارک طبیعت ناساز شو نو دوی د نورو بیبیانو نه ددې خبرې اجازت واخستلو چې دوی به دبیماری په ورځو کښې زما په کور کښې او سپړې نوازواج مطهرات رضی الله عنهن ورته اجازت ورکړو. دویم حدیث هم د حضرت عائشې صدیقې رضی الله عنها دی.

۲۹۳۳ (۱) حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا نَافِعٌ سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ قَالَتْ عَائِشَةُ -

رضی الله عنها تَوَفَّى النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فِي بَيْتِي، وَفِي نَوْبَتِي، وَيَبْنِ سَجْدِي وَنَحْرِي، وَجَمَعَ اللَّهُ بَيْنَ رِيقِي وَرَيْقِهِ. قَالَتْ دَخَلَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بِسِوَاكٍ، فَضَعَفَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَنْهُ، فَأَخَذَتْهُ فَبَضَعَتْهُ ثُمَّ سَنَنْتُهُ بِهِ. (ر: ۸۵۰)

رجال الحديث

① ابن ابی مریم: دا ابو محمد سعید بن الحکم بن ابی مریم الجمحی دی. د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب من سمع شیئا فراجع حق یعرفه" کښې تیره شوې ده (۲).

② نافع: دا نافع بن یزید مصري دی (۳).

③ ابن ابی ملیکه: دا عبیدالله بن ابی ملیکه دی. د دوی حالات په کتاب الایمان، "باب خوف المؤمن من ان يحبط عمله....." کښې تیر شوې دی (۴).

④ عائشه: د حضرت عائشه صدیقې تذکره په "بدء الوحي" کښې تیره شوې ده (۵).

قوله: قالت عائشة رضي الله عنها: توفي النبي صلى الله عليه وسلم في بيتي.....

حضرت عائشه صدیقې رضی الله عنها فرمائی چې د نبی کریم صلی الله علیه وسلم انتقال زما په کور کښې، زما د نمبر والا ورځ، زما په سینه باندې داسې چې د نبی کریم صلی الله علیه وسلم سر مبارک زما په سینه باندې پروت وو، او شو او الله تعالی زما لارې او د نبی کریم صلی الله علیه وسلم لارې مبارکې جمع کړې هغه داسې چې حضرت عبدالرحمن بن ابی بکر رضی الله عنه چې راغې نو مسواک ورسره وو، نبی صلی الله علیه وسلم کښې دومره طاقت نه وو چې هغه ئې چوپلې وو، نو ما مسواک واخستلو، هغه مې په خله کښې نرم کړو، بیا مې ورله مسواک او کړو.

او د حدیث پوره تفصیلی تشریح وړاندې په کتاب الجمعة کښې تیره شوې ده (۶).

① (قوله: قالت عائشة رضي الله عنها: "الحديث، مر تخريجه في كتاب الجمعة، باب من تسوك.....") _

② (كشف الباري: ۱۰۶/۴) _

③ (د دوی حالات کتلو دپاره اوگوری، کتاب الجنائز، باب الدخول على الميت بعد الموت اذا.....) _

④ (كشف الباري: ۵۴۸/۲) _

⑤ (كشف الباري: ۲۹۱/۱) _

⑥ (صحيح البخاري، كتاب الجمعة، باب من تسوك..... رقم (۸۹۰)) _

د باب دریم حدیث د ام المؤمنین حضرت صفیه دې.

۲۹۳۴: (۱) حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَفِيرٍ قَالَ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ أَنَّ صَفِيَّةَ زَوْجَ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا جَاءَتْ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - تَزُودُهُ، وَهُوَ مُعْتَكِفٌ فِي الْمَسْجِدِ فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ ثُمَّ قَامَتْ تَنْقَلِبُ فَقَامَ مَعَهَا رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - حَتَّى إِذَا بَلَغَ قَرِيبًا مِنْ بَابِ الْمَسْجِدِ عِنْدَ بَابِ أُمِّ سَلَمَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - مَرَّ بِهِمَا رَجُلَانِ مِنَ الْأَنْصَارِ، فَسَلَّمَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -، ثُمَّ نَقَذَا فَقَالَ هُنَا رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «عَلَى رِسْلِكُمَا». قَالََا سُبْحَانَ اللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ. وَكَبَّرَا عَلَيْهِمَا ذَلِكَ. فَقَالَ «إِنَّ الشَّيْطَانَ يَبْلُغُ مِنَ الْإِنْسَانِ مَبْلَغَ الدَّمِ، وَإِنِّي خَشِيتُ أَنْ يَقْذِفَ فِي قُلُوبِكُمَا شَيْئًا». (ر: ۱۹۳۰)

رجال الحديث

- ① سعید بن عفیر: دا سعید بن کثیر بن عفیر دې. د دوی تفصیلی تذکره کتاب العلم، "باب من یرد الله به....." کښې تیره شوې ده (۱)
- ② الليث: دا مشهور محدث لیث بن سعد فهمی دې. د دوی حالات د "بدء الوحي" په "الحديث الاول" کښې تیر شوې دي (۲)
- ③ عبد الرحمن بن خالد: دا عبد الرحمن بن خالد دې. د دوی ترجمه تفصیل سره د کتاب العلم، په "باب السمرني العلم" کښې تیره شوې ده (۳)
- ④ ابن شهاب: د ابن شهاب الزهري مختصر حالات د "بدء الوحي" په "الحديث الاول" کښې تیر شوې دي (۴)
- ⑤ علي بن حسين: دا امام زين العابدين علي بن حسين بن علي دې (۵)
- ⑥ صفیه: دا ام المؤمنین حضرت صفیه بن حبی (رضی الله عنها) ده (۶)

① قوله: ان صفية الحديث، مر تخريجه في الاعتكاف، باب هل يخرج المعتكف الى؟) _

② (كشف الباري: ۲۷۴/۳) _

③ (كشف الباري: ۳۲۴/۱) _

④ (كشف الباري: ۴۰۵/۴) _

⑤ (كشف الباري: ۳۲۶/۱) _

⑥ (د دوی حالات کتلو دپاره اوگوری، کتاب الغسل، باب الغسل بالصاع ونحوه) _

⑦ (د دوی حالات کتلو دپاره اوگوری، کتاب الحيض، باب المرأة تحيض بعد الافاضة) _

د هديت شريف ترجمه حضرت صفيه عليها السلام فرمائي چې دا يو ځل د رسول الله مبارک صلی اللہ علیہ وسلم د ملاقات دپاره مسجد نبوی ته حاضره شوه، چرته چې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د رمضان المبارک په آخری عشره کښې معتکف وو، د ملاقات نه پس د رخصتیدو دپاره اودریده نو نبی صلی اللہ علیہ وسلم ورسره هم اودریدلو او ورسره روان شو، تردې چې کله د مسجد دروازي ته اورسیدل کوم چې د باب ام سلمه سره متصله وه، هغې ته نزدې اورسیدل نو ددې دواړو خوا ته دوه انصاري صحابه تیر شو، هغوی نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم ته سلام اوکړو، بیا وړاندې تیر شو نو نبی صلی اللہ علیہ وسلم دغې دواړو ته او فرمائیل چې آرام سره ځانې (څه داسې خبره نشته) هغې دواړو حضراتو او وئیل، یا رسول الله! سبحان الله! (دا جمله هغوی د تعجب د وجې نه او وئیل) او په دې دواړو باندې د نبی صلی اللہ علیہ وسلم خبره ډیره سخته اولگیده، نو نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چې بیشکه شیطان د انسان په بدن کښې داسې گرځي لکه څنگه چې وینه گرځي. او ماته دا ویره شوه چې شیطان ستاسو دواړو په زړونو کښې د بدگمانۍ څه تخم اونه کړي.

مختصر تشریح: علامه قسطلانی په لفظ د قیل سره نقل کړې دی چې دا دواړه حضرات حضرت اسید بن حضیر او عباد بن بشر وو.)

حضرت امام شافعی فرمائي چې په نبی صلی اللہ علیہ وسلم باندې د بهتان د تړلو نتیجه چونکه د کفر نه سوا بل څه نه ده، په دې وجه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم ته دا ویره شوه چې دا دواړه هسې نه د کفر ارتکاب اونکړي، لهذا نبی صلی اللہ علیہ وسلم وړاندې والې اوکړو او اصل خبره ئې ورته اوبنودله او شیطان ته ئې دا موقع ورنکړه چې ددې دواړو په زړونو کښې څه وسوسه واچوي، څه غلط تصور په کښې واچوي چې د هغی د وجې نه دوی هلاک او برباد شي.

علامه قسطلانی فرمائي: قال إمامنا الشافعي رحمه الله: خاف عليهما الكفر إن ظنا به تهمة، فبادر إلى إعلامهما نصيحة لهما قبل أن يقذف الشيطان في قلوبهما شيئاً يهدكان به“ (۱)
د باب څلورم حديث د حضرت ابن عمر دې.

۲۹۳۵: (۲) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ عَنْ وَاسِعِ بْنِ حَبَّانَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - قَالَ: ارْتَقَيْتُ قَوْفَ بَيْتِ حَفْصَةَ، فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَقْضِي حَاجَتَهُ، مُسْتَدْبِرَ الْقِبْلَةِ، مُسْتَقْبِلَ الشَّامِ. [۱۴۵]

(۱) شرح القسطلانی: ۱۹۸/۵، وفتح الباری: ۲۸۰/۴، الاعتكاف، وتهذيب تاريخ دمشق الكبير: ۴۲۹/۶، وشرح ابن ماجة، كتاب الصوم، باب المعتكف يزوره اهله في المسجد، رقم ((۱۷۷۰)).

(۲) شرح القسطلانی: ۱۹۸/۵.

(۳) قوله: عن عبدالله بن عمر رضي الله عنهما: الحديث، مر تخريجه في الضوء، باب التبرز في البيوت).

رجال الحديث

- ① ابراهيم بن المنذر: دا ابراهيم ابن المنذر القرشي الحزامي دي. د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب من سئل علما وهو....." کښې تیره شوي دي.
- ② انس بن عياض: دا انس بن عياض ابو ضمير ليشي دي.
- ③ عبيد الله: دا عبيد الله بن عمر بن حفص بن خطاب دي.
- ④ محمد بن يحيى بن حبان: دا محمد بن يحيى بن حبان دي.
- ⑤ واسع بن حبان: دا د پورتنی راوی تره واسع بن حبان دي.
- ⑥ عبد الله بن عمرو: مشهور صحابي حضرت ابن عمر حالات په کتاب الايمان، "باب الايمان، وقول النبي صلى الله عليه وسلم....." کښې تیره شوي دي.

قوله: عن عبد الله بن عمر رضي الله عنهما قال: ارتقيت فوق بيت.....:

حضرت ابن عمر فرمائي چې زه د خپلې خور بي بي حضرت حفصه رضي الله عنها د کور په چت باندې او ختم نو اومې کتل چې نبی کریم ﷺ د قبلې طرفته شا کړې او د شام ملک طرفته ئې مخ کړې خپل حاجت پوره کوي.

د کتاب الوضوء په روایت کښې "فوق ظهر بيت حفصة" (دې. مقصود د دواړو روایتونو يو دي) يعنی د کور په چت باندې ختم مراد دی او هلته ددې خبرې هم وضاحت دي چې حضرت ابن عمر رضي الله عنهما د خپل خه ضرورت دپاره په چت باندې ختمې وو. پنځم حديث د حضرت عائشې صدیقې رضي الله عنها دي.

٢٩٣٢: (٢) حَدَّثَنَا اِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا اَنَسُ بْنُ عِيَّاضٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يُصَلِّي الْعَصْرَ وَالشَّمْسُ لَمْ تَخْرُجْ مِنْ مَحْجَرِهَا. [ر: ٥١٩]

١ (كشف الباري: ٥٨/٣) -

٢ (ددې دواړو حالات كتلو دپاره اوگوري، كتاب الوضوء، باب التبرز في البيوت) -

٣ (ددې دواړو حالات كتلو دپاره اوگوري، كتاب الوضوء، باب من تبرز على لبنتين) -

٤ (كشف الباري: ٦٣٧/١) -

٥ (كتاب الوضوء، باب التبرز في البيوت، رقم (١٤٨)) -

٦ (د حديث مزيد وضاحت دپاره اوگوري (كشف الباري)، كتاب الوضوء، باب التبرز في البيوت، وباب

من تبرز على لبنتين) -

٧ قوله: ان عائشة رضي الله عنها: الحديث، مر تخريجه في مواقيت الصلاة، باب مواقيت الصلاة.....) -

رجال الحديث

- ① ابراهيم بن المنذر، ② انس بن عياض: ددې دواړو دپاره سابقه سند او گورئ.
 ③ هشام: دا مشهور محدث حضرت هشام بن عروه بن زبير دې.
 ④ اييه: د اب نه مراگ حضرت عروه بن زبير بن العوام دې.
 ⑤ عائشة: دا حضرت عائشه ده. ددې درې واړو حضراتو تذکره د "بدء الوحي" په الحديث الاول کښې تيره شوې ده.)

قوله: أن عائشة رضي الله عنها قالت: كان رسول الله صلى الله عليه وسلم

.....: حضرت عائشه فرمائي چې رسول الله مبارك به د مازيگر مونځ وركوو او هغه وخته پورې به نمر د حضرت صديقې رضي الله عنه حجري نه وتلې نه وو. شپږم حديث د حضرت ابن عمر رضي الله عنه دې.

٢٩٣٧: (حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَّةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ. قَالَ قَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -خَطِيبًا فَأَشَارَ نَحْوَ مُسْكِنٍ عَائِشَةَ فَقَالَ «هَذَا الْفِتْنَةُ ثَلَاثًا مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ» [٤٩٩٠، ٣٣٢٠، ٣١٠٥، ٤٦٧٩، ٤٦٨٠، وانظر: ٩٩٠]

رجال الحديث

- ① موسى بن اسماعيل: دا موسى بن اسماعيل تبوډكي بصرى دې. د دوى تذکره د "بدء الوحي" په "الحديث الرابع" کښې تيره شوې ده.)
 ② جويريه: دا جويريه بن اسماء الضبعي البصري دې.)
 ③ نافع: دا نافع مولى ابن عمر دې. د دوى حالات په كتاب العلم، "باب ذكر العلم والفتيان المسجد" کښې تير شوې دي.)

١ (كشف الباری: ٢٩١/١، هشام او عروه دپاره مزید او گورئ، كشف الباری: ٤٣٢/٢ - ٤٤٠)

٢ (قوله: عن عبدالله رضى الله عنه: الحديث، اخرجہ البخاری فی کتاب بدء الخلق ایضا، باب صفة ابليس وجنوده، رقم (٣٢٧٩)، وكتاب المناقب، باب بلا ترجمة، بعد باب نسبة اليمن الى اسماعيل، رقم (٣٥١١)، وكتاب الطلاق، باب الاشارة في الطلاق والامور، رقم (٥٢٩٦)، وكتاب الفتن، باب قول النبي صلى الله عليه وسلم: (الفتنة من قبل المشرق)، رقم (٧٠٩٢ - ٧٠٩٣)، ومسلم في صحيحه، كتاب الفتن، باب الفتن من المشرق من حيث..... رقم (٧٢٥٢ - ٧٢٦٧)، ولترمذی فی سنته، ابواب الفتن، باب فی العمل فی الفتن..... رقم (٢٢٦٨)

٣ (كشف الباری: ٤٣٣/١)

٤ (د دوى د حالاتو دپاره او گورئ، كتاب الغسل، باب الجنب يتوضا ثم.....)

٥ (كشف الباری: ٤٥١/٤)

عبدالله: حضرت ابن عمر حالات په کتاب الايمان، "باب الايمان، وقول النبي صلى الله عليه وسلم
..... "کنې تیر شوې دي"

قوله: قال: قام النبي صلى الله عليه وسلم خطيباً، فأشار نحو مسكن عائشة، فقال: هنا الفتنة - ثلاثاً - من حيث يطلع قرن الشيطان: حضرت ابن عمر فرمائي

چې نبی کریم د خطبې (تقریر) کولو دپاره اودریدو نو د حضرت عائشې صدیقې مسکن طرفته ئې اشاره اوفرمائيله او وې فرمائيل، دلته فتنه ده، دا خبره ئې درې ځله ارشاد اوفرمائيله، د چرته نه چې د شیطان ښکر ښکاره کېږي.

دا خود حدیث ترجمه شوه، په دې حدیث کېنې څو مباحث دي، چې هغه مونږ لاندې ذکر کوو. نبی دا خبره چرته ارشاد اوفرمائيله؟ پورته دا خبره بیان کړې شوه چې نبی ﷺ د حضرت عائشې ﷺ د کور طرفته اشاره کولو سره پورته خبره ارشاد اوفرمائيله لیکن دغه وخت نبی ﷺ په خپله چرته موجود وو، په دې حوالې سره روایت کېنې څه صراحت نشته.

په دې سلسله کېنې درې قسمه روایتونه دي، د مسلم په یو روایت (۱) کېنې د "قام عند باب حفصة" الفاظ دي او په دویم (۲) کېنې د "عند باب عائشة" او په یو بل روایت کېنې چې د جامع ترمذی (۴) دي، کېنې د "قام رسول الله صلى الله عليه وسلم على المنبر....." کلمات دي.

امام زرقانی ددې ټولو روایتونو مینځ کېنې تطبیق کولو سره فرمائي چې ممکنه ده چې نبی ﷺ د مذکوره دواړو بیبيانو په دروازو کېنې د یوې دروازې نه راوتلې وی او ددې دواړو دروازې نزدې نزدې وې، لکه یو ځل اشاره نبی ﷺ هغه وخت اوفرمائيله کوم وخت چې نبی ﷺ د دواړو دروازو مینځ کېنې ولاړ وو چې د هغې تعبیر کله په "باب حفصة" سره شوې دي او کله په "باب عائشة" سره شوې دي، بیا د منبر طرفته لاړل او دویم ځل باندې ئې اشاره اوفرمائيله، بیا په منبر باندې اودریدل او په دریم ځل باندې ئې اشاره اوفرمائيله (۵).

دا یو ښه تطبیق دي، ددې نه علاوه بل څه د تطبیق صورت ښکاره په نظر هم نه راځي او دا روایت د واقعې په تعدد باندې هم محمول کیدې نه شی ځکه چې مخرج یو دي یعنې ابن عمر، لکه زرقانی فرمائي:

"فان ساء هذا، والا فيطلب جمع غيره، ولا يجمع بتعدد القصة، لاتحاد الخبر، وهو ابن عمر"

(۱) کشف الباری: ۶۳۷/۱_

(۲) صحيح مسلم، کتاب الفتن، باب الفتنة من المشرق من حيث يطلع.... رقم (۷۲۵۳)_

(۳) پورته حواله، رقم (۷۲۵۴)_

(۴) جامع الترمذی، ابواب الفتن، باب فی العمل فی الفتن، رقم (۲۲۶۸)_

(۵) شرح الزرقانی علی المؤطا: ۴/۳۸۴، والاوجز: ۱۷/۳۵۲، وفتح الباری: ۴۶/۱۳_

(۶) شرح الزرقانی علی المؤطا: ۴/۳۸۴-۳۸۵، ماجاء فی المشرق، رقم (۱۸۹۰)، والاوجز: ۱۷/۳۵۲_

البته حضرت شیخ الحدیث د امام زرقانی سره اختلاف کوی او فرمائی چې دې روایتونو لره د واقعي په تعدد باندې حمل کولو کښې هیڅ مانع نشته چې دا روایات د واقعي په تعدد باندې حمل کړې شی ځکه چې د روایتونو په سیاق و سباق کښې ډیر زیات اختلاف دې لکه نبی ﷺ د فتنې متعلق مضمون طرفته څو ځله تنبیه کړې وه او دې لره حضرت ابن عمر رضی الله عنهما او نورو صحابه کرامو رضی الله عنهم د خپلې خپلې سماع مطابق روایت کړې دي^(۱)

نبی اشاره کوم طرفته کړې وه؟ د باب په حدیث شریف کښې خو دا راغلې دی چې نبی کریم د حضرت عائشې کور او مسکن طرفته اشاره او فرمائیله او وې فرمائیل چې فتنه دلته ده. او ددې روایت په نورو طرقو کښې لفظ د "مشرق راغلې دې چې پیغمبر د مشرق طرفته اشاره او کړه، ددې ټولو طرقو طرفته نظر کولو نه پس به هم دا ویلې کیږي چې عائشې د مسکن نه د مشرق طرف مراد دې او د "هنا" مشارالیه مشرق دې^(۲)

د حضرت عائشې کور ترینه هیڅکله مراد نه دې لکه څنگه چې د روافضو او د شيعه گانو خیال دې، هغوی دې حدیث لره بنیاد جوړوي او په حضرت عائشه رضی الله عنها باندې الزامات لگوي چې نبی پاک ﷺ د هغې کور لره د فتنو سرچشمه گرځولې ده. العیاذ بالله. لیکن څنگه چې تاسو او کتل او وړاندې به هم خبره راځي چې دلته د هغه مراد د مشرق طرف دې.

د مشرق نه څه مراد دې؟ په دې کښې د علماؤ مختلف اقوال دي: د اکثر عالمانو رائي داده چې د مشرق نه مراد نجد دې، ددې په دلیل کښې د حضرت ابن عمر رضی الله عنهما یو روایت پیش کړې شوی دې چې:

"ذكر النبي صلى الله عليه وسلم: اللهم بارك لنا في شامنا، اللهم بارك لنا في يمننا، قالوا: يا رسول الله، وفي نجدنا؟ قال: اللهم بارك لنا في شامنا، اللهم بارك لنا في يمننا، قالوا: يا رسول الله، وفي نجدنا؟ قال: في الثالثة: هناك الزلزال والفتن، وبها يطلع قرن الشيطان^(۳)

نبی ﷺ یوه ورځ د شام او د یمن ذکر کولو کښې ددې دواړو دپاره د برکت دعا او فرمائیله، صحابه کرامو رضی الله عنهم درخواست او کړو چې دا دعا د نجد دپاره هم او کړي، لیکن نبی کریم ﷺ هغه اولنی خبره دوباره ارشاد او فرمائیله، صحابه کرامو بیا درخواست او کړو چې د نجد دپاره هم دعا او کړي، غالباً په دریم ځل باندې نبی کریم ﷺ او فرمائیل چې په نجد کښې خو به زلزلې او فتنې وي، د هغې ځانې نه به د شیطان ښکر ښکاره کیږي. ددې حدیث شریف نه استدلال کولو سره بعضي حضراتو د مشرق نه نجد مراد اخستلو لره

(۱) أوجز المسالك: ۱۷/۳۵۴.

(۲) پورته حواله.

(۳) الحدیث، أخرجه البخاری، کتاب الفتن، باب قول النبي صلى الله عليه وسلم: الفتنه من قبل المشرق. رقم (۷۰۹۴)، وکتاب الاستسقاء، باب ما قيل في الزلازل..... رقم (۱۰۳۷)، والترمذي، کتاب المناقب، باب في

راجح گرځولې دې (۱)

او بعضې نور عالمان د مشرق نه مراد عراق اخلي، د هغوی استدلال د حضرت سالم بن عبدالله بن عمر ددې روایت نه دي، ابن فضیل د خپل والد صاحب نه نقل کوي
 سمعت سالم بن عبدالله بن عمر يقول: يا اهل العراق، ما استلکم عن الصغیرة، واکبکم للکبیرة؟! سمعت ابن عبدالله بن عمر يقول: سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: "إن الفتنة تجي من ههنا" وادما بیده نحو المشرق "من حیث یطلع قرنا الشیطان" واتم یضرب بعضکم رقاب بعض..... (۲)
 چې حضرت سالم اهل عراق ته د خطاب کولو دوران کښې او فرمائیل چې تاسو څومره عجیبه خلق ئې، د وړو گناهونو په باره کښې خوښه تپوسونه کوي او د لوڼې گناهونو نه ځان نه ساتئ؟ ما د خپل والد عبدالله رضی الله عنه او هغوی د رسول الله مبارک ﷺ نه اوریدلې دي چې فتنه به ددې ځای نه اوچتېږي او نبی ﷺ د لاس مبارک په اشارې سره د مشرق طرفته اشاره او کړه، د کوم ځای نه به چې د شیطان دواړه ښکرونه ښکاره کیږي او تاسو خلق اهل عراق د یو بل سرونه وهئ..... (۳)

نو په دې حدیث کښې د مشرق نه عراق او د اهل مشرق نه اهل عراق مراد دي (۴)
 د مؤطا مالک او د کنز العمال وغیره روایت دي چې حضرت عمر دا عزم او کړو چې هغه به د ټولو اسلامي ښارونو دوره کوي نو حضرت کعب احبار هغوی د خپل عزم نه منع کړل او ورته ئې او فرمائیل: "لاتات العراق، فان فيه تسعة اعشار الشما" (۵)

دې ټولو روایتونو ته په نظر کولو سره ډیرو عالمانو د مشرق نه عراق مراد اخستلې دي.
 د دواړو قولونو مینځ کښې تطبیق څنگه چې تاسو پورته اوکتل چې بعضې حضراتو د مشرق نه مراد نجد او بعضو عراق مراد اخستلې دي لیکن ددې دواړو مینځ کښې هیڅ منافات نشته، اوس چې د نجد په حوالې سره کوم روایت تیر شوي دي په هغې کښې د نجد څه مخصوص علاقه مراد نه ده، د حدیث شارحینو دلته نجد په لغوی معنی باندې محمول کړې دي او عموم یې مراد اخستلې دي. د نجد لغوی معنی "ما ارتفع من الارض" ده، یعنې هغه علاقه چې د زمکې د سطحې نه اوچته وي، دغه شان به په دې حدیث کښې عراق هم داخل شي، علامه خطابی رحمته الله فرمائي چې نجد په مشرقی طرف کښې دي او د اهل مدینه چې کوم نجد دي هغه د عراق دیهات او د هغې طرفونه دي، هم دا د اهل مدینه مشرق دي، ځکه چې د نجد لغوی معنی "ما ارتفع من الارض" ده. (۶)

(۱) تکملة فتح الملهم: ۱۶۲/۶، وفتح الباری: ۴۷/۱۳.

(۲) صحیح مسلم، کتاب الفتن، باب الفتنة من المشرق، من حیث یطلع..... رقم: (۷۲۵۷).

(۳) تکملة فتح الملهم: ۱۶۲/۶، وشرح الابی علی مسلم: (۱).

(۴) المؤطا: ۹۷۵/۲، کتاب الاستئذان، باب ما جاء فی المشرق، رقم: (۳۰)، وکنز العمال: ۱۷۳/۱۴، مسند عمر، رقم: (۲۸۲۷۹)، و المصنف لابن ابی شیبة: ۱۶۸/۲۱، کتاب الفتن، من کره الخروج فی الفتنة، رقم: (۳۸۵۶۱).

(۵) قال الحموی: نجد: بفتح اوله، وسکون ثانیه، قال النضر: النجد: قفاف الارض وصلابها، وما غظ منها وأشرف، والجماعة النجاد..... انظر معجم البلدان: ۲۶۱/۵.

”وقال الخطابي رحمه الله: نجد: ناحية المشرق، ومن كان بالمدينة كان نجدة بادية العراق ونواحيها، وهي

مشرق أهلها، وأصل النجد: ما ارتفع من الأرض.....“ (۱)

د فتنې نه څه مواد دي؟ د باب په حديث شريف كښي چې د مشرق د فتنې كومه پيشن گوئي ده، يو بل حديث چې د حضرت اسامه بن زيد رضي الله عنه نه روايت دي، په هغې كښي دا پيشن گوئي د مدينې منورې سره متعلق ده چې په مدينه منوره كښي به دا فتنه ښكاره كيږي، نبي صلى الله عليه وسلم فرمائي: ”فان لاري الفتن تقع خلال بيوتكم كوقع القطر“ (۲) چې ”زه ستاسو كورونو كښي راتلونكي فتنې داسې وينم لكه څنگه چې باران راځي“

دغه شان يو حديث كښي راغلي دي، كوم چې د حضرت ابوهريره رضي الله عنه روايت دي:

”ستكون فتن، القاعد فيها خير من القائم“ (۳)

په دې حديث شريف كښي د ډيرو فتنو د ښكاره كيدو پيشن گوئي ده، ددې ټولو احاديثو مينځ كښي تطبيق دادي چې د باب د حديث شريف او د حضرت اسامه بن زيد رضي الله عنه په حديث كښي د فتنې نه مراد د دريم خليفه حضرت عثمان رضي الله عنه قتل دي، او د حضرت ابوهريره رضي الله عنه روايت او نور هغه ټول روايتونه چې په هغې كښي ”فتن“ د جمعې صيغې سره راغلي دي، په دې كښي د حضرت عثمان رضي الله عنه د قتل نه پس ښكاره كيدونكي نور واقعات او احوال دي. ددې اجمال تفصيل دادي چې د حضرت عثمان رضي الله عنه قتل د ټولو فتنو او د حوادثو بنياد وو، كوم چې په مدينه منوره باندې اوشو، ددې نه پس فتنه په نورو ښارونو كښي هم ښكاره شوه، د صفين او د جمل جنگونه اوشو، په نهروان كښي چې كوم جنگ اوشو د هغې سبب د صفين واقعه او گرځيده، ددې وجې نه دا وئيلې كيدې شي چې په اولنۍ صدۍ هجري كښي چې كومي فتنې ښكاره شوې، ددې ټولو وجه او سبب، بنياد د حضرت عثمان رضي الله عنه مظلومانه شهادت وو.

حافظ صاحب رحمته الله فرمائي: ”وانما اختصت المدينة بذلك لان قتل عثمان رضي الله عنه كان بها، ثم

انتشرت الفتن في البلاد بعد ذلك، فالقتال بالجمل والصفين كان بسبب قتل عثمان رضي الله عنه، والقتال

(۱) شرح الخطابي، (اعلام الحديث): ۴/ ۲۳۳، وفتح الباري: ۱۳/ ۴۷، ددې تعيين وجه داده چې كه د نجد نه مطلقاً څه مخصوص علاقه مراد كړې شي نو بيا به مشكل شي، لكه د نجد اطلاق د عرب په ډيرو علاقه باندې كيږي. مثلاً: نجد تهامه، نجد برق، نجد العقاب، نجد مريع او نجد اليمن وغيره وغيره. اوگوري، معجم البلدان: ۲۶۲/ ۵-۲۶۵.

(۲) الحديث، اخرجه البخاري في كتاب الفتن، باب قول النبي صلى الله عليه وسلم، ويل للعرب.....، رقم (۷۰۶۰)، وانظر جامع الاصول وتعليقاته: ۳۸/ ۱۰، ومسند الحميدي: ۱/ ۲۴۸، احاديث اسامة بن زيد، رضي الله عنه، رقم (۲۵۲).

(۳) الحديث، اخرجه البخاري، كتاب احاديث الانبياء، باب علامات النبوة في الاسلام، رقم (۳۶۰۱)، وكتاب الفتن، باب تكون فتنة القاعد فيها خير من القائم، رقم (۷۰۸۱-۷۰۸۲)، ومسلم، كتاب الفتن، باب نزول الفتن كمواقع النظر، رقم (۷۲۴۷-۷۲۴۹).

پالنهروان کان بسبب التحکیم بصفین، وکل قتال وقع فی ذلك العصر إنما تولد عن شی من ذلك أو عن شی تولد عنه“ (۱).

دا تفصیل د هغې حدیث شریف و و کوم چې د مدینې منورې سره متعلق وو. تاریخ که لروړاندې او کتلې شی نو معلومه به شی چې د حضرت عثمان رضی الله عنه د شهادت سبب عراق وو، لکه په دریم خلیفه باندې چې کوم اعتراضات شوې وو، په هغې کښې یو اعتراض د ښارونو امیران او گورنران وو چې هغوی په مختلفو علاکو باندې کوم گورنران او امیران مقرر کړي وو، په هغې کښې د ټولو نه مخکښې د عراق په امیر باندې اعتراض شوې وو، هم دا وروستو د لوڼې فتنې سبب او گرځیده. آخر د حضرت عثمان رضی الله عنه د شهادت واقع پېښه شوه او عراق په مشرقی طرف کښې دې (۲). بیا وروستو اسلامی دنیا د لویو لویو فتنو او حوادثو سره مخامخ شوه، قیامت پورې به دا سلسله جاری وی. اعاذنا الله من جمیع الفتن ظاهرها وباطنها.

حضرت شیخ الحدیث رحمته الله فرمائی: ”قالمراد عندی فی هذه الاحادیث مبدأ الفتن، وهو قتل عثمان رضی الله عنه، ومبدأه کان من العراق.....“ (۳) چون کفر از کعبه برخیزد.....

مزید فرمائی: ”کوم سرې چې د حضرت عائشې رضی الله عنها حجرې باندې د فتنې د ځانې گمان او کړې، هغه وخت کله چې ورته د بصرې سفر پېښ شو نو دې بیشکه کافر دې، ځکه چې دا خو د اهل ایمان د سردار محمد مصطفی صلی الله علیه و آله تهکانه ده. چې د هغوی په نوم اوریدو سره کفر او فتنې تختی او د مزې خبره داده چې حضرت عائشه رضی الله عنها د حجرې نه د حج ادا کولو دپاره روانه شوې وه نه چې د فتنې پیدا کیدو دپاره، که حضرت عائشه رضی الله عنها فتنه انگیزه او گرځولې

(۱) فتح الباری: ۱۳/۱۳، رقم (۶۶۵۱)، وایضا انظر الاستذکار: ۵۲۹/۷، والاوجز: ۳۴۵/۱۷. _

(۲) فتح الباری: ۱۳/۴۷، والاوجز: ۳۵۴/۱۷. _

(۳) الاوجز: ۳۵۴/۱۷، قال الامام ابو عمر ابن عبد البر رحمته الله: روينا عن حذيفة رضی الله عنه، انه قال: لول الفتن قتل عثمان، وآخرها الدجال“

ومعلوم ان اکثر البدع انما ظهرت و ابتدأت من المشرق، و ان كان الذين اقتتلوا بالجمل وصفين منهم كثير من اهل الحجاز والشام، فان الفتنة وقعت في ناحية المشرق، وكانت سببا الى افتراق كلمة المسلمين ومذاهبهم، و فساد ثبات كثير منهم الى اليوم، والى ان تقوم الساعة، والله اعلم. الاستذکار: ۵۲۹/۷ او شاه عبدالعزیز محدث دهلوی رحمته الله فرمائی: ”په دې امت مرحومه کښې چې کومه لویه فتنه هم پورته شوه، ددغه طرف نه پورته شوه. د ټولو نه اولنې فتنه د مالک بن اشتر خروج وو چې هغه او د هغه ملگری د حضرت عثمان شهید خلاف د کوفې نه راووتل او کوفه د مدینې منورې نه د مشرق په طرف ده. دویمه فتنه د عبید الله بن زیاد ده، کومه چې د حضرت حسین د شهادت سبب او گرځیده. ددې نه پس د نبوت دعوی کوونکې د مختار ثقفی فتنه ښکاره شوه. بیا هم ددې طرفه اکثر بدعتونه او باطل عقیدې ښکاره کیدي، ددې وجې نه د ”روافضو“ چشمه هم کوفه ده او د معتزله د پیدا کیدو ځانې بصره ده. واصل بن عطاء بصری دې قرامطه د کوفې د علاقې پیداواردې. خوارج د نهروان نه راووتل او دجال به د اصفهان نه راوځي“ ملخص از: تحف اثنا عشریه فارسی، مطاعن ام المؤمنین رضی الله عنها طعن نهم، ص: ۳۳۷

شی نو بیا دا حقیقت هم د نظر لاندې ساتل پکار دی چې حضرت عائشه رضی اللہ تعالیٰ عنہا مکې مکرې نه بصري دپاره روانه شوې وه، بیا خو د حضرت عائشې رضی اللہ تعالیٰ عنہا حجرې په ځانې مکې معظمې ته د فتنې ځانې وئیل پکار دی.

چون کفر ازجبه بر خیزد کبماند مسلمان

او چې هر کله د کعبې نه کفر راوځي نو اسلام به چرته باقی شی

پورته حواله، دغه شان او گوري، احکام القرآن لابن العربي: ۵۶۹/۳-۵۷۰، سورة الاحزاب: ۳۲-۳۳، الآية الثامنة، المسألة الخامسة. والله اعلم بالصواب.

د قرن معنی او مراد: قرن د قاف فتحې او دراء سکون سره ښکړ ته وئیلې شی. علامه داودی رحمته اللہ علیہ فرمائی چې په حقیقت کښې د شیطان لښکر وی او دا احتمال هم شته چې د قرن نه مراد د شیطان طاقت وی او هغه څیزونه چې د هغې په ذریعې سره هغه خلق گمراه کوي. حافظ ابن حجر رحمته اللہ علیہ دا راجح ښودلې ده. (۱).

او علامه سیوطي رحمته اللہ علیہ لیکلې دی چې د قرن الشیطان نه مراد د هغه ډله او ملگری دی او مطلب دادې چې ددې نه د شیطان ملگری راوځي. (۲).

قرن الشیطان به کله ښکاره کیږي؟ حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته اللہ علیہ فرمائی چې زما په نزد د قرن الشیطان د ظهور نه مراد د دجال ښکاره کیدل دی، ځکه چې د دجال ښکاره کیدل د امت محمدیه فتنه ده او داسې فتنه ده چې ددې نه لویه فتنه نشته. مزید فرمائی چې زما ددې قول تائید د حضرت سالم بن عبدالله رضی اللہ تعالیٰ عنہ هغه روایت نه کیږي کوم چې اوس تیر شو، هلته ترتیب دا وو چې اول "الفتنة تجي من ههنا" فرمائیلي شوې وو، بیا "من حيث يطلع قرن الشيطان" د حدیث ظاهر سیاق په دې خبره باندې دلالت کوي چې "مجي الفتنة" جدا څیز دې او "طلوع القرن" جدا څیز دې، دغه شان د طلوع نه مراد خروج دې لکه څنگه چې د ترمذی په یو روایت (۳) کښې هم د "يطلع" په ځانې "يخرج" راغلې دي. (۴). والله اعلم بالصواب.

یوه فائده: په اکثر روایتونو کښې قرن الشیطان راغلې دي، او د بخاری شریف (۵) په یو روایت کښې شک سره قرن الشیطان او قرن الشمس ذکر دي، دغه شان د مسلم شریف (۶) په یو روایت کښې د قرن تشبیه "قرنا الشيطان راغلي دي، لیکن راجحه صیغې د مفرد سره د

(۱) وفيه اقوال اخر ايضا، انظر فتح الباری: ۴۶/۱۳، وعمدة القاری: ۹۹/۲۴. _

(۲) مرقاة المفاتیح: ۴۰۴/۱۱. _

(۳) انظر الجامع للترمذی، ابواب المناقب، باب فی فضل الشام واليمن، رقم (۳۹۵۳). _

(۴) اوجز المسالك: ۳۵۵/۱۷. _

(۵) صحيح البخاری، کتاب الفتن، باب قول النبی ﷺ: الفتنة من..... رقم (۷۰۹۲). _

(۶) صحيح مسلم، کتاب الفتنة، باب الفتنة من المشرق..... رقم (۷۲۹۷). _

شک نه بغير قرن الشيطان ده (۱)

د باب اووم حديث شريف د حضرت عمرة بنت عبد الرحمن رحمهما الله تعالى دي
 ۲۹۳۸ (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ عَنْ عُمَرَ ابْنَةِ
 عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَخْبَرَتْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ
 عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - كَانَ عِنْدَهَا، وَأَنَّهَا سَمِعَتْ صَوْتَ إِنْسَانٍ يَسْتَأْذِنُ فِي بَيْتِ حَفْصَةَ فَقُلْتُ يَا
 رَسُولَ اللَّهِ، هَذَا رَجُلٌ يَسْتَأْذِنُ فِي بَيْتِكَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «أَرَأَاهُ
 فَلَانًا، لِعِمِّ حَفْصَةَ مِنَ الرِّضَاعَةِ، الرِّضَاعَةُ تُحَرِّمُ مَا تُحَرِّمُ الْوِلَادَةُ». [ار: ۳/ ۲۵۰]

رجال الحديث

- ① عبد الله بن يوسف: دا عبد الله بن يوسف تنيسي رحمته الله دي
 - ② مالک: دا امام دارالهجرة حضرت مالک بن انس رحمته الله دي ددې دواړو تذکره د بده
 الوحی په اولنی حديث کښې راغلي ده (۳)
 - ③ عبد الله بن ابی بکر: دا عبد الله بن ابوبکر بن محمد بن عمرو بن حزم انصاري رحمته الله دي (۴)
 - ④ عمرة: دا عمرة بنت عبد الرحمن بن سعد رحمهما الله تعالى ده (۵)
 - ⑤ عائشة: د حضرت عائشې رحمته الله تذکره د بده الوحی په اولنی حديث کښې تیره شوې ده (۶)
- د حديث شريف ترجمه: حضرت عمرة فرمائي چې حضرت عائشې رحمته الله ماته اووئيل چې نبی
 کريم صلی الله علیه وسلم ماسره وو چې هغوی د یو سړی آواز واوریده، کوم چې د حضرت حفصه رحمته الله کورته
 د داخلیدو دپاره اجازت غوښته، حضرت عائشه رحمته الله فرمائي: نو ما اووئيل يا رسول الله!
 څوک سړې دي، چې ستاسو کور ته راتلل غواړي. نبی صلی الله علیه وسلم او فرمائيل زما په خیال دا فلانې
 دي. دا ئې د حضرت حفصه رضاعی تره یاد کړو. رضاعت سره هم هغه رشتې حرامیږي کومې
 چې ولادت سره حرامیږي..

ددې حديث تشريح په ابواب الرضاع کښې راغلي ده (۷)
 د باب د حديثونو ترجمه الباب سره مناسبت: د باب ټول احاديث مبارکه ترجمه الباب سره
 واضح مناسبت لري، تفصيل لاندې ذکر کولې شي:

(۱) انظر فتح الباری: ۴/ ۲۴۰، والاوجز: ۱۷/ ۳۵۳-.

(۲) قولها: "ان عائشة.....": الحديث، مر تخريجه في كتاب الشهادات، باب الشهادة على الانساب.....).

(۳) كشف الباری: ۱/ ۲۸۹- ۲۹۰، دغه شان اوگوري، كشف الباری: ۲/ ۸۰-.

(۴) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الوضوء، باب الوضوء مرتين مرتين-.

(۵) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الحيض، باب عرق الاستحاضة-.

(۶) كشف الباری: ۱/ ۲۹۱-.

(۷) كشف الباری، كتاب النكاح، ابواب الرضاع: ۱۸۷- ۱۸۸-.

① د اولنی حدیث ترجمه الباب سره مناسبت په دې جمله کښې دې "فی بیقی" چې دلته حضرت عائشې رضی اللہ عنہا د بیت نسبت خپل طرفته کړې دې.

② د دویم حدیث شریف مناسبت هم واضح او ښکاره دې. لکه د حضرت عائشې رضی اللہ عنہا په دې جمله "توفی النبی صلی الله علیه وسلم فی بیقی....." کښې مطابقت موجود دې.

③ دریم حدیث، چې د حضرت حفصه رضی اللہ عنہا دې، د هغې مطابقت ترجمه الباب سره په دې الفاظو کښې دې، "عند باب أم سلمة...." ځکه چې د دروازي ذکر کول کور ته لازم او مستلزم دې.

④ څلورم حدیث، کوم چې د ابن عمر رضی اللہ عنہما وو، د هغې مناسبت هم ښکاره دې، د هغې الفاظو "فی بیت حفصة" کښې مناسبت موجود دې.

⑤ د پنځم حدیث مناسبت "من حجرتها" کښې دې، چې حجره او کور یو څیز دې.

⑥ د شپږم حدیث مبارک مطابقت ترجمه الباب سره په دې جمله کښې دې، "فاشار نحو مسکن عائشة" ځکه چې د حضرت عائشې رضی اللہ عنہا مسکن هم د هغې کور وو.

⑦ د آخری او د اووم حدیث شریف مناسبت ترجمه الباب سره په "فی بیت حفصة" کښې دې.

⑤ باب: ما ذکر من درع النبی صلی اللہ علیہ وسلم وعصاهُ وسيفه وقَدَاحه وخاتمہ،

وما استعمل الخلفاء بعده من ذلك ما لم تُذكر قِسمته، ومن شَعْرَةٍ ونَعْلَةٍ وَأَنِيتِهِ مما يَتَبَرَّكُ به أَصْحَابُهُ وَغَيْرُهُمْ بَعْدَ وَفَاتِهِ.

د ترجمه الباب مقصد: په دې باب کښې حضرت امام بخاري رحمہ اللہ د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د متروکاتو تذکره فرمائيلې ده، دا تذکره ئې ولې فرمائيلې ده؟ دې سره د امام بخاري رحمہ اللہ څه غرض دې؟ په دې سلسله کښې دوه خبرې شوې دي:

① یو خبره خو شوې ده چې اصل کښې د امام بخاري رحمہ اللہ مقصد دادې چې ولایه الامور (حکمرانانو) ته ددې څیزونو په استعمال کښې د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم اتباع او اقتداء کول پکار

① (عمدة القاری: ۲۹/۱۵، وارشاد الساری: ۱۹۷/۵)۔

② (پورته حواله جات)۔

③ (عمدة القاری: ۲۹/۱۵، وفتح الباری: ۲۱۱/۶)۔

④ (عمدة القاری: ۳۰/۱۵، وارشاد الساری: ۱۹۸/۵)۔

⑤ (پورته حواله جات)۔

⑥ (عمدة القاری: ۳۰/۱۵، وفتح الباری: ۲۱۱/۶)۔

⑦ (عمدة القاری: ۳۱/۱۵)۔

دی ددې طرفته امام بخاری رحمہ اللہ توجه پیدا کول غواړی دا قول د علامه مهلب رحمہ اللہ دې (۱) حافظ ابن حجر رحمہ اللہ فرمائی چې په دې کښې نظر او اشکال دې او دا خبره پوهه کښې نه راځي، فرمائی: "واما قول المهلب: انه ابا ترجم بذلك ليتاسى..... ففيه نظر، وما تقدم اولى، وهو الالتيق لدخوله في ابواب الخمس (۲)

حافظ رحمہ اللہ په خپله د ترجمه الباب غرض دا بیان کړې دې چې امام بخاری دا وئیل غواړی چې د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په متروکاتو کښې کوم مال موجود وو او کوم خیزونه چې موجود وو نو په هغې کښې وراثت جاری نه شو، نه هغه خرڅ کړې شو، بلکه هغه د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم متروکات او تبرکات او گرځولې شو او باقی اوساتلې شو، دې دپاره چې خلق ددې نه تبرک حاصل کړي، هم دا رائي هغوی الیق او غوره گرځولې ده (۳)

شیخ الاسلام زکریا انصاری چې د ابن حجر رحمهما الله شاگرد دې، هغوی په دې غرض کښې د حافظ صاحب تقلید کړې دې (۴). او هم دا غرض واقعی ډیر زیات صحیح او غوره هم دې او حضرت گنگوهی رحمہ اللہ د باب د ترجمه الباب مقصد بیانولو کښې فرمائی:

"یعنی ان ما تركه النبي صلى الله عليه وسلم وقت موته كان حقاً مشتركاً بين المسلمين أجمعين، لكونه صدقة، إلا ان يكون ملكه أحداً من أصحابه قبل موته، وإذا ثبت فيه اشتراك الكل، فيد الصحابي الذي هو عنده يد تولية وحفظ، لا يداستبداد بالتصرف وتملك" (۵)

مطلب دادې چې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د خپل وفات په وخت کوم خیزونه پریخودلې وو په هغې کښې د ټولو مسلمانانو مشترکه حق وو، ځکه چې دا صدقات وو (ددې وجې نه دا په بیت المال کښې داخل کړې شو) سوا د هغه خیزونو نه، چې د وفات نه مخکښې نبی صلی اللہ علیہ وسلم څوک د هغې مالکان جوړ کړې وو، هرکله چې دا ثابت شوه چې په دې کښې د ټولو مسلمانانو مشترکه حق وو نو کوم صحابی سره هم چې څه متروکه خیزونه وو، هغه صحابی د هغې خیزونو مالک نه وو، نه ورته په دغه خیزونو کښې د تصرف کولو اختیار وو، بلکه دا قبضه صرف د حفاظت او د تولیت وه ځکه چې د هغوی په کورونو کښې دغه خیزونه حفاظت سره وو. غالباً په دې پورتنی عبارت کښې حضرت گنگوهی رحمہ اللہ د هغه اشکال جواب ورکړې دې چې د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم پریخودلې شوې خیزونه په صدقاتو کښې داخل وو نو په هغې کښې بعضې

(۱) شرح ابن بطلال: ۵/۲۶۵.

(۲) فتح الباری: ۶/۲۱۳.

(۳) پورته خواله، وتعلیقات لامع الداری: ۷/۲۹۶.

(۴) قال الانصاری رحمہ اللہ: قال شيخنا: الغرض من هذه الترجمة تثبيت انه صلی اللہ علیہ وسلم لم يورث، ولا بيع موجوده انظر تحفة الباری: ۳/۵۳۹، د حافظ نه مخکښې هم دا مقصد ابن المنیر اسکندراني رحمہ اللہ

هم بیان کړې دې. انظر المتواری: ۱۸۹. او ابن بطلال رحمہ اللہ هم، انظر شرح ابن بطلال: ۵/۲۶۵.

(۵) لامع الداری: ۷/۲۹۶.

خیزونه د صحابه کرامو رضی الله عنہم په ملکیت کښې ولې وو؟ ددې جواب هم حضرت په ترجمه الباب کښې بیان کړو چې دا تصرف مالکانه نه وو بلکه دا خیزونه د هغوی په قبضه کښې د حفاظت له جهت و، وړاندې به د حدیث شریف په تشریح کښې ددې تفصیل راشی. ددې نه پس خان په دې پوهه کړی چې امام بخاری رحمته الله علیه ترجمه الباب کښې شپږ حدیثونه او یو تعلیق ذکر کړي دي، دا ټول به مونږ لاندې ترتیب سره ذکر کوو. اولنې حدیث د حضرت انس رضی الله عنه دي.

۲۹۳۹: (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَنْصَارِيُّ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ ثُمَامَةَ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - لَمَّا اسْتَحْلَفَ بَعَثَهُ إِلَى الْبَحْرَيْنِ، وَكَتَبَ لَهُ هَذَا الْكِتَابَ وَخَمَمَهُ، وَكَانَ نَقْشُ الْخَاتَمِ ثَلَاثَةَ أَصْطِرْ مُحَمَّدٌ سَطْرٌ، وَرَسُولٌ سَطْرٌ، وَاللَّهُ سَطْرٌ. [۵۵۴۰]

رجال الحديث

دا حدیث بعنیه هم دې سند سره په کتاب الزکوة (۱) کښې تیر شوې دي، هلته اوگورئ. د حدیث شریف ترجمه: حضرت انس رضی الله عنه فرمائی چې کله حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه خلیفه مقرر کړې شو نو هغوی زه (حضرت انس) د بحرین طرفته واستولم او دا خط ئې راکړ او په دې باندې ئې د نبی کریم صلی الله علیه و آله په گوتمه باندې مهر اولگوو، د هغې گوتمې چې کوم مضمون وو، هغه په دریو لکړو باندې مشتمل وو، یو لکیره کښې لفظ د محمد صلی الله علیه و آله، په دویمه لکیره کښې لفظ د رسول او په دریمه لکیره کښې لفظ د الله وو.

د "هذا الكتاب" نه مراد هغه کتاب دي، په کوم کښې چې د صدقاتو تفصیل وو، ددې مضمون په کتاب الزکوة (۲) کښې تیر شوې دي، چونکه دا کتاب د هغوی په نزد ډیر مشهور وو، ددې وجې نه ئې دامطلق بیان کړو او ددې طرفته ئې "هذا الكتاب" وئیلو سره اشاره او کړه (۳).

د باب حدیث شریف سره متعلق نور تفصیلات په کتاب اللباس کښې راغلې دي (۴). ترجمه الباب سره د حدیث شریف مطابقت: ترجمه الباب سره ددې حدیث شریف مناسبت د ترجمه الباب یو جزء "وخاتمة" سره دي (۵). او حافظ وائی چې په دې حدیث شریف کښې د نبی صلی الله علیه و آله د گوتمې ذکر دي، کومه چې حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه وغیره هم استعمال کړه نو

(۱) قوله: انس رضی الله عنه: الحدیث، مر تخريجه فی کتاب الزکاة، باب العرض فی الزکاة)۔

(۲) صحيح البخاری، کتاب الزکاة، باب العرض فی الزکاة، رقم ((۱۴۴۸))۔

(۳) صحيح البخاری، کتاب الزکاة، باب زکاة الغنم، رقم ((۱۴۵۴))۔

(۴) عمدة القاری: ۳۱/۱۵، وشرح القسطلانی: ۱۹۹/۵)۔

(۵) كشف الباری، کتاب اللباس: ۲۳۵-۲۳۸)۔

(۶) عمدة القاری: ۳۱/۱۵)۔

ترجمة الباب سره مطابقت "وما استعمل الخلفاء بعده من ذلك" سره دي (۱).
د باب دويم حديث شريف هم د حضرت انس رضي الله عنه دي.

۲۹۴۰: (۱) حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَسَدِيُّ حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ طَهْمَانَ قَالَ أَخْرَجَ إِلَيْنَا أَنَسُ نَعْلَيْنِ جَرْدَاوَيْنِ لَهْمَا قَبَالَانِ، فَحَدَّثَنِي ثَابِتُ الْبُنَانِيُّ عَنْ أَنَسٍ أَنَّهُمَا نَعْلَا النَّبِيِّ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- [۵۵۱۹، ۵۵۲۰]

رجال الحديث

- ① عبدالله بن محمد: دا عبدالله بن محمد بن ابی شيبه رضي الله عنه دي (۲).
- ② محمد بن عبدالله الاسدي: دا ابو احمد محمد بن عبدالله الاسدي الزبيري رضي الله عنه دي (۳).
- ③ عيسى بن طهمان: دا ابوبكر يا ابوليث عيسى بن طهمان بن رame جشمي كوفي بصري رضي الله عنه دي (۴).
په وړوكو تابعينو كښې وو، اصل كښې د بصري دي، بيا ئې وروستو په كوفه كښې استوگنه اختيار كړه او آخره پورې دلته اوسيدلو (۵).
- دي د حضرت انس بن مالك، ثابت البناني، مساور مولى ابى برزه او ابوصادق الازدي رضي الله عنه (جميع) وغيره نه حديث روايت كوي. او ددوى نه د حديث په روايت كوونكو كښې عبدالله بن مبارك، وكيع، ابواحمد زبيري، يحيى بن آدم، ابوقتيبه، ابوالنضر، خالد بن عبد الرحمن خراساني، قبيصة بن عقبة، خلاد بن يحيى او ابو نعيم رضي الله عنه وغيره شامل دي (۶).
- امام احمد رضي الله عنه فرمائي: "شيخ، ثقة" (۷) دغه شان فرمائي: "ليس به باس" (۸).

(۱) فتح الباري: ۶/۲۱۳-.

(۲) قوله: انس: الحديث، أخرجه البخاري أيضا في كتاب اللباس، باب قبالة في نعل..... رقم (۵۷۵۸-۵۸۵۸)، وابو داود في سننه، ابواب اللباس، باب في الانتعال، رقم (۴۱۳۴)، والترمذي في جامعه، ابواب اللباس، باب ما جاء في نعل النبي ﷺ، رقم (۱۷۷۲-۱۷۷۳)، وفي الشرائع، باب ما جاء في نعل رسول الله..... رقم (۷۸)، والنسائي في سننه، كتاب الزينة، باب صفة نعل رسول الله..... رقم (۵۳۶۹).-

(۳) د دوى د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب العمل في صلاة، باب لا يرد السلام في الصلاة.-

(۴) د دوى د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الاذان، باب المكث بين السجدين.-

(۵) تهذيب الكمال: ۶۱۷/۲۲-۶۱۸، وكتاب المجروحين لابن حبان: ۹۸/۲، وتاريخ بغداد: ۱۱/۱۴۳، رقم (۵۸۴۱)، وتاريخ الاسلام للذهبي: ۴/۲۶۳، رقم (۳۳۹۸).-

(۶) هدى الساري، حرف العين: ۶۰۶، وتهذيب الكمال: ۶۱۸/۲۲.-

(۷) د استاذانو او شاگردانو دپاره اوگوري، تهذيب الكمال: ۶۱۸/۲۲.-

(۸) الجرح والتعديل: ۶/۳۶۰، رقم (۱۵۵۲/۱۰۸۰۲)، وتهذيب الكمال: ۶۱۸/۲۲.-

(۹) تهذيب الكمال: ۶۱۸/۲۲، وتاريخ بغداد: ۱۱/۱۴۴.-

یحیی بن معین رحمته فرمائی: ”بصری، صار إلى الكوفة، ثقة....“ (۱)
ابو حاتم رحمته فرمائی: ”لا بأس به، يشبه حديثه حديث أهل الصدق، ما بحديثه بأس“ (۲)
ابوداؤد رحمته فرمائی: ”لا بأس به، أحاديثه مستقيمة“ (۳)
ذهبی رحمته فرمائی: ”ثقة“ (۴)

ددې حضراتو نه علاوه د جرح او تعديل نورو ډيرو علماء کرامو هم ددوی توثیق کړې دي (۵)
لیکن علامه عقيلي او ابن حبان په دوی باندې کلام کړې دي، بلکه ابن حبان خو ډیر سخت
الفاظ استعمال کړي دي، لکه عقيلي فرمائی: ”ولا يتابع على حديثه“ (۶) لیکن دې سره سره
هغوی عیسی بن طهمان ددې الزام نه هم بری کړې دي او فرمائیلي ئې دي چې په احادیثو
کښې د عدم متابعت کوم الزام دې د هغې وجه خالد بن عبد الرحمن دي، کوم چې د عیسی نه
روایت کوي، هم دا خبره صحیح هم ده چې دلته د عدم متابعت الزام په عیسی باندې نه
دي، بلکه د خالد بن عبد الرحمن په ذمه باندې دي، حافظ رحمته فرمائی:

”وقال العقيلي: ”لا يتابع، ولعله أتى من خالد بن عبد الرحمن“ یعنی: الراوی عنه، وهو كما ظن العقيلي“ (۷)
د عیسی بن طهمان په باره کښې د ابن حبان رحمته کلام دادې:

”ينفرد بالمتاخير عن أنس، ويأتي عنه بما لا يشبه حديثه، كانه كان يدلّس على أبان بن أبي عياش ويورد الرقاش
عنه، لا يجوز الاحتجاج بخبره، وإن اعتبر بها وافق الثقات من حديثه فلا ضير....“ (۸)

په دې عبارت کښې په عیسی بن طهمان باندې دا اعتراضات شوې دي چې د حضرت انس
رضي الله عنه نه منکر روایتونه نقل کوي او د هغوی نه داسې روایتونه نقل کوي چې د هغوی د
حدیثونو سره مشابهت نه لري، گویا چې عیسی بن طهمان مدلس هم دي، ددې وجې نه د
دوی د مرویاتو نه استدلال کول صحیح نه دي، البته که د دوی روایات د ثقاتو د روایتونو
موافق وي نو بیا هیڅ باک نشته..

او د دلیل په طور ابن حبان رحمته دا حدیث پیش کړې دي:

”.....عن أنس بن مالك، قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ارحموا من الناس ثلاثة:

(۱) تهذيب الكمال: ۶۱۹/۲۲، وتاريخ بغداد: ۱۴۴/۱۱، وتهذيب التهذيب: ۲۱۶/۸ _

(۲) الجرح والتعديل: ۳۶۰/۶، رقم (۱۰۸۰۲/۱۵۵۲)، وتهذيب الكمال: ۶۱۹/۲۲ _

(۳) تهذيب الكمال: ۶۱۹/۲۲، وتهذيب التهذيب: ۲۱۶/۸ _

(۴) المغني في الضعفاء: ۱۶۷/۲، رقم (۴۸۰۵) _

(۵) مثلاً يعقوب بن سفيان، ابن حجر او دارقطني وغيره، او گوري، هدي الساري: ۶۰۶، وتهذيب الكمال
وتعليقاته: ۶۱۹/۲۲، ۶۲۰، والمعرفة والتاريخ، الكني والاسامي: ۲۷۰/۳ _

(۶) الضعفاء الكبير للعقيلي: ۳۸۵/۳، رقم (۱۴۲۵)، وتعليقات تهذيب الكمال: ۶۱۹/۲۲، وهدي الساري: ۶۰۶ _

(۷) هدي الساري: حرف العين: ۶۰۶ _

(۸) پورته حواله، وكتاب المجروحين: ۲، وتعليقات تهذيب الكمال: ۶۱۹/۲۲، وتهذيب التهذيب: ۲۱۵/۸ _

عزیز قوم ذل، وغنی قوم افتقر، وعالماً بین الجهال: (۱)

لیکن یاد ساتی چې د عیسی بن طهمان په باره کښې د ابن حبان دا مذکوره کلام هیڅ کله نقصان نه دي. اول خو ددې وجې نه چې د ابن حبان کلام په جرح کښې معتبر نه دي، ځکه چې دې په متشددینو کښې دي (۲) دویم ددې وجې نه چې حافظ رحمته الله علیه فرمائی چې ابن حبان د خپلې دعوي "لا يجوز الاحتجاج به" دپاره د دلیل په طور صرف یو روایت پیش کړې دي، په دې کښې هم د عیسی قصور نشته بلکه د دوی نه پس د یو بل راوی قصور دي، لیکي چې:

"ثم لم يسق له إلا حديثاً واحداً، والأفة فيه من دونه" (۳)

دریم ددې وجې نه چې امام بخاری رحمته الله علیه د دوی صرف دوه حدیثونه په خپل صحیح کښې نقل کړي دي، یو خو د باب دا حدیث، چې د هغې دویم طریق په کتاب اللباس (۴) کښې دي، دویم په کتاب التوحید (۵) کښې، او دواړو ځایونو کښې هغوی د سماع او د تحدیث وضاحت

کړې دي، ددې وجې نه د بخاری پورې د تدلیس الزام هم صحیح نه دي (۶) والله اعلم بالصواب

عیسی بن طهمان رحمته الله علیه د صحیح بخاری نه علاوه د ترمذی (فی الشائل) او د نسائی راوی هم دي (۷). د حافظ ذهبی رحمته الله علیه د قول مطابق د دوی انتقال په ۱۶۰ هجري کښې او شوي (۸) دي د امام بخاری د یو دریم روایت هم راوی دي (۹)

③ انس رضی الله عنه: حضرت انس حالات په کتاب الايمان، "باب من الايمان ان يحب لآخيه...." کښې تیر شوی دی (۱۰)

⑤ ثابت البناني: حضرت ثابت بن اسلم البناني رحمته الله علیه حالات په کتاب العلم، "باب القراءة والعرض على المحدث" کښې راغلي دي (۱۱)

(۱) کتاب المجروحین: ۹۸/۲. د حدیث ترجمه دا ده: په خلقو کښې درې قسمه کسانو باندې رحم او کړی، یو د قوم معزز او سردار کوم چې ذلیل شوې وی، دویم د قول مالدار کوم چې محتاج شوې وی، او دریم هغه عالم چې د جاهلانو مینځ کښې وی.

(۲) قواعد فی علوم الحدیث للعثماني، لا یؤخذ بقول کل جرح.....: ۱۷۸-۱۷۹.

(۳) هدی الساری: حرف العین: ۶۰۶، وتهذيب التهذيب: ۲۱۶/۸.

(۴) صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب قبلان فی نعل، رقم (۵۸۵۸).

(۵) صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب (وکان عرشه علی الماء)، رقم (۷۴۲۱).

(۶) هدی الساری: ۶۰۶.

(۷) تهذيب الكمال: ۶۲۰/۲۲.

(۸) تهذيب التهذيب: ۲۱۶/۸.

(۹) صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب (وکان عرشه علی الماء)، رقم (۷۴۲۱) وتاریخ الاسلام للذهبي: ۴/

۲۶۳، الطبقة السادسة عشرة، رقم (۳۳۹۸).

(۱۰) کشف الباری: ۴/۲.

(۱۱) کشف الباری: ۱۸۳/۳.

د حدیث شریف ترجمه: عیسی بن طهمان رحمۃ اللہ علیہ وائی چې حضرت انس رضی اللہ عنہ خپلې اوباسلې او مونږ ته ئې اوبنودلې، چې د هغې پورته ویخته د د زړیدو د وجې نه پریوتې وو، د هغې دوه تسمې وې. عیسی بن طهمان وائی چې بیا وروستو ماته ثابت البنانی رضی اللہ عنہ او وئیل چې دا دواړه د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم خپلې دی.

د جرداوین تحقیق: جرداوین د جرداء تشبیه ده، دا د مجرد مؤنث دې، ددې دوه معنې بیان کړې شوې دي (۱) چې ویخته پرې نه وی (۲) زورمونږ چې پورته کومه ترجمه کړې ده هغه د علامه عینی رحمۃ اللہ علیہ د کلام مطابق ده او حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمۃ اللہ علیہ اوله معنی اختیار کړې ده او دویمه معنی ئې قیل سره بیان کړې ده (۳) او دواړه معنې صحیح دي.

د قبالان معنی: قبالان د قبالتشبه ده، د خپلې هغې تسمې ته وئیلې شی کومه چې د پورته نه

د خپې غټې گوتې او دې سره یوځانې گوتې مینځ کښې پیوست شوې وی (۴)

د فحذثنی ثابت البنانی بعد..... مقصد: حضرت انس رضی اللہ عنہ چې دوی ته کومې خپلې بنودلې وې نو دا د چا وې؟ دا معلومه نه وه، بیا وروستو حضرت ثابت بنانی رضی اللہ عنہ ددې وضاحت او کړو چې دا خپلې د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم دی او ښکاره خبره ده چې حضرت ثابت به هم دا خبره د خپل طرفه نه وی کړې بلکه د حضرت انس رضی اللہ عنہ نه به ئې اوریدلې وی، قسطلانی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی:

”وكانه رأى النعلين مع انس، ولم يعلم انها نعل النبي صلى الله عليه وسلم، فحدثه بذلك ثابت عن انس“ (۵)

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: ترجمة الباب سره ددې حدیث مناسبت ددې

جزء ”ونعله“ سره دې ځکه چې په دې کښې د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د خپلو تذکره ده (۶) د باب دریم حدیث شریف د حضرت عائشه رضی اللہ عنہا دې.

۲۹۴۱: (۷) حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ هِلَالٍ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ أَخْرَجَتِ ابْنَةُ عَائِشَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - كِسَاءً مُلَبَّدًا وَقَالَتْ فِي هَذَا نَزْعُ رَوْحٍ

(۱) عمدة القاری: ۳۲/۱۵، وخصائل نبوی شرح شمائل ترمذی مع عربی حواشی للکاندھلوی: ۴۷، وقال الخطابی رحمۃ اللہ علیہ: جرداوین: یرید، خلقین، وثوب جرد، ای: خلق. اعلام الحدیث: ۱۴۴۲/۲.

(۲) کشف الباری، کتاب اللباس: ۲۱۵، وعمدة القاری: ۳۲/۱۵.

(۳) شرح القسطلانی: ۵/۲۰، وایضا انظر فتح الباری: ۶/۲۱۴.

(۴) عمدة القاری: ۳۲/۱۵.

(۵) قوله: اخراجت ابنة عائشة.....: الحدیث، اخرجہ البخاری ایضا، کتاب اللباس، باب الاکسية والخمائن، رقم (۵۸۱۸)، ومسلم، کتاب اللباس والزينة، باب التواضع فی اللباس، رقم (۵۴۴۲-۵۴۴۴)، و ابو داود، ابواب اللباس، باب لباس الغلیظ، رقم (۴۰۳۶)، والترمذی، ابواب اللباس، باب ماجاء فی لبس الصوف، رقم (۱۷۳۳)، وابن ماجه، ابواب اللباس، باب لباس رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم، رقم (۳۵۵۱).

النبي - صلى الله عليه وسلم - . وَزَادَ سُلَيْمَانُ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ أَخْرَجَتْ إِلَيْنَا عَائِشَةُ إِذَا رَأَيْتُمْ مَا يُصْنَعُ بِالْيَمَنِ، وَكِسَاءٌ مِنْ هَذِهِ الَّتِي يَدْعُوْنَهَا الْمَلْبَدَةُ. (۵۴۸۰)

رجال الحديث

① محمد بن بشار: دا محمد بن بشار عبدی رضی اللہ عنہ دې د دوی تفصیلی تذکره په کتاب العلم، "باب ما کان النبی صلی الله علیه وسلم یتخولهم...." کښې راغلې ده (۱)

② عبد الوهاب: دا عبد الوهاب بن عبد المجید ثقفی رضی اللہ عنہ دې د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب حلاوة الايمان" کښې تیره شوې ده (۲)

③ ایوب: د ایوب سختیانی رضی اللہ عنہ تذکره هم د کتاب الايمان مذکور په باب کښې راغلې ده (۳)

④ حمید بن هلال: دا حمید بن هلال عدوی رضی اللہ عنہ دې (۴)

⑤ ابو برده: دا ابو برده حارث بن ابی موسی اشعری دې د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب أی الاسلام افضل" کښې تیر شوې دي (۵)

⑥ عائشة: د حضرت عائشة رضی اللہ عنہا حالات په "بدء الوحي" کښې بیان کړې شوې دي (۶)

قوله: قال: أَخْرَجَتْ إِلَيْنَا عَائِشَةُ رضی اللہ عنہا كِسَاءً مَلْبَدًا: حضرت ابو برده رضی اللہ عنہ فرمائی چې حضرت عائشې رضی اللہ عنہا مونږ ته یو پلن (پیر) خادر اوښودلو. د کساء ملبداً معنی: نن صبا خو کساء مطلقاً خادر ته وئیلې شی لیکن مخکښې به ددې اطلاق صرف د وړې په خادر باندې کیدلو، قال العینی: "الكساء معروف، لكن الظاهر انه لا يطلق إلا على ما كان من الصوف" (۷)

او ملبد د تلبيد نه د اسم مفعول صیغه ده، ددې اصل لبد یا لبدۍ دې، لبدۍ نمدۍ ته وئیلې شی یعنی هغه کپړه چې وړې یا ویخته په اوبو کښې خوشتولو نه پس جوړولې شی او د اس د زین نه لاندې کیخودلې شی، دې دپاره چې خوله زین لره متاثره نه کړي، اوس د کساء ملبد معنی دا شوه چې هغه خادر چې د هغې مینځ سخت وي، د مختلفو کپړو د لمدولو نه پس، په

① (کشف الباری: ۲/۲۵۸)۔

② (کشف الباری: ۲/۲۶)۔

③ (پورته حواله)۔

④ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الصلاة، باب یرد المصلی من مربین یدیه)۔

⑤ (کشف الباری: ۱/۶۹۰)۔

⑥ (کشف الباری: ۱/۲۹۱)۔

⑦ (عمدة القاری: ۳۲/۱۵، والقاموس الوحید، مادة لبد)۔

یو بل باندې قط په قط ایڅودلو نه وروستو تیار کړې شوې وې.)
 نبی ﷺ به دا څادر ولې استعمالوو؟ نبی کریم ﷺ به کساء ملبه ولې استعمالوو، په دې
 سلسله کښې مختلف خبرې شوې دي.

① ددې استعمال به ئې د عاجزې د وجې نه کوو. ② ددې نه غوره څادر چونکه نبی ﷺ سره
 نه وو، ددې وجې نه به ئې دا استعمالوو. ③ د څه قصد او ارادې نه بغير اتفاقی طور به ئې
 استعمالوو، چې څه به ملاؤ شو نو هغه به ئې اغوستل.
 لیکن په دې ټولو کښې اولنې احتمال غوره دي، علامه نووی او علامه عینی دغه احتمال
 غوره کړې دي.)

قوله: وقالت: فی هذا نزاع روح النبی صلی الله علیه وسلم: حضرت عائشې رضی الله عنها
 مزید او فرمائیل چې هم په دې څادر کښې د نبی کریم ﷺ روح وتلې وو.
 مطلب دا دي چې د وفات په وخت هم نبی ﷺ دا څادر اغوستې وو.
 وژاد سلیمان عن حمید عن ابی بردة قال: اخرجت الینا عائشة.....

او سلیمان بن مغیره د حمید عن ابی بردة د طریق نه دا اضافه هم بنودلې ده چې ابو بردة
 او فرمائیل چې حضرت عائشې رضی الله عنها د یمن جوړ کړې شوې یو پلن ازار (لنگ) او یو څادر مونږ
 ته اوښودل، کوم ته چې تاسو ملبه وائې.

د سلیمان نه ابو سعید سلیمان بن مغیره قیسی بصری رضی الله عنه مراد دي.)
 د مذکوره تعلیق مقصد: غالباً ددې تعلیق مقصد دادې چې د ایوب عن حمید په روایت کښې
 اختصار دي، او د حمید نه د باب د حدیث په روایت کولو کښې یو بل راوی د سلیمان بن
 مغیره په روایت کښې د ازار تذکره هم شته، اوس د حدیث مطلب دا شو چې د وفات په
 وخت د نبی کریم ﷺ په بدن مبارک باندې دوه کپړې وې، یو ازار چې د یمن جوړ کړې شوې
 وو او دویم کساء ملبه. والله اعلم

د مذکوره تعلیق تخریج: دا تعلیق امام مسلم رضی الله عنه په خپل صحیح کښې "شیبان بن فروخ، عن
 سلیمان بن المغيرة، عن حميد، عن ابی بردة" طریق سره موصولاً نقل کړې دي، هلته پوره روایت دغه
 شان دي، حضرت ابو بردة فرمائی:

"دخلت على عائشة، فاخرجت الينا ازاراً غليظاً، مباحصنم باليمن، وكساء من القميسون لها الملبدة، قال:
 فاقسم بالله ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قبض في هذين الثوبين.)"

(پورته حواله جات، وشرح النووی علی مسلم: ۱۹۴/۲، والنهاية لابن الاثير: ۲۲۴/۴) _

(عمدة القاری: ۳۲/۱۵، وشرح النووی: ۱۹۳/۲) _

(د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کشف الباری: ۱۸۱/۳، کتاب العلم، باب القراءة والعرض.....) _

(صحیح مسلم، کتاب اللباس والزينة، باب التواضع فی اللباس، والاقتضار.....، رقم (۵۴۴۲)، وتغلیق التعلیق:
 ۴۶۸/۳، وفتح الباری: ۲۱۴/۶، وعمدة القاری: ۳۲) _

ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: د علامه عینی رحمۃ اللہ علیہ د قول مطابق ددې حديث شريف مناسبت ترجمه الباب سره د ترجمه الباب جزء، ”وما استعمل الخلفاء.....“ سره دې(۱) د باب خلورم حديث د حضرت انس رضي الله عنه دي.

۲۹۴۲: (۱) حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ عَنْ عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ قَدْحَ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - انْكَسَرَ، فَأَتَّخَذَ مَكَانَ الشَّعْبِ سِلْسِلَةً مِنْ فِضَّةٍ. قَالَ عَاصِمٌ رَأَيْتُ الْقَدْحَ وَشَرِبْتُ فِيهِ. [۵۳۱۵]

رجال الحديث

① عبدان: دا عبد الله بن عثمان بن جبلة رضي الله عنه دي چې ملقب په ”عبدان“ سره دي. د دوی تذکره په ”بدع الوحي“ کښې تیره شوې ده(۲)؛

② ابو حمزه: دا ابو حمزه محمد بن ميمون سکري مروزي رحمۃ اللہ علیہ دي(۳)

③ عاصم: دا عاصم بن سليمان الاحول رحمۃ اللہ علیہ دي(۴)

④ ابن سيرين: دا مشهور محدث او تعبير کوونکي محمد بن سيرين رحمۃ اللہ علیہ دي. د دوی حالات په کتاب الايمان ”باب اتباع الجنائز من الايمان“ کښې راغلي دي(۵)

⑤ انس بن مالک: د حضرت انس رضي الله عنه تذکره په کتاب الايمان، ”باب من الايمان.....“ کښې راغلي دي(۶)

د حديث شريف سند سره متعلق يو اهم خبرداري: ددې حديث شريف په سند کښې اختلاف دي. ابو حمزه دا د عاصم عن ابن سيرين عن انس طريق سره نقل کړې دي. او شريک د عاصم عن انس د طريق سره. يعنې هغوی په کښې د ابن سيرين واسطه نه ده ذکر کړې. هم دا حديث امام بزار رحمۃ اللہ علیہ هم د امام بخاري رحمۃ اللہ علیہ په واسطې سره په خپل مسند کښې ذکر کړې دي او فرماني چې ”لأنعلم من رواه عن عاصم هكذا إلا باحيزة“ (۷) او امام دارقطني رحمۃ اللہ علیہ فرماني، ”والصحيح الاول“

① (عمدة القاري: ۳۲/۱۵)۔

② (قوله: انس بن مالک: الحديث، أخرجه البخاري أيضاً، كتاب الاشربة، باب الشرب من قدح النبي ﷺ وآتيته، رقم (۵۶۳۸)، ولم يخرج غيره، انظر تحفة الاشراف: ۱/۲۴۸ و ۱/۳۷۳)۔

③ (كشف الباري: ۱/۴۶۱)۔

④ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الغسل، باب نفث البدين من الغسل عن الجنابة)۔

⑤ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الوضوء، باب الماء الذي يغسل به شعر الانسان)۔

⑥ (كشف الباري: ۲/۵۲۴)۔

⑦ (كشف الباري: ۲/۴)۔

⑧ (مسند الامام البزار: ۱۳/۲۳۷، مسند انس بن مالک، رقم (۶۷۳۹))۔

(د) چې د ابو حمزه والا سند صحيح دې. البته علامه جیانی رحمته الله علیه فرمائی چې دلته یو سند ته د صحيح وئیلو او دویم ته د غلط وئیلو ضرورت نشته، په دې سلسله کښې زما په نزد تحقیقی خبره داده چې ددې حدیث بعضې حصه عاصم د انس په واسطې سره او بعضې حصه ابن سیرین د عن انس د طریق نه نقل کړې ده. لکه امام بخاری رحمته الله علیه چې د ابو عوانه د طریق نه کوم روایت په کتاب الاشریه کښې ذکر کړې دې، هغه تفصیلی هم دې او په دې مسئله کښې واضح هم دې. ددې په آخره کښې عاصم فرمائی: "قال ابن سیرین: "انه کانت فيه حلقة من حديد..... فقال له أبو طلحة: لا تغیرن فيه شیئاً....." (د) ددې وجې نه د ابو حمزه او د شریک والا دواړه روایتونه صحيح دی، هر یو د حدیث شریف بعضې حصه نقل کړې ده او د ابو عوانه روایت دواړو ته جامع دې او واضح هم دې (د). والله اعلم بالصواب

قوله: أن قدح النبي صلى الله عليه وسلم انكسر، فاتخذ مكان الشعب سلسلة

من فضة: د حضرت انس بن مالک رضی الله عنه نه روایت دې چې د نبی کریم صلی الله علیه و آله وسلم پیالی ماته شوې وه نو د اصلاح په غرض متاثره خائې باندې هغوی د چاندی یو زنجیر او لگوو. "شعب" د شین فتحه او د عین سکون سره، شلیدلو ته وئیلې شی، دغه شان د شلیدلی او مات شوې خائې اصلاح او سمولو ته هم شعب وئیلې شی (د)

د باب په حدیث شریف کښې چې د کومې پیالې ذکر دې، ددې متعلق د کتاب الاشریه (د) په روایت کښې راغلې دی چې دا د یو خاص قسم لرگی نضار جوړه کړې شوې وه، شارحینو د نضار مختلف تفسیرونه کړې دي، مثلاً خالص عود، نبع وغیره، ابو حنیفه دینوری رحمته الله علیه وئیلې دي چې د لوښو دپاره د ټولو نه غوره لرگی هم داوی.

ددې نه علاوه ددې په صفت کښې د "عریض" لفظ راغلې دې یعنې پلنه، ددې پلنوالي خومره وو؟ تحقیقاً خو معلومه نه ده البته امام احمد رحمته الله علیه د حجاج بن حسان تابعی رحمته الله علیه حدیث نقل کړې دې، هغوی فرمائی چې مونږ حضرت انس رضی الله عنه سره وو، هغوی یو لوښې طلب کړو، د هغې درې واړه لاسکی د اوسپنې وو، حلقه هم د اوسپنې وه، هغوی دا د یو تورې کپړې نه رابهر کړو نو ددې وزن د یو ربع نه کم او د نصف ربع (د) نه زیات وو، د حضرت

^۱ (العلل للدار قطنی، رقم السؤال (۲۶۲۸))

^۲ (صحيح البخاری، کتاب الاشریه، رقم (۵۶۳۸))

^۳ (عمدة القاری: ۳۳/۱۵، وفتح الباری: ۶/۲۱۴، و: ۱۰۰/۱۰۰، کتاب الاشریه)

^۴ (عمدة القاری: ۳۳/۱۵، وفتح الباری: ۱۰۰/۱۰۰)

^۵ (صحيح البخاری، کتاب الاشریه، باب الشرب من قدح..... رقم (۵۶۳۸))

^۶ (ربع یو پیمانہ ده چې د جدید پیمانش په حساب سره ۲۳، ۳۰ کیلن جوړیږي، یعنې د ربع گنجائش به دومره وو، ددې جمع ارباع ده، او گوری القاموس الوحید، مادة ربع)

انس رضی الله عنه په حکم سره په دې کښې اوبه واچولې شوې، بیا دا زمونږ وړاندې پېش کړې شو نو مونږ هغه اوبه اوڅکلې، په خپلو سرونو او مخونو مو واچولې او په نبي کریم صلی الله علیه و آله باندې مو درود اولوستلو صلی الله علیه وسلم

کیدې شې په دې حدیث شریف کښې د اناء نه مراد هم دغه پیالنی وی، د کومې پیالنی تذکره چې د باب په حدیث شریف کښې ده.

پیالنی چا صحیح کړې وه؟ د باب په حدیث شریف کښې چې د "فاتخذ" کوم فعل دې، نو ددې فاعل څوک دې؟ په دې کښې دوه اقوال دي، یو خو دادې چې د فاتخذ فاعل نبي کریم صلی الله علیه و آله دې چې نبي صلی الله علیه و آله دا پیالنی تهیګ کړې وه او دویم قول دادې چې ددې فاعل حضرت انس رضی الله عنه دې، د حدیث شریف د ظاهر نه اولنې رائي صحیح معلومیږي او د کتاب الاشربة د روایت د ظاهر نه دویمه رائي صحیح معلومیږي، د هغې الفاظ دادې: "رأيت قدح النبي صلی الله علیه و آله عند انس بن مالك، وكان قد انصدع فسلصلة بفضة....." لیکن د باب د حدیث ددې طریق چې کوم الفاظ امام بیهقی رحمته الله (۱) نقل کړې دي، د هغې نه دا معلومیږي چې ددې فاعل حضرت انس رضی الله عنه دې، په هغې کښې دي: "ان قدح النبي صلی الله علیه و آله عليه وسلم انصدع، فجعلت مكان الشعب سلسلة، یعنی ان انساجعل مكان الشعب سلسلة" ددې نه پس امام بیهقی رحمته الله فرمائي چې حدیث دغه شان روایت دې، اوس دا معلومه نه ده چې ددې قائل کوم راوی دې، آیا هغه موسی بن هارون دې یا بل څوک دې (۲)

حافظ ابن حجر رحمته الله د امام بیهقی په دې روایت باندې تبصره کولو کښې فرمائي چې ددې روایت نه دا معلومه نه شوه چې ددې قائل څوک دې؟ او ددې بنیاد دادې چې په "جعلت" کښې تاء د متکلم اومنلې شې او دا مضمومه وی، دغه شان حضرت انس رضی الله عنه ددې فاعل کیدې شې. دا هم کیدې شې چې د "جعلت" جیم مضموم شې او دا فعل مجهول شې نو دغه شان په د حدیث د باب د حدیث سره یوشان شې اودنبي کریم صلی الله علیه و آله فاعل کیدل به متعین شې. هغوی لیکي: "وجزم بعض الشراح بالثاني أي الضمير لانس، واحتج برواية بلفظ "فجعلت مكان الشعب سلسلة" ولا حجة فيه لاحتمال أن يكون فجعلت بضم الجيم على البناء للمجهول، فرجع إلى الاحتمال لابهام الجاعل" (۳)

(۱) مسند احمد: ۱۸۷/۳، مسند انس بن مالك، رقم (۱۲۹۷۹)، وعمدة القاری: ۳۳/۱۵۔

(۲) البخاری، کتاب الاشربة، باب الشرب من قدح النبي صلی الله علیه و آله رقم (۵۶۳۸)۔

(۳) السنن الكبرى للبيهقي: ۱/۳۰، کتاب الطهارة، باب النهي عن الاناء المفضض، رقم (۱۱۵)۔

(۴) پورته حواله۔

(۵) فتح الباری: ۲۱۴/۶، و: ۱۰۰/۱۰۰، ونحفة الباری: ۵۳۹/۳۔

قوله: قال عاصم: رأيت القدر، وشربت فيه: حضرت عاصم الاحول فرمائی چې ما هغه پیالې لیدلې ده او هغې باندې مې اوبه هم څکلي دي. دلته د حدیث بالنعمت په طور او د فخر په طور حضرت عاصم دا فرمائی چې ماته دغې پیالې باندې د اوبو څکلو شرافت هم حاصل شوې دي. ددې نه علاوه بیا وروستو دا شرافت نورو ډیرو حضراتو ته هم حاصل شوې دي، لکه حافظ ابو نعیم د علی بن حسن بن شقیق عن ابی حمزه د طریق نه هم دا حدیث نقل کړې دي، په هغې کښې دي: "قال علی بن الحسین: وانا رأيت القدر، وشربت منه" (په خپله د امام بخاری رحمته الله علیه نه هم په دې پیالې باندې څکل منقول دي، علامه قرطبي رحمته الله علیه په "مختصر البخاری" کښې لیکلي دي چې هغوی د صحیح بخاری په بعضې زرو (قدیمو) نسخو کښې دا عبارت لیکلې شوې اولیده چې: "قال أبو عبد الله البخاری: رأيت هذا القدر بالبصرة، وشربت منه، وكان اشترى من ميراث النضر بن أنس بثمان مائة ألف" (۱)

یعنی "امام بخاری فرمائی چې دا پیالې ما په بصره کښې اولیده او دې سره مې اوبه څکلي دي، دا د نضر بن انس رحمته الله علیه د میراث نه په اته لکه کښې اخستلې شوې وه". د سرو زرو او د چاندې د جوړ او د زنجیر لکولو حکم: د باب د حدیث شریف نه د چاندې د جوړ کړې شوې لاسکي، زنجیر (کړا) او د حلقي وغيره د استعمالولو جواز ثابتیږي، لیکن په دې مسئله کښې اختلاف دي. امام ابو حنیفه رحمته الله علیه دا مطلقاً جائز گرځوي، البته صاحب هدایه علامه مرغیناني رحمته الله علیه دا مطلق حکم یو شرط سره مقید کوي، هغه دا چې د سرو زرو او د چاندې ځانې خلې سره اونه لگوي، ددې نه ځان بچ اوساتي (۲). د امام مالک رحمته الله علیه نه دواړه قسمه اقوال نقل دي، یعنی حلال والې او حرموالې وروستو ائمه مالکيه مثلاً دردير، دسوقي او ابن الحاجب رحمته الله علیه وغيره حرمت غوره ښودلې دي (۳). د شوافعو مذهب د امام نووي رحمته الله علیه د قول مطابق دادې چې دسته وغيره که لویه وي او د زینت دپاره وي نو حرام ده او که وړوکې وي او د ضرورت دپاره وي نو بیا جائز ده، د دوی دویم قول د مطلق حرمت دي چې دا کار جائز نه دي (۴).

(۱) فتح الباری: ۱۰۰/۱۰.

(۲) پورته حواله.

(۳) بدائع الصنائع: ۵۲۴/۶-۵۲۵، کتاب الاستحسان، واما الاناء المضيب..... والهداية مع البنایة: ۷۰/۱۲-۷۲، کتاب الکراهی، وموطا محمد: ۳۷۵، ابواب السیر، باب الشرب فی آنية الفضة.

(۴) حاشية الدسوقي مع الشرح الكبير: ۱۰۹/۱، باب احکام الطهارة، فصل الطاهر.

(۵) المجموع شرح المذهب: ۲۵۴/۱-۲۵۸، کتاب الطهارة، حکم الاواني المضيبة..... وشرح النووي علی

او ځانبله ددې څیزونو استعمالول دریو شرطونو سره مقید کوي، یعنې لږ (کم) وي، صرف چاندی وي او د ضرورت دپاره وي یعنې څه فائده په کښې وي لکه چې د دوی په نزد په دې غرض سره سره زر استعمالول بالکل ناجائز دی او د چاندی استعمال شرطونو سره مقید دي. ترجمه الباب سره د حدیث شریف مطابقت: ترجمه الباب سره د حدیث شریف مطابقت په دې جمله کښې دي، "ان قدّم النبي صلى الله عليه وسلم انكس" ځکه چې په دې کښې د نبی کریم ﷺ د پیالې تذکره ده، کومه چې د ترجمه الباب جز، "قدحه" سره مطابق ده. د باب پنځم حدیث شریف د حضرت مسور بن مخرمه رضی الله عنه دې

۲۹۴۳: (۲) حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجَرْمِيُّ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا أَبِي أَنَّ الْوَلِيدَ بْنَ كَثِيرٍ حَدَّثَهُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ حَلْحَلَةَ الدَّؤَلِيِّ حَدَّثَهُ أَنَّ ابْنَ شَهَابٍ حَدَّثَهُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ حُسَيْنٍ حَدَّثَهُ أَنَّهُمْ حِينَ قَدِمُوا الْمَدِينَةَ مِنْ عِنْدِ يَزِيدَ بْنِ مُعَاوِيَةَ مَقْتَلِ حُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ رَحِمَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ لَقِيَهُ الْمُسَوِّرُ بْنُ مُخْرَمَةَ فَقَالَ لَهُ هَلْ لَكَ إِلَيَّ مِنْ حَاجَةٍ تَأْمُرُنِي بِهَا فَقُلْتُ لَهُ لَا. فَقَالَ لَهُ فَبَلِّ أَنتَ مُعْطَى سَيْفِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَيُّ أَخَافُ أَنْ يَغْلِبَكَ الْقَوْمُ عَلَيْهِ، وَإِيْمُ اللَّهِ، لَيْسَ أَعْطَيْتَنِيهِ لَا يُخْذَصُ إِلَيْهِمْ أَبَدًا حَتَّى تُبْلَغَ نَفْسِي، إِنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ خَطَبَ ابْنَةَ أَبِي جَهْلٍ عَلَى فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلَامُ فَسَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُخْطِبُ النَّاسَ فِي ذَلِكَ عَلَى مِنْبَرِهِ هَذَا وَأَنَا يَوْمَئِذٍ مُخْتَلِمٌ فَقَالَ «إِنَّ فَاطِمَةَ مِنِّي، وَأَنَا أَتَخَوَّفُ أَنْ تُفْتَنَ فِي دِينِهَا». ثُمَّ ذَكَرَ صِهْرَ آلِهِ مِنْ بَنِي عَبْدِ شَمْسٍ، فَأَتْنِي عَلَيْهِ فِي مُصَاهَرَتِهِ إِيَّاهُ قَالَ «حَدَّثَنِي فَصَدَّقَنِي، وَوَعَدَنِي فَوَفَّى لِي، وَإِنِّي لَسْتُ أَحْرَمُ حَلَالًا وَلَا أَجِلَ حَرَامًا، وَلَكِنْ وَاللَّهِ لَا تَجْتَمِعُ بِنْتُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبِنْتُ عَدُوِّ اللَّهِ أَبَدًا». [ر: ۱۸۸۴]

رجال الحديث

- ① سعيد بن محمد الجرمي: دا سعيد بن محمد بن سيعد الجرمي رضي الله عنه دې د دوی تذکره په کتاب الجهاد، "باب قتال الترك" کښې تیره شوې ده. (۲)
- ② يعقوب بن ابراهيم: دا يعقوب بن ابراهيم قرشي زهري رضي الله عنه د دوی ترجمه په کتاب العلم "باب ما ذكرني ذهاب موسى...." کښې تیره شوې ده. (۲)

(۱) المغني: ۹۱۴۷، کتاب الاشربة، رقم (۷۳۷۰)، والموسوعة الفقهية: ۱۶۵/۳۲-۱۶۶، مادة فضة)۔

(۲) عمدة القاري: ۳۳/۱۵)۔

(۳) قوله: المسورين مخرمة: الحديث، مر تخريجه في الجمعة، باب من قال في الخطبة بعد.....)۔

(۴) كشف الباري، کتاب الجهاد: ۷۰۳/۱)۔

(۵) كشف الباري: ۳۳۱)۔

۳) ابی: د اب نه مراد ابراهیم بن سعد قرشی زهري عليه السلام دې د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب من کراه ان يعود فی الکفر....." کښې راغلې دي.

۴) الوليد بن كثير: دا الوليد بن كثير مخزومي عليه السلام دې.

۵) محمد بن عمرو بن حنبله الدؤلي: دا محمد بن عمرو بن حنبله الدؤلي بضم الدال وفتح الهاء عليه السلام دې.

۶) ابن شهاب: د محمد بن مسلم بن شهاب زهري عليه السلام تذکره د "بدء الوحى" په اولنې حديث کښې تيره شوې ده.

۷) على بن حسين: دا امام زين العابدين على بن حسين بن على عليه السلام دې.

قوله: أن على بن حسين حدثه أنهم حين قدموا المدينة من عند يزيد بن معاوية مقتل حسين بن علي رضي الله عنه لقيه مسور بن هخرمة: ابن شهاب
عليه السلام فرمائي چې ماته امام زين العابدين على بن حسين عليه السلام او فرمايل چې دا حضرات كله د خليفه يزيد بن معاويه د خوا نه د حضرت حسين بن على عليه السلام شهادت نه پس مديني منوري ته راغلل نو دوی سره مسور بن مخرمه ملاؤ شو. د حضرت مسور بن مخرمه او د امام زين العابدين د ملاقات دا واقعه د ۶۱ هجري ده، ځکه چې په دغه کال باندې د حضرت حسين عليه السلام د شهادت واقعه پيښه شوې وه.

دې پورتنۍ عبارت کښې د يزيد بن معاويه نه مراد مشهور اموي خليفه (۱)، د حسين بن على نه د نبی کریم عليه السلام نوسې (۲) او د مسور بن مخرمه نه مراد مشهور صحابي دې.

قوله: فقال له: هل لك إلى من حاجة تأمرني بها؟ فقلت له: لا: حضرت مسور
بن مخرمه د امام زين العابدين نه تپوس او کړو چې که ستاسو څه ضرورت ماسره متعلق وي

(۱) کشف الباري: ۲/۱۲۰.

(۲) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الصلاة، باب الحلق والجلوس في المسجد.

(۳) عمدة القاري: ۳۳/۱۵، وتحفة الباري: ۳/۵۳۹.

(۴) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الاذان، باب جهر الامام بالتامين.

(۵) کشف الباري: ۱/۳۲۶.

(۶) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الغسل، باب الغسل بالصاع ونحوه.

(۷) عمدة القاري: ۳۳/۱۵.

(۸) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب التهجد، باب صلاة النوافل جماعة.

(۹) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب التهجد، باب تحريض النبي عليه السلام على صلاة.....

(۱۰) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الوضوء، باب استعمال فضل وضوء الناس.

نو ماته حکم او کړی چې زه ئې پوره کړم؟ ما ورته اووئیل چې نه، حضرت مسور عليه السلام چې وړاندې امام زین العابدین ته گومې خبرې او کوم گزارش وړاندې کول غواړی نو دا پورته چې څه تیر شو دا د هغې دپاره تمهید وو.

قوله: فقال له: فهل أنت معطى سيف رسول الله صلى الله عليه وسلم؟ نو مسور عليه السلام زین العابدین عليه السلام ته او فرمائیل چې ایا تاسو به ماته د نبی کریم عليه السلام توره (تلوار) را کړی؟

معطی د یاء تشدید سره دې، دویمه یاء د متکلم ده(۱)

او د "سيف رسول الله" نه مراد په ظاهره د نبی کریم عليه السلام مشهوره توره "ذوالفقار" ده، دا توره نبی کریم عليه السلام د غزوة بدر په موقع باندې د نفل په طور اخستلې وه او دا هغه توره ده چې ددې باره کښې نبی عليه السلام د غزوة احد په موقع باندې خوب لیدلې وو چې د دوی په توره باندې دوه غاښونه لگیدلې دي(۲)

انظر سيرة ابن هشام: ۲/۳، غزوة احد، رؤيا رسول الله، وايضا الروض الانف: ۲/۱۲۷. نبی عليه السلام سره ټولې لس تورې وې چې په هغې کښې یو توره "ذوالفقار" ده(۳)

اوس سوال دادې چې د نبی عليه السلام دا توره د حضرت علی عليه السلام خاندان ته څنگه راغله؟ ددې په جواب کښې علامه عینی رحمته الله علیه دوه احتمالات ذکر کړي دي:

① غالباً دا توره نبی کریم عليه السلام په خپل ژوند کښې حضرت علی عليه السلام ته هبه کړې وه، چې وروستو بیا حضرت زین العابدین عليه السلام ته راوړسیده..

② یا حضرت ابوبکر صدیق حضرت علی عليه السلام ته ورکړې وه چې وروستو بیا د دوی خاندان ته منتقل شوه(۴).

قوله: فأنى أخاف أن يغلبك القوم عليه: ځکه چې ماته ویره ده چې دا قوم به د طاقت په زور سره ستاسو نه دا توره واخلي. دلته د قوم نه مراد بنو امیه دي، ځکه چې د ساداتو حضراتو اختلاف هم دوی سره وو..

قوله: وأيم الله، لان أعطيتنيها لا يخلص إليهم أبداً حتى تبلغ نفسي: په خدائي قسم!

(۱) عمدة القاری: ۳۳/۱۵، وارشاد الساری: ۵/۲۰۰.

(۲) د نبی کریم عليه السلام مذکوره خوب لاتدي ذکر کولې شی، ابن هشام رحمته الله علیه فرمائی: فلما سمع بهم رسول الله عليه السلام والمسلمون قد نزلوا حيث نزلوا، قال رسول الله عليه السلام للمسلمين: اني قد رايت والله خيرا، رايت بقرا، ورايت في ذباب سيفي ثلما، ورايت اني ادخلت يدي في درع حصينة، فاولتها المدينة(۳).

(۳) قال العيني: والظاهر ان هذا السيف هو ذوالفقار، لان سبط ابن الجوزي ذكر في تاريخه: ولم يزل ذوالفقار عنده عليه السلام حتى وهبه لعلی عليه السلام قبل موته، ثم انتقل الى آله، وكانت به عشرة اسياخ منها: ذوالفقار، تنفله يوم بدر. انظر عمدة القاری: ۳۳/۱۵.

(۴) عمدة القاری: ۳۳/۱۵، وفتح الباری: ۶/۲۱۴، وعمدة القاری: ۱۵/۳۴، وشرح القسطلاني: ۵/۲۰۱.

که تاسو دا توره ماته راکړئ نو بنو امیه به هیڅکله دا حاصله نه کړی یا دا چې زما ساه لاره شی زه پرې وفات شم مطلب دادي چې زه به ددې تورې په خاطر خپل ځان قربان کړم^(۱) یو سوال او دهغې جواب حافظ رحمته الله علیه د باب د حدیث په بنیاد باندې د تعجب په طور یو سوال نقل کړې دي. هغه دا چې حضرت مسور رحمته الله علیه فرمائي چې زه ددې تورې د حفاظت دپاره د خپل ځان قرباني ته تیار یم، دلته حضرت مسور رحمته الله علیه صرف او صرف د حضرت فاطمه رحمته الله علیها د نوسی (زین العابدین) د زړه ساتلو دپاره خپل خواش د هغوی وړاندې کوی، لیکن بل طرفته چې حضرت حسین بن علی رحمته الله علیهما چې د حضرت فاطمه رحمته الله علیها ځوڼې دي، د هغوی دپاره د خپل ځان قرباني نه ورکوی، نه ئې څه داسې د خپل خواش اظهار او کړو، تردې چې حضرت حسین رحمته الله علیه د ظالمانو حکمرانانو دلاسه شهید شو او دا لویه واقعه پېښه شوه. ددې په جواب کښې د حضرت مسور رحمته الله علیه له طرفه په عذر کښې دا وئیلې کیدې شی چې حضرت حسین رحمته الله علیه کله عراق ته روان شو نو د اهل حجاز او د حضرت مسور رحمته الله علیه په ذهن کښې هم دا خبره نه وه چې د حضرت حسین رحمته الله علیه معامله به دا رخ اختیار کړی او هلته به د خپلو ملگرو سره مظلومانه شهادت بیا مومی (والله اعلم

قوله: إن علی بن ابی طالب خطب ابنة أبي جهل علی فاطمة رحمته الله علیها: حقیقت کښې حضرت علی په حضرت فاطمه رحمته الله علیها باندې بن راوستلو دپاره د ابو جهل هشام بن مغیره لور ته د نکاح پیغام ورکړو.

د حضرت علی رحمته الله علیه تذکره تفصیل سره په کتاب العلم، "باب اثم من کذب علی النبی صلی الله علیه و آله کښې تیره شوي ده^(۲).

د ابنة ابی جهل نه څوک مراد دی؟ دا د دین مشهور دشمن د ابو جهل لور حضرت جویریة بنت هشام بن مغیره مخزومیه رحمته الله علیها ده. ددې نوم جمیله ښودلې شوې دي، لیکن د حافظ رحمته الله علیه په قول حضرت علی رحمته الله علیه چې کومې ښځې ته د نکاح پیغام ورکول غوښتل نو هغه جویریة وه. (۳) چې کله نبی کریم صلی الله علیه و آله د خپل خفگان اظهار او کړو او حضرت علی رحمته الله علیه دې سره نکاح اونکړې شوه نو عتاب ابن اسید ورسره نکاح اوکړه چې د نبی صلی الله علیه و آله په عهد کښې د مکې مکرمې امیر وو، ددې نه ئې اولاد هم اوشو، تاریخ ئې د یو ځوی نوم محفوظ کړې دي چې د هغه نوم عبد الرحمن وو، دې په جنگ جمل کښې شهید شو^(۴).

(۱) فتح الباری: ۶/۲۱۴، وعمدة القاری: ۱۵/۳۴، وشرح القسطلانی: ۵/۲۰۱)۔

(۲) فتح الباری: ۹۳۲۷)۔

(۳) کشف الباری، کتاب العلم: ۴/۱۴۹، دغه شان د حضرت فاطمه رحمته الله علیها د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الوضوء، باب غسل المرأة اباهما الدم.....)۔

(۴) الاصابة: ۴/۲۶۵، وعمدة القاری: ۱۵/۳۴، ددې په نوم کښې نور اقوال هم دي، اوگوری: فتح الباری: ۸۶/۷ والطبرانی فی الکبیر: ۲۴/۲۱۰)۔

۷۱/۵ - ۷۶۸/۴ - ۱۱ - ۸۶/۷، وعمدة القاری: ۱۶/۲۳۰)۔

حضرت جویریہ رضی اللہ عنہا د نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه د حدیث روایت هم کوی (۱) فرمائی چې یوخل نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم زمونږ کور سره تیر شو او اوبه ئې طلب کړې نو ما ورته پیالې راوړه او اوبه مې ورته پیش کړې دې دوران کښې یو سړی د نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه څه تپوس او کړو چې دوه د زیر رنگ خادرونه پرې پراته وو، نبی صلی اللہ علیہ وسلم په جواب کښې او فرمائیل، "تعبد الله، لا تشرك به شيئاً، وتقيم الصلوة، وتؤدى الزكوة، وتصل الرحم" بیا ئې او فرمائیل "خير امتي قرن، ثم الذين يلونهم" (۲)

د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د خطبې سبب څه وو؟ د باب په حدیث شریف کښې چې د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کومه خطبه او تقریر نقل کړې شوې دې ددې وجه څه وه؟ په دې کښې دوه قولونه دي:

① د کتاب النکاح د روایت نه معلومېږي کوم چې د ابن ابی ملیکه نه روایت دې (۳) چې د بنو هشام بن مغیره اجازت غوستل د خطبې سبب وو، چې کله بنو هشام بن مغیره د خپلې جینې نکاح حضرت علی رضی اللہ عنہ سره کول غوښتل او د نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه ئې اجازت طلب کړو نو نبی صلی اللہ علیہ وسلم خطبه ارشاد او فرمائیل (۴).

② او د امام زهري چې کوم طریق دې، په هغې کښې یو بل سبب بیان کړې شوې دې، په صحیح ابن حبان کښې دي:

"ان علیاً خطب بنت ابی جهل، فبلغ ذلك فاطمة، فأتت رسول الله صلى الله عليه وسلم، فقالت: إن الناس يزعمون أنك لا تغضب لبناتك، وهذا على ناكح بنت ابی جهل!....." (۵)

"حضرت علی رضی اللہ عنہ د ابو جهل لور ته د نکاح پیغام ورکړو، دا خبر حضرت فاطمه رضی اللہ عنہا ته اورسیدو نو هغه نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته راغله او وې فرمائیل چې د خلقو خیال دادې چې تاسو د خپلو لونږو د حمایت او ملګرتیا دپاره نه غصه کیږئ، دې علی ته او گورئ چې هغه د ابو جهل لور سره نکاح کوونکې دې!....."

نبی صلی اللہ علیہ وسلم د حضرت فاطمه په خبرې اوریدو سره مسجد نبوی ته تشریف راوړلو او خطبه ئې ارشاد او فرمائیل. ددې روایت نه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم د خطبې لوستلو سبب معلومېږي چې ددې خطبې سبب حضرت فاطمه رضی اللہ عنہا وه (۶).

د دواړو قولونو مینځ کښې تطبیق: اوس د دواړو قولونو مینځ کښې تطبیق دادې چې د نبی صلی اللہ علیہ وسلم د تقریر سبب دا دواړه خبرې کیدې شی چې بنی هشام بن مغیره د خپلې جینې په سلسله

(۱) الاصابة: ۴/ ۲۶۲، ومعرفة الصحابة: ۵/ ۲۰۴، باب الجیم.

(۲) پورته حواله جات، والطبرانی فی الكبير: ۲۴/ ۲۵۸، رقم (۶۵۸)، باب الدال، درة بنت ابی لهب.....

(۳) صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب ذب الرجل عن ابنته فی الفيرة والانصاف، رقم (۵۲۳۰).

(۴) فتح الباری: ۹۳۲۸.

(۵) الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، مناقب علی بن ابی طالب، ذکر البیان بان علی بن ابی طالب..... رقم (۶۹۱۸).

(۶) وروی بعضه البخاری فی صحیحه، کتاب فضائل الصحابة، باب ذکر اصهار النبی صلی اللہ علیہ وسلم..... رقم (۳۷۲۹).

(۷) فتح الباری: ۹۳۲۸.

کښې نبي ﷺ سره رابطه او کړه چې نکاح کيدل پکار دی یا نه؟ او چې کله ددې معاملې خبر حضرت فاطمه ؓ ته اوشو نو هغې هم خپل والد محترم ته شکایت او کړو چې علی زما بن راوستل غواړي بهر حال په دواړو سببونو کښې څه منافات نشته.

د نکاح پيش کش د چاله طرفه وو؟ د روايتونو د تلاش نه هم دا معلومېږي چې د ابو جهل لور سره د نکاح کولو فيصله د حضرت علی ؓ خپله فيصله وه، په خپله د جينې والو له طرفه په دې کښې څه حرکت نه وو، ددې وجې نه په اکثرو روايتونو کښې د خطبې نسبت د حضرت علی ؓ طرفته دې، په خپله چې د حضرت فاطمه ؓ په حوالي سره پورته کوم حديث مبارک تير شو، په هغې کښې هم د "ناکح" لفظ حضرت فاطمه ؓ استعمال کړې دي، حالانکه دغه وخت پورې نکاح شوې نه وه، ددې وجه ښکاره ده چونکه د حضرت علی ؓ اراده وه او اراده ئې مضبوطه هم وه چې که ممانعت اونکړې شو نو چې نن نه وي چې صبا نکاح خامخا اوشي، ددې وجې نه حضرت فاطمه ؓ د "ناکح" لفظ استعمال کړو، په بعضې روايتونو کښې راځي چې په خپله حضرت علی ؓ هم په دې سلسله کښې نبي کریم ﷺ سره مشوره کړې وه او د نکاح اجازت ئې غوښتلې وو، په مستدرک حاکم کښې د حضرت سويد بن غفله مخضرمي ؓ روايت دې، فرمائي:

"خطب علی ابنة ابی جهل الی عها الحارث بن هشام، فاستشار النبی صلی الله علیه وسلم، فقال: اعن حسبها تسئلني؟ قال علی: قد اعلم ما حسبها، ولكن اتأمرني بها؟ فقال: لا، فاطمة بضعة مني، ولا أحسب إلا وأناها تحزن وتجزع، فقال علی: لا آتی شیئاً تکرهه" (۱)

يعنی: "حضرت علی ؓ د ابو جهل لور سره د نکاح کولو دپاره د هغې تره حارث بن هشام ته پیغام واستوو او په دې معامله کښې ئې نبي کریم ﷺ سره مشوره او کړه، نبي ﷺ اوفرمائیل، آیا ته ما نه ددغه ښځې د حسب نسب تپوس کول غواړي؟ نو حضرت علی ؓ او وئیل چې د هغې حسب نسب ماته ښه معلوم دې لیکن آیا تاسو ماته هغې سره د نکاح کولو مشوره راکوئ؟ نبي ﷺ اوفرمائیل، فاطمه زما حصه ده او زما خیال دادې چې ستا په دې نکاح کولو سره به هغه غمژنه او پریشانې شي. نو حضرت علی ؓ او وئیل چې زه به داسې هیڅ یو کار اونکړم چې تاسو ته ناخوښه وي."

حافظ ابن حجر مذهب فرمائي چې غالباً حضرت علی ؓ د نبي ﷺ د خطبې لوستلو نه پس اجازت غوښتلې وو او په خپله د خطبې دوران کښې موجود نه وو، ددې وجې نه ئې مشوره هم او کړه لیکن هرکله چې نبي ﷺ منع کړو نو حضرت علی ؓ ددې معاملې نه وروستو، لکه په یو حديث کښې دا الفاظ راغلې دي کوم چې د "شعیب عن الزهري" د طریق نه روايت دې چې: "فترك علی الخطبة" (۲)

(۱) پورته حواله.

(۲) المستدرک للحاکم: ۱۷۳/۳، کتاب معرفة الصحابة، ذکر مناقب فاطمة بنت رسول الله ﷺ، رقم (۴۷۴۹)

(۳) صحيح البخاری، کتاب فضائل الصحابة، باب ذکر اصهار النبی ﷺ، رقم (۳۷۲۹).

او د ابوداؤد شریف روایت(۱) چې د "معبر عن الزهري من مبررة" نه دي، هغې کښې دا الفاظ راغلې دي: "فسکت علی من ذلك النکاح" (دېوالله اعلم بالصواب)

قوله: فسمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يخطب الناس في ذلك على

منبره هذا: نو ما د نبی ﷺ نه واوریدل چې هغوی خلقو ته په دې معامله کښې خطاب کوم په خپل منبر باندې.

مطلب دادې چې کله نبی ﷺ دا واوریدل چې حضرت علی ﷺ د حضرت فاطمه ﷺ بن راوستل غواړي او د ابوجهل لور سره نکاح کول غواړي نو نبی ﷺ د خپل منبر نه دا راتلونکې خطبه ارشاد او فرماید، دې دپاره چې خلق هم د اصل واقعي نه خبردار شي او خلقو ته هم پته اولگي چې د نبی د لور او د الله تعالی د دشمن د لور اجتماع نه شي کیدي (۲) وانا یومئذ محتلم: او زه دغه ورځو کښې بالغ ووم.

ددې جملې نه د حضرت مسور بن مخرمه ﷺ مقصود دادې چې وړاندې به زه د نبی کریم ﷺ کوم الفاظ نقل کوم نو هغه غیر یقیني نه دي بلکه ماته ښه یاد دی چې زه هغه وخت بالغ ووم او د واقعاتو د تول مې صلاحیت او قابلیت لرلور (۳).

د حضرت مسور ﷺ عمر دغه وخت څومره وو؟ ددې نه پس خان په دې پوهه کړي چې ابن سید الناس د باب د حدیث دې الفاظو "وانا یومئذ محتلم" ته د حقیقت نه خلاف او غلط وئیلې دي او فرمائي چې صحیح لفظ "کالمحتلم" دې مطلب دا چې د بالغانو په شان وو. دا د اسماعیلی روایت دې ددې وجه دا ده چې حضرت مسور ﷺ د نبی په ژوند مبارک کښې بالغ شوې نه وو ځکه چې دوی د حضرت عبد الله بن زبیر نه پس پیدا شوې وو. ددې وجې نه د حضرت مسور عمر مبارک به د نبی کریم ﷺ د وفات نه پس اته کاله وی (۴) لیکن حافظ ابن حجر ﷺ د ابن سید الناس ددې رائي سره اختلاف کړي دي او فرمائي چې د ابن سید الناس له طرفه د باب حدیث ته غلط وئیل صحیح نه دی، ځکه چې د صحیح قول مطابق د حضرت عبد الله بن زبیر ﷺ ولادت د هجرت نه مخکښې کال باندې شوې وو، ددې وجې نه به د نبی کریم ﷺ د وفات په وخت د دوی عمر نهه کاله وی، لهذا دا خبره بالکل ممکن ده ځکه چې دا د بلوغ اقل مدت (کمه مده) ده یعنی نهه کاله، په دې کښې به بالغ شوې وی، یا به

(۱) سنن ابی داود، کتاب النکاح، باب ما یکره ان یجمع بینهن من النساء، رقم (۲۰۷۰)۔

(۲) فتح الباری: ۹۳۲۸، دغه شان اوگوري، شرح مشکل الآثار للامام الطحاوی: ۵۱۱/۱۲-۵۱۹، باب بیان مشکل ما روی عن رسول الله ﷺ من قوله: ان بنی هشام بن المغيرة.....، الباب: (۷۸۸)۔

(۳) فتح الباری: ۸۶/۷۔

(۴) فتح الباری: ۹۳۲۷۔

(۵) پورته حواله۔

د حضرت مسور قول "محتلم" په مبالغه باندې حمل کولې شی، ددې نه مراد به تشبیه وی، دغه شان دواړه روایتونه یعنی "محتلم" او "کالمحتلم" د معنی په لحاظ سره به موافق شی، یو ته صحیح وئیل او دویم لره د غلط ګرځولو به هیڅ ضرورت پاتې نه شی. ددې ټول تفصیل ضرورت دې دپاره محسوس کړې شو او ددې وجه دا شوه چې د اتو کالو ماشوم ته چرته هم محتلم یا کالمحتلم نه دې وئیلې شوې، مګر دا چې تشبیه مراد واخستلې شی او دا اووئیلې شی چې په فهم او حفظ کښې او د اخذ په معامله کښې حضرت مسور د بالغ په شان وو^(۱)، والله اعلم بالصواب.

قوله: فقال: ان فاطمة مني، وانا اتخوف ان تفتن في دينها: نو نبي کریم ﷺ او فرمائیل، فاطمه رضی اللہ عنہا زمانه ده او ماته ده چې ددې معاملې د وجې نه به د فاطمې رضی اللہ عنہا دین متاثره شی.

مطلب دادې چې حضرت فاطمه رضی اللہ عنہا به د طبعی غیرت په وجه سره صبر اونکړې شی او په دې سره به د هغې ذاتی او خانګی ژوند متاثره شی^(۲).

قوله: ثم ذكر صهراله من بنى عبد شمس، فائني عليه في مصاهرته اياه، قال:

حدثني فصدقني ووعدني فوفى لي: بيا نبي کریم ﷺ د بنو عبد شمس سره تعلق لرونکی یو خپل زوم (د ابو العاص بن الربیع) تذکره او فرمائیل نو هغه سره ئې د خپلې رشتې او تعلق تعریف او کړو، وې فرمائیل هغه ماسره خبره او کړه او هغه ئې رښتوني کړه، ماسره ئې وعده او کړه او هغه ئې پوره کړه.

حضرت ابو العاص بن الربیع: دا حضرت ابو العاص بن الربیع رضی اللہ عنہ بن عبد العزی بن عبد مناف بن قصی بن کلاب قرشی عبشمی دې^(۳).

د دوی د مور نوم هاله بن خویلد ده چې د ام المؤمنین حضرت خدیجة الکبری رضی اللہ عنہا خور وه، دغه شان حضرت ابو العاص رضی اللہ عنہ د حضرت خدیجه رضی اللہ عنہا حقیقی خور ئې شو^(۴). د دوی نوم څه وو، په دې کښې د سیرت د عالمانو اختلاف دې، بعضو لقيط، بعضو زبیر، بعضو هشیم، بعضو مهشم او بعضو یاسر بنودلې دې.

د ابن عبد البر رحمته اللہ علیہ د قول مطابق اکثر حضراتو لقيط اختیار کړې دې^(۵).

(۱) پورته حواله.

(۲) عمدة القاری: ۳۴/۱۵.

(۳) سیر اعلام النبلاء: ۳۳۰/۱، والاصابة: ۱۲۱/۴، والاستيعاب: ۴۳۰/۲، باب العين من الكنى.

(۴) سیر اعلام النبلاء: ۳۳۱/۱، والاصابة: ۱۲۱/۴، والاستيعاب: ۴۳۰/۲، والمستدرک للحاکم: ۶۳۸/۳، کتاب

معرفة الصحابة، ذکر ابی العاص..... رقم ((۶۶۹۳)).

(۵) الاستيعاب: ۴۳۰/۲.

د دوی لقب جرو البطحاء وو، دغه شان په امین سره به هم رابللي کیدو.

د غزوه حدیبیه نه پنځه میاشتې مخکې دوی اسلام قبول کړو.

د نبی کریم ﷺ د ټولو نه مشر لور حضرت زینب ﷺ د دوی په عقد کښې وه، د بدر په موقع باندې د مکې مکرّمې د مشرکینو چې کوم کسان گرفتار شوې وو، په هغوی کښې حضرت ابوالعاص بن الربیع هم وو، مسلمانانو چې کله د دغه کسانو په بدله کښې د فدیې د وصولولو فیصله اوکړه نو د قیدیانو متعلقینو او وارثانو د مکې مکرّمې نه پیسې راواستولې، حضرت زینب چې دغه وخت مکه مکرّمه کښې وه، هغې هم د خپل خاوند د آزادۍ دپاره فدیې راواستوله، کوم خیز چې هغې راواستوو د هغې په لیدلو سره د نبی کریم ﷺ زړه مبارک نرم شو، هغه د حضرت خدیجة الکبریٰ ﷺ هار وو، چې ددې دواړو د واده په موقع باندې حضرت خدیجة الکبریٰ ﷺ حضرت زینب ﷺ ته په غاړه کښې اچولې وو، د هار په لیدلو سره نبی کریم ﷺ صحابه کرامو ته وفرمائیل چې که تاسو مناسب گنړئ نو د زینب قیدی پریرئ چې دې هغې ته واپس لاړ شی. صحابه کرامو ﷺ دا خبره اومنله او هغه ئې آزاد کړو.

مکې مکرّمې ته د روانیدو نه مخکې نبی کریم ﷺ د حضرت ابوالعاص نه وعده واخستله چې دې واپس لاړ شی نو حضرت زینب ﷺ به د نبی کریم ﷺ خدمت ته راوړلیري او نبی کریم ﷺ ده ته ددې خبرې د پټ ساتلو دپاره هم وفرمائیل.

بل طرفته رسول الله مبارک ﷺ حضرت زید بن حارثه ﷺ چې د نبی ﷺ متبني وو، او یو

بل انصاری راوېلل او ورته ئې وفرمائیل چې تاسو دواړه بطن یاجج دته روان شی او هلته اودریرئ، تردې چې حضرت زینب ﷺ تاسو ته راشی نو تاسو دواړه به د هغې د سفر ملگری ئې او هغه خپل ځان سره راولئ، دا د بدر نه څو میاشتې پس واقعې ده.

حضرت ابوالعاص چې د آزادیدو نه پس کله مکې مکرّمې ته اورسیدو نو حضرت زینب ته ئې اووئیل چې خپل والد محترم ته د تلو دپاره تیاری اوکړه نو هغوی تیاره مکمل کړه او د هغې لیور کنانه چې د ترور ځوې ئې هم وو، یو اوښ ئې راوستو چې په هغې باندې حضرت زینب ﷺ سوره شوه او کنانه هم غشی او کمان ځان سره کړل او د ورځې په رنډا کښې روان شو، په دې باندې د مکې مکرّمې والا ډیر غصه شو او د حضرت زینب ﷺ په تلاش کښې

(۱) پورته حواله، والاصابة: ۴/۱۲۱، وسیر اعلام النبلاء: ۱/۳۳۱)۔

(۲) سیر اعلام النبلاء: ۱/۳۳۱)۔

(۳) سیر اعلام النبلاء: ۱/۳۳۲، والمستدرک: ۳/۲۳۶، کتاب معرفة الصحابة، ذکر مناقب ابی العاص.....، رقم (۵۰۳۸)، والسيرة النبوية لابن هشام: ۲/۶۵۳، ومسند احمد، مسند عائشة، رقم (۲۶۸۹۴)، وابو داود، کتاب الجهاد، باب فی فداء الاسیر بالمال، رقم (۲۶۹۲)، من رواية ﷺ، والاصابة: ۴/۱۲۱)۔

(۴) قوله: یاجج: هو بفتح الیاء، وبعدها همزة، وجیم مکسورة: موضع علی ثمانية امیال من مكة. انظر تعليقات سیر اعلام النبلاء: ۱/۳۳۳، ومعجم البلدان: ۵/۴۲۴، باب الیاء والالف وما يليهما)۔

راووتل نو ګناه په یو مقام ذوطوی کښې اوبښ اودرولو او خپل ترکش ئې خورکړو، دلته یو مشرک هباربن الاسود حضرت زینب رضی الله عنها ته نیزه اوبښودله او وې ویړوله، ددې معاملې په لیدلو سره ګناه او وئیل چې څوک هم نژدې راغی نوزۀ به دهغه په بدن کښې دا غشی ښخ کړم. دې خلقو کښې ابوسفیان هم وو، هغه ګناه ته او وئیل، ائې سرپه دا غشی زمونږ نه لرې کړه، مونږ تاسره څه خبره کول غواړو نو ګناه صبر شو او د ابوسفیان خبره ئې واوړیده، ابوسفیان وئیل چې دا تائنه اونکړل چې د ورځې په وخت کښې اود سردارانو او امیرانو په موجودګی کښې راووتلې، حالانکه اوس نژدې مونږ په بدر کښې چې کومې رسوایی او ذلت سره مخامخ شو او د محمد صلی الله علیه و آله نه چې مونږ ته کوم تکلیف راوړسیده د هغې تاته ښۀ پته ده، دا ته چې د ورځې په رڼا کښې دا ښځې بولې، خلق به دا ګنړی چې دا هم د بدر د ذلت یو حصه ده. په خدائي قسم اوس دلته د حصارولو مونږ ته هیڅ ضرورت نشته، ددې وجې نه اوس دا زینب واپس بوځه، چې کله حالات پرسکون او د امن شی او خلقو کښې دا خبره مشهوره شی چې مونږ دوی واپس کړې دی نو پته ئې بیا بوځه او پلار ته ئې حواله کړه.

نو ګناه د ابوسفیان په خبره باندې عمل اوکړو او حضرت زینب رضی الله عنها ئې واپس کړه، خو ورځې پس دوباره اووتل او دا ئې حضرت زید بن حارثه رضی الله عنه او د هغوی ملګری ته حواله کړه، دې دواړو حضراتو حضرت زینب رضی الله عنها مدینې منورې ته اورسوله.

د فتح مکه نه څه وخت مخکښې خبره ده چې حضرت ابوالعاص د تجارت په غرض سره د شام قصد اوکړو، د قریشو هم ورسره ډیر مال وو، واپسئ کښې د مسلمانانو یو لښکر سره مخامخ شو، مسلمانانو ترینه ټول مال واخسته لیکن دې یی گرفتار نه کړې شو، دې د هغه ځائي نه اوختیده، د شپې مدینې منورې ته راغی او حضرت زینب رضی الله عنها ته راوړسیده، د هغې نه ئې پناه طلب کړه، حضرت زینب رضی الله عنها ورته پناه ورکړه او شپه ئې هلته تیره کړه.

سحر چې کله نبی کریم صلی الله علیه و آله او صحابه کرام رضی الله عنهم د مانځه نه فارغ شو نو د ښځو د ډلې نه حضرت زینب رضی الله عنها په اوچت آواز سره وفرمائیل: "ایها الناس! قد اجرت ابا العاص بن الربیع" چې ائې "خلقو! ابوالعاص بن الربیع زما په پناه کښې دي".

بل طرفته نبی کریم صلی الله علیه و آله هغه لښکر ته پیغام ولیږو کوم لښکر چې د ابوالعاص مال اخستلې وو: "ان هذا الرجل منا حیث قد علمتم، وقد اصبتم له مالا، فان تحسنوا وترددوا، فانا نحب ذلك، وان ایبتم، فهو فی الله، فاتم احق به"

یعنی: "څنګه چې تاسو ته هم معلومه ده چې دا زمونږ د خاندان کس دي او تاسو دده مال اخستلې دي، نو که تاسو دده سره ښۀ سلوک اوکړئ او دده مال واپس کړئ نو دا مونږ ته خوښه ده او که تاسو انکار اوکړئ نو دا غنیمت دي، چې تاسو ئې ډیر حقداریئ"

په دې باندې حضرات صحابه کرامو رضی الله عنهم وفرمائیل، دغه مال به ورته مونږ واپس کړو، نو د وعدې مطابق صحابه کرامو رضی الله عنهم د هغه اخستلې شوې ټول مال واپس کړو.

حضرت ابوالعاص د خپل تجارت مال او سامان واخستلو او مکې مکرمې ته روان شو، هلته په رسیدلو سره چې څومره مال وو، هغه ئې حواله کړو او بیا ئې وفرمائیل ائې د

مکي والو! آیا په تاسو کښې په ما باندې د چا څه حق شته؟ هغوی په جواب کښې اووئیل، نه! الله تعالی دې تا ته جزاء خیر درکړی، په دې باندې حضرت ابو العاص او فرمائیل:

“اشهد ان لا اله الا الله وان محمدا عبده ورسوله” په الله تعالی قسم! ما مدینه منوره کښې د نبی کریم ﷺ خوا کښې اسلام ددې وجې نه قبول نه کړو چې هسې نه تاسو دا خیال اونکړئ چې زه ستاسو مال خوړل غواړم، اوس چې هرکله ما تاسو ته ستاسو مالونه واپس کړل او په ما باندې د چا څه حق پاتې نه شو نو ددې وجې نه زه د اسلام د قبولولو اعلان کوم.

ددې نه پس دوی مدینې منورې ته د نبی ﷺ خوا ته تشریف راوړلو او نبی کریم ﷺ حضرت ابو العاص او د حضرت زینب نکاح خپل مینځ کښې برقرار اوساتله، دغه شان شپږ کاله فراق او جدائی ددې دواړو تر مینځه تیره شو(۱)

د باب د حدیث شریف په الفاظو “حدثني فصدقني، ووعدني، فوفی لي” کښې دې پورتنی ذکر شده واقعي طرفته اشاره ده چې حضرت ابو العاص رضی الله عنه د خپل ډیر زیات محبت باوجود کوم چې ئې حضرت زینب رضی الله عنها سره وو، هغه د خپل پلار طرفته روانه کړه او نبی ﷺ سره ئې چې کومه وعده کړې وه نو هغه ئې پوره کړه، په دې کښې نبی ﷺ د ابو العاص ددې کار تعریف او ستائینه کړې ده(۲) حضرت ابو العاص رضی الله عنه د اولاد په سلسله کښې تاریخ صرف د یو لور تذکره کوي(۳) امامه بنت ابو العاص چې ددې مور حضرت زینب رضی الله عنها وه دا هغه امامه ده چې نبی ﷺ به دا اوچته کړې وه او مونځ به ئې کوو، دې نه د دوی خپل مینځ کښې هغه ډیر زیات مینه محبت ښه طریقي سره معلومېږي، د صحیح بخاری وغیره روایت دې کوم چې د حضرت ابوقتاده رضی الله عنه روایت دې چې:

”ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يصلى وهو حامل بنت زينب بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم، ولابى العاص بن الربيع، فاذا قام حملها، وإذا سجد وضعها؟.....“ (اللفظ للبخارى)

(۱) للاستزادة انظر: سير الذهبى: ۳۳۲/۱ - ۳۳۴، والاصابة: ۱۲۲/۴، والمعجم الكبير: ۴۲۶/۲۲ - ۴۳۱، ما اسندت ام سلمة رضی الله عنها رقم (۱۰۵۰)، والسير النبوية لابن هشام: ۶۵۱/۲ - ۶۵۹، اسر ابى العاص بن الربيع رضی الله عنه....
(۲) سير اعلام النبلاء: ۳۳۱/۱ -
(۳) دا د مشهور قول مطابق خبره ده. البته حاکم په مستدرک (۲۳۶/۳) کښې او حافظ په فتح الباری (۸۵/۷) کښې او عینی په عمدة القاری (۲۳۰/۱۶) کښې د یو څو ذکر هم کړې دي چې د هغه نوم علی وو، دې په ماشومتوب کښې وفات شوې وو، غالباً ددې وجې نه عام طور سره د دوی ذکر نه کېږي. او حضرت امامه رضی الله عنها ډیر وخت ژوندی وه، اول د حضرت علی ابن ابی طالب رضی الله عنه په نکاح کښې وه، د هغوی د وفات نه پس د حضرت مغیره بن نوفل په نکاح کښې راغله او د حضرت امیر معاویه رضی الله عنه په دور کښې دا وفات شوه. رضی الله عن الجميع او گورئ: سير اعلام النبلاء: ۳۳۵/۱، والاصابة: ۱۲۳/۴ -

(۱) الحديث اخرجه البخارى، ابواب سترة المصلی، باب اذا حمل جارية صغيرة على عنقه فى الصلاة، رقم (۵۱۶)، وكتاب الادب، باب رحمة الولد وتقيله، رقم (۵۹۹۶)، ومسلم، كتاب المساجد، باب جواز حمل الصبيان..... رقم (۱۲۱۲ - ۱۲۱۵)، وابو داود، كتاب الصلاة، باب العمل فى... [بقیه بر صفحه آنده...]

چې "نبی ﷺ به امامه اوچته کړې وه او مونځ به یې کولو، د قیام په حالت کښې به یې اوچته کړې وه او د سجدې په وخت به یې په زمکه کیخودله" (۱) په شپږو کتابونو کښې د حضرت ابوالعاص (رضی الله عنه) نه خه حدیث منقول نه دی (۲) دوی د حضرت صدیق اکبر (رضی الله عنه) په زمانه کښې په ۱۲ هجری او د ذی الحجې په میاشت کښې وفات شو (۳) رضی الله عنه وارضاه

قوله: وانی لیست أحرماً حلالاً، ولا أحلاً حراماً، ولكن والله، لا تجتمع بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم وبنت عدو الله أبداً: او زه یو حلال خیز لره حرام او حرام خیز لره حلال نه ګرځوم، لیکن په خدایې قسم! د رسول الله ﷺ او د الله تعالی د دشمن لور په یوځای کښې جمع کیدې نه شی. د باب د حدیث شریف الفاظ خو تاسو او کتل او په کتاب النکاح کښې دا الفاظ راغلې دي:

"فلا آذن، ثم لا آذن، إلا أن یزید ابن ابی طالب أن یطلق ابنتی، وینکح ابنتهم" (۴) چې "زه اجازت نه ورکوم، بیا نه ورکوم، البته یو صورت دی هغه دا چې علی زموږ لور ته طلاق ورکړی او د هغوی جینی سره نکاح اوکړی."

په دې روایت کښې چې نبی ﷺ درې ځله کوم لفظ د "لا آذن" او فرمائیلو نو دا د تاکید په طور وو، دغه شان په دې کښې دې خبرې طرفته اشاره ده چې دا ممانعت همیشه دپاره وو، هسې نه چې څوک دا خیال اوکړی چې دا ممانعت عارضی دی، د څو ورځو دپاره دی، نو ددې احتمال د بالکل ختمولو دپاره نبی ﷺ په خپله خبره کښې زور او تاکید پیدا کړو او دا مذکوره پورتنې کلام یې درې ځله ارشاد او فرمائیلو (۵) او هرچه د نبی ﷺ دا الفاظ "إلا أن یزید ابن ابی طالب أن یطلق" دی نو دا غالباً په دې خبره باندې محمول دی چې چا نبی ﷺ ته چغلی کړې وی چې حضرت علی (رضی الله عنه) د ابوجهل لور سره د نکاح کولو مضبوطه اراده کړې

...بقیه از حاشیه گذشته [الصلاة، رقم (۹۱۷-۹۲۰)، والنسائی، کتاب المساجد، باب ادخال الصبيان المساجد، رقم (۷۱۲)، و کتاب السهو، باب حمل الصبيان فی الصلاة، ووضعهن فی الصلاة، رقم (۱۲۰۵-۱۲۰۶)] _

(۱) سیر اعلام النبلاء: ۱/۳۳۱ _

(۲) علامه نابلسی د دوی یو روایت ذکر کړې دی، لیکن په دې کښې د دوی نه تسامح شوي ده، نابلسی (رحمته الله علیه) چې د سنن نسائی د کوم روایت حواله ورکړې ده نو هغه د حضرت عثمان بن ابی العاص (رضی الله عنه) نه روایت دی نه چې د ابوالعاص بن الربیع (رضی الله عنه) نه، او ګوري ذخائر الموارث: ۳/۹۷، حرف العين، رقم (۷۳۴۷)، وسنن النسائی، کتاب الاستعاذه من الهرم، رقم (۵۴۸۹)، وتحفة الاشراف: ۷/۲۳۹ (۹۷۶۸)، عثمان بن ابی العاص (رضی الله عنه) _

(۳) الاصابة: ۴/۱۲۳، وسیر اعلام النبلاء: ۱/۳۳۵، والطبقات الکبری لابن سعد: ۲/۱۸، ومنهم من اغرب فی تاریخ وفاته (هو العلامة العینی)، وقال: انه قتل يوم الیمامة _

(۴) صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب ذب الرجل ابنته فی الغيرة والانصاف: رقم (۵۲۳۰) _

(۵) فتح الباری: ۸/۹۳۲۸ _

ده، ددې وجې نه ئې او فرمايل چې صرف په دې صورت كېنې علي نكاح كولې شي چې حضرت فاطمه عليها السلام ته طلاق ورکړي ورنه د حضرت علي عليه السلام په شان شخصيت نه داسې توقع څنگه كيدې شي چې هغه د نبی عليه السلام د منع كولو باوجود د خپلې نكاح اراده ولري؟^(۱) د منع كولو وجه څه وه؟ پورتنی حديث كېنې نبی عليه السلام فرمايلې دي چې د نبی لور او د الله تعالى د دشمن لور د يو سړي په عقد كېنې جمع كيدې نه شي اوس سوال دا پيدا كيږي چې ددې منع كولو وجه څه وه؟

ابن التين رحمته الله فرماني چې ددې واقعي صحيح ترين محمل دادې چې نبی عليه السلام د خپلې لور او د ابو جهل د لور جمع كيدل حرام گرځولې دي، ځكه چې نبی عليه السلام په خپله ددې علت او وجه هم بيان كړې ده چې ددې كار د وجې نه به ماته تكليف وي او دا خبره اتفاق سره واضحه ده چې نبی كريم عليه السلام ته تكليف رسول يا په دې كار كېنې اخته كيدل حرام دي او د نبی عليه السلام د قول مبارك "لا احرأ حلالاً" مطلب دادې چې د ابو جهل لور د حضرت علي عليه السلام دپاره حلاله ده، نكاح ورسره كولې شي ليكن د حضرت فاطمه عليها السلام په موجودگي كېنې ورسره نكاح نه شي كولې ځكه چې ددې دواړو بنځومينځ كېنې جمع والې به د حضرت فاطمه عليها السلام د تكليف سبب جوړ شي او دهغې تكليف به د نبی عليه السلام د تكليف سبب او گرځي. "ويؤذيني ما اذاها" ^(۲) او حافظ ابن حجر رحمته الله دا د نبی عليه السلام په خصوصياتو كېنې شمار كړې دي چې يو سړي سره د نبی عليه السلام لور په نكاح كېنې وي نو هغه دويمې بنځې سره نكاح نه شي كولې دغه شان دا هم كيدې شي چې دا د حضرت فاطمه عليها السلام خصوصيت وي، حافظ صاحب فرماني:

"والذي يظهر لي أنه لا يبعد أن يعد في خصائص النبي صلى الله عليه وسلم أن لا يتزوج على بناته، ويحتل أن يكون ذلك خاصاً بفاطمة....." ^(۳)

يو سوال او دهغې جواب: البته دلته يو سوال دا پيدا كيږي چې د نبی عليه السلام يو بل زوم حضرت عثمان ذوالنورين رضي الله عنه هم وو، ليكن په خپل تقرير كېنې نبی عليه السلام د حضرت ابوالعاص بن الربيع ذكر او كړو، دهغه تعريف او ستاينه ئې او كړه او د حضرت علي عليه السلام د پوهولو دپاره ئې د دوي حواله وركړه او د حضرت عثمان رضي الله عنه تذكره ئې او نه كړه، ددې څه وجه وه؟ شارحينو ددې مختلف جوابونه ذكر كړي دي:

① غالباً نبی عليه السلام حضرت علي او حضرت ابوالعاص رضي الله عنه دواړو سره دا شرط لگولې وو چې دوه، به د حضرت زينب او حضرت فاطمه عليها السلام په موجودگي كېنې دويمه نكاح نه كوي نو حضرت ابوالعاص خو ددې شرط موافق څه داسې قدم پورته نه كړو او حضرت علي عليه السلام دا اقدام او كړو ددې وجې نه نبی عليه السلام د حضرت ابوالعاص رضي الله عنه تعريف بيان كړو او حضرت

(۱) پورته حواله.

(۲) پورته حواله، وعمدة القاري: ۳۴/۱۵، وشرح الكرماني: ۸۸/۱۳.

(۳) فتح الباري: ۹۳۲۹، وتحفة الباري: ۵۴۰/۳، وارشاد الساري: ۲۰۱/۵.

علی عليه السلام ته ټیټه او کره (۱).

② دا هم کیدې شی چې مذکوره شرط د حضرت علی عليه السلام نه هیر شوې وی، ددې وجې نه نې دا قدم اوچت کړو.

③ دا داسې څه شرط خو نه وو ځکه چې ددې وضاحت چرته نشته لیکن ددې باوجود مناسب دا وه چې حضرت علی عليه السلام ددې خبرې خیال ساتلې وې او داسې څه قدم نې پورته کړې نه وو چې هغې سره حضرت فاطمه عليها السلام او نبی عليه السلام ته تکلیف وو، ددې وجې نه حضرت علی عليه السلام ته تنبییه او کړې شوه حالانکه نبی عليه السلام به ډیر کم چاته غصه کیدو (۱) والله اعلم بالصواب د حضرت فاطمه عليها السلام خصوصیت ولې بیان کړې شو؟ لیکن دلته دا سوال پیدا کیږي چې په دې معامله کښې د حضرت فاطمه عليها السلام تخصیص ولې او کړې شو چې د هغې په موجودگي کښې حضرت علی عليه السلام د دویمې نکاح نه منع کړې شو؟

ددې جواب هم د باب په حدیث شریف کښې موجود دې، یعنی ”وَأَنَا أَتَخَوُّفُ أَنْ تَفْتَنَ فِي دِينِهَا“، ددې اجمال تفصیل دادې چې حضرت فاطمه عليها السلام د خپلې مور بی بی حضرت خدیجه الکبری او نورو درې وارو خویندو زینب، رقیه او دام کلثوم عليها السلام د وفات نه پس یواځې شوې وه، داسې څه هستی د هغې دپاره موجوده نه وه چې هغې له نې تسلی وړ کړې وې، چې هغوی ته حضرت فاطمه عليها السلام تلې وې او خپل غم نې سپک کړې وې، ځکه چې دا خبره واضحه ده چې د بن وجود هېڅ یو بنځه هم برداشت کولې نه شی، ددې وجې نه که څه داسې خبره وه او حضرت فاطمه عليها السلام د غیرت د وجې نه څه کار کړې وې چې هغه د حضرت علی عليه السلام د خفگان سبب جوړ شوې وو نو د حضرت فاطمه عليها السلام ذاتی او کورنې ژوند او دینی کارونه به هم متاثره شوې وو حالانکه د هرې بنځې دپاره د ټولو نه لوئې او اهم خیز د خپل خاوند خوشحالی وی، چونکه ددې معاملې طرفته د نبی عليه السلام نظر مبارک وو نو ددې وجې نه هغوی حضرت علی عليه السلام د دویمې نکاح نه منع کړو او هغوی هم د نبی عليه السلام د تابعداری کولو د وجې نه منع شو (۲) والله اعلم بالصواب

یو اشکال او د هغې جوابونه: دلته یو اشکال دا کیږي چې نبی عليه السلام د حضرت فاطمه عليها السلام د وجې نه حضرت علی عليه السلام د دویمې نکاح نه منع کړو چې هغه غیرت کښې راتلو سره هر څه کولې شی لیکن په خپلې حوالې سره نې ددې اصولو طرفته خیال اونه کړو او ډیر نکاحونه نې اوکړل، هغه هم په یو وخت نې ټول اوکړل، ځکه چې په یو وخت کښې د نبی عليه السلام په نکاح کښې څو څو امهات المؤمنین موجودې وې او د هغوی مینځ کښې به کله کله د خفگان

(۱) فتح الباری: ۸۶/۷، وعمدة القاری: ۲۳۱/۱۶.

(۲) فتح الباری: ۸۶/۷.

(۳) فتح الباری: ۹۳۲۹/و، ۸۶/۷.

واقعات هم پېښیدل^(۱) لیکن ددې باوجود نبی ﷺ د دغه امهات المؤمنین په باره کښې ددې خبرې لحاظ اونه ساتلو، د کومې خبرې خیال چې ئې د حضرت فاطمه علیها السلام په باره کښې اوساتلو؟ ددې اشکال دوه جوابونه دي:

① لکه څنگه چې اوس پورته تیر شو چې د حضرت فاطمه علیها السلام حالت دغه وخت دا وو چې هغه د داسې قسمه هستی نه محرومه وه چې د هغې په وړاندې خپل غم پیش کړي، مور بی بی او نورې خویندې ئې وفات شوې وې، د غم او د خفگان لرې کولو څه ذریعه نه وه، په خلاف د نورو امهات المؤمنین علیهم السلام، ځکه چې په هغوی کښې تقریباً د هرې یوې مور یا خویندې موجود وې، چې د هغوی د وجې نه یې خپل غم او خفگان لرې کولې شو.

② ددې نه علاوه د هغوی خاوند نبی کریم صلی الله علیه و آله وو، نبی صلی الله علیه و آله به چې هغوی سره څنگه د نرمی، محبت او د زړه د رابښکلو وغیره کومه معامله ساتله نو دا د بل انسان د طاقت خبره نه ده، ددې وجې نه ټول ازواج مطهرات به د هغوی نه په هر حالت کښې خوشحاله او راضی وو، دغه شان نبی صلی الله علیه و آله ته چې کوم بنسټه اخلاق، او ظاهري او باطني حسن و جمال ورکړې شوي وو، نو ددې وجې نه که څه واقع به هم پېښه شوه نو هغه به د نبی صلی الله علیه و آله په نږدیکت سره

ختمیده^(۲) په دې باندې د ټولو نه زیات واضح دلیل د سورة احزاب والا واقعه ده، چې کله د تخیر آیتونه^(۳) نازل شو او ازواج مطهرات علیهم السلام ته اختیار ورکړې شو چې یا خور رسول الله صلی الله علیه و آله اختیار کړئ یا د دنیا لذتونه اختیار کړئ نو هغوی نبی کریم صلی الله علیه و آله اختیار کړ^(۴).

او گورئ! بیبيانو ته چې کوم اختیار ورکړې شوي وو نو د هغې باوجود هم هغوی د نبی صلی الله علیه و آله نه جدا کیدل او فراق خوښ نه کړو. ښکاره خبره ده چې هغوی په هر حال کښې نبی صلی الله علیه و آله سره راضی او خوشحاله وې او د حضرت فاطمه علیها السلام په باره کښې هغوی مبارک په خپله حضرت

علی علیه السلام ته شکایت کوي. ددې وجې نه نبی صلی الله علیه و آله منع او فرمائیل. والله اعلم بالصواب
ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: علامه کرمانی رحمته الله ترجمه الباب سره ددې حدیث شریف د مناسبت واضح کولو دپاره درې مناسبتونه ذکر کړي دي:

① غالباً امام بخاری رحمته الله په ترجمه الباب کښې دا حکایت او مکالمه ددې وجې نه ذکر کوي چې نبی صلی الله علیه و آله به د هر هغه کار نه ځان ساتلو چې دهغې د وجې نه د رسته دارانو مینځ

^(۱) مثلاً په سورة تحریم کښې بیان شوي واقعه د غسل، تفصیل دپاره او گورئ کشف الباری، کتاب التفسیر: (۶۸۴)۔

^(۲) فتح الباری: (۹۳۲۹)۔

^(۳) د تخیر آیتونو نه مراد دا آیتونه دي: یا ایها النبی قل لازواجک ان کنتن تردن الحیوة الدنیا وزینتها فتعالین أمتعکن وأسرحکن سراحاً جمیلاً، وان کنتن تردن الله ورسوله والدار الآخرة فان الله أعد للمحسنات منکم اجرا عظیماً، الاحزاب: ۲۹-۲۹.

^(۴) تفصیلی واقعي دپاره او گورئ، کشف الباری، کتاب النکاح، باب موعظة الرجل ابنته.....: ۳۲۸-۳۳۸، کتاب التفسیر: (۵۱۸-۵۱۹)۔

کښې څه غم او خفگان پیدا شې دلته هم حضرت مسور عليه السلام حضرت علي بن حسين عليهما السلام ته دا وئيل غواړې چې تاسو هم ددې نه ځان اوساتئ او دا تلوار ماته راكړئ. ددې وجې نه چې ددې تلوار دوې نه ستاسو او ستاسو د نور ورشته دارانو مينځ كښې څه خفگان پيدا نه شي. (۱)

۲ يا دا مناسبت دې چې نبی عليه السلام به څنگه د عبشمي ورونړو خيال ساتلو نو دغه شان تاسو هم د خپلو نوفلي ورونړو خيال اوساتئ او دا تلوار ماته راكړئ ځكه چې حضرت مسور عليه السلام نوفلي دي،^۱ ليكن د علامه كرمانی دا آخری خبره صحيح نه ده چې دې نوفلي دي بلكه دې

زهري دي.^۲

۳ يا دا چې نبی عليه السلام به څنگه د حضرت فاطمه عليها السلام د زړه د ساتلو كوشش خيال ساتلو، ددې خبرې اهتمام به ئې كوو، دغه شان زه هم ستاسو زړه ساتل غواړم ځكه چې تاسو د حضرت فاطمه عليها السلام څوئې يئ، ددې وجې نه دا تلوار ماته راكړئ چې زه ددې حفاظت او كرم. (۳) حافظ ابن حجر رحمته الله هم د عسقلاني په حوالې سره دا درې واړه مناسبتونه ذكر كړي دي او آخری مناسبت ئې معتمد بنودلې دي، فرمائي:

”وهذا الأخير هو المعتمد، وما قبله ظاهر التكلف“ (۴)

او حافظ صاحب رحمته الله هم ترجمه الباب سره ددې حديث د مناسبت ښكاره كولو دپاره دې دريم مناسبت سره لگ يوشان كلام ذكر كړې دي، ليكي:

”أمر سيف النبي صلى الله عليه وسلم، وأراد المسور بذلك صيانة سيف النبي صلى الله عليه وسلم لئلا يأخذ من لا يعرف قدره“ (۵)

ليكن دلته مزیداره خبره هغه ده كومه چې علامه عيني رحمته الله په خپله مختصر جمله كښې وئيلې ده. -مطابقته لجزء الترجمة الذي هو قوله: وسيفه“ (۶) چې ترجمه الباب سره ددې حديث مناسبت د ترجمه الباب جزء ”وسيفه“ سره دي، په دې حديث كښې هم د سيف النبي عليه السلام ذكر دي، چې په هغې كښې وراثت جاري شوې نه وو او هم دومره قدرې تفصيل د ترجمه الباب د ثابولو دپاره كافي ده.

د حديث شريف نه مستنبط شوې فائدي: د حضرت مسور بن مخرمه عليه السلام په دې حديث شريف

(۱) شرح الكرمانی: ۸۸/۱۳ -

(۲) پورته حواله -

(۳) فتح الباری: ۲۱۴/۶ -

(۴) شرح الكرمانی: ۸۸/۱۳ - ۸۹ -

(۵) فتح الباری: ۲۱۴/۶ -

(۶) پورته حواله -

(۷) عمدة القاری: ۳۳/۱۵ -

کښې مختلف او قسم قسم فوائد او نکات دي، چې د هغې طرفته د حديث شارحينو ښودنه کړې ده، په هغې کښې بعضې دلته لاندې درج کولې شي.

① ددې حديث شريف نه يو دا خبره معلومه شوه چې څنگه نبي ﷺ ته تکليف او او اذيت رسول حرام دی، خوا دهغه تکليف لږ وي يا ډير، نو دغه شان هغه خلقو ته هم تکليف ورکول حرام دی چې کومو ته د تکليفونو رسولو په وجه نبي ﷺ ته هم تکليف وي، په دې حديث کښې نبي ﷺ يقين سره او فرمايل چې کوم څيز سره حضرت فاطمه رضيها الله عنها ته تکليف وي نو د هغې د وجې نه به ماته هم تکليف وي، ”يؤذيني ما آذاها“.

اوس او گورئ ددې حديث په رڼا کښې دا خبره معلومه شوه چې د حضرت فاطمه رضيها الله عنها په حق کښې که د يو سړي نه څه څيز صادر شوې وي او د هغې د وجې نه ورته تکليف هم وي نو د هغې د وجې نه به نبي ﷺ ته هم تکليف وي، بيا په دې ځان پوهه کړئ چې ددې نه به زيات تکليف څه وي چې د حضرت فاطمه رضيها الله عنها ځونې مبارک شهيد کړې شي، ددې نه به ښه طريقې سره اندازه کيدې شي چې په دې کار سره به حضرت فاطمه رضيها الله عنها او د هغې والد محترم نبي کریم ﷺ ته څومره تکليف رسيدلې وي؟ ددې نتيجه هم د حضرت حسين قاتلانو ته ښه ملاو شوه، په دنيا کښې خو خوار او ذليل شو ولعذاب الآخرة اشد وابقي.)

② د فقهي يو اصطلاح ده، ”سد ذريعه“ ددې خلاصه داده چې يو کار د مباح او جائز کيدو باوجود صرف ددې وجې نه منع کړې شي چې مستقبل کښې د هغې د وجې نه د ضرر او د نقصان خطر ده، دا حديث شريف د هغې خلقو دليل دی څوک چې د سد ذريعه قائل دی ددې تفصيل دادې چې څلور نکاحونه د سړي دپاره کول جائز دي، ددې نه زيات کول جائز نه دي ددې باوجود نبي کریم ﷺ حضرت علي رضي الله عنه د دويمې نکاح نه منع کړو، ځکه چې ددې د وجې نه په مستقبل کښې نقصان واقع کيده، حافظ صاحب ليکي:

”وفيه حجة لمن يقول بسد الذريعة لان تزويج ما زاد على الواحدة حلال للرجال مالم يجاوز الاربع، ومع ذلك فقد منع من ذلك في الحال، لما يترتب عليه من الضرر في المال“ (۱)

③ ددې حديث شريف نه دا فائده هم معلومه شوه چې د پلار نيکه رسوائی او ذلت د هغوی نسلونو کښې هم منتقل کيږي، يا داسې او وايي چې د وينې اثر په هر حال کښې وي، لکه نبي ﷺ د ابو جهل لور ته ”بنت عدو الله“ فرمايلې دي، ددې نه دا معلوميږي چې نبي ﷺ چې حضرت علي رضي الله عنه منع کړې وو نو په هغې کښې ددې صفت هم څه نا څه اثر وو، اگرچه په خپله دغه ښځه يو نيکه او ښه مسلمان وه ليکن د ”بنت عدو الله“ کيدل د هغې دپاره يو پيغور جوړ شو (۲)

(۱) فتح الباری: (۹۳۲۹)۔

(۲) پورته حواله، وفي الموسوعة: ومعنى سد الذريعة: جسم مادة وسائل الفساد فعالها، اذا كان الفعل السالم من المفسدة وسيلة الى مفسدة (۲۴/۲۷۹) سد الذرائع۔

(۳) پورته حواله۔

شریف مرتضی او د حضرت مسور بن مخرمه حدیث: مشهور شیعه عالم شریف مرتضی موسوی (۱) دې د نورو ډیرو کتابونو مصنف هم دې، د دوی انتقال په ۴۳۲ هجری کبې او شو. د تفصیلی حالاتو دپاره اوگوری، الاعلام للزرکلی: ۲/۴۸، ومیزان الاعتدال: ۲/۱۳۳، رقم (۵۸۲۷)، ولسان المیزان: ۵/۵۲۹، رقم (۵۳۷۵)، و تاریخ بغداد: ۱۱/۳۰۲. په خپل کتاب "غرر" کبې د حضرت مسور بن مخرمه (رضی الله عنه) دې حدیث ته موضوع وئیلې دی ځکه چې په دې کبې یو قسم د حضرت علی (رضی الله عنه) نقصان بیان شوی دې او دلیل ئې دا پیش کړې دې چې ددې حدیث راوی حضرت مسور (رضی الله عنه) دې چې حضرت علی (رضی الله عنه) سره به ئې بغض ساتلو، ددې وجې نه د خپل بغض اظهار کولو سره ئې دا حدیث او دا واقعه د خپل طرفه جوړه کړې ده. دغه شان دا روایت د حضرت عبدالله بن زبیر (رضی الله عنه) نه هم روایت شوی دې (۲) چې د حضرت علی (رضی الله عنه) په بغض کبې د حضرت مسور (رضی الله عنه) نه هم ډیر زیات سخت وو (۳) لیکن د دوی دا کلام باطل او مردود دې ځکه چې د صحاح سته اصحاب ددې حدیث شریف په تخریج باندې بالاجماع متفق دی، که دا حدیث موضوعی وو نو دې حضراتو به هیڅکله په خپلو کتابونو کبې نقل کړې نه وو حالانکه د دوی په صحت باندې د امت اتفاق دې (۴).

۲۹۴۴: (۲) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا سَفْيَانُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سُوْقَةَ عَنْ مُنْذِرِ بْنِ الْحَنْفِيَّةِ قَالَ لَوْ كَانَ عَلِيٌّ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - ذَاكِرًا عُثْمَانَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - ذِكْرَةَ يَوْمَ جَاءَهُ نَاسٌ فَشَكَّوْا سَعَاءَ عُثْمَانَ، فَقَالَ لِي عَلِيٌّ أَذْهَبُ إِلَى عُثْمَانَ فَأَخْبِرُهُ أَنَّهُمَا صَدَقَهُ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -، فَمَرُّ سَعَاتِكَ يَعْمَلُونَ فِيهَا. فَأَتَيْتُهُ بِهَا فَقَالَ أَغْنَيْهَا عَنَّا. فَأَتَيْتُ بِهَا عَلِيًّا فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ ضَعْمًا حَيْثُ أَخَذْتُمَا.

(۱) دا مشهور شیعه عالم ابوالقاسم علی بن حسین بن موسی بن محمد بن ابراهیم دې، په ۲۵۵ هجری کبې پیدا شوی وو، نسلأ حسینی دې، د شیعیت او د اعتزال دواړو قائل وو، د حضرت علی (رضی الله عنه) طرفته منسوب کتاب د نهج البلاغة جمع کوونکې هم دادې، چې حقیقت کبې د دوی خپل تالیف دې لیکن د حضرت علی (رضی الله عنه) طرفته ئې منسوب کړې دې، حافظ ذهبی لیکي: وهو المنه بوضع کتاب نهج البلاغة..... ومن طالعه جزم بانه مكذوب علی امیر المؤمنین (رضی الله عنه) ففیه: السب الصراح. والخط علی السیدین: ابی بکر و عمر، (رضی الله عنهما) وفیه التناقض والاشیاء الرکیكة والعبارات التي من له معرفة بنفس القرشیین الصحابة وبنفس غیرهم ممن بعدهم من المتأخرین جزم بان الکتاب اکثره باطل. میزان الاعتدال: ۲/۱۲۴.

(۲) انظر الجامع للترمذی، کتاب المناقب، باب ماجاء فی فضل فاطمة (رضی الله عنها)، رقم (۳۸۶۹).

(۳) غرر القلاند و درر الفوائد نومی کتاب د ډیر زیات تلاش کولو باوجود مونږ ته ملاؤ نه شو.

(۴) فتح الباری: ۷/۸۶ و عمدة القاری: ۱۶/۲۳۱.

(۵) قوله: عن ابن الحنفية: الحديث، تفرد بتخریجه البخاری (رضی الله عنه)، وهو فی هذا الباب فقط.

رجال الحديث

- ① قتيبة بن سعيد: دا مشهور محدث حضرت قتيبة بن سعيد رضي الله عنه دې د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب افشاء السلام....." کښې راغلې ده.)
- ② سفیان: دا مشهور محدث حضرت سفیان بن عيينه رضي الله عنه دې د دوی مختصر تذکره د "بده الوحي" په اولنی حدیث کښې راغلې ده.)
- ③ محمد بن سوقيه: دا ابوبکر محمد بن سوقيه غنوی کوفی رضي الله عنه دې.)
- ④ منذر: دا ابويعلى منذر بن يعلى ثوري کوفی رضي الله عنه دې.
- ⑤ ابن الحنفية: دا محمد بن علي بن ابي طالب ابن الحنفية رضي الله عنه دې د دې دواړو حضراتو تذکره کتاب العلم، "باب من استحياء فامر غيره....." لاندې تیره شوې ده.)
- ⑥ علي: د حضرت علي ابن ابي طالب رضي الله عنه تذکره په کتاب العلم، "باب كتابة العلم" کښې راغلې ده.)
- ⑦ عثمان: دا حضرت عثمان بن عفان ذوالنورين رضي الله عنه دې.)
- قال: لو كان علي رضي الله عنه ذا كرا عشان رضي الله عنه ذكره يوم جاءه ناس فشكوا ساعة عشان محمد ابن الحنفية رضي الله عنه فرمائي چې که چرته حضرت علي د حضرت عثمان رضي الله عنه تذکره نامناسب الفاظو کښې کوله نو هغه ورځ به ئې خامخا کړې وه چې په کومه ورځ ورته څه خلق راغلل او د هغوی په وړاندې ئې د حضرت عثمان رضي الله عنه له طرفه د زکوة دپاره مقرر کرده عاملينو باندې شکايت او کړو.
- د حديث پس منظور: امام ابن ابي شيبة رضي الله عنه په خپل مصنف کښې دا روايت د محمد بن د سوقيه نه يو بل طريق سره نقل کړې دې، په هغې کښې راغلې دي، منذر بن يعلى فرمائي: "كنا عند ابن الحنفية، فنال بعض القوم من عثمان، فقال: مه، فقلنا له: اكان أبوك يسب عثمان؟ فقال: ماسبه، ولوسبه يوم ألسبه يوم جئته....." (.)

١ (كشف الباري: ٢/١٨٩)۔

٢ (كشف الباري: ١/٢٣٨، تفصيلي حالاتو دپاره اوگوري، ٣/١٠٢)۔

٣ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب العيدين، باب مايكره من حمل السلاح في العيد والحرم)۔

٤ (كشف الباري: ٤/٦٣٧-٦٤٠)۔

٥ (كشف الباري: ٤/١٤٩)۔

٦ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الوضوء ثلاثا ثلاثا)۔

٧ (المصنف لابن ابي شيبة: ٢١/٣٢٦، كتاب الفتن، باب ما ذكر في عثمان..... رقم (٣٨٨٦٢))۔

چې ”مومن ر خلق محمد بن الحنفیه عليه السلام سره ناست وو چې به مجلس کښې جا د حضرت عثمان رضي الله عنه خلاف څه نامناسب خبره او کړه، په دې باندې هغوی او فرمائیل چې خاموش شه، نومون ر او و نیل چې آیا ستاسو والد حضرت علی به حضرت عثمان رضي الله عنه ته بدر و نیل؟ محمد ابن الحنفیه او و نیل چې زما والد صاحب ورته کله هم بدر ردن ه دی و نیل ی، که هغوی جرته بدر و نیل ی نو به هغه ورځ به دی و نیل ی وو چې کله زه ور غلم.....

ددې روایت نه هم معلومه شوه چې د باب په حدیث شریف کښې د ذکر نه مراد ذکر بالسو، دې، لکه د حدیث شریف په بعضې طرقو کښې ددې ذکر موجود دې، یعنی ”ذاکرا عثمان بسو.....“ (۱)

بیا په دې ځان پوهه کړئ چې په حدیث کښې ناس او سعاة مطلق دې، دې سره دا تعیین نه کیږي چې شکایت کوونکی خلق څوک وو، نه دا خبره متعین کیدې شی چې د کوم عامل شکایت کړې شوې وو، ددې وجې نه حافظ صاحب لیکي:

”ثم أقف على تعيين الشاكى، ولا البشكو“ (۲)

او سعاة د ساع جمع ده، د زکوة عامل ته وئیلې شی، کوم چې د مالدارانو نه زکوة وصولی او د وخت امام ته ئې حواله کوی (۳)

قوله: فقال لى على: اذهب الى عثمان، فاخبره أنها صدقة رسول الله صلى الله عليه وسلم
فمر سعاتك يعملون فيها: نو حضرت علی عليه السلام ما ته او و نیل چې حضرت عثمان رضي الله عنه ته لار شه، ورته دا او وایه چې دا د نبی کریم صلى الله عليه وسلم د صدقاتو کتاب دې، لهذا تاسو خپلو عاملینو ته دا اولیرئ او ورته او وایئ چې په دې باندې عمل او کړئ.
 حضرت علی عليه السلام چې حضرت عثمان رضي الله عنه ته کوم څیز لیرلې وو دا غالباً څه کتاب یا صحیفه وه لکه د باب په راروان روایت کښې، خذ هذا الكتاب“ الفاظ هم دی، دغه شان دا هم دی ”فان فيه امر النبي صلى الله عليه وسلم في الصدقة“ او د ابن ابی شیبه (۴) روایت الفاظ دادی: ”خذ كتاب السعاة، فاذهب به الى عثمان“ (۵)

قوله: فأتيته بها، فقال: أعنها عنا: نو هغه صحیفه ما واخستله او د هغوی په خدمت

(۱) فتح الباری: ۲۱۴/۶، دغه شان او گوری، عمدة القاری: ۳۴/۱۵، وابن بطال: ۲۶۷/۵، والقسطلانی: ۲۰۱/۵، وکشف المشکل من حدیث الصحیحین: ۱۴۰/۱، مسند ابی الحسن، ومسند الامام احمد: ۳۹۵/۱، رقم (۱۱۹۶) مسند علی.....

(۲) فتح الباری: ۲۱۵/۶.

(۳) پورته حواله، وعمدة القاری: ۳۴/۱۵.

(۴) المصنف لابن ابی شیبه: ۳۲۶/۲۱، کتاب الفتن، باب ما ذکر فی عثمان.....، رقم (۳۸۸۶۲).

(۵) فتح الباری: ۲۱۵/۶، وعمدة القاری: ۳۴/۱۵، واعلام الحدیث للخطابی: ۱۴۴۳/۲.

کښې حاضر شوم نو هغوی او فرماښل چې دا زمانه لري ماته.
د اغنھا لغوی او صرفي تحقيق دا د باب افعال نه د امر حاضر معروف صيغه ده. ضمير د
مفعول دي. د اغني من کذا معنی ده اړول. مگر څول اغني وجهک غني، ای: مرفه ددي په شان د الله
تعالی دا قول دي لکل امرئ منهم يومئذ شان يغنيه^(۱) ای: یصده ويصمفه من غیره^(۲)
ددې کلمې په ضبط کښې دویم قول دادې چې د مجرد نه د باب سمع نه د امر حاضر معروف
صيغه ده. ددي معنی ده پريخودل، اعراض کول او بې پرواه کيدل ابن الانباري نحوي^(۳)
فرمائی چې ددي نه مشتق د الله تعالی دا قول دي: "وتولوا واستغنى الله" المعنى تركهم، ځکه چې
کله یو سړي د یو څيز نه استغنا ښکاره کوی نو هغه پريږدي.
قال الخطابي رحمه الله: "وقوله: "اغنها عنا". كلمة معناها: الترك والاعراض.

قال ابن الانباري: "ومن هذا قوله سبحانه: "فكفروا وتولوا واستغنى الله"^(۴) المعنى تركهم، لان كل من
استغنى عن شيء تركه^(۵).

حضرت عثمان رضي الله عنه ددي صحيفي نه ولې اعراض او کړو؟
دلته سوال دا پيدا کيږي چې حضرت عثمان رضي الله عنه حضرت محمد بن الحنفية رضي الله عنه ته دا ولې
او فرماښل: "اغنها عنا" او ددي صحيفي يا ددي کتاب نه ئې ولې اعراض او کړو؟ حالانکه
پورته دا خبره ذکر شوه چې صحيفه د نبی عليه السلام مرتب کړې شوې وه؟

علامه داؤدي او ابن بطلال رحمهما الله ددي اشکال په جواب کښې فرمائی چې حضرت عثمان
رضي الله عنه دا خبره ددي وجې نه او کړه چې هغوی سره ددي مثال موجود وو. هغوی ددي نه بې خبره
او ناواقف نه وو بلکه ددي د ليکلې شوې خبرو نه ښه طريقې سره خبردار وو. دې سره سره
ئې په خپلو عاملينو باندې په دې باندې عمل هم کوو. ددي وجې نه د حضرت عثمان
رضي الله عنه ددي صحيفي رد کول مقصد نه وو البته هغوی دا وئيل غوښتل چې ماته ددي ضرورت
نشته او دا خبره څه د عقل نه لري هم نه ده. دویم مطلب چې کوم مراد اخستلې کيږي د هغې
مقصد د حضرت عثمان رضي الله عنه نه توقع هم نه شی کيدې چې هغوی دا د سپک والی د وجې نه
رد کړي وی.

"وأما رد الصحيفة وقوله: "اغنها عنا" فذلك لانه كان عنده نظير منها، ولم يجعلها، لانه ردها وليس عنده
علم منها، ولانه قد كان أمرها ساعاته، فلا يجوز على عثمان غير هذا"^(۶).

^(۱) (عبس: ۳۷)۔

^(۲) (فتح الباری: ۲۱۵/۶، وعمدة القاری: ۳۴/۱۵)۔

^(۳) (التغابن: ۶)۔

^(۴) (اعلام الحديث: ۱۴۴۳/۲ - ۱۴۴۴، وعمدة القاری: ۳۴/۱۵، وفتح الباری: ۲۱۵/۶)۔

^(۵) (شرح ابن بطلال: ۲۶۷/۵، وعمدة القاری: ۳۴/۱۵، وشرح القسطلانی: ۲۰۱/۵)۔

هم دا خبره د ابن عیینہ رحمہ اللہ نه هم بعضی شاگردانو نقل کړې ده (۱)
وقال الکنکوهی رحمہ اللہ: "قوله: "اغنها عنا"، لانا انما نعمل بها، لا غیر". وقال الکاندھلوی رحمہ اللہ: "یعنی عملنا موافق لهذه الصحیفة، فلا حاجة لنا اليها". لامع الدراری وتعلیقاته: ۴/۳۹۱_ حافظ ابن حجر رحمہ اللہ دلته نور احتمالات هم ذکر کړې دي.

① کیدې شې چې حضرت عثمان رضی اللہ عنہ دا مذکورہ صحیفه ددې وجې نه رد کړې وی چې د هغوی په عاملینو باندې کوم الزام لگیدلې وو نو دا د هغوی په نزد هلو ثابت شوې نه وو.
② الزام خو ثابت شوې وو لیکن تدبیر ددې خبرې تقاضه کوله چې څه تاخیر سره کارروائی او کړې شی.

③ حضرت علی رضی اللہ عنہ چې کوم اعتراض کړې وو نو ممکنه ده چې د هغې تعلق مستحباتو سره وو او واجباتو سره نه وو، غالباً هم دا وجه وه چې حضرت علی رضی اللہ عنہ د حضرت عثمان رضی اللہ عنہ عذر قبول کړو او د هغوی په شان کښې ئې څه نامناسب خبره او نه کړه (۲).
د حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمہ اللہ رائي: دا خو ددې حضراتو رائي شوه یعنې د ابن عیینہ، ابن بطلال، داؤدی، عینی، ابن حجر عسقلانی، قسطلانی او د گنگوهی رحمہم اللہ وغیره لیکن شیخ الحدیث صاحب د دوی د رائي نه جدا یوه بله خبره ارشاد فرمائیلي ده هغه دا چې حضرت عثمان رضی اللہ عنہ به د صدقاتو په سلسله کښې د حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ په کتاب باندې عمل کوو ددې وجې نه هغوی د حضرت علی رضی اللہ عنہ صحیفې متعلق دا او فرمائیل چې مونږ ته ددې ضرورت نشته. ددې اجمال تفصیل دادې چې د صدقاتو په سلسله کښې د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نه درې قسمه صحیفې منقول دي:

۱. صحیفه د ابوبکر، ۲. صحیفه د عمر او ۳. صحیفه د آل عمرو بن حزم رضی اللہ عنہم (۳).
علامه زرقانی رحمہ اللہ په شرح المواهب کښې فرمائی چې نبی صلی اللہ علیہ وسلم د مختلفو احکاماتو متعلق څه صحیفې تیارې کړې وې. په هغې کښې یو کتاب الصدقات وو کوم چې د حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ سره وو، دوی چې کله حضرت انس رضی اللہ عنہ بحرین والی جوړ کړو او هلته ئې واستولو نو د هغې یوه نسخه یئ هم ورکړه (۴). په هغې کښې دویمه صحیفه حضرت عمر رضی اللہ عنہ

(۱) الجمع بین الصحیحین للحمیدی: ۱/۱۶۶، رقم (۱۳۹)، افراد البخاری..... عن علی رضی اللہ عنہ، وتاریخ مدینه دمشق: ۲۶۶/۳۹، ذکر من اسمه عثمان، وفتح الباری: ۶/۲۱۵)۔

(۲) فتح الباری: ۶/۲۱۵)۔

(۳) قال ابن العربی فی کتابه المسالك شرح مؤطا مالک: "ثبت عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم فی الماشیة ثلاث کتب: کتاب ابی بکر، وکتاب آل عمرو بن حزم، وکتاب عمر بن الخطاب، وعلیه عول مالک ... " انظر الاوجز: ۵/۶۵۲، وتعلیقات لامع الدراری: ۷/۲۹۸)۔

(۴) الحدیث اخرجه البخاری فی صحیحه، کتاب الزکاة، باب العرض فی الزکاة، رقم (۱۴۴۸)، وباب لا یجمع بین متفرق.... رقم (۱۴۵۰) وباب ما کان من خلیطین..... رقم (۱۴۵۱) وباب من بلغت... [بقیه بر صفحه آنده...]

سره وه (بیاد ساتی دا هغه صحیفه نه ده کومه چې حضرت ابوبکر حضرت انس رضی الله عنهما ته ورکړه، ددې دواړو کتابونو د الفاظو په خپل مینځ کښې کوم مغایرت او فرق دې نو د هغې نه هم دا معلومېږي چې دا دواړه یو صحیفه نه وه بلکه جدا جدا صحیفې دي هر چه د حضرت ابن عمر رضی الله عنهما روایت دې چې "نبی صلی الله علیه وسلم کتاب الصدقه تیار کړو لیکن د حکومت عاملینو ته ئې هغه صحیفه اونه بنودله او هغه ئې خپلې تورې سره او ترله، تردې چې وفات شو، د دوی مبارک نه پس حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه د خلافت د مودې پورې په دې باندې عمل جاری او ساتلو، د هغوی نه پس حضرت عمر رضی الله عنه په خپل ژوند کښې په دې باندې عمل کوو" (نو ددې روایت نه ددې دواړو صحیفو صدیقی او عمری یو کیدل لازم نه راځي چې دا دواړه یو قسم صحیفې وې؟)

لیکن شیخ الحدیث کاندهلوی رحمته الله علیه د زرقانی د کلام آخری حصه رد کوی او فرمائی چې د صحیفې د ابوبکر او د عمر د دواړو صحیفو بعضې ځایونو کښې موجود اختلاف ددې خبرې نه مانع نه دې چې په دې باندې عمل ممکن نه وي. شاید حضرت عثمان رضی الله عنه د هغې مطابق عمل ددې وجې نه کوو چې د شیخینو عمل هم په دې باندې وو او دا د هغوی مشهور عادت دې چې هغوی به د شیخینو عمل ته ترجیح ورکوله او د هغوی په رائې باندې به ئې چلیدل خو بنول؟)

قوله: فاتیت بها علیاً، فاخبرته، فقال: ضعها حیث أخذتها: نو ما هغه حضرت علی رضی الله عنه ته واپس راوړله او تفصیل مې ورته بیان کړو نو هغوی او فرمائیل چې دا صحیفه دې د کوم ځای نه اخستلې وه نو هم هلته ئې کیده.
د حدیث نه مستنبط یو فائده: امام ابن عیینة رحمته الله علیه فرمائی چې ددې حدیث نه دا فائده حاصله شوه چې امیرانو او والیانو ته نصیحت کول پکار دی، د هغوی لاندې کسانو کښې

...بقیه از حاشیه گذشته] عنده صدقه..... رقم (۱۴۵۳)، وباب زکاة الغنم، رقم (۱۴۵۴)، وباب لا تؤخذ فی الصدقة هرة..... رقم (۱۴۵۵)، و کتاب الشركة، باب ما کان من خلیطین..... رقم (۲۴۸۷)، و کتاب فرض الخمس، باب ما ذکر من درع النبی صلی الله علیه وسلم..... رقم (۳۱۰۶)، و کتاب اللباس، باب هل يجعل نقش الخاتم.....؟ رقم (۵۸۷۸)، و کتاب الحیل، باب فی الزکاة..... رقم (۶۹۵۵)، و ابو داود فی سننه، کتاب الزکاة، باب فی زکاة باب اذا اخذ المصدق سنا دون سن، رقم (۱۸۰۰)۔

(۱) والحديث عند مالک فی الزکاة، کتاب الزکاة، باب صدقة الماشية، رقم (۲۳/۶۵۹)، و ابی داود فی سننه، کتاب الزکاة، باب زکاة السائمة، رقم (۱۵۷۰)، و الترمذی فی جامعه، کتاب الزکاة، باب ماجاء فی زکاة الابل والغنم، رقم (۶۲۱)۔

(۲) اخرجه الترمذی، کتاب الزکاة، باب فی زکاة الابل والغنم، رقم (۶۲۱)، و ابو داود، کتاب الزکاة، باب زکاة السائمة، رقم (۱۵۶۸-۱۵۶۹)، و ابن ماجه، کتاب الزکاة، باب صدقة الابل، رقم (۱۷۹۸)۔

(۳) شرح المواهب تعليقات لامع الدراري: ۲۹۸/۷۔

(۴) تعليقات لامع الدراري: ۲۹۸/۷۔

که څه قسم فساد وی نو د هغوی په وړاندې ددې وضاحت کول پکار دی او د وخت امام ته هم د دوی په حقله د شکایاتو تحقیق او تفتیش کول پکار دی.)

قَالَ الْحَمِيدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَوْقَةَ قَالَ سَمِعْتُ مُنْذِرًا الثَّوْرِيَّ عَنِ ابْنِ الْحَنْفِيَّةِ قَالَ أُرْسِلَنِي أَبِي، خُذْ هَذَا الْكِتَابَ فَادْهَبْ بِهِ إِلَى عُثْمَانَ، فَإِنَّ فِيهِ أَمْرَ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فِي الصَّدَقَةِ.

د مذکوره تعلیق مقصد: امام حمیدي د امام بخاري رحمته الله شيخ دي، امام بخاري په فقه او حديث دواړو کښې د دوی شاگردی کړې ده، د قتيبه بن سعد د روايت ذکر کولو نه پس دوی تعلیقاً د امام حمیدي روايت هم نقل کړې دي. ددې وجه او مقصد دا دی چې د حمیدي په روايت کښې د قتيبه د روايت په نسبت د سفیان بن عیینه د حديث وضاحت کوی. دغه شان په دې کښې محمد بن سوجه هم د منذر بن یعلی نه د سماع وضاحت کوي.)

د مذکوره تعلیق تخریج: د امام حمیدي دا تعلیق د دوی په تالیف "کتاب النوادر" کښې هم دي سند سره موصولاً موجود دي.)

د مذکوره صحیفې مضمون څه وو؟ د باب حديث شريف امام بخاري رحمته الله دوو طرقو سره موصولاً او تعلیقاً نقل کړې دي لیکن په دې کښې د مذکوره صحیفې مضمون ذکر نه دي چې په دې کښې څه لیکلې شوي وو؟ حافظ ابن حجر رحمته الله فرمائي چې ماته ددې حديث په هيڅ يو طريق کښې دا خبره معلومه نه شوه چې په دې صحیفه کښې څه مضمون لیکلې شوي وو؟ البته امام خطابی رحمته الله په "غريب الحديث" کښې د عطيه عن ابن عمر رضي الله عنهما طريق نه يو حديث نقل کړې دي چې:

"بعث علي إلى عثمان بصحيفة، فيها: لا تأخذوا الصدقة من الرخعة، ولا من النخعة" (١)

يعني: "حضرت علي حضرت عثمان رضي الله عنهما ته يوه صحيفه واستوله چې د هغې مضمون دا وو چې په زکوة کښې د چيلی بچي او د اوبښ بچي مه اخلئ". ددې حديث سند اگر چه ضعيف دي لیکن ددې مضمون احتمال کيدې شي (٢) والله اعلم بالصواب

(١) فتح الباری: ٢١٥/٦.

(٢) د امام حمیدي رحمته الله حالات په کشف الباری، بدء الوحی (٢٣٧/١) کښې تیر شوي دي او د نورو حضراتو راویانو د ترجمو نشاندې په تیر شوي سند کښې کړې شوي ده).

(٣) فتح الباری: ٢١٥/٦، وارشاد الساری: ٢٠١/٥.

(٤) فتح الباری: ٢١٥/٦، وتغليق التعليق: ٤٦٩/٣.

(٥) غريب الحديث: ١٧٦/٢ - ١٧٧، حديث ابن عمر رضي الله عنهما، وتلخيص الحبير: ١٥٦/٢، رقم (٨٢٠)، كتاب الزكاة، باب زكاة النعم، الشرط الثالث: الحول، ولسان العرب: ٢١/٣، مادة زخغ، وفيه عثمان بن حنيف غير عثمان بن عفان).

(٦) فتح الباری: ٢١٥/٦. د اهرم کيدې شي چې حضرت علي رضي الله عنه کومه صحيفه ليرېلې وه [بقیه بر صفحه آنده

ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: ترجمة الباب سره ددي حديث د دواړو طرقو په دي جمله کښې مطابقت موجود دي "فاخبره انها صدقة رسول الله صلى الله عليه وسلم" داسې چې دلته د صدقة رسول الله نه مراد هغه صحيفه ده په کومه کښې چې د صدقاتو احکامات وو، امام بخاري رحمه الله په ترجمه الباب کښې يو جمله "وما استعمل الخلفاء بعده" هم ذکر کړې ده، دي جملې سره به ددي حديث مناسبت وي چې دا صحيفه وروستنی خليفه گانو په خپل استعمال کښې اوساتله او د هغې په احکاماتو ئې عمل کوو علامه عيني رحمه الله فرمائي:

"مطابقته للترجمة يمكن ان تؤخذ من قوله: "فاخبره انها صدقة رسول الله ﷺ، و اراد به الصحيفة التي كانت فيها احكام الصدقات ويكون هذا مطابقاً لقوله في الترجمة: وما استعمل الخلفاء بعده" (١)

ترجمة الباب سره متعلق يو بحث: امام بخاري رحمه الله چې کومه ترجمه ذکر کړه نو دا په نهه جزونو باندې مشتمله ده، يعنې درع، همسا، توره، پيالي، گوتمه، وما استعمل الخلفاء بعده من ذلك، شعر، نعل او آية. او په ترجمه کښې چې کوم احاديث ذکر کړې شوي دي نو د هغې تعداد شپږ دي. په اولنۍ کښې د گوتمې، په دويم کښې د نعل، په دريم کښې د کساء، ملبه، په څلورم کښې د پيالي، په پنځم کښې د توري او په شپږم کښې د صحيفې ذکر دي. د پورته ذکر شوو شپږو احاديثو مناسبت ترجمه الباب سره څنگه دي نو ددي وضاحت مونږ وړاندې کړې دي. ليکن د څلورو څيزونو يعنې ذغره، همسا، ويختو او د لوبنو مطابقت به ترجمه الباب سره څنگه وي، دا مذکور نه دی نه دي سره متعلق څه حديث مصنف رحمه الله ذکر کړې دي. ددي دوه جوابونه دي:

① دي څيزونو سره متعلق حديثونه خو د هغوی په نظر کښې وو ليکن اتفاقاً هغوی په باب کښې ذکر نه کړي شو.

② د مصنف رحمه الله يو عادت دا هم دي چې هغوی بعضې وخت په ترجمه کښې يو څيز ذکر کړي ليکن هغې سره متعلق څه حديث ذکر نه کړي، بلکه يو بل مقام کښې ورته اشاره او کړي چې د اهل علم نه پته نه وي نو دلته هم دا معامله ده. اوس تفصيل ته او گوري.

① ذغري سره متعلق حديث حضرت مصنف رحمه الله په بيوع وغيره کښې ذکر کړې دي، حضرت عائشه صديقه رضي الله عنها فرمائي: "توفي رسول الله صلى الله عليه وسلم ودرعه مرهونة عند يهودي" (٢) چې "د نبي ﷺ وفات په وخت د هغوی يو ذغره يو يهودي سره د گانې (رهن) په طور کيخودلې شوې وه"

...بقية از حاشيه گذشته [د هغې مضمون د صديق او د عمر رضي الله عنهما د صحيفې په شان وو، چې هغوی سره د مخکښې نه موجود وو. کما مر عن شيخ الحديث رحمه الله (انفا) -

(عمدة القاري: ١٥/٣٤)

(انظر صحيح البخاري، كتاب الجهاد والسير، ما قيل في درع النبي..... رقم (٢٩١٦))

② همسا سره متعلق حدیث مصنف ﷺ په کتاب الحج کښې د ابن عباس رضی الله عنهما په روایت سره نقل کړې دې "طاف النبی ﷺ فی حجة الوداع علی بعضی یرکین، یستلم الرکن بمحجن" (د دغه شان وړاندې په کتاب التفسیر کښې ئې هم یو حدیث د حضرت علی رضی الله عنه په روایت سره ذکر کړې دې) چې په هغې کښې یو د مختصره (یعنی لختې، چوکې، ذکر راغلي دي) ويختو سره متعلق حدیث هغه دې کوم چې په کتاب الطهارة کښې تیر شو. ابن سیرین رضی الله عنه فرمائی "عندنا من شعر النبی صلی الله علیه وسلم، أصبنا له من قبل أنس رضی الله عنه" ③ هرچه لوبښی وو نو حافظ ﷺ فرمائی چې د پیالې نه پس ددې ذکر کول د عطف العام علی الخاص د قبیل نه دي او په باب کښې هغوی صرف د پیالې ذکر کړې دي او دا کافی دي. ځکه چې دې سره په نورو لوبښو باندې هم دلالت کیږي ځو الله اعلم بالصواب

⑥ بَابُ الدَّلِيلِ عَلَى أَنَّ الْخُمْسَ لِنَوَائِبِ

رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَالْمَسَاكِينِ.

وَإِثَارِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَهْلِ الصُّفَّةِ وَالْأَرَامِلِ حِينَ سَأَلَتْهُ فَاطِمَةُ وَشَكَّتْ إِلَيْهِ الظُّعْنَ وَالرَّحَى أَنْ يُخْدِمَهُمَا مِنَ السَّبْيِ، فَوَكَّلَهَا إِلَى اللَّهِ.

د ترجمه الباب نحوی تحلیل او مفهوم: علامه عینی رضی الله عنه خو دا وئيلي دي "هذا باب في بيان الدليل....." ددې مقصد دادې چې دلته مبتدا محذوف ده چې هغه هذا اسم اشاره ده. بيا د المساكين او د ايثار النبي عطف په نوائب باندې دي او اهل الصفة او الارامل د ايثار مصدر د مفعول به كيدو د وجې نه په حالت د نصب كښې دي، ددې نه علاوه حين... ظرف دي د ايثار مصدر دپاره او جمله د "ان يخدمها" د مصدر په تاويل سره دويم مفعول دي د

① صحيح البخاري، كتاب الحج، باب استلام الركن بالمحجن، رقم (١٦٠٧) _

② صحيح البخاري، كتاب التفسير، باب قوله: (وكذب بالحسن)، رقم (٤٩٤٨) _

③ قال العيني في العمدة (٣١/١٥): واما اعصاه فقد ذكروا انه كانت له مخصرة، تسمى العرجون، وهي كالقضب، يستعملها الاشراف للتشاغل بها في ايديهم، ويحكون بها ما بعد من البلدان عن اليد، وكان له قضيب من شوحط يسمى المشوق، وكان له عسيب من جريد النخل _

④ صحيح البخاري، كتاب الطهارة، باب الماء الذي يغسل به شعر الانسان، رقم (١٧٠) _

⑤ فتح الباري: ٢١٣/٦. وقال العيني في العمدة (٣١/١٥):

واما آنيته فكثيرة، ذكرها اصحاب السير، منها: قدر من حجارة، يدعى المخضب، يتوضا فيه، ومخضب آخر من شبه، يكون فيه الحناء والكتم، يضع على راسه اذا وجد فيه حرا، وكان له مغسل من صفر، وكانت له ركوة، تسمى الصادرة، وكان له طست من نحاس، وقدح من زجاج، وكانت له جفنة عظيمة يطعم فيها الناس، يحملها اربعة رجال، تسمى الغداء..... وكذا انظر مجمع الزوائد: ٢٧٢/٥، كتاب الجهاد، باب آلات الحرب..... _

سئله فعل دپاره (خلاصه دا شوه چې هذا محذوف مبتدا ده او باقی عبارت خبر دې..

او علامه سندهی رحمته الله علیه فرمائی چې الدلیل..... مبتدا ده او حین سئله دا جمله خبر دې، ددې دپاره به تقدیری عبارت راویستلې شی، یعنی ما فعله (باقی تفصیل د ما قبل په شان دې، ددې مطابق به عبارت داسې شی، الدلیل علی..... ما فعله حین سئله فاطمة.....“ او د ترجمه الباب د عبارت مفهوم به دا وی:

د خمس مصرف د نبی صلی الله علیه و آله نواب او مسکینان وغیره دی، ددې دلیل د نبی صلی الله علیه و آله فعل دې چې کله حضرت فاطمه رضی الله عنها د کور د کار دپاره د خادم مطالبه او کړه نو نبی صلی الله علیه و آله هغې باندې اصحاب صفة ته ترجیح ورکړه او د هغې معامله نې الله تعالی ته او سپارله. د ترجمه الباب لغوی تحقیق: په ترجمه الباب کښې د مذکوره بعضې الفاظو وضاحت لاندې ذکر کولې شی:

① نواب: دا د نائبة جمع ده، ”وهی ما کانت تنوبه“ یعنی مختلف کارونه او حادثات کوم چې به نبی صلی الله علیه و آله ته پېښیدل..

② الارامل: دا د ارمال جمع ده، هغې سړی ته وائی چې د هغه ښځه نه وی او ارملة هغې ښځې ته وئیلې شی چې د هغې خاوند نه وی، دلته د ارمال نه دواړه مراد دی، هرکله چې فقیران وی ()

د ترجمه الباب مقصد: په دې باب کښې امام بخاری رحمته الله علیه د خمس مصرف ښودلې دې او په دې سلسله کښې ئې د امام مالک رحمته الله علیه مذهب اختیار کړې دې کوم چې ددې خبرې قائل دې چې په خمس کښې د وخت حاکم او امام ته اختیار دې چې خمس په خپله مرضی باندې چرته او څومره چې غواړی نو خرچ کولې شی. د مسئلې تفصیل وړاندې راځی.

خمس به کومو خلقو ته ورکولې شی؟ د علماء اسلام په دې خبره کښې څه اختلاف نشته چې غنیمت به پنځه حصې کولې شی، چې په هغې کښې به څلور حصې د مجاهدینو وی یعنی کوم خلق چې په غزوه کښې شریک وو، یو حصه چې هغې ته خمس وئیلې شی په دې کښې اختلاف دې چې ددې مستحق به کوم خلق وی او دا به کوم ځانې کښې خرچ کولې شی. د مذهبونو تفصیل لاندې ذکر کولې شی:

① احناف دا وائی چې خمس به درې حصې کولې شی، یوه حصه به د یتیمانانو وی، یوه حصه به د مسکینانو او یوه حصه به د مسافرو وی. البته په مسافرو کښې رشته دار هم داخل دی او په دې معامله کښې به دوی ته ترجیح ورکولې شی او په رشته دارو کښې چې کوم مالداران وی نو د هغوی به په دې کښې څه حصه نه وی. د وخت امام او حاکم به په دې

(١) عمدة القاری: ۳۵/۱۵.

(٢) حاشیة السندی علی البخاری: ۴۳۹/۱، وتعلیقات اللامع: ۲۹۸/۷-۲۹۹.

(٣) عمدة القاری: ۳۵/۱۵، وشرح القسطلانی: ۲۰۲/۵.

تقسیم کنبې خودمختار وی چې چاته ورکوی او چاته نه ورکوی.
په ذوی القربې کنبې د قرابت نه مراد قرابت د رسول ﷺ دې، یعنی د نبی کریم ﷺ رسته دارو غیره دا د خلفاء راشدینو مذهب هم دې.)

② شوافع او حنابلة دا وائی چې خمس به پنځه حصې کړې شی او په دې خلقو باندې به تقسیم کړې شی، یتیمان، مسکینان، مسافر، رسته دار او نبی ﷺ اوس چونکه نبی ﷺ وفات شوې دې نودهغوی دا حصه به د مسلمانانو په کارونو او د اسلحي وغیره په اخستلو باندې خرچ کولې شی. بیا ددې حضراتو په نزد په رسته دارو کنبې د فقیرانو څه تخصیص نشته، په رسته دارو کنبې به مالداران هم ددې حصې مستحق وی.) ابن قدامه فرمائی چې هم دا مذهب د عطاء، مجاهد، شعبي، نخعی، قتاده او د ابن جریج ﷺ وغیره هم دې.)

③ د مالکیه په نزد د خمس، جزیه، فنی، عشر او د خراج وغیره ددې ټولو محل بیت المال دې، د وخت امام به د خپلې رائې مطابق دا د مسلمانانو په مصلحتونو باندې خرچ کوی لیکن په دې کنبې به بنو هاشم یعنی د نبی ﷺ خاندان ته ترجیح ورکولې شی او دوی ته به ددې نه ډیر مقدار کنبې ورکړه کولې شی ځکه چې دوی د زکوٰۃ مال نه شی اخستلې، بیا به دا مال د عامو مسلمانانو په خیر بنیگره کنبې خرچ کولې شی لکه جماتونه، پلونه او جنگونه وغیره.)
ابن همام ﷺ فرمائی: "فعند مالك الامر مفوض الى رائى الامام، ان شاء قسم بينهم، وان شاء اعطى بعضهم دون بعض، وان شاء اعطى غيرهم، ان كان امر غيرهم اهم من امرهم" (٥)

دا خو د ائمه اربعه د مذهبونو بیان وو، په دې مسئله کنبې نور مذهبونه هم شته چې د هغې تعداد د حافظ ابن حجر ﷺ د قول مطابق اووه (٦) دې او د حضرت شیخ الحدیث صاحب ﷺ

(١) احکام القرآن للرازی: ٨٢/٣، واعلاء السنن: ٢١٠/١٢، والاوز: ٩٢٨٢/٢، والدر المختار: ٢٥٨/٣، والهدایه: ٢٤٠/٤، وفتح القدير لابن الهمام: ٢٤٣/٥، وروح المعانی: ٢٨٠/١٠-٢٨٣، سورة الانفال په دې مسئله کنبې امام نسائی ﷺ هم د احنافو ملگرې دې، هغوی په خپل سنن کنبې د مختلفو روایتونو د نقل کولو نه پس دا کلمات ارشاد فرمائیلې دی:
وسهم لذی القربى. وهم بنو هاشم، و بنو المطلب، بينهم الغنى منهم والفقير، وقد قيل: انه للفقير منهم دون الغنى، کلیتای و ابن السبیل، وهو شبه القولین بالصواب عندی، والله اعلم"
راجع السنن الصغرى: اول کتاب قسم الفی، تحت رقم (٤١٥٢)، والسنن الکبرى: ٤٨/٣، کتاب الخمس، تفریق الخمس..... قبل رقم (٤٤٥٠)۔

(٢) المغنی لابن قدامة: ٣١٤/٦، و کتاب الام: ١٤٧/٤/٢، قسم الفی، سنن تفریق القسم، رقم (١٢٧٩٣)۔
(٣) المغنی: ٣١٤/٦، کتاب الزکاة، باب قسمة الفی والغنیمة والصدقة، رقم (٥٠٧٩)، الفصل الرابع۔
(٤) الشرح الكبير مع حاشية الدسوقي: ٥٠١/٢-٥٠٢، والاوز: ٩٢٨٥/٢، والمغنی: ٣١٥/٦۔
(٥) فتح القدير: ٢٤٣/٥۔
(٦) فتح الباری: ٢٣٨/٦۔

مطابق یوولس (۱۵) وړاندې به هغې کښې بعضو طرفته اشاره هم کړې.

د مذهبونو ماخذ په دې مسئله کښې آثمه کرام دا آیت کریمه (واعلموا انما غنتم من شی فان الله خمسہ وللرسول ولذی القربى والیتامی والمساکین وابن السبیل) د ماخذ په طور منی، هم دا آیت کریمه د مذهبونو د اختلاف اصل هم دې، ددې آیت کریمه په تفسیر کښې د ملت د مفسرینو او د فقهاء کرامو اختلاف دې چې د هغې تفصیل لاندې ذکر کولې شی.

په آیت کریمه کښې د لفظ "الله" معنی: اولنې اختلافی مسئله داده چې دلته په آیت کریمه کښې د لفظ "الله" څه مطلب دې؟ الله تعالی ته به د حصې ورکولو څه صورت وی؟ په دې سلسله کښې اولنې قول د حضرت ابو العالیه رضی الله عنه دې، هغه فرمائی چې خمس به شپږ حصې کړې شی ځکه چې په آیت کریمه کښې د خمس مصارف شپږ بیان کړې شوي دي، یعنی الله تعالی، رسول الله صلی الله علیه وسلم، رسته دار، یتیمان، مسکینان او مسافر. او الله تعالی ته به سهم (د حصې) ورکولو صورت دا وی چې دهغې شپږمه حصه به دبیت الله (کعبه مبارکه) دپاره استعمالیږي.

د بیضاوی د قول مطابق: دوی د آیت د ظاهر نه استدلال کړې دې. دغه شان ابو العالیه رضی الله عنه فرمائی چې د نبی صلی الله علیه وسلم په وړاندې به د غنیمت مال پیش کړې شو نو هغوی به پرې لاس رانیکلو، څه چې به لاس کښې راغلل نو هغه به ئې د کعبې مبارکې دپاره خاص کړل، بیا به ئې باقی مال غنیمت په پنځو مصارفو کښې تقسیم کړو.

او د اکثر و حضراتو رأي داده چې په آیت کریمه کښې لفظ د الله د کلام د افتتاح او د تبرک او تعظیم دپاره راغلې دې. امام رازی رحمته الله علیه د ابو العالیه قول رد کولو سره فرمائی چې ددې هیڅ معنی نشته ځکه چې که دا خبره ثابته وه نو څلور واړه خلیفه گان د نورو خلقو په مقابله کښې ددې زیات حقدار وو چې هغوی په دې باندې عمل کړې وو حالانکه دا خبره ثابته نه ده نو د ابو العالیه قول هم ثابت نه دې. دغه شان ددې هیڅ مطلب نشته چې حصه د بیت الله شریف الله تعالی سره خاص او وئیلې شی ځکه چې نور مذکوره حصه جات هم د الله تعالی د قرب حاصلولو دپاره خرچ کولې شی، معلومه دا شوه چې په آیت کریمه کښې (فان الله خمسہ) دا حصه د بیت الله شریف سره خاص نه ده.

^(۱) (الاجز: ۹۲۷۷/۹۲۸۲) -

^(۲) (الانفال: ۴۱) -

^(۳) (الاجز: ۹۲۷۷/، وتفسیر مع حاشیه الشهاب الخفاجی: ۴/۴۷۶، والتفسیر الکبیر: ۱۵/۱۶۵-۱۶۶، واحکام القرآن: ۷۹/۳) -

^(۴) (تفسیر البيضاوی مع الشهاب: ۴/۴۷۶، والاجز: ۹۲۷۷) -

^(۵) (احکام القرآن: ۷۹/۳، والاجز: ۷۹/۳، والاجز: ۹۲۷۸) -

^(۶) (احکام القرآن: ۷۹/۳-۸۰، والاجز: ۹۲۸۱، والتفسیر الکبیر: ۱۵/۱۶۶، والمغنی: ۶/۳۱۴-۳۱۵، وتفسیر البيضاوی: ۴/۴۷۵، وبذلک جزم صاحب الهدایه: ۴/۲۴۲، طبع مکتبه البشري، کراشي، وشرح ابن بطال: ۵/۲۷۴)

اوس چې هر کله د ابو العالیه د قول بطلان ثابت شو نو د دې دوه معنې او وجوهات کیدې شي ① اول دا چې دا لفظ د "الله" د کلام د افتتاح دپاره وي، لکه څنگه چې مونږ د مشرانو د یو جماعت (عطاء، شعبي او د قتاده) په حوالې سره وئیلې دي او مقصد زموږ تعليم وي چې د الله تعالی په نوم سره تبرک حاصل کړې شي او ټول کارونه د الله تعالی د باعظمت نوم نه شروع کړې شي.

دویم د دې دا معنی هم کیدې شي چې خمس ټول په ټوله په هغه لارو کښې خرچ کړې شي کوم چې د الله تعالی د رضا او د هغه د قرب حاصلولو سبب وي. د دې وجې نه ئې شروع کښې لفظ د "الله" راوړلو، بیا ئې هغه وجوهات او لارې اوښودلې چې هغه لارې دادې (وللرسول ولذی القربی....) خلاصه دا شوه چې ابتداء کښې ئې د خمس حکم مجمل اوساتئو.

بیا ئې دهغې تفصیل او وضاحت ذکر کړو (لیکن اشکال دا کیږي چې په دې صورت کښې

ددې واوڅه معنی ده کوم چې د "لله ولسوله" مینځ کښې واقع شوې دي؟

ددې په جواب کښې امام رازی رحمه الله فرمائي چې د لغت په رنډا کښې د دې واو داخلول جائز دی لیکن د دې نه مراد الغاء ده مطلب دا چې د دې هیڅ اعتبار نشته. لکه څنگه چې د الله

تعالی قول دي، (ولقد آتینا موسی وهارون الفرقان وضياع) (په دې کښې واو ملغی او غیر معتبر

دي ځکه چې هم فرقان ضیاء ده، دغه شان په قرآن کریم کښې دی: (فلما أسلما وتله للجبين) (۱)

ددې معنی ده: (لما أسلما تله للجبين)، ځکه چې "فلما أسلما" د جواب تقاضه کوي او د هغې

جواب "للجبين" دي (۲).

د سهم الرسول معنی او په دې کښې اختلاف: د پورتنی بحث نه دا خبره واضحه شوه چې په

آیت کریمه کښې د لفظ "الجلالة" ذکر کولو څه مقصد دي. د دې نه پس په دې ځان پوهه کړئ

چې نبی عليه السلام تر څو حیات وو نو د خمس یو حصه ئې اخستله، د دې نه علاوه صفی (په غیره

باندې هم د نبی عليه السلام حق وو، په غنیمت کښې به هم نبی عليه السلام د یو عام لښکري په شان حصه

اخستله لیکن د نبی عليه السلام د وفات نه پس په دې حصه کښې د اسلافو اختلاف شو چې د دې

څه حکم دي؟ په دې سلسله کښې د حنابلې او د شافعيه موقف خو دادې چې دا حصه اوس هم

باقی ده او کله چې خمس تقسیمېږي نو دا حصه به هم جدا شمارلې شي البته اوس به د دې

(۱) احکام القرآن للرازی: ۸۰/۳.

(۲) الانبیاء: ۴۸.

(۳) الصافات: ۱۰۳.

(۴) احکام القرآن: ۸۰/۳-۸۱.

(۵) قال الموفق: الصفی، وهو شی یختاره من المغنم قبل القسمة، كالجارية، والعبد، والثوب والسيف

بذل المجهود: ۳۱۱/۱۳.

مصرف داوی چې دا به د مسلمانانو په مصلحتونو کښې خرج کولې شی یعنی په دې باندې به اسلحه اخستلې کيږي او د سرحدونو حفاظت به پرې کولې شی وغیره،
امام شافعی رحمته الله فرمائی: "اخذت ان يصنع الامام في كل امر حصن به الاسلام واهله من سد ثغر، وإعداد كراع أو سلاح، أو إعطائه أهل البلاء في الاسلام نفلاً....." (۱)

او د موالکو مسلک د خمس په حوالې سره اوس وړاندې تیر شو چې هغوی د هېڅ تقسیم قائل نه دی او دا چې ټول په ټوله خمس امام ته حواله دې چې هغه دا د مسلمانانو په مصرفونو او مصلحتونو کښې خرج کړي (۲). او احناف دا وائی چې د نبی صلی الله علیه و آله حصه د هغوی د وفات نه پس ساقطه شوې ده ځکه چې دا حصه به نبی صلی الله علیه و آله ته د یو خاص قسم صفت په بنیاد باندې ملاویده، یعنی د رسالت د وجې نه، ددې تصور د نبی صلی الله علیه و آله نه پس ممکن هم نه دي (۳). امام جصاص رحمته الله فرمائی:

"سهم النبي صلى الله عليه وسلم إنما كان له ما دام حياً، فلما توفي سقط سهمه كما سقط الصفي بموته، فراجع سهمه إلى جملة الغنيمة كما رجع إليها، ولم يعد للنواب" (۴)

د رسته دارو حصه او په دې کښې اختلاف: په آیت کښې چې کوم دریم مصرف ذکر کړې شو نو دا د د رسته دارانو دي، د دوی په حصه کښې هم اختلاف دي، امام ثوري رحمته الله فرمائی چې رسول الله صلی الله علیه و آله سهم د خمس په پنځمه حصه کښې خمس دي، دا پنځه حصه او څه چې بچ شی نو دا به په هغه خلقو کښې تقسیميږي د کوم چې په آیت کریمه کښې ذکر دي یعنی رسته دار، یتیمان، مسکینان او مسافر.

د امام شافعی او امام احمد رحمهما الله مسلک وړاندې تیر شو چې دوی د ذوی القربی د سهم او د حصې مستقل قائل دي، خواه دا خلق مالدار وي یا حاجت مند. او په دې ذوالقربا کښې به تقسیم د للذکر مثل الاثنيین د اصل مطابق وي او احناف دا وائی چې په خمس کښې د ذوالقربی مستقل څه حصه نشته، تقسیم به درې طبقاتو کښې کيږي، یتیمان، مسکینان او مسافر، کما مرقبل.

امام مالک رحمته الله فرمائی چې د وخت حاکم به د خپلې رائې او اجتهاد مطابق د نبی صلی الله علیه و آله رسته دارو ته د خمس نه ورکړه کوي، کما مرقبل. البته د رسته دارانو په فقيرانو باندې ددې نه هم خرج کولې شی لیکن ددې علت به فقیری وي، د نبی صلی الله علیه و آله قرابت نه، دغه شان به دوی په دریو

(۱) المغنی: ۳۱۵/۶، والام: ۱۴۷/۲، رقم (۱۲۸۰۲)، والاوز: ۹۲۸۴/—

(۲) الشرح الكبير للدردير: ۱۹۰/۲، والاوز: ۹۲۸۵/—

(۳) الدر المختار: ۲۵۹/۳، والهداية: ۲۴۲/۴، ومعالم السنن للخطابي: ۲۹۱/۲، رقم (۷۷۶)، باب المن عن الاسير بغیر فداء) —

(۴) احکام القرآن: ۸۱/۳ —

واړو طبقاتو کښې داخل شې.)

په خمس کښې د مستحق کیدو بنیاد څه دی؟ د احنافو او شوافعو مینځ کښې د اختلاف وجه دا خبره ده چې هغوی د استحقاق وجه د نبی ﷺ رشته داری ښائی او وائی چې د نبی ﷺ رشته داری ددې استحقاق دپاره کافی ده او احناف وائی چې د استحقاق دپاره دوه څیزونه دي. د نبی ﷺ رشته داری او نصرت. ددې اجمال تفصیل دادې چې لفظ د "ذوی القربى" مجمل دي. د بیان ضرورت لری، ښکاره خبره ده چې دا لفظ د نبی ﷺ رشته داری سره خاص نه دي. د نورو خلقو رشته داری هم وی او دا هم ښکاره خبره ده چې دلته د ټولو خلقو رشته داری مراد نه دی. ددې وجې نه ددې لفظ وضاحت ضروري دي د سلف صالحینو په دې خبره کښې اتفاق دي چې په دې آیت کریمه کښې د قرابت نه مراد د نبی ﷺ رشته داری ده. اوس په دوی کښې بعضې حضرات هغه دی کوم چې دا وائی چې په دې رشته دارانو کښې د خمس حق لرونکی هغه کسان دی چې هغوی به د نبی ﷺ نصرت هم کوو. ددې وجې نه په حصه کښې د مستحق جوړیدو دپاره دوه څیزونه بنیاد او گرځیدل، د نبی ﷺ رشته داری او نصرت کول او هغه رشته دار چې د نبی ﷺ نصرت به ئې نه کوو یعنې وروستو پیدا شويا ئې وروستو اسلام قبول کړو هغوی هم ددې مستحق وو لیکن ددې بنیاد فقر وو چې په دوی کښې به څوک فقیر او محتاج وو نو هغوی ته به ددې حصې نه څه ورکړې کیدل. لکه څنگه چې به نورو عامو فقیرانو ته حصه ورکولې شوه او د نبی ﷺ رشته دار هم نه وو. ددې واضح دلیل د حضرت جبرین مطعم رضی الله عنه حدیث دي، فرمائی:

"لما قسم رسول الله صلى الله عليه وسلم سهم ذوی القربى بين بنى هاشم وبنى المطلب آتيتهم انا وعثمان، قتلنا: يا رسول الله، هؤلاء بنو هاشم، لا تتكسر فضلهم بكانك الذي وضعك الله فيهم، آرايت بنى المطلب اعطيتهم ومنعتنا، وانما هم ونحن منك بمنزلة؟ فقال صلى الله عليه وسلم: انهم لم يفارقوني في جاهلية ولا اسلام، وانما بنو هاشم وبنو المطلب شيء واحد، وشبك بين أصابعه" (۱)

په دې حدیث شریف کښې نبی ﷺ د شعب ابی طالب د واقعي طرفته اشاره کړې ده چې په هغې کښې قریشو د نبی ﷺ، او د دوی حمایتی او ملگری قبیلو بنو هاشم او بنو عبدالمطلب سره بایکات او مقاطعه کړې وه، هغه وخت پوره قریش د اسلام په مخالفت کښې یو طرفته وو او بنو هاشم او بنو عبدالمطلب د نبی ﷺ په ملگریا کښې بل طرفته

(۱) احکام القرآن: ۸۱/۳، وحاشیه الدسوقي: ۵۰۲/۲، باب فی الجهاد، والاوجز: ۹۲۸۵، والام: ۱۴۷/۴، رقم (۱۲۷۹۳)، المغنی: ۹۳۱۴، والهدایة: ۲۴۰-۲۴۲.

(۲) الحدیث، اخرجه البيهقي: ۵۵۴-۵۵۵، کتاب قسم الفی: باب سهم ذی القربى، رقم (۱۲۹۵۱-۱۲۹۵۵)، وابن ابی شیبة: ۱۳۰/۱۸، کتاب السير، باب سهم ذی القربى: رقم (۳۴۱۳۳)، وکتاب المغازی، باب غزوة خیبر، رقم (۳۸۰۳۰) دغه شان او گوری وړاندې باب (۱۷)، ومن الدلیل علی ان الخمس للامام، وانه يعطى..... ک د حضرت جبرین مطعم رضی الله عنه حدیث تخریج.

وو دا حدیث په دوهو وجوهاتو سره په دې خبره باندې دلالت کوی چې په خمس کښې د حقدار جوړیدو دپاره صرف رسته داری کافی نه ده اوله وجه خو دا ده چې بنو عبد شمس او بنو مطلب دواړه د نبی ﷺ په رسته داری کښې برابر دی لیکن نبی ﷺ بنوالمطلب ته خو په خمس کښې ورکړه او بنو عبد شمس ته ئې څه ور نه کړل، که استحقاق د قرابت د وجې نه وو نو نبی ﷺ به په دواړو کښې برابر والې کړې وو.

دویمه وجه داده چې په آیت کریمه کښې ذکر شوې لفظ د ذوی القربى کښې چې کوم احتمال وو نو دا د نبی ﷺ فعل سره مجمل پاتې نه شوبلکه ددې وضاحت او شو او د نبی ﷺ

کار چې چرته د بیان اجمال دپاره راشی نو دا په وجوب باندې دلالت کوی، کما تقرری الاصول^(۱) چې هرکله نبی ﷺ دا بیان او کړو چې قرابت د نصرت سره سره نو دا معلومه شوه چې هم دا د الله تعالی مراد هم دې په دوی کښې هغه خلق چې د نبی ﷺ نصرت سره موصوف نه دی که هغوی په دې خمس کښې اخلی نو د فقر او احتیاج په بنیاد باندې به اخلی، داسې نه چې د نبی ﷺ د رسته داری د وجې نه اخلی^(۲)

د خلفاء راشدینو اجماع: ددې نه علاوه د څلورو وارو خلیفه گانو هم په دې باندې اجماع ده چې په خمس کښې د حقدار جوړیدو دپاره سبب او وجه فقر دې، دلیلونه لاندې ذکر کولې شی

① محمد بن اسحاق وائی چې ما د محمد بن علی رضی الله عنه نه تپوس او کړو چې کله حضرت علی رضی الله عنه خلیفه جوړ شو نو هغوی د رسته دارو د حصې سره څه او کړل؟ محمد بن علی رضی الله عنه او فرمائیل چې په دې مسئله کښې هغوی هغه طریقه اختیار کړه کومه طریقه چې د حضرت ابوبکر او حضرت عمر رضی الله عنهما وه او هغوی دا خبره ناخوښه کړه چې په ما باندې د شیخینو د رائي نه خلاف د چلیدو الزام راشی^(۳)

امام ابوبکر رازی رضی الله عنه فرمائی چې که د حضرت علی رضی الله عنه رائي هم هغه نه وه کومه چې د حضرات شیخینو رضی الله عنهما وه نو حضرت علی رضی الله عنه به د هغې مطابق فیصله نه کوله، ځکه چې بل طرفته په نورو څو مسئلو کښې حضرت علی د حضراتو شیخینو سره اختلاف کړې دې، مثلاً د نیکه میراث، ځکه چې په دې مسئله کښې د دوی شیخینو حضراتو سره اختلاف دې. اوس دا خبره پوره شوه چې د حضرت علی او د حضراتو شیخینو رضی الله عنهم رائي په دې مسئله کښې یو ده چې د رسته دارانو د حصې حقداران به فقیران وی او چې هرکله د څلورو وارو خلیفه گانو د حضرت عثمان رضی الله عنه عمل هم په دې مسئله کښې د شیخینو موافق وو لکه څنگه چې وړاندې حدیث راځی، په دې مسئله کښې اجماع اوشوه نو ددې مسئلې حجیت د دوی په دې اجماع سره ثابت شو، ځکه چې د نبی ﷺ ارشاد دې،

(۱) احکام القرآن: ۸۲/۳.

(۲) پورته حواله وشرح معانی الآثار: ۱۵۳/۲، والهدایة: ۴/۲۴۰-۲۴۲.

(۳) احکام القرآن: ۸۲/۳، وشرح معانی الآثار: ۱۵۲/۲، والسنن الکبری للبيهقي: ۵۵۷/۶-۵۵۸، کتاب قسم الفی

والغنیمة باب سهم ذی القربى، من الخمس، رقم (۱۲۹۶۰).

”عليكم بسنتي وسنة الخلفاء الراشدين من بعدي“ (۱)

② حضرت ابن عباس رضي الله عنهما د نجدة الحروري د رشته دارئ د حصي متعلق د سوال په جواب کښې فرمايلې وو:

”کنانری انه لنا، فدعانا عبر الی ان تزوج منه ایما، ونقطی منه عن مغرمنا، فایینا ان لایسلمه لنا، وای ذلك علینا قومنا“ (۲)

یعنی ”زمونږ دا خیال وو چې دا زمونږ حصه ده لیکن حضرت عمر رضي الله عنه مونږ دې خبرې طرفته راغونښتلو چې مونږ ددې په ذریعې سره د خپلو کندو رندو ودونه اوکړو او په مونږ کښې چې څوک قرضدار وی، د هغوی قرض ادا کړو البته مونږ په دې باندې اصرار اوکړو چې دا دې مونږ ته راکړې شی (څه قسم قید دې په کښې نه لگولې کيږي) لیکن په دې باندې زمونږ قوم (خلفاء راشدينو او نور صحابه کرام رضي الله عنهم) راضي نه شو“

په دې روایت کښې ابن عباس رضي الله عنهما په خپله اقرار کوي چې زمونږ د قوم یعنی د صحابه کرامو رضي الله عنهم خیال هم دا وو چې په دې کښې زمونږ د فقیرانو حصه خو شته لیکن د مالدارانو نشته. دغه شان د هغوی دا فرمايل چې ”کنانری انه لنا“ ددې خبرې دلیل دې چې دا صرف د هغوی رائي وه، چې په سنتو او د صحابه کرامو رضي الله عنهم په موجودگي کښې ددې هیڅ حیثیت نشته. صرف یو رائي ده (۳)

③ حضرت جبیر بن مطعم رضي الله عنه فرمائي: ”وکان ابوبکر یقسم الخمس نحو قسم رسول الله صلی الله علیه وسلم، غیر انه لم یکن یعطی قرین رسول الله صلی الله علیه وسلم ماکان النبی صلی الله علیه وسلم یعطیهم، قال: فکان عمر بن الخطاب یعطیهم منه، وعثمان بعده“ (۴)

یعنی ”د حضرت ابوبکر صدیق رضي الله عنه د خمس تقسیمولو طریقه هم هغه وه کومه طریقه چې د نبی صلی الله علیه و آله وه، البته هغوی به د نبی صلی الله علیه و آله رشته دارانو ته دومره نه ورکوله، څومره قدرې چې به دوی په خپله ورکوله، بیا وروستو حضرت عمر او حضرت عثمان به رضي الله عنهما هغوی ته په دې کښې حصه ورکوله“.

په دې حدیث شریف کښې وضاحت دې چې اولنی خلیفه به رشته دارانو ته حصه نه ورکوله لیکن حضرت عمر او حضرت عثمان رضي الله عنهما ورکوله، ددې وجه هم تیرو شوو احادیثو کښې

(۱) الحدیث، اخرجہ ابو داود، کتاب السنة، باب فی لزوم السنة، رقم (۴۶۰۷)، واحمد فی مسنده، مسند العریاض بن ساریه، رقم (۱۷۲۷۵)، وجامع المسانید والسنن، مسند العریاض،، رقم (۶۴۷۳)۔

(۲) مسند الامام احمد، مسند عبدالله بن عباس، رضي الله عنه، رقم (۲۸۱۲) و (۲۹۴۳)، وسنن النسائي، اول کتاب قسم الفی، رقم (۴۱۳۸-۴۱۳۹)، والمعجم الكبير للطبرانی: ۱۰/۳۳۶، یزید بن هرمز عن ابن عباس، رقم (۱۰۸۳۲)۔

(۳) احکام القرآن للرازی: ۸۳/۳۔

(۴) سنن ابی داود، کتاب الخراج،، باب فی بیان مواضع قسم الخمس، رقم (۲۹۷۸-۲۹۷۹)۔

تیره شوه چې ددې بنیاد فقر او احتیاج وو، داسې نه چې د استحقاق په بنیاد باندې ئې ورکولای. بیا پورته د حضرت جبیر بن مطعم رضی الله عنه په حدیث کښې چې د حضرت عمر رضی الله عنه متعلق دا اوونیلې شو چې هغوی به حصه ورکوله نو ددې دا مطلب نه دې چې هغوی به ټوله پوره پوره حصه درشته دارئ هغوی ته حواله کوله بلکه ددې مطلب دا دې چې د نورو حصو نه به ئې د هغوی د حاجت مطابق ورکوله، ددې دلیل هم هغه نجدة الحروری لیکلې شوې دې، د حضرت ابن عباس رضی الله عنهما خط دې، په بعضې طرغو کښې د هغې الفاظ دادې:

”وقد كان عمر عرض علينا من ذلك عرضا، رأينا له دون حقنا في رد ذلك عليه، وأبينا أن نقبله“ (۱)

په دې حدیث شریف کښې حضرت سهارنپوی رحمته الله علیه فرمائی:

”ولعل هذا مبني على أن عمرو رآهم مصارف، وظن ابن عباس أنهم أهل استحقاق فيه، أفترى ينقص حقهم أولا، ثم إذا نقص فردوا؟ أفیظن به أنه يحرمهم منه أصلا؟ فلم یکن إلا أنه رآهم مصارف، ورأى استغنائهم عنه، فلم یرد عليهم ثانيا“ (۲)

یعنی ”شاید ددې وجه دا وه چې د حضرت عمر رضی الله عنه په رائې کښې رسته دار مصرف وو او د حضرت ابن عباس رضی الله عنه په خیال کښې دا حضرات ددې مستحق وو یعنی دوی ته ورکول ضروری وو. ورنه آیا تاسو دا خیال کوئ چې حضرت عمر رضی الله عنه اول خود دوی په حق کښې کمې کړې وو او د کمې نه پس چې کله دوی واپس کړل نو آیا دا گمان د هغوی باره کښې صحیح کیدې شی چې هغوی به دوی لره ددې نه بالکل محروم اوساتی؟ ددې وجه هم دا وه چې هغوی دوی مصرف گنړل، چې کله هغوی د دوی استغناء او کتله نو دوباره ئې ورته پیشکش اونه کړو“

په مصرف او استحقاق کښې فرق: د حضرت سهارنپوی رحمته الله علیه د پورتنۍ عبارت نه د مصرف او د استحقاق مینځ کښې فرق هم واضح شو، د مصرف مطلب دادې چې خمس په آیت کریمه کښې مذکوره کسانو کښې خرچ کړې شی نو دا خرچ به په صحیح محل کښې استعمال شی، چې چاته ورکړې شی او چاته ورنه کړې شی نو په دې کښې د اعتراض څه خبره نشته او د استحقاق مطلب دادې چې په دې مذکوره کسانو کښې دا فلانې متعین کول او په ده باندې خرچ کول ضروری دی.

دا هم د ائمه اربعه مینځ کښې یو بنیادی اختلاف دې چې په قرآن کریم کښې د کومو خلکو ذکر دې نو دا مصرف دی یا مستحق دی؟ امام شافعی او احمد رحمهما الله د مستحق کیدو قائل دی او داوائی چې دې ټولو ته رسول او ورکول ضروری دی، امام مالک او امام ابوحنیفه

(۱) تکملة فتح الملهم: ۲۵۵/۳-۲۵۶-

(۲) سنن ابی داود، کتاب الخراج..... باب فی بیان مواضع..... رقم (۲۹۸۲)-

(۳) بذل المجهود: ۱۷۱/۱۰، کتاب الخراج..... د احنافو د نورو دلیلونو دپاره اوگوری، تکملة فتح الملهم: ۲۵۴/۳-۲۵۸. واحکام القرآن للجصاص: ۸۳/۳ واعلاء السنن: ۲۰۹/۱۲-۲۵۱، باب اربعة اخماس الغنیمه....

رحمة الله عليهما مصرف کیدو قائل دی او استحقاق نه منی .

د بحث خلاصه: ددې ټول تفصیلی بحث نه دا لاندینی خبرې ثابت شوي

① اوس به خمس درې حصې کيږي چې په یتیمانو، مسکینانو او مسافرو کښې به تقسیمولې شي.

② د استحقاق دپاره علت فقر او احتیاج دي، ددې وجې نه په دې باندې تقریباً ټول متفق دي چې په آیت کریمه کښې د یتیم نه مراد هغه یتیم دي چې د هغه مورث ددې یتیم دپاره هیڅ هم پریخودلې نه وي، محتاج او ضرورت مند وي، د مالدار او غنی کیدو په صورت کښې به دې یتیم ته هم نه ملاوېږي.

③ په دې باندې د خلفاء راشدینو اجماع هم ده.

یو سوال او دهغي جواب: دلته د احنافو په مسلک باندې دا اشکال پیدا کيږي چې که د رسته دارانو فقیران د خمس مستحق دي او مالداران نه دي نو د دوی د جملې ذکر کولو څه ضرورت وو؟ حالانکه دوی ددې فقیري د علت د وجې نه په مسکینانو کښې داخل دي؟ ددې یو جواب خو دا دي چې څنگه یتیمان او مسافر خاص طور سره ذکر کړي شو نو دغه شان د رسته دارو هم تخصیص شوي دي ورنه یتیمان او مسافر به هم ددې حصې مستحق په هغه وخت کښې وي چې کله دوی فقیران وي.

دویم جواب دادې چې په قرآن کریم کښې د الله تعالی ارشاد دي: "إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَامِلِينَ....." (چې د صدقاتو مستحق خو فقیران او مسکینان.....و غیره دي او د نبی ﷺ ارشاد دي، "إِنَّ الصَّدَقَةَ لَا تَحِلُّ لَنَا....." (ددې نه دا معلومه شوه چې صدقات د نبی ﷺ د آل دپاره حلال نه دي. که د خمس په مستحقینو کښې د دوی نوم نه وو نو چا هم دا وئیلې شو چې په خمس کښې هم رسته دارو ته ورکول جائز نه دي څنگه چې ورته صدقات ورکول جائز نه دي نو ددې وهم د وجې نه الله تعالی مونږ ته ددې د بنودلو دپاره ددې تذکره هم او فرمائیلې چې د خمس په معاملې کښې د دوی مسئله د صدقاتو د مسئلې نه جدا او مختلفه ده، په خمس کښې د دوی دپاره اخستل جائز دي) والله اعلم

یو اشکال او دهغي جوابونه: نبی ﷺ خپل تره حضرت عباس بن عبد المطلب رضی الله عنه ته هم د

① (احکام القرآن: ۳/۸۳، ۵/۸۵، وفتح القدير: ۵/۲۴۳)۔

② (التوبة: ۶۰)۔

③ (و تمامه وان موالی القوم من انفسهم"۔ اللفظ للترمذی، من رواية ابی رافع مولى رسول الله ﷺ، کتاب الزکاة، باب ما جاء فی کراهية الصدقة..... (۶۵۷)۔ وكذا انظر سنن ابی داود، کتاب الزکاة، باب الصدقة على بنی هاشم، رقم (۱۶۵۰)، والنسائی، کتاب الزکاة، باب مولى القوم منهم، رقم (۲۶۱۳)، والمصنف لابن ابی شعبة: ۵۰/۷، کتاب الزکاة، من قال: لا تحل الصدقة على بنی هاشم، رقم (۱۰۸۱۰)۔

④ (احکام القرآن: ۳/۸۳، ۵/۸۶)۔

خمس د مال نه ورکړې وو حالانکه هغه مالدار وو ددې نه خو هم دا ثابت شوه چې په دې کښې د مالدارو او فقيرانو دواړو رسته دارانو حصه ده. ددې اعتراض دوه جوابونه دي:

① دوی ته چې نبی ﷺ خه ورکړل نو ددې وجه رسته داری او نصرت دواړه وو، دا علت دوی په خپله هم بیان کړې دي چې "انهم لم یفارقونی فی جاهلیة ولا اسلام" نو په دې کښې مالدار او فقیر دواړه برابر دي، په دې کښې هېڅ اختلاف نشته. اختلاف خو د نبی ﷺ وفات نه پس دې ځکه چې اوس نصرت باقی پاتې شوې نه دي.

② دا خو هم ممکنه ده چې دغه مال نبی ﷺ حضرت عباس رضی الله عنه ته ددې دپاره ورکړې وي چې هغوی دا د بنو هاشم په فقيرانو کښې تقسیم کړي، یعنی د خپل ذات دپاره ئې نه وو ورکړې. (والله اعلم)

د ذوی القربی نه کوم خلق مراد دی؟ امت د عالمانو په ذوی القربی کښې هم اختلاف دي چې ددې نه څوک مراد دی؟ په دې کښې علامه قرطبی رحمه الله درې قولونه ذکر کړي دي

① ددې نه مراد د قریشو ټوله قبيله ده، دا د بعضي اسلافو قول دي، د دوی دلیل دادې چې نبی ﷺ د بعثت په ابتداء کښې کله د صفا غر ته اوختلو نو دا آواز ئې اوکړو "یا بنی فلان، یا بنی عبد مناف، یا بنی عبد المطلب، یا بنی کعب بن مرة، یا بنی عبد شمس، انقذوا انفسکم من النار..."

② ددې نه مراد بنو هاشم او بنو عبد مناف دي، ددې وینا ویونکي حضرت امام شافعي، احمد، ابو ثور، مجاهد، قتاده، ابن جریج او مسلم بن خالد رحمه الله دی. دلیل وړاندې تیر شوي دي چې "انهم لم یفارقونی فی جاهلیة....." (د)

③ ددې نه صرف بنو هاشم مراد دی، دا قول د مجاهد (فی روایة) حضرت عمر بن عبد العزیز،

① احکام القرآن: ۸۴/۳، وفتح القدیر: ۲۴۵/۵، په روایتونو کښې راغلي دي چې د حضرت عباس رضی الله عنه شل غلامان وو چې هغوی به گټله او دوی ته به ئې ورکوله. دغه شان نبی ﷺ یوځل د دوی نه د دوو کالو وړاندې زکوٰۃ وصول کړې وو. دا هم د مالداري او د فراخی دلیل دي او گوري شرح معانی الآثار: ۱۸۴/۲، کتاب وجوه الفی وخمس الغنائم، دغه شان او گوري المستدرک للحاکم: ۳۶۶/۳، ذکر اسلام العباس، رقم (۵۴۰۹)، وسنن البیهقي الکبری: ۵۲۴/۶، کتاب قسم الفی.....، باب مفاداة الرجل منهم بالمال، رقم (۱۲۸۴۹)، والمعجم الکبیر للطبرانی: ۱۷۱/۱۱، عطاء عن عباس، رقم (۱۱۳۹۸)، ومجمع الزوائد: ۲۸/۷، سورة الانفال، والطبقات الکبری لابن سعد: ۱۵/۴، الطبقة الثانية من المهاجرين.....، رقم (ودلائل النبوة: ۱۴۳/۳، غزوة بدر المعظمی، باب ما فعل رسول الله ﷺ بالغنائم.....، وفتح الباری: ۳۱۲/۸، کتاب التفسیر، رقم (۴۳۸۶)، وعمدة القاری: ۹۷/۱۳، کتاب العتق، باب اذا اسراخو الرجل او عمه هل یفادی.....؟)۔

② احکام القرآن: ۸۴/۳۔

③ الحديث اخرجه مسلم، کتاب الايمان، من رواية ابی هريرة باختصار، رقم (۵۰۱)۔

④ سنة، نخ به آفا

زید بن ارقم او د علی بن الحسین امام زین العابدین دې، دغه شان امام مالک، ثوری او اوزاعی رحمهم ددې قائل دي.

هم دا دریم قول د احنافو هم دې او د بنو هاشم نه مراد آل د علی، آل د عباس، آل د جعفر، آل د عقیل او اولاد د حارث بن عبدالمطلب دي.

پورته ذکر شوي درې واړه طبقات د نبی صلی الله علیه و آله د رشته دارئ حامل دي، ځکه چې کله آیت کریمه "وانذر عشیرتک الاقربین" (۱) نازل شو نو نبی صلی الله علیه و آله دا ټول د صفا په غر باندې جمع کړل او دوی ټولو ته یې دعوت ورکړې وو، ددې نه دا ثابت شوه چې د رشته دارئ وصف دې ټولو ته شامل دي.

ذوی القربی سره متعلق احکامات: اوس ذوی القربی سره متعلق درې احکامات دي:

① د خمس د حصې استحقاق، بقوله تعالیٰ وللمسول ولذی القربی (۲) او د ذی القربی نه مراد د دوی فقیران دي. کما مر قبل.

② په دوی باندې صدقات حرام دي او په چا باندې چې صدقات حرام دي نو هغه آل د علی، آل د حضرت عباس، آل د حضرت جعفر، آل د حضرت عقیل او اولاد د حارث بن عبدالمطلب رحمهم دي، هم دا خلق اهل بیت دي، په دې حکم کښې بنو المطلب داخل نه دي ځکه چې دوی په اهل بیت کښې نه دي. که دوی په اهل بیت کښې وې نو بنو امیه به هم په اهل بیت کښې وو چونکه د بنو امیه نسبې تعلق نبی صلی الله علیه و آله سره هم هغه دې کوم چې ورسره د بنو المطلب دې او د امت د عالمانو په دې باره کښې هیڅ اختلاف نشته چې بنو امیه په اهل بیت کښې داخل نه دي، ددې وجې نه به په اهل بیت کښې بنو المطلب هم داخل نه وي.

③ د الله تعالیٰ خپل نبی کریم صلی الله علیه و آله ته خاص طور سره دا حکم ورکول چې هغوی خپل نزدې رشته دار د الله تعالیٰ د عذاب نه اووړوي، دا انداز د قریشو ټولو شاخونو او قبیلو ته شامل دي چې کله دا آیت کریمه "وانذر عشیرتک الاقربین" نازل شو نو نبی صلی الله علیه و آله ټولو ته خطاب کولو سره د ویرولو فریضه پوره کړه. کما ورد به الاثر (۳) او نزدې رشته دارو لره خاص طور سره

(۱) الجامع لاحکام القرآن: ۱۲/۸، وفتح الباری: ۲۴۵/۶-۲۴۶.

(۲) احکام القرآن للرازی: ۸۴/۳-۸۵.

(۳) الشعراء: ۲۱۴.

(۴) الانفال: ۴۱.

(۵) روى مسلم بسنده عن ابی هريرة رضی الله عنه قال: لما نزلت هذه الآية: (وانذر عشیرتک الاقربین) دعا رسول الله صلی الله علیه و آله قریشا، فاجتمعوا، فعم وخص. فقال: یا بنی کعب بن لوی، انقذوا انفسکم من النار، یا بنی مرة بن کعب، انقذوا..... یا بنی عبد شمس، انقذوا..... یا بنی عبد مناف انقذوا..... یا بنی هاشم، انقذوا..... یا بنی عبد المطلب: انقذوا..... یا فاطمة، انقذی نفسک من النار، فانی لا املك لکم من الله شیئا، غیر ان لکم رحما، سابلها ببلالها. انظر صحیحه، کتاب الايمان، باب فی قوله تعالیٰ: (وانذر عشیرتک.....) رقم (۵۰۱).

ویرول، نو ددې یوه وجه خو دا وه چې د دین د دعوت په سلسله کېنې دا کار ډیر زیات غوره او ښه دې دویم دا چې د دعوت الی الله په معامله کېنې دا بهترین صورت وو چې رشته دارو سره بې خایه طرفداری اونه کړې شی. دا ځکه چې کله خلقو ته دا معلومه شی چې نبی ﷺ د خپلو نزدې رشته دارو او خاندان په باره کېنې هم دا برداشت نه کړه چې هغوی د غیر الله عبادت او کړی او هغوی ئې هم د الله تعالی د عذاب نه اویرول، د غیر الله د عبادت نه ئې منع کړل نو نبی ﷺ زیات حقدار دې چې نور خلق هم د الله تعالی نه اوویروی او د غیر الله د عبادت نه ئې منع کړی ځکه چې که په دې معامله کېنې مدهانت او طرفداری جائز وه نو د نبی ﷺ نزدې رشته دار ددې زیات حقدار وو چې په دې باره کېنې ورته څه اونه ویلې شی لیکن ددې برعکس نبی ﷺ هغوی ته د نورو خلقو په مقابله کېنې زیات دعوت ورکړو او په هغوی ئې زیاته توجه او ساتلله، والله اعلم بالصواب

ددې نه پس د باب حدیث شریف ته اوگورئ.

۲۹۴۵: (۲) حَدَّثَنَا بَدَلُ بْنُ الْمُحَبَّرِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَخْبَرَنِي الْحَكَمُ قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي لَيْلَى حَدَّثَنَا عَلِيَّ بْنَ فَاطِمَةَ - عَلَيْهَا السَّلَامُ - اشْتَكَيْتُ مَا تَلْقَى مِنَ الرَّحَى مِمَّا تَطْحَنُ، فَبَلَغَهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَى بِسَيِّئَةٍ، فَأَتَتْهُ تَسْأَلُهُ خَادِمًا فَلَمْ تُوَافِقْهُ، فَذَكَرَتْ لِعَائِشَةَ، فَجَاءَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَذَكَرَتْ ذَلِكَ عَائِشَةُ لَهُ، فَأَتَانَا وَقَدْ دَخَلْنَا مَضَاجِعَنَا، فَذَهَبْنَا لِنَقُومَ فَقَالَ «عَلَى مَكَانِكُمَا» حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَ قَدَمَيْهِ عَلَى صَدْرِي فَقَالَ «أَلَا أَدُلُّكُمَا عَلَى خَيْرٍ مِمَّا سَأَلْتُمَا؟ إِذَا أَخَذْتُمَا مَضَاجِعَكُمَا فَكَبِّرَا لِلَّهِ أَرْبَعًا وَثَلَاثِينَ، وَاحْمَدَا ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ، وَسَبِّحَا ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ، فَإِنَّ ذَلِكَ خَيْرٌ لَكُمَا مِمَّا سَأَلْتُمَا».

[۳۵۰۲، ۵۰۴۶، ۵۰۴۷، ۵۹۵۹]

رجال الحديث

- ① بدل بن المحبر: دا بدل بن المحبر. بتشديد الباء ﷺ دې (۲)
 ② شعبه: دا د حدیثو مشهور امام شعبه بن الحجاج عتکی بصری ﷺ دې د دوی حالات په

(۱) احکام القرآن للرازی: ۸۵/۳ -

(۲) قوله: علی: الحدیث أخرجه البخاری ایضاً، کتاب فضائل اصحاب النبی ﷺ، باب مناقب علی..... رقم (۳۷۰۵)، وکتاب النفقات، باب عمل المرأة فی بیت زوجها، رقم (۵۳۶۱)، وباب خادم المرأة، رقم (۵۳۶۲)، وکتاب الدعوات، باب التکبیر والتسبیح..... رقم (۶۳۱۸)، وکتاب الذکر والدعاء، باب التسبیح اول النهار..... رقم (۶۹۱۵-۶۹۱۷)، والترمذی، کتاب الدعوات، باب ما جاء فی التسبیح والتکبیر..... رقم (۳۴۰۵)، وابو داود، کتاب الخراج.....، باب بیان مواضع قسم الخمس، رقم (۲۹۸۸-۲۹۸۹)، وکتاب الادب، باب التسبیح عند النوم، رقم (۵۰۶۲-۵۰۶۳) -

(۳) د دوی د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب الاذان، باب استواء الظهر فی الركوع -

کتاب الايمان، "باب المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده" کښې راغلي دي.^(۱)
 (۳) الحکم: دا الحکم بن عتيبه رضي الله عنه دې د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب السمرقاني العلم" کښې تیره شوې ده.^(۲)

(۴) ابن ابی لیلی: دا مشهور محدث عبد الرحمن بن ابی لیلی رضي الله عنه دې.^(۳)
 (۵) علی: د خلورم خليفه حضرت علی بن ابی طالب رضي الله عنه حالات په کتاب العلم، "باب کتابه العلم" کښې تیره شوې دي.^(۴)

(۶) فاطمه: دا فاطمه رضي الله عنها د نبی کریم صلی الله علیه و آله وسلم لور مبارکه ده.^(۵)
 د باب د حدیث شریف ترجمه: عبد الرحمن بن ابی لیلی وائی چې حضرت علی رضي الله عنه مونږ ته اووئیل چې د حضرت فاطمه رضي الله عنها په لاسونو مبارکو باندې د میچن چلولو د وجې نه نښې جوړې شوې وې، نو هغوی ته پته اولگیده چې نبی صلی الله علیه و آله وسلم ته څه قیدیان راغلي دي نو هغه نبی صلی الله علیه و آله وسلم ته راغله چې یو خادم ترینه واخلی، لیکن نبی صلی الله علیه و آله وسلم سره د هغې ملاقات اونه شو نو دوی خپل ضرورت عائشې رضي الله عنها ته بیان کړو، کله چې نبی صلی الله علیه و آله وسلم کور ته تشریف راوړلو، حضرت عائشې رضي الله عنها ورته بیان اوکړو چې حضرت فاطمه راغلي وه او خپل ضرورت ئې بیان کړو. نو نبی صلی الله علیه و آله وسلم مونږ کره تشریف راوړلو په داسې حال کښې چې مونږ خپلو بستر ته تلې وو، د نبی صلی الله علیه و آله وسلم په لیدلو سره مونږ پاسیدل اوغوستل نو نبی صلی الله علیه و آله وسلم منع کړو او وې فرمائیل چې دواړه په خپل ځانې اوسیرئ. تردې چې د نبی صلی الله علیه و آله وسلم د قدمونو یخوالي ما په خپله سینه کښې محسوس کړو نو وې فرمائیل تاسو چې زما نه د کوم څیز مطالبه کړې ده نو د هغې نه غوره څیز زه تاسو ته اونه ښایم؟ کله چې تاسو دواړه خپلو بستر ته لاړ شئ نو خلور دیرش ځله الله اکبر، درې دیرش ځله الحمد لله او درې دیرش ځله سبحان الله وایئ، د کوم څیز چې تاسو مطالبه کړې ده نو دا عمل تاسو دپاره د هغې نه زیات غوره دي.

(۱) کشف الباری: ۱/۶۷۸.

(۲) کشف الباری: ۴/۴۱۴.

(۳) د دوی د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب الاذان، باب استواء الظهر فی الركوع.
 ابن الاثير رحمته الله لیکلي دي چې د محدثینو په نزد د ابن ابی لیلی نه مراد عبد الرحمن وی او د فقهاؤ په نزد د ابن ابی لیلی نه مراد د عبد الرحمن ځوئي محمد بن عبد الرحمن بن ابی لیلی وی. عمدة القاری: ۱۵/۳۶.

(۴) کشف الباری: ۴/۱۴۹.

(۵) د دوی د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب الوضوء، باب غسل المرأة اباهها الدم.....

(۶) د مسلم شریف او ابوداؤد شریف په روایت کښې د ید یعنی د لاس وضاحت دي، چې د میچن چلولو د وجې نه لاسونه متاثره شوې وو. صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب التسبیح اول النهار.....
 رقم (۶۹۱۵-۶۹۱۷)، نوسنن ابی داود، کتاب الخراج..... باب فی بیان مواضع قسم الخمس، رقم (۲۹۸۸).

د حديث د بعضې حصو تشریح: د سبې معنى ده تختول او خلق نيول او ددې اطلاق په غلام او وينزه دواړو باندې کيږي، ددې جمع سبايا ده، دغه شان د خادم اطلاق هم په سړي او ښځه دواړو باندې کيږي (۱).

د باب په روايت کښې فاتمه تسئله راغلې دې چې حضرت فاطمه (عليها السلام) راغله آيا دې سره بل هم څوک وو، دلته ددې خبرې وضاحت نشته امام ابوداؤد يو روايت نقل کړې دې په هغې کښې د ام الحکم بنت الزبير يا د ضباعة بنت الزبير (عليها السلام) دا بيان دې:

”اصاب رسول الله صلى الله عليه وسلم سييا، فذهبت انا واخوتي وفاطمة بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم فشكونا اليه مانحن فيه، وسئلنا ان يامر لنا بشي من السبي، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: سيقكن يتامى بدر“ (۲)

چې ”نبي كريم (صلي الله عليه وسلم) ته څه قيديان راغلل نو زه، زما خور او حضرت فاطمه د نبي (صلي الله عليه وسلم) مبارکه نبي (صلي الله عليه وسلم) ته ورغلو، په کوم تکليف او مشقت کښې چې مونږ اخته وو نو مونږ ورته د هغې تذکره او کره او دا درخواست مو اوکړو چې په قيديانو کښې مونږ ته هم څه راکړي شي (د خادم په طور) نبي (صلي الله عليه وسلم) په جواب کښې او فرمايل چې د بدر د يتيمانو نه تاسو سبقت کړې دي“

د ابوداؤد شريف د روايت نه څنگه دا معلومه شوه چې حضرت فاطمه (عليها السلام) سره د حضرت زبير بن العوام (رضي الله عنه) دوه لوڼه هم وې نو دا هم معلومه شوه چې دا واقعه د غزوه بدر نه پس ده. بيا د باب په حديث شريف کښې دا راغلې دي چې نبي (صلي الله عليه وسلم) په کور کښې موجود نه وو نو ددې وجې نه حضرت فاطمه (عليها السلام) د خپل حاجت تذکره حضرت عائشه (رضي الله عنها) ته اوکړه، په اکثرو روايتونو کښې دغه شان دي، البته دارقطني (رحمته الله عليه) په خپل ”علل“ کښې يو روايت نقل کړې دې چې په هغې کښې د حضرت ام سلمه (رضي الله عنها) ذکر دې.

حافظ په دواړو کښې تطبيق کولو سره فرمائي چې کيدې شي چې دواړو ازواج مطهراتو کره حضرت فاطمه (عليها السلام) راغلې وي، يعنې اول حضرت عائشه (رضي الله عنها) کره راغلې وي هلته نبي (صلي الله عليه وسلم) ملاونه شو نو ام سلمه (رضي الله عنها) کره ئې تشریف راوړلو (۳).

قوله: فاتانا وقد دخلنا مضاجعنا، فذهبنا لنقوم، فقال: علي مكانكما، حتي

وجدت برد قد ميه علي صدری: په دې عبارت کښې مختلف فائدي دي

① کله چې نبي (صلي الله عليه وسلم) دې دواړو ته تشریف راوړلو نو دا د شپې وخت وو، لکه په يو روايت

(۱) عمدة القاری: ۳۶/۱۵.

(۲) جامع الاصول للجزري: ۲۵۶/۴.

(۳) انظر سنن ابی داود، کتاب الخراج..... باب فی بیان مواضع قسم..... رقم (۲۹۸۷).

(۴) العلل للدارقطني: ۲۸۲/۳ - ۲۸۴، رقم السؤال: (۴۰۶)، وفتح الباری: ۱۲۴/۱۱.

کښې ددې وضاحت دې چې "اتانا النبي ﷺ ذات ليلة" (۱) چې یو شپه نبي ﷺ مونږ ته راغلو. (۲) دغه شان کله چې نبي ﷺ تشریف راوړلو نو هغه وخت دوی دواړو خادر اغوستلي وو ځکه چې د یخني موسم وو، دوی دواړو چې کله نبي ﷺ اولیدو نو د اودریدلو او د گپو اغوستلو اراده ئې اوکړه نو نبي ﷺ منع کړل چې په خپل ځانې باندې اوسپږئ، د پاسیدلو ضرورت نشته، په یو روایت کښې دی، "وكانت ليلة باردة، وقد دخلت هي وعلي في اللحاف، فارادان يلبسا الثياب....." (۳) فقهاء کرامو ددې نه دا مسئله مستنبط کړې ده چې پلار لور کره هغه وخت هم تلې شی چې کله دا خپل خاوند سره ملاسته وي (۴).

(۵) د ابوداؤد شریف په یو روایت کښې دا هم راغلې دی چې نبي ﷺ ددې دواړو د سر له طرفه تشریف راوړلو، چې کله حضرت فاطمې (رضی الله عنها) خپل والد صاحب اولیدو نو د شرم او حیا له وجې نه ئې خپل مخ مبارک په خادر کښې پټ کړو (۶).

(۷) هم د بخاری شریف په یو روایت کښې دا اضافه هم ده چې نبي ﷺ راغلو او ددې دواړو مینځ کښې کیناستلو، "فجاء فقعد يقي ويينها" (۸) فقهاء کرامو ددې نه دا مسئله مستنبط کړې ده چې پلار د خپلې لور او د هغې د خاوند مینځ کښې هم کیناستلې شی چې کله دوی دواړه ملاست وي، اگرچه د پلار د بدن څه حصه د لور د بدن سره مس کیږي هم، لکه څنگه چې د باب په روایت کښې حضرت علي (رضی الله عنه) قدمونو د یخوالی په باره کښې فرمائي (۹) لیکن امام مالك (رحمته الله) دا جائز نه گنري (۱۰). د زیات احتیاط خبره هم داده چې جائز نه شی، خصوصاً زموږ په دې زمانه کښې چې هرکله د محارمو پیژندگلو ختمیږي، نبي کریم ﷺ خو معصوم وو، د هغوی په باره کښې داسې سوچ کول هم صحیح نه دی.

الامرفوق الادب

بیا په حدیث شریف کښې راغلې دی چې د نبي ﷺ په لیدلو سره حضرت علي او حضرت فاطمه (رضی الله عنهما) ادباً د اودریدو اراده اوکړه لیکن نبي ﷺ حکماً او فرمائیل، "علي مکنکما" چې په خپل ځانې باندې اوسپږئ، ددې نه پس دوی دواړه پانه سیدل، په خپل زوړ حالت باندې پاتې شو، ددې وجې نه چې دا د "الامرفوق الادب" د قبیل نه دې چې هرکله د نبي ﷺ حکم

(۱) مسند احمد: ۴/۱، مسند علی بن ابی طالب (رضی الله عنه)، عن ابن ابی لیلی، رقم ((۱۲۲۹)) _

(۲) عمدة القاری: ۳۶/۱۵ _

(۳) شرح ابن بطلال: ۲۷۳/۵ _

(۴) سنن ابی داود، کتاب الادب، باب التسیب عند النوم، رقم ((۵۰۶۳)) _

(۵) صحیح البخاری، کتاب النفقات، باب عمل المرأة فی بیت زوجها، رقم ((۵۳۶۱)) _

(۶) شرح ابن بطلال: ۲۷۳/۵ _

(۷) پورته حواله _

راغلو نو ادبا چې ئې کومه د اودريدلو اراده کړې وه، هغه ئې پريځودله (د دې نه پس په دې خان پوهه کړې چې حضرت گنگوهری عليه السلام د حق و جدت برود قدميه "مجازي معنی مراد اخستلو سره د دې تفسير په اطمینان او سکینې سره کړې دې، مطلب دادې چې ما یو قسم اطمینان او سکون محسوس کړو او فرمائی چې د دې نه حسی یخوالې مراد نه دې (۱) لیکن حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله فرمائی چې د نبی صلی الله علیه و آله لائق خو دا خبره ده چې د برود قدميه "نه اطمینان او سکون مراد وی ځکه چې د نبی صلی الله علیه و آله ذات مبارک خو هر اعتبار سره راحت، سکون او اطمینان وو، البته د روایتونو نه ښکاره دا معلومیږي چې دلته د دې نه مراد حسی یخوالې دې، لکه د طبری په یو روایت کښې وضاحت سره دا الفاظ نقل دی، قال علی: حق و جدت برود قدميه علی صدری فسختها" (۲) چې ما د هغوی د قدمونو مبارکو یخوالې په خپله سینه کښې محسوس کړو نو ما هغه گرم کړل او یو روایت چې وړاندې هم تیر شو، په هغې کښې "وكانت ليلة باردة" (۳) راغلې دی (۴)، په دې ټولو کښې د حسی یخوالې ذکر دې، د دې نه علاوه وړاندې ذکر شوې روایت کښې د لحاف لفظ (هم په دې باندې دلالت کوی چې دا د یخنۍ موسم وو، چونکه نبی کریم صلی الله علیه و آله د بهر نه تشریف راوړلې وو، د دې وجې نه ئې خپې مبارکې یخې وې. والله اعلم بالصواب

قوله: فقال: الا ادلكما علی خير مما سالتان؟ نو نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل چې زه تاسو ته د هغې نه غوره څیز اونه ښایم د کوم څیز چې تاسو زما نه تقاضه او مطالبه کړې ده؟ په اصل کښې سوال کوونکې حضرت فاطمه رضی الله عنها وه لیکن دا طلب او تقاضا چونکه د حضرت علی رضی الله عنه په رضامندی سره وه نو د دې وجې نه د طلب نسبت نبی صلی الله علیه و آله دواړو طرفته او فرمائیلو او وې فرمائیل چې، "سئلتان" (۵) بلکه د جامع ترمذی د یو روایت نه خو دا معلومیږي چې حضرت علی رضی الله عنه په خپله، خپله بی بی مبارکه د نبی صلی الله علیه و آله خدمت ته لیرلې وه چې هلته څوک خادم او گوره، حضرت علی رضی الله عنه فرمائی:

"شكت ال فاطمة مجل يديها من الطحن، فقلت لها: لو اتيت اباك، فسالتيه خادماً؟....." (۶)

(۱) لامع الدراری: ۳۰۲/۷۔

(۲) پورته حواله۔

(۳) فتح الباری: ۱۲۰/۱۱، رقم (۶۳۱۸)، وغمدة القاری: ۳۶/۱۵، طبری)۔

(۴) لم اجد في متون الحديث، وانما ذكره العيني في العمدة: ۳۶/۱۵۔

(۵) تعليقات اللامع: ۳۰۲/۷۔

(۶) انظر سنن أبي داود، كتاب الادب، باب التسبيح عند النوم، رقم (۵۰۶۳)۔

(۷) عمدة القاری: ۳۶/۱۵۔

(۸) الجامع للترمذی، كتاب الدعوات، باب ماجاء في التسبيح والتكبير.....، [بقیه بر صفحه آنده...]

د تلقین کړده کلماتو حکمت او خاصیت: حضرت فاطمه عليها السلام د نبی ﷺ نه د خادم تقاضه کړې وه په جواب کښې نبی ﷺ د هغې کلماتو تلقین او فرمائیلو چې په حدیث شریف کښې د هغې ذکر دي، دې کلماتو ته تسبیحات فاطمی هم وئیلې شي. امام ابن تیمیة رحمته الله لیکلی دی چې کوم کس د اوده کیدو په وخت ددې کلماتو پابندی کوي او خامخا ددې ورد کوي نو هغه به کله هم سترې نه شي، ځکه چې حضرت فاطمه عليها السلام هم ددې شکایت کړې وو چې د کار د پیروالي او د میچن کولو د وجې نه په لاسونو باندې پولی راختلې دی، ددې وجې نه یو خادم راکړی لیکن نبی کریم ﷺ د خادم په ځانې ددې کلماتو تلقین او فرمائیلو:

البتة د حافظ ابن حجر رحمته الله په دې کښې سوچ او فکر دي، هغوی دا وائی چې دا خبره متعین نه ده چې سترې والې به بالکل نه وي بلکه مطلب دادې چې کوم سترې ددې کلماتو پابندی کوي نو د کار د پیروالي د وجې نه به هغه ته څه نقصان نه کیږي، نه به دغه کار کول ددې انسان دپاره دروند ثابتیږي، اگرچه سترې والې هم محسوسوي ددې کلماتو د تلقین د حکمت په بیانولو کښې علامه عینی رحمته الله فرمائی چې د خادم په بدله کښې نبی ﷺ هغوی ته دا کلمات ورکړل او دا ئې غوره څیز اوښودلو ځکه چې د ذکر فائده د آخرت ثواب دي او د خادم فائده خدمت وغیره دي چې یو دنیوی کار دي، ددې وجې نه دا خبره منلې شوې ده چې "الثواب اکثر ابقى، فهو خير" (۲)

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: حدیث شریف سره د ترجمة الباب مطابقت واضح دي، په ترجمه کښې د امام بخاري رحمته الله دعوی دا وه چې د وخت امام او حاکم ته د خمس په مالونو کښې پوره تصرف او اختیار حاصل دي چرته چې خرچ کول غواړي نو خرچ کولې شي او په دې کښې څه قسم تخصیص نشته. لکه د باب په حدیث شریف کښې اوگوری چې نبی ﷺ ددې باوجود حضرت فاطمه عليها السلام ته د خادم ورکولو نه منع او فرمائیلې چې هغه ئې د ټولو نه نژدې او د زړه ټکړه وه او په هغې باندې ئې نورو خلقو ته ترجیح ورکړ. قاله اسماعیل القاضی (۳) هم دا خبره امام طبري رحمته الله هم فرمائیلې ده، لیکي چې:

"ولو كان قسماً مفروضاً لذوی القربى لا خدم ابنته، ولم يكن عليه السلام ليدع شيئاً اختاره الله لهم وامتن به عليهم لان ذلك حيف على المسلمين، واعتراض لها افاء الله عليهم، فاخدم منه ناساً، وتركه ابنته، ثم لم تدع

...بقیه از حاشیه گذشته [رقم (۳۴۰۵)، واخرجه ابو داود ایضا فی سننه، کتاب الخراج..... باب فی بیان مواضع قسم الخمس. رقم (۲۹۸۸)].

(۱) فتح الباری: ۱۲۴/۱۱-۱۲۵، کتاب الدعوات، رقم (۶۳۱۹)، والواہل الصیب: ۲۰۶، ذکر الله وفوائده، الحادیة والستون (۲) فتح الباری: ۱۲۵/۱۱.

(۳) عمدة القاری: ۳۶/۱۵، ومثله عند ابن بطلال بزیادة: ۲۷۳/۵. د باب د حدیث شریف د مزید وضاحت دپاره اوگوری، کشف الباری، کتاب الدعوات: (۲۰۴).

(۴) فتح الباری: ۲۱۶/۶، وشرح ابن بطلال: ۲۷۰/۵.

فيه رضى الله عنها حقاً لقرابة حين وكلها الى التسبيح، ولو كان فرضاً لبيته تعالى كما بين فرائض المواريث“ (۱)
هم دا خبره امام طحاوى رحمه الله هم ليكلي ده او مزيد فرمائي:

“وان ابابكر وعمر اهذا بذلك، وقسما جميع الخمس، ولم يجعل لاذى القرب منه حقاً مخصوصاً به، بل يحسب ما يرى الامام، وكذلك فعل على.....“ (۲)

يو اهم خبر داري: امام بخاري رحمه الله په ترجمه الباب كښې د اهل صفة او د ارا مل تذكره هم كړې وه ليكن په ترجمه كښې چې كوم حديث نقل شوي دي هغې كښې دا تذكره نشته. ددې په توجيه كښې حافظ صاحب فرمائي چې امام بخاري رحمه الله د خپل مشهور عادت مطابق دلته د هغه روايتونو او د حديثونو هغه طرقو طرفته اشاره كولو باندې اكتفاء كړې ده، په كومو كښې چې ددې ذكر دي. لكه د مسند احمد (په يو طريق كښې د باب حديث اوږدوالی سره ذكر كړې شوي دي، په هغې كښې د نبی كريم صلی الله علیه و آله دا كلمات هم دي:

“والله لا اعطيكما وادع اهل الصفة تطوى بطونهم من الجوع، لا احد ما انفق عليهم ولكن ابيعهم وانفق عليهم اثمانهم“ (۳)

په خدائي قسم زه تاسو ته نه شم دركولې په داسې حال كښې چې د اهل صفة خيتي د لوړې د وجې نه لگيدلې دي، ماسره داسې هيڅ خيز هم نشته چې په هغوی باندې خرچ كړم، ددې وجې نه زه دا خادمان خرطوم او ددې قيمت به په اهل صفة باندې خرچ كوم.

د مسند احمد ددې روايت نه دا فائده معلومه شوه چې د ديني علومو طالبان به د غنيمتونو په خمس وغيره كښې مقدم كولي شي د هغې خلقو په مقابل كښې د كومو ذكر چې په آيت كريمه كښې شوي دي (۴)

⑤ باب: قول الله تعالى: فان لله خمسة وللرسول / الانفال: ۴۱

يعنى: للرسول قسم ذلك، قال رسول الله صلی الله علیه و آله: (انما انا قاسم وخازن، والله يعطى)
د ترجمه الباب مقصد: دلته امام بخاري رحمه الله دا خبره راجحه گرځوي چې په خمس كښې د رسول اكرم صلی الله علیه و آله څه حصه نه وه، هغوی مبارك صرف د تقسيم ذمه دار وو، دا كار نبی كريم صلی الله علیه و آله ته د خمس په معامله كښې د الله تعالى له طرفه حواله كړې شوې وو چې هغوی مبارك دا حصه جات خپلو مستحقينو ته اورسوي. حضرت گنگو هي رحمه الله فرمائي: “ان اضافة الخمس اليه

(۱) شرح ابن بطلال: ۲۷۱/۵، وفتح الباري: ۲۱۶/۶-

(۲) شرح معاني الآثار للطحاوي: ۲/۲۰۱، وشرح ابن بطلال: ۲۷۱/۵، وفتح الباري: ۲۱۶/۶-

(۳) مسند الامام احمد بن حنبل: ۱/مسند على بن ابي طالب، رحمته الله رقم ((۸۳۸))-

(۴) فتح الباري: ۲۱۶/۶، وعمدة القاري: ۳۶/۱۵-

(۵) شرح ابن بطلال: ۲۷۲/۵-

تبارک وتعالی تبرک، وال النبی صلی الله علیه وسلم باعتبار أنه یقسمه، وانما هو لنوائب المسلمین“ (۱)
د ایت کریمه په تفسیر کښې اختلاف: په ترجمه الباب کښې چې کوم آیت کریمه ذکر کړې
شوې دې نو د هغې په تفسیر کښې د مفسرینو حضراتو اختلاف دې، ددې څه تفصیل
وړاندې باب کښې ذکر کړې شوې دې، دلته چې باب سره متعلقه کومه مسئله ده هغه دا

چې لمرسول“ کښې چې کوم لام دې، دا لام د تمليک دې یا بل څه لام دې؟
امام بخاری رحمته الله علیه دویمه رائي غوره ګرځولې ده چې نبی کریم صلی الله علیه وسلم به د خمس په حصو کښې
مالک نه وو بلکه هغوی ته صرف د تقسیم ذمه داری حواله کړې شوې وه چې دا په خپلو
مصارفو کښې خرچ کړي. په دې مسئله کښې د شوافعو حضراتو دوه قولونه دي او مشهور
قول ئې دادې چې دا لام دلته د تمليک دې، هغوی دا وائي چې نبی کریم صلی الله علیه وسلم به په جنگ کښې
حاضر وو یا حاضر نه وو لیکن هغوی ته به یوه حصه خامخا ملاویدله او نبی صلی الله علیه وسلم به د هغې
مالک وو (۲)

په دې سلسله کښې د موالکو حضراتو مسلك هم هغه دې کوم چې د امام بخاری رحمته الله علیه دې (۳)
امام اسماعیل قاضی رحمته الله علیه فرمائي:

”لاحجة لمن ادعى أن الخمس يملكه النبي صلى الله عليه وسلم بقوله تعالى: ﴿واعلموا أنما غنمتم من شيء فإن لله خمسة وللرسول﴾ (۴) لانه تعالى قال: ﴿يستلونك عن الانفال، قل الانفال لله والرسول﴾ (۵) واتفقوا على أنه
قبل فرض الخمس كان يعطى الغنيمة للغنائين بحسب ما يؤدي اليه اجتهاده، فلما فرض الخمس تبين
للغنائين أربعة أخماس الغنيمة، لا يشار كهم فيها أحد، وانما حص النبي صلى الله عليه وسلم بنسبة الخمس
اليه اشارة الى أنه ليس للغنائين فيه حق بل هو مفوض الى رأيه، وكذلك الى الامام بعده.....“ (۶)

قال البهلب: ”وانما حص بنسبة الخمس اليه عليه السلام، لان ليس للغنائين فيه دعوى، وانما هو الى اجتهاد
الامام، فان رأى رفعه بيت المال لها يخش أن ينزل بالمسلمين رفعه، أو يجعله فيما يراه، وقد يقسم منه
للغنائين، كما أنه يعطى من البغام لغير الغنائين، كما قسم لجعفر وغيره من لم يشهد الواقعة، فالخمس وغيره

(۱) لامع الدراري وتعليقاته: ۳۰۲/۷-

(۲) فتح الباري: ۲۱۷/۶- ۲۱۸، وعمدة القاري: ۳۶/۱۵-

(۳) بداية المجتهد: ۴۴۶/۳، كتاب الجهاد، الفصل الاول في حكم خمس الغنيمة-

(۴) الانفال: ۴۱-

(۵) الانفال: ۱-

(۶) فتح الباري: ۲۱۸/۶، وقال ابن بطال رحمته الله علیه في شرحه (۲۷۴/۵): وغرض البخاري في هذا الباب ايضا الرد
على من جعل للنبي خمس الخمس ملكا؛ استدلالا بقوله تعالى: (واعلموا انما غنمتم من شيء فان لله خمسة

ال قسمتہ علیہ السلام واجتهاده، وليس له في الخمس ملك، ولا يمتلك من الدنيا الا قدر حاجته، وغير ذلك كله عائد على المسلمين، وهذا معنى تسميته بقاسم، وليست هذه التسمية بموجهة الا تكون اثره في اجتهاده لقوم دون قوم“ (ابن بطال: ۲۴۳/۵-۲۴۵)

په دې عبارت کښې څنگه چې د امام شافعي رحمته الله عليه د دليل رد دې نو دغه شان د نبی کریم صلی الله علیه و آله طرفته د خمس د نسبت کولو حکمت هم دې لکه امام شافعي رحمته الله عليه د آیت کریمه د ظاهر نه استدلال کوی چې دلته لام د تمليك دې او نبی کریم صلی الله علیه و آله به د خمس مالک وو ليکن دا دليل ددې وجې نه صحيح نه دې چې د سورة انفال په اولنی آیت کښې هم «الانفال لله والرسول» فرمائيږي شوي دي، دا آیت د خمس د فرض کيدو نه مخکښې نازل شوي دي او په دې باندې تقريباً د ټولو اتفاق دې چې د خمس د فرض کيدو نه مخکښې هم غنيمت تقسيم شوي دي او دا تقسيم به د نبی کریم صلی الله علیه و آله د رائي او د اجتهاد مطابق وو نو کله چې د خمس فرضيت راغی نو دا خبره واضحه شوه چې د غنيمت په پنځو حصو کښې په خپله د لښکر څلور حصې دي چې په دې څلورو کښې دوی سره بل څوک شريکيدې نه شي او يو حصه چې هغې ته خمس وييلې شي هغې سره متعلق تفصيل تير شوي باب کښې تير شو.

د «وللرسول» د تخصيص بالذکر وجه: اوس سوال دا پاتې شو چې بيا په آیت کریمه کښې «وللرسول» خالص طور سره د ذکر کولو څه وجه ده؟ او د خمس نسبت د نبی کریم صلی الله علیه و آله طرفته ولې او کړې شو؟

ددې جواب هم په خپله قاضي اسماعيل رحمته الله عليه ورکړې دې چې په آیت کریمه کښې د نبی کریم صلی الله علیه و آله ذکر ددې خبرې د بيانولو دپاره او کړې شو چې په دې خمس کښې د مجاهدينو هيڅ حق نشته، د هغوی حق صرف څلورو حصو سره متعلق دې او ددې مصرف به څه وي، دا به کوم ځانې کښې خرچ کولې شي؟ نو ددې جواب دا ورکړې شو چې دا خبره د نبی صلی الله علیه و آله په رائي باندې موقوف ده، نبی صلی الله علیه و آله مبارک ته اختيار دې چې په خپله مرضي باندې دا کوم ځانې کښې خرچ کوی، هم دا حکم د هر هغه امام او حاکم دپاره دې چې کوم وروستو زمانې والا دي.

قوله: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: (انما انا قاسم وخازن، والله

يعطى): نبی صلی الله علیه و آله فرمائيږي دې زه خو تقسيموونکې او خازن يم او ورکوونکې ذات د الله تعالی دي.

د تعليق مقصد: دا تعليق دې او امام بخاري رحمته الله عليه ددې په ذريعي سره په خپل بيان کرده موقف باندې استدلال کړې دې چې نبی صلی الله علیه و آله په خمس کښې د خپلې حصې مالک نه وو، بلکه د تقسيمولو او د هغې د حفاظت کولو ذمه دار وو او په هغه حضراتو باندې ئې رد کړې دې څوک چې ددې د ملکيت قائل دی.)

د مذکوره تعلیق موصولاً تخريج حافظ ابن حجر رحمته الله فرمائی چې د امام بخاری رحمته الله دا مذکوره تعلیق دې الفاظو سره په دې یو سیاق کښې چرته هم نه دې راغلي حقیقت کښې دا تعلیق د دوو مختلفو حدیثونو نه اخستلې شوې دې لکه انما انا قاسم د حضرت ابوهریره رضی الله عنه د حدیث حصه ده کوم چې وړاندې هم په دې باب (^۱) کښې وړاندې موصولاً راځي دغه شان وړاندې په کتاب العلم کښې د حضرت معاویه رضی الله عنه حدیث تیر شوې دې، په هغې کښې دا الفاظ راغلي دي انما انا قاسم والله يعطی“ (^۲) هرچه دا حدیث انما انا خازن، والله يعطی“ دې نو دا حدیث د حضرت معاویه رضی الله عنه د روایت نه وړاندې په کتاب الاعتصام..... (^۳) کښې موصولاً راځي (^۴) دې سره یو شان الفاظ امام داود هم د حضرت ابوهریره رضی الله عنه نه نقل کړې دي (^۵)

د هغوی د حدیث الفاظ د امام بخاری رحمته الله په مدعی باندې زیات وضاحت سره دلالت کوي. د هغې الفاظ دا دي: “ان انا الا خازن، اضع حيث امرت“ (^۶)

ترجمة الباب سره د مذکوره تعلیق مقصد: امام بخاری رحمته الله خپله مدعا دا بیان کړې وه چې نبی صلی الله علیه و آله د خمس د خمس مالک نه وو بلکه صرف منتظم او متولی وو، ددې د ثابتولو دپاره امام صاحب دا مذکوره پورتنې تعلیق هم نقل کړو، په کوم کښې چې نبی صلی الله علیه و آله خپل ځان ته قاسم او خازن وئیلې دې او الله تعالی ته ئې ورکوونکي ذات وئیلې دې، ددې نه معلومه شوه چې نبی صلی الله علیه و آله به د څه څیز مالک نه وو. حضرت گنګوهی رحمته الله فرمائی:

“واستدل على مدعاة من حيث انه صلى الله عليه وسلم سى نفسه قاسماً، والله المبعطى فعلم انه لم يكن يملك شيئاً، والله أعلم“ (^۷)

ددې نه پس په دې باندې ځان پوهه کړئ چې امام بخاری رحمته الله د خپلې مدعا دپاره څلور موصول حدیثونه هم ذکر کړې دي، په هغې کښې اولنې حدیث د حضرت جابر رضی الله عنه دې، کوم چې مؤلف په مختلفو طرقو سره نقل کړې دې (^۸)

^۱ (البخاری. رقم (۳۱۱۷)) _

^۲ (صحيح البخاری. کتاب العلم. باب من یرد الله به خیرا یفقه فی الدین. رقم (۷۱)) _

^۳ (صحيح البخاری. کتاب الاعتصام. باب قول النبی صلی الله علیه و آله : لا تزال طائفة..... “ رقم (۷۳۱۲)) _

^۴ (تغلیق التعلیق: ۴/۷۱، وفتح الباری: ۶/۲۱۸) _

^۵ (سنن ابی داود. کتاب الخراج..... باب فیما یلزم الامام من امر الرعية..... رقم (۲۹۴۹)) _

^۶ (عمدة القاری: ۱۵/۳۷، وفتح الباری: ۶/۲۱۸) _

^۷ (لامع الدراری: ۷/۳۰۳) _

^۸ (فتح الباری: ۶/۲۱۸) _

۲۹۴۷/۲۹۴۶ (۱) حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ وَمَنْصُورٍ وَقَتَادَةَ سَمِعُوا سَالِمَ بْنَ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - قَالَ وَلَدَ لِرَجُلٍ مِنْ أُمَّةٍ الْأَنْصَارِ غُلَامًا، فَأَرَادَ أَنْ يُسَمِّيَهُ مُحَمَّدًا - قَالَ شُعْبَةُ فِي حَدِيثٍ مَنْصُورٍ أَنَّ الْأَنْصَارِيَّ قَالَ حَمَلْتُهُ عَلَى عُنْقِي فَأَتَيْتُ بِهِ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - . وَفِي حَدِيثِ سُلَيْمَانَ وَلَدَهُ غُلَامًا، فَأَرَادَ أَنْ يُسَمِّيَهُ مُحَمَّدًا - قَالَ «سَمُّوا بِاسْمِي، وَلَا تَكُنُّوا بِكُنْيَتِي، فَإِنِّي إِنَّمَا جِئْتُ قَاسِمًا أَقْسِمُ بَيْنَكُمْ». وَقَالَ حُصَيْنٌ «بُعِثْتُ قَاسِمًا أَقْسِمُ بَيْنَكُمْ». قَالَ عُمَرُو أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ سَمِعْتُ سَالِمًا عَنْ جَابِرٍ أَرَادَ أَنْ يُسَمِّيَهُ الْقَاسِمَ فَقَالَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «سَمُّوا بِاسْمِي وَلَا تَكُنُّوا بِكُنْيَتِي».

رجال الحديث

- ① ابوالوليد: دا ابوالوليد هشام بن عبد الملك طيالسي رحمته الله دې د دوى تذکره په کتاب الايمان، "باب علامة الايمان حب الانصار" کښې راغلې ده (۲)
- ② شعبه: دا امير المؤمنين فى الحديث شعبه بن الحجاج بصرى رحمته الله دې د دوى حالات په کتاب الايمان، "باب المسلم من سلم المسلمون من....." کښې تير شوې دى (۳)
- ③ سليمان: دا سليمان بن مهران رحمته الله دې چې په اعمش باندې مشهور دې د دوى حالات په کتاب الايمان، "باب ظلم دون ظلم" کښې تير شوې دى (۴)
- ④ منصور: دا منصور بن معتمر رحمته الله دې د دوى تذکره په کتاب العلم، "باب من جعل لاهل العلم اياما معلومة" کښې تيره شوې ده (۵)
- ⑤ قتاده: دا قتاده بن دعامة سدوسي بصرى رحمته الله دې د دوى حالات په کتاب الايمان، "باب من

(۱) قوله: جابر بن عبدالله رحمته الله "الحديث، أخرجه البخاري فى نفس هذا الباب، رقم (۳۱۵)، وكتاب الانبياء، باب كنية النبي صلی الله علیه وسلم، رقم (۳۵۳۸)، وكتاب الادب، باب احب الاسماء الى الله عزوجل، رقم (۶۱۸۶)، وباب قول النبي صلی الله علیه وسلم: سموا باسمي.....، رقم (۶۱۸۷)، وباب من سمى باسماء الانبياء، رقم (۶۱۹۶)، ومسلم، كتاب الادب، باب النهى عن التكنى بابى القاسم، رقم (۵۵۸۸-۵۵۹۷)، والترمذى، كتاب الادب، باب ماجاء فى كراهة الجمع بين اسم.....، رقم (۲۸۴۲)، وابو داود، كتاب الادب، باب من رأى ان لا يجمع بينهما، رقم (۴۹۶۶)، وابن ماجه، كتاب الادب، باب الجمع بين اسم النبي.....، رقم (۳۷۳۶)۔

(۲) كشف الباري: ۳۸/۲۔

(۳) كشف الباري: ۶۷۸/۱۔

(۴) كشف الباري: ۲۵۱/۲۔

(۵) كشف الباري: ۲۷۰/۳۔

الایمان ان یحب لایه ما یحب لنفسه“ کنبی راغلی دی (۱)

① سالم: دا مشهور تابعی حضرت سالم بن ابی الجعد رضی الله عنه دی (۲)

② جابر بن عبدالله رضی الله عنه: دا مشهور صحابی حضرت جابر بن عبدالله الانصاری رضی الله عنه دی (۳)

③ حصین: دا ابو الهذیل حصین بن عبد الرحمن کوفی رضی الله عنه دی (۴)

④ عمرو: دا عمرو بن مرزوق رضی الله عنه دی (۵)

۲۹۴۷: (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ الْأَعْمَشِ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ وَلَدَ لِي رَجُلٌ مِنَّا غُلَامٌ فَسَمَّاهُ الْقَاسِمَ فَقَالَتِ الْأَنْصَارُ لَا نَكْنِيكَ أَبَا الْقَاسِمِ وَلَا نُنْعِمُكَ عَيْنًا، فَأَتَى النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَلَدَ لِي غُلَامٌ، فَسَمَّيْتُهُ الْقَاسِمَ فَقَالَتِ الْأَنْصَارُ لَا نَكْنِيكَ أَبَا الْقَاسِمِ وَلَا نُنْعِمُكَ عَيْنًا. فَقَالَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «أَحْسَنَتِ الْأَنْصَارُ، سَمَّوْا بِاسْمِي، وَلَا تَكُنُوا بِكُنْيَتِي، فَإِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ». [۳۳۴۵، ۵۸۳۲، ۵۸۳۳، ۵۸۳۵، ۵۸۴۳]

رجال الحديث

① محمد بن يوسف: دا محمد بن يوسف بیکندي رضی الله عنه دی. دوی حالات په کتاب العلم، ”باب

مقی یصح سماع الصغیر؟“ کنبی بیان کړې شوي دي (۱)

② سفیان: دا مشهور محدث حضرت سفیان ثوری رضی الله عنه دی. دوی تذکره په کتاب الایمان،

”باب ظلم دون ظلم“ کنبی تیره شوي ده (۲)

روایت دریو طرقو سره د راوړلو وجه: ددې نه پس په دې باندې ځان پوهه کړې چې امام بخاری رضی الله عنه د حضرت جابر رضی الله عنه دا حدیث د دریو شیخانو نه نقل کړې دی، د ابو الولید هشام

بن عبد الملك طيالسی، عمرو بن مرزوق او د محمد بن يوسف بیکندي رحمهم الله.

د ابو الولید او د عمرو بن مرزوق شیخ شعبه دي او د محمد بن يوسف شیخ سفیان ثوری دي.

① (کشف الباری: ۳/۲)

② (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الوضوء، باب التمسية على كل حال وعند الوقاع)۔

③ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الوضوء، باب من لم ير الوضوء الا من المخرجين.....)۔

④ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب مواقيت الصلاة، باب الاذان بعد ذهاب الوقت)۔

⑤ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الغسل، باب اذا التقى الحتانان)۔

⑥ (قوله: عن جابر بن عبد الله الانصاري: الحديث، مر تخريجه في الحديث السابق)۔

⑦ (کشف الباری: ۳/۳۸۷)۔

⑧ (کشف الباری: ۲/۲۷۸)۔

اوس سوال دادې چې مؤلف همام دا روایت درېو طرقو سره ولې نقل کړې دي؟ نو ددې جواب دا دي چې امام شعبه رحمته الله علیه دا روایت د مختلفو شیوخو نه روایت کړې دي او ددې شیوخو په الفاظو کښې اختلاف دي. ددې اختلاف د ختمولو دپاره او د امام ثوري روایت ته ترجیح ورکولو دپاره مؤلف دا طریقه اختیار کړه. لکه د امام شعبه رحمته الله علیه هغه روایت، په کوم کښې چې د امام بخاری شیخ ابو الولید دي، په هغې کښې سلیمان، منصور او قتاده هؤلاء شیوخ شعبه رحمته الله علیه واره حضرات په دې باندې متفق دي چې انصاری، د کوم چې ځوڼې پیدا شوې وو نو هغه د خپل ځوی نوم محمد کیخودل غوښتل او د عمرو بن مرزوق روایت، کوم چې امام بخاری تعلیقاً نقل کړې دي په هغې کښې شعبه د قتاده نه روایت کولو سره فرمائی چې انصاری صحابی د خپل ځوی نوم قاسم کیخودل غوښتل. دغه شان د شعبه په روایت کښې اختلاف راغی چې مذکوره انصاری صحابی د خپل ځوی نوم محمد کیخودل غوښتل یا قاسم؟ ددې اختلاف د ختمولو دپاره امام بخاری رحمته الله علیه د سفیان ثوري روایت هم نقل کړو او ددې خبرې د ترجیح طرفته ئې اشاره او فرمائیله چې مذکوره انصاری صحابی د خپل ځوی نو محمد نه بلکه قاسم کیخودل غوښتل. معنوی او عقلی اعتبار سره م د امام ثوري رحمته الله علیه دا روایت ددې وجې نه راجح دي چې انصارو په مذکوره انصاری صحابی باندې کوم نکیر کړې وو د هغې وجه دا وه چې که هغوی د خپل ځوی نوم قاسم کیخودلې وو نو د هغه کښت به ابو القاسم شوې وو او دا خبره نورو انصارو ته ناخوښه وه، ددې ممانعت هم راغلې دي په خلاف د محمد کیخودلو، چې په دې صورت کښې به ئې کښت ابو محمد وو، په دې کښې څه باک هم نشته او ممانعت په کښې هم نشته.

ترجمه الباب سوره د حدیث شریف مطابقت: ترجمه الباب سوره ددې حدیث شریف مطابقت په دې جمله کښې دي: "انما جعلت قاسماً أقسم بکم" دا جمله د امام بخاری رحمته الله علیه په مدعی باندې واضح دلالت کوي.

دویم حدیث شریف د حضرت معاویه رضی الله عنه دي.

۲۹۴۸: (۲) حَدَّثَنَا جَبَّارُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَمِعَ مُعَاوِيَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- «مَنْ يُرِدِ اللَّهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ، وَاللَّهُ الْمُعْطَى وَأَنَا الْقَاسِمُ، وَلَا تَزَالُ هَذِهِ الْأُمَّةُ ظَاهِرِينَ عَلَى مَنْ خَالَفَهُمْ حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ» [۷۱]

(۱) فتح الباری: ۲۱۸/۶، وعمدة القاری: ۳۸/۱۵، وشرح القسطلانی: ۵/۲۰۳)۔

(۲) عمدة القاری: ۳۸/۱۵)۔

(۳) قوله: معاوية رضی الله عنه: الحديث، مر تخريجه في كتاب العلم، كشف الباری: ۳/۲۷۴)۔

رجال الحديث

- ① حبان دا ابو محمد حبان بن موسی مروزی رحمته الله دې. (۱)
- ② عبدالله: دا مشهور محدث او امام عبدالله بن مبارك مروزی رحمته الله دې. ددوی تذکره د بده الوسی "په الحديث الخامس" کښې اجمالاً تیره شوې ده. (۲)
- ③ یونس: دا یونس بن یزید الایلی رحمته الله دې. د دوی حالات په بده الوسی "کښې اجمالاً او په کتاب العلم، "باب من یرد الله به خیراً یفقهه...." کښې تفصیلاً تیر شوې دی. (۳)
- ④ الزهوی: دا محمد بن مسلم بن شهاب زهري رحمته الله دې. د دوی تذکره په بده الوسی "کښې راغلي ده. (۴)
- ⑤ حمید بن عبدالرحمن: دا حمید بن عبدالرحمن بن عوف قرشي رحمته الله دې. د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب تطوع قیام رمضان....." کښې تیر شوې دی. (۵)
- ⑥ معاویه: د حضرت معاویه بن ابی سفیان رضی الله عنه تذکره په کتاب العلم، "باب من یرد الله به خیراً یفقهه...." کښې بیان شوې ده. (۶)
- د حدیث شریف ترجمه: حضرت حمید بن عبدالرحمن رحمته الله فرمائی چې ما د حضرت معاویه رضی الله عنه نه واوریدل چې رسول الله مبارک صلی الله علیه و آله وسلم فرمائی چې الله تعالی کوم بنده سره د خیر اراده او فرمائی نو هغه ته د دین پوهه ورکړی او ورکونکې ذات د الله تعالی دې او زه تقسیموونکې یم. او دا امت به همیشه دپاره په خپلو مخالفینو باندې غالب وی، تردې چې د الله تعالی حکم (قیامت) راشي او هم دوی به غالب وی..
- ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: دا حدیث په دریو جزونو باندې مشتمل دې، ددې اولنې جزء "من یرد الله به..... الدین" دې، ددې تفصیلی تشریح په کتاب العلم کښې تیره شوې ده. (۷)

ددې دویم جزء "والله المعطى وأنا القاسم" دې، هم دا حصه ترجمه الباب سره مطابقت لری، د امام

(۱) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الاذان، باب یسلم الامام)۔

(۲) کشف الباری: ۱/۴۶۲)۔

(۳) کشف الباری: ۱/۴۶۳، ۳/۲۸۲)۔

(۴) کشف الباری: ۱/۳۲۶، الحديث الاول)۔

(۵) کشف الباری: ۲/۳۱۶)۔

(۶) کشف الباری: ۳/۲۸۵)۔

(۷) کشف الباری: ۳/۲۸۹ و ۲۹۰)۔

بخاری رضی اللہ عنہ دعویٰ دا وه چې نبی صلی اللہ علیہ وسلم د غنیمت د مالونو تقسیمونکې دې، ددې خبرې اظهار په دې جمله کښې موجود دې. (۱)

دریم جزء ولا تزال هذه الامة..... وهم ظاهرون“ دې ددې تشریح هم په کتاب العلم کښې تیره شوې ده. (۲)

دریم حدیث شریف د حضرت ابوهریره رضی اللہ عنہ دې.

۲۹۴۹: (۳) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ حَدَّثَنَا هِلَالٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عُمَرَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ «مَا أُعْطِيَكُمْ وَلَا أَمْنَعُكُمْ، أَنَا قَاسِمٌ أَضَعُ حَيْثُ أَمَرْتُ».

رجال الحديث

① محمد بن سنان، ② فليح، ③ هلال: د فليح نه عبد الملك بن سليمان بن معيرده او د هلال نه ابن علي الفهري مراد دی. ددې درې واړو حضراتو تذکره تفصیل سره په کتاب العلم، ”باب من سئل علماً وهو مشغول....“ کښې راغلې ده. (۴)

④ عبد الرحمن بن أبي عمرة: دا عبد الرحمن بن أبي عمرة الانصاري النجاري رضی اللہ عنہ دې. (۵)

⑤ ابوهريره رضی اللہ عنہ: د حضرت ابوهريره رضی اللہ عنہ حالات په کتاب الايمان، ”باب امور البيان“ کښې تيره شوې دي. (۶)

قوله: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: ما أعطيكُم، ولا أمنعكم، أنا

قاسم أضع حيث أمرت: د حضرت ابوهريره رضی اللہ عنہ نه روايت دې چې رسول الله مبارك صلی اللہ علیہ وسلم او فرمايل چې زه ورکوم، منع او بندول نه کوم، زه خو صرف تقسيمونکې يم، چرته چې حکم کيږي نو هلته خرچ کوم.

په مسند احمد شريف کښې هم دا روايت د فليح نه سريج بن نعمان روايت کړې دې، په هغې کښې د ”ما اعطيكُم.....“ نه مخکښې ددې جملې اضافه هم ده، ”والله البعطي“ چې ورکونکې ذات د الله تعالى دې. (۷)

(۱) فتح الباري: ۲۱۸/۶، وعمدة القاري: ۴۰/۱۵) _

(۲) كشف الباري: ۲۹۱/۳ _ ۲۹۵

(۳) قوله: عن أبي هريرة رضی اللہ عنہ: الحديث، تفرد به البخاري رضی اللہ عنہ، انظر تحفة الاشراف: ۱۰/۱۴۹، رقم (۱۳۶۰۶)

(۴) كشف الباري: ۵۳/۳، و: ۶۳/۳ _

(۵) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب المساقاة، باب حلب الابل على الماء _

(۶) كشف الباري: ۶۵۹/۱ _

(۷) هذا ما ذكره الحافظ، والكنى لم اجد هذه الرواية في مسند الامام احمد _

او د حدیث شریف مطلب دادې چې ورکوونکې ذات د الله تعالى دې، زه صرف په خپلې رائي سره نه چاته ورکوم او نه منع کوم، ددې وجې نه که زه چاته ورکړم نو هغه هم د الله تعالى په حکم سره او که چاته ورنه کړم او منع او کړم نو دا هم د الله تعالى په حکم سره، په دې زما ذاتی څه دخل نشته، زما حیثیت صرف د یو تقسیموونکي دې چې د موقع محل په اعتبار سره ورکوي یا منع کوي (د) او د ابن همام عن ابی هريره رضی الله عنه طریق سره چې کوم روایت امام ابو داود نقل کړې دې، په هغې کښې "ان انا الا خازن" دې (د).

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت بالکل واضح دې، کوم چې په دې جمله کښې دې: "انا قاسم". ددې نه د امام بخاري رحمته الله علیه مدعی په واضحه توگه ثابتیږي. خلورم حدیث د حضرت خوله انصاریه رضی الله عنها دې.

۲۹۵: (د) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو الْأَسْوَدِ عَنِ ابْنِ أَبِي عِيَّاشٍ - وَاسْمُهُ نَعْمَانُ - عَنْ خَوْلَةَ الْأَنْصَارِيَّةِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - قَالَتْ سَمِعْتُ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَقُولُ «إِنَّ رَجُلًا يَخْوَضُونَ فِي مَالِ اللَّهِ بِغَيْرِ حَقٍّ، فَلَهُمُ النَّارُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ».

رجال الحديث

- ① عبدالله بن يزيد: دا ابو عبد الرحمن عبد الله بن يزيد المقرئ رحمته الله عليه دې (د)
- ② سعيد بن ابی ايوب: دا سعيد بن مقلاص ابو ايوب خزاعي مصري رحمته الله عليه دې (د)
- ③ ابو الاسود: دا ابو الاسود محمد بن عبد الرحمن بن نوفل نوفلي رحمته الله عليه دې (د)
- ④ ابن ابی عياش النعمان: دا نعمان ابن ابی عياش زيد زرقى رحمته الله عليه دې د دوى تذکره په کتاب الجهاد والسير "باب فضل الصوم في سبيل الله" کښې تيره شوې ده. (د)

١ (فتح الباری: ۲۱۸/۶، وعمدة القاری: ۴۰/۱۵، وبذل المجهود: ۱۰/۱۲۸) _

٢ (سنن ابی داود، کتاب الخراج:، باب فيما يلزم الامام من امر الرعية، رقم (۲۹۴۸)) _

٣ (عمدة القاری: ۴۰/۱۵) _

٤ (قوله: عَنْ خَوْلَةَ الْأَنْصَارِيَّةِ..... الحديث، أخرجه الترمذی فی کتاب الزهد، باب ماجاء فی اخذ المال بحصة، رقم (۲۳۷۵)) _

٥ (د دوى د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب الاذان، باب بين كل اذانين صلاة لمن شاء) _

٦ (د دوى د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب التهجد، باب المداومة على ركعتي الفجر) _

٧ (د دوى د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب الغسل، باب الجنب يتوضا ثم ينام) _

٨ (كشف الباری، کتاب الجهاد: ۳۰۷/۱) _

⑤ خوله الانصاريه: دا حضرت خوله بنت قيس بن قهد بن قيس بن ثعلبه النجاريه الانصاريه (رضي الله عنها) ده.

بعضي حضراتو ددې د پلار نوم ثامر بنودلې دې ليکن تحقيقی خبره دا ده چې ثامر ددې د پلار لقب دې، نوم ئې نه دې. ددې وجې نه کله دې ته بنت ثامر او کله ورته بنت قيس وئيلې شوې ده، په حقيقت کښې دا يو زنانه ده.

ابن المديني (رحمته الله) فرمائي، "خوله بنت قيس هي خولة بنت ثامر" (١)

بعضو ددې نوم خويله-تصغير سره- هم نقل کړې دې. (٢) ددې کنيت ام محمد وو. دا د نبي (صلي الله عليه وسلم) د تره حضرت حمزه (رضي الله عنه) په نکاح کښې وه. د هغوی د شهادت نه پس حضرت خوله (رضي الله عنها) يو انصاري صحابي حضرت حنظله (رضي الله عنه) سره نکاح اوکړه. بعضو د دوی نوم نعمان بن عجلان بنودلې دې، ددې تعلق د بنو زريق سره وو. (٣)

دا د نبي کریم (صلي الله عليه وسلم) نه روايت کوي. او ددې نه په روايت کوونکو کښې ابو الوليد عبيد سنوطا، معاذ بن رفاعه زرقی او نعمان بن ابي عياش زرقی (رحمته الله) وغيره شامل دي. (٤) د دوی نه بخاري او ترمذي روايت کوي. (٥) ددوی نه صرف يو حديث (د باب حديث شريف) روايت دې. (٦) رضي الله عنها وارضاه

قوله: قالت: سمعت النبي ﷺ يقول: ان رجلاً يتخوضون في مال الله بغير

حق، فلهم النار يوم القيامة: حضرت خوله (رضي الله عنها) فرمائي چې ما د نبي کریم (صلي الله عليه وسلم) نه واوريدل چې بعضې خلق به په ناحقه د الله تعالی په مال کښې تصرف کوي، نو د داسې خلقو دپاره د قيامت په ورځ د جهنم اور دې. "يتخوضون" د خوض نه مشتق دې، ددې معنی ده په اوبو کښې تلل او اوبو ته حرکت ورکول، ليکن بيا دا لفظ په دې معنی کښې مستعمل شو چې په يو څيز کښې دننه کيدل او په هغې کښې تصرف کول. (٧)

(١) تهذيب الكمال: ١٦٤/٣٥، وعمدة القاري: ٤٠/١٥، والاستيعاب: ٥١٣/٢، وتهذيب التهذيب: ٤٥١/١٢

(٢) تهذيب المزي: ١٦٥/٣٥، والاصابة: ٢٨٩/٤، والعمدة: ٤٠/١٥، وتهذيب التهذيب: ٤١٥/١٢ _

(٣) تهذيب الكمال: ١٦٥/٣٥، وعمدة القاري: ٤٠/١٥، وتهذيب التهذيب: ٤١٥/١٢ _

(٤) تهذيب الكمال: ١٦٥/٣٥، وعمدة القاري: ٤٠/١٥، والاستيعاب: ٥١٥/٢ _

(٥) تهذيب الكمال: ١٦٥/٣٥، وتهذيب التهذيب: ٤١٥/١٢ _

(٦) پورته حواله جات _

(٧) معرفة الصحابة للاصبهاني: ٢٢٠/٥، وقال الخزرجي: لها احاديث، روى عنها في (خ) حديثا واحدا، وكذلك الترمذي..... خلاصة لتذهيب تهذيب الكمال: ٤٩٠، حرف الخاء، من كتاب النساء _

(٨) عمدة القاري: ٤٠/١٥، وارشاد الساري: ٢٠٥/٥ _

ددې نه پس په دې ځان پوهه کړې چې هم دا حدیث امام ترمذی رحمہ اللہ هم نقل کړې دې، په هغې کښې د حدیث په الفاظو کښې څه اضافه هم ده، ابو الولید عبید سنوطا فرمائی:

سمعت خولة بنت قيس . وكانت تحت حمزة بن عبد المطلب . تقول : سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول : ان هذا المال خضرة حلوة ، من اصابه بحقه بورك له فيه ، ورب متخوض فيما شاعت نفسه من مال الله ورسوله ليس له يوم القيامة الا النار“ (۱)

او د ابن عبد البر رحمہ اللہ چې کوم روایت دې، په هغې کښې د حدیث پس منظر هم دې چې نبی صلی اللہ علیہ وسلم دا کلمات کله ارشاد فرمایلې وو، په هغې کښې دی:

“ان النبي صلى الله عليه وسلم تذاكر هو و حمزة بن عبد المطلب الدنيا، فقال النبي صلى الله عليه وسلم.....“ (۲)

د دواړو روایتونو مطلب دادې چې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم او د هغوی تره مبارک حضرت حمزه رضی اللہ عنہ خپل مینځ کښې د دنیا په باره کښې مذاکره کوله چې ددې دنیا څه حقیقت دې؟ نو نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمایل چې حقیقت کښې دا دنیا میلان پیدا کوونکې او خوږه ده، خلق ددې طرفته مائله کیږي، د ښه نه ښه څیز په تلاش کښې اخته وي لیکن په دې کښې به برکت هغه چاته وي چې څوک د خپلې حصې په اندازه باندې ددې نه واخلې، د چا مال په ناحقه اونه خوری او ډیر خلق داسې هم دی چې د الله تعالی او د رسول په مال کښې د خپل نفس د خوښې مطابق په ناحقه تصرف کوي نو د داسې خلکو دپاره د قیامت په ورځ به صرف او صرف د جهنم اور وي، دا خلق به ددې مستحق وي. پورته په حدیث شریف کښې د مال دپاره خبر موند استعمال کړې شوې دې ځکه چې دلته مال د غنیمت په معنی کښې دې، ددې دلیل د “من مال الله“ الفاظ دی او د خضرة معنی مشتبه ده چې خلق ددې طرفته مائله کیږي (۳) ددې نه علاوه په حدیث شریف کښې په “من مال الله“ کښې لفظ د الله د مظهر اقیم مقام البصر د قبیل نه دې، یعنی “من ماله“ وئیل کافی وو لیکن لفظ د الله تاکید دپاره ظاهر کړې شو او دې خبرې طرفته اشاره او کړې شوه چې د الله تعالی او د رسول په مال کښې د نفس او د زړه د خوښې مطابق تصرف کول ډیر نامناسبه کار دي (۴)

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: حافظ رحمہ اللہ فرمائی چې ترجمه الباب سره ددې حدیث شریف مناسبت په تی مال الله بغیر حق“ کښې دې او مطلب دادې چې دا خلق د مسلمانانو په مالونو کښې په ناحقه سره تصرف کوي او دا خبره عامه ده چې دا ناحقه

(۱) جامع الترمذی، کتاب الزهد، باب (۴۱) ماجاء فی اخذ المال بحقه، رقم (۲۳۷۴)۔

(۲) الاستیعاب فی اسماء الاصحاب: ۵۱۵/۲۔

(۳) فتح الباری: ۲۱۹/۶۔

(۴) پورته حواله۔

تصرف کول په تقسیم کښې وی یا د تقسیم نه بغير وی^(۱)، او علامه کرمانی رحمته الله علیه دا فرمائی چې ترجمه الباب سره ددې حدیث مناسبت پټ دي، واضح او صریح نه دي البته دا ممکنه ده چې ترجمه الباب سره مناسبت ددې جملې نه واخستلې شي، یتخوضون فی مال الله بغير حق^(۲) ای: بغير قسه حق. اگرچه دلته په الفاظو کښې عموم دي لیکن مونږ تخصیص او کړو د تقسیم سره، دې دپاره چې ترجمه الباب صراحت سره فهم کښې راشي^(۳)، هم دا قول علامه عینی، قسطلانی او د حافظ ابن حجر شاگرد رشید شیخ الاسلام زکریا انصاری رحمته الله علیه هم اختیار کړي دي^(۴)، او علامه ابن بطال رحمته الله علیه د حضرت خوله رضی الله عنها دا حدیث مبارک په ترجمه الباب کښې د ذکر کیدو وجه دا بیانوي چې کوم سرې هم د غنیمت وغیره نه د نبی صلی الله علیه و آله و سلم یا د هغوی نه پس د حاکم د تقسیم نه بغير څه واخلی نو دې به د الله تعالی په مال کښې په ناحقه سره تصرف کوونکې وی او ده چې کوم خیانت کړي دې نو د قیامت په ورځ به دې ددې خیانت سره د الله تعالی په دربار کښې پیش کړي^(۵). والله اعلم بالصواب

د حدیث نه مستنبطې فائدې: ددې حدیث شریف نه یو خو دا فائده حاصله شوه چې د وخت د امام د تقسیم نه بغير که څوک په غنیمت کښې څه واخلی نو دا انسان به گناهگار وي^(۶) دویمه فائده په دې حدیث شریف کښې داده چې په دې کښې د سلطنت امیرانو او بادشاهانو ته ددې خبرې خبرداري ورکړې شوې دي چې هغوی د مال غنیمت یا د بیت المال نه په ناحقه باندې څه واخلی، دغه شان که څوک حقدار راشي نو هغه مه منع کوي، بلکه هغه ته خپل حق پوره پوره ورکوي^(۷). والله اعلم بالصواب

⑧ باب: قول النبی صلی الله علیه و آله و سلم: (أحلت لكم الغنائم)

وقال الله تعالى: ﴿وعدكم الله مغانم كثيرة تأخذونها فعجل لكم هذه﴾ الفتح: ۱/وهي للعامة حتى يبينه الرسول صلی الله علیه و آله و سلم

د نسخو اختلاف: په اکثرو نسخو کښې "باب قول النبی صلی الله علیه وسلم: أحلت لكم الغنائم" دي البته د ابن التین په نسخه کښې "أحلت لي....." راغلي دي. د حافظ ابن حجر رحمته الله علیه وینا ده چې

(۱) پورته حواله.

(۲) پورته حواله، وشرح الکرماني: ۹۳/۱۳.

(۳) عمدة القاری: ۴۰/۱۵، وتحفة الباری للانصاری: ۵۴۳/۳، وارشاد الساری: ۲۰۵/۵.

(۴) شرح ابن بطال: ۲۷۵/۵.

(۵) فتح الباری: ۲۱۹/۶، قال ابن بطال رحمته الله علیه: من اخذ من المقاسم شيئا بغير الرسول او الامام بعده، فقد تخوض في مال الله بغير حق، ويأتي بما غل يوم القيمة. انظر شرحه: ۲۷۵/۵.

(۶) پورته حواله جات.

د ابن التین الفاظ زیات غوره دی ځکه چې امام بخاری رحمته الله علیه په خپله هم دې الفاظو سره په دې باب کښې حدیث شریف ذکر کړې دي..... (۱)

د ترجمه الباب مقصد: دلته په ترجمه الباب کښې امام بخاری رحمته الله علیه دا وئیل غواړي چې غنیمتونه د مسلمانانو دپاره وی، الله تعالیٰ په آیت کریمه «وعدکم الله.....» کښې هم دا وعده کړې ده او د نبی کریم صلی الله علیه و آله ارشاد مبارک هم په دې باندې دلالت کوي چې غنیمت د مسلمانانو وی او دا د دوی دپاره حلال دي. دا خو عامو مسلمانانو سره متعلق خبره وه، په خپله د نبی کریم صلی الله علیه و آله څه حیثیت وو؟ نو دا امام بخاری رحمته الله علیه په «وهی للعامة حق یبینه للرسول» کښې او وئیل چې غنیمت خو به اصل کښې د مسلمانانو دپاره وی لیکن ددې د استحقاق فیصله به نبی صلی الله علیه و آله کوي چې چاته دا د غنیمت ورکول پکار دی او چاته ورکول پکار نه دی، څوک مجاهد او غانم وو او څوک نه وو، د غنیمت په مال کښې به چاته حصه ملاویږي او په خمس کښې به چاته ملاویږي؟ دا ټول کارونه د نبی صلی الله علیه و آله دی او بیا د دوی مبارک نه پس د دوی د نائب او د خلیفه دی چې دا کسان به بیا په دې کارونو کښې اختیار لري نو قرآن پاک مجمل وو او سنت سره ددې تفسیر اوشوم (۲)

پورته چې امام بخاری رحمته الله علیه په ترجمه کښې کوم آیت کریمه ذکر کړو نو د هغې دوه حصې دي، یو خو «وعدکم الله مغنم کثیرة تاخذونها» ده، په دې کښې د هغې غنیمتونو ذکر دې کوم چې به د قیامته پورې حاصلیږي، خواه د نبی صلی الله علیه و آله په ملګرتیا کښې حاصل شوي وی یا د هغوی نه پس د خلیفه گانو او د لښکر د امیرانو په ملګرتیا کښې حاصل شوي وی. دویمه حصه «فعجل لکم هذه» ده، ددې نه مراد د خیبر غنیمتونه دي (۳)

بیا په دې باب کښې امام بخاری رحمته الله علیه شپږ حدیثونه ذکر کړې دي. اولنې حدیث د حضرت عروه البارقی رضی الله عنه دي.

۲۹۵۱: (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا خَالِدٌ حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ عَنْ عَامِرٍ عَنْ عُرْوَةَ الْبَارِقِيِّ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - عَنِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ «الْحَيْلُ مَعْقُودٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ الْأَجْرُ وَالْمَغْنَمُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ». [ر: ۲۶۹۵]

(۱) فتح الباری: ۶/۲۲۰

(۲) پورته حواله، وارشاد الساری: ۵/۲۰۵، وشرح ابن بطال: ۵/۲۷۷

(۳) پورته حواله جات، وعمدة القاری: ۱۵/۴۱، وتحفة الباری: ۳/۵۴۴

(۴) قوله: عروة البارقی: الحدیث، مر تخریجه فی کتاب الجهاد، کشف الباری، کتاب الجهاد: ۱/۳۵۹

رجال الحديث

- ① مسدد: دا مسدد بن مسرهد رضي الله عنه دې د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب من الايمان ان يحب لاهيه....." کښې تيره شوې ده. (۱)
- ② خالد: دا خالد بن عبد الله بن عبد الرحمن الطحان رضي الله عنه دې. (۲)
- ③ حصين: دا حصين بن عبد الرحمن سلمی رضي الله عنه دې. (۳)
- ④ عامر: دا مشهور محدث عامر شعبي رضي الله عنه دې. د دوی حالات اجمالاً په کتاب الايمان "کښې او تفصيل سره په کتاب العلم، "باب كتابة العلم" کښې راغلي دي. (۴)
- ⑤ عروه البارقی: دا حضرت عروه بن ابی الجعد البارقی رضي الله عنه دې د دوی تذکره په کتاب الجهاد، "باب الخيل معقود في نواصيها الخير....." کښې بيان کړې شوې ده. (۵)
- حضرت عروه البارقی رضي الله عنه د نبی ﷺ نه روایت کوي چې نبی ﷺ فرمائيلى دي چې د اسونو په تندو (پيشاني) کښې خير ترلې شوې دي، يعنې د قيامته پورې په کښې اجر او غنيمت دي. ددې حديث تفصيلي تشریح مونږ په کتاب الجهاد کښې بيان کړې ده. (۶)
- ترجمة الباب سره مناسبت: ترجمة الباب سره ددې حديث شريف مناسبت واضح دي. کوم چې په دې کلمه کښې دي "والبغتم" (۷)
- دويم حديث شريف د حضرت ابو هريره رضي الله عنه دي.

٢٩٥٢: (١) حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ «إِذَا هَلَكَ كِسْرَى فَلَا كِسْرَى بَعْدَهُ، وَإِذَا هَلَكَ قَيْصَرٌ فَلَا قَيْصَرَ بَعْدَهُ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَتَنْفُقَنَّ كُنُوزُهُمَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ». [ر: ٢٨٦٤]

رجال الحديث

- ① ابو اليمان: دا ابو اليمان حکم بن نافع رضي الله عنه دي.

١ (کشف الباری: ٢/٢) -
 ٢ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الوضوء، باب من مضمن.....) -
 ٣ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب مواقيت الصلاة، باب الاذان بعد ذهاب الوقت) -
 ٤ (کشف الباری: ١/٦٧٩، و: ٤/٢٢٩) -
 ٥ (کشف الباری، کتاب الجهاد: ١/٣٦٠) -
 ٦ (کشف الباری، کتاب الجهاد: ١/٣٥٤ - ٣٦٥، باب الخيل معقود في نواصيها الخير.....) -
 ٧ (عمدة القاری: ١٥/٤١، وفتح الباری: ٦/٢٢٠) -
 ٨ (قوله: عن ابی هريرة رضي الله عنه: الحديث، مر تخريجه في الجهاد والسير، باب الحرب خدعة) -

② شعيب: دا شعيب بن ابی حمزه رضي الله عنه دې ددې دواړو حضراتو تذکره د تېره الوسي په الحديث السادس "کښې تيره شوې ده." (۱)

③ ابو الزناد: دا ابو الزناد عبد الله بن ذکوان رضي الله عنه دې

④ الاعرج: دا عبد الرحمن هرمز رضي الله عنه دې چې په الاعرج باندې مشهور دې ددې دواړو حالات په کتاب الايمان، "باب حب الرسول صلى الله عليه وسلم من الايمان" کښې راغلي دي. (۲)

⑤ ابو هريره رضي الله عنه: د حضرت ابو هريره رضي الله عنه حالات په کتاب الايمان، "باب امور الايمان" کښې بيان کړې شوې دي. (۳)

د حديث شريف ترجمه: د حضرت ابو هريره رضي الله عنه نه روايت دې چې نبی ﷺ فرمائي چې کله کسري هلاک شي نو دده نه پس به بل کسري نه وي. قيصر به هلاک شي نو دده نه پس به هم بل قيصر نه وي او په هغه ذات قسم چې د هغه د قدرت په قبضه کښې زما ساه ده تاسو خلق به ددې دواړو د خزانو نه د الله تعالى په لاره کښې خرچ کوئ.

ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: ترجمة الباب سره ددې حديث شريف مناسبت په دې جمله کښې دې، "لَتَنْفَقَنَّ كُنُوزُهُمَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ" (۴) نو د نبی کریم ﷺ د پيشن گويي مطابق د کسري او د قيصر خزانې د مال غنيمت په صورت کښې د مسلمانانو لاسونو ته راغلي او هغوی دا خزانې خرچ کړي. معلومه شوه چې غنيمت د مسلمانانو دپاره دي او دا غنيمت به د مسلمانانو په ضرورتو کښې خرچ کيږي البته تقسيموونکي به د الله تعالى رسول او د دوی مبارک نه پس به د دوی نائب او خليفه وي. ددې حديث تفصيلي تشریح په کتاب الجهاد کښې تيره شوې ده. (۵)

دریم حديث د حضرت جابر بن سمره رضي الله عنه دې.

۲۹۵۳: (۱) حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ سَمِعَ جَابِرًا عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «إِذَا هَلَكَ كِسْرَى فَلَا كِسْرَى بَعْدَهُ، وَإِذَا هَلَكَ قَيْصَرٌ فَلَا قَيْصَرَ بَعْدَهُ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَتَنْفَقَنَّ كُنُوزُهُمَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ». [۳۴۲۳، ۴۲۵۴]

(۱) کشف الباری: ۱/۴۷۹-۴۸۰

(۲) کشف الباری: ۲/۱۰-۱۱

(۳) کشف الباری: ۶۵۹

(۴) فتح الباری: ۶/۲۲۱، وعمدة القاری: ۱۵/۴۱

(۵) کشف الباری، کتاب الجهاد: ۲/۳۷۹-۳۸۵، باب الحرب خدعة

(۶) قوله: عن جابر بن سمره رضي الله عنه: الحديث، أخرجه البخاري في كتاب الانبياء ايضا، باب علامات النبوة في الاسلام، رقم (۳۶۱۹)، وكتاب الايمان والنذور، باب كيف كانت يمين النبي ﷺ؟ رقم (۶۶۲۹)، ومسلم، كتاب الفتن..... باب لا تقوم الساعة حتى يمر الرجل بقبر الرجل..... رقم (۷۳۲۷-۷۳۲۹)

رجال الحديث

① اسحاق: دا اسحاق بن ابراهيم بن راهويه رحمته الله دې ابو علي جیانی رحمته الله لیکلې دی چې ما یو راوی کله هم د دوی طرفته د نسبت او نسب ذکر کولو سره لیدلې نه دې یعنی دا نه معلومیده چې د اسحاق نه څوک مراد دی؟ لیکن وروستو بیا دا حدیث شریف مونږ ته هم دې سیاق او مضمون سره په مسند اسحاق کښې ملاو شو نو غالب گمان هم دادې چې ددې نه مراد ابن راهويه دې.

د اسحاق بن راهويه تذکره په کتاب العلم، "باب فضل من علم وعلم" کښې تیره شوې ده. ② جویو: دا جریر بن عبد الحمید رحمته الله دې د دوی حالات په کتاب العلم، "باب من جعل لاهل العلم آیام معلومة" کښې بیان شوې دی.

③ عبد الملك: دا عبد الملك بن عمير کوفی رحمته الله دې.

④ جابر بن سمرة: دا مشهور صحابی حضرت جابر بن سمرة رضی الله عنه دې ددې حدیث شریف مضمون بعینه هم هغه دې کوم مضمون چې د تیر شوې حدیث مبارک وو. څلورم حدیث شریف د حضرت جابر بن عبد الله رضی الله عنه دې.

۲۹۵۴: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا سَيَّارٌ حَدَّثَنَا يَزِيدُ الْفَقِيرُ حَدَّثَنَا جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - « أَجَلْتُ لِي الْغَنَائِمُ ». [ر: ۳۲۸]

رجال الحديث

① محمد بن سنان: دا محمد بن سنان باهلی رحمته الله دې د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب من سئل عما هو....." کښې تیره شوې ده.

② هشيم: دا هشيم بن بشير واسطی رحمته الله دې.

③ سيار: دا سيار بن ابي سيار وردان واسطی رحمته الله دې.

① فتح الباری: ۲۲۱/۶، وشرح الکرمانی: ۹۴/۱۳، و مسند اسحاق)۔

② کشف الباری: ۴۲۸/۳)۔

③ کشف الباری: ۲۶۸/۳)۔

④ د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الاذان، باب اهل العلم والفضل احق بالامامة)۔

⑤ د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الاذان، باب وجوب القراءة للامام.....)۔

⑥ قوله: جابر بن عبد الله.....: الحديث، مر تخريجه في كتاب التيمم)۔

⑦ کشف الباری: ۱۵۳/۳)۔

④ یزید الفقیر: دا یزید بن صهیب کوفی رضی الله عنه دې چې په الفقیر باندې مشهور دې. (۱)

⑤ جابر بن عبدالله: دا مشهور انصاری صحابی حضرت جابر بن عبدالله رضی الله عنه دې. (۲)
دلته امام بخاری رحمته الله علیه د حضرت جابر بن عبدالله رضی الله عنه د حدیث صرف یوه جمله ذکر کړې ده. دا حدیث پوره په کتاب التیمم کښې راغلې دې، په هغې کښې د نبی کریم صلی الله علیه و آله دا ارشاد مبارک دې چې: "أعطیت خمساً....." ماته خاص طور سره د الله تعالی له طرفه پنځه خیزونه راکړي شوي دي چې زما نه مخکښې چاته ورکړي شوي نه وو، لکه د یو میاشت په مسافت (فاصله) باندې د رعب او دبدبې په ذریعې سره زما نصرت کړې شوې دې او ټوله زمکه زما دپاره د مانځه ځای او د پاکوالي ذریعه ګرځولې شوې ده، نو زما د امت هر سړي چې کوم ځای کښې هم د مانځه وخت پیامومی نو مونځ دې او کړي او زما دپاره غنیمتونه حلال کړي شوي دي حالانکه زما نه مخکښې دا غنیمتونه د چا دپاره حلال نه وو او ما ته شفاعت راکړې شوې دې او زما نه مخکښې به انبیاء کرام صلی الله علیه و آله د یو قوم دپاره خاص طور سره راستولي کیدل او زما رالیرل عام طور د ټول انسانیت دپاره شوي دي. (۳)

غنیمت او سابقه امتونه: علامه خطابی رحمته الله علیه لیکلې دي چې په تیر شوي امتونو کښې به خلق په دوه قسمه وو، یو خو هغه خلق چې هغوی ته په جهاد او قتل و قتال کښې اجازت نه وو نو هغوی ته به غنیمت هم نه ملاویده او دویم قسم هغه خلق وو چې په قتال کښې خو به شریکیدل لیکن که هغوی به مال غنیمت حاصل کړو نو ددې هغې خوراک د هغوی دپاره حلال نه وو بلکه یو آسمانی اور به راغی او هغه د غنیمت ټول مال به ئې اوسوزوو. (۴)
په غنیمت کښې تصرف، ددې خوراک صرف د محمد صلی الله علیه و آله او د دوی مبارک د امت خصوصیت دې. (۵) بلکه په قرآن پاک کښې خو دېته حلالاً طیباً ویلې شوې دې. (۶) د حضرت ابن عباس رضی الله عنه په یو روایت کښې راغلې دي: "أطيب کسب المسلم سهبه فی سبیل الله" (۷)

(۱) د هشیم، سیار او د یزید الفقیر د حالاتو دپاره او ګوري کتاب التیمم، باب التیمم.

(۲) د دوی د حالاتو دپاره او ګوري، کتاب الوضوء، باب من لم یر الوضوء الا من المخرجین.....

(۳) او ګوري، صحیح البخاری، کتاب التیمم، باب التیمم، رقم (۳۳۵).

(۴) فتح الباری: ۱/۴۳۸، واعلام الحديث للخطابی: ۱/۳۳۴، کتاب التیمم، رقم (۳۳۵).

(۵) قال ابن رجب الحنبلي: واما احلال الغنائم له ولامته خاصة، فقد روى ان من كان قبلنا من الانبياء كانوا يحرقون الغنائم، وفي حديث عمرو بن شعيب عن ابيه عن جده، عن النبي صلی الله علیه و آله: ((واحلت لي الغنائم اكلها، وكان من قبلي يعظمون اكلها، وكانوا يحرقونها)). فتح الباری: لابن رجب: ۱/۳۱۵، تحت رقم (۳۳۵)، وحديث عمر بن شعيب اخرجہ احمد فی مسنده: ۲/۲۲۲، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، رضی الله عنه، رقم (۷۰۶۸).

(۶) قال الله تعالى: (فكلوا مما غنمتم حلالاً طيباً) (الانفال: ۶۹).

(۷) او ګوري، التمهيد لابن عبد البر: ۳/۱۳۴، حديث خامس لريبة بن عبد الرحمن..... وكنز العمال: ۴/۲۸۵، عن صلی الله علیه و آله، باب الجهاد، والجامع الصغير مع الفيض: ۱/۶۹۹، رقم (۱۱۲۳).

ددې په تشریح کښې علامه مناوی رحمۃ اللہ علیہ فرماني:

«أى ما يكسبه من غنيمة وفى سلب قتيل ودحوها لان ما حصل بسبب الحرص على نصرة دين الله و دليل درجة الشهادة لا شئ أطيب منه، فهو افضل من البيع وغيرها مباحر لانه كسب المصطفى صلی اللہ علیہ وسلم و حرفته، ألا ترى الى قوله: "وجعل رزقي تحت ظل رمي" فافضل الكسب مطلقاً سهم الغازي لما ذكر.....» (۱)
ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت واضح دې، کوم چې په دې جمله کښې دې، «أحلت الغنائم»
پنځم حديث د حضرت ابو هريره رضي الله عنه دې

۲۹۵۵: (۱) حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ «تَكْفُلُ اللَّهُ لِمَنْ جَاهَدَ فِي سَبِيلِهِ، لَا يُخْرِجُهُ إِلَّا الْجِهَادُ فِي سَبِيلِهِ وَتُصَدِّقُ كَلِمَاتِهِ، بَأَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ، أَوْ يُرْجِعَهُ إِلَى مَسْكَنِهِ الَّذِي خَرَجَ مِنْهُ {مَعَ مَائَالٍ} مِنْ أَجْرِ أَوْ غَنِيمَةٍ». [ر. ۱۳۶]

رجال الحديث

- ① اسماعيل: دا مشهور محدث اسماعيل بن ابي اويس رضي الله عنه دې د دوى تذکره په کتاب الايمان، "باب من کره ان يعود في الكفر كما يكره....." کښې تيره شوې ده. (۲)
- ② مالک: دا امام دار الهجرة حضرت امام مالک بن انس رضي الله عنه دې د دوى حالات د "بدء الوسي" په الحديث الثاني "کښې تير شوې دى. (۳)
- ③ ابو الزناد: دا ابو الزناد عبد الله بن ذکوان رضي الله عنه دې
- ④ الاعرج: دا عبد الرحمن بن هرمز رضي الله عنه دې د دې دواړو حضراتو تذکره په کتاب الايمان، "باب حب الرسول....." کښې راغلي ده. (۴)
- ⑤ ابو هريره: د حضرت ابو هريره رضي الله عنه حالات په کتاب الايمان، "باب امور....." کښې تير شوې دى. (۵)

(۱) فيض القدير شرح الجامع الصغير: ۱/۶۹۹، حرف الهمزة.

(۲) قوله: عن ابي هريرة رضي الله عنه: "الحديث، مر تخريجه في كتاب الايمان، باب الجهاد من الايمان، كشف الباري: ۲/۳۰۱.

(۳) كشف الباري: ۲/۱۱۳.

(۴) كشف الباري: ۱/۲۹۰، تفصيلي حالاتو دپاره اوگوري، كشف الباري: ۲/۸۰.

(۵) كشف الباري: ۲/۱۰-۱۱.

(۶) كشف الباري: ۱/۶۵۹.

د حدیث شریف ترجمه حضرت ابوهریره رضی اللہ عنہ فرمائی چې نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائی چې دې چې الله تعالى د هغې کس ضمانت اخستلې دې څوک چې د هغه په لاره کښې جهاد کوي، هغه لره د خپل کور نه صرف جهاد فی سبیل الله او د الله تعالى د کلماتو تصدیق ویستلې وی، چې دې به د شهادت په صورت کښې جنت کښې داخلوی او یا به ئې د غازی کیدو په صورت کښې د خپل کور طرفته واپس کړی، د کوم ځای نه چې دې تلې وو، هغه اجر او غنیمت سره کوم چې ده حاصل کړو (یعنی په دواړو صورتونو کښې دې کامیاب دې).

خبردارې: ددې حدیث پوره تشریح په کتاب الایمان او کتاب الجهاد کښې تیره شوې ده (د ترجمه الباب سره د حدیث شریف مناسبت: ددې شریف مناسبت ترجمه الباب سره په دې کلمه کښې دې، او غنیمه (د).

شپږم حدیث شریف هم د حضرت ابوهریره رضی اللہ عنہ دې.

۲۹۵۶: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «غَزَائِي مِنَ الْأَنْبِيَاءِ فَقَالَ لِقَوْمِهِ لَا يَتَّبِعْنِي رَجُلٌ مَلَكَ بُضْعُ امْرَأَةٍ وَهُوَ يُرِيدُ أَنْ يَبْنِيَ بِهَا وَلَمَّا يَبْنِ بِهَا، وَلَا أَحَدٌ بَنَى بُيُوتًا وَلَمْ يَرْفَعْ سُقُوقَهَا، وَلَا أَحَدٌ اشْتَرَى غَنَمًا أَوْ خِلْفَاتٍ وَهُوَ يَنْتَظِرُ وَلَادَهَا. فَغَزَا فِدَانًا مِنَ الْقَرْيَةِ صَلَاةَ الْعَصْرِ أَوْ قَرِيبًا مِنْ ذَلِكَ فَقَالَ لِلشَّمْسِ إِنَّكَ مَأْمُورَةٌ وَأَنَا مَأْمُورٌ، اللَّهُمَّ احْبِسْهَا عَلَيْنَا. فَحَبَسَتْ، حَتَّى فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ، فَجَمَعَ الْغَنَائِمَ، فَجَاءَتْ - يَعْنِي النَّارَ - لِتَأْكُلَهَا، فَلَمْ تَطْعَمْهَا، فَقَالَ إِنَّ فِيكُمْ غُلُولًا، فَلْيَبَايَعْنِي مِنْ كُلِّ قَبِيلَةٍ رَجُلٌ. فَلَزِقَتْ يَدُ رَجُلٍ بِيَدِهِ فَقَالَ فِيكُمْ الْغُلُولُ. فَلْتَبَايَعْنِي قَبِيلَتُكَ، فَلَزِقَتْ يَدُ رَجُلَيْنِ أَوْ ثَلَاثَةٍ بِيَدِهِ فَقَالَ فِيكُمْ الْغُلُولُ، فَجَاءُوا بِرَأْسٍ مِثْلِ رَأْسِ بَقَرَةٍ مِنَ الذَّهَبِ فَوَضَعُوهَا، فَجَاءَتِ النَّارُ فَأَكَلَتْهَا، ثُمَّ أَحَلَّ اللَّهُ لَنَا الْغَنَائِمَ، رَأَى ضَعْفَنَا وَعَجْزَنَا فَأَحَلَّهَا لَنَا». [۴۸۶۲]

رجال الحديث

① محمد بن العلاء: دا محمد بن العلاء همدانی کوفی رحمته الله دې. ددوی تذکره په کتاب العلم، "باب فضل من علم وعلم" کښې راغلي ده (د).

(۱) کشف الباری. کتاب الایمان: ۳۰۵/۲ - ۳۱۴. و کتاب الجهاد: ۶۸/۱ و ۱۱۲-۱۱۵.

(۲) عمدة القاری: ۴۲/۱۵.

(۳) قوله: عن أبي هريرة رضی اللہ عنہ: "الحديث أخرجه البخاري، كتاب النكاح، باب من أحب البناء قبل الغزو، رقم (۵۱۵۷). ومسلم، كتاب الجهاد، باب تحليل الغنائم لهذه الأمة خاصة، رقم (۴۵۵۵)."

(۴) كنف الباری: ۴۱۳/۳.

① ابن المبارک دا حضرت عبداللہ بن مبارک رضی اللہ عنہ دې د دوی اجمالی تذکره د "بده الوسی" په الحديث الخامس "کښې راغلي ده." (۱)

② معمر دا ابو عروه معمر بن راشد ازدی رضی اللہ عنہ دې د دوی تذکره هم د "بده الوسی" په الحديث الخامس "کښې تیره شوې ده." (۲)

③ همام بن منبه دا د حضرت ابو هريره رضی اللہ عنہ مشهور شاگرد حضرت همام بن منبه رضی اللہ عنہ دې د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب من حسن اسلام المرء....." کښې تیر شوې دی. (۳)

④ ابو هريره: د حضرت ابو هريره رضی اللہ عنہ تذکره په کتاب الايمان، "باب امور الايمان" کښې تیره شوې ده. (۴)

قوله: عن أبي هريرة رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه

وسلم: غزا نبي من الانبياء: حضرت ابو هريره رضی اللہ عنہ فرمائي چې نبي ﷺ او فرمايل چې په انبياء کرامو کښې يو نبي قتال او کړو غزا فعل ماضی ده ليکن د مضارع په معنی کښې ده، مطلب دا دې چې د غزوې او د قتال اراده ئې او کړه ده.

داني شوک وو؟ د قاضي عياض، ابن اسحاق (۵)، امام حاکم (۶) او د جمهور محدثينو او علماء کرامو رائي هم دا ده چې دا نبي حضرت يوشع بن نون عليه السلام وو، چې د بني اسرائيلو طرفته راليږلې شوې وو. (۷)

ددې تصديق او تائيد د هغه حديث شريف نه هم کيږي کوم چې امام احمد رضی اللہ عنہ په خپل مسند کښې د هشام بن محمد بن سيرين عن ابي هريره رضی اللہ عنہ طريق نه نقل کړې دې چې د نبي کریم ﷺ ارشاد مبارک دې: "ان الشمس لم تحبس لبشر الا ليوشع بن نون ليالي سار الى بيت المقدس....." (۸) دا حديث شريف مرفوع هم دې او صحيح هم دې. (۹)

(۱) کشف الباری: ۱/۴۶۲.

(۲) کشف الباری: ۱/۴۶۵.

(۳) کشف الباری: ۲/۴۲۸.

(۴) کشف الباری: ۱/۶۵۹.

(۵) فتح الباری: ۶/۲۲۱، وتحفة الباری: ۳/۵۴۴.

(۶) عمدة القاری: ۱۵/۴۲، وطرح التثريب فی شرح التثريب للعراقي: ۶/۱۹۷۶، باب الغنیمه.....

(۷) فتح الباری: ۶/۲۲۱، والمستدرک للحاکم: ۲/۱۳۹-۱۴۰، کتاب قسم الفی، رقم (۲۶۱۸).

(۸) فتح الباری: ۶/۲۲۱، وعمدة القاری: ۱۵/۴۲، وارشاد الساری: ۵/۲۰۶، وشرح الابی علی مسلم: ۲/۵۸، وتحفة الباری: ۳/۵۴۴.

(۹) مسند احمد: ۲/۳۲۵، مسند ابي هريره، رقم (۸۲۹۸).

(۱۰) فتح الباری: ۶/۲۲۱.

لیکن ابن بطال رحمہ اللہ دا واقعہ د حضرت داؤد رحمہ اللہ طرفته منسوب کړې ده او د باب د حدیث د الفاظو نسبت ئې د هغوی طرفته کړې دې. (۱)، حافظ وائی چې ماته په هیڅ یو مسند حدیث کښې دا خبره ملا ونه شوه. البته خطیب بغدادی په خپل تالیف "ذم النجوم" کښې د ابو حذیفه د طریق نه او امام بخاری رحمہ اللہ په "المبتدا" کښې د حضرت علی رحمہ اللہ د طریق نه یو روایت نقل کړې دې، د هغې خلاصه داده چې د حضرت یوشع رحمہ اللہ قوم د هغوی نه مطالبه او کړه چې مونږ ته د مخلوقاتو د ابتداء او زمونږ د مقررہ وختونو د مرگ، په باره کښې حال احوال بیان کړئ، هغوی د قوم دا مطالبه پوره کړه، اوس هر سړی ته د خپل مرگ وخت معلوم شوې وو، حالات هم په دې طریقہ باندې روان وو تردې چې حضرت داود رحمہ اللہ تشریف راوړلو او هغوی دوی سره په داسې حال کښې چې دوی کافران شوې وو، د قتال اراده او کړه او لښکر ئې راوستلو نو دوی هم د حضرت داود رحمہ اللہ د مقابلې کولو دپاره خپل کسان روان کړل لیکن هغه کسان ئې روان کړل چې د کومو خلقو مرگ کښې وخت باقی وو، اوس د جنگ نتیجه دا شوه چې د حضرت داود رحمہ اللہ لښکریان خو شهیدان شو لیکن په دوی کښې څوک هم مړه نه شو، حضرت داود رحمہ اللہ الله تعالی ته شکایت او کړو او د الله تعالی نه ئې مدد او غوښتلو نو الله تعالی په دوی باندې نمر اودرولو چې نمر دوب نه شی، دغه شان ورځ اوږده شوه او په کافرانو باندې شپه ورځ گډه وه شو او خپل حساب ترینه هیر شو، دغه شان پرې حضرت داود رحمہ اللہ قابو او موندلو. حافظ ابن حجر رحمہ اللہ د دې روایت د نقل کولو نه پس لیکي:

"واسنادہ ضعیف جداً، وحديث أبي هريرة البشار اليه عند أحمد أولى فان رجال اسنادہ محتج بهم في الصحيح، فالبعتبد أنہا لم تحبس الا ليوشم" (۲)

ایا د نمر اودریدل (نه دوییدل) صرف حضرت یوشع رحمہ اللہ سره خاص دی؟ د پورتنی تفصیل نه هم دا معلومیږي چې د نمر د اودریدلو واقعہ صرف د حضرت یوشع رحمہ اللہ سره شوې وه، د مسند احمد شریف د پورتنی ذکر کړده حدیث نه حصر معلومیږي، "ان الشمس لم تحبس لہما الا ليوشم بن فون...." لیکن څه نور واقعات چې صحیح سندونو سره روایت شوې دي، د هغې نه دا حصر باطل معلومیږي چې دا واقعہ صرف حضرت یوشع رحمہ اللہ سره خاص نه ده.

لکه ابن اسحاق په "المبتدا" کښې د یحیی بن عروہ بن الزبیر عن ابیہ د طریق نه نقل کړې دي چې کله الله تعالی حضرت موسی رحمہ اللہ ته حکم او کړو چې بنی اسرائیل ځان سره کړه او د مصر نه اوځي او کړي نو دا حکم ئې هم ورکړو چې خپل ځان سره د حضرت یوسف رحمہ اللہ تابوت هم واخلي. د الله تعالی په حکم سره دوی د حضرت یوسف رحمہ اللہ تابوت تلاش کوو لیکن هغه دوی رحمہ اللہ پیدا نه کړې شو، تردې چې د سحر رنډا په خوړیدو شوه نو د دې نه مخکښې حضرت موسی رحمہ اللہ بنی اسرائیلو سره وعده کړې وه چې د صبا په راختلو (طلوع فجر) باندې

(۱) شرح ابن بطال: ۵/۱۳۵، باب استئذان الرجل الامام.....

(۲) فتح الباری: ۶/۲۲۱.

به روانگی کوو، ددې وجې نه هغوی الله تعالى ته دعا او کړه چې طلوع فجر هغه وخت پورې مؤخر کړې شی چې کله د یوسف عليه السلام د تابوت ذمه دارئ نه فارغ شم نو الله تعالى د هغوی دا دعا قبوله کړه.^(۱)

ددې نه علاوه د نبی کریم صلی الله علیه و آله په باره کښې د تاریخ مختلفو عالمانو لیکلې دی چې د معراج د شپې په سحر باندې نبی صلی الله علیه و آله د مکې مکرمې قريشو ته او وټیل چې ما ستاسو هغه قافله لیدلې ده کومې چې سره د تجارت مال او سازو سامان دې او هغه قافله به د ورځې په ختمیدو باندې ښکاره کیږي لیکن د قافلې د رارسیدلو نه مخکښې نمر په ډوبیدو شو نو نبی صلی الله علیه و آله د الله تعالى په دربار کښې خپل درخواست پیش کړو چې نمر اودرولې شی نو نمر اودرولې شو تردې چې هغه قافله راوړسیدله، د حضرت جابر بن عبد الله رضی الله عنه کلمات دادې:

ان النبی صلی الله علیه وسلم امر الشمس، فتاخرت ساعة من نهار.^(۲)

ددې ټولو واقعاتو نه دا خبره معلومیږي چې د نمر اودریدل صرف د حضرت یوشع عليه السلام خصوصیت نه دې او په هغوی کښې دا خبره منحصر هم نه ده بلکه دغه شان نور واقعات هم شته. د حصر حدیث او د مذکورو واقعاتو مینځ کښې تطبیق: د حضرت موسی عليه السلام واقعه بنیاد جوړول او بیا د مسند احمد د حصر والا حدیث باندې اشکال کول صحیح نه دی، دا ځکه چې د حضرت یوشع بن نون عليه السلام د واقعي تعلق د نمر د ډوبیدو سره دې او د حضرت موسی عليه السلام د واقعي تعلق د طلوع فجر سره دې، یعنی هغه د ماښام واقعه ده او دا د سحر واقعه ده، ددې وجې نه د حضرت یوشع عليه السلام دپاره د نمر اودریدل ددې خبرې سره منافي نه دی چې د هغوی نه علاوه د بل چا دپاره د طلوع فجر اودریدل نه وی شوي.^(۳) هرچه د نبی صلی الله علیه و آله د معراج شریف د واقعي د سحر خبره ده نو د هغې جواب دادې چې د حصر والا په حدیث شریف کښې د حصر تعلق د سابقه انبیاء کرامو عليهم السلام سره دې، مطلب دادې چې زمونږ د نبی کریم صلی الله علیه و آله نه وړاندې د نمر اودریدل صرف د حضرت یوشع عليه السلام دپاره شوي دی نو په دې کښې ددې خبرې هیڅ نفی نشته چې د نمر اودریدل د هغوی نه پس زمونږ د نبی کریم صلی الله علیه و آله دپاره نه شی کیدې.^(۴) امام سدي رحمته الله ددې واقعي په باره کښې فرمائی:

ان الشمس کادت أن تغرب قبل أن يقدم ذلك العين فدعا الله عز وجل، فحبسها حتى قدموا کما وصف لهم.... فلم تحبس الشمس على أحد الا عليه ذلك اليوم، وعلى يوشع بن نون.....^(۵)

^(۱) پورته حواله، وعمدة القاری: (۴۳/۱۵).

^(۲) پورته حواله جات، و حدیث جابر اخرجہ الطبرانی فی "الاوسط": ۴/۲۲۴، باب من اسمه ابراهيم، رقم (۴۰۳۹). بسند حسن. کما قال الحافظ فی الفتح: ۶/۲۲۱، وطرح التثريب: ۶/۱۹۷۸ واخرجہ البيهقي فی دلائل النبوة: ۲/۴۰۴، بسنده عن اسماعيل بن عبد الرحمن القرشي، تحت باب الاسراء برسول الله صلی الله علیه و آله من المسجد....

^(۳) فتح الباری: ۶/۲۲۱.

^(۴) پورته حواله.

^(۵) عمدة القاری: ۴۳/۱۵، وشرح الابي على مسلم: ۲/۵۸.

د نمر د واپس کیدو واقعات پورته چې کوم واقعات ذکر شو نو ددې تعلق اودریدو سره وو. خواد سحر وی یا مابنام، ددې نه علاوه د تاریخ او د سیر په کتابونو کښې د نمر د واپس کیدو واقعات هم ملاویرې، یعنی هغه واقعات چې په هغې کښې د یو شخصیت د پاره نمر د پریوتلو نه پس دوباره د واپس کیدو تذکره ده، لاندې د هغې واقعاتو تذکره کولې شی

① په دې ضمن کښې د ټولو نه اولنۍ واقعه د حضرت سلیمان عليه السلام په باره کښې مشهوره ده. د قرآن کریم په دې آیتونو کښې د هغې ذکر د بعضي مفسرينو د وينا مطابق، راغلي دي:

﴿اذ عرض عليه بالعش الصافات الجياد، فقال اني احببت حب الخير عن ذكر ربى حق تواتر بالحجاب، ردوها على فطيق مسحاً بالسوق والاعناق﴾ (۱)

ددې آیتونو خلاصه داده چې یو مابنام حضرت سلیمان عليه السلام ته اسونه د کتلو د پاره راوستې شو، دوی مبارک په دې کار کښې دومره قدرې مشغول شو چې د مازیگر مونځ ترینه پاتې شو او نمر پریوتلو، وروستو ورته خبر او شو نو دوباره ئې د اسونو د راوستلو حکم او کړ و او په توره باندې ئې د هغوی څټونه او خپې وهل شروع کړل (۲). دا خلاصه د مشهور تفسیر مطابق ده او په دې کښې د «ردوها» ضمیر د اسونو طرفته راجع کیږي لیکن بعضي مفسرينو (ثعلبی او بغوی وغیره) (۳) ددې ضمیر مرجع نمر ښودلې دې او وائی چې سلیمان عليه السلام د نمر د واپس کولو وئیلې وو، د هغوی درخواست قبول کړې شو، نمر واپس کړې شو، دغه شان هغوی د مازیگر مونځ او کړ و (۴) لیکن د محققینو علماؤ په نزد دا واقعه ثابته نه ده او د جمهورو مفسرينو رائې هم داده چې د «ردوها» ضمیر د مؤنث اسونو طرفته راجع کیږي.

حافظ فرمائی: «أورد هذا الأثر جماعة ساكتين عليه جازمين بقولهم: "قال ابن عباس: قلت لعلی؟" وهذا لا يثبت عن ابن عباس ولا عن غيره، والثابت عن جمهور أهل العلم بالتفسير من الصحابة ومن بعدهم أن الضمير المؤنث في قوله «ردوها» للخيل، والله أعلم» (۵)

البته بعضي مفسرين مذکوره واقعي ته صحيح وائی او دا د حضرت سلیمان عليه السلام معجزه ئې گرځوي، علامه قرطبي رحمته الله فرمائی:

«قلت ومن قال ان الهاء في «ردوها» ترجع للشبس، فذلك من معجزاته» (۶)

(۱) سورة ص: ۳۱-۳۳.

(۲) ددې آیتونو د تفسیر د پاره اوگوری، کشف الباری، کتاب التفسیر، ص: ۵۵۵.

(۳) فتح الباری: ۲۲۲/۶، وتفسیر البغوی: ۴/۶۱، وتفسیر النسفی: ۴/۳۹.

(۴) فتح الباری: ۲۲۲/۶، وعمدة القاری: ۱۵/۴۳.

(۵) فتح الباری: ۲۲۲/۶.

(۶) العامه لاحکام القرآن للقرطبي: ۱۵/۱۹۷.

۵) دویمه واقعه د حضرت نبی اکرم ﷺ ده. قاضی عیاض رحمته الله و غیره فرماني چې په غزوه خندق کښې په قتال کښې د مشغولیت د وجې نه د نبی ﷺ او د صحابه کرامو رضی الله عنهم نه د مازیگر مونځ پاتې شوې وو. تردې چې نمر پریوتلو نو نبی ﷺ په بارگاه الهی کښې خپل درخواست پیش کړو. هغه قبول کړې شو او نمر واپس کړې شو بیا ټولو د مازیگر مونځ او کړو دې واقعې ته امام طحاوی رحمته الله صحیح وئیلې دی او راویان ئې ثقه گرځولې دي (۱)

۶) دریمه واقعه د حضرت علی رضی الله عنه ده. ددې تخریج امام طحاوی رحمته الله په دوو طریقو سره کړې دې او دواړو طریقو ته ئې صحیح او ثابت وئیلې دی.

حضرت اسماء بنت عمیس رضی الله عنها فرماني: کان رسول الله صلى الله عليه وسلم يوحى اليه، و رأسه في حجر علي، فلم يصل العصر حتى غربت الشمس، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "صليت يا علي؟" قال: لا، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "اللهم، انه كان في طاعتك وطاعة رسولك، فاردد عليه الشمس". قالت أسماء: فرأيتها غربت، ثم رأيتها طلعت، بعدما غربت (۲)

مطلب دا دې چې په رسول الله مبارک ﷺ باندې وحی نازلیده او د هغوی سر مبارک د حضرت علی رضی الله عنه په غیبه کښې وو. حضرت علی رضی الله عنه د مازیگر مونځ نه وو کړې او نمر پریوتلې وو. نبی ﷺ ترینه تپوس او کړو چې ائې علی. تاسو مونځ کړې دې؟ نو هغوی جواب ورکړو چې نه جې. نبی ﷺ د الله تعالی په دربار کښې عرض او کړو چې ائې الله! دا علی ستا او ستا د رسول په اطاعت او خدمت کښې مشغول وو نو دده دپاره نمر دوباره واپس کړه. حضرت اسماء وائی چې ما نمر اولیدو نو پریوتلې وو، بیا مې اولیده نو دا مشاهده مې او کړه چې هغه د پریوتلو نه پس دوباره راختلې دې.

ددې حدیث شریف په دویم طریق کښې حضرت اسماء رضی الله عنها دا هم فرماني:

ثم قام علي، فتوضا وصلى العصر، ثم غابت، وذلك في الصهباء في غزوة خيبر (۳).

بیا حضرت علی رضی الله عنه پاسیدلو، او دس ئې او کړو او د مازیگر مونځ ئې او کړو، بیا نمر

۱) ددې تخریج د قاضی عیاض د وینا مطابق امام طحاوی کړې دې لیکن مونږ ته دا حدیث په شرح مشکل الآثار کښې خو ملاو نه شو، حافظ ابن حجر ته هم ددې په نسبت کښې تامل دې لیکن په واقعه باندې هغوی څه تنقید نه دې کړې، غالباً هغوی دا قصه صحیح مني، هم دا حالت د علامه عینی رحمته الله هم دې، هغوی ددې واقعې د نقل کولو نه پس په دې باندې خاموشی اختیار کړې ده، انظر الفتح: ۲۲۲/۶، والعمدة: ۴۳/۱۵، او علامه ذهبی رحمته الله ددې واقعې تغلیط کړې دې، او هورې، تنزیه الشریعة المرفوعة: ۳۷۹/۱.

۲) شرح مشکل الآثار: ۹۲/۳، باب: ۱۶۵، بیان مشکل ما روی عن رسول الله ﷺ فی مسالته الله عزوجل ان يرد الشمس..... رقم (۱۰۶۷)، والمعجم الكبير للطبراني: ۱۵۰/۲۴ - ۱۵۲، رقم (۳۹۰ - ۳۹۱)، و روی اوله ابن ابی عاصم فی کتاب السنة: ۲۲۶، رقم (۱۳۲۳).

۳) شرح مشکل الآثار: ۹۲/۳، باب: ۱۶۵، بیان مشکل ما روی عن رسول الله ﷺ فی مسالته الله عزوجل ان يرد الشمس..... رقم (۱۰۶۸).

پریوتلو او دا د صهبا د خائي واقعده، د غزوه خیبر ورځې وې.
امام طحاوی رحمته الله د دې حدیث د نقل کولو نه څو صفحې پس لیکي:
«وکل هذه الاحادیث من علامات النبوة».

وقد حکى لى على بن عبد الرحمن بن المغيرة، عن أحمد بن صالح، أنه كان يقول: لا ينبغي لمن كان سبيله العلم
التخلف عن حفظ حديث أسماء الذي رواه لنا عنه لأنه من أجل علامات النبوة^(۱).
چې دا ټول حدیثونه د نبوت د علاماتو نه دي او ماته علی بن عبد الرحمن د احمد بن صالح
قول نقل کولو سره او فرمائیل چې هغوی به فرمائیل چې د هیڅ یو عالم دپاره هم دا مناسب
نه دی چې هغه د حضرت اسماء رضی الله عنها د دې حدیث نه اجتناب او کړی ځکه چې دا حدیث د
نبوت د لویو علاماتو نه دي.

ددې نه علاوه حافظ ابن حجر، علامه عینی، امام قرطبی، امام ابو الفضل عراقی او د هغوی
جلیل القدر ځوئی ابو زرعه عراقی رحمته الله وغیره هم دې حدیث او دې واقعې ته صحیح وئیلې دي.
لیکن بل طرفته بعضې محدثینو دا حدیث موضوع او باطل بنودلې دي چې په هغوی کښې
ابن الجوزي^(۲)، ابن تیمیه^(۳)، ذهبی^(۴)، ابن کثیر^(۵)، ابن عساکر او جوزقانی رحمته الله په شان
امامان شامل دي.^(۶) امام ابن تیمیه رحمته الله خو د دې حدیث په بنیاد باندې امام طحاوی رحمته الله د
دیر سخت تنقید نشانه گرځولي ده او وائی چې ده ته د احادیثو د تللو او د هغې د سندونو د
صحت او د کمزورتیا په معلومولو کښې څه زیات مهارت حاصل نه وو.

امام طحاوی او حدیث رد الشمس لعلی: هر چه د امام طحاوی رحمته الله مناقب او صفات دي نو د
هغې د بیانولو خو دا موقع نه ده، پاتې شو حدیث د حضرت علی رضی الله عنه دپاره د نمر د واپس
کیدو والا، او په دې بنیاد باندې امام طحاوی د تنقید نشانه گرځول، دا خو بالکل صحیح نه
دی. د دې وجه دا ده چې د دې حدیث نقل کوونکې صرف حضرت امام طحاوی رحمته الله نه دي،

(۱) پورته حواله، ص: ۹۷-۹۸.

(۲) الفتح: ۲۲۲/۶، والعمدة: ۴۳/۱۵، وطرح التثريب التقریب: ۱۹۷۸/۶-۱۹۷۹، وتفسیر القرطبی:

۱۹۷/۱۵، ۱۹۷/۱۹۷، وايضا صححه القاضي عياض في الشفاء: ۱۷۷/۱، والخفاجي في شرحه تسييم الرياض

للشفاء: ۳۸۳/۳-۳۸۶، القسم الاول، فصل انشقاق القمر وحبس الشمس.

(۳) كتاب الموضوعات: ۲۶۶/۱، باب في فضائل علي رضی الله عنه، الحديث الحادي عشر، في رد الشمس له.

(۴) منهاج السنة النبوية: ۴/۱۸۹، فصل، قال الرافضي..... التاسع، رجوع الشمس له.....

(۵) تنزيه الشريعة المرفوعة: ۳۷۹/۱، الفصل الثاني، رقم (۱۰۴).

(۶) البداية والنهاية لابن كثير: ۸۱/۶.

(۷) الاباطيل والمناكير: ۱۵۸/۱، بحواله تعليقات شرح مشكل الآثار: ۹۳/۳.

(۸) فتح الباري: ۲۲۲/۶، وتعليقات شرح مشكل الآثار: ۹۳/۳.

(۹) منهاج السنة لابن تيمية: ۴/۱۸۹.

بلکه د طبرانی (۱)، بیهقی (۲)، او د امام حاکم (۳) په شان محدثین هم دا حدیث روایت کوی (۴). ددې وجهې نه دا حدیث بالکل رد کول ممکن نه دی. هم دا وجه وه چې د حافظ ابن حجر (۵) په شان جلیل القدر د حدیث رد کوونکې هم دا د نبی کریم ﷺ معجزه ښودلو سره فرمائی:

وقد أخطأ ابن الجوزي بإيراد له في "الموضوعات"، وكذا ابن تيمية في "كتاب الرد على الروافض" في زعم وضعه، والله أعلم (۶).

ابن تیمیه چې په امام طحاوی (۷) کوم تنقید کړې دې نو ددې جواب علامه کوثری مصري ورکړې دې چې ددې الزام بنیاد دادې چې امام طحاوی د "رد الشمس لعلی" حدیث صحیح ګرځولې دې او د خبره د ابن تیمیه د خیال خلاف ده، ابن تیمیه دا د روافضو شرارت ګنړی. دا د عناد نه سوا هیڅ نه دی ځکه چې نورو ډیرو محدثینو هم ددې حدیث شریف تصحیح کړې ده، خواه ابن تیمیه په دې باندې خوشحاله وی یا خفه (۸) والله أعلم بالصواب

قوله: فقال لقومه: لا يتبعني رجل ملك بضع امرأة وهو يريد أن يبنى بها، ولما

بين بها...: نو حضرت یوشع (ع) خپل قوم ته اووئیل چې ماسره دې داسې سرې سفر نه کوی چې هغه اوس اوس (تازه) نکاح کړې وی او خپلې بی بی ته تلل غواړي ځکه چې اوسه پورې هغه ورغلې نه دي.

حضرت یوشع (ع) د جهاد دپاره د روانیدو نه مخکښې یو اعلان او کړو چې داسې قسم خلق دې ماسره په سفر کښې نه ځي، چې هغوی اوس اوس نکاح کړې وی او بی بی سره ئې ملاقات شوې نه دي او غواړي چې زما ملاقات ورسره اوشی.

"بضع" د بـاء ضمی سره لوستلې شی او ددې معنی نکاح ده، دغه شان ددې معنی شرم ګاه او جماع هم راځي او دلته درې واړه معنې صحیح دي، دغه شان ددې لفظ اطلاق په مهر او په طلاق باندې هم کیږي، جوهری د ابن السکیت نه د بضع معنی نکاح نقل کړې ده،

(۱) المعجم الكبير للطبرانی: ۱۵۰/۲۴-۱۵۲، حدیث اسماء بنت عمیس، رقم (۳۹۰-۳۹۱)، وايضا اخرجه السيوطی فی الخصائص الكبرى: ۸۲/۲، باب رد الشمس بعد غروبها)۔

(۲) لم أجده فی مطبوعاته، والله أعلم بالصواب)۔

(۳) لم أجده فقی مطبوعاته، والله أعلم بالصواب)۔

(۴) فتح الباری: ۲۲۱/۶)۔

(۵) فتح الباری: ۲۲۲/۶)۔

(۶) الحاوی فی سيرة الامام الطحاوی، ص: ۱۳، ددې بحث سره متعلق د مزید وضاحت او تفصیل دپاره اوګوری، نسیم الرياض فی شرح الشفاء للقاضي عیاض: ۳۸۳/۳-۳۸۶، وتعليقات حمدي عبد المجيد علی المعجم الكبير: ۱۴۸/۲۴-۱۵۱، رقم (۳۹۰-۳۹۱)۔

يقال: "مالك فلان بضع فلانة" (۱)

"ولها بين بها" کښې "لها" جازمه د "لم" په معنی کښې ده لیکن د لما په ذریعې سره ترینه تعبیر او کړې شو چې هغه ددې خبرې توقع هم لری چې ورته د زفاف موقع به ملاو شی لکه سعید بن المسیب عن ابی هریره رضی الله عنه د طریق نه چې کوم روایت امام نسائی او ابو عوانه او ابن حبان (۲) نقل کړې دي، د هغې الفاظ دادی:

"لا يتبعني رجل بنى دارالم يسكنها وتزوج امرأة ولم يدخل بها" (۳)

بیا چې د عدم دخول کوم قید لگولې شوې دي ددې نه دا معلومېږي چې د دخول نه پس به معامله ددې برعکس وی او ددې دواړو خبرو مینځ کښې چې کوم فرق دي نو هغه پټ نه دي، اگرچه د دخول نه پس هم د بعضې خلکو زړونه په کورونو کښې باندې وی لیکن بهر حال هغه حالت به نه وی کوم چې د دخول نه مخکښې وی ځکه چې په دې صورت کښې خو په ذهن باندې بس ښځه سوره وی. (۴) والله اعلم

قوله: ولا أحد بنى بيوتا ولم يرفع سقوفها: نه داسې سړې چې هغه کور جوړ کړې وی لیکن د هغې چټ تې اچولې نه وی.

مطلب دادې چې داسې سړې دي هم ماسره په سفر کښې نه ځي چې د کور په جوړولو او تعمیر کښې مشغول وی او د هغې نه مکمل فارغ شوې نه وی بلکه څه کار باقی پاتې وی د مسلم شریف (۵) او د مسند احمد (۶) په روایت کښې د سقوفها په ځانې سقفا راغلي دي، دواړه صیغې د جمع دي، دغه شان د شیخینو او د مسند احمد روایتونه به خپل مینځ کښې په معنی کښې موافق شی، حافظ رحمته الله علیه د سین فتحه او د قاف سکون سره ضبط وهم گرځولې دي. (۷) په دې صورت کښې به لفظ مفرد وی.

قوله: ولا أحد اشترى غنما أو خلفات وهو ينتظر ولاها: نه داسې سړې چې هغه چیلې یا حاملې او ښې اخستلې وی او د هغې د لنگون انتظار کوی د خلفات معنوی تحقیق: خلفات. بفتح الخاء المعجمة وكسر اللام وفتح الفاءد خلفه جمع ده، حاملې

(۱) الصحاح للجوهري: ۹۵، مادة بضع. فتح الباری: ۶/۲۲۲، وعمدة القاری: ۱۵/۴۳، وارشاد الساری: ۵/۲۰۶، وطرح الثريب: ۶/۱۹۷۶.

(۲) صحيح ابن حبان: ۸/۱۴۹، كتاب السير، باب الغنائم وقسمتها، ذكر تحليل الله..... رقم (۴۷۸۷) --

(۳) فتح الباری: ۶/۲۲۲ --

(۴) پورته حواله، وارشاد الساری: ۵/۲۰۶ --

(۵) صحيح مسلم، كتاب الجهاد، باب تحليل الغنائم لهذه الامة خاصة، رقم (۴۵۵۵) --

(۶) مسند الامام احمد: ۲/۳۱۸، مسند ابی هريرة، رضی الله عنه، رقم (۸۲۲۱) --

(۷) فتح الباری: ۶/۲۲۲، وطرح الثريب: ۶/۱۹۷۶ --

اوبنې ته وئيلې شي، البته بعضې وخت كښې د اوبنې نه علاوه په نورو ځناورو باندې هم ددې اطلاق كيږي.)

او كلمه دا چې د غنما او خلفات مينځ كښې ده، دا د تنويع دپاره ده، بيا دلته غنماً مطلق ذكر كړې شوې دې او ددې صفت حمل غالباً حذف كړې شوې دې، ددې وجه يا خو داده چې دويمه كلمه يعنې خلفات په دې باندې دلالت كوي، په دې صورت كښې د غنما ترجمه به هم داوې چې حامله چيلۍ دويمه وجه دا هم كيږي شي چې غنم دلته مطلق دې د څه زياتۍ وصف نه بغير، يعنې صرف چيلۍ، په دې صورت كښې به ددې د مطلق بيانولو توجه دا وي چې په چيلۍ كښې د برداشت ماده كمه وي، دا ډيره زر ويږي، دغه شان ددې د ضائع كيدو ويره وي، په خلاف د اوبنې دلته خو د حمل د ضائع كيدو ويره وي چې چرته حمل ضائع نه شي، ځكه چې په عربو كښې د نومې اوبنې اهميت وو.)

بعضې شارحينو "او" د شك دپاره گرځولې دې ليكن حافظ صاحب رحمته الله عليه فرماني چې دا صرف د يو احتمال په درجه كښې ده، معتمد د تنويع دپاره كيدل دي ځكه چې د ابويعلى رحمته الله عليه محمد بن العلاء نه د روايت الفاظ دا دي، "ولا رجل له غنم اوبقرا او خلفات" دلته خو دا او په

تنويع باندې صراحة دلالت كوي (او ولادد ولد ولد ولادة مصدر دې، د واو كسرې سره) ددې كسانو د منع كولو حكمت څنگه چې تاسو او كتل چې حضرت يوشع عليه السلام درې قسمه خلق خپل ځان سره د تلو نه منع كړل او وي فرمايل، "لا يتبعني....." نو ددې حكمت دا وو چې په جهاد كښې به د هغوي توجه تقسيم شوې وه، ذهن به ئې په دغه كارونو كښې انځتې وو. ددې وجې نه مهلب رحمته الله عليه فرماني چې په دې حديث شريف كښې ددې خبرې دليل دې چې ددنيا فتنې انسان لره بې صبره او بې حواسه كوي، مثلاً هغه سړې چې نژدې وخت كښې ئې واده كړې وي، د خپلې بې بې سره د نزديكت خواهشمند هم وي، د هغې د ديدار كولو مشتاق وي نو داسې سړې كه چرته جهاد ته هم لار شي نو دده زړه به د واپس كيدو په فكر كښې وي.)

(۱) فتح الباري: ۲۲۲/۶، وعمدة القاري: ۴۳/۱۵.

(۲) فتح الباري: ۲۲۲/۶، وطرح التريب: ۱۹۷۷/۶.

(۳) لم اجده في مسند ابي يعلى، وانما عزاه اليه الحافظ رحمته الله عليه، في الفتح: ۲۲۲/۶.

(۴) فتح الباري: ۲۲۲/۶.

(۵) پورته حواله، وطرح التريب: ۱۹۷۷/۶.

(۶) وضاح بن اسماعيل خپلې محبوبې ته په خطاب كولو كښې دا مضمون په دې بيتونو كښې بيان كړې دې

من الطيف الذي ينتاب ليلا
اذا رمقت باعينها سهيلا (ديوان الحماسة: ۱۰۹)

فرني ما امن بنات نعش
ولكن ان اردت فهي جينا

شیطان به دې د عبادت نه بې فکره کړی په کوم عبادت کښې چې دې مشغول دې او دده په زړه کښې به ویره و اچوی هم دا حال د دنیا د نور ساز و سامان دې. (۱)
 او امام نووی رحمته الله علیه فرمائی چې ددې حدیث شریف نه د خبره معلومه شوه چې اهم امور د داسې کسانو په ذمه باندې لگول پکار دی چې فارغ وی، ددې کارونو دپاره وخت ورکولې شی، اهم کارونه د داسې کسانو په ذمه باندې لگول پکار نه دی چې د هغوی زړه ددې کارونو نه علاوه په نورو کارونو کښې مشغول وی ځکه چې دغه کارونه به دده عزم کمزورې کړی او کوم کوشش چې دې کوی نو په هغې کښې به دغه نور کارونه د نقصان سبب وی. (۲) او علامه ابی رحمته الله علیه په شرح مسلم کښې فرمائی چې زیاته واضحه خبره داده چې دا حدیث د **يقضى القاضى وهو غضبان** د قبیل نه دې لکه دا د تنقیح مناط (۳) باب نه دې.... او د حدیث شریف مطلب دادې چې ماسره دې داسې هیڅ یو سرې هم رانه شی چې د هغه زړه په بله څه معامله کښې مشغول وی. (۴) یاد ساتئ چې مذکوره حکم په هغه صورت کښې دې چې کله جهاد فرض کفایه وی ورنه د فرض عین کیدو په صورت کښې چې کله نفیر عام شی نو د هر سرې دپاره وتل ضروری دی، البته که حاکم وقت د څه مصلحت د وجې نه څوک منع کړی نو جدا خبره ده.

فغزا: نو د غزوې دپاره روان شو.

یعنی هغه کسان ئې ځان سره کړل کوم کسانو کښې چې دا مذکوره صفات نه وو د کومو ذکر چې حضرت یوشع عليه السلام کړې وو (۵) چې **لا يتبعني رجل.....** "او جهاد دپاره روان شو.
قوله: فدنأ من القرية صلاة العصر أو قريباً من ذلك: نو هغوی کلی ته نژدې شو د مازیگر په وخت کښې یا مازیگر ته نژدې

د کلی نه مراد (اریحا) د عبرانی ژبې لفظ دې، د حضرت نوح عليه السلام په نسل کښې د یو سرې اریحا بن مالک بن ارفحشد بن سام بن نوح طرفته ددې ښار نسبت کولو سره دې ته اریحا وئیلې شی، دا د شام په ښار اردن (نن صبا) مستقل مملکت دې، په نشیب کښې واقع وو، ددې

(۱) شرح ابن بطلال: ۲۷۷/۵، وفتح الباری: ۲۲۳/۶، وطرح التثريب: ۱۹۷۶/۶.

(۲) شرح النووی علی مسلم: ۸۵/۲، ومثله فی فتح الباری: ۲۲۳/۶-۲۲۴، وشرح الکرماني: ۹۶/۱۳.

(۳) وتنقیح المناط عند الاصوليين: هو النظر والاجتهاد فی تعیین ما دل النص علی كونه علة من غیر تعیین، بحذف ما لا مدخل له فی الاعتبار مما اقترن به من الاوصاف، و ذلك مثل قول النبی ﷺ للاعرابي الذي قال: هلكت يا رسول الله ما صنعت؟..... انظر الموسوعة الفقهية: ۷۷/۱۴، مادة تنقیح المناط.

(۴) شرح الابی علی مسلم: ۵۸/۵، احادیث اباحة الغنائم لهذه الامة.....

(۵) فتح الباری: ۲۲۲/۶.

(۶) اریحا ما لفتح، نه الکسر، و باء ساکنه، والحاء المهملة، والقصر.

او د بیت المقدس مینځ کښې د یو ورځ مشکل غریز سفر فاصله ده^۱ دا د حموی د زمانې خبره ده، دلته جبارین قوم آباد وو، چې د هغوی ذکر په قرآن کریم کښې هم راغلې دي، قالوا یوسو ان فیها قوما جبارین..... (الباقية: ۳۲) او گوره معجم البلدان: ۱/۱۶۵، مادة "اریحا" - ښار دي، دلته د ښار نه په قریه سره تعبیر کړې شوې دي، امام حاکم رحمه الله چې کوم روایت د حضرت کعب رضی الله عنه نه نقل کړې دي، په هغې کښې ددې کلی نوم اریحا راغلې دي^۲.

د مسلم شریف په روایت کښې "فاحل للقرية" د اریحې دي، په دې صورت کښې به مطلب دا شی چې هغوی خپل لښکر اریحا ښار ته نژدې کړو^۳.

جباریه قوم سره د حضرت یوشع عليه السلام جهاد: د باب په حدیث شریف کښې چې د کوم جهاد او قتال ذکر دي نو دا د جباریه قوم یا د جبارینو خلاف وو، ابن اسحاق وائی چې کله حضرت موسی عليه السلام وفات شو او ددې واقعي څلویښت کاله تیر شو نو حضرت یوشع عليه السلام بنی اسرائیلو ته پیغمبر راواستولی شو او هغوی بنی اسرائیلو ته او وئیل چې اوس زه د الله تعالی نبی یم او ماته الله تعالی جباریه قوم سره د جهاد کولو حکم کړې دي. نو بنی اسرائیلو ددوی تصدیق او کړو، په دوی ئې ایمان راوړو او د دوی په لاس ئې بیعت او کړو. نو حضرت یوشع عليه السلام بنی اسرائیلو ځان سره د اریحا طرفته بوتلل، دوی سره د میثاق تابوت^۴ هم وو، هلته په رسیدلو سره دوی د اریحا ښار محاصره او کړه او دا محاصره شپږو میاشتو پورې جاري وه.

د اوومې میاشتې په شروع کښې د حضرت یوشع عليه السلام ملگرو په یو ځانې حمله او کړه چې د هغې د وجې نه د جبارینو ټول قوم او ویریده، په هغوی کښې وارخطائی خوره شوه او د ښار د پناه والا دیوال پرېوته. دغه شان دوی داخل شو او جباریه ئې ښه قتل کړل، دا د جمعة المبارک ورځ وه او د جباریه څه خلق ژوندی وو او جنگیدل، په دې دوران کښې نمر پریوتل شروع شو او د هفتې شپه په داخلیدو شوه، په دې شپه کښې د دوی دپاره د قتال او د ښکار وغیره ممانعت وو، ددې صورت حال په لیدلو سره حضرت یوشع عليه السلام ته ویره شوه چې چرته مونږ کمزوري نه شو او جنگ د هفتې ورځې ته اونه رسی نو ددې وجې نه هغوی د الله تعالی

^۱ (المستدرک للحاکم: ۲/۱۴۰، کتاب قسم الفی، رقم (۲۶۱۸)، والمعجم الاوسط للطبرانی: ۶/۳۵۳، من اسمه محمد، رقم (۶۶۰۰)).

^۲ (فتح الباری: ۶/۲۲۲).

^۳ (صحیح مسلم، کتاب الجهاد، باب تحلیل الغنائم لهذه الامة خاصة، رقم (۴۵۵۵)).

^۴ (فتح الباری: ۶/۲۲۲، وطرح التریب: ۶/۱۹۷۸).

^۵ (د میثاق د تابوت نه مراد هغه تابوت دي په کوم کښې چې سکینه، د حضرت موسی او هارون علیهما السلام همسا او د هغې تختو لرگی وو کومې چې حضرت موسی عليه السلام د خپل قوم د غوا د بچۍ په عبادت باندې د لیدلو په وخت کښې ماتې کړې وې، دا د حضرت ابن عباس رضی الله عنهما قول دي. هناک اقوال اخري ایضا، انظر تفسیر القرطبی: ۳/۲۴۹).

په دربار عاليه کښې دعا او کړه، "اللهم اردد الشمس على....." (۱)

قوله: فقال للشمس: انك مأمورة، وأنا مأمور، اللهم احبسها علينا، فحبست حتى

فتح الله عليهم: نو حضرت يوشع عليه السلام نمر ته په خطاب کولو کښې او وئيل چې ته هم مامور ئې او زه هم مامور يم. انې الله! دا نمر زمونږ دپاره اودري نو نمر اودرولې شو تردې چې الله تعالی هغوی ته په جباره قوم باندې فتح نصيب کړه.

مطلب دادې چې کله يوشع عليه السلام اوليدل چې نمر پريوځي او دشمن تردې وخته پورې پوره ختم شوې نه دې نو هغوی نمر ته خطاب او کړو او وې فرمائيل چې ته هم مامور ئې او زه هم مامور يم، تا ته د عام عادت مطابق د پريوتلو دپاره د الله تعالی حکم دې او ما ته دا حکم دې چې د "هفتې" په ورځ جنگ اونه کړم لکه د حاکم په روايت کښې ددې سبب هم موجود دې، حضرت کعب بن الاشرف فرمائي:

"انه وصل الى القرية وقت عصر يوم الجمعة، فكادت الشمس ان تغرب ويدخل الليل" (۲)

د وانا مامور هم دا معنی ده او د دواړو مامورانو مينځ کښې هم دا فرق دې چې جماداتو ته

امر ته د تسخير (مسخر کيدو) دې او عاقلانو ته امر د تکليف (مكلف کيدو) دې. (۳)

نمر ته د خطاب کولو حقيقت: دلته حضرت يوشع عليه السلام چې نمر ته کوم خطاب او کړو نو دا يا په حقيقت باندې محمول دې چې الله تعالی په نمر کښې دا صلاحيت پيدا کړې وو چې په هغه کښې تمیز او ادراک راغلې وو او د حضرت يوشع عليه السلام په خبرو باندې پوهيدلو يا دا په مجاز باندې محمول دې چونکه دا خبره هغوی ته معلومه شوه چې نمر د خپل عام عادت نه اړول صرف د خرق عادت په طور باندې ممکن دی، ددې وجې نه هغوی په زړه کښې ددې خبرې سوچ او کړو چې ته هم مامور ئې او زه هم مامور يم، ددې نه پس هغوی په ژبې سره او فرمائيل چې، "اللهم احبسها علينا"

حافظ رحمه الله فرمائي (۴) چې د دويم احتمال تائيد د هغې روايت نه هم کيږي کوم چې د حضرت سعيد بن المسيب رحمه الله نه روايت دې، په هغې کښې دی:

"اللهم، انها مأمورة، واني مأمور، فاحبسها علي، حتى يقضى بيني وبينهم، فحبس الله عليه" (۵)

"انې الله! دې هم مامور دې، زه هم مامور يم نو دې د ډوبيدو نه بند کړه، تردې چې زما او د جباره قوم مينځ کښې څه فيصله اوشي نو الله تعالی نمر د ډوبيدو نه منع کړو." ددې روايت

(۱) عمدة القاری: ۴۳/۱۵، و کتاب الاسماء المبهمة: ۳۳۲/۵۔

(۲) لم اجدها في المستدرک، واما قاله الحافظ: ۲۲۲/۶۔

(۳) فتح الباری: ۲۲۳/۶۔

(۴) پورته حواله، و انظر كذلك طرح التثريب: ۱۹۷۸/۶۔

(۵) صحيح ابن حبان: ۱۴۹/۸، کتاب السير باب الغنائم وقسمتها..... رقم ((۴۷۸۷))۔

نه د "وانا مامور" د ارشاد وضاحت کيږي (بهر حال دواړه احتمالات ممکن دي او راجح دويم احتمال دې والله اعلم

د باب په روايت کښې "اللهم احسها علينا" راغلي دي کوم چې مطلق دي او د امام احمد په روايت کښې مقيد راغلي دي چې "اللهم احسها على شيئاً" چې دا نمر هغه وخت پورې منع کړي کوم وخت پورې چې زموږ ضرورت دي چې هغه پوره شي او ښار فتح شي (د) د نمر منع کيدو په کيفيت کښې اختلاف لکه څنگه چې په روايت کښې راغلي دي چې نمر د ډوبيدو نه منع کړي شو ليکن ددې کيفيت څه وو؟ په دې کښې د حديث د عالمانو اختلاف دي، په دې سلسله کښې راجح قول هغه دي کوم چې ابن بطلال رحمه الله وغيره اختيار کړي دي چې د نمر حرکت رو شوي وو، د هارون بن يوسف امادي په ترجمه کښې راغلي دي چې دا واقع د حزينان په مياشت (غالباً جون) کښې په څوار لسم تاريخ باندې پيښه شوې وه، دا ورځ ډيره اوږده وې (د) (په انگرېزي مياشتو کښې د جون ۲۲ تاريخ د کال په ورځو کښې د ټولو نه اوږده ورځ وې، کيدې شي چې دا هم دغه ورځ وې، والله اعلم

قوله: فجمع الغنائم، فجاءت - يعني النار - لتاكلها، فلم تطعمها: نو حضرت يوشع عليه السلام غنيمتونه جمع کړل دي دپاره چې هغه يعني اور راشي او دا اوخوري ليکن هغې اور غنيمتونه اوم نه ځکل (خوړل خو لري خبره ده)

يعني النار "جمله تفسيريه ده، دا د يو راوي له طرفه ده، په دې کښې د جاءت د فاعل وضاحت کړې شوې دي. بيا دلته "فلم تطعمها" وئيلي شوي دي او لم تاكلها نه دي وئيلي شوي ځکه چې لتاكلها سره به موافقت شوې وو نو دا مبالغه ده ځکه چې د طعام معنی ده ځکل او د اكل معنی ده خوړل، مطلب دادې چې راتلونکي اور د غنيمتونو نه ځکل هم اونه کړل، خوړل خو لري خبره ده، ددې وجې نه ددې جملې "فلم تطعمها" معنی د لم تذوق طعمها ده، ددې مثال په قرآن کریم کښې هم موجود دي (د)

ارشاد مبارك دي: ﴿ومن لم يطعمه فانه مني﴾ چې حضرت طالوت عليه السلام بنی اسرائیلو ته او وئيل چې کوم کس دې نهر ته د اوبو ځکلو دپاره لاس نږدې نه کړي نو هغه زما ملگري دي او څوک چې ددې خلاف کار او کړي نو هغه سره زما هيڅ تعلق نشته

(فتح الباری: ۶/۲۲۳) -

(پورته حواله، والمسنند للامام احمد: ۱۸/۲، مسند ابی هريرة (۸۲۲۱)) -

(فتح الباری: ۶/۲۲۳، وابن بطلال: ۵/۲۷۸، والکرماني: ۱۳/۹۶، وطرح الثريب: ۶/۱۹۷۸) -

(البقرة ۲۳۹) -

قوله: فقال: ان فيكم غلولا: نو حضرت یوشع عليه السلام او فرمائیل چې بیشکه په تاسو خلقو کښې غلول دې

غلول د غنیمت په مال کښې خیانت کولو ته وئیلې شی (۱)

قوله: فليبايعني من كل قبيلة رجل فلزقت يد رجل بيده فقال: فيكم الغلول، فليبايعني قبيلتك، فلزقت يد رجلين أو ثلاثة بيده، فقال: فيكم

الغلول: نو د هرې قبیلې نه دې یو سړې زما په لاس باندې بیعت او کړې نو د یو سړې لاس د هغوی لاس پورې انختلو، وې فرمائیل چې خیانت هم تاسو خلقو کړې دې، ددې وجې نه اوس دې ستاسو قبیلې زما په لاس باندې بیعت او کړې نو د دوو یا دریو کسانو لاسونه انختل، یوشع عليه السلام او فرمائیل چې خیانت هم تاسو خلقو کړې دې.

د فلزقت نه مخکښې دواړو ځایونو کښې حذف دې، چونکه د کلام سیاق په دې باندې دلالت کوی، ددې وجې نه دا جمله حذف کړې شوه، یعنی فبايعوه چې هغوی بیعت او کړو..... نو دا واقعې پیښه شوه، (دلته په روایت کښې "رجلين او ثلاثة" راغلې دې، د ابویعلی (په روایت کښې "رجل او رجلين" دې. د بیعت دوران کښې د څو کسانو لاس انخته نو په دې کښې شک دې، البته د سعید بن المسیب رضی الله عنه په روایت کښې یقین سره "رجلين" راغلې دې، (۲) چې د دوو کسانو لاس انختلې وو. (۳)

ابن المنیر رحمته الله فرمائی چې د هغوی په وخت کښې د خیانت معلومولو طریقه هم دا وه. (۴)

(۱) عمدة القاری: ۴۳/۱۵، وفتح الباری: ۲۲۳/۶، وشرح الکرمانی: ۹۶/۱۳.

(۲) فتح الباری: ۲۲۳/۶.

(۳) لم اجد في مسند أبي يعلى، وانما قاله الحافظ في الفتح.

(۴) صحيح ابن حبان: ۱۴۹/۸، کتاب السير، باب الغنائم وقسمتها..... رقم ((۴۷۸۷)).

(۵) فتح الباری: ۲۲۳/۶.

(۶) يوه عجيبه واقعې: دلته علامه قسطلانی رحمته الله یو واقعې ذکر کړې ده، کومه چې د مستند او ثقې راویانو نه روایت ده، فرمائی چې په مدينه منوره کښې یو حمام وو، په هغې کښې به ښځو ته غسل ورکولې شو، هغې کښې یو ځل یو ښځه راوستلې شوه، هغې ته غسل ورکولې شو چې یو بله ښځه تخت ته راغله او اوږدېدلې او مرده ښځې ته ئې اوونیللې رڼا کارې او د هغې ښځې په شرم گاه ئې لاس هم اووهلو چې په هغې ځانې باندې وینختلو، هغې ښځې او نورو ښځو ډیرې چغې اووهلې چې په څه طریقي سره دا لاس لرې شی لیکن داسې اوڼه شو. دا معامله د مدينې منورې والی ته بیان کړې شوه نو هغوی د مدينې منورې فقهاؤ سره مشوره اوکړه نو یو کس رانې ورکړه چې لاس دې ترینه کتې کړې شی. دویم اوونیل چې د مړې ښځې ددغه ځانې نه دې غوښه کتې کړې شی ځکه چې بهر حال د هر انسان په مقابلې کښې د ژوندۍ حرمت زیات دي. د مدينې منورې والی اوونیل چې ترڅو ما د ابوعبید (امام مالک) سره مشوره کړې نه وی نو هیڅ قسم حکم جاری کولې نه شم نو د امام مالک طرفته قاصد واستولې شو نو هغوی او فرمائیل چې مه د ښځې لاس کتې کوی..... [بقیه بر صفحه آنده...]

نو کوم کس چې به خیانت گر او د هوکه باز وو نو د بیعت کولو په وخت به د هغه لاس انځتلو په دې کبسي به دې خبرې طرفته اشاره وه چې په دې لاس باندې د بل چا څه حق دې چې دده نه اخستل پکار دی، یا دا داسې لاس دې چې دا وهل پکار دی او ددې لاس مالک (خان) لږه قید کول پکار دی. تردې چې مذکوره حق خپل مالک ته واپس کړي، دا د هغې جنس نه دې د کوم ذکر چې په روایتونو کبسي هم راغلې دې چې په قیامت کبسي به لاس د خپل مالک خلاف گواهی ورکوي.)

فیکم الغلول“ نه پس د سعید بن المسیب رضی الله عنه په روایت کبسي د هغې دواړو د جرم قبول هم مذکور دی چې هغې دواړو او وئیل ققالا: أجل، غللتنا“.)

قوله: فجاءوا برأس مثل رأس بقرة من الذهب، فوضعوها، فجاءت النار فاكلتها: نو هغوی د سرو زرو یو سر راوړو چې د غوا د سر برابر وو، هغه ئې کیخودلو، اور راغی او هغه غنیمت ئې اوخوړه.

مطلب دادې چې هرکله په هغوی باندې جرم ثابت شو نو هغوی د غوا د سر برابر یو سر راوړو چې د سرو زرو جوړ کړې شوې وو، هغه ئې راوړلو او نورو غنیمتونو سره ئې کیخودلو، اوس چونکه غنیمت مکمل راغی نو راتلونکې اور هغه ټول غنیمت اوخوړلو کوم چې د قبولیت علامت وو. لکه څنگه چې وړاندې تیر شو چې د تیر شوې امتونو او انبیاء کرامو عليهم السلام خصوصیت دا وو چې په یو فراخه ځانې کبسي به ئې غنیمت جمع کړو، د آسمان نه به اور راغی او هغه به ئې اوسوزوو او که په هغې کبسي به څه قسم خیانت وو یا داسې څیز به وو چې حلال به نه وو نو اور به هغې ته هیڅ هم نه وئیل او دابه د نه قبلیدو علامت گنډلې شو. دا حال د هغوی د قربانو هم وو، د ځناور د قربانی کولو نه پس به اور راغی او هغه به ئې اوسوزوو کوم چې به د الله تعالی په نزد قبول وو او چې کوم به قبول نه وو نو هغه به په خپل

...بقیه از حاشیه گذشته] او مه غوښه کتې کوي، زما خیال خو دادې چې دا مړه او وفات شده ښځه په خپل حد کبسي خپل حق غواړي، دې الزام لگوونکې ښځې (قاذفه) ته حد اولگوي. نو د هغوی په مشوره باندې عمل کولو سره د مدينې منورې والي په هغې ژوندی ښځې باندې حد جاری کړو، چې کله یو اتیا گورې ورکړې شوې نو لاس هم هغه شان انځتلي وو لیکن څنگه چې ورته اتیایمه کوره ورکړې شوه او د حد قذف نصاب پوره شو نو د هغې ښځې لاس هم د مړې ښځې د بدن نه جدا شو!!!

علامه قسطلانی رحمته الله ددې واقعي د نقل کولو نه پس لیکي: فاما أن يكون مالك رحمه الله اطلع على هذا الحديث، فاستعمله بنور التوفيق في مكانه، واما أن يكون وفق، فوافق:

وقد كان الزاق يدالغال بيد يوشع تنبها على أنها يد عليها حق يطلب أن يتخلص منه، أو دليلاً على أنها يد ينبغي أن يضرب عليها، ويحبس صاحبها، حتى يؤدي الحق الى الامام، وهو من جنس الشهادة اليد على صاحبها يوم القيامة“ او گوري ارشاد الساري: (۲۰۷/۵)۔

(فتح الباری: ۲۲۳/۶، وبمثله قال ابن بطلان، انظر شرحه: ۲۷۸/۵)۔

(پورته حواله جات، وصحيح ابن حبان: ۱۴۹/۸، كتاب السير، باب الغنائم.....، رقم (۴۷۸۷))۔

حالت باندې باقی پاتې شو او اور به هغې ته هېڅ هم نه و نیل. (۱)
قوله: ثم أحل الله لنا الغنائم، رأي ضعفنا وعجزنا، فأحلها لنا: بیا الله تعالی زموږ
 دپاره غنیمتونه حلال کړل، هغه زموږ عجز او کمزوری ته او کتل نو دا ئې زموږ دپاره حلال کړل
 یعنی الله تعالی امت محمدیه سره د شفقت معامله او کړه او په حکم کښې ئې تخفیف او
 سپکوالی او کړو او غنیمتونه ئې د امت محمدیه عليه السلام دپاره حلال کړل، اوس دا امت د
 غنیمت مالونه خوړلې شی او دا ددې امت خصوصیت دي،
 د نسائی شریف (په روایت کښې راغلې دي) ”**قال رسول الله صلى الله عليه وسلم عند ذلك: ان الله**
اطعنا الغنائم رحمة رحمتها، وتخفيفاً وخفف عنا“ (۲)

جمله د ”رأي ضعفنا وعجزنا“ جمله تعلیلیه او سببیه ده، په دې کښې د امت محمدیه عليه السلام دپاره
 غنیمتونه حلال ولې او ګرځولې شو، ددې خبرې علت او سبب په کښې بیان کړې شوې دي. د
 سعید بن المسیب رضی الله عنه په روایت کښې نور هم وضاحت دي، په هغې کښې دي، لهما رأی من
 ضعفنا“ (په دې جمله کښې دې خبرې طرفته هم اشاره ده چې د الله تعالی په وړاندې د
 عاجزی اظهار کول د فضل او د انعام سبب جوړیږي. (۳)
 ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: ترجمة الباب سره ددې حدیث شریف مناسبت په
 دې جمله کښې دي، ثم أحل الله لنا الغنائم“ (۴)

⑨ باب: الغنیمة لمن شهد الواقعة

د ترجمة الباب مقصد: دلته د امام بخاری رحمته الله علیه مقصد د ائمه ثلثه مذهب لره راجح ګرځول دي
 هغوی دا وائی چې کوم خلق په جهاد کښې شریک وی نو هغوی ته به د غنیمت په مال کښې
 حصه ملاویري او کوم کسان چې شریک نه وی نو هغوی ته به په کښې حصه نه ملاویري بیا
 چې امام بخاری رحمته الله علیه کومو الفاظو سره ترجمه قائمه کړې ده نو هغه د حضرت عمر رضی الله عنه د یو
 اثر الفاظ دي، چې هغوی د حضرت عمار بن یاسر رضی الله عنه ته د هغوی په تپوس کولو باندې
 راستولي وو. ددې نه ائمه ثلثه په خپل مذهب باندې استدلال کوي. (۵)

(۱) عمدة القاری: ۴۳/۱۵- ۴۴، وشرح ابن بطال: ۲۷۸/۵، وطرح التثريب: ۱۹۷۹/۶-.

(۲) سنن النسائی الکبری: ۳۵۲/۶، کتاب التفسیر، الانفال، قوله تعالی: (حلالا طيبا)، رقم (۱۱۲۰۹)-.

(۳) فتح الباری: ۲۲۳/۶، وعمدة القاری: ۴۴/۱۵، وشرح الکرماني: ۹۶/۱۳-.

(۴) سنن النسائی: ۳۵۲/۶، کتاب التفسیر..... قوله تعالی: (حلالا طيبا)، رقم (۱۱۲۰۹)، ومسنند احمد: ۲۳۲/۳-.

مسند ابی هريرة من رواية همام بن منبه، رقم (۸۱۸۵) و: ۲۳۸/۳، رقم (۸۲۲۱)-.

(۵) فتح الباری: ۲۲۳/۶-.

(۶) عمدة القاری: ۴۴/۱۵-.

دا اثر امام عبدالرزاق صنعانی رحمہ اللہ موصولاً په خپل مصنف کښې نقل کړې دي، (ددې نه علاوه امام بیهقي رحمہ اللہ هم دا اثر مختلف طرق سره نقل کړې دي او ددې په پس منظر بیانولو کښې ئې یوه واقعہ هم لیکلې ده، لکه طارق بن شهاب رحمہ اللہ فرمائی:

«ان اهل البصرة غزوا اهل نهاوند فامدوهم باهل الكوفة، وعليهم عمار بن ياسر، فقدموا عليهم بعد ما ظهروا على العدو، فطلب اهل الكوفة الغنيمة، واراد اهل البصرة ان لا يقسموا لاهل الكوفة من الغنيمة، فقال رجل من بني تميم لعمار بن ياسر: ايها الاجدم، تريد ان تشاركنا في غنائمنا؟ قال: وكانت اذن عمار جدعت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم، فكتبوا الى عمر بن الخطاب، رضى الله عنه، فكتب اليهم عبرة: "ان الغنيمة لمن شهد الواقعة"» (۱)

چې "اهل بصره اهل نهاوند سره جنگ او کړو، د هغوی د مدد دپاره اهل کوفه روان شو او د دوی امير حضرت یاسر رحمہ اللہ وو، اهل کوفه میدان جنگ ته هغه وخت اورسیدل چې کوم وخت کښې اهل بصره په دشمن باندې غالب شوې وو، نو اهل کوفه په غنیمت کښې خپله حصه او غوښتلې او د اهل بصره خواهش دا وو چې اهل کوفه مونږ سره په تقسیم کښې شریک نه شی، نو په بنو تمیم کښې یو سړی حضرت عمار بن یاسر رحمہ اللہ ته په خطاب کښې اووئیل..... آیا تاسو زمونږ په غنیمتونو کښې نور خلق شریکول غواړئ.....؟ نو هغې خلقو صورت حال حضرت عمر رحمہ اللہ ته واستوو او د حل باره کښې ئې پوښتنه اوکړه نو حضرت عمر رحمہ اللہ په جواب کښې او فرمائیل چې د غنیمت حقدار هغه دي څوک چې په جنگ کښې شریک شوې وي.

د اصل مسئلې طرفته د تللو نه مخکښې په دې باندې ځان پوهه کړې چې د غنیمت د استحقاق دپاره څو شرطونه دي، کوم چې لاندې ذکر کولې شی:

- ① مستحق صحیح او سالم وي، بیمار نه وي، مطلب دادي چې د جنگ کولو صلاحیت لري، گډ، شل او نابینا وغيره نه وي.

- ② دار الحرب کښې دې د قتال په نیت سره داخل شوې وي، خواه وروستو بیا په جنگ کښې حصه واخلي یا وانخلي لیکن مقصد ئې قتال او دشمن سره جنگیدل وي.

- ③ سړې وي، په غنیمت کښې د ښځو څه حصه نشته، اگر چه په جنگ کښې شرکت اوکړي.

- ④ مسلمان وي، کافر دپاره د غنیمت په مال کښې څه نشته، اگر چه په جنگ کښې شریک وي (د).

(۱) مصنف عبدالرزاق: ۳۰۲/۵-۳۰۳، کتاب الجهاد، باب لمن الغنيمة؟ رقم (۹۶۸۹)۔

(۲) د نهاوند غزوي سره متعلق تفصیل به په کتاب الجزية، باب الجزية کښې راشي۔

(۳) السنن الكبرى للبيهقي: ۹۸۶، کتاب السير باب الغنيمة لمن شهد الواقعة، رقم (۱۷۹۵۳-۱۷۹۵۴)، وايضا

عند ابن ابي شيبة: ۴۹/۱۸، کتاب السير، باب من قال: ليس له شيء اذا..... رقم (۳۳۹۰۰)۔

(۴) الموسوعة الفقهية: ۳۱/۳۱-۳۱۲، وبدائع الصنائع: ۹۵۰۲، کتاب السير، فصل في احكام الغنائم وما يتصل

بها، وحاشية الدسوقي: ۲/۵۰۴، باب في الجهاد، والمغني: ۹۲۰۸-۲۰۹)۔

د باب د حدیث شریف مسئله: امام بخاری رحمته الله چې د کومې مسئلې د تشریح دپاره دلته دا باب قائم کړې دې نو د هغې تعلق پورته ذکر شوي دویم شرط سره دې او د مسئلې صورت دادې چې که د جنگ ختمیدو نه پس یو سړي یا یو لښکر د جنگ میدان ته راورسی نو آیا دده به په غنیمت کښې حصه وی یا نه؟

نو ددې دوه صورتونه دي، یو اتفاقي دې او دویم صورت اختلافي دې. اتفاقي صورت دادې چې مذکوره سړي یا لښکر د جنگ میدان ته داسې وخت کښې اوراسي چې جنگ هم ختم شوي وي او د غنیمت د تقسیم عمل هم پوره شوي وي نو دده په غنیمت کښې څه حصه نشته. او اختلافي صورت دادې چې جنگ خو ختم شوي وي لیکن د غنیمت د تقسیمولو نه مخکښې دا سړي یا دا لښکر میدان جنگ ته اورسی نو د احنافو په نزد به دا سړي په غنیمت کښې شریک وي، دوی ته به هم حصه ملاویږي او د جمهورو په نزد به دوی ته په غنیمت کښې هېڅ هم نه ملاویږي. د جمهورو دلیل د حضرت عمار رضی الله عنه هغه واقعه ده کومه چې اوس تیره شوه چې حضرت عمر رضی الله عنه په خپل خط کښې "الغنیمة لمن شهد الواقعة" لیکلې وو. او د دوی دویم دلیل د بخاری شریف او ابوداؤد شریف د حضرت ابوهریره رضی الله عنه حدیث دي، "ان النبي صلى الله عليه وسلم بعث ابا بن سعيد بن العاص في سرية قبل دجد، فقدم ابا بن بعد فتح خيبر، فلم يسهم له" (۱).

د احنافو دلیلونه: په دې مسئله کښې د احنافو دلیلونه ډیر زیات دي، په هغې کښې مونږ یو خو دلته ذکر کوو.

① امام ابویوسف رحمته الله خپل سند سره د حضرت عمر رضی الله عنه په باره کښې روایت کړې دی چې هغوی حضرت سعد رضی الله عنه ته خط اولیکه چې "قد امددتك بقوم، فمن اتاك منهم قبل ان تغني القتلى، فاشركه في الغنيمه" (۲) یعنی: زه د امداد په طور یو لښکر ستاسو طرفته درلیرم، د مقتولینو د ختمیدو نه مخکښې چې په هغوی کښې څوک هم تاسو ته دراورسی نو هغه په غنیمت کښې شریک کړئ.

② حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه د حضرت عکرمه بن ابی جهل په سرداري کښې د پنځو سوو کسانو یو لښکر د ابوامیه او د زیاد بن لیید بیاضی د مدد دپاره روان کړو، دا جماعت دوی ته هغه وخت اورسیده کله چې هغوی "نجیر" (۳) فتح کړې وو نو هغوی دغه راتلونکي جماعت

(۱) الموسوعة الفقهية: ۳۱/۳۱، غنیمه، شروط استحقاق الغنيمه)۔

(۲) الحديث، اخرجه البخاری فی الجهاد، باب الکافر یقتل المسلم.....، رقم (۲۸۲۷)، والمغازی، باب غزوة خيبر، رقم (۴۲۳۷، ۴۲۳۹)، و ابو داود فی سننه، کتاب الجهاد، باب فیمن جاء بعد الغنيمه لا سهم له، رقم (۲۷۲۳-۲۷۲۴)۔

(۳) التلخيص الحبير: ۱۰۸/۳، والمغنی: ۹۲۱۰، واعلاء السنن: ۱۱۸/۱۲)۔

(۴) قال الحموي: النجیر..... حصن باليمن قرب حضر موت منيع، لجا اليه اهل الردة.... [بقیه بر صفحه آئنده]

هم خپل خان سره په غنیمت کښې شریک کرو.)

د ائمه ثلثه د دلیلونو جوابونه د هغوی اولنې دلیل د "الغنیمه لمن شهد الوقعة والا اثر وو، ددې نه استدلال کول د څو وجو هاتو په بناء صحیح نه دي، هغه وجو هات لاندې ذکر کولې شی

① ددې اثر په وقف او رفع کښې اختلاف دي او ددې موقوف کیدل راجح دی.)

② احناف هم د حضرت عمر رضی الله عنه د اثر نه استدلال کوي، چونکه اوس د هغوی نه روایت شده روایتونو کښې تعارض راغی نو ددې وجې نه دا حدیث د احنافو خلاف حجت جوړیدې نه شی

③ احناف ددې اثر مطلب دا اخلي چې په جنگ کښې څوک د قتال په نیت سره شریک شوي وي نو هغه ته به غنیمت کښې حصه ملاوېږي، اوس دده نیت د قتال وو یا نه وو نو ددې پته به څنگه لگي نو ددې دوه طریقې کیدې شی چې هغه د جهاد یا قتال دپاره د وتلو اظهار او کړي، دهغې دپاره تیاري او کړي او ددې عملی مظاهره هم او کړي چې په جهاد کښې شریک شوي دي دویم صورت دادې چې دده وتل خو په بل څه غرض سره وو لیکن هلته تلو سره په جهاد کښې هم شریک شو لکه د اسونو په خیال ساتلو وغیره باندې مامور سړي، نو ده ته به دې صورت کښې په غنیمت کښې حصه ملاوېږي چې په قتال کښې هم شریک شوي وي،

صرف په میدان جنگ کښې دده موجود کیدل د غنیمت د حاصلولو دپاره کافی نه دی.)

د ائمه ثلثه دویم دلیل د حضرت ابان بن سعید بن العاصی رضی الله عنه واقعه ده، ددې واقعي نه ددې حضراتو استدلال کول ددې وجې نه صحیح نه دی چې دا د خیبر واقعه ده کوم چې فتح کیدو سره په دارالاسلام کښې بدل شوي وو او د باب د مسئلې تعلق د دارالحرب سره دي، په دارالاسلام کښې دغه شان مدد دپاره رارسیدونکو خلکو ته په اتفاق سره په غنیمت

کښې حصه نه ورکړې کیږي.)

دویم طرفته هم دي خیبر سره متعلق د حضرت ابوموسیٰ اشعری رضی الله عنه واقعه ده کومه چې

وړاندې راځي، (په هغې کښې دا راغلې دي چې کله هغوی د خپل قوم ملگرو سره چې

...بقیه از حاشیه گذشته] مع الاشعث بن قیس فی ایام ابی بکر، رضی الله عنه، فحاصره زیاد بن لبيد البياضی، حتی افتتحه عنوة، وقتل من فيه، واسر الاشعث بن قیس، وذلك فی سنة ۱۲ للهجرة..... "انظر معجم البلدان: ۵/ ۲۷۲، باب النون والجیم)۔

① (التلخیص الحبیر: ۱۰۸/۳، والسير الكبير: ۱۱۲/۳، مع شرحه للسرخسی، باب کیفیه قسمة الغنیمة..... رقم الباب (۱۰۵)، والاستزادة انظر اعلاء السنن: ۱۱۸/۱۲-۱۲۸)۔

② (اعلاء السنن: ۱۲۰/۱۲، کتاب السير، باب اذا لحق عسكر الاسلام مدد.....، والهداية مع البناية: ۱۴۳/۷، کتاب السير، باب الغنائم وقسمتها)۔

③ (اعلاء السنن: ۱۲۱/۱۲، وفتح القدير: ۲۲۶/۵-۲۲۷، کتاب السير، باب الغنائم وقسمتها)۔

④ (اعلاء السنن: ۱۲۱/۱۲)۔

⑤ (الحدیث، اخرجه البخاری فی فرض الخمس، باب ومن الدلیل علی ان الخمس..... [بقیه بر صفحه آینده]۔

دهغوی تعداد پنخوس زره وو او د حضرت جعفر بن ابی طالب عليه السلام ملگرو، کوم چې نجاشی سره مقیم وو، سره د نبی کریم عليه السلام خدمت کښې حاضر شو نو دا عین هغه وخت وو کوم وخت چې نبی عليه السلام د خیبر د فتح کولو نه فارغ شوي وو، نو نبی عليه السلام دوی هم په غنیمت کښې شریک کړل او ددې حضراتو نه علاوه هغه کسان ئې په غنیمت کښې شریک نه کړل کوم کسان چې په دغه موقع باندې حاضر نه وو.

یو طرفته دا حدیث دې او دویم طرفته د حضرت ابان عليه السلام واقعه، په دې دواړو کښې چونکه ظاهري تعارض دې نو ددې وجې نه د جمع بین الروایات طریقته اختیارولو سره احناف هم دا وائی چې د حضرت ابوموسیٰ اشعری عليه السلام واقعه د غنیمت د تقسیمولو نه مخکښې ده او د حضرت ابان بن سعید عليه السلام د واقعي تعلق د غنیمت د تقسیم نه پس وخت سره دې، په دې باندې د حدیث دا الفاظ واضح دلالت کوی چې، "تقدم ابان بعد فتح خیبر....." (۱) او د حضرت ابوموسیٰ اشعری عليه السلام الفاظ خو دادی، "فوافینا له حین افتتاح خیبر....." (۲) ددې وجې نه احناف حضرات د تفریق قائل دی او د دوی په مذهب کښې په دواړو واقعاتو باندې عمل کیږي. (۳) والله اعلم بالصواب

ددې نه پس د باب حدیث شریف ته اوگورئ.

۲۹۵۷: (۱) حَدَّثَنَا صَدَقَةُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ عَنْ مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ قَالَ عُمَرُ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لَوْلَا آخِرُ الْمُسْلِمِينَ مَا فَتَحْتُ قَرْيَةَ إِلَّا قَمَتَهَا بَيْنَ أَهْلِهَا كَمَا قَمَتِ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - خَيْبَرَ. [ر: ۲۲۰۹]

رجال الحديث

① صدقة: دا ابو الفضیل صدقه بن الفضل مروزی عليه السلام دې ددوی تذکره په کتاب العلم، "باب العلم والعظة باللیل" کښې تیره شوې ده (۲)

② عبد الرحمن: دا عبد الرحمن بن مهدی بصری عليه السلام دې (۳)

...بقیه از حاشیه گذشته [لنوائب المسلمين ما سال هوازن..... رقم (۳۱۳۶)] _

(۱) الحديث اخرجه البخاری، وابو داود، مر تخريجه أنفا _

(۲) صحيح بخاری، کتاب فرض الخمس، باب ومن الدليل على ان الخمس..... رقم (۳۱۳۶) _

(۳) اعلاء السنن: ۱۲/۱۲۲، دغه شان اوگورئ، کشف الباری، کتاب المغازی: ۴۷-۴۸ _

(۴) قوله: قال عمر عليه السلام: الحديث، مر تخريجه في كتاب الحرث والمزارعة، باب اوقاف اصحاب النبي عليه السلام واراض الخراج..... _

(۵) كشف الباری: ۴/۳۸۸ _

(۶) ددوی د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب الصلاة، باب فضل استقبال القبلة _

⑤ مالک: دا امام دار الهجرة مالک بن انس رضی اللہ عنہ دې ددوی حالات په "بده الوسی" کښې راغلې دي.
 ⑥ زید بن اسلم: دا زید بن اسلم رضی اللہ عنہ دې د دوی ترجمه په کتاب الايمان، "باب کفران العشير...." کښې راغلې ده.

⑦ اسلم: دا ابو خالد اسلم رضی اللہ عنہ دې چې د حضرت عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ مولى دې.
 ⑧ عمر: د حضرت عمر رضی اللہ عنہ حالات د بده الوسی په "الحديث الاول" کښې تیر شوي دي.
 قال عمر رضي الله عنه: لولا آخر المسلمين ما فتحت قرية الا قسبتها بين أهلها، كما قسم النبي صلى الله عليه وسلم خيبر.

حضرت عمر رضی اللہ عنہ او فرمائیل چې که د راتلونکي (آئنده) مسلمانانو خیال نه وو نو هر یو کلي یا ښار فتح کولو نه پس به مې د هغې اوسیدونکو کښې تقسیموو لکه څنگه چې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د خیبر زمکې سره کړې وو.
 د بخاری شریف په روایت کښې دا اثر ډیر اختصار سره راغلې دي، د ابن ابی شیبه په روایت کښې نور هم تفصیل دي. اسلم فرمائی:

"سعت عبريقول: "والذي نفس عمر بيده، لولا أن يترك آخر الناس لأشي لهم، ما افتتح على المسلمين قرية من قرى الكفار الا قسبتها سهما كما قسم رسول الله صلى الله عليه وسلم خيبر سهما، ولكفى أردت أن تكون جوة تجرى عليهم وكرهت أن يترك آخر الناس لأشي لهم" (١)

دې حديث شريف سره متعلق تفصيل به په كتاب الحرث والمزارعة كښې راشي.
 ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: ابن المنير رحمته اللہ فرمائی چې په ترجمه او د باب په حديث كښې څه مناسبت نشته، دا ځكه چې ترجمه د الغنية لمن شهد الواقعة ده او په باب كښې چې كوم حديث ذكر كړې شوي دي نو د هغې مضمون د ترجمة الباب خلاف دي، په دې كښې خو ددې ذكر دي چې غنيمت د عامو مسلمانانو دپاره وقف دي او په مجاهدينو كښې به نه تقسيمېږي، بلكه د آئنده راتلونكي مسلمانانو د مصلحتونو دپاره به وقف كيږي او تاسو خو وئيل چې غنيمت صرف د مجاهدينو دپاره وي، په دې كښې د بهر خلقو حصه نه وي نو دلته خو خبره په عكس شوه؟
 ددې اشكال جواب هم ابن المنير رحمته اللہ وركړې دي چې ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت په دې جمله كښې دي، "كما قسم رسول الله صلى الله عليه وسلم خيبر"

(١) كشف الباري: ١/٢٩٠، الحديث الثاني، تفصيل دپاره اوگوري، كشف الباري: ٢/٨٠) _

(٢) كشف الباري: ٢/٢٠٣) _

(٣) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الزكاة، باب هل يشتري صدقته؟) _

(٤) كشف الباري: ١/٢٣٩) _

(٥) المصنف لابن ابی شيبه: ١٧/٥١٠، كتاب السير، في قسمة ما يفتح.....، رقم (٣٣٦٤٨)) _

په دې کښې امام بخاري رحمه الله د غنیمت فوراً د تقسیمولو ترجیح طرفته اشاره کړې ده چې غنیمت فوراً تقسیمول پکار دی، څنگه چې نبی ﷺ او کړل لکه د نبی ﷺ دا کار ددې خبرې دلیل دی چې په موقع باندې کوم کس حاضر نه وي نو په موجوده غنیمت کښې به د هغه هیڅ حق نه وي، ددې وجې نه خو فوری د تقسیم عمل اختیارولې شی اوس چې کوم کس بالکل په جنگ کښې شریک نه وي نو هغه ته خو په طریقه اولی سره حصه ملاویدل پکار نه

دی (والله اعلم

دا د امام بخاري او د ائمه ثلثه رائې ده، وړاندې تفصیل تیر شوې ده، دواړو طرفونو ته دلیلونه دي، البته د احنافو د مذهب په سلسله کښې څه فراخی شته کوم چې د سابقه تفصیل نه وضاحت سره معلومیږي.

⑩ بَابُ: مَنْ قَاتَلَ لِلْمَغْنَمِ، هَلْ يَنْقُصُ مِنْ أَجْرِهِ؟

د ترجمه الباب مقصد: د امام بخاري رحمه الله مقصد دلته دا بیانول دی چې یو سړي د غنیمت په نیت سره قتال کوی نو دده څه حکم دي؟ په دې قتال باندې ده ته اجر ملاویږي یا نه؟ که اجر ملاویږي نو څومره به ملاویږي؟ پوره یا ناقص؟

په دې مسئله کښې د عالمانو اختلاف دي، یو رائې د جمهورو ده او یو موقف د بعضي حضراتو دي. ظاهراً خو دا معلومیږي چې ددې سړي اجر به کم شی لیکن جمهور علماء دا فرمائی چې دې سره هیڅ فرق نه پریوځي، او گوري کله چې د نبی کریم ﷺ نه تپوس او کړي شو چې یو سړي د غنیمت دپاره قتال کوی او دویم د بهادري دپاره او دریم د ریاکاری دپاره نو په دوی کښې فی سبیل الله کوم یو دي؟ نو نبی کریم ﷺ او فرمائیل، "من قاتل لتكون كلمة الله هي العليا فهو في سبيل الله" نبی ﷺ دا ئې اونه فرمائیل چې که دده نیت د غنیمت وي نو دې په فی سبیل الله کښې داخل نه دي.

اوس یو سړي د اعلاء کلمه الله دپاره قتال کوی او ورسره ورسره ئې په زړه کښې د مال غنیمت خیال هم دي نو دې به د کال او د پوره اجر مستحق وي او دده په اجر کښې به هیڅ کمې نه راځي، امام ابن جریر طبري رحمه الله د امت د جمهور عالمانو نه هم دا نقل کړې دی (دغه شان علامه قاضي ابوبکر ابن العربي رحمه الله هم په احکام القرآن کښې ددې وضاحت کړې دي) ددې حضراتو دلیل هغه روایت دي کوم چې امام ابوداؤد رحمه الله په خپل سنن کښې نقل کړي دي، حضرت عبد الله بن حواله رحمه الله فرمائی:

"بعثنا رسول الله صلى الله عليه وسلم لنغنم على اقدامنا، فرجعنا، فلم نغنم شيئاً، وعرف الجهد في وجوهنا،

(فتح الباری: ۶/۲۲۵)۔

(فتح الباری: ۶/۲۸، وهو قول ابن المنير كذلك، انظر فتح الباری: ۶/۲۲۶)۔

(احکام القرآن لابن العربي: ۲/۳۸۳، سورة الانفال، الآية: ۷، المسألة الثالثة)۔

قَامَ فِينَا، قَالَ: اللَّهُمَّ، لَا تَكْلَهُمُ إِلَى فَاضَعْفِ هَنُومٍ، وَلَا تَكْلَهُمُ إِلَى أَنْفُسِهِمْ فَيَعْبُزُوا عَنْهَا، وَلَا تَكْلَهُمُ إِلَى النَّاسِ فَيَسْتَأْثِرُوا عَلَيْهِمْ“ (۱)

نبی کریم ﷺ مونږ د غنیمت د وصولولو دپاره په پیدل لښکر کښې واستولو لیکن مونږ واپس شو او مونږ ته څه غنیمت ملاو نه شو یعنې په مقصد کښې کامیاب نه شو، نبی ﷺ زموږ د مخونو نه زموږ په مشقت او تکلیف باندې پوهه شو نو د خطبې دپاره «د تسلی په طور» اودریدلو، په خطبه کښې ئې اوفرمائیل، انې الله دوی ماته مه حواله کوه ځکه چې زه د دوی د مدد او نصرت کولو نه عاجز یم، نه دوی خپلو ځانونو ته حواله کړې چې دوی به د خپل نصرت او مدد نه عاجز راشی او مه دوی هغه خلقو ته حواله کړې چې هغه خلق په دوی باندې خپلو ځانونو ته ترجیح ورکړی.

په دې حدیث شریف کښې وضاحت دې چې نبی ﷺ دا حضرات د غنیمت د مال د حاصلولو دپاره لیرلې وو، ددې نه معلومه شوه چې اعلاء کلمة الله سره که د مال غنیمت نیت هم وی نو بیا هم په اجر کښې څه کمې نه واقع کیږي. (۲)

۲۹۵۸: (۲) حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو قَالَ سَمِعْتُ أَبَا وَايِلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى الْأَشْعَرِيُّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ أَعْرَابِي لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِلْمَغْنَمِ، وَالرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِيُدْكَرَ، وَيُقَاتِلُ لِيُزَيَّ مَكَانُهُ، مَنْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَقَالَ «مَنْ قَاتَلَ لَتَكُونَ كَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا فَمَوْفَى سَبِيلِ اللَّهِ» (۳: ۱۲۲)

رجال الحديث

① محمد بن بشار: دا محمد بن بشار رحمته الله دې د دوی تذکره په کتاب العلم، ”باب ما کان النبی صلی الله علیه وسلم یتخولهم.....“ کښې تیره شوې ده. (۴)

② غندر: دا محمد بن جعفر رحمته الله دې چې په ”غندر“ باندې مشهور دې د دوی حالات په کتاب الایمان، ”باب ظلم دون ظلم“ کښې راغلې دي. (۵)

③ شعبه: دا امیر المؤمنین فی الحدیث شعبه بن الحجاج بصری رحمته الله دې د دوی تذکره په کتاب الایمان، ”باب المسلم من سلم المسلمون.....“ کښې راغلې ده. (۶)

(۱) سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب فی الرجل یغزو: یلتمس الاجر والغنیمه، رقم (۲۵۳۵)۔

(۲) فتح الباری: ۶/۲۹۔

(۳) قوله: ابو موسى الاشعري رحمته الله: ”الحديث، مر تخريجہ فی کتاب العلم، باب من سال وهو قائم عالما جالسا،

کشف الباری: ۴/۵۱۰۔

(۴) کشف الباری: ۳/۲۵۸۔

(۵) کشف الباری: ۲/۲۵۰۔

۴ عمرو: دا عمرو بن مره رضي الله عنه دې. (۱)

۵ ابو وائل: دا مشهور تابعی ابو وائل شقيق بن سلمه رضي الله عنه دې. د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب خوف المؤمن من أن يحبط عمله....." کښې بيان کړې شوي دي. (۲)

۶ ابو موسی اشعري: د حضرت ابو موسی اشعري (عبد الله بن قيس رضي الله عنه) حالات په کتاب الايمان، "باب أي الإسلام أفضل؟" کښې راغلي دي. (۳)

خبرداري: د باب د حديث شريف تشريح وړاندې په کتاب العلم، (۴) او کتاب الجهاد، (۵) کښې تيره شوي ده. ترجمه الباب سره د حديث شريف مناسبت: دلته ترجمه الباب سره د حديث شريف مناسبت د علامه عيني رحمته الله عليه د وينا مطابق په "الرجل يقاتل للمغنم" کښې دي. (۶)

۱۱ باب: قسمة الامام ما يقدم عليه، ويخبال من لم يحضره أو غاب عنه
د ترجمه الباب مقصد: علامه ابن المنير رحمته الله عليه فرمائي چې په خلقو کښې چې دا مشهوره شوي ده چې "الهدية لمن حضر" چې هديه به صرف هغه چا ته ملاويږي څوک چې په مجلس کښې شريک وي. امام بخاري رحمته الله عليه د دې خبرې ترديد کوي او دا فرمائي چې کوم خلق موجود نه وي او امام د هغوی دپاره هديه اوساتي نو په دې کښې هيڅ حرج نشته. (۷)
ليکن د ابن المنير رحمته الله عليه دا رأي بې ځايه او بې محله ده، دا د دې وجې نه چې امام بخاري رحمته الله عليه دا وئيل غواړي چې امام المسلمین ته کوم مال د کافرانو نه حاصل شي لکه مال د غنيمت، مال فني او جزیه وغيره نو امام ته په دې کښې پوره اختيار حاصل دي، چرته چې مناسب گنځي نو خرچ کولې شي، په حاضرینو کښې تقسيمول غواړي نو په حاضرینو کښې دې تقسيم کړي او که د حاضرینو نه علاوه په غائب خلقو کښې تقسيمول غواړي نو هغوی ته دې ورکړي، چاته چې غواړي نو ورکولې شي. علامه عيني رحمته الله عليه فرمائي: "حاصل المعنى يقسم

۱ (کشف الباری: ۱/۶۷۸)۔

۲ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الاذان، باب تسوية الصفوف عند الاقامة وبعدها)۔

۳ (کشف الباری: ۲/۵۵۹)۔

۴ (کشف الباری: ۱/۶۹۰)۔

۵ (کشف الباری: ۴/۵۱۱-۵۱۵)۔

۶ (کشف الباری، کتاب الجهاد: ۱/۱۷۳-۱۷۵، باب من قاتل لتكون كلمة الله.....)۔

۷ (عمدة القاری: ۱۵/۴۵)۔

۸ (ملی تراجم ابواب البخاری: ۱۹۱)۔

ما يقدم عليه بين الحاضرين والغائبين، بان يعطى شيئاً للحاضرين، ويغيب شيئاً للغائبين“ (۱)
 ۲۹۵۹: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَهْدَيْتَ لَهُ أَقْبِيَّةً مِنْ دِيَّاسٍ مُزْرَرَةٍ بِالذَّهَبِ، فَسَمَّيْنَاهُ فِي نَاسٍ مِنْ أَصْحَابِهِ، وَعَزَلَ مِنْهَا وَاحِدًا الْمَخْرَمَةَ بْنَ نُوفَلٍ، فَجَاءَ وَمَعَهُ ابْنُهُ الْمِسُورُ بْنُ مَخْرَمَةَ، فَقَامَ عَلَى الْبَابِ فَقَالَ ادْعُهُ لِي. فَسَمِعَ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - صَوْتَهُ فَأَخَذَ قَبَاءً فَتَلَقَّاهُ بِهِ وَاسْتَقْبَلَهُ بِأُزْرَارِهِ فَقَالَ «يَا أَبَا الْمِسُورِ، خَبَأْتُ هَذَا لَكَ، يَا أَبَا الْمِسُورِ، خَبَأْتُ هَذَا لَكَ». وَكَانَ فِي خُلُقِهِ شِدَّةٌ.

رجال الحديث

- ① عبدالله بن يوسف: دا ابو محمد عبدالله بن عبدالوهاب حجبى ﷺ دې د دوى تذکره په کتاب العلم، ”باب لیبذل الشاهد الغائب“ کښې تیر شوې ده. (۲)
 - ② حماد: دا حماد بن زيد بن درهم ﷺ دې د دوى حالات په کتاب الايمان، ”باب المعاصى من امر الجاهلية“ کښې تیر شوې دى. (۳)
 - ③ ايوب: دا ايوب بن ابى تميمه کيسان سختياني ﷺ دې د دوى تذکره په کتاب الايمان، ”باب حلاوة الايمان“ کښې راغلې ده. (۴)
 - ④ عبدالله بن ابى مليکه: دا قاضى عبدالله بن ابى مليکه تميمى ﷺ دې د دوى حالات په کتاب الايمان، ”باب خوف المؤمن من ان يحبط.....“ کښې بيان کړې شوې دى. (۵)
- حضرت عبدالله بن ابى مليکه ﷺ فرمائي چې د نبى ﷺ په خدمت کښې څه قباگانې هديه راغلې چې د ريښمو وې او د سرو زرو کار پرې شوې وو نو هغه ټولې نبى ﷺ په بعضي صحابه کرامو کښې تقسيم کړې او په هغې کښې يو قباء جدا د حضرت مخرمه بن نوفل (۶) دپاره کيخوده، حضرت مخرمه چې کله په خدمت اقدس کښې حاضر شو نو ورسره خپل ځونې مسور (۷) وو، هغه راغی دروازه کښې او دريدلو او ځونى ته ئې اووئيل، دوى راوبله

¹ (عمدة القارى: ۱۵/۴، دغه شان اوگورئ، فتح البارى: ۶/۲۲۶، وارشاد السارى: ۵/۲۰۹)۔

² (قوله: عن عبدالله.....: الحديث، مر تخریجه فى کتاب الهبة، باب كيف يقبض العبد والمتاع؟)۔

³ (كشف البارى: ۴/۱۳۸)۔

⁴ (كشف البارى: ۲/۲۱۹)۔

⁵ (كشف البارى: ۲/۲۶)۔

⁶ (كشف البارى: ۲/۵۴۸)۔

⁷ (حضرت مخرمه بن نوفل د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب الهبة، باب كيف يقبض العبد والمتاع؟)

⁸ (حضرت مسور بن مخرمه د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب الوضوء، باب استعمال فضل وضوء الناس)

(یعنی نبی ﷺ) نبی ﷺ نې آواز واوریدلو نو قباء نې راواخسته او دوی سره ملاو شو او د هغې بتن نې دوی ته مخامخ کړې او وې فرمائیل ائې ابو المسور! ما دا قبا ستاسو دپاره پټه کیخودلې وه او د هغوی په طبیعت کښې څه سختی وه.

قوله: أن النبي صلى الله عليه وسلم أهديت له أقبية من ديباج مزرقة

بالذهب: په اکثر و نسخو کښې دغه شان "مزرقة بالذهب" راغلې دې، ددې معنی مونږ پورته بیان کړې ده چې د سرو زرو کار پرې شوې وو، په اصل کښې تزرید وائی د زرې د حلقو خپل مینځ کښې ملاویدلو ته، یوبل کښې داخلیدل، (البته ابوذر چې د مستملې نه کوم روایت نقل کړې دې نو په هغې کښې مزرقة دې یعنی د تزریر نه دې په دې صورت کښې به معنی دا شی چې په دې قباء باندې د سرو زرو تزیئ لگیدلې وې ځکه چې د تزریر معنی ده بتن لگول، (۱).

ادعاه: دا د حضرت مخرمه ﷺ کلام دې، د دوی مخاطب دلته حضرت مسور ﷺ دې هغوی خپل خوی ته دا اووئیل چې لاړ شه او نبی ﷺ ته آواز اوکړه چې زه راغلې یم. په یو روایت کښې دې، مسور وائی چې ما ته دا خبره نامناسبه ښکاره شوه او ما د ناخوښۍ اظهار اوکړو چې دغه شان نبی ﷺ رابلل نامناسب دی او ښه خبره نه ده. نو د هغوی پلار حضرت مخرمه ﷺ اووئیل چې ائې خویه! په دې کښې د بد منلو (نامناسب والي) څه خبره نشته، نبی ﷺ نه ناراضه کیږې ځکه چې هغوی مبارک جبار نه دی. (۲)

ددې حدیث شریف متن سره متعلق نور بحثونه په کتاب اللباس او کتاب الادب وغیره کښې راغلې دي. (۳)

قوله: وَرَوَاهُ ابْنُ عُلَيَّةَ عَنْ أَيُّوبَ. قَالَ حَاتِمُ بْنُ وَرْدَانَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ ابْنِ

أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْمُسَوَّرِ قَدِمَتْ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْبِيَّةٌ. تَابَعَهُ

اللَّيْثُ عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ: او دغه شان اسماعیل بن علیہ (۴) هم د ایوب نه روایت کړې

دې. او حاتم بن وردان (۵) په سند بیانولو کښې د عن المسور..... اضافه هم کړې ده.

(۱) مجمع بحار الانوار: ۴۲۲/۲، باب الزای مع الرائ، مادة زرر، والقاموس الوحيد، مادة زرد.

(۲) مجمع بحار الانوار: ۴۲۲/۲، باب الزای مع الرائ، مادة زرر، والقاموس الوحيد، مادة زرر، وارشاد الساری: ۲۰۹/۵، وعمدة القاری: ۴۵/۱۵.

(۳) ارشاد الساری: ۲۰۹/۵، وعمدة القاری: ۴۵/۱۵.

(۴) کشف الباری، کتاب اللباس: ۱۶۴، وکتاب الادب: ۵۲۶-۵۲۸.

(۵) د اسماعیل بن ابراهیم بن مسلم ابن علیہ حالات په کشف الباری: ۱۲/۲، کتاب الایمان کښې تیر شوې دي.

(۶) د حاتم بن وردان د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الشهادات، باب شهادة الاعمی وامره.....

د مذکوره تعلیقاتو مقصد: په دې عبارت باندې د پوهیدلو نه مخکېنې دا زده کړې چې د باب حدیث شریف لره د ایوب سختیانی نه روایت کوونکي کسان درې دي، حماد بن زید، اسماعیل بن علیه او حاتم بن وردان او د درې واړو په روایت کښې په ارسال او وصل کښې اختلاف دي، لکه د باب په حدیث شریف کښې ایوب هن ابن ابی ملیکه أن النبی صلی الله علیه وسلم.....“ راغلې دي او دا حدیث مرسل دي ځکه چې ابن ابی ملیکه تابعی دي، ددې نه علاوه د اسماعیل بن علیه چې کوم روایت دي نو هغه هم مرسل دي، دغه شان دا دواړه حضرات د روایت په مرسل کیدو باندې متفق شو، ددې دواړو روایتونه یو شان دي، او د حاتم بن وردان رضی الله عنه چې کوم روایت دي، په هغې کښې ابن ابی ملیکه هن المسور بن مخرمة....“ دي، دغه شان دا روایت موصول شو.

امام بخاری رضی الله عنه د ارسال او وصل ددې اختلاف دواضحه کولو دپاره د تعلیقات ذکر کړې دي. د مذکوره تعلیقاتو تخریج: پورته چې امام بخاری رضی الله عنه کوم دوه تعلیقات ذکر کړې دي، اول د ابن علیه او دویم د حاتم بن وردان د اسماعیل بن علیه رضی الله عنه تعلیق مصنف په کتاب الادب کښې موصولاً ذکر کړې دي. (۱) او د حاتم بن وردان رضی الله عنه تعلیق موصولاً په کتاب الشهادات کښې تیر شوي دي. (۲)

تأبغه الليث، عن ابن ابی ملیکه. [ر: ۲۴۵۹]

حضرت لیث بن سعد رضی الله عنه (۳) د ابن ابی ملیکه نه روایت کولو کښې د ایوب رضی الله عنه تابعدراي کړې ده.

د مذکوره تابعدراي مقصد: پورته د تعلیقاتو په ضمن کښې چې مونږ څه بیان کړل نو هغه تاسو او کتل، اوس سوال دا دي چې دا روایت مرسل دي، لکه څنگه چې د ابن علیه او د حماد بن زید روایت دي یا موصول دي لکه څنگه چې د حاتم بن وردان روایت دي او راجح کوم یو دي؟

امام بخاری دا متابعت ددې ترجیح او رجحان بنودلو دپاره ذکر کړې دي چې لیث بن سعد حفظ دي او د روایت موصول کیدل راجح دي، ابن حجر رضی الله عنه فرمائي:

“واعتمد البخاری الموصول لحفظ من وصله“ (۴)

د مذکوره متابعت تخریج: امام بخاری حضرت لیث بن سعد رضی الله عنه مذکوره پورتنې متابعت په

کتاب الهبة کښې موصولاً نقل کړې دي. (۵)

(۱) صحیح بخاری، کتاب الادب، باب المدارة مع الناس: رقم (۶۱۳۲)۔

(۲) صحیح بخاری، کتاب الشهادات، باب شهادة الاعمي..... رقم (۲۶۵۷)۔

(۳) د حضرت لیث بن سعد رضی الله عنه حالاتو دپاره اوگوری، کشف الباری: ۱/۳۲۴، بدء الوحي)۔

(۴) فتح الباری: ۶/۲۲۶)۔

(۵) صحیح بخاری، کتاب الهبة، باب كيف يقبض العبد والمتاع؟ رقم (۲۵۹۹)۔

د اصیلی یو وهم: ددې پوره تفصیل نه یو خبره دا هم واضحه شوه چې د اصیلی په نسخه کښې چې عن ابن ابی ملیکه عن السور مذکور دې نو دا وهم دې، صحیح او معتمد خبره داده چې د حماد بن زید عن ایوب عن ابن ابی ملیکه، والا طریق مرسل دې. (۱)
ترجمه الباب سره د حدیث شریف مناسبت: ترجمه الباب سره د حدیث شریف مناسبت په دې جمله کښې دې، "خبات هذا لك" (۲) ددې نه د امام بخاری رحمه الله مدعی ثابتیږي چې په دې کښې هیڅ باک نشته او امام ته په دې کارونو کښې اختیار دې. والله اعلم بالصواب

⑫ باب: كيف قسم النبي ﷺ قريظة والنضير،

وما أطي من ذلك في نوائبه.

د ترجمه الباب مقصد: دلته امام بخاری رحمه الله د استفسار په طور دا فرماني چې نبی کریم ﷺ د بنو قريظه او د بنو نضير نه حاصل شده مال غنیمت څنگه تقسیم کړې وو؟ اوس هغوی د تقسیم کیفیت خو بیان کړې نه دې کوم چې ترجمه الباب دې او په باب کښې ئې د حضرت انس رضي الله عنه حدیث نقل کړو ددې نه معلومه شوه چې هغه مالونه نبی ﷺ په نوائبو او حاجاتو کښې خرچ کړل، ددې په ذریعې امام بخاری رحمه الله دا اوښودل چې په دې تصرفاتو کښې نبی ﷺ ته پوره او کلی اختیار حاصل وو، نبی ﷺ به چې چرته مناسب گنډله نو هلته به ئې خرچ کول. (۳)

۲۹۲۰: (۴) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي الْأَسْوَدِ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ أَبِيهِ قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - يَقُولُ كَانَ الرَّجُلُ يَجْعَلُ لِلنَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - التَّخْلَاتِ حَتَّى افْتَتَحَ قُرَيْظَةَ وَالنَّضِيرَ، فَكَانَ بَعْدَ ذَلِكَ يَرُدُّ عَلَيْهِمْ. [۳۸۰۶، ۳۸۹۴]

رجال الحديث

- ① عبدالله بن ابی الاسود: دا عبدالله بن حمید ابو الاسود بصری رحمه الله دې. (۵)
- ② معتمر: دا معتمر بن سلیمان بن طرخان تیمی رحمه الله دې.
- ③ ایبه: د اب نه مراد حضرت سلیمان بن طرخان تیمی رحمه الله دې. ددې دواړو حضراتو تذکره په کتاب العلم، "باب من خص بالعلم قوماً دون قوم....." کښې راغلې ده. (۶)

(۱) فتح الباری: ۶/۲۲۶.

(۲) فتح الباری: ۶/۲۲۷.

(۳) عمدة القاری: ۱۵/۴۶، وشرح الکرمانی: ۱۳/۹۹.

(۴) قوله: سمعت انس.....: الحديث، مر تخريجه في الهبة، باب فضل المنيحة.

(۵) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الاذان، باب بلا ترجمه، رقم (۷۹۸).

(۶) کشف الباری: ۴/۵۹۰، ۵۹۵.

⑤ انس بن مالک: حضرت انس بن مالک رضی الله عنه حالات په کتاب الایمان، ”باب من الایمان ان یحب لایهیه.....“ کښې تیر شوې دی. (۱)

د حدیث شریف ترجمه: حضرت انس بن مالک رضی الله عنه فرمائی چې خلو به د نبی صلی الله علیه و آله دپاره د کهجورو اونې خاص کولې تردې چې نبی صلی الله علیه و آله ته په بنوقریظه او بنو نضیر باندې فتح حاصله شوه، بیا وروستو نبی صلی الله علیه و آله دا اونې واپس کړې.

د حدیث شریف مختصره تشریح: په دې حدیث شریف کښې د الرجل “نه انصار مراد دی او د افتتاح” تعلق د بنوقریظه سره دې، ځکه چې بنونضیر خو جلا وطن کړې شوې وو لیکن مالاً او مجازاً ددې نه هم په فتحې سره تعبیر کړې شوې دي. (۲)

په مدینه منوره کښې چې کله مهاجرین داخل شو او خپل هر څه ئې پریخودل نو انصارو ورته حوصله ورکړه، د هغوی ئې هر قسم تعاون او مدد اوکړو، پتی وغیره ئې ورته حواله کړل، د کومو انصاری صحابه کرامو رضی الله عنهم چې دوه دوه بیبیانې وی نو په هغوی کښې ئې یو یو ته طلاق ورکړو او هغه ئې خپل مهاجر ورور ته په نکاح کښې ورکړه او د قربانۍ او د ایثار لوئې لوئې مثالونه ئې پیش کړل. دا د انفرادی کارونو معامله وه، د اجتماعی کارونو دپاره چې د انصارو کوم باغونه وو نو په هغې کښې هغوی څه د نبی کریم صلی الله علیه و آله دپاره خاص کړل، د هغې آمدن به د مسلمانانو په مصلحتونو، مصارفو، او اهل بیت باندې خرچ کیدله، دا اختصاص د هدیی په صورت کښې وو ځکه چې صدقه خو د نبی کریم صلی الله علیه و آله او د اهل بیت دپاره حرامه ده.

دا سلسله جاری وه، تردې چې نبی کریم صلی الله علیه و آله او صحابه کرامو رضی الله عنهم ته د مدینې منورې په یهودیانو باندې فتح حاصله شوه نو نبی صلی الله علیه و آله هغه اونې انصارو ته واپس کړې. (۳) ددې کارونو تفصیلات په کتاب المغازی کښې بیان کړې شوې دي. (۴)

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت په دې معنی کښې دي چې په ترجمه کښې د تقسیم د کیفیت په باره کښې سوال وو، د هغې جواب په حدیث شریف کښې موجود دي چې د بنوقریظه د مالونو د تقسیم دپاره څه طریقه اختیار کړې شوه، نو جواب دا وو چې نبی صلی الله علیه و آله د خپل خواش مطابقت په هغې کښې تصرف اوکړو او هغه ئې د مسلمانانو په مصلحتونو کښې خرچ کړل. (۵)

(۱) کشف الباری: ۴/۲-.

(۲) عمدة القاری: ۴۶/۱۵-.

(۳) پورته حواله، وارشاد الساری: ۲۱۰/۵، وشرح ابن بطال: ۲۸۶/۵-.

(۴) کشف الباری، کتاب المغازی: ۱۸۳، و: ۳۰۲-.

(۵) عمدة القاری: ۴۶/۱، وفتح الباری: ۲۲۷/۶، وارشاد الساری: ۲۱۰/۵-.

باب: بركة الغازی فی ماله حیا ومیتاً، مع النبی ﷺ وولاة الامر
د ترجمه الباب مقصد: امام بخاری رحمه الله دلتہ دا فرمائی چې د غازي مال چې د غنیمت وغيره نه
حاصل شوې دې، په هغې کښې د غازي په ژوند کښې هم برکت وي او د غازي د وفات نه
پس په کښې هم برکت وي، خواه دې غازي دا جهاد د نبی ﷺ په ملگرتيا کښې کړې وي يا
نې د نبی ﷺ نه پس د هغوی نائبانو او خليفه گانو سره په ملگرتيا کښې کړې وي، د
شهادت او د دليل په طور امام بخاری رحمه الله د حضرت زبير رضي الله عنه واقعہ پيش کړې ده، چې د
هغې تفصيل وړاندې راځي

يو خبرداري په ترجمه الباب کښې لفظ د بركة بآ مؤحده سره دې، بعضې حضراتو په دې
کښې تصحيف کړې دې او تاء مشناه سره نې ترکه لوستلې دې، قاضی عياض رحمه الله فرمائي
چې د لفظ ترکه احتمال هم اگرچه شته ځکه چې په دې قصه کښې د حضرت زبير رضي الله عنه د ترکې
ذکر دې، لکه وړاندې چې کوم عبارت راځي، "حیا ومیتاً مع النبی ﷺ وولاة الامر" دا په دې خبره
باندې دلالت کوي چې صحيح روايت د جمهور حضراتو دې يعنی بآ مؤحده سره دې.

۲۹۶۱: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ قُلْتُ لِأَبِي أَسَامَةَ أَحَدِ ثَكُمُ هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ
عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ قَالَ لَمَّا وَقَفَ الزُّبَيْرُ يَوْمَ الْحَمَلِ دَعَانِي، فَقُمْتُ إِلَى جَنْبِهِ
فَقَالَ يَا بُنَيَّ، إِنَّهُ لَا يُقْتَلُ الْيَوْمَ إِلَّا ظَالِمٌ أَوْ مَظْلُومٌ، وَإِنِّي لَا أَرَانِي إِلَّا سَاقِطَ الْيَوْمِ مَظْلُومًا،
وَإِنَّ مِنْ أَكْبَرِ هَتِي لَدُنِّي، أَفْتَرِي يُبْقَى دَيْنًا مِنْ مَالِنَا شَيْئًا فَقَالَ يَا بُنَيَّ بِمَ مَالِنَا
فَاقْضِ دَيْنِي. وَأَوْصِي بِالْثَلَاثِ، وَثَلَاثُهُ لِيْنِيهِ، يَعْنِي عَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ يَقُولُ ثَلَاثُ الثَّلَاثِ، فَإِنْ
فَضَلَ مِنْ مَالِنَا فَضْلٌ بَعْدَ قَضَاءِ الدَّيْنِ شَيْءٌ فَمَثَلُهُ لِي وَلَدِكَ. قَالَ هِشَامُ وَكَانَ بَعْضُ
وَلَدِ عَبْدِ اللَّهِ قَدْ وَازَى بَعْضَ بَنِي الزُّبَيْرِ خَيْبٌ وَعَبَّادٌ، وَلَهُ يَوْمَ مِذْيَسَةُ بَنِينَ وَتِسْعُ بَنَاتٍ. قَالَ
عَبْدُ اللَّهِ فَجَعَلَ يُوصِينِي بِدَيْنِهِ وَيَقُولُ يَا بُنَيَّ، إِنْ عَجَزْتَ عَنْهُ فِي شَيْءٍ فَاسْتَعِنْ عَلَيْهِ مَوْلَايَ.
قَالَ فَوَاللَّهِ مَا دَرَيْتُ مَا أَرَادَ حَتَّى قُلْتُ يَا أَبَتِ مَنْ مَوْلَاكَ قَالَ اللَّهُ. قَالَ فَوَاللَّهِ مَا وَقَعْتُ
فِي كُرْبَةٍ مِنْ دَيْنِهِ إِلَّا قُلْتُ يَا مَوْلَى الزُّبَيْرِ، اقْضِ عَنْهُ دَيْنَهُ. فَيَقْضِيهِ، فَقَتَلَ الزُّبَيْرُ - رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُ - وَلَمْ يَدْعُ دِينَارًا وَلَا دِرْهَمًا، إِلَّا أَرْضِينَ مِنْهَا الْغَابَةَ، وَاحْدَى عَشْرَةَ دَارًا بِالْمَدِينَةِ، وَدَارَيْنِ

(۱) هذا ما قاله الشيخ الكاندهلوى رحمه الله، واختاره شيخنا المبجل رحمه الله، انظر الابواب والتراجم للكاندهلوى: ۲۰۶/ وقال القسطلانى رحمه الله: والظاهر ان الغرض ذكر الكثرة التى نشأت عن البركة فى تركة الزبير اذ خلف
دينا كثيرا، ولم يخلف الا العقار المذكور، ومع ذلك فبورك فيه، حتى تحصل منه هذا المال العظيم. شرح
القسطلانى: (۵/ ۲۱۳) -

(۲) فتح البارى: ۲۲۸/۶، وعمدة القارى: ۴۷/۱۵، وشرح القسطلانى: (۵/ ۲۱۰) -

(۳) قوله: عن عبدالله: الحديث، تفرد به البخارى، ولم يخرج غيره، انظر تحفة الاشراف: ۱۷۹/۳، رقم
(۳۶۲۶)، ومن مسند الزبير: (.....) -

بالبصرة، وداراً بالكوفة، وداراً بيمصر. قال وإنما كان دينه الذي عليه أن الرجل كان يأتيه بالنال فيستودعه إياه فيقول الزبير لا ولكنه سلف، فإني أخشى عليه الضيعة، وما ولي إماراً قط ولا حباية خراج ولا شيئاً، إلا أن يكون في غزوة مع النبي - صلى الله عليه وسلم - أو مع أبي بكر وعمر وعثمان - رضي الله عنهم - قال عبد الله بن الزبير فحسنت ما عليه من الدين فوجدته ألفي ألف ومائتي ألف قال فلقى حكيم بن حزام عبد الله بن الزبير فقال يا ابن أخي، كم على أخي من الدين فكتمه. فقال مائة ألف. فقال حكيم والله ما أرى أموالكم تسع لهذه. فقال له عبد الله أفرأيتك إن كانت ألفي ألف ومائتي ألف قال ما أراكم تطيقون هذا، فإن عجزتم عن شيء منه فاستعينوا به. قال وكان الزبير اشتري الغابة بسبعين ومائة ألف، فباعها عبد الله بألف ألف وستمائة ألف ثم قام فقال من كان له على الزبير حق فليؤافنا بالغابة، فأثأه عبد الله بن جعفر، وكان له على الزبير أربع مائة ألف فقال لعبد الله إن شئتم تركتها لكم. قال عبد الله لا. قال فإن شئتم جعلتموها فيما تؤخرون إن أخرتم. فقال عبد الله لا. قال قال فاقطعوا لي قطعة. فقال عبد الله لك من هاهنا إلى هاهنا. قال فباع منها فقصى دينه فأوفاه، وبقي منها أربعة أسهم ونصف، فقدم على معاوية وعنده عمرو بن عثمان والمُنذر بن الزبير وابن زمعة فقال له معاوية كم قوميت الغابة قال كل سهم مائة ألف. قال كم بقي قال أربعة أسهم ونصف. قال المُنذر بن الزبير قد أخذت سهماً مائة ألف. قال عمرو بن عثمان قد أخذت سهماً مائة ألف. وقال ابن زمعة قد أخذت سهماً مائة ألف. فقال معاوية كم بقي فقال سهم ونصف. قال أخذته بخمسين ومائة ألف. قال وباع عبد الله بن جعفر نصيبه من معاوية بست مائة ألف، فلما فرغ ابن الزبير من قضاء دينه قال بنو الزبير اقسّم بيننا ميراثنا. قال لا، والله لا أقسم بينكم حتى أنادي بالموسم أربع سنين إلا من كان له على الزبير دين فليأتنا فلنقضه. قال فجعل كل سنة ينادي بالموسم، فلما مضى أربع سنين قسم بينهم قال فكان للزبير أربع نسوة، ورفق الثلث، فأصاب كل امرأة ألف ألف ومائتا ألف، فجميع ماله خمسون ألف ألف ومائتا ألف.

رجال الحديث

- ① اسحاق بن ابراهيم: دا اسحاق بن ابراهيم بن راهويه حنظلي مروزي رحمته الله دي
- ② ابواسامه: دا ابواسامه حماد بن اسامه ليشي رحمته الله دي. ددي دوارو حضراتو تذكره تفصيل سره په كتاب العلم، "باب فضل من علم وعلم" كسبي تيره شوې ده. (د)

۳ هشام بن عروة: دا هشام بن عروة بن زبير قرشي رضي الله عنه دې دې دواړو حضراتو حالات
 ۴ عروة بن زبير: دا عروة بن زبير بن العوام قرشي رضي الله عنه دې دې دواړو حضراتو حالات
 د بده الوحي په الحديث الثانی "کښې تیر شوې دي".

۵ عبدالله بن زبير، ۶ زبير بن العوام رضي الله عنه دې دواړو حضراتو حالات تفصيل سره په کتاب
 العلم، "باب اثم من کذب على النبي ﷺ" کښې راغلي دي.

توله: قال: لما وقف الزبير يوم الجمل دعاني فقممت الي جنبه: حضرت عبدالله بن
 زبير رضي الله عنه فرمائي چې د جمل په ورځ چې كله زما والد صاحب حضرت زبير رضي الله عنه د قتال دپاره
 اودريدو نو هغوی زه طلب کړم نو زه د هغوی يو طرفته اودریدم.
 يوم الجمل (د جمل جنگ) د جمل واقع د اسلامي تاريخ يوه دردناکه واقع ده، په دې کښې
 دواړو طرفونو ته جليل القدر صحابه کرام رضی الله عنهم وو او دواړو طرف ته خلق په حق
 باندې هم وو، هم دا د اهل سنت والجماعت عقیده ده، دې واقعي سره متعلق تفصيلات خو
 به انشاء الله په کتاب الفتن کښې راشي، مونږ دلته ددې خلاصه ذکر کوو.
 دا د ۳۶ هجري مطابق ۶۵۶، جمادی الاولی یا جمادی الثانیه او د حضرت علي رضي الله عنه د
 خلافت واقع ده، دا جنگ د حضرت علي رضي الله عنه د ملگرو او د حضرت عائشه رضي الله عنها د ملگرو
 مينځ کښې وو، مسئله د حضرت عثمان رضي الله عنه د قصاص وه او د جنگ ځانې بصره وو.
 حضرت عائشه رضي الله عنها د خپلو طرف دار کسانو سره د مکې مکرمې نه بصرې ته روانه شوه،
 حضرت علي رضي الله عنه د مخکښې نه بصرې سره نژدې ښار کوفه کښې موجود وو، چې كله هغوی
 د حضرت عائشې رضي الله عنها د لښکر په باره کښې واوريږدل چې بصرې ته راروان دې نو هغوی هم د
 کوفې نه لښکر راويستلو، تردې چې دواړه لښکرې مخامخ شوې او د دواړو ډلو مينځ
 کښې څو ځله مذاکرات هم اوشو، نژدې وه چې دا مذاکرات کامياب شوې وو او حضرت
 علي رضي الله عنه د دليلونو په رڼا کښې دويمه ډله قائل کړې وې ليکن هلاکت دې وی ابن سبا
 يهودی او د هغه خبيث ملگرو لره، دوی چونکه د حضرت عثمان رضي الله عنه د شهادت ذمه دار
 وو، ددې وجې نه دوی ته ويره شوه چې که دا دواړه ډلې خپل مينځ کښې ملاو شوې نو مونږ
 به خامخا قصاص کولې شو نو دوی د حضرت علي رضي الله عنه ملگرتيا شروع کړه او موقع موندلو
 سره ئې په اهل جمل يعنی د حضرت عائشې رضي الله عنها په لښکر باندې حمله اوکړه او ددې خبر
 حضرت علي رضي الله عنه ته نه وو، چې هغوی ته پته اولگیده نو تپوس ئې اوکړو چې داشوردڅه دې؟
 نو څه سبائي کسانو غلط بياني اوکړه او وې وئيل چې فريق ثانی اچانک او په بي خبري
 کښې مونږ باندې حمله کړې ده، هم دا حال دويم طرفته هم اوشو او دا حضرات د نه غوښتلو
 باوجوددجنگ ميدان ته کوزشو او سبائيان په خپل سازش کښې کامياب شو، لعنهم الله وخذلهم.

(۱) کشف الباری: ۱/۲۹۱، دغه شان اوگوري، کشف الباری: ۲/۴۳۲-۴۴۰-.

(۲) کشف الباری: ۴/۱۶۴-۱۷۴-.

د دواړو ډلو مینځ کښې خطرناک جنگ اوشو، دغه وخت حضرت عائشه رضی اللہ عنہا د جنگ په میدان کښې موجوده نه وه او هغې ته د جنگ د شروع کیدو پته هم نه وه، په دې کښې کعب بن مسور نومې تابعی د هغوی په خدمت کښې حاضر شو او د واقعی حال احوال نه ئې خبر کړه او ورته یې اووئیل چې مناسب دا معلومېږي چې تاسو په اوبښ باندې سوره شئ او د جنگ د میدان طرفته راشئ، کیدې شی چې د صلح څه صورت پیدا شی، ددې په اوریدو سره حضرت عائشه رضی اللہ عنہا په اوبښ باندې سوره شوه او اووتله، لیکن د توقع نه خلاف خلق ددې په سورلۍ لیدلو سره نور هم غصه شو ځکه چې د هغوی خیال دا وو چې دوی د جنگ میدان ته د قائد او د سپه سالار په حیثیت سره تشریف راوړې دي.

حضرت عائشې رضی اللہ عنہا چې کله اولیدل چې خلق په هیڅ شان باندې د جنگ بندولو دپاره تیار او آماده نه دی او مسلسل مری نو هغې کعب بن مسور ته حکم اوکړو چې ته د اوبښ مهار پرېږده، قرآن مجید پورته کړه او وړاندې ورشه او خلق د قرآن مجید د فیصلې طرفته راوبله او ورته اووايه چې مونږ ته د قرآن فیصله منظوره ده، تاسو هم ددې فیصله اومنی کعب وړاندې شو او اعلان ئې اوکړو نو د عبدالله بن سبا ملگرو پرې په یوځایي د غشو باران جوړ کړو او شهید ئې کړو، ددې نه پس د حضرت عائشې رضی اللہ عنہا کسان نور هم غصه شو، برابر قتلیدل لیکن هیڅ یو کس ئې د حضرت عائشې رضی اللہ عنہا د اوبښ مهار ته پرینځوده.

حضرت علی رضی اللہ عنہ ددې حالت په لیدلو سره پوهه شو چې ترڅو په میدان جنگ کښې دا اوبښ په نظر راځي نو د اور دا شعلې به هیڅ کله کمې نه شی نو هغوی خپلو کسانو ته حکم اوکړو چې په څه طریقې سره دا اوبښ ختم کړئ ځکه چې ددې په پریوتلو سره به جنگ ختم شی. ددې په اوریدلو سره هغوی په دې کوشش کښې اولگیدل چې په څه طریقې سره دا اوبښ راوغورځولې شی لیکن دویم طرفته اهل جمل هم غافل نه وو، هغوی د دویم فریق هروار منع کوو، د اوبښ مهار نیولو سره برابر جنگیدل، دغه شان په سوونو کسان د اوبښ په مهار باندې شهیدان شو، آخر کافی وخت پس یو سړی موقع موندلو سره د اوبښ خپې په توره باندې اووهلې او د هغې خپې ئې پرې کړې، دغه شان اوبښ په سینه باندې کیناسته. د اوبښ په پریوتلو سره اهل جمل منتشر شو او د حضرت علی رضی اللہ عنہ لښکر د دوی محاصره اوکړه او محمد بن ابی بکر کوم چې دوی سره وو هغه ته ئې حکم اوکړو چې لاړ شه د خپلې خور حفاظت اوکړه، چې هیڅ قسمه تکلیف ورته اونه رسی، دغه شان دا جنگ خپل انجام ته اورسیده. دا اولنې جنگ وو چې دواړه ډلې په کښې مسلمانان وو، ددې نه پس د فتنو دروازه کھلاؤ شوه. د جنگ ختمیدلو نه څو ورځې پس د خلافت امور دوباره مرتب کولو دپاره حضرت علی رضی اللہ عنہ محمد بن ابی بکر ته حکم اوکړو چې د سفر تیاری اوکړه. نو په یکم رجب ۳۶ هجری کښې د سفر د تیاری کولو نه پس حضرت علی رضی اللہ عنہ ام المؤمنین حضرت عائشه رضی اللہ عنہا د بصرې د څلوینښت سردارانو د ښځو سره او د محمد بن ابی بکر سره د بصرې نه روانه کړه، څو پرلانگه فاصلې پورې قافلې سره په خپله هم لاړل، بیا ئې حضرات حسنین د حفاظت په غرض قافلې سره کړل، حضرت عائشه رضی اللہ عنہا اول مکې مکرمې ته لاړه، هلته ئې حج اوکړو او په محرم ۳۷ هجری کښې یې مدینې منورې ته تشریف راوړلو.

په دې جنگ کېنې د دواړو ډلو په زرگونو کسان شهیدان شو، چې د هغوی په تعداد کېنې اختلاف دې، په شهیدانو کېنې حضرت طلحه بن عبیدالله هم وو کوم چې په عشره مبشره کېنې دې او حضرت زبیر بن العوام رضی الله عنه په کېنې هم وو. حضرت عائشې رضی الله عنها به فرمائیل: "وَدِدْتُ أَنِّي مِتُّ قَبْلَ هَذَا الْيَوْمِ بِعِشْرِينَ سَنَةً" چې "اې کاش ادا نن ورځ نه زه شل کاله مخکېنې وفات شوې وې چې دا مې نه وو لیدلې".

دې جنگ ته جمل نوم ځکه ورکړې شو چې حضرت عائشه رضی الله عنها په دې جنگ کېنې به یو لونی اوبښ باندې تشریف فرما وه، د هغه نوم عسکر وو، دا حضرت یعلی بن امیه رضی الله عنه د قبيله عرينه د یو سړي نه په دوه سوه دیناره اخستلې وو او دا د حضرت عائشې رضی الله عنها د سورلۍ دپاره مخصوص وو. (اعاذنا الله من الفتن، مآظهر منها وما بطن)

قوله: فقال: يا بني، لا يقتل اليوم الا ظالم أو مظلوم: نو زما والد صاحب حضرت زبیر ماته او وئیل، اې خویه! نن ورځ قتلیدونکې به یا ظالم وی یا مظلوم. ددې جملې مختلف مطلبونه: ددې جملې څو مطلبونه او معنې بیان کړې شوې دي

① علامه ابن بطال رحمته الله فرمائی:

که هغوی قتل شو نو هغوی به په خپل خیال کېنې مظلومان وی لیکن دویم فریق (مد مقابل) به ئې ظالمان گنړي ځکه چې هر فریق خپل ځان په حق باندې او دویم فریق په ناحقه باندې گنړلو او په دې کېنې به ئې تاویل کولو.

او ددې کلام نه د حضرت زبیر رضی الله عنه مقصد دادې چې صحابه چې د امت غوره خلق دی د هغوی خپل مینځ کېنې قتال او جنگ کول د هغې خلقو په شان نه دی کوم چې د عصبیت په بنیاد باندې قتال کوی یا باغیان دی یا هغه خلق چې د هغوی قاتلان او مقتولین دواړه به ظالمان وی، د هغوی په باره کېنې خو د نبی صلی الله علیه و آله صفا ارشاد مبارک دې، "اذا التقى المسلمان بسيفيهما فالقاتل والمقتول في النار" (ځکه چې دلته خو د تاویل کولو گنجائش بالکل نشته چې د هغې د وجې نه دا خلق د الله تعالی په نزد معذور او گنړلې شی.

او حضرت زبیر، طلحه او د صحابه کرامو رضی الله عنهم جماعت چې د حضرت عائشې رضی الله عنها سره وتلې

١) د جنگ جمل تفصیلاتو، اسباب او نتیجې دپاره اوگوری، عمدة القاری: ۴۹/۱۵_۵۰، وفتح الباری: ۲۲۹/۶، والبدایة والنهاية: ۲۲۲/۷/۴_۲۴۱، سنة ۳۶هـ، والکامل لابن الاثير: ۹۹/۳_۱۴۹، وقعة الجمل، وشرح القسطلانی: ۲۱۰/۵، تاریخ اسلام (اردو) از اکبر شاه نجیب آبادی: ۴۳۰/۱_۴۴۶، طبع مکتبة العلم کراچی، وتاریخ الاسلام للذهبي: ۱۷۱/۲، سنة ست وثلاثين، وقعة الجمل، الطبقة الرابعة)۔

٢) الحديث اخرجه البخاری، کتاب الايمان، باب (وان طائفتان من المؤمنين.....) رقم (۳۱)، والديات، باب قول الله تعالى: (ومن احياها)، رقم (۶۸۷۵)، والفتن، باب اذا التقى المسلمان.....، رقم (۷۰۸۳)، ومسلم فی الفتن، باب اذا توجه المسلمان.....، رقم (۷۲۵۲_۷۲۵۵)، وابو داود، الفتن، باب النهی عن القتال فی الفتنة، رقم (۴۲۶۸)، والنسائی، تحريم الدم، باب تحريم القتل، رقم (۴۱۲۱_۴۱۲۲)، و(۴۱۲۵_۴۱۲۸)۔

و نو د هغوی مطالبه خو دا وه چې د حضرت عثمان رضی الله عنه قاتلان دې گرفتار کړې شی او حد دې پرې جاری کړې شی، ښکاره خبره ده چې دا یو شرعی مطالبه ده او دا خلق هیڅکله او بالکل د حضرت علی رضی الله عنه سره د قتال کولو دپاره وتلې نه وو ځکه چې په دې کښې دوه رائي نه وې ځکه چې حضرت علی رضی الله عنه د خپلې زمانې په خلقو کښې د خلافت صحیح حقدار وو، هم هغوی د لوڼې امامت مستحق وو.

البته کار دا شوې وو چې د حضرت عثمان رضی الله عنه قاتلانو حضرت علی رضی الله عنه سره پناه اخستلې وه، د حضرت علی رضی الله عنه ملګرتیا به ئې کوله، د حضرت علی رضی الله عنه خپل خیال دا وو چې ترڅو د امت حالات برابر شوې او پرامن شوې نه وی نو دا قاتلان جلاد ته حواله کول مناسب نه دي، البته کله چې حالات پرسکون او برابر شی نو دا کار به هم اوکړې شی. ښکاره خبره ده چې دا دواړه ډلې په خپل خپل ځانې صحیح دي نو ددې وجې نه د دواړو ډلو مقتولین به مظلومان شمارلې شی نه چې ظالمان هم دا د اهل سنت والجماعت مذهب دي، والقاتل منهم والمقتول فی الجنة ان شاء الله.

② علامه ابن التین السفاقي رحمته الله فرمائي: مطلب دادې چې قتال کوونکي دوه قسمه خلق وي: صحابي او غير صحابي نو په صحابي کښې خو تاويل کيدې شی ددې وجې نه هغه مظلوم دي او غير صحابي چې د دنیا دپاره جنگ او قتال کوي نو هغه به ظالم وي.

معناه: انهم اما صحابي متاول فهو مظلوم، واما غير صحابي قاتل لاجل الدنيا فهو ظالم. (۱)

قوله: واني لا اراني الا ساقتل اليوم مظلوماً: او زما د خپل ځان په باره کښې خیال دي چې نن به زه ظلماً شهید کیرم.

أراني د همزه ضمه لوستلې شی ددې معنی ده اظن یعنی زما خیال او گمان دادې او د همزه فتحه هم لوستلې کیري بیا به ددې معنی اعتقدوی یعنی زما یقین او اعتقاد دادې چې نن به زه شهید کیرم. (۲)

د هغوی دا گمان یا یقین پوره شو او عمرو بن جرموز نومي یو سړی پرې اچانک حمله اوکړه او شهید ئې کړو، داسې حال کښې چې دوی د جنگ د میدان نه وتلې وو. (۳) ددې تفصیل په کتاب العلم کښې تیر شوې دي. (۴)

قوله: وان من اکبرهمی لدينی، أفتری یبقی دیننا من مالنا شیئاً؟: او زما د

(۱) شرح ابن بطال: ۵/۲۹۰، وعمدة القاری: ۱۵/۵۱.

(۲) شرح القسطلانی: ۵/۲۱۰، وعمدة القاری: ۱۵/۵۱، وفتح الباری: ۶/۲۲۹.

(۳) عمدة القاری: ۱۵/۵۱، وفتح الباری: ۶/۲۲۹.

(۴) پورته حواله جات.

(۵) کشف الباری: ۴/۱۷۳.

ټولو نه لویه پريشانۍ زما قرض دي، ستا څه خيال دي، زمونږ دا قرض به زمونږ په مال كښې څه پريږدي؟

مطلب دادې چې دومره قرضونه چې ما د خلقو نه اخستلي دي د هغې په ادا كولو كښې به ټول مملوكه مال خرچ شي، هغې كښې به څه پاتې شي؟

په لديني كښې لام د تاكيد دي او مفتوح دي او په افتري كښې همزه د استفهام ده او فعل مجهول دي، دا د افتظن په معني كښې دي او يقيني د ابقاء نه دي (افعال نه، نه چې د بقاء نه.)

قوله: فقال: يا بني، بع مالنا، فاقض ديني، وأوصي بالثلث، وثلثه لبنيه. يعني بنى عبدالله بن الزبير، يقول: ثلث الثلث. فان فضل من مالنا فضل بعد

قضاء الدين. فثلثه لولدك: بيا ئې او وئيل ئې ځويه زمونږ مال خرڅ كړه او زما قرض ادا كړه. او د ثلث (درېمې حصې) وصيت ئې او كړو او په ثلث كښې به ثلث د هغوى يعنې د عبدالله بن زبير (د مخاطب) د ځامنو دپاره وي، وي وئيل چې ثلث به په دريو حصو كښې تقسيم كړي او د هغې يو ثلث به خپل ځامنو ته ورکړي. كه د قرض ادا كولو نه پس زمونږ په مال كښې څه بچ شو نو د هغې ثلث به ستا د ځامنو دپاره وي.

پورته ذكر شوي عبارت د مختلفو حضراتو په كلام باندې مشتمل دي، ددې وضاحت دادې چې د حضرت زبير رضي الله عنه كلام دادې: يا بني، بع مالنا، فاقض ديني، فان فضل من مالنا فضل بعد قضاء الدين فثلثه لولدك. ددې مطلب دادې چې ئې ځويه زما مال خرڅ كړه او زما قرض ادا كړه او د قرض ادا كولو نه پس كه هم مال باقى بچ پاتې شو نو د هغې يو ثلث به د فقيرانو او مسكينانو دپاره وي، ليكن ددې ثلث ثلث به ستا د اولاد دپاره وي او د اوصي بالثلث وثلثه لبنيه. دا د حضرت عبدالله بن زبير رضي الله عنه كلام دي. او يعنې بنى عبدالله بن الزبير يقول: ثلث الثلث. دا د يو راوي تفسير او وضاحت دپاره راوړلې شوې جمله ده، چې په دې كښې راوي د ثلثه لبنيه. وضاحت كړې دي. كه ددې تفصيل خيال او لحاظ اونه ساتلې شي نو په عبارت باندې پوهيدل مشكل دي.

په دې عبارت كښې فثلثه كښې كوم ضمير مجرور دي دا مطلقاً د ثلث طرفته راجع دي يعنې د ثلث ثلث ځكه چې وصيت خو مطلقاً د مال په ثلث كښې جاري كيږي. ددې برعكس امام مهلب رحمه الله دا ضمير مجرور د فضل طرفته راجع كړې دي ليكن دا د اشكال نه خالي نه دي. (د بعضي حضراتو په فثلثه كښې لام تشديد سره لوستلې دي يعنې د اسم په ځانې ئې امر

(١) عمدة القارى: ٥٢/١٥، وشرح القسطلانى: ٢١١/٥)۔

(٢) فتح البارى: ٢٣٠/٦، عمدة القارى: ٥٢/١٥، وارشاد السارى: ٢١١/٥، والكوثر الجارى: ١١١/٦)۔

گر څولې دې چې ددې مطلق ثلث درې حصې کول، حافظ دېته زیات اقرب وئیلې دې (۱).
قوله: قال هشام: وكان بعض ولد عبد الله قد وازى بعض بني الزبير خبيب
وعباد: هشام وائی چې د عبد الله بن زبير بعضې ځامن د حضرت زبير رضي الله عنه د بعضې ځامنو
هم عمر وو یعنی خبيب او عباد د هشام بن عروه دا قول د سابقه سند سره موصول دې (۲)
علامه جوهری رحمته الله وازی په واو سره لیکل غلط او خلاف القیاس بنودلې دې، هغوی دا
وائی چې دا همزه سره آزی لیکل پکار دی، د باب د حدیث شریف الفاظ په دې باندې رد کوی
چې دلته وازی واو سره دې، ددې معنی ده ساوی یعنی برابر کیدل (۳)
ددې جملې مطلب: ① علامه مهلب رحمته الله فرمائی چې ددې دا معنی هم کیدې شی چې د حضرت
عبد الله ځامن د حضرت زبير رضي الله عنه د ځامنو یعنی د خپلو ترونو په عمر کښې برابر شوې وو.
② او دا معنی هم کیدې شی چې د حضرت عبد الله ځامن د میراث په حصه کښې د خپل
ترونو یعنی د حضرت زبير رضي الله عنه د ځامنو برابر شوې وو یعنی هغوی ته هم دومره ملاؤ شوه
لکه څومره چې ئې ترونو ته ملاؤ شوه.
دا دویم احتمال مهلب رحمته الله غوره گرځولې دې او فرمائی چې په دویم صورت کښې د حضرت
زبير رضي الله عنه د اولاد د کثرت بیانولو هیڅ معنی نشته. لیکن نورو شارحینو اولنې احتمال راجح
او دویم احتمال مرجوح بنودلې دې (۴) لکه حافظ رحمته الله فرمائی چې دا احتمال د اعتراض او د
اشکال نه خالی نه دې ځکه چې دغه وخت پورې خو میراث تقسیم شوې نه وو، نه د مال
موروث څه معلومه او معینه اندازه وه نه د موصی به یعنی د ثلث اندازه وه.
ددې نه علاوه دا وینا "والا لم یکن لذكر كثرة اولاد الزبير معنی فی البوازة فی السن" (۵) هم صحیح نه ده
ځکه چې مراد دا دې چې حضرت زبير رضي الله عنه د حضرت عبد الله رضي الله عنه اولاد ته خصوصیت سره
بیان او کړو او د نورو نوسو په مقابله کښې ئې هغوی ته زیات اهمیت ورکړو، ددې وجه
واضح ده چې د حضرت عبد الله ځامن د لوئې عمر والا او د کورونو خاوندان شوې وو
تردې چې په دې معامله کښې د ترونو برابر شوې وو نو حضرت زبير رضي الله عنه د خپل وصیت په
ذریعې سره د مال څه مقدار د خپلو نوسو دپاره هم مقرر کړو، دې دپاره چې د دوی د پلار
حضرت عبد الله رضي الله عنه حصه زیاته فراخه شی، دغه شان دوی په مالی معاملاتو کښې د خپل

(۱) فتح الباری: ۲۳۰/۶، وعمدة القاری: ۵۲/۱۵، وارشاد الساری: ۲۱۱/۵-.

(۲) فتح الباری: ۲۳۰، وارشاد الساری: ۲۱۱/۵-.

(۳) پورته حواله جات، والصاحح للجوهري: ۴۰، مادة ازا حرف الالف، والعمدة: ۵۲/۱۵، والکونثر الجاری: ۱۱۲/۶.

(۴) فتح الباری: ۲۳۰/۶، وارشاد الساری: ۲۱۱/۵، وشرح ابن بطال: ۲۹۱/۵، والکونثر الجاری: ۱۱۲/۶، وشرح

الکرمانی: ۱۰۰/۱۳-.

(۵) قاله ابن بطال: ۲۹۱/۵-.

پلار حضرت عبداللہ بن زبیر رضی اللہ عنہ سره معاون او مددگار جوړ شی ^(۱). واللہ اعلم بالصواب
 "خبیب و عباد" د بدلیت یا د بعض نه د بیان د وجې نه مرفوع دی او دا د بعض تفسیر کوی. د
 مثال په طور صرف په دې دوو نومونو باندې اکتفاء او کړې شوه. ورنه د حضرت عبداللہ په
 اولاد کېنې نور کسان هم وو چې په عمر کېنې د ترونو برابر شوې وو ^(۲). حافظ دلته دا هم
 وئیلې دی چې "خبیب و عباد" مجرور هم لوستلې کیدې شی چې دا د لفظ "بعض" نه بیان واقع
 شی. لیکن دلته د حافظ نه سهو شوې ده، علامه عینی وائی چې لفظ "بعض" په حدیث
 شریف کېنې دوه ځله راغلې دي، په هغې کېنې یو مرفوع دي او دویم منصوب دي. دا دریم
 صورت د کوم ځانې نه راغی؟ دا خبره قسطلانی هم کړې ده. صحیح خبره داده چې دا دواړه
 نومونه مجرور هم لوستلې کیدې شی لیکن د ولد په اعتبار سره، کوم چې په بعض ولد
 عبدالله..... "کېنې راغلې دی نه چې په اعتبار د بعض سره ^(۳).

خبیب: دا خبیب بن عبداللہ بن الزبیر بن العوام القرشي الاسدي المدنی رضی اللہ عنہ دي، د دوی مور
 بی بی تماضر بنت منظور بن زبان الفزاریه ده ^(۴).

دې د خپل والد عبداللہ بن زبیر او د حضرت عائشه و کعب الاحبار رضی اللہ عنہ نه روایت کوی. د
 دوی نه په روایت کوونکو کېنې د دوی ځوئې زبیر بن خبیب، یحیی بن عبداللہ بن
 مالک، زهری او سلیمان بن عطاء وغیره شامل دي ^(۵).

دوی په اهل علم او اهل ورع کېنې وو، د دوی ورور مصعب بن عبداللہ وائی:

"کان خبیب قد لقی کعب الاحبار، ولقی العلماء، وقرأ الكتاب وكان من النساك" ^(۶)

ابن حبان د دوی تذکره په کتاب الثقات کېنې کړې ده ^(۷).

علامه ذهبی رحمته اللہ علیہ فرمائی، "ناسک، صدوق، معنی بالعلم" ^(۸).

علامه مزی رحمته اللہ علیہ فرمائی، "وكان..... عالماً بقریش، وكان طويل الصلوة، قليل الكلام" ^(۹).

^(۱) فتح الباری: ۶/۲۳۰، وارشاد الساری: ۵/۲۱۱، وکذا انظر الكوثر الجاری: ۶/۱۱۲) _

^(۲) عمدة القاری: ۱۵/۵۲، وفتح الباری: ۶/۲۳۰، وارشاد الساری: ۵/۲۱۱) _

^(۳) پورته حواله جات) _

^(۴) تهذیب الکمال: ۸/۲۲۳، البتھابن حبان (۴/۲۱۱) د دوی د مور نوم حنتمه بنت عبدالرحمن لیکلي دي
 کوم چې د مشهور قول خلاف دي) _

^(۵) تهذیب الکمال: ۸/۲۲۳، و تهذیب التهذیب: ۳/۱۳۵) _

^(۶) تهذیب الکمال: ۸/۲۲۳، و تهذیب التهذیب: ۳/۱۳۵، و خلاصة الخرجی: ۴/۱۰، من اسمه خبیب) _

^(۷) الثقات لابن حبان: ۴/۲۱۱) _

^(۸) الکاشف: ۱/۳۷۱، رقم (۱۳۷۶) _

^(۹) تهذیب الکمال: ۸/۲۲۵) _

د بنو امیه خلیفه ولید بن عبد الملك د حضرت عمر بن عبد العزيز طرفته یو خط واستوو، کله چې عمر د مدینې منورې والی وو چې دده ته سل کورې ورکړه او قید کښې ئې واچوه. حضرت عمر بن عبد العزيز رضی الله عنه د حکم پوره والی او کړو او په یو منگی کښې اوبه یخې کړې شوې او د یخنی په موسم کښې یو سحر هغه اوبه په دده باندې واړولې شوې چې د هغې د وجې نه دده بدن یخ شو او یخنی پرې راغلل، هم دا عمل وروستو دده د مرګ سبب جوړ شو. په جیل کښې چې کله دده تکلیف زیات شو نو حضرت عمر بن عبد العزيز رضی الله عنه دې د جیل نه بهر کړو او په خپل کار باندې ډیر پښیمانه شو، او د خبیب خاندان دې د عمر بن مصعب بن زبیر کور ته منتقل کړو، دې دوران کښې چې کله د خبیب خاندان دده سره نژدې ناست وو، د ماجشون سره د ملاقات کولو په غرض باندې راغلل، دا صاحب د حضرت عمر بن عبد العزيز په ملګرو کښې وو، کله چې دې د مدینې منورې والی وو، کله چې دې دننه داخل شو نو عروه بن عبد الله بن زبیر او وئیل، کیدې شی ستاسو ملګری (عمر بن عبد العزيز) ته تردې وخت پورې دده په مرګ کښې شک دې او نژدې ناستو کسانو عروه ته او وئیل چې خادر لرې کړئ او ورته د خبیب حالت اوبنایي چې کله ماجشون د هغه حالت اولیده، دغه وخت خبیب وفات شوې وو نو هغه نیغ د حضرت عمر کور "در مروان" ته لاړو.

ماجشون وائی چې هلته په رسیدلو سره ما دروازه اوټکوله، بیا داخل شوم، د داخلیدو نه پس مې حضرت عمر بن عبد العزيز رضی الله عنه په دې حالت کښې اولیدو چې هغه په دردزه کښې د مبتلا ښځې په شان کله کینی او کله پاسی، زما په لیدلو سره ئې او فرمائیل چې څه خبر دې راوړلې دې؟ ما ورته او وئیل چې بنده (خبیب) خو مړ شو. نو هغه په زمکه باندې پریوتلو، بیا ئې سر اوچت کړو او وي وئیل انا لله وانا الیه راجعون. ددې حادثې اثر ټول ژوند کښې په حضرت عمر بن عبد العزيز رضی الله عنه باندې وو، ددې نه پس هغوی د مدینې منورې د ولایت نه استعفی ورکړه او د گورنرئ وغیره د قبولولو نه منع شو. ددې نه پس که به دوی ته په یو داسې نیک کار باندې چا مبارک باد ورکړو کوم نیک کار چې به دوی جاری کړې وو نو دوی به فرمائیل، "فکیف پخیب؟"!! چې ستاسو خبره خو صحیح ده لیکن زه به د خبیب څه کوم؟" حضرت عمر بن عبد العزيز رضی الله عنه چې کله خلیفه جوړ شو نو هغوی آل زبیر بن عوام ته خصوصی طور باندې عطیات او تحفې ورکړې نو خلقو به وئیل چې دا د خبیب دیت دې. د ابن حبان رضی الله عنه د قول مطابق د حضرت خبیب انتقال په ۹۳ هجری کښې او شو (هم دا رائي د ابن الاثیر رضی الله عنه هم ده او د زبیر بن بکار هم ده). په اصحاب سته کښې صرف امام نسائی رضی الله عنه په سنن کبری کښې د دوی په واسطې سره یو

۱) تهذیب الکمال: ۲۲۵/۸-۲۲۶، وتهذیب التهذیب: ۱۳۵/۳-۱۳۶.

۲) الثقات: ۲۱۱/۴.

۳) الکاشف: ۳۷۱/۱، والکامل فی التاريخ: ۲۷۸/۴، سنة ثلاث وتسعين، ذکر عدة حوادث.

روایت اخستلې دې (۱) رحمه الله تعالى رحمة واسعة. او د حضرت عباد بن زبير رضي الله عنه حالات وړاندې تير شوې دي (۲)

قوله: وله يومئذ تسعة بنين وتسع بنات: دې ورځو کښې ددوی نهه ځامن او نهه لونړه وې. په له کښې چې کوم ضمير مجرور دې نو دا د زبير طرفته راجع دې، دلته د امام کرمانی نه يو عجيبه تسامح شوې ده چې هغوی دا ضمير د عبد الله طرفته راجع کړې دې (۳). دا صفا غلطی ده، د حضرت عبد الله رضي الله عنه چې دغه وخت کښې کوم اولاد موجود وو، هغه خبيب، عباد، هاشم، ثابت او حمزه دي (۴). د دوی د باقی اولاد پيدائش د حضرت زبير رضي الله عنه د شهادت نه پس شوې دې (۵).

د حضرت زبير رضي الله عنه نارینه اولاد چې نهه دي، د هغوی نومونه دا دي: عبد الله، عروه او منذر، د دوی مور حضرت اسماء بنت ابی بکر رضي الله عنها ده. عمرو او خالد، د دوی مور ام خالد بنت خالد بن حسين ده. مصعب او حمزه او د دوی مور رباب بنت انيف ده. عبيده او جعفر او ددې دواړو مور زينب بنت بشر ده. ددې نهو نه علاوه چې کوم نارینه اولاد وو نو هغه د حضرت زبير رضي الله عنه د شهادت نه مخکښې وفات شوې وو. او د نهه لونړو نومونه دا دي: خديجة الكبرى، ام الحسن او عائشه، دا درې واړه د حضرت اسماء بنت ابی بکر نه وې. حبيبه، سوده او هند د دوی مور ام خالد ده. د رمله مور رباب، د حفصه مور زينب او د زينب مور ام کلثوم بنت عقبه وه (۶). رضي الله عنهم وعنهن اجمعين.

قال عبد الله: فجعل يوصيني بدينه، ويقول: ان عجزت عن شيء منه فاستعن عليه مولاي، قال: فوالله، ما دريت ما اراد، حتى قلت: يا أبة، من مولاك؟ قال: الله. قال: فوالله، ما وقعت في كربة من دينه الا قلت: يا مولى الزبير، اقض عنه دينه، فيقضيه.

حضرت عبد الله وائي چې زما پلار ما ته د خپل قرض په باره کښې وصيت کوو او دا به ئې وئيل چې ائي ځويه! که ته د قرض د څه حصې ادا کولو نه عاجز شوي نو زما د مولا نه مدد

(۱) السنن الكبرى، ابواب الزينة (۹/۷۸)، كذا في تحفة الاشراف: ۱۱/۳۹۳، رقم (۱۶۰۶۶)، وتهذيب الكمال: ۸/۲۲۶-۲۲۷.

(۲) د دوی د حالاتو د پاره اوگوري، كتاب الزكاة، باب الصدقة فيما استطاع.

(۳) شرح الكرمانی: ۱۳/۱۰۰، وفتح الباری: ۶/۲۳۰.

(۴) د حمزه نوم په تهذيب الكمال: ۸/۲۲۳ کښې راغلې دي، حافظ، عيني او قسطلانی نه دا اولنی څلور نومونه ذکر کړي دي.

(۵) فتح الباری: ۶/۲۳۰، وعمدة القاری: ۱۵/۵۲، وارشاد الساری: ۲۱۱.

(۶) پورته حواله جات.

واخله عبدالله وائی چې په خدائي قسم زه پوهه نه شوم چې دې څه وائی او د مولی نه د دوی څه مراد دي؟ تردې چې ما او وئیل، ابا جان ستاسو مولا څوک دي؟ نو وې فرمائیل: الله حضرت عبدالله وائی چې په خدائي قسم د هغوی په قرض ادا کولو کښې چې به ما ته کله هم څه پریشانی پېښه شوه نو ما به عرض او کړو انې د زبیر مولا د زبیر له طرفه د هغوی قرضه ادا کړې نو الله تعالی به څه لاره پیدا کړه.

د حضرت عبدالله د هیوانه کیدلو وجه: مولی په عرب کښې هغې سړې ته وائی چې یو غلام ئې آزاد کړې وی ښکاره خبره ده چې حضرت زبیر رضی الله عنه خو حراً اصل وو د هغوی مولی به څوک وو، یعنی د هغوی آزادونکې به څوک وو؟ ددې وجې نه حضرت عبدالله بن زبیر رضی الله عنه ته حیرانتیا او پریشانی جوړه شوه چې د مولا نه د دوی مراد څه دي؟ ددې وجې نه ئې تپوس او کړو، یا ابة، من مولا؟ نو په جواب کښې او وئیلې شو، الله "نو کله چې به حضرت عبدالله ته د قرض په سلسله کښې څه مشکل پېښ شو نو الله تعالی ته به ئې درخواست او کړو، الله تعالی به ئې درخواست قبول کړو، نتیجه دا چې ټول قرض ادا شو.

ددې حضراتو یقین کامل وو او دا ټول دې درجې ته رسیدلې وو، چې خپله هره مسئله، هر مشکل او هره پریشانی به ئې د الله تعالی په دربار رضی الله عنه کښې پیش کوله، کوم چې ټولو ته ورکوي، کافر او مسلمان، د غریب او د امیر تفریق د هغه په نزد نشته. یو خو مونږ یو چې په هر څیز کښې په اسبابو باندې نظر ساتو، د رب الاسباب طرفته نه متوجه کیږو، نو د امت چې کوم حشر دې هغه د ټولو په وړاندې دي.

قوله: فقتل الزبير رضي الله عنه، ولم يدع ديناراً ولا درهماً، الا ارضين

منها: الغابة، واحدي عشرة داراً بالمدينة، ودارين بالبصرة، وداراً بالكوفة، وداراً بمصر:

ددې نه پس حضرت زبیر رضی الله عنه شهید شو، په ترکه کښې ئې نه دینار پریخودو او نه څه درهم لیکن څه زمکې وې چې په هغې کښې یو غابه ده او یو ولس کورونه په مدینه منوره کښې، دوه کورونه په بصره کښې، یو کور په کوفه کښې او یو کور ئې په مصر کښې پریخودو.

"ارضین" د جمع صیغه ده او په حالت د نصب کښې دي، ددې مفرد ارض دي، ددې ترجمه پورته څه زمکو سره کړې شوې ده، البته غالباً دلته د حافظ رحمته الله علیه نه تسامح شوې ده چې

هغوی د اتشیه گنرلې ده او فرمائی چې د "منها" په ځانې "منها" تشبیه سره کیدل پکارو و. دا لفظ غین معجمه او باء مؤحده خفیفه سره دي. بعضې حضراتو دا الغایه یاء سره لوستلې دي کومه چې واضحه او صفا غلطی ده. دا د مدینې منورې په اطرافو او مضافاتو کښې د یو مشهورې علاقې نوم دي چې ورته "عوالی المدينة" وئیلې شی. ددې مقام او د مدینې منورې

(فتح الباری: ۶/۲۳۰)۔

(پورته حواله، و عمدة القاری: ۱۵/۵۲، وارشاد الساری: ۵/۲۱۱)۔

مینځ کښې څلور میله فاصله وه او دا مقام د شام په لاره باندې راتله. (۱) حضرت زبیر رضی اللہ عنہ دا زمکه، کما فی حدیث الباب، په یو لاک او یا زره باندې اخستلې وه او بیا ئې وروستو په شپاړس لاکه باندې خرڅه کړې وه. د باب په حدیث کښې د مذکوره کورونو نه علاوه د حضرت زبیر رضی اللہ عنہ یو کور په مکه مکرمه کښې وو، د هغې ذکر ابو نعیم په مستخرج کښې کړې دې، ددې راوی هم هشام بن عروه دې. (۲)

قوله: قال: وانما كان دينه الذي عليه أن الرجل كان يأتيه بالمال

فيستودعه أياه، فيقول الزبير: لا، ولكنه سلف، فأنى أخشى عليه الضيعة: حضرت عبداللہ رضی اللہ عنہ فرمائی چې کومه قرضه په حضرت زبیر رضی اللہ عنہ باندې واجبه وه نو ددې صورت داسې شوې وو چې یو سړی به ورته مال راوړلو چې دا خپل ځان سره امانت کیږدئ نو حضرت زبیر رضی اللہ عنہ به ورته او وئیل چې امانتاً خو نه البته د قرض په صورت کښې ئې راسره پریږده ځکه چې ماته ددې د ضائع کیدو ویره ده.

په دې عبارت کښې حضرت عبداللہ رضی اللہ عنہ د هغې لوئې رقم وجه بیان کړې ده چې کوم لوئې رقم ئې په والد محترم باندې قرض جمع شوې وو، چې ددې قرض سبب او وجه څه وه.

د حضرت زبیر رضی اللہ عنہ احتیاط کمال او تقویٰ چې یو سړی به حضرت زبیر رضی اللہ عنہ ته راغلو چې خپل مال ورسره امانت کیږدئ نو دوی به هغه څیز د امانت په صورت نه قبلوو بلکه ورته به ئې فرمائیل چې د قرض په شکل کښې ئې پریږده. دغه شان د صاحب المال مال به هم محفوظ وو او اعتماد به ئې هم وو او حضرت زبیر رضی اللہ عنہ به ددې الزام نه بچ وو چې هغوی دا مال قصداً عمداً ضائع کړې دې چونکه د امانت په هلاکیدو او ضائع کیدو کښې ضمان نه وی او قرض خو په هر حالت کښې واپس کول وی، ددې وجې نه به حضرت زبیر رضی اللہ عنہ ذمه داری په خپل ځان واخستله، په حدیث شریف کښې هم ددې طرفته اشاره ده، "فانی أخشى الضيعة" او که په دې مال باندې به ئې تجارت کوو نو ددې منافع به هم د دوی دپاره پاکه او حلاله وه.

ددې عمل نه ددې خبرې اندازه ښه لگي چې حضرت زبیر رضی اللہ عنہ کښې څومره لوئې احتیاط او حد درجې تقویٰ وه، علامه ابن بطال رحمته اللہ علیہ ددې وجوهاتو په بیانولو کښې لیکي:

"وأما قول الزبير للذين كانوا يستودعونه "لا، ولكنه سلف"، انما يفعل ذلك خشية أن يضيع المال، فيظن به ظن سوء فيه، أو تقصيراً في حفظه، فيرى أن هذا أبغى لمروءته، وأوثق لصاحب الأموال، لأنه كان صاحب ذمة وإفراقة، و عقارات كثيرة، فرأى أن يجعل أموال الناس مضمونة عليه، ولا يثق فيها تحت شئ من جواز التلف، ولتطيب نفس صاحب الوديعة على ذمته، وتطيب نفسه هو على ربح هذا المال" (۳)

(۱) پورته حواله جات، والکوثر الجاری: ۱۱۲/۶، ومعجم البلدان: ۱۸۲/۴، باب الغین مع الالف.....

(۲) فتح الباری: ۲۳۱/۶-۲۳۲.

(۳) شرح ابن بطال: ۲۹۱/۵، وعمدة القاری: ۵۲/۱۵، وفتح الباری: ۲۳۰/۶.

مشرانو صحابه کرامو رضی اللہ عنہم هم د خپلو مالی معاملاتو ذمه داری حضرت زبیر رضی اللہ عنہ ته حواله کړې وه. دوی به د هغوی د مالی کارونو او امورو نگرانی کوله، لکه زبیر بن بکار د هشام بن عروه د طریق نه نقل کړې دي چې د حضرت عثمان، حضرت عبدالرحمن بن عوف، حضرت مطيع بن الاسود، حضرت ابوالعاص بن الربيع، حضرت عبدالله بن مسعود او د حضرت مقداد بن عمرو رضی اللہ عنہم وغيره په شان صحابه کرامو هم د خپل مالی معاملاتو انتظام حضرت زبیر رضی اللہ عنہ ته حواله کړې وو. (د)

قوله: وما ولي امانة قط، ولا جباية خراج، ولا شيئاً الا ان يكون في غزوة مع النبي ﷺ، أو مع أبي بكر وعمر وعثمان رضی اللہ عنہم: كله هم دوی د خة خائي حاكم جوړ شوي نه دي، كله ئي هم د خراج د وصولولو ذمه داری اخستلي نه ده او نه بل خة خيز وو چې په هغې كښې ئې خة عهده اخستلې وي، بس نبی کریم ﷺ سره يا حضرت ابوبکر، حضرت عمر او حضرت عثمان رضی اللہ عنہم سره به ئې غزا (جهاد) کوله. (د)

په دې جمله كښې حضرت عبدالله بن زبیر رضی اللہ عنہ د يو وهم دفع كړې ده چې حضرت زبیر رضی اللہ عنہ سره دومره لوڼې مقدار كښې مال د كوم خائي نه راغی، چې هر كله والی هم نه وو، جابی هم نه وو (تيكس وصولونكي) نو ددې جواب هغوی بيان كړو چې دا ټول مال د مختلفو غزاگانو برکت دي، حضرت زبیر رضی اللہ عنہ به په غزاگانو كښې نبی کریم ﷺ، حضرت ابوبکر، حضرت عمر او حضرت عثمان رضی اللہ عنہم سره ملگرتيا كوله، كوم غنيمت چې به ملاؤ شو نو هغه به ئې په كاروبار وغيره كښې لگوو، ددې وجې نه خة بد او خراب گمان كول پكار نه دي، الله تعالى د دوی په مال كښې برکت اچولي وو، په هغې كښې ورته ډيرې زياتې فائدي حاصلې شوې يعنی د لكونو او گروپونو نه زياتې شوې. ابن بطال رحمته اللہ عليه فرمائي:

“قوله: ”وما ولي امانة قط، ولا جباية خراج“ فيكثر ماله من هذا الوجه، فيكون عليه فيه ظن سوء ومغزلظن عمرو المسلمين بالعمال، حتى قاسمهم، بل كان كسبه من الجهاد وسهانه من الغنائم مع رسول الله وخليفته بعده، فبارك الله في ماله لطيب أصله، وربح أرباحاً بلغت ألوف الألوف“ (د)

ددې نه علاوه زبیر بن بکار خپل سند سره روايت کړې دي چې د حضرت زبیر رضی اللہ عنہ په ملكيت كښې سل غلامان وو چې دوی ته به ئې خراج ادا کوو. نو په دې وجوهاتو باندې خيال كول چې هغوی دا مال غلطو طريقو سره حاصل کړې وو، دا خيال بالکل غلط دي. (د)

قوله: قال عبدالله بن الزبير: فحسبت ما عليه من الدين، فوجدته ألفي ألف،

(فتح الباری: ۶/۲۳۰)۔

(د حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الوضوء، باب من لم يتوضا من لحم الشاة والسويق)

(شرح ابن بطال: ۵/۲۹، وعمدة القاری: ۱۵/۵۲، وفتح الباری: ۶/۲۳۰)۔

(فتح الباری: ۶/۲۳۰)۔

ومائتي ألف: حضرت عبدالله بن زبیر رضی اللہ عنہ وائی چې په دوی باندې کومه قرضه وه، ما د هغې حساب اولگوو نو هغه دوه ویشته لاکه وه «دوه ملین، دوه لکهه»

دا قول هم سابقه سند سره موصول دي.^(۱)
او حسب د باب نصر نه د ماضی متکلم صیغه ده ددې معنی ده شمارل او حساب کول، حساباً وحسباً. بالغم. وغیره ددې مصدرونه دی. دویم یو لفظ دي چې د باب حسب پالکسره نه دي، د هغې مصدر حسباً. پالکسره. وغیره دي، د هغې معنی ده گمان او اندازه لگول.^(۲)

قال: فلقی حکیم بن حزام عبدالله بن الزبیر، فقال: یا ابن أخي. کم علی أخی من الدین؟

فرمائی چې حضرت حکیم بن حزام رضی اللہ عنہ حضرت عبدالله بن زبیر رضی اللہ عنہ سره ملاؤ شو او وې فرمائیل: وراره! زما د ورور قرضه څومره ده؟

حضرت حکیم بن حزام رضی اللہ عنہ د حضرت زبیر بن عوام رضی اللہ عنہ د تره خوښ وو، ددې وجې نه هغوی حضرت عبدالله بن زبیر رضی اللہ عنہ ته «یا ابن أخي» سره آواز اوکړو.^(۳)

قوله: فکتمه، فقال: **مائة ألف:** حضرت عبدالله رضی اللہ عنہ ترینه د قرض اصل مقدار پټ اوساتلو او وې فرمائیل یو لاک

ایا دا دروغ او غلط بیانی نه ده؟ په حضرت زبیر رضی اللہ عنہ باندې د واجب قرض مقدار دوه ویشته لاکه وو لیکن د حضرت حکیم بن حزام رضی اللہ عنہ په تپوس باندې حضرت عبدالله بن زبیر رضی اللہ عنہ د قرض اصل مقدار ترینه پټ اوساتلو او صرف یو لاک ئې ورته اووئیل او باقی یو ویشته لاکه ئې حذف کړل نو ایا دا په دروغو او غلط بیانی کېنې نه راځي؟

ابن بطال رحمته اللہ علیہ ددې اشکال جواب دا ارشاد فرمائیلې دي چې دا دروغ نه دی او نه غلط بیانی ده ځکه چې هغوی ورته څه اووئیل او څه ئې پټ اوساتل ځکه چې هر سړی ته دا حق حاصل دي چې کله د هغه نه د څه څیز په باره کېنې تپوس او کړې شی نو تپوس کوونکې ته چې څومره ئې خوښه وي وئیلې شی نو دغه شان هغوی ته هم دا حق حاصل وو چې څه ورته اووایی او څه ورته اونه وائی، دلته هغوی د حضرت حکیم بن حزام رضی اللہ عنہ په تپوس کولو باندې دا خپل حق اختیار کړو.^(۴)

د قرض د اصل مقدار پټولو وجه: ددې وجه دا وه چې حضرت حکیم رضی اللہ عنہ د حضرت زبیر رضی اللہ عنہ په باره کېنې څه غلط گمان او د احتیاط د کموالی رائي اختیار نه کړی چې دومره لویه قرضه

^(۱) فتح الباری: ۶/۲۳۰، وعمدة القاری: ۱۵/۵۲.

^(۲) پورته حواله جات.

^(۳) د حضرت حکیم بن حزام رضی اللہ عنہ د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الزکاة، باب لا صدقة الا عن ظهر غنی.

^(۴) عمدة القاری: ۱۵/۵۳، وشرح الکرماني: ۱۳/۱۰۱، وفتح الباری: ۶/۲۳۱.

^(۵) شرح ابن بطال: ۵/۲۹۲، وفتح الباری: ۶/۲۳۱، وعمدة القاری: ۱۵/۵۳.

پرې څنگه واجبه شوه، چې بیا د هغې په ادا کولو کښې وارثان پريشان وي؟
ددې نه علاوه د حضرت عبدالله عليه السلام په نظر کښې دا خبره هم وه چې حضرت حکیم عليه السلام د هغوی په باره کښې دا خیال اونه کړی چې دې د څه مدد او تعاون محتاج دي، چې د هغې په نتیجه کښې دې (حضرت حکیم) حضرت عبدالله بن زبیر عليه السلام لره خپل محتاج خیال کړی. (۱)
د حقیقت د پتولو خلاصه دوه خبرې شوې.

- ① د حضرت زبیر عليه السلام متعلق حضرت حکیم بن حزام عليه السلام د څه غلط فهمی بنسکار نه شی.
- ② د حضرت عبدالله عليه السلام غیرت او خود داری ته څه نقصان اونه رسی چې حضرت حکیم بن حزام عليه السلام دوی لره د خپل مدد او تعاون محتاج خیال کړی.

قوله: فقال حکیم: والله، ما أرى أموالكم تسع لهذه، فقال له عبدالله: رأيتك إن كانت ألفي ألف ومائتي ألف؟ قال: ما أراكم تطيقون هذا، فإن عجزتم

عن شيء منه فاستعينوا بي: حضرت حکیم او فرمائیل، په خدایي قسم: زما خیال نه دې چې ستاسو مالونه به د دومره قرض دپاره کافی شی نو حضرت عبدالله ورته اووئیل، که قرض دوه ویشت لاکه وی نو ستاسو څه خیال دې؟ نو حضرت حکیم او فرمائیل زما په خیال تاسو ددې د ادا کولو قدرت نه لرئ، نو که چرته تاسو ددې د ادا کولو نه عاجزه شوی نو زما تعاون حاصل کړئ.

ابتداء کښې حضرت عبدالله د قرض مقدار کم اوبښودلو، چې د هغې وجه اوس تیره شوه، چې هرکله ئې محسوسه کړه چې حضرت حکیم یو لاک قرض ډیر لوئې رقم گنړی نو حضرت عبدالله دا ضروری او گنړله چې د قرض پوره مقدار دوی ته اوبښودلې شی او دا یقین ورته هم ورکړې شی چې د قرض د دومره لوئې مقدار په ادا کولو باندې زما قدرت هم شته، یو لاک خو ډیر معمولی رقم دې. (۲)

قوله: وكان الزبير اشترى الغابة بسبعين ومائة ألف، فباعها عبدالله بألف ألف

وستمائة ألف: او حضرت زبیر غابه په یو لاک اویا زره باندې اخستې وه، دا حضرت عبدالله په شپاړس لاکه باندې خرڅه کړه.

حضرت عبدالله د غابه زمکه شپاړس حصو کښې تقسیم کړه او د هرې حصې قیمت ئې یو لاک مقرر کړو چې څوک اخستل غواړي نو د هرې حصې یو لاک روپی قیمت دې، دغه شان ټوله زمکه د شپاړس لاکو شوه. (۳)

قوله: ثم قام، فقال: من كان له على الزبير حق فليوافنا بالغابة: بیا حضرت عبدالله اعلان کولو دپاره، اودریدو، وې فرمائیل چې په زبیر باندې د چا حق وی نو هغه

(۱) پورته حواله جات)۔

(۲) فتح الباری: ۲۳۱/۶، وعمدة القاری: ۵۳/۱۵)۔

(۳) فتح الباری: ۲۳۱/۱)۔

دې مونږ سره په غاښه کښې ملاؤ شى.

فليوافنا موافقة مفاعلة نه دې، ددې معنى ده راتلل، اى فلياتنا^(۱)

فاتاه عبد الله بن جعفر. وكان له على الزبير أربعة ألف. فقال لعبد الله: إن شئت تركتها لكم. قال عبد الله: لا، قال: فإن شئت جعلتها فيما تؤخرون إن أخرتم. فقال عبد الله: لا، قال: قال: فاقطعوا لي قطعة. قال عبد الله: لك من هاهنا إلى هاهنا

نو عبد الله بن جعفر د حضرت عبد الله بن زبير (اعلان اوريدلو سره) راغی، د دوی په حضرت زبير باندې څلور لاکه روپۍ وې او ابن الزبير ته ئې اووئيل چې که تاسو غواړئ نو زه به خپل رقم تاسو ته پرېږدم. ابن الزبير او فرمائيل نه، دا نه شى کيدې. نو ابن جعفر اووئيل چې که تاسو غواړئ نو دا معامله مؤخر کړئ د نورو مؤخر شوې معاملاتو په شان، ابن الزبير اووئيل چې نه دا هم نه شى کيدې. ابن الزبير وائي چې ابن جعفر اووئيل ته زما دپاره د زمکې يوه حصه جدا کړه حضرت عبد الله بن زبير (عليه السلام) اووئيل چې ستاسو دپاره ددې ځانې نه دې ځانې پورې زمکه ده.

حضرت زبير د حضرت عبد الله بن جعفر څلور لاکه قرض دارې وو، چې کله عبد الله بن زبير اعلان او کړو نو د اعلان په اوريدو سره عبد الله بن جعفر ورته راغی او دوه پيشکشونه ئې اوکړل، يو خو دا چې زه خپل حق پرېږدم، دويم دا چې دا معامله فى الحال د نورو معاملاتو په شان مؤخر کړه، زه اوس د خپل حق مطالبه نه کوم، چې کله دې خوښه شى نو بيا راته راکړه، د باب د حديث شريف مضمون هم دا دې.

د يعقوب بن سفيان په تاريخ کښې نور تفصيل دادې چې په دې موقع باندې حضرت حڪيم بن حزام او عبد الله بن عمر (عليهما السلام) هم حاضر وو او دا خبرې اترې د حضرت عبد الله بن جعفر (عليه السلام) په کور کښې شوې وې، نو هر کله چې دا ټول حضرات د هغوى کور ته داخل شو نو ابن جعفر او فرمائيل چې ايا تاسو دا حضرات ماته د سفارش دپاره راوستلې دى، بس ما درته خپل حق پريخودو نو ابن الزبير اووئيل، زه دا نه غواړم، نو هغوى اووئيل چې ددې قرض په بدله کښې تاسو ماته خپلې خپلې راکړئ، ابن الزبير اووئيل، زه دا هم نه غواړم نو حضرت عبد الله بن جعفر حيرانتيا سره اووئيل ايا تاسو معامله د قيامت د ورځ دپاره پريخودل غواړئ چې هلته فيصله او شى؟ ابن الزبير اووئيل، داسې هم نه غواړم نو ابن جعفر اووئيل چې زه معامله په تاسو باندې پرېږدم، تاسو چې څه فيصله او کړئ نو ماته به قبول وى نو ابن الزبير اووئيل چې زه به د قرض په بدله کښې تاسو ته جائيداد درکوم نو هغوى اووئيل چې ته يک ده^(۲)

قوله: قال: فباع منها، ففضى دينه، فأوفاه، وبقي منها أربعة أسهم ونصف...:

(^۱) عمدة القارى: ۵۳/۱۵. والقاموس الوحيد للكيرانوى، مادة: وفى.

(^۲) المعرفة والتاريخ للفسوى: ۲/۲۳۹، مكحول، رقم (۲۴۰) وفتح البارى: ۶/۲۳۱.

فرمائی چې حضرت عبداللہ بن زبیر په ترکه کښې څه حصه خرڅه کړه او قرض ئې پوره ادا کړو او د زمکې څلور نیمې حصې د قرض ادا کولو نه پس بچ شوې.

”منها“ نه مراد ”من الغابة والدور“ دې، صرف ”من الغابة“ نه دې، دا ځکه چې قرض دوه ویشت لاکه وو، پورته ذکر شوې دی چې د زمکې قیمت شپاړس لاکه وو^(۱)، ښکاره خبره ده چې په شپاړس لاکه باندې دوه ویشت لاکه څنگه ادا کیدې شي؟ ددې وجې نه ابن الزبیر زمکه هم خرڅه کړه او څه کورونه ئې هم خرڅ کړل، دغه شان ئې قرض ادا کړو او د زمکې څلور نیمې حصې بچ پاتې شوې.

قوله: فقد مر علي معاوية - وعنده عمرو بن عثمان، والمنذر بن الزبير، وابن زمعة:

ددې نه پس حضرت عبداللہ بن زبیر حضرت معاویه رضي الله عنه ته راغی، دغه وخت دوی سره عمرو بن عثمان^(۲)، منذر بن زبیر او عبداللہ بن زمعه رضي الله عنه هم موجود وو.

قوله: المنذر بن الزبير: دا جلیل القدر شخصیت ابو عثمان منذر بن زبیر بن عوام بن خویلد دې. حضرت اسماء بنت ابی بکر صدیق رضي الله عنه د دوی مور بی بی ده^(۳) او د حضرت عبداللہ بن زبیر رضي الله عنه ورور دې. دوی د حضرت عمر رضي الله عنه په دور خلافت کښې پیدا شوې وو.^(۴)

حضرت امیر معاویه رضي الله عنه چې د قسطنطنیه د محاذ دپاره د خپل ځوی یزید په مشرۍ کښې کوم لښکر ته ترتیب ورکړې وو، په هغې کښې دوی هم وو او په دغه غزوه کښې شریک وو.^(۵)

زبیر بن بکار وائی چې د منذر د خپل ورور حضرت عبداللہ سره څه خفگان پیدا شو نو دوی هغه پریځودلو او کوفه کښې د حضرت امیر معاویه رضي الله عنه خدمت کښې حاضر شو، چې هغوی ئې ډیر اکرام او کړو او لس لاکه درهمه^(۶) او دې سره سره څه جائیداد هم وو.^(۷) ئې ورکړل لیکن د هغې د وصولولو نه مخکښې حضرت امیر معاویه رضي الله عنه وفات شو.

حضرت امیر معاویه رضي الله عنه په خپل وصیت کښې فرمایلې وو چې زما قبر ته به منذر کوزیږي^(۸)، ددې نه ددې دواړو د تعلق د کلکوالی اندازه ښه کیدې شي.

^(۱) فتح الباری: ۶/۲۳۱.

^(۲) د حضرت عمرو بن عثمان حالات کتلو دپاره اوگوری، کتاب الجنائز، باب قول النبی صلی الله علیه وسلم: یعذب الميت.....

^(۳) سیر أعلام النبلاء: ۳/۳۸۱، والطبقات الکبری لابن سعد: ۵/۱۸۲.

^(۴) سیر أعلام النبلاء: ۳/۳۸۱، والبداية والنهاية: ۸/۲۴۶.

^(۵) پورته حواله جات.

^(۶) د ابن کثیر مطابق دا رقم یو لاک وو.

^(۷) البداية والنهاية: ۸/۲۴۶.

^(۸) البداية والنهاية: ۸/۲۴۶، وسیر أعلام النبلاء: ۳/۳۸۱.

د دوی د ورور عبدالله بن زبیر او د یزید بن معاویه مینځ کښې چې کله د بیعت په معامله کښې اختلاف شو، خبره ډیره شوه او دوی ته اطلاع اوشوه نو دوی د کوفې نه راغلل او په اتو ورځو کښې ئې د مکې مکرمې مسافت پوره کړو او راوړسیدو، اهل شام چې کله د عبدالله بن زبیر محاصره او کړه نو په دې محاصره کښې دوی هم راغلل، دې دوران کښې ۲۴ هـ کښې دوی وفات شو، ټول عمر مبارک ئې څلویښت کاله وو. (۱)

ابن کثیر لیکلې دی چې دوی او عثمان بن عبدالله بن حکیم به د ورځې د اهل شام خلاف جنگیدل او د شپې به ئې هم په دوی باندې خوراک کوو. (۲)

د دوی لور فاطمه بنت المنذر مشهوره محدثه وه او د هشام بن عروه بن زبیر په نکاح کښې وه. (۳) رحمه الله تعالی رحمة واسعة.

ابن زعمه: دا د نبی کریم ﷺ صحابی عبدالله بن زعمه بن اسود بن مطلب بن اسد قرشي اسدي مدني ؓ دې د دوی مور بی بی قریبة الکبری ده چې د ام المؤمنین حضرت ام سلمه حقیقی خور ده، دغه شان حضرت ابن زعمه د حضرت ام سلمه خور ئې شو. (۴)

د حضرت ام سلمه لور زینب بنت ابوسلمه د ابن زعمه په نکاح کښې وه. (۵)

دوی د نبی کریم ﷺ او د خپلې ترور حضرت ام سلمه ؓ نه روایت کوی.

د دوی نه د حدیث په روایت کوونکو کښې د دوی ځوئې ابو عبیده، عبید الله بن عبدالله بن عتبة، عروه بن الزبیر او ابوبکر بن عبدالرحمن بن الحارث وغیره شامل دی. (۶)

دوی د قریش په اشرافو کښې دی، البته د محدثینو په نزد د دوی شمار په اهل مدینه کښې کیږي. (۷)

دوی به د نبی کریم ﷺ کور ته خپلې ترور کره تلل راتلل، د نبی کریم ﷺ په مرض الوفا کښې ئې دا خبر راوړې وو چې ابوبکر ته اووایه چې مونځ ورکړی، لیکن حضرت ابوبکر ؓ په موقع باندې موجود نه وو نو دوی حضرت عمر فاروق ؓ ته د مونځ ورکولو دپاره اوفرمائیل. (۸) د نبی کریم ﷺ د وفات په وخت د دوی عمر پنځلس کاله وو. (۹)

(۱) پورته حواله جات، وتاریخ الذهبی: ۳۷۶/۲ -

(۲) البداية والنهاية: ۲۴۶/۸ -

(۳) سير أعلام النبلاء: ۳۸۱/۳ -

(۴) تهذيب الكمال: ۵۲۵/۱۴، وتهذيب التهذيب: ۲۱۸/۵، والاستيعاب: ۵۴۴/۱، والجرح والتعديل: ۶۹/۵ باب العين، رقم (۲۷۲) -

(۵) تهذيب التهذيب: ۲۱۸/۵، وتهذيب الكمال: ۵۲۶/۱۴ -

(۶) تهذيب التهذيب: ۲۱۸/۵، وتهذيب الكمال: ۵۲۶/۱۴ -

(۷) الاستيعاب: ۵۴۴/۱، وإكمال مغلطای: ۳۵۹، وتهذيب الكمال: ۵۲۶/۱۴ -

(۸) تهذيب الكمال: ۵۲۶/۱۴، والاستيعاب: ۵۴۴/۱، وتهذيب التهذيب: ۲۱۸/۵-۲۱۹، وسنن أبي داود، كتاب السنة، باب في استخلاف أبي بكر، رضى الله عنه، رقم (۴۶۶۰) -

(۹) تهذيب الكمال: ۵۲۵/۱۴ -

دوی د زیادی د قول مطابق حضرت عثمان سره ۳۵ هجری کښې شهید شو او د ابن الکلبی وینا دا ده چې مسلم بن عقبه په "یوم الحرة" باندې دوی ظلماً شهید کړې وو، لیکن ابن عبدالبر فرمائی چې په یوم الحرة باندې خو د دوی خوښ یزید شهید شوې وو نه چې ابن زمعه (۱).

امام ذهبی وائی چې حضرت عبدالله بن زمعه د ام المؤمنین حضرت سوده ورور دې، (۲) غالباً هم د دوی په تقلید کښې علامه عینی هم دا لیکلې دی، البته دا خبره صحیح نه ده، دلته د دوی نه تسامح شوې ده، د دواړو په نسب کښې غوروفکر کولو سره دلته ددې خبرې غلط کیدل په واضحه توګه معلومېږي. (۳)

د اصول سته اصحابو د دوی روایات نقل کړې دي. (۴)

د دوی نه ټول څلور احادیث مبارکه روایت دي، چې په هغې کښې یو حدیث داسې دې چې په دریو احکاماتو باندې مشتمل دي، ددې وجې نه بعضې راویانو خو دا درې واړه یوځای کړې دي او د یو حدیث مجموعه ئې ګرځولې ده او بعضو په هر حکم باندې مشتمل حدیث مستقل بالذات حدیث ګرځولې دي، لکه څنګه چې علامه خزرجی هم کړې دي او فرمائی چې "وله حدیث متفق علیه" (۵) په دې اعتبار سره به مجموعه روایتونه دوه شی، هم دې خبرې لږه اختیارولو سره علامه نابلسی د دوی صرف دوه حدیثونه ذکر کړې دي (۶)

په حدیث شریف کښې چې د حضرت عبدالله بن زبیر حضرت معاویه رضی الله عنه ته د تللو کومه تذکره ده نو دا د دمشق ده ځکه چې دوی مبارک هلته وو چې حضرت عبدالله دملاقات دپاره تشریف یووړو، دغه ځای کښې دغه وخت نور حضرات هم تشریف فرما وو. (۷) کما مر.

فقال له معاوية: كم قومت الغابة؟ قال: كل ستم مائة ألف. قال: كم بقي؟ قال: أربعة

(۱) تهذيب التهذيب: ۲۱۹/۵، والاستيعاب: ۵۴۵/۱، والاکمال للمغلطای: ۳۵۹/۷.

(۲) الکاشف للذهبي: ۵۳۳/۱، رقم (۲۷۲۶)، وعمدة القاری: ۵۳/۱۵.

(۳) تهذيب التهذيب: ۲۱۹/۵، د ام المؤمنین حضرت سوده نسب دادي: سودة بنت زمعه بن قيس بن عبدشمس بن عبدود بن نصر.....قرشيه عامريه، رضى الله عنها (تهذيب الكمال: ۲۰۰/۳۵، النساء) او د حضرت عبدالله بن زمعه نسب داسې دي: عبدالله بن زمعه بن الاسود بن المطلب بن اسد بن عبدالعزيز.....قرشي اسدي، رضى الله عنه (تهذيب الكمال: ۵۲۵/۱۴).

نو د دواړو په نسب کښې واضح طور سره فرق دې چې د حضرت سوده نيکه قيس بن عبدشمس دي، او د عبدالله بن زمعه نيکه الاسود بن المطلب دي، دغه شان حضرت سوده عامريه ده ځکه چې د بنوعامر سره ئې تعلق دي او د عبدالله بن زمعه تعلق د بنواسد سره دي رضى الله عنهما.

(۴) تهذيب الكمال: ۵۲۶/۱۴، والکاشف: ۵۳۳/۱، وتهذيب التهذيب: ۲۱۸/۵.

(۵) خلاصة الخزرجي: ۱۹۸، دغه شان اوګوري: الاصابة: ۳۱۱/۲، والاستيعاب: ۵۴۴/۱.

(۶) ذخائر المواريث في الدلالة على مواضع: ۲۶/۲، رقم (۲۶۹۰-۲۶۹۱).

(۷) عمدة القاری: ۵۳/۱۵.

أسهم ونصف. فقال المنذر بن الزبير: قد أخذت سهمًا بمائة ألف. وقال عمرو بن عثمان: قد أخذت سهمًا بمائة ألف. وقال ابن زمعة: قد أخذت سهمًا بمائة ألف. فقال معاوية: كم بقي؟ فقال: سهم ونصف. قال: أخذته بخمسين ومائة ألف.

نو حضرت معاویه او وئیل چې د غاښې څه قیمت مقرر شوې دي؟ عبدالله او وئیل چې هره حصه د یو لاک ده. وې فرمائیل چې څومره حصې پاتې دي؟ وې فرمائیل څلور نیمې حصې نو منذر بن زبیر او وئیل چې یوه حصه زه په یو لاک اخلم او عمرو بن عثمان او وئیل چې یوه حصه ما په یو لاک واخسته او عبدالله بن زمعه او وئیل چې یوه حصه ما په یو لاک واخسته بیا معاویه رضی الله عنه او وئیل چې څومره پاتې شوه؟ عبدالله بن زبیر او وئیل چې یوه نیمه حصه، نو معاویه رضی الله عنه او فرمائیل چې دا ما په یو نیم لاک، یو لاک پنځوس زره، باندې واخسته. د حضرت عبدالله په قول "کل سهم مائة ألف" کښې لفظ د مائة منصوب بنزع الخافض دي. اصل عبارت داسې دي، "کل سهم بمائة ألف" (۱).

قوله: قال: وباع عبدالله بن جعفر نصيبه من معاوية بستمائة ألف: فرمائي: او عبدالله بن جعفر هم خپله حصه په حضرت معاویه رضی الله عنه باندې په شپږ لاکه باندې خرڅه کړه. مطلب دادې چې حضرت عبدالله بن جعفر ته د خپل قرض په بدله کښې په غاښه کښې کومه حصه ملاؤ شوې وه نو هغه ئې په حضرت امیر معاویه باندې خرڅه کړه، د څلورو لاکو حصه وه او هغه ئې په هغوی باندې په شپږ لاکه خرڅه کړه، دغه شان هغوی ته دوه لکه روپۍ فائده او شوه. (۲).

قوله: فلما فرغ ابن الزبير من قضاء دينه قال بنو الزبير: اقسم بيننا ميراثنا. قال: لا والله، لا أقسم بينكم حتى أنادي بالموسم أربع سنين: ألا من كان له على الزبير دين، فليأتنا، فلنقضه: هر کله چې حضرت عبدالله بن زبير د قرض ادا کولو نه فارغ شو نو بنو الزبير مطالبه او کړه چې زمونږ ميراث په مونږ کښې تقسيم کړه. هغوی او فرمائیل په خدائې قسم چې نه تقسيموم، هغه وخته پورې نه تقسيموم چې د حج په موقع باندې څلور کالو پورې آواز اونه کړم چې که په زبیر باندې د چا څه حق وي نو هغه دې مونږ ته راشي چې مونږ د هغه حق ادا کړو.

د حضرت عبدالله قول "لا والله" د فعل د حذف سره دي، "لا أقسم والله" ددې نه پس جمله د ماقبل تفسیر دي. حضرت عبدالله چونکه وصی وو او په بنو الزبير کښې د ټولو نه مشر هم وو، ددې وجې نه هغوی د ميراث د تقسيمولو نه انکار او کړو، ددې گمان په بنياد باندې چې شايد د چا حق پاتې شوې وي او ماته اطلاع نه وي رارسيدلې، ښکاره خبره ده چې ترڅو د

(۱) پورته حواله، وإرشاد الساري: ۵/۲۱۲)۔

(۲) فتح الباري: ۶/۲۳۲، وإرشاد الساري: ۵/۲۱۳)۔

قرض پوره ادائیگی شوې نه وی نو میراث خو نه شی تقسیمیدې. ددې وجې نه ئې افرمائیل چې لږ صبر او کړی، زه د حج په موقع باندې څلور کالو پورې اعلان کوم، ددې نه پس به ئې تقسیموم. بهر حال د هغوی مقصد هیڅکله حق دار لره د خپل حق د وصولی نه منع کول نه وو چې حقدار ته د هغه حصه ور نه کړې شی. (۱)

الموسم. بکس السین. نه مراد د حج ورځې دی، دا د وسمه بمعنی علامت نه مشتق دي، چونکه دا ورځې په مکه مکرمه کښې د خلقو د جمع کیدو دپاره علامت وی، ددې وجې نه ددې نوم موسم او ګرځولې شو. (۲)

او د څلور کالو د خاص کولو وجه داده چې دغه وخت هم او د هغې نه پس بیا هم د مکې مکرمې او د دنیا د نورو علاکو ترمینځه دوه کاله مسافت وو، د هغوی مقصد دا وو چې اقطار عالم ته د دوی پیغام اورسی، دا دوه کاله شو، بیا ددې جواب راشی نو دا دوه کاله شو، دغه شان دا ټول څلور کاله شو. (۳)

قوله: قال: فجعل كل سنة ينادي بالموسم. فلما مضى أربع سنين قسم بينهم: فرمائی چې حضرت عبداللہ بن زبیر به هر کال د حج په ورځو کښې اعلان کوو، چې کله څلور کاله تیر شو نو په وارثانو کښې ئې میراث تقسیم کړو.

قوله: قال: وكان للزبير أربع نسوة: فرمائی او د حضرت زبیر څلور بیبیانې وې. دا د شهادت د وخت ذکر دي چې د شهادت په وخت کښې د هغوی په نکاح کښې څلور بیبیانې وې، د هغوی نومونه دا دي، ام خالد، رباب، زینب او عاتکه بنت زید (دا د حضرت سعید بن زید خور بی بی ده چې په عشره مبشره کښې دي).

حضرت زبیر شپږ نکاحونه کړي وو، چې په هغې کښې هغوی حضرت اسماء بنت ابی بکر او ام کلثوم ته طلاق ورکړي وو، طلاق هغوی بی بی عاتکه ته هم ورکړي وو لیکن د هغوی د شهادت په وخت دا په عدت کښې وه او حضرت عبداللہ بن زبیر د مال په یو مخصوص

مقدار باندې دوی سره صلح کړې وه. (۴). کهارواه الحاکم (۵)

ورفع الثلث: او دریمه حصه ئې جدا کړه.

یعنی د کوم ثلث مال چې حضرت زبیر وصیت کړې وو، هغه ئې جدا کړو. (۶)

(۱) عمدة القاری: ۵۳۱۱۵، وشرح الکرمانی: ۱۰۲۱۱۳. —

(۲) عمدة القاری: ۵۳۱۱۵، وشرح الکرمانی: ۱۰۳۱۱۳، والقاموس الوحید، مادة وسم. —

(۳) العمدة: ۵۳۱۱۵، والکرمانی: ۱۰۲۱۱۳، وارشاد الساری: ۲۱۳۱۵، والکوثر الجاری: ۱۱۳۱۶. —

(۴) فتح الباری: ۲۳۲۱۶، وعمدة القاری: ۵۳۱۱۵. —

(۵) المستدرک: ۴۱۵۱۳، کتاب معرفة الصحابة، ذکر مقتل الزبیر بن العوام، رقم (۵۵۸۲). —

(۶) فتح الباری: ۲۳۲۱۶، وعمدة القاری: ۱۵، وارشاد الساری: ۲۱۳۱۵. —

فامباب کل امراة الف و مائتا الف: نو د هرې ښځې په حصه کښې دولس لاکه راغلې.
ددې مطلب دادې چې د میراث پیسې ۴۸ لاکه وې، دولس لره څلورو سره ضرب ورکولو
کښې هم دا تعداد جوړیږي.)

قوله: فجميع ماله خمسون ألف ألف ومائتا ألف: د دوی د ټول مال مقدار ۵ کروړه او
دوه لاکه وو.

دلته د حدیث شارحینو تفصیلی بحثونه کړي دي، چې په هغې باندې پوهیدل آسان نه دی
البته مونږ لاندې یو څو اقوال نقل کوو او په هغې باندې به تبصره هم کړي.
حضرت زبیر بن عوام رضی الله عنه فرمایلي وو چې که د قرض ادا کولو نه پس څه مال بچ پاتې شي
نو د هغې په ثلث کښې دې وصیت جاری کړي شي او باقی مال دې په وارثانو کښې تقسیم
کړي شي، تفصیل وړاندې تیر شوې دې.
اوس په حساب باندې ځان پوهه کړئ!

قرض دوه ویشت لاکه روپي دي او هرې بی بی ته دولس لاکه ورکړي شوې، نو د دوی ټوله
حصه اته څلویښت لاکه جوړیږي، دا اته څلویښت د قرض او وصیت ادا کولو نه پس باقی
مال دې نو ۴۸ لاکه ته چې په ۸ کښې ضرب ورکړي شي نو د قرض او وصیت ادا کولو نه
پس چې څه پاتې کيږي د هغې ټول مقدار به معلوم شي $(۸ \times ۴۸۰۰۰۰۰ = ۳۸۴۰۰۰۰۰)$
دغه شان به دا رقم ۳ کروړه او ۸۴ لاکه شي، دې سره چې د وصیت ثلث ملاؤ کړي شي کوم
چې یو کروړ ۹۲ لاکه دي، نو حاصل جمع (۵۷۲۰۰۰۰۰) پنځه کروړه او شپږ اويا لاکه روپي
شوي.

د وصیت د ثلث ویستلو طریقه به دا وی چې ۵ کروړ ۷۲ لاکه په ۳ باندې تقسیم کړي شي نو
ثلث به راوځي، یعنی $۳/۵۷۲۰۰۰۰ : ۱۹۲۰۰۰۰$
بیا چې په دې ټول رقم یعنی ۵ کروړه ۷۲ لاکه کښې ۲۲ لاکه قرض شامل کړي
شي، یعنی $۵۷۲۰۰۰۰ + ۲۲۰۰۰۰ = ۵۹۸۰۰۰۰$ نو ټول مال ۵ کروړه او ۹۸ لاکه روپي
شو. دا ساده حساب دې او په دې کښې د دین او وصیت نه پس، ثلث او وصیت ټول
راغلل.)

(۱) فتح الباری: (۲۳۲۱۶)۔

(۲) ټول مال ۵ کروړه ۹۸ لاکه دي، چې دهغې تفصیل د اجزاو په اعتبار سره لاندې ذکر کولې شي: ثمن
 ۸×۴۸۰۰۰۰۰ (د ۴ بیبیانو حصه) اته څلویښت لاکه،

ثمن ته مو په ۸ کښې ضرب ورکړو ۳۸۴۰۰۰۰۰ (چې د قرض او وصیت نه پس مجموعه
ده) $(۳ \text{ کروړه } ۸۴ \text{ لاکه})$

د وصیت دریمه حصه $۱۹۲۰۰۰۰ + (۱ \text{ کروړ } ۹۲ \text{ لاکه})$

حاصل جمع $۵۷۲۰۰۰۰ (۵ \text{ کروړ } ۷۲ \text{ لاکه})$

قرض $۲۲۰۰۰۰۰ (دوه ویشت لاکه)$

.....[بقیه بر صفحه آنده...]

اشکال او د هغې جوابات: تفصیل تاسو اولوستلو، اوس اشکال دادې چې د روایت په آخره کښې دی، "فجیع ماله خمسون ألف ومائتا ألف" یعنی ټول مال ۵ کروړه او دوه لاکه وو او تفصیلی حساب سره ټول مال ۵ کروړه ۹۸ لاکه جوړیږي، نو په اجمال او تفصیل کښې مطابقت نشته؟ هم دې خبرې د بخاری شریف شارحین حیران او پریشان کړې دي.

جواب نمبر ① حافظ شرف الدین دمیاطی ددې اشکال جواب دا ورکړې دې چې د بیبیانو په حصو کښې بعضې راویانو ته وهم شوې دي، اصل کښې د هرې بی بی حصه زر زر یعنی لس لاکه وه، په قرض کښې چې کوم الف الف ومائتا ألف وو، د هغې نه مائتا ألف (دوه لاکه) د بیبیانو په الف الف کښې شامل کړې شوې او الف الف ومائتا ألف جوړ شو، که د بیبیانو نیمه حصه الف الف (۱۰ لاکه) وی نو د څلورو بیبیانو حصه به ۴۰ لاکه شي، بیا څلویښت لاکه چې ثمن دي، دې ته به ۸ کښې ضرب ورکوو $۸ \times ۴۰۰۰۰۰ = ۳۲۰۰۰۰۰$ ، د ضرب حاصل درې کروړه او شل لاکه شو، چې د دین او وصیت نه پس باقی پاتې شوې مال دي، په دې کښې به د وصیت ثلث یوځای کړې شي چې یو کروړ ۲۰ لاکه دي، یعنی $۲۲۰۰۰۰۰ + ۳۲۰۰۰۰۰ = ۵۴۰۰۰۰۰$ ، نو حاصل جمع به ۴ کروړه ۸۰ لاکه شي، بیا دې سره ۲۲ لاکه قرض یوځای کړې شي، یعنی:

$۴۸۰۰۰۰۰ + ۲۲۰۰۰۰۰ = ۵۰۲۰۰۰۰۰$ نو حاصل جمع به ۵ کروړه او دوه لاکه شي او اجمال او تفصیل کښې به مطابقت پیدا شي.

حافظ ابن حجر دې جواب ته غوره وئیلې دي (۱).

جواب نمبر ② حافظ شرف الدین دویم جواب دا ورکړې دي چې حضرت عبدالله بن زبیر چې کوم څلور کاله میراث مؤخر کړې وو، په دغه زمانه کښې دا مال زیات شو او ۵ کروړه ۹۸

...بقیه از حاشیه گذشته [ټول مال - ۵۹۸۰۰۰۰۰ (۵ کروړه ۹۸ لاکه)

تفصیل دپاره اوگوری، فتح الباری: ۲/۲۳۲] -

(۱) فتح الباری: ۲/۲۳۳، هم دا قول علامه عینی هم ذکر کړې دي، لیکن ددې قول نسبت یې نه دي ذکر کړې، اوگوری عمدة القاری: ۱۵/۴۹ ددې قول خلاصه داده:

ثمن ۴۰۰۰۰۰ (د څلورو بیبیانو حصه، څلویښت لاکه)

ثمن ته مو ضرب ورکړو ۸ سره
حاصل ضرب ۳۲۰۰۰۰۰ (درې کروړه شل لاکه، چې د قرض او وصیت نه پس باقی مانده دي)

د وصیت ثلث ۱۲۰۰۰۰۰ (یو کروړ شپيته لاکه)

حاصل جمع ۴۸۰۰۰۰۰ (څلور کروړه اتیا لاکه)

قرض ۲۲۰۰۰۰۰ (دوه ویشته لاکه)

ټول مال ۵۰۲۰۰۰۰۰ (پنځه کروړه دوه لاکه) -

لاکه شو، ورنه ابتداء کښې دا ۵ کروړه ۲ لکه وو. (د) گویا ۹۲ لکه زیاتوالې په کښې اوشو. حافظ صاحب دا جواب د اول جواب نه هم غوره ښودلې دې او ترجمه کښې چې برکة الغازی سهر د حیا او د میتا کوم قید دې نو هغې سره هم ددې مطابقت دې او دا جواب بې تکلفه هم دې. (د). هم دا جواب علامه کرمانی هم ذکر کړې دې. (د).

جواب نمبر ۵ حضرت گنگوہی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چې "جميع ماله خمسون" دا مبتدا او خبر دی، ددې معنی ده، "جميع ماله خمسون سهما" کل د ټول مال پنځوس حصې وې او ددې نه پس "الف الف ومائتا الف" دې، دا د هرې حصې قیمت دې چې هره حصه د دولس لاکو روپو وه، اوس چې ۱۲ لکه لره په ۵۰ کښې ضرب ورکړې شی، یعنی $۱۲۰۰۰۰۰ \times ۵۰ = ۶۰۰۰۰۰۰۰$ نو د ټول مال مجموعه شپږ کروړه جوړېږي. او ۵ کروړه ۹۸ لکه کښې صرف دوه لکه فرق پاتې کیږي، لکه په تفصیل کښې خو ۵ کروړه ۹۸ لکه جوړېږي او په اجمال کښې تقریبی طور سره دې ته شپږ کروړه اووئیلې شو او په محاوراتو کښې دغه شان اطلاقات کیږي. (د) لیکن ښکاره خبره ده چې دا جواب به تقریبی وی، تحقیقی به نه وی.

جواب نمبر ۴ بعضې علماؤ یو بل جواب ورکړې دې چې قرض د یو ښځې د حصې یعنی د دولس لاکو دوچند یعنی ۲۴ لکه. په دې صورت کښې به مجموعه شپږ کروړه وی، ۵ کروړه ۹۸ لکه به نه وی، په دې صورت کښې به د اجمال او د تفصیل پوره مطابقت وی، په دې جواب کښې د یو ښځې حصه دوچند کولو سره د قرض مقدار متعین کړې شوې دې. دلته قرض د من قبیل تثنية المركب نه معتبر منلې شوې دې، د یو ښځې حصه چې دولس لکه ده، هغه مرکب ده، ددې دوچند قرض گرځولې شوې دې. بیا جميع ماله مبتدا او خمسون ئې خبر دې، ددې نه مراد خمسون سهما دې او الف الف ومائتا الف د هرې حصې قیمت دې، نو د پنځوس حصو قیمت د ۱۲ لاکو په حساب سره ۲ کروړه جوړېږي، دغه شان په اجمال او تفصیل کښې فرق نه پاتې کیږي. (د) والله اعلم بالصواب

۱ (فتح الباری: ۶/۲۳۳) -

۲ (فتح الباری: ۶/۲۳۴) -

۳ (پورته حواله، وشرح الکرماني: ۱۳/۱۰۳، وعمدة القاری: ۱۵/۵۳) -

۴ (فیض الباری: ۳/۴۶۵، قصة شهادة الزبیر) -

۵ (البدر الساری الی فیض الباری: ۳/۴۶۵ - ۴۶۶. ددې قول خلاصه لاندې ذکر کولې شی

د ښځو حصې ۴۸۰۰۰۰۰ (اته څلویښت لکه)

۸ کښې ضرب ورکړې شو ۸

د ضرب حاصل ۳۸۴۰۰۰۰۰ (درې کروړه، څلور اتیا لکه، دا د قرض او وصیت نه پس

باقی مانده مال دې). [بقیه بر صفحه آئنده]

پورته چې کوم صورتونه بیان کړي شو نو دهغې روایت مطابق دی کوم چې امام بخاری صاحب رحمه الله نقل کړې دي، ورنه ابن سعد په طبقات کښې، ددې نه علاوه نورو حضراتو محدثینو چې کوم روایتونه نقل کړي دي، دهغې په اعتبار سره نور شکلونه جوړیږي (۱).
د حدیث شریف متن سره متعلق یو وضاحت: د باب د حدیث شریف شمار په هغه احادیثو کښې دي، چې په کومو کښې امام بخاری صاحب رحمه الله متفرد دي ځکه چې په اصحاب سته کښې د دوی نه علاوه چاهم دا حدیث نه دي ذکر کړې.
اصحاب الاطراف دا حدیث په مسند زبیر کښې ذکر کړې دي. حالانکه ددې شمار په مسند عبدالله بن زبیر رحمه الله کښې کیدل پکار دی (۲).

د استفهام د جواب ذکر: دلته د حدیث په سند کښې راغلي دي "قلت لابن اسامة: احدثكم هشام بن عروة....؟" چې استفهام او سوال خو ذکر دي لیکن په دې کښې جواب او تصدیق ذکر نه دي ځکه چې ابواسامه د ابواسحاق بن ابراهیم په تپوس باندې "نعم" وغیره نه دي وئیلې، لیکن هم دا حدیث ددې سند سره په مسند د اسحق بن راهویه کښې موجود دي، په هغې کښې کلمه د ایجاب موندلې کیږي چې هغوی د تحدیث په سوال باندې او فرمایل چې او هشام بن عروه ماته دا حدیث اورولې دي (۳) والله اعلم

...بقیه از حاشیه گذشته [

| | | |
|------------------|----------|--|
| د وصیت دریمه حصه | ۱۹۲۰۰۰۰۰ | (یو کروړ، دوه نوی لاکه) |
| حاصل جمع | ۵۷۲۰۰۰۰۰ | (پنځه کروړه، شپږ اويا لاکه) |
| د قرض مقدار | ۲۴۰۰۰۰۰ | (خلویریشته لاکه، دا د من قبیل ثنیة البرکبه دي) |
| ټول مال | ۲۰۰۰۰۰۰۰ | (شپږ کروړه)» |

(۱) حافظ ابن حجر رحمه الله ددې سلسلې تقریباً ټول روایتونه او طرق بیان کړي دي (فتح الباری: ۶/۳۳۳)، په دې ټولو کښې د حضرت زبیر رضی الله عنه د مال په باره کښې ډیر سخت اختلاف دي، څوک څه وائي او څوک څه وائي. البته حافظ رحمه الله په دې ټولو روایتونو کښې تطبیق کولو سره فرمایلې دي چې دلته مقصود د مال په کمیت کښې اختلاف بیانول نه دی، بلکه مقصود دا وینا ده چې د هغوی په ترکه کښې څومره قدرې زیاتوالې اوشو ځکه چې د شهادت په وخت هغوی د خپلو پسماندگانو دپاره څه جائیداد پریخودلې وو او دې سره سره لوڼې قرض هم لیکن الله تعالی په دې کښې برکت پیدا کړو او د مال دومره لویه مجموعه حاصله شوه، لیکي:

وكان القوم أتوا من عدم إلقاء البال على تحرير الحساب، إذ الغرض فيه ذكر الكثرة التي نشأت عن البركة في تركة الزبير إذ خلف دينا كثيراً، ولم يخلف إلا العقار المذكور، ومع ذلك فبورک فيه حتى تحصل منه هذا المال العظيم. "فتح الباری: ۶/۲۳۳".

(۲) عمدة القاری: ۱۵/۴۸، وفتح الباری: ۶/۲۲۸-۲۲۹.

(۳) فتح الباری: ۶/۲۲۹، وشرح القسطلانی: ۵/۲۱۳. دا د حافظ او د هغوی په اتباع کښې د قسطلانی ارشاد دي، البته دا روایت مونږ ته د ډیر زیات تلاش کولو باوجود هم په [بقیه بر صفحه آئنده...]

ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت په دې معنی کښې دې چې حضرت زبير بن العوام رضي الله عنه په خپله ترکه کښې څه کورونه پريخودلې وو، دې سره سره ډير زيات قرض هم، ليکن کوم مال چې ورته د حضرت نبي کریم صلی الله علیه و آله او د خلفاء ثلاثه حضرت ابوبکر، عمر او عثمان رضي الله عنهم سره په غزواتو کښې شرکت کولو سره حاصل شو، هغې مال کښې الله تعالی د دوی په ژوند کښې هم برکت واچوو او د شهادت نه پس هم (له) لکه څنگه چې تاسو په حديث شريف کښې او کتل. هم دا د ترجمې مقصود هم وو چې د غازي په مال کښې د هغه په ژوند کښې او د مرگ نه پس برکت وي. والله اعلم بالصواب

باب (۱۳) إذا بعث الامام رسولا في حاجة،

أو أمره بالمقام، هل يسهم له.

د ترجمه الباب مقصد: امام بخاري رحمته الله دلته دا فرماني چې که د وخت امام يو سړی لره په دارالاسلام کښې د څه ضرورت د وجې نه پريخودلې وي، يا ئې د څه ضرورت د وجې نه يو سړی قاصد او پيغام رسوونکې ليرلې وي نو هغه ته به د غنيمت په مال کښې حصه ملاويږي يا نه؟ (۱)

په دې مسئله کښې اختلاف دې، د ائمه ثلاثه، امام اوزاعي، ابو ثور، نخعي او ليث بن سعد رضي الله عنهم وغيره مسلک دادې چې په دې صورت کښې به دغه قاصد او رسول يا چې په اقامت باندې مامور وي دوی ته به د غنيمت نه حصه نه ملاويږي، هم دې سره يوشان مسئله په باب [۹] الغنيمة لمن شهد الوقعة کښې تيره شوې ده.

① احناف: او د امام ابو حنيفه او د هغوی د ملگرو رضي الله عنهم وينا داده چې دې قسمه خلقو ته به په غنيمت کښې حصه ملاويږي، دوی به د غنيمت په مال کښې شريک وي (۲).

② د ائمه ثلاثه دليل: په دې سلسله کښې د جمهورو مشهور دليل د حضرت عمر رضي الله عنه اثر دې چې "الغنيمة لمن شهد الوقعة" چې په غنيمت کښې به د هغه چا حصه وي څوک چې په جنگ کښې هم شريک شوې وي (۳).

...بقية از حاشیه گذشته [مسند اسحاق کښې ملاؤ نه شو، بلکه دلته د حافظ نه تسامح شوې ده ځکه چې امام ابن راهويه ددې سند سره حديث د افک هم نقل کړې دې، چې د هغې په آخره کښې واقعي کلمه د ايجاب موجوده ده، فاقربه ابو اسامة، وقال: نعم. مسند اسحاق بن راهويه، حديث رقم (۱۱۷۷) -

(۱) فتح الباری: ۶/۲۳۳. وشرح القسطلانی: ۵/۲۱۳. وعمدة القاری: ۱۵/۴۸ -

(۲) عمدة القاری: ۱۵/۵۴ -

(۳) شرح ابن بطلال: ۵/۲۹۳. والکوثري الجاری: ۶/۱۱۴ -

(۴) ارشاد الساری: ۵/۲۱۴ -

د باب الغنیمه لمن شهد الوقعة والا مسئله کښې امام بخاری رحمہ اللہ د ائمه ثلاثه سره یو شان وو، او په دې مسئله کښې هغوی د احنافو هم مسلک معلومېږي.

د احنافو دلیل د احنافو دلیل د باب حدیث شریف دې، په کوم کښې چې راغلي دي چې حضرت عثمان رضی اللہ عنہ ته نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم په غزوه بدر کښې د نه شریکیدو باوجود په غنیمت کښې حصه ورکړې وه، ځکه چې د هغوی د نه شرکت وجه د حضرت نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم ممانعت وو چې تاسو دلته د خپلې بی بی پرورش او کړئ.

دغه شان اهل سیر ذکر کړې دي چې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم حضرت سعید بن زید وطلحه بن عبیدالله رضی اللہ عنہما هغه لارې ته لیرلې وو کومه لاره چې د شام طرفته تلې وه، مقصد جاسوسی کول وو، دا دواړه حضرات د غزوه بدر د ختمیدو نه پس راوړسیدل نو نبی صلی اللہ علیہ وسلم دې دواړو حضراتو ته په غنیمت کښې حصه ورکړه، دې دواړو او وئیل چې حضرت! د اجر نه خو محرومه پاتې شو؟ نو نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چې اجر به هم ملاؤ شی.

د جمهورو له طرفه جواب: جمهورو د حضرت عثمان رضی اللہ عنہ د حدیث دا جواب ورکړو چې دا د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم خصوصیت دې. یا نبی صلی اللہ علیہ وسلم هغوی ته په خمس کښې ورکړې وه.

(۱) شرح ابن بطلال: ۲۹۳/۵، والکوثی الجاری: ۱۱۴/۶، وعمدة القاری: ۵۴/۱۵)۔

- (۲) پورته حواله جات. علامه عینی د ابن اسحاق په حواله سره او ابن عبد البر رحمہما اللہ د هغه صحابه کرامو رضی اللہ عنہم نومونه شمارلي دي، کوم چې په غزوه بدر کښې په مختلفو وجوہاتو سره شریک شوي نه وو، لیکن هغوی ته حصه ورکړې شوې وه، د هغوی تعداد تقریباً لس دي، چې لاندې ذکر کولې شی:
- ① عثمان بن عفان رضی اللہ عنہ، د شرکت نه کولو وجه د باب په حدیث شریف کښې ذکر ده.
 - ② ③: طلحه بن عبید الله وسعيد بن زيد بن نفيل، د جاسوسی دپاره د شام طرفته لیرلې شوي وو.
 - ④: ابولبابه بشير بن عبد المنذر: چې کله د مکې مکرمې نه د مشرکینو د روانیدو پته نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم ته اولگیده نو دوی ئې د مقام روحاء نه واپس کړل او د مدینې منورې د عامل په حیثیت سره ئې مقرر کړل.
 - ⑤: حارث بن حاطب بن عبید، دوی هم د لارې نه واپس کړې شوي وو.
 - ⑥: حارث بن صمه. دوی ته د روحاء په مقام کښې زخم لگیدلې وو، ددې وجې نه واپس شو.
 - ⑦: خوات بن جبير. په غزوه کښې شریک نه وو.
 - ⑧: ابو الضیاح بن ثابت بن نعمان. په لاره کښې د دوی یو خپه په کانړۍ باندې د لگیدو په وجه ډیره زخمی شوې وه، ددې وجې نه واپس شو.
 - ⑨: عاصم بن عدی بن الجد بن العجلان. دوی هم غزوه کښې د شرکت کولو دپاره راوتلي وو لیکن نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم دوی واپس کړل.
 - ⑩: سعد بن مالک بن خالد الساعدي. دوی د غزوې دپاره پوره تیاري کړې وو لیکن وفات شو. یو قول دادې چې د روحاء په مقام باندې دوی وفات شو. دا د مشهور صحابی حضرت سهل بن سعد رضی اللہ عنہ والد صاحب دې.
- نو نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم دې ټولو ته د غنیمت په مال کښې حصه ورکړه او د اجر خوشخبري ئې هم ورکړه.
- او گوري عمدة القاری: ۵۴/۱۵، والسيرة النبوية لابن هشام: ۶۷۸/۲-۷۰۶، باب: من حضر بدرًا من المسلمين والاستيعاب: ۳۶۱/۱، باب سعد، رقم (۹۵۲) والله اعلم)۔
- (۳) عمدة القاری: ۵۵/۱۵، والکوثی الجاری: ۱۱۴/۶)۔

د احنافو له طرفه جمهورو ته جواب: د حضرت عثمان رضي الله عنه معامله په خصوصيت باندې معمول کول ددې وجې نه صحيح نه دی چې د خصوص دپاره د خه دليل کيدل ضروري دی او دلته دليل نشته.

او دا وينا چې نبي صلى الله عليه وسلم هغوی ته د خمس نه حصه ورکړې وه، نو دا د غزوه حنين واقعده، د بدر واقعده نه ده، په غزوه بدر کسې حصه ورکړې شوې وه، چې په هغې باندې د باب د حديث شريف دا الفاظ دلالت کوي، "فقال له النبي صلى الله عليه وسلم: إن لك أجر رجل ممن شهد بدرًا وسهبه".

بهر حال د دليلونو په رنړا کسې دلته د احنافو مذهب راجح معلومېږي. والله اعلم بالصواب
 ۲۹۶۲: (۲) حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ مُوَهَّبٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - قَالَ إِنَّمَا تَغَيَّبَ عُثْمَانُ عَنْ بَدْرٍ، فَإِنَّهُ كَانَتْ تَحْتَهُ بِنْتُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَكَانَتْ مَرِيضَةً. فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «إِنَّ لَكَ أَجْرَ رَجُلٍ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا وَسَهْبَةً». [۳۴۹۵، ۳۸۳۹]

رجال الحديث

- ① موسی: دا موسی بن اسماعیل تبو ذکی رضي الله عنه دی.
- ② ابو عوانه: دا ابو عوانه وضاح بن عبد الله الیشکری رضي الله عنه دی. ددې دواړو حضراتو تذکره اجمالاً د "بدء الوسی" په "الحديث الرابع" کسې تیره شوې ده. (۲).
- ③ عثمان بن موهب: دا عثمان بن عبد الله بن موهب الاعرج تمیمی قرشي رضي الله عنه دی. (۴). خبرداري: ابو علی جیانی رضي الله عنه لیکي چې د اصیلی په نسخه کسې د عثمان بن موهب په خائي عمرو بن عبد الله مذکور دي چې غلط دي، صحيح عثمان بن موهب دي. (۵).

(۱) العدة: ۵۵/۱۵. دي مسئلي سره متعلق خه تفصيلات وړاندې په باب الغنيمه لمن شهد الوقعة کسې تیر شوې دي.

(۲) قوله: عن ابن عمر رضي الله عنهما: الحديث: اخرجه البخاري ايضا، كتاب فضائل اصحاب..... باب مناقب عثمان بن عفان، رضي الله عنه..... رقم (۳۶۹۸). و باب مناقب علي بن ابي طالب..... رقم (۳۷۰۴). و كتاب المغازی، باب قول الله تعالى: (ان الذين تولوا منكم يوم التقى الجمعان.....)، رقم (۴۰۶۶). و كتاب التفسير، باب (وقاتلوه حتى لا تكون فتنة ويكون.....)، رقم (۴۵۱۳ _ ۴۵۱۴). و باب (وقاتلوه حتى لا تكون فتنة)، رقم (۴۶۵۰ _ ۴۶۵۱)، و كتاب الفتن، باب قول النبي صلى الله عليه وسلم: الفتنة من قبل المشرق، رقم (۷۰۹۵) و الترمذي، كتاب المناقب، باب مناقب عثمان بن عفان رضي الله تعالى عنه، رقم (۳۷۰۹).

(۳) كشف الباري: ۴۳۳/۱ _ ۴۳۴ _

(۴) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الزكاة، باب وجوب الزكاة _

(۵) عمدة القاري: ۵۴/۱۵ _

۴ ابن عمر: حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما حالات په کتاب الایمان، "باب قول النبی صلی الله علیه وسلم: "بنی السلام علی خمس" کښې تیر شوې دی. (۱).

قوله: قال: إنما تغيب عثمان عن بدر، فإنه كانت تحته بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم وكانت مريضة، فقال له النبي صلى الله عليه وسلم: إن لك أجر

رجل من شهد بدر وسهمه: حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما فرمائی چې حضرت عثمان رضی اللہ عنہ د غزوہ بدر نه غائب وو ځکه چې د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم لور مبارکه د هغوی سره د نکاح په عقد کښې وه او هغه بیمار وه نو نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم هغوی ته او فرمائیل چې ستاسو دپاره د بدری صحابی په شان اجرت او په غنیمت کښې حصه ده.

د باب د حدیث شریف پس منظر: ددې حدیث مبارک تعلق اصل کښې فضائلو سره دي، البته امام بخاری رحمہ اللہ د خپلې مدعی ثابتولو دپاره دا دلته نقل کړې دي، هغه هم اختصار سره، تفصیلی روایت مؤلف علیه الرحمة په فضائل اصحاب النبی او مغازی وغیره (۲) کښې نقل کړې دي، چې د هغې خلاصه داده:

يو مصری سرې د حج دپاره راغلي وو او د حضرت عثمان رضی اللہ عنہ په مخالفینو کښې وو، هغه د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما په وړاندې په حضرت عثمان رضی اللہ عنہ باندې درې اعتراضونه او کړل، ابن عمر رضی اللہ عنہ اول خو دده د مزید کتلو دپاره اول دده تائید او کړو او بیا ئې ورته د درې واړو اعتراضاتو جوابونه ورکړل.

د هغه اولنی اعتراض دا وو چې حضرت عثمان د غزوہ احد په ورځ تختیدلې وو، حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما ددې خبرې تصدیق او کړو، بیا ئې وضاحت او کړو چې د الله تعالی له طرفه ددې مسئلې معافی شوې ده، ددې وجې نه مونږ ته په دې مسئله کښې د خبرې کولو حق نشته، د الله تعالی ارشاد دي: (ولقد عفا الله عنهم) (۳) نو دا معامله اوس ختمه شوه.

دویم اعتراض د هغه دا وو چې حضرت عثمان رضی اللہ عنہ د جنگ بدر نه هم غائب وو. حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما ددې وجه دا بیان کړه چې د حضرت عثمان رضی اللہ عنہ په عقد کښې د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم لور وه او د بدر په موقع باندې هغه بیمار وه نو نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم هغوی ته د خپلې بی بی د خیال ساتلو دپاره په مدینه منوره کښې د اوسیدلو دپاره او فرمائیل او دا ئې او فرمائیل چې تاسو ته به هغه اجر و ثواب او په غنیمت کښې هغومره حصه ملاویږي څومره چې په جنگ کښې یو شریک مجاهد ته ملاویږي. نو ددې وجې نه هغوی حکماً بدری دی.

ددې سړی دریم اعتراض دا وو چې حضرت عثمان رضی اللہ عنہ د بیعت رضوان نه وروستو پاتې شوې وو. ددې جواب دادې چې که د مکې مکرمې په وادی کښې د حضرت عثمان رضی اللہ عنہ نه

(۱) کشف الباری: ۱/۶۳۷.

(۲) اوگوری، صحیح بخاری، کتاب فضایل اصحاب، رقم (۳۶۹۸)، و کتاب المغازی، رقم (۴۰۶۶).

(۳) آل عمران: ۱۵۵.

زیات عزتمند بل څوک سرې وو نو نبی کریم ﷺ به هغه لیرلې وو (چونکه دوی د ټولو نه زیات عزتمند وو، ددې وجې نه نبی کریم ﷺ د دوی انتخاب او فرمائیلو). هرکله چې حضرت عثمان رضی الله عنه مکرمني ته اورسیدلو نو د بیعت رضوان واقعه پېښه شوه، حضرت عثمان رضی الله عنه چونکه په موقع باندې په خپله موجود نه وو، ددې وجې نه نبی کریم ﷺ خپل نبی لاس مبارک اوچت کړو او وې فرمائیل چې "دا د عثمان لاس دې". بیا ئې هغه په دویم لاس باندې کیخودلو او وې فرمائیل چې "دا د عثمان بیعت دې".

حضرت عبدالله بن عمر رضی الله عنهما ددې سرې د دریو وارو اعتراضاتو د جوابونو ورکولو نه پس او فرمائیل چې "اوس خپل ځان سره دا تفصیل یوسه". د باب د حدیث شریف د بعضې حصو تشریح: تغیب د باب تفعل نه دې، دې کښې د تکلف معنی پرته ده، مطلب دادې چې حضرت عثمان رضی الله عنه د خپلې بی بی د خیال ساتلو په غرض سره د غزوه بدر نه غائب وو، قصداً غائب نه وو (۱).

د بنت رسول الله ﷺ نه مراد حضرت رقیه رضی الله عنها ده. حضرت رقیه رضی الله عنها: دا د نبی کریم ﷺ لور مبارکه حضرت ام عبدالله رقیه بنت سید البشر ﷺ محمد بن عبدالله الهاشمیه رضی الله عنها ده. د دوی مور بی بی حضرت خدیجه الکبریٰ رضی الله عنها ده (۲).

د مشهور قول مطابق دا د نبی کریم ﷺ درمیانه لور ده (مینځنۍ)، ابن عبدالبر رضی الله عنه فرمائی چې په دې کښې خو څه اختلاف نشته چې حضرت زینب رضی الله عنها د نبی کریم ﷺ د ټولو نه مشره لور ده، البته رقیه، فاطمه او د ام کلثوم رضی الله عنها باره کښې اختلاف دې، د اکثر و قول دادې چې مینځ کښې حضرت رقیه، فاطمه د دوی نه وړو کې او ام کلثوم رضی الله عنها د ټولو نه کشره ده (۳). حضرت رقیه رضی الله عنها اول د ابولهب د ځوی عتبه په نکاح کښې وه، دا خبره د هجرت نه د وړاندې زمانې ده، البته کله چې سورة الهم نازل شو نو ابولهب سخت خفه شو او خپل ځوی ته ئې اووئیل چې که تا دده (محمد ﷺ) لورته طلاق ورنه کړو نو زما او ستا به هیڅ قسم تعلق نه وی نو عتبه دې ته د دخول نه مخکښې طلاق ورکړو، بیا دا د حضرت عثمان رضی الله عنه په نکاح کښې راغله، د هغوی نه ئې یو ځوی عبدالله پیدا شو، هم ددې ځوئی طرفته کنیت کولو سره به حضرت عثمان رضی الله عنه په ابو عبدالله باندې بللې شو (۴).

حضرت رقیه رضی الله عنها ته خپل خاوند سره د حبشې طرفته دواړو هجرتونو کښې د ملګرتیا شرف

(۱) عمدة القاری: ۵۴/۱۵.

(۲) الاصابه: ۴/۳۰۴، سیر اعلام النبلا: ۲/۲۰.

(۳) الاستیعاب بهامش الاصابه: ۴/۲۹۹، والاصابه: ۴/۳۰۴.

(۴) پورته حواله جات، وسیر اعلام النبلا: ۲/۲۵۱.

او سعادت حاصل دي. (۱).

هم په حبشه کښې د دوی ځوي حضرت عبدالله وفات شو، دغه وخت ددې هلک عمر شپږ کاله وو. (۲).

بيا حضرت رقيه (رضي الله عنها) د خپل خاوند حضرت عثمان نه پس مدينې منورې ته هجرت اوکړو، هلته د بدر نه څه موده وړاندې دوی د خسري په بيماري کښې مبتلا شو، ددې وجې نه حضرت عثمان (رضي الله عنه) ته نبی کریم (صلي الله عليه وسلم) د دوی د عيادت او خيال ساتلو دپاره په مدينه منوره کښې د اوسيدلو حکم او فرمائيلو، هم په دې مرض کښې دا وفات شوه او مسلمانان دغه وخت په بدر کښې وو. (۳).

حضرت عثمان (رضي الله عنه) چې کوم وخت ددې په دفن کولو کښې مشغول وو، نو اتفاقاً دغه وخت حضرت زيد بن حارثه (رضي الله عنه) په غزوه بدر کښې د فتحې خوشخبري مدينې منورې ته راوړلو دپاره راوړسيدو، حضرت اسامه بن زيد (رضي الله عنه) هم د دفن کولو په دې عمل کښې شريک وو، هشام بن عروه د خپل پلار نه نقل کوي:

”تخلف عثمان واسامة بن زيد عن بدر، فبيناهم يدفنون رقية سبعم عثمان تكبيراً، فقال: يا اسامة، ما هذا؟ فنظروا، فاذا زيد بن حارثة على ناقه رسول الله (صلي الله عليه وسلم) الجداء، بشيراً بقتل المشركين يوم بدر“ (۴).

د حضرت رقيه (رضي الله عنها) وفات په دويمه هجري کښې او شو، د دوی د وفات نه پس نبی کریم (صلي الله عليه وسلم) په ربيع الاول دريمه هجري کښې خپل لور حضرت ام کلثوم (رضي الله عنها) حضرت عثمان (رضي الله عنه) ته په نکاح ورکړه او وې فرمائيل چې ”که زما لس لونړه وې نو ما به ټولې عثمان ته په نکاح ورکړې وې“ (۵). ددې وجې نه حضرت عثمان ته ذوالنورين وييلې شې. رضي الله عنهم وأرضاهم ترجمه الباب سره د حديث شريف مناسبت: د ترجمه الباب دويم جزء سره خو د حديث شريف مناسبت واضح دې چې حضرت عثمان (رضي الله عنه) د نبی کریم (صلي الله عليه وسلم) په هدايت باندې د خپلې بي بي عيادت دپاره د غزوې نه پاتې شوې وو، ددې باوجود دوی ته اجر او غنيمت دواړه ملاؤ شو. ددې تعلق د ترجمې د الفاظو ”وامرأة بالبقام“ سره دې (۶).

(۱) پورته حواله جات).

(۲) الاستيعاب بهامش الاصابة: ۴/۳۰۰، والاصابة: ۴/۳۰۴، وسير اعلام النبلا: ۲/۲۵۱).

(۳) الاصابة: ۴/۳۰۴-۳۰۵، وسير اعلام النبلا: ۲/۲۵۱، وطبقات ابن سعد: ۸/۳۶، والاستيعاب بهامش الاصابة: ۴/۳۰۱).

(۴) الاصابة: ۴/۳۰۵، والاستيعاب بهامش الاصابة: ۴/۳۰۲، وكذا انظر المعجم الكبير: ۲۲/۴۳۵، رقية بنت رسول الله صلى، رقم (۱۰۵۸).

(۵) الطبقات الكبرى: ۸/۳۸، وسير اعلام النبلا: ۲/۲۵۲-۲۵۳، ومجمع الزوايد: ۹/۲۱۷، والمعجم الكبير: ۲۲/۴۳۶، رقم (۱۰۶۱).

(۶) عمدة القاري: ۱۵/۵۴، والكوثر الجارى: ۶/۱۱۳).

لیکن د ترجمې اولنی جزء یعنی د "بعث الامام رسولاً فی حاجة" د اثبات دپاره مؤلف رحمته الله د حدیث وغیره نه دې ذکر کړې؟
ددې دوه جوابونه دي:

یو خو دا چې هغوی دا مسئله د اقامت والا په مسئله باندې قیاس کړې ده، چې هلته څنگه د حاکم حکم موجود دي، نو دغه شان د قاصد لیږل هم د وخت د حاکم په ذریعې سره کیږي. ددې وجې نه قاعده به دا وی چې که د وخت امام یو کس لره د څه غرض د وجې نه په غزوه کښې د شرکت کولو نه منع کړی او بل څه کار ورته اوسپاری نو د هغه به هم په غنیمت کښې حصه وی.

دویم دا چې حدیث خو موجود وو، لیکن د امام بخاری رحمته الله د شرط مطابق پوره نه وو، ددې وجې نه هغوی د ارسال رسل لاندې څه حدیث شریف ذکر نه کړو.

او دا حدیث هم هغه دې کوم چې اوس مخکښې تیر شو چې نبی کریم صلی الله علیه و آله حضرت طلحه بن عبیدالله او سعید بن زید رضی الله عنهما لره د شام لارې طرفته د جاسوسۍ دپاره لیږلې وو، دغه شان دا دواړه حضرات په غزوه بدر کښې شریک نه شو، ددې باوجود نبی صلی الله علیه و آله دوی ته غنیمت ورکړو او د اجر و ثواب خوشخبری ئې هم ورکړه.

①۵ باب: وَمِنْ الدَّلِيلِ عَلَى أَنَّ الْخُمْسَ لِنَوَائِبِ الْمُسْلِمِينَ

مَا سَأَلَ هَوَازِنُ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بِرِضَاعِهِ فِيهِمْ فَتَحَلَّلَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ. (۱۵) وَمَا كَانَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَعِدُّ النَّاسَ أَنْ يُعْطِيَهُمْ مِنَ الْفَيْءِ وَالْأَنْفَالِ مِنَ الْخُمْسِ، وَمَا أُعْطِيَ الْأَنْصَارُ، وَمَا أُعْطِيَ جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ تَمْرَ خَيْبَرَ.

د ترجمه الباب مقصد: دا باب ددې خبرې په بیان کښې دې چې خمس به د عامو مسلمانانو په ضرورتونو کښې خرچ کولې شی، ددې دلیل دا دي چې قبيله بنو هوازن نبی صلی الله علیه و آله ته درخواست کړې وو چې زموږ نه اخستلې شوې مال غنیمت مونږ ته واپس کړې شی ځکه چې د نبی صلی الله علیه و آله د قبيله بنو هوازن سره رضاعی تعلق دي، نو نبی کریم صلی الله علیه و آله صحابه کرامو رضی الله عنهم ته او فرمائیل چې هغوی په غنیمت کښې د خپل خپل حق نه لاس وینځي (او غنیمت واپس کړي). دغه شان ددې دلیل دا هم دي چې نبی کریم صلی الله علیه و آله به مختلف صحابه کرامو رضی الله عنهم سره دا وعده فرمائیل چې زه به تاسو ته په مال فئ، غنیمت کښې درکوم، کوم چې د خمس نه حاصل شی. ددې نه علاوه نبی صلی الله علیه و آله چې انصارو ته څه ورکړل او حضرت جابر بن عبدالله رضی الله عنه ته ئې چې د خیبر کومې کهجورې ورکړې نو دا هم ددې خبرې دلیل دي چې د خمس مصرف د عامو مسلمانانو ضرورتونه هم دي.

(۱) (الکوثر الجاری: ۶/۱۱۴) -

(۲) پورته حواله، والاستیعاب لابن عبدالبر بهامش الاصابه: ۱/۴۵۰ - ۴۶۰، باب طلعة، رقم (۱۲۷۹) -

د ترجمه الباب نحوی تعلیل: باب مرفوع دې او منون دې (یعنی تنوین لری) د خبریت د وجې نه، د دې مبتدا محذوف ده چې هذا د(۱)

ومن الدلیل. المسلمین پورې خبر مقدم دې، ما موصوله او معطوف علیها ده او "وماکان..... وماعطی الانصار، وماعطی جابرین عهدالله....." دا ټول معطوف دی، بیا مبتدا ده (۲).

په ما سئل هوازن النبی صلی الله علیه وسلم کښې هوازن د فاعلیت د وجې نه مرفوع او النبی د مفعول به کیدو د وجې نه منصوب دې (۳).

د هوازن نه مراد قبيله ده لیکن دلته ددې په بعضې کسانو باندې ددې اطلاق مجازاً کړې شوې دې او په برضاعه کښې بآء سببیه ده، یعنی بسبب رضاعه (۴).

واو عاطفه یا استفتاحیه: امام بخاری رحمته الله وړاندې اته بابونه مخکښې یو باب "ومن الدلیل علی أن الخمس لنوائب رسول الله صلی الله علیه وسلم....." قائم کړې وو، د هغې نه پس ئې دویم باب دا قائم کړې دې، "ومن الدلیل علی أن الخمس لنوائب المسلمین....." دریم باب وړاندې راځی، "ومن الدلیل علی أن الخمس للامام، وأنه يعطى....." دا درې بابونه دی.

اوس د حافظ رحمته الله رائي خو داده چې "ومن الدلیل" کښې واو عاطفه دې، ددې معطوف علیه هغه تیر شوې باب دې کوم چې د اتو بابونو نه وړاندې ذکر شوې دې او دا باب معطوف دې او یو معطوف وړاندې راځی (۵). علامه عینی رحمته الله فرمائی چې دا د دلیل نه بغیر یو دعوی ده، دا هم څه خبره ده چې په معطوف او معطوف علیه کښې دومره فاصله وی، د احادیثو سره سره دومره ډیر بابونه مینځ کښې فاصله جوړه شی؟

که د دوی خبره اومنلې هم شی چې دلته واو راغلې دې نو ددې جواب دا دې چې دا واو عاطفه نه دې، اکثر وختونو کښې داسې کیږي چې واو استعمال کړې شی او هغه په څه څیز باندې عطف نه وی، ددې وجې نه به دا اووئیلې شی چې دا واو د استفتاح دې، هم دا خبره د مشرانو استاذانو نه اوریدلې شوې ده (۶). علامه قسطلانی رحمته الله په دې مسئله کښې د علامه عینی رحمته الله ملگرتیا کوی (۷).

(۱) عمدة القاری: ۵۵/۱۵، وفتح الباری: ۲۳۸/۶، وارشاد الساری: ۲۱۴/۵.

(۲) عمدة القاری: ۵۵/۱۵، وارشاد الساری: ۲۱۴/۵.

(۳) پورته حواله جات، وفتح الباری: ۲۳۸/۶.

(۴) پورته حواله جات.

(۵) فتح الباری: ۲۳۸/۶.

(۶) عمدة القاری: ۵۵/۱۵.

(۷) شرح القسطلانی: ۲۱۴/۵.

د ترجمه الباب مقصد: اصل خبره دلته داده چې امام بخاری رحمته الله علیه هم یو خبره بیانوی چې خمس به د مسلمانانو په ضروریاتو کښې خرج کیږي، نبی کریم صلی الله علیه و آله به دهغې د تقسیم دمه دار وی، چې هغې لره نبی کریم صلی الله علیه و آله په خپلو ضروریاتو کښې هم د ضرورت په اندازه باندې خرج کولې شی او د دوی مبارک نه پس چې کوم امام وی هغه به د دوی نائب وی، هغه هم د خپل ضرورت مطابق ددې نه اخستلې شی، ددې نه علاوه خمس به هغه د مسلمانانو په ضرورتونو او حاجتونو کښې خرج کوی. (۱)

د تعلیقاتو مقصد: بیا په دې خان پوهه کړئ چې مصنف رحمته الله علیه د خپلې خبرې ثابتولو دپاره د باب لاندې د احادیثو نه علاوه د ترجمه الباب جزء جوړولو سره څلور تعلیقات هم ذکر کړي دي، ددې ټولو نه د هغه مدعی ثابتیږي چې خمس به د عامة المسلمين په ضرورتونو وغیره کښې خرج کیږي.

د تعلیقاتو موصولاً تخریج: د اولنې تعلیق قصه هوازن سره ده، کومه چې مؤلف رحمته الله علیه په دې باب کښې مسنداً ذکر کړې ده، ددې نه علاوه په کتاب الهبه... وغیره کښې (۲) دویم تعلیق د وعدو سره متعلق دي چې نبی کریم صلی الله علیه و آله د مختلفو صحابه کرامو رضی الله عنهم سره په مختلفو وختونو کښې دا وعده کړې وه چې زه به تاسو ته د مال فئ نه درکوم، په دې باره کښې هم احادیث په دې باب کښې مذکور دي. (۳) د دریم تعلیق تعلق د حضرات انصار رضی الله عنهم سره دي چې نبی کریم صلی الله علیه و آله هغوی ته په مختلفو مقامونو کښې ورکړه کړې وه، په هغې کښې د یو واقعي تخریج حضرت مؤلف رحمته الله علیه په کتاب الهبه وغیره (۴) کښې کړې دي. (۵)

او څلورم تعلق د حضرت جابر رضی الله عنه واقعي سره متعلق دي، یعنی خیبر کښې چې هغوی ته کومې کهجورې ورکړې شوې وې. دا واقعه امام ابوداؤد رحمته الله علیه موصولاً په خپل سنن کښې ذکر کړې ده، چې په هغې کښې د واقعي پوره تفصیل دي، امام بخاری رحمته الله علیه چې په دې باب

(۱) فتح الباری: ۶/۲۳۸.

(۲) امام بخاری رحمته الله علیه دا حدیث ددې باب نه علاوه په مختلفو مقامونو کښې موصولاً نقل کړې دي، اوگوری، کتاب الوکالة، رقم (۲۳۰۸، ۲۳۰۷)، وکتاب العتق، رقم (۲۵۰۴، ۲۵۳۹)، وکتاب الهبة، رقم (۲۵۴۸، ۲۵۸۳)، وورقم (۲۶۰۸، ۲۶۰۷)، وکتاب المغازی، رقم (۴۳۱۹، ۴۳۱۸) ددې نه علاوه امام ابوداؤد رحمته الله علیه هم دا حدیث په خپل سنن کښې موصولاً روایت کړې دي، اوگوری، کتاب الجهاد، باب فی فدا الاسیر بالمال، رقم (۲۶۹۳).

(۳) فئ دپاره اوگوری، ددې باب د حضرت جابر رضی الله عنه حدیث مبارک، رقم (۳۱۳۷)، وکتاب الجزية، رقم (۳۱۲۴) او غنیمتونو سره متعلق حدیث د ابن عمر رضی الله عنهما دي کوم چې په باب کښې ذکر دي.

(۴) هو من حدیث انس بن مالک، انظر کتاب الهبة، باب فضل المنیحة، رقم (۲۶۳۰)، اردو کتاب الخمس، باب کیف قسم النبی صلی الله علیه و آله قریظة والنضیر..... رقم (۳۱۲۸)، وکتاب المغازی، باب حدیث بنی النضیر، رقم (۴۰۳۰)، وباب مرجع النبی صلی الله علیه و آله من الاحزاب..... رقم (۴۱۲۰).

(۵) تغلیق التعلیق وتعلیقاته: ۳/۴۷۶.

کښې شپږم نمبر کوم حديث مبارک ذکر کړې دې، نو دا د هغه حديث يو حصه ده. (۱)
د مذکورې تعليقاتو ترجمې سره مناسبت: د مذکورې څلورو واړو تعليقاتو مناسبت ترجمې سره
بالکل واضح دې، چې دعوه ددې خبرې وه چې د خمس مصرف صرف د مسلمانانو
ضروريات او حاجات وغيره دي او په دې تعليقاتو کښې ددې دعوي دليل دې چې خمس به
د مسلمانانو په ضرورتونو وغيره کښې د موقع محل مناسب خرچ کولې شي.
د باب اولي حديث: بيا په دې ځان پوهه کړې چې امام بخاري رحمه الله په دې باب کښې ټول اووه
احاديث ذکر کړې دي، چې په هغې کښې اولي حديث د حضرت مسور بن مخرمه رضي الله عنه او
مروان بن حکم نه روايت دې.

۲۹۲۳: (۱) حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَفِيرٍ قَالَ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ
قَالَ وَدَعَمَ عُرْوَةُ أَنَّ مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ وَمَسُورَ بْنَ هَازِمٍ أَخْبَرَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله
عليه وسلم- قَالَ حِينَ جَاءَهُ وَقَدْ هَوَّازَنَ مُسْلِمِينَ، فَسَأَلُوهُ أَنْ يَرُدَّ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَسَبَبَهُمْ
فَقَالَ هُمْ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- «أَحَبُّ الْحَدِيثِ إِلَيَّ أَصْدَقُهُ، فَاخْتَارُوا أَحَدِي
الطَّائِفَتَيْنِ إِمَّا السَّبِيَّ وَإِمَّا الْمَالَ، وَقَدْ كُنْتُ اسْتَأْنَيْتُ بِهِمْ». وَقَدْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله
عليه وسلم- انْتَهَرَ آخِرَهُمْ بِضَعْعِ عَشْرَةِ لَيْلَةٍ، حِينَ قَفَلَ مِنَ الطَّائِفِ، فَلَمَّا تَبَيَّنَ هُمْ
أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- غَيَّرَ إِذْ إِلَيْهِمْ إِلَّا أَحَدِي الطَّائِفَتَيْنِ. قَالُوا فَإِنَّا نَخْتَارُ سَبِيَّنَا
، فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- فِي الْمُسْلِمِينَ فَأَتْنِي عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ
«أَمَّا بَعْدُ، فَإِنَّ إِخْوَانَكُمْ هَؤُلَاءِ قَدْ جَاءُونَا تَائِبِينَ، وَإِنِّي قَدْ رَأَيْتُ أَنْ أَرُدَّ إِلَيْهِمْ سَبَبَهُمْ، مَنْ
أَحَبَّ أَنْ يُطِيبَ فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يَكُونَ عَلَى حَظِّهِ حَتَّى نُعْطِيَهُ إِيَّاهُ مِنْ
أَوَّلِ مَا يَفِيءُ اللَّهُ عَلَيْنَا فَلْيَفْعَلْ». فَقَالَ النَّاسُ قَدْ طَبَّبْنَا ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ هُمْ. فَقَالَ
هُمُ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- «إِنَّا لَا نَذَرِي مَنْ أَذِنَ مِنْكُمْ فِي ذَلِكَ مِمَّنْ لَمْ يَأْذُنْ
، فَارْجِعُوا حَتَّى يَرْفَعَ إِلَيْنَا عُرْفَاؤُكُمْ أَمْرَكُمْ» فَرَجَعَ النَّاسُ، فَكَلَّمَهُمْ عُرْفَاؤُهُمْ، ثُمَّ رَجَعُوا
إِلَى رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- فَأَخْبَرُوهُ أَنَّهُمْ قَدْ طَبَّبُوا فَأَذْنُوا. فَهَذَا الَّذِي بَلَّغْنَا عَنْ سَبِيٍّ
هَوَّازَنَ. (ر: ۲۱۸۴)

رجال الحديث

① سعيد بن عفير: دا سعيد بن كثير بن عفير رضي الله عنه دې. د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب من
يرد الله به خيرا....." کښې تيره شوې ده. (۲).

(۱) پورته حواله: ۴۷۶/۳-۴۷۷، وسنن ابی داود، کتاب الاقضية، باب فی الوكالة، رقم (۳۶۳۲).
(۲) قوله: إن مروان..... ومسور..... الحديث، من تخريجہ فی الوكالة، باب اذا وهب شيئا لو كيل او.....
(کشف الباری: ۲۷۴/۳).

- ② الیث: دا مشهور محدث لیث بن سعد فهمی رحمہ اللہ دی۔
- ③ عقیل: دا عقیل بن خالد رحمہ اللہ دی۔
- ④ ابن شہاب: دا محمد بن مسلم بن عبید اللہ بن شہاب زہری رحمہ اللہ دی۔ ددی درې وارو حضراتو تذکره د "بده الوسی" په "الحديث الثالث" کښې بیان کړې شوي ده (۱)۔
- ⑤ عمرو: دا مشهور تابعی حضرت عمرو بن زبیر رحمہ اللہ دی۔ د دوی مختصر حالات د "بده الوسی" په "الحديث الثاني" کښې تیر شوي دي (۲)۔
- ⑥ مروان بن الحکم: دا مروان بن حکم اموی رحمہ اللہ دی (۳)۔
- ⑦ المسور بن مخرمه: دا مشهور صحابی د صحابی خوئی حضرت مسور بن مخرمه رحمہ اللہ دی (۴)۔
- خبرداري: ددی حدیث تشریح په مغازی کښې د غزوہ حنین لاندې بیان کړې شوي ده (۵)۔
- ترجمة الباب او د باب حدیث: دا حدیث شریف په خپل مطلب کښې بالکل واضح دی، البته په ترجمه الباب کښې ذکر کړې شوي یو اهم جزئیہ دلته ذکر نه ده، هغه دا چې په ترجمه کښې مؤلف رحمہ اللہ دا فرمائیلي وو چې قبیلہ بنو هوازن د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم رضاعت سبب او ګرځو او خپل درخواست ئې پیش کړو او په حدیث شریف کښې ددی رضاعت هیڅ ذکر نشته۔
- ددې د جواب د کتلو نه مخکښې په دې ځان پوهه کړئ چې د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د مرضعې حضرت حلیمہ سعدیہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا تعلق د بنو سعد سره وو، چې د قبیلہ بنو هوازن یو شاخ دی (۶) نو امام بخاری رحمہ اللہ د رضاعت ذکر دلته خو اونه کړو لیکن په خپل تاریخ کښې ئې ددی تفصیلی ذکر کړې دی، ددی نه علاوه د تاریخ نورو امامانو هم ددی ذکر کړې دی (۷)۔
- لکه د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د رضاعت سره متعلق دا حدیث شریف ابن اسحاق په مغازی کښې د عمرو بن شعيب عن ابيه (شعيب) عن جداه (عبد الله بن عمرو بن العاص) رضی اللہ تعالیٰ عنہما د طریق نه نقل کړې دی او ددی دویم طریق زهیر بن صرو الجمشی رحمہ اللہ دی، کوم چې په طبرانی کښې ذکر دی۔
- ددې د وارو طرقو خلاصه داده چې د هوازن وفد کله جعرانه مقام کښې د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم خدمت کښې حاضر شو، په داسې حال کښې چې دغه وخت دا قبیلہ مسلمانہ شوې وه، وې وئیل چې مونږ یو قوم او قبیلہ یو، په مونږ باندې هغه مصیبت راغلې ده کوم چې ستاسو نه پټ نه دی، تاسو په مونږ باندې احسان او کړئ، الله تعالیٰ به تاسو ته د احسان بدله درکړي۔

(۱) کشف الباری: ۱/۳۲۴-۳۲۶۔

(۲) کشف الباری: ۱/۲۹۱، او ګوري: ۲/۴۳۶۔

(۳) د دوی د حالاتو دپاره او ګوري، اردو کتاب الوضوء، باب البزاق والمخاط ونحوه فی الثوب)۔

(۴) د دوی د حالاتو دپاره او ګوري، کتاب الوضوء، باب استعمال فضل وضوء الناس)۔

(۵) کشف الباری، کتاب المغازی: ۵۳۶-۵۳۸۔

(۶) فتح الباری: ۶/۲۳۸، وعمدة القاری: ۱۵/۵۶، والکونثر الجاری: ۶/۱۱۴)۔

(۷) تاریخ البخاری الصغیر: ۱/۵)۔

بیا په هغوی یو سړې او دریده چې د هغه نوم زهیر^(۱) وو، او وې وئیل انې د الله رسوله! زمونږ ښځې ستاسو تروریانې، ماسی او پرورش کوونکې دی، چا چې په وړو کوالی کښې ستاسو پرورش کړې دي.

که حارث بن ابی شمر د شام بادشاه، او نعمان بن المنذر د عراق بادشاه، باندې مونږ پئی ځکلې وې او په مونږ باندې دا مصیبت د هغوی له طرفه راغلې وو کوم چې ستاسو له طرفه راغی، نو په دې معامله کښې به مونږ د هغوی دواړو له طرفه د ښیگرې او د مهربانې امیدوار وو، حالانکه تاسو خو د ټولو نه غوره یئ (نو ستاسو د ښیگرې او د مهربانې به څنګه امید نه لرو؟) بیا زهیر نومې سړی د نبی کریم ﷺ په خدمت کښې څه اشعار پیش کړل،^(۲) چې په دې کښې د نبی کریم ﷺ د رسته دارئ وغیره ذکر وو (د دې سړی ددې خبرو نه نبی کریم ﷺ ډیره متاثره شو، ددې نه پس د واقعي تفصیل د باب په حدیث شریف کښې ذکر دي.

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: د ترجمة الباب د ابتدائي حصي "ومن الدليل على أن الخمس لنواب المسلمين ما سئل هوازن النبي صلى الله عليه وسلم..... فتحلل من المسلمين" سره ددې حدیث مطابقت دي.^(۳)
د باب دویم حدیث شریف د حضرت ابو موسیٰ اشعری رضی الله عنه دي.

(۱) د علامه واقدی رحمه الله په روایت کښې ددې سړی نوم ابو برقان السعدي ذکر دي، چې ددې نه په ظاهره هم دا معلومیږي چې خطیب بل څوک وو او شاعر بل کس، البته په دې کښې تطبیق هم کیدی شي چې ابو برقان کنیت وو او زهیر نې نوم وو، شرح القسطلاني: ۵/۲۱۴)۔
(۲) په هغې کښې څه اشعار لاندې ذکر کولې شي۔

| | |
|------------------------------|--------------------------------|
| انا لنشكر للنعماء اذ كفرت | وعندنا بعد هذا اليوم مدخر |
| فالبس العفو من قد كنت ترضعه | من امهاتك ان العفو مشتهر |
| يا خير من مرحت كمت الجياد به | عند الهياج اذا ما استوقد الشرر |
| انا نؤمل عفواً منك تلبسه | هدى البرية اذ تغفو وتنتصر |
| فاعف عفا الله عما انت راهبه | يوم القيامة اذ يهدي لك ظفر |

تغليق التعليق: ۳/۴۷۵)۔

(۳) القسطلاني: ۵/۲۱۴، والفتح: ۶/۲۳۸، ومجمع الزاويد: ۶/۱۸۷، وتغليق التعليق: ۳/۴۷۳-۴۷۵)۔
(۴) عمدة القاري: ۱۵/۵۷)۔

٢٩٢٤: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ قَالَ وَحَدَّثَنِي الْقَاسِمُ بْنُ عَاصِمٍ الْكَلْبِيُّ - وَأَنَا لِحَدِيثِ الْقَاسِمِ أَحْفَظُ - عَنْ زُهَيْرٍ قَالَ كُنَّا عِنْدَ أَبِي مُوسَى، فَأَتَى ذَكَرَ دَجَاجَةً وَعِنْدَهُ رَجُلٌ مِنْ بَنِي تَيْمِ اللَّهِ أَحْمَرُ كَأَنَّهُ مِنَ الْمَوَالِي، فَدَعَاَهُ لِلطَّعَامِ فَقَالَ إِنِّي رَأَيْتُهُ يَأْكُلُ شَيْئًا، فَقَذَرْتُهُ، فَخَلَفْتُ لَا أَكُلُ. فَقَالَ هَلُمَّ فَلَا حَدِيثَكُمْ عَنْ ذَلِكَ، إِنِّي أَتَيْتُ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فِي نَفَرٍ مِنَ الْأَشْعَرِيِّينَ نَسَجِمُهُ فَقَالَ «وَاللَّهِ لَا أَحْمِلُكُمْ، وَمَا عِنْدِي مَا أَحْمِلُكُمْ». وَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بِنَهَبٍ إِبِلٍ، فَسَأَلَ عَنَّا فَقَالَ «أَيْنَ النَّفَرُ الْأَشْعَرِيُّونَ؟» فَأَمَرَنَا بِخَبْسِ ذُوْدِ غَرِّ الدَّرِيِّ، فَلَمَّا انْطَلَقْنَا قُلْنَا مَا صَنَعْنَا لَا يَبَارِكُ لَنَا، فَرَجَعْنَا إِلَيْهِ فَقُلْنَا إِنَّا سَأَلْنَاكَ أَنْ تَحْمِلَنَا، فَخَلَفْتَ أَنْ لَا تَحْمِلَنَا أَفَنَيْسَتْ قَالَ «لَسْتُ أَنَا حَمَلْتُكُمْ، وَلَكِنَّ اللَّهَ حَمَلَكُمْ، وَإِنِّي وَاللَّهِ إِنْ شَاءَ اللَّهُ لَا أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ فَأَرَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا إِلَّا أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَتَحَمَّلْتُهَا» [٤١٢٤، ٤١٥٣، ٥١٩٨، ٥١٩٩، ٦٢٤٩، ٦٢٧٣، ٦٣٠٠، ٦٣٠٢، ٦٣٤٠، ٦٣٤٢، ٧١١٦]

رجال الحديث

- ① عبد الله بن عبد الوهاب: دا ابو محمد عبد الله بن عبد الوهاب حجبى بصرى رحمته الله دي. د دوى حالات په كتاب العلم، "باب ليدغم العلم الشاهد الغائب" كښې تير شوې دي. (د).
- ② حماد: دا حماد بن زيد بن درهم رحمته الله دي. د دوى تذكره په كتاب الايمان، "باب المعاصى من امرا لجاهلية...." كښې تيره شوې ده. (د).
- ③ ايوب: دا ايوب سختياني رحمته الله دي.
- ④ ابو قلابه: دا ابو قلابه عبد الله بن زيد جرمى بصرى رحمته الله دي. د دې دواړو حضراتو تذكره په كتاب الايمان، "باب حلاوة الايمان" كښې تيره شوې ده. (د).

(١) قوله: "كنا عند ابي موسى.....: الحديث، اخرج به البخارى ايضا، المغازى، باب قدوما لا شعر بين.....، رقم (٤٣٨٥)، وباب غزوه تبوك.....، رقم (٤٤١٥)، والاطعمة، باب الدجاج، رقم (٥٥١٧_٥٥١٨)، والايمان والنذور، باب قول الله تعالى: (لا يؤاخذكم الله.....)، رقم (٦٦٢٣)، وباب: لا تحلفوا بأبائكم، رقم (٦٤٩)، وباب اليمين فيما لا يملك.....، رقم (٦٦٧٨ و ٦٦٨٠)، وباب الاستثناء فى الايمان، رقم (٦٧١٨_٦٧١٩)، وباب الكفارة قبل الحنث وبعده، رقم (٧٢١)، والتوحيد، باب قول الله تعالى: (والله خلقكم وما تعملون).....، رقم (٧٥٥٥)، ومسلم، الايمان، باب ندب من حلف يمينًا، فراى غيرها خيرا منها.....، رقم (٤٢٦٣_٤٢٨)، والنسائى، الايمان، باب الكفارة قبل الحنث، رقم (٣٨١١)، الصيد والذبائح، باب اكل لحوم الدجاج، رقم (٤٣٥١_٤٣٥٢)، وابو داود، الايمان، باب الرجل يكفر قبل ان يحنث، رقم (٣٢٧٦)، وابن ماجه، الكفارات، باب من حلف على يمين.....، رقم (٢١٠٧)

(٢) كشف الباري: ٣/٣٨ -

(٣) كشف الباري: ٢/٢١٩ -

(٤) كشف الباري: ٢/٢٦ -

⑤ قاسم بن عاصم الکلبی: دا مشهور محدث او تابعی حضرت قاسم بن عاصم کلبی تمیمی لیشی بصری رحمته الله دی. بعضو د دوی نسبت کلینی ^(۱) هم لیکلې دي. دوی د حضرت رافع بن خدیج رضی الله عنه، او زهدم بن مضرب جرمی، سعید بن المسیب او عطاء الخراسانی رحمهم الله نه روایت کوی. د دوی نه په روایت کوونکو کنبې ایوب سختیانی، حمید الطویل او خالد الخداء رحمهم الله وغیره شامل دي. ^(۲)

ابن حبان رحمته الله دوی په خپل کتاب "الثقات" کنبې ذکر کړې دي. ^(۳) حافظ ابن حجر رحمته الله فرماني "مقبول" دي. ^(۴)

امام ابوداؤد د دوی نه په "مراسیل" کنبې، امام ترمذی په "شمائل" کنبې او نورو محدثینو بخاری او مسلم او نسائی رحمهم الله د دوی روایات اخستلي دي. البته په ابن ماجه کنبې د دوی خه روایت نشته. ^(۵) رحمه الله تعالى رحمة واسعة.

⑥ زهدم: دا زهدم بن مضرب جرمی ازدي بصری رحمته الله دي. ^(۶)

⑦ ابوموسی: د حضرت ابوموسی عبدالله بن قیس اشعري رضی الله عنه حالات په کتاب الايمان، "باب ای الاسلام افضل؟" کنبې تیر شوي دي. ^(۷)

ددې سند ټول راویان د بصرې دي، دغه شان دا سند بصری شو.

قوله: قال: وحدثني القاسم بن عاصم الكلبی، وأنا لحديث القاسم أحفظ

عن زهدم: دلته ویونکې ایوب سختیانی رحمته الله دي. ^(۸) او ددې عبارت وضاحت دادې چې

^(۱) حافظ مزی او ابن حجر وغیره رحمهم الله د دوی نسبت کلینی (نون سره) ذکر کړې دي، لیکن دا په ظاهره صحیح نه دي، صحیح کلبی بآء مؤحده سره دي، ددې وجه داده چې د دوی اصل تعلق د بنو تمیم سره دي چې د هغې یو شاخ کلب بن یربوع هم دي، د هغې طرفته منسوب کیدلو سره دوی ته کلبی وئیلې شي، او گوري، الانساب: ۴۶۵/۱۰، وتعلیقات تحریر تقریب التهذیب: ۱۷۰/۳، او کلین بضم الکاف وفتح اللام مصغراً او کسرهما بالامالة د عراق یو کلي دي، او گوري، الانساب: ۴۶۳/۱۰، والاكمال للمغلطای: ۱۸۶/۷، ووضیح المشتبه للذهبي: ۵۶/۵، والله اعلم.

^(۲) تهذیب الکمال: ۳۷۱/۲۳، وتهذیب التهذیب: ۳۱۹/۸.

^(۳) پورته حواله جات.

^(۴) الثقات لابن حبان: ۳۰۳/۵.

^(۵) تقریب التهذیب: ۱۹/۲، رقم (۵۴۶۵).

^(۶) پورته حواله، وتهذیب الکمال: ۳۷۲/، وتهذیب ابن حجر: ۳۱۹/۸، وخلاصة الخزرجی (۳۱۲).

^(۷) د دوی د حالاتو دپاره او گوري، کتاب الشهادات، باب لا يشهد على شهادة زور.....

^(۸) کشف الباری: ۶۹/۱.

^(۹) فتح الباری: ۲۳۹/۶، وعمدة القاری: ۵۷/۱۵، وارشاد الساری: ۲۱۵/۵.

ایوب دا روایت د دوو حضراتو یعنی ابوقلابه او قاسم بن عاصم نه روایت کوی او دا دواړه حضرات د زهدم بن مضرب جرمی نه روایت کوی. لکه امام بخاری رحمته الله علیه چې په کتاب الایمان والنذور کښې کوم روایت نقل کړې دې، د هغې سند داسې دې: "حدثنا قتيبة، حدثنا عبد الوهاب عن أيوب، عن أبي قلابة والقاسم التميمي، عن زهدم...." (۱)
په دې کښې د دواړو ذکر یوځانې دې. اوس ایوب سختیانی رحمته الله علیه دا فرمائی چې د قاسم روایت د ابوقلابه په نسبت ماته زیات یاد دې.
خبردارې: ددې حدیث مبارک تشریح په مغازی او اطعمه وغیره مختلفو ځایونو کښې راغلې ده. (۲)

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: ترجمة الباب سره ددې حدیث مناسبت په دې جمله کښې دې، "وَأَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَنِيهِ أَهْلٌ..... فَاْمَرْنَا بِخَمْسِ ذُودٍ غَرِ الذَّرِيَّ" چې نبی کریم صلی الله علیه و آله مونږ ته د اوچت قُب والا پنځه سپین اوبنان راکړل، دا اوبنان د خمس وو، دغه شان ددې حدیث مناسبت د ترجمې د جزء "وما كان النبي صلى الله عليه وسلم بعد الناس أن..... من الخمس" سره واضح دې (۳)
د باب دریم حدیث د حضرت ابن عمر رضی الله عنهما دې.

۲۹۶۵: (۴) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بَعَثَ سَرِيَّةً فِيهَا عَبْدُ اللَّهِ قَيْلٌ نَجْدٍ، فَقَعِمُوا إِلَّا كَثِيرًا، فَكَانَتْ سَهْمُهُمُ اثْنِي عَشَرَ بَعِيرًا أَوْ أَحَدَ عَشَرَ بَعِيرًا، وَتَقَلُّوا بَعِيرًا بَعِيرًا. [۴۰۸۳]

رجال الحديث

- ① عبدالله بن يوسف: دا عبد الله بن يوسف تنيسي رحمته الله علیه دې.
- ② مالک: دا امام دارالهجرة حضرت امام مالک بن انس رحمته الله علیه دې. ددې دواړو حضراتو تذکره د بدء الوحی په "الحديث الثاني" کښې تیره شوې ده. (۵)
- ③ نافع: دا نافع د ابن عمر رضی الله عنهما مولى دې. ددوی تفصیلی حالات په کتاب العلم، "باب ذکر

(۱) صحيح بخارى. كتاب الايمان والنذور، باب: لا تحلفوا بأبَاءكم. رقم (۶۶۴۹) -

(۲) كشف البارى، كتاب المغازى: ۶۰۸، ۶۳۳، وكتاب الاطعمة: ۲۸۷ - ۲۹۰ -

(۳) عمدة القارى: ۵۷/۱۵ -

(۴) قوله: عن ابن عمر رضی الله عنهما: الحديث، أخرجه البخارى فى المغازى، باب السرية التى قبل نجد، رقم (۴۳۳۸). ومسلم، فى الجهاد والسير، باب الانفال، رقم (۴۵۲۱ - ۴۵۲۵)، وابوداود، فى الجهاد، باب فى النفل فى السرية.... رقم (۲۷۱۴ - ۲۷۴۶) -

(۵) كشف البارى: ۱/ ۲۹۸ - ۲۹۰ -

العلم والفتیانی المسجد“ کښې تیر شوي دي. (۱).

⑤ ابن عمر د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما حالات په کتاب الایمان، ”باب الایمان....“ کښې تیر شوي دي. (۲)

عن ابن عمر رضی الله عنهما أن رسول الله صلى الله عليه وسلم بعث سرية، فيها عبد الله بن عمر، قبل نجد، فغنموا ابلا كثيرة

د حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما نه روایت دي چې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم یوه سریه روانه کړه، چې په هغې کښې حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما په خپله هم موجود وو، دا سریه د نجد طرفته لیږلې شوې وه، په دې کښې هغوی په غنیمت کښې ډیر زیات اوښان حاصل کړل. پورته په حدیث شریف کښې چې د کومې سړيې تذکره ده هغه په ”سریه ابن قتاده بن ربیع الانصاري“ سره موسوم ده، ددې امیر حضرت ابو قتاده رضی اللہ عنہ وو، دا سریه د فتح مکه نه مخکښې روانه کړې شوې وه، د ابن سعد د تحقیق مطابق دا د ۸ هجري واقعه ده. (۳)

دلته نجد مطلقاً ذکر شوې دي، چې ډیره لویه علاقه ده، ددې تحقیق وړاندې په څه مقام باندې تیر شوې دي. (۴)، البته د باب په حدیث کښې د نجد نه یو خاص علاقه ”ارض محارب“ مراده ده، کوم ځای چې قبيله غطفان اوسیدله، دا سریه ددې قبیلې د شکست او سرکوبۍ دپاره روانه کړې شوې وه. (۵)

د مشهور قول مطابق په دې سریه کښې پنځلس صحابه کرام رضی اللہ عنہم وو، په مال غنیمت کښې دوه سوه اوښان، دوه زره چیلۍ او ډیر زیات قیدیان په لاس راغلل او دا سریه صرف پنځلس ورځې وه. (۶) په دې حدیث شریف کښې د نفل ذکر راغلي دي، لاندې به مونږ ددې متعلق اختصار سره بحثونه پیش کوو، ځکه چې دا حدیث شریف د نفل په باب کښې د اصل حیثیت لري.

د نفل لغوی او اصطلاحی تعریف: نفل د نون او د فاء فتحې سره دي، کله فاء ساکن هم لوستلې شي، ددې جمع انفال ده، ددې معنی ده زیاتوالې. (۷)

د شریعت په اصطلاح کښې نفل هغه انعام او زیاتوالی ته ویلې شي کوم چې مجاهد ته د غنیمت نه علاوه ملاویږي، البته ددې اطلاق په اکثر روایتونو کښې په مطلق غنیمت

(۱) کشف الباری: ۴/۶۵۱-

(۲) کشف الباری: ۱/۶۳۷-

(۳) طبقات ابن سعد: ۲/۱۳۲-

(۴) اوگوری د باب ما جاء فی بیوت ازواج النبی.... شپږم حدیث، حدیث ابن عمر-

(۵) طبقات ابن سعد: ۲/۱۳۲-۱۳۳-

(۶) پورته حواله، والاوجز: ۹/۱۱۸-

(۷) شرح الزرقانی: ۳/۱۵، کتاب الجهاد، جامع النفل فی الغزو، باب رقم (۳۰۲) والاوجز: ۹/۱۱۶-

باندې هم شوې دي، علامه راغب اصفهاني وائي چې دا اختلاف د تعبير دي، لکه په دي اعتبار چې غازی ته دا انعام ملاؤ شوې دي نو دي ته غنیمت وائي او په دي اعتبار سره چې د الله تعالی له طرفه ورته دا انعام ملاؤ شو، چې ضروري نه وو نو دي ته نفل وائي، په دي

دواړو کښې نور فرقونه هم بیان کړي شوي دي، چې د هغې دلته ضرورت نشته (۱).
د نفل مشروعیت: د نفل په مشروعیت باندې د جمهور علماؤ او فقهاؤ اتفاق دي، البته صرف یو فقیه عمرو بن شعيب ددي د مشروعیت قائل نه دي، هغوی دا وائي چې د نبی کریم ﷺ نه پس ددي گنجائش نشته لیکن دا قول مرجوح دي (۲).

① امام شافعی او امام مالک رحمهما الله: بیا ائمه ثلثه کښې امام شافعی او امام مالک رحمهما الله دي لره د ضرورت د شرط سره مشروط کوي چې ترڅو سخت ضرورت نه وي، مثلاً مسلمانان په تعداد کښې کم او کفار په تعداد کښې زیات وي نو جائز دي، او که داسې نه وي نو جائز نه دي

② احناف: احناف ددي د مطلق جواز قائله دي، ځکه چې دا هم د تحریض او د ترغیب یو قسم دي، د الله تعالی حکم هم ددي خبرې دي چې یا ایها النبی حرض المؤمنین علی القتال (۳) چې "اې نبی! مسلمانان په قتال باندې راتیز کړئ" دا حکم مطلق دي (۴) البته احناف کثر الله سوادهم دا هم فرمائي. کما فی البدایع (۵) چې د وخت د امام دپاره دا مناسب نه دي چې د غنیمت ټول مال چاته نفلي ورکړي، ځکه چې په دي کښې به د ټولو مجاهدینو حق او وهلي شي، لیکن که داسې اوکړي نو جائز دي (۶).

د نفل صورتونه: د تنفیل بیا درې صورتونه دي:

① د وخت امام د لوټې لښکر نه مخکښې یو وړوکی لښکر (سریه) اولیږي، چې په دشمن باندې حمله اوکړي، دي لښکر ته چې کوم غنیمت ملاؤ شي د هغې یوه مقرر حصه مثلاً څلورمه یا دریمه به د هغه دپاره خاص کړي.

② د وخت امام یا د لښکر امیر د څه متعین او معلومو کسانو دپاره څه انعام مقرر کړي او دا ددي وجې نه چې هغوی د جنگ دوران کښې د بهادري مظاهره کړي وی یا ئې بل څه د

(۱) المفردات فی غریب القرآن: ۵۰۴، کتاب النون، مادة نفل، والاوجز: ۱۱۶/۹، والبداءع: ۴۵۹/۶، وفی الموسوعة الفقهية (۷۴/۱۴): وهو..... زیادة مال علی سهم الغنیمه، یشرط الامام او امیر الجیش لمن یقوم بما فیہ نکایة زائدة علی العدو (۲).

(۲) الموسوعة الفقهية: ۷۵/۱۴، (مادة تنفیل)، وفتح الباری: ۲۴۰/۶، والاوجز: ۱۱/۹. (۳) الانفال: ۶۵.

(۴) الموسوعة الفقهية: ۷۵/۱۴، وشرح الزرقانی: ۱۶/۳.

(۵) بدایع الصنایع: ۴۵۹/۹-۴۶۰، وانظر فتح القدیر: ۲۴۹/۵، والفتاوی الشامية لابن عابدين: ۲۶/۳، وکتاب السير للشیبانه: ۱۲۱/۲، ابواب الانفال.

فاندې کار کړې وی چې دغه کار نور چا نه وی کړې او دا کار مشروط هم نه وی. یعنې د مخکښې نه پرې خبره نه وی شوې. بلکه د غنیمت د تقسیم په وخت کښې دا انعام ورکړې شی چې فلانی سړی ته د هغه د مقرري حصې نه زیاتې د هغه ددې کارنامې د وجې نه دا انعام ورکولې شی.

⑤ دوخت امام دا اووانی چې کوم سړې فلانې دیوال مات کړې یا په دې کښې سوري اوکړې (ونحوذک) نو هغه ته به دا خیز یا دومره قدرې مال د انعام په طور ورکولې شی (۱).
دا درې صورتونه شو، دا درې صورتونه د جمهورو فقهاؤ په نزد صحیح دی. البته امام مالک رحمه الله او د هغوی ملګری دریم صورت لره مکروه ګڼي. هغوی دا فرماني چې دې سره به د مجاهد اخلاص متاثره شی او د هغه قتال به د دنیا دپاره شی. نه چې د آخرت دپاره. دغه شان په دې کښې خپل خان په خطر د کښې اچول هم موندې کيږي حالانکه داسې کول جائز نه دی (۲).

په دې سلسله کښې د جمهورو دلیل د حضرت حبيب بن مسلمه فهری هغه روایت دې کوم چې په ابوداؤد شریف کښې (۳) کښې مذکور دې چې نبی کریم ﷺ په ابتداء کښې څلورمه او د واپسې په وخت دریمه حصه د نفل په طور ورکړه، ددې نه ثابت شوه چې ابتداء کښې هم دا کار صحیح دي (۴).

د نفل محل: د نفل ادا کول د بیت المال نه هم جائز دی لیکن په دې صورت کښې د نفل قسم او مقدار معلومول ضروری دی.

دغه شان د دشمن نه چې نزدې کوم غنیمت حاصل شی. په هغې کښې هم نفل ورکول جائز دی. په دې کښې اگرچه جهالت موندې کيږي چې څه معلومه ده چې غنیمت به حاصل هم شی یا نه؟ لیکن دا جهالت نقصان دا نه دي ځکه چې ددې ضرورت دي (۵).
بیا د امت د فقهاء کرامو رحمهم الله په دې خبره کښې اختلاف دي چې نفل که د غنیمت نه وی نو څنګه به وی؟

① حنابلې او شوافع: د حنابلې او شوافعو په نزد به نفل د غنیمت د خمس په څلورمه حصه کښې ورکولې شی، هم دا قول د حضرت انس رضی الله عنه هم دي، دلیل دا حدیث شریف دي. "لا نفل الا بعد الخمس" (۶).

(۱) الموسوعة: ۷۵/۱۴. والمغنی: ۱۸۵/۹. وحاشیه ابن عابدین: ۲۶۲/۳. وفتح القدیر: ۲۴۹/۵. _

(۲) حاشیه الزرقانی: ۱۶/۳. والاوجز: ۱۲۵/۹. _

(۳) سنن ابی داود، کتاب الجهاد، فیمن قال: الخمس قبل النفل. رقم (۲۷۴۸ - ۲۷۵۰). _

(۴) المغنی: ۱۸۴/۹. والاوجز: ۱۲۵/۹. _

(۵) المغنی: ۱۸۶/۹. والموسوعة: ۷۵/۱۴. _

(۶) المغنی: ۱۸۷/۹. دا د موفق د وضاحت مطابق دي، ورنه د شوافعو په کتابونو..... [بقیه بر صفحه آنده...]

⑦ احناف: د احنافو په نزد په دې کښې تفصیل دي:
که د جنگ دوران کښې امام نفل ورکوي نو د غنیمت د خمس څلورمه حصه به وي.
که د مال غنیمت د تقسیم نه پس کوي يعنی د جنگ ختمیدلو نه پس د غنیمت د تقسیم
عمل شروع شي او هغه وخت د نفل ورکولو اعلان او کړی نو دا به په خمس کښې جاری
کيږي. (۱). او د مالکيه په نزد به نفل د غنیمت په خمس کښې جاری کيږي. شرح الزرقاني: ۱۷/۲،
وهداية المجتهد: ۳۹۶/۱، الفصل الثالث في حكم الانفال) -

د نفل مقدار: د فقهاء کرامو عليهم السلام په نزد د نفل دوه مقدارونه دي، غوره او بيکاره.
بيکاره خو دا دي چې څلورمه حصه يا دريمه يا ددې نه هم کمه وي يا بالکل نه وي، د وخت
امام ته په دې ټولو څيزونو کښې اختيار دي چې په نفل کښې دريمه ورکوي يا څلورمه يا
ددې نه هم کمه يا بالکل نه ورکوي. په دې کښې د ټولو فقهاؤ اتفاق دي. (۲).
البتة د غوره په حد کښې د دوی اختلاف دي.

د امام احمد رحمته الله عليه په نزد د دريمې حصې نه زيات مقدار په نفل کښې نه شي ورکړې کيدې. (۳)
د امام شافعي رحمته الله عليه په نزد د نفل څه غوره حد نشته بلکه دا د وخت د امام په رائي باندې
منحصر ده ځکه چې نبی کریم صلی الله علیه و آله کله دريمه حصه ورکړې ده او کله څلورمه نو دا ددې
خبرې دليل دي چې "ليس للنفل حد" (۴).

او د احنافو په نزد هم د نفلو څه غوره مقدار متعين نه دي، که د وخت امام او غواړي نو ټول
غنیمت هم لښکر ته ورکولې شي لیکن دوی دا هم فرمائي چې دا کار مناسب نه دي ځکه
چې په دې صورت کښې به د نورو مجاهدينو حق او وهلې شي. (۵).
دا خو نفل سره متعلق فقهي بحثونه وو کوم چې مونږ دلته مختصراً پيش کړل.
اوس يو نظر د باب په حديث شريف باندې اچوو.

...بقية از حاشیه گذشته] کښې د هغوی مذهب دا ليکلې شوې دي چې نفل به د خمس په خمس کښې
جاری کيږي، يعنی د غنیمت د پنځمې حصې پنځمه حصه به نفل کښې ورکولې شي، هم دا صحيح
قول دي، اوگوري، نووي: ۸۶/۲، وفتح الباری: ۲۴. وحديث انس اخرجہ ابوداود من حديث معن بن
يزيد. کتاب الجهاد، باب في النفل من الذهب والفضة..... رقم (۲۷۵۳) -

۱) حاشية ابن عابدين: ۲۶۴/۳، وفتح القدیر: ۲۵۰/۵، والاوجز: ۱۲۷/۹ -

۲) الموسوعة: ۷۶/۱۴، (مادة تنفيل) -

۳) پورته حواله، والمغنی: ۱۸۴/۹، والاوجز: ۱۲۵/۹ -

۴) الاوجز: ۱۲۵/۹، والموسوعة: ۷۶/۱۴ -

۵) حاشية ابن عابدين: ۲۶۳/۳، والبدايع: ۴۶/۹، فصل في احكام الغنائم..... والاوجز: ۱۲۶/۹ - ۱۲۷. د نفلو سره
متعلق نورو معلوماتو دپاره اوگوري، الاوجز: ۱۱۶/۹ - ۱۲۸، والموسوعة الفقهية: ۷۴/۱۴ - ۷۷.
والاستذکار لابن عبد البر: ۱۴/۴ - ۳۶، وفتح الباری: ۲۳۹/۶ - ۲۴۱، وعمدة القاری: ۵۵/۱۵ - ۶۰ -

قوله: فكانت سهمانهم اثني عشر بعيراً أو أحد عشر بعيراً: نو په سريه کښې شريک کسانو کښې هر کس ته دولس دولس يا يوولس يوولس اوبنان ملاؤ شو.

”سهمان“ د سين ضمي او د باء سکون سره، د سهم جمع ده، يعنې حصې^(۱)، مطلب دادې چې په پورته مذکوره تعداد کښې اوبنان د غنيمت په طور ملاؤ شو.

امام نووي رحمه الله فرمائي چې بعضې خلقو ددې معنی دا بيان کړې ده چې د ټولو شريکانو حصه دولس اوبنان وو، ليکن دا واضح طور سره غلطه خبره ده، ځکه چې د ابوداؤد رحمه الله

وغیره^(۲) په روايت کښې وضاحت شوې دې چې د هر شريک حصه دولس اوبنان وو^(۳).

د شريکانو په حصه کښې څومره څومره اوبنان راغلل؟ د باب په حديث کښې شک سره ”اثني

عشر بعيراً او احد عشر بعيراً“ راغلې دې، دا شک د امام مالک رحمه الله له طرفه راغلې دې او د

حضرت نافع نور ټول شاگردان دا د شک نه بغير ”اثني عشر بعيراً“ نقل کوي، ابن عبدالبر رحمه الله

هم دا فرمايلي دي^(۴).

د اثني عشر بعيراً مواد: وړاندې دا خبره تيره شوې ده چې په دې سريه کښې، د کومې چې د

باب په حديث کښې تذکره ده، دې کښې چې کوم غنيمت حاصل شو نو هغه دوه سوه

اوبنان، دوه زره چيلی او څه قيديان وو او دا خبره هم بيان شوه چې د اهل سير مشهور قول

دادې چې په دې کښې پنځلس کسان شريک وو، اوس که دوه سوه اوبنان پنځلس لره د

دولس په حساب سره تقسيم ورکړي شی نو جواب ۱۸۰ راځي او د دوو سوو خمس

څلوېښت دې، ۱۸۰ او څلوېښت نو ۲۲۰ شوې، نو دلته حساب صحيح نه راځي ځکه چې يا

خو د دوو سوو عدد غلط دې يا د دوو سوو شلو تعداد غلط دې؟

ددې تضاد جواب د حديث شارحينو دا کړې دې چې اوبنان او چيلی يوځانې ورکړې شوې

وي او لس چيلی د يو اوبن برابر وي، نو دوه زره چيلی په دې حساب سره د دوو سوو اوبنانو

برابر شوې، دوه سوه اوبنان د مخکښې نه وو، دغه شان دا مجموعه څلور سوه شوه. دې عدل

لره د نظر لاندې ساتلو د وجې نه اثني عشر بعيراً وئيلي شوې دې او په نفلو کښې هم ددې لحاظ

دې، هم دا توجيه د ټولو نه غوره ده^(۵).

يو اعتراض او د هغې جوابات: البته په دې ټول تفصيل باندې يو اعتراض دا پيدا کيږي چې

(۱) اوجز ۹: ۱۱۹، وشرح الزرقاني: ۱۵/۳.

(۲) سنن أبي داؤد، کتاب الجهاد، باب في النفل في السرية.....، رقم (۲۷۴۱).

(۳) اوجز: ۱۹۹/۹، والنووي على مسلم: ۸۶/۲، وفتح الباری: ۲۳۹/۶.

(۴) الاستذکار: ۴۱/۴، والتمهيد: ۱۴، حديث رابع عشر لنافع عن ابن عمر، وفتح الباری: ۲۳۹/۶.

والاوجز: ۱۱۹/۹.

(۵) طبقات ابن سعد: ۱۳۲/۲-۱۳۳، سريه ابي قتادة ربيعي.....، والاوجز: ۱۱۹/۹.

اوبنان د عدل نه پس څلور سوه شو، ددې خمس پنځمه حصه اتيا ده. د کومې نه چې نقل ورکړې شو، پنځلس کسانو ته د ۱۲، ۱۲ په حساب سره یو سل اتيا اوبنان ورکړې شو. حاصل جمع ۲۶۰ شو، اوس سوال دا دې چې باقی یو سل څلویښت اوبنان څه شو؟ ددې اعتراض نه د خلاصی دپاره حافظ رحمته الله علیه خو دا اووئیل چې په سریه کښې شریک کسان پنځلس نه وو بلکه پنځویشته وو^(۱)، پنځویشته لره دولس کښې ضرب ورکړو نو حاصل جمع ۳۰۰ جوړیږي، اتيا خمس دې، چې دا دواړه جمع کړې شی نو حاصل ۳۸۰ راځي چې څلور سوه ته نژدې نژدې دې.

لیکن د حافظ رحمته الله علیه دا جواب د بعضې وجوهاتو د وجې نه داسې نه دې چې اعتماد پرې اوکړې شی.

یو وجه خو داده چې اکثر اهل سیر په سریه کښې د شریک کسانو تعداد پنځلس ښودلې دې، مثلاً ابن سعد، قسطلانی او صاحب السیر الحلیه وغیره وغیره^(۲)، دویمه وجه داده چې بعضې حضراتو د شریکانو تعداد لس^(۳) او بعضو شپاړس^(۴) او بعضو څلور زره هم ښودلې دې^(۵)، په دې صورت کښې به حافظ صاحب څه کوی؟

ددې اعتراض دویم جواب دادې چې که ددې حدیث شریف ټول روایتونه د نظر لاندې کړې شی نو دا خبره پوهې ته راځي چې نبی کریم صلی الله علیه و آله وسلم یو لښکر روان کړې وو، رخ د هغوی د نجد طرفته وو، هلته د رسیدلو نه پس د لښکر یوه حصه جدا شوه او د بنو غطفان د شکست دپاره روانه شوه، هلته دوی فتح بیامونده او غنیمت ئې هم بیامونده، د سریې امیر خپل هر یو ملگری ته یو یو اوبن د نقل په طور ورکړو، باقی غنیمت سره لښکر کښې واپس راغلل. هرکله چې دوی په لښکر کښې واپس شو نو باقی غنیمت هم تقسیم شو او د لښکر هر هر کس ته دولس دولس اوبنان ملاؤ شو ځکه چې د لښکر خپل غنیمت هم وو، دا ټول چې جمع کړې شو نو د هر یو په حصه کښې دولس دولس اوبنان راغلل او په سریه کښې د شریک کسانو په لاس دیارلس دیارلس اوبنان راغلل ځکه چې یو یو اوبن نفلی وو.

ددې دلیل دوه جدا جدا روایتونه دي، اول د ابن اسحاق نه روایت دې او دویم د شعيب بن ابی حمزه نه، ددې دواړو روایتونو خلاصه هغه ده کومه چې پورته ذکر شوه، مونږ دلته صرف د شعيب بن ابی حمزه د روایت الفاظ نقل کوو، حضرت ابن عمر رضی الله عنهما فرمائي:

”بعثنا رسول الله صلى الله عليه وسلم في جيش، قبل نجد، وانبعث سرية من الجيش، فكان سهران الجيش

(۱) فتح الباری: ۵۶/۸، والاوجز: ۱۱۹/۹.

(۲) اوگوری، طبقات ابن سعد: ۱۳۲/۲، والسيرة الحلیة: ۲۰۴/۳، والاوجز: ۱۱۹/۹.

(۳) دا د ابن التین رحمته الله علیه راځي ده، اوگوری عمدة القاری: ۳۱۲/۱۷.

(۴) حکاه ابن الاثیر فی الکامل: ۱۵۷/۲.

(۵) دا د ابن عبد البر قول دې، دا قول حضرت سهارنپوری رحمته الله علیه په بذل کښې د حقیقت نه خلاف او بې اصل ښودلې دې، اوگوری بذل: ۳۵۳/۱۲.

اثني عشر بعيراً، اثني عشر بعيراً، ونفل أهل السرية بعيراً بعيراً، فكانت سهمانهم ثلاثة عشر^(۱) په دې روایت باندې ابن عبد البر رحمہ اللہ اگر چه سخت رد کړې دې ځکه چې دا روایت د نافع د نورو شاگردانو د بیان کړده روایتونو نه خلاف دې، کوم چې د شعيب په مقابل کې ښې ثقات هم دي او اثبات هم دي^(۲).

البته د ابن عبد البر رحمہ اللہ ددې رد د وجې نه څه فرق نه پریوځي، هغه داسې چې ابن عبد البر په خپله هم دا مني چې د شعيب بیان کړده معنی هم صحیح ده، ځکه چې د امت د علماؤ او فقهاؤ په دې خبره باندې اتفاق دې چې که د لښکر څه حصه سريه دپاره روانه شي نو کوم غنیمت چې ملاؤ شي، په هغې کې ښې به لښکر هم شریک وي، په سريه کې ښې د شریک کسانو امتیاز به داسې وي چې هغوی ته به نفل ورکولې شي^(۳)، نو په دې واقع کې ښې هم دغه شان شوې دي لکه څنگه چې د شعيب بن ابي حمزه او د ابن اسحاق وضاحت موجود دي. ددې وجې نه د ابن عبد البر رحمہ اللہ دا اعتراض په خپل محل باندې نه دي. والله اعلم
فائدة: د باب په حدیث شریف کې چې د کوم نفل تذکره ده، په هغې کې ښې د فقهاؤ اختلاف دې چې دا نفل د کوم څیز نه ورکړې شوې وو، مشهور قولونه درې دي:

① امام اوزاعي، احمد، ابو ثور او احناف رحمهم الله وغیره ددې خبرې قائل دي چې دا نفل د اصل غنیمت نه وو. دلیل د ابو اسحاق روایت دې چې د هغې ذکر اوس د ابوداؤد په حوالې سره تیر شو.

② د امام مالک، قاسم بن سلام، سعید بن المسيب او امام بخاری رحمهم الله وغیره رائي داده چې دا غنیمت د خمس نه وو، د دوی دلیل د ابن عبد البر رحمہ اللہ قول مطابق د باب حدیث شریف دې ځکه چې د حضرت نافع د اکثرو شاگردانو روایتونه په دې باندې دلالت کوي، سوا د ابن اسحاق د روایت نه.

③ د امام شافعي وغیره رحمه الله رائي داده چې په دې کې نفل د خمس په خمس کې وو، ابن عبد البر رحمہ اللہ باوجود ددې چې مالکی دې لیکن دې رائي ته ترجیح ورکوي^(۴)، والله اعلم
قوله: ونقلوا بعيراً بعيراً: او په سريه کې ښې شریک ټولو کسانو ته یو یو اوښ د نفل په طور سره ورکړې شو.

په دې روایت کې د منفل تعیین نشته چې نفل چا ورکړې وو، دلته منفل مجهول دي او د

^(۱) سنن ابی داؤد، کتاب الجهاد، باب فی النفل فی السرية.....رقم (۲۷۴۱)، وروایه ابن اسحاق انظرها فی نفس هذا الباب، برقم (۲۷۴۳)۔

^(۲) الاستذکار: ۴/۲۷۔

^(۳) پورته حواله، والفتح: ۶/۶، ولنووی علی مسلم: ۸۶/۲، والمغنی: ۱۸۳/۹، ۱۸۴، والاوزج: ۱۳۰/۹۔

^(۴) وللاستزادة انظر: الاستذکار: ۴/۴۳-۴۶، والفتح: ۶/۲۴، والاوزج: ۱۲۸/۹، واعلاء السنن: ۱۲/۲۶۰-۲۷۴.

مسلم د روایت د نه معلومېږي چې نفل ورکونکې نبی کریم ﷺ وو او د ابوداؤد روایت (۱) بالکل ددې خلاف دي، په کوم کښې چې ابواسحاق دا فرمائي چې نفل ورکونکې د سړي امير حضرت ابوقتاده انصاري رضی الله عنه وو؟

بيا د غنيمت په تقسيم کښې هم اختلاف دي چې غنيمت چا تقسيم کړې وو؟ ددې جواب دادې چې نفل ورکول د سړي د امير له طرفه وو او تقسيم د نبی کریم ﷺ په لاسونو مبارکو شوې وو ځکه چې نبی کریم ﷺ ته د نفل ورکولو پته اولگيده نو هغوی مبارک دا کار برقرار اوساتلو، ددې وجې نه دا د "تقرير" د قسم نه شو چې د سنت يو قسم دي. په دې باندې د ليث عن نافع وغيره روایت دلالت کوي، په کوم کښې چې راغلي دي چې "ولم يغيرة رسول الله صلى الله عليه وسلم" (۲) يا دواړه کارونه د سړي امير کړې وو، دا کار هم په تقرير باندې محمول دي ځکه چې نبی کریم ﷺ هيڅ اعتراض اونه کړو او د لښکر د امير فيصله ئې برقراره اوساتله. (۳)

ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: ددې حديث مطابقت د ترجمة الباب د جزء "الانفال من الخمس" سره دي، په حديث کښې چې "ونفلوا بعيداً بعيداً" راغلي دي نو دا د خمس نه وو، هم دا د امام بخاري رحمه الله رائي ده. (۴)، کما مر آنفاً مفصلاً.

يوه فائده: علامه نووي رحمه الله فرمائي چې په اکثرو روايتونو کښې اثنا عشر راغلي دي او په بعضو کښې اثني عشر. کافي حديث الباب. دا لفظ خو واضح دي چې په حالت د نصب کښې دي او د مشهور قاعدې مطابق دي. اولنې اعراب هم ددې حضراتو په نزد صحيح دي، کوم حضرات چې دا وائي چې د مثني اعراب به په درې واړو حالتونو (رفع، نصب، جر) کښې د الف سره وي، دا د عربو د څلورو قبيلو لغت دي او ددې مثالونه هم په کلام د عربو کښې په کثرت سره بيا موندې شي..... (۵).

د باب څلورم حديث هم د حضرت ابن عمر رضی الله عنهما دي.

۲۹۲۲: (۶) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ

(۱) صحيح مسلم، كتاب الجهاد والسير، باب الانفال، رقم (۴۵۲۳) -

(۲) ابوداؤد شريف، كتاب الجهاد، باب في النفل في السرية..... رقم ((۲۷۴۳)) -

(۳) صحيح مسلم، كتاب الجهاد والسير، باب الانفال، رقم ((۴۵۲۲)) -

(۴) شرح النووي على مسلم: ۸۶/۲، وفتح الباري: ۲۴۰/۶، والاوجز: ۱۲۱/۹ -

(۵) الكوثر الجارى: ۱۱۷/۶ -

(۶) شرح النووي على صحيح مسلم: ۸۶/۲، وتعليقات جامع الاصول: ۶۸۱/۲ -

(۷) قوله: عن ابن عمر رضي الله عنهما: الحديث، اخرجه مسلم، كتاب الجهاد..... باب الانفال، رقم (۴۵۲۶ - ۴۵۲۸)، وابو داؤد، كتاب الجهاد، باب في النفل في السرية..... رقم (۲۷۴۶).
..... [بقية بر صفحه آئنده...]

عَنْ ابْنِ عُمَرَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - كَانَ يُنْقِلُ بَعْضَ مَنْ يَنْعَثُ مِنَ السَّرَايَا لِنَفْسِهِمْ خَاصَّةً سِوَى قِسْمِ عَامَّةِ الْجَيْشِ.

رجال الحديث

① يحيى بن بكير: دا يحيى بن عبد الله بن بكير مخزومي رحمته الله دي.

② الليث: دا ليث بن سعد فهمي رحمته الله دي.

③ عقيل: دا عقيل بن خالد رحمته الله دي.

④ ابن شهاب: دا محمد بن مسلم بن عبيد الله بن عبد الله رحمته الله دي چې مشهور په ابن شهاب زهري دي ددې څلور وارو حضراتو تذکره د "بدع الوسی" په "الحديث الاول" کښې تیره شوې ده (۱).
⑤ سالم: دا مشهور تابعی سالم بن عبد الله بن عمر رحمته الله دي. د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب الحياء من الايمان" کښې تیر شوې دي (۲).

⑥ ابن عمر: د حضرت عبد الله بن عمر رحمته الله تذکره په کتاب الايمان، "باب الايمان...." کښې تیره شوې ده (۳).

عن ابن عمر رضي الله عنهما ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان ينقل بعض من يعث من السرايا لانفسهم خاصة، سوى قسم عامة الجيش.

حضرت ابن عمر رحمته الله فرمائي چې نبی کریم صلی الله علیه و آله به کوم خلق سريو ته ليرل، په هغوی کښې به ئې بعضو ته نفل ورکول، چې دا نفل به دهغوی سره د لښکر د عامو کسانو نه علاوه خاص وو. د باب د حديث نه د حافظ صاحب استدلال: حافظ ابن حجر رحمته الله ددې حديث نه دا استدلال کړې دي چې په نفل کښې د يو سريې بعضې کسان محروم ساتل او بعضو ته ورکول جائز دي (۴) او د جمهورو په نزد دا جائز نه دی، په سريه کښې شريک ټولو کسانو ته نفل ورکول ضروري دی (۵). زموږ په نزد ددې حديث معنی دا ده چې نبی کریم صلی الله علیه و آله به مختلف سريې روانولې چې په هغې کښې به ئې بعضې سريو ته نفل ورکولو او بعضو ته به ئې نه ورکولو.

...بقية از حاشیه گذشته [دا تخریج د تخریج د عام صاحبانو د تحقیق مطابق دي ځکه چې هغوی دا مستقل حديث شمار کړې دي ورنه د علامه ابن الاثير جزري رحمته الله تحقیق دادي چې د باب تیر شوې روايت او دا روايت دواړه يو حديث دي لهذا دواړه جدا جدا شمارل صحيح نه دی. او گوري جامع الاصول: ۶۸۱/۲-۶۸۲]

(۱) کشف الباری: ۱/۳۲۳-۳۲۶

(۲) کشف الباری: ۲/۱۲۸

(۳) کشف الباری: ۱/۶۳۷

(۴) فتح الباری: ۶/۲۴۱

(۵) دا بحث سابقه باب کښې تیر شوې دي.

پورته مونږ ترجمه د شافعيه مسلک مطابق کړې ده (۱).
 د حافظ د مذکوره استدلال وجه: شوافع چونکه ددې خبرې قائل دي چې نفل به د خمس د
 خمس نه ورکړې کيږي، ددې وجې نه هغوی هم په یو سره کښې "تخصیص البعض دون البعض في
 النفل" ته جائز وائي، که هغوی دا جائز اونه گنړي نو د هغوی د خمس الخمس والا قول صحيح
 نه پاتې کيږي. علامه نووی رحمته الله هم دا تشریح د مخکښې حدیث د جملې "ونفلوا بغيراً
 بغيراً" کړې وه او دا ئې فرمائيلې وو چې ددې مطلب دادې چې په سره کښې کوم د نفل
 مستحق وو، نو په هغوی کښې هر یو ته یو یو اوبس د نفل په طور سره ملاؤ شو، دا مطلب نه
 دې چې په سره کښې شریک ټولو کسانو ته نفل ملاؤ شو (۲).

حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمته الله فرمائي چې امام نووی (او حافظ) ته ددې تاویل کولو
 ضرورت ددې وجې نه پېښ شو چې د خپل راجح مذهب دپاره څه تائید کوونکې څیز تلاش
 کړي، ځکه چې دا حضرات د نفل د خمس الخمس قائل دي، ددې وجې نه په دې حدیث
 شریف کښې چې د خمس الخمس کوم مقدار جوړيږي نو هغه په ټوله سره باندې
 تقسیميږي نه شی، ددې وجې نه دې حضراتو دا مذکوره تاویل او کړو.

البتة دا تاویل چلیدلې نه شی ځکه چې هم ددې حدیث په یو طریق کښې صراحت سره دا
 الفاظ راغلې دي، "نفلنا أمیرنا بغيراً بغيراً لكل إنسان" (۳) ددې نه ښه وضاحت سره دا

معلوميږي چې په سره کښې شریک ټول کسان د نفل مستحق گرځیدلې وو (۴) والله اعلم.

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: ترجمة الباب سره ددې حدیث مناسبت بالکل

واضح دې ځکه چې په ترجمه کښې یو جزء الانفال من الخمس وو، په حدیث شریف کښې هم د

نفل ذکر دې، کوم چې د خمس نه ویستلې کيږي. کها هو مذهب البخاری. ددې وجې نه مطابقت

او موندلې شو. والله اعلم بالصواب

د باب پنجم حدیث شریف د حضرت ابو موسی اشعري رضی الله عنه دې.

۲۹۲۷: (۵) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ حَدَّثَنَا أَبُو سَامَةَ حَدَّثَنَا بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ

(۱) التلخیص الحبیر: ۲/۲۷۳، واعلاء السنن: ۱۲/۲۷۶، نقلاً عن الترمذی ببلاغ مالک بن انس)۔

(۲) شرح النووی علی مسلم: ۲/۸۶)۔

(۳) سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب فی النفل فی السریة..... رقم (۲۷۴۳)۔

(۴) الاوجز: ۹/۱۲۰)۔

(۵) قوله: عن ابی موسی رضی الله عنه: الحدیث، اخرجہ البخاری ایضاً، کتاب مناقب الانصار، باب هجرة الحبشة، رقم

(۳۸۷۶)، وکتاب المغازی، باب عزوة خبیر، رقم (۴۲۳۰ و ۴۲۳۳)، ومسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل

جعفر... واهل سفینتهم، رقم (۶۴۱۰)، وابوداود، فی کتاب الجهاد، باب فیمن جاء بعد الغنیمة..... رقم (۲۷۲۵)۔

أَبِي مُوسَى - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ بَلَّغْنَا خُرُوجَ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَنَحْنُ بِالْيَمَنِ فَخَرَجْنَا مَهَا جَرِينَ إِلَيْهِ، أَنَا وَأَخَوَانِ لِي، أَنَا أَصْغَرُهُمْ، أَحَدُهُمَا أَبُو بَرْدَةَ وَالْآخَرُ أَبُو رَهْمٍ، إِنَّمَا قَالَ فِي بَضْعٍ، وَإِنَّمَا قَالَ فِي ثَلَاثَةِ وَخَمْسِينَ أَوْ اثْنَيْنِ وَخَمْسِينَ رَجُلًا مِنْ قَوْمِي فَكَبْنَا سَفِينَةً، فَأَلْقَيْنَا سَفِينَتَنَا إِلَى النَّجَاشِيِّ بِالْحَبَشَةِ، وَوَأَقَفْنَا جَعْفَر بْنَ أَبِي طَالِبٍ وَأَصْحَابَهُ عِنْدَهُ فَقَالَ جَعْفَرُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بَعَثَنَا هَاهُنَا، وَأَمَرَنَا بِالْإِقَامَةِ فَأَقِيمُوا مَعَنَا. فَأَقَمْنَا مَعَهُ، حَتَّى قَدِمْنَا جَمِيعًا، فَوَأَقَفْنَا النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - حِينَ افْتَتَحَ خَيْبَرَ، فَأَسْهَمَ لَنَا. أَوْ قَالَ فَأَعْطَانَا مِنْهَا. وَمَا قَسَمَ لِأَحَدٍ غَابَ عَنْ فَتْحِ خَيْبَرَ مِنْهَا شَيْئًا، إِلَّا لَيْسَ شَهِدَ مَعَهُ، إِلَّا أَصْحَابَ سَفِينَتِنَا مَعَ جَعْفَرٍ وَأَصْحَابِهِ، قَسَمَ لَهُمْ مَعَهُمْ. [۳۶۳، ۳۹۹۰ - ۳۹۹۲]

رجال الحديث

- ① محمد بن العلاء: دا ابو العلاء محمد بن العلاء همداني كوفي رحمته الله دي.
 - ② ابو اسامه: دا ابو اسامه حماد بن اسامه رحمته الله دي. ددي دواړو حضراتو تذكره په كتاب العلم، "باب فضل من علم وعلم" كښي تيزه شوې ده. (۱).
 - ③ بريد بن عبدالله: دا ابوبرده بريد بن عبدالله بن عامر كوفي رحمته الله دي.
 - ④ ابوبرده: دا ابوبرده عامر بن موسى اشعري رحمته الله دي.
 - ⑤ ابو موسى: دا حضرت ابو موسى عبدالله بن قيس اشعري رحمته الله دي. ددي درې واړو حضراتو تذكره په كتاب الايمان، كښي د "باب اي الاسلام افضل" په ضمن كښي بيان شوې ده. (۲).
- عن ابى موسى رضى الله عنه قال: بلغنا مخرج النبي صلى الله عليه وسلم ونحن باليمن حضرت ابو موسى اشعري رحمته الله فرمائي چې مونږ ته د نبى كريم رحمته الله د وتلو خبر ملاؤ شو په داسې حال كښي چې مونږ په يمن كښي وو.
- "مخرج" مصدر ميمي دي، ددي معنى ده وتل او د فاعل كيدو د وجې نه مرفوع دي. (۲).
- د مخرج نه خه مراد دى؟
- د مخرج نه دوه خيزونه مراد كيدې شي:
- ① بعثت: په دې صورت كښي به مطلب داوى چې په ظاهره باندې دې حضراتو ته د نبى كريم رحمته الله بعثت او د خروج علم د هجرت د اوږدې مودې تيريدو نه پس اوشو، نو هر كله چې دوى ته علم اوشو نو دوى د زيارت په غرض سره د يمن نه راووتل.
 - ② هجرت: په دې صورت كښي به مطلب داوى چې د نبى كريم رحمته الله په باره كښي خو دوى ته

(۱) كشف الباري: ۳/ ۴۱۳ - ۴۱۷.

(۲) كشف الباري: ۱/ ۶۹۰.

(۳) عمدة القاري: ۱۵/ ۶۰.

علم د مخکښې نه حاصل وو، دې حضراتو اسلام هم قبول کړې وو لیکن په خپل وطن کښې مقیم وو، تردې چې د نبی کریم ﷺ د هجرت پته ورته اولگیده نو دوی د هجرت اراده اوکړه. اوس سوال دا پیدا کیږي چې بیا دا حضرات دومره اوږده زمانه چرته اوسیدل او هجرت ئې ولې اونه کړو؟

نو ددې جواب دادې چې غالباً دوی ته د صحیح حالاتو پته نه لگیده، چې هر کله د حالاتو مکمل اطلاع ملاؤ شوه نو دوی هم هجرت اوکړو او خپل وطن ئې پریخوډه(۱).

توله: فخرجناهم باجرین. إلیه، أنا وأخوان لی، أنا أصغرهم، أحدهما: أبو بردة، والآخر

أبو رهم: نو مونږ د هغوی په طرف د هجرت په نیت اووتلو، زه او زما دوه وروڼه، زه په هغوی ټولو کښې کشر ووم، یو ابوبرده وو او دویم ابورهم.

لفظ "مهاجرین" د حال جوړیدو د وجې نه منصوب دې(۲).
ابوبرده: دا د حضرت ابوموسی اشعری رضی الله عنه ورور ابوبرده بن قیس بن سلیم بن حضار بن حرب رضی الله عنه دې(۳).

د دوی نوم عامر دې لیکن د خپل ورور په شان دوی هم په دې خپل کښت سره مشهور دی(۴). په آخره کښې ئې کوفه خپل د اوسیدو ځای اوگرځوو او آخری وخت پورې کوفه کښې اوسیدل(۵) دوی د نبی کریم ﷺ نه یو حدیث روایت کوي، فرمائی:

"قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: اللهم اجعل فناء أمتي قتلا في سبيلك بالطعن والطاعون" (رضي الله عنه وأرضاه).

خبرداري: ابوبرده د دوی د وراره هم کښت دې کوم چې د باب د حدیث راوی هم دې، د هغوی نوم هم عامر دې، البته دوی صحابی دی او د دوی نه صرف هم دا یو پورته روایت مروی دې او د دوی وراره ابوبرده مشهور تابعی او فقیه دې او د خپل والد صاحب ابو موسی اشعری او نورو صحابه کرامو رضی الله عنهم نه کثرت سره روایت کوي.

ابورهم: دا هم د حضرت ابوموسی اشعری رضی الله عنه ورور دې، د دوی نوم څه وو؟ په دې کښې

(۱) فتح الباری: ۷/۴۸۵.

(۲) عمدة القاری: ۱۵/۶۰.

(۳) الاصابة مع الاستيعاب: ۴/۱۸. وفتح الباری: ۷/۴۸۵. وعمدة القاری: ۱۵/۶۰.

(۴) پورته حواله جات.

(۵) الاصابة: ۴/۱۸.

(۶) الحديث روه احمد في مسنده: ۳/۴۳۷. مسند ابی بردة..... رقم (۱۵۶۹۳). و: ۴/۲۳۸. حديث ابی بردة..... رقم (۱۸۲۴۸). والحاكم في مستدرکه: ۲/۹۳. كتاب الجهاد. رقم (۲۴۶۲). وقال: هذا حديث صحيح الاسناد. وقال الذهبي في تلخيصه: صحيح.

مختلف اقوال دی. ابن عبد البر رحمہ اللہ خو دا فرمائی چې د دوی نوم مجدی وو او ابن حبان د دوی نوم یقین سره محمد بنائی لیکن حافظ په دې باندې رد کړې دې. د ابن قانع رحمہ اللہ رائې داده چې د دوی نوم مجید وو (۱) ابن قتیبہ وئیلی دی چې د دوی طبیعت لږ تیز وو، ددې وجې نه به د دوی ورور حضرت ابو موسیٰ اشعری رحمہ اللہ دوی ته خبرې اترې کولې (۲). رضی الله عنه وأرضاه

قوله: إِمَّا قَالِ فِي بَضْعٍ، وَإِمَّا قَالِ فِي ثَلَاثَةِ وَخَمْسِينَ أَوْ اثْنَيْنِ وَخَمْسِينَ رَجُلًا

مِنْ قَوْمِي: يَا نَبِيَّ دا او فرمائیل یا بل څه، یا نبي او فرمائیل چې درې پنځوس یا دوه پنځوس سړو سره، کوم چې زما د قوم وو.

دا حضرات ټول څومره وو؟ دلته د باب په روایت کښې، د کتاب المغازی په روایت کښې عبارت دغه شان شک سره دې، د بضع اطلاق د دریو نه تر نهو (۳ تا ۹) پورې کیږي، ددې وجې نه دا د درې پنځوس نه تر یو کم شپیتو پورې هم احتمال لري او درې پنځوس هم په روایت کښې راغلې دي او دوه پنځوس هم.

البته ابن منده رحمہ اللہ په یو بل طریق سره نقل کړې دی چې د دوی (اشعریینو) تعداد پنځوس وو (۳)، د پنځوستو نه زیات چې کوم خلق دی شاید هغه حضرت ابو موسیٰ او د هغوی وروڼه وو، نو په کوم روایت کښې چې دوه پنځوس دی هغې کښې ورسره د دوی دواړه وروڼه ابو برده او ابو رهم ملاویږي د کوم ذکر چې د باب په حدیث کښې دي، او څوک چې درې پنځوس یا زیات تعداد بنائی نو د هغوی مراد د هغه اختلاف طرفته اشاره ده کوم اختلاف چې د دوی د وروڼو د تعداد په باره کښې دي، ابن عبد البر رحمہ اللہ ددې ټولو وروڼو تعداد څلور ښودلې دي او د ابن منده په روایت کښې د پنځو ذکر دي. په دې روایت کښې دا هم راغلې دي چې شپږ سړي د قبيله عک هم وو لیکن هغوی دلته مراد نه دی ځکه چې حضرت ابو موسیٰ رحمہ اللہ د من قومی وضاحت خو کړې دي، د دوی په تعداد کښې نور قولونه هم شته (۴).

قوله: فَرَكِبْنَا سَفِينَةً، فَالْقَتْنَا سَفِينَتَنَا إِلَى النِّجَاشِيِّ بِالْحَبْشَةِ، وَوَأَقْنَا جَعْفَر بْنَ أَبِي

طَالِبٍ وَأَصْحَابَهُ عِنْدَهُ، فَقَالَ جَعْفَرُ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَنَا

هَهُنَا، وَأَمَرَنَا بِالْإِقَامَةِ، فَأَقِيمُوا مَعَنَا: نو مونږ په یو کشتی کښې سواره شو، دغه کشتی مونږ د حبشي بادشاه حضرت نجاشي رحمہ اللہ ته اورسولو، هلته زمونږ ملاقات د حضرت جعفر

(۱) الاصابة: ۷۱/۴، والاستيعاب بهامش الاصابة: ۶۹/۴، وفتح الباری: ۴۸۵/۷، وعمدة القاری: ۶۰/۱۵، وابن قانع فی معجم الصحابة: ۳۹/۳، باب الميم، رقم (۱۱۶۰)۔

(۲) الاصابة: ۷۱/۴۔

(۳) فتح الباری: ۴۸۵/۷، وابن منده۔

(۴) فتح الباری: ۴۸۵/۷، والاستيعاب بهامش الاصابة: ۶۹/۴۔

بن ابی طالب عليه السلام او د هغوی ملګرو عليهم السلام سره اوشو، نو حضرت جعفر او فرمائیل چې نبی کریم عليه السلام مونږ دلته رالیرلې یو او دلته ئې مونږ ته د اوسیدلو حکم فرمائیلې دې نو تاسو هم دلته اقامت اختیار کړئ.

قوله: فاقمنا معه، حتی قدمنا جميعاً: نو مونږ هم هغوی سره هلته مقیم شو، تردې چې ټول په یو ځای په خدمت اقدس کښې حاضر شو.

ابن اسحاق په مغازی کښې لیکلې دی چې نبی کریم عليه السلام حضرت عمرو بن امیه رضي الله عنه نجاشی طرفته ددې پیغام سره لیرلې وو چې حضرت جعفر او د هغوی ملګری تیار کړه او روان ئې کړه نو هغوی حضرت جعفر او د هغوی ملګری د اکرام سره روان کړل نو حضرت عمرو رضي الله عنه دا حضرات خیر ته اورسول^(۱). ابن اسحاق ددې حضراتو تعداد شپاړس بنودلې دې^(۲) دوی د اشعریینو نه علاوه دی.

فواقمنا النبي صلى الله عليه وسلم حين اففتح خيبر، فاسهم لنا او قال: فاعطانا منها، وما قسم لاحد غاب عن فتح خيبر منها شيئاً، الا لمن شهد معه، الا اصحاب سفينة مع جعفر واصحابه، قسم لهم معهم.

مونږ نبی کریم عليه السلام ته هغه وخت اورسیدو کوم وخت چې نبی کریم عليه السلام خيبر فتح کړې وو، نو نبی عليه السلام مونږ ته هم غنیمت راکړو، زموږ نه علاوه چې کوم خلق د فتح خيبر نه غائب وو هغوی ته نبی عليه السلام په دغه غنیمت کښې هېڅ هم ورنه کړل، دا غنیمت صرف هغه چاته ملاؤ شو کوم چې د نبی عليه السلام سره په جنگ کښې شریک وو او مونږ د کشتی وال ملګری، جعفر رضي الله عنه او د هغوی ملګری، دا ټول ئې هم په جنگ کښې د شریک کسانو سره د غنیمت په تقسیم کښې شریک کړل.

دا شرکت د کوم مدنه وو؟ په دې حدیث شریف کښې حضرت ابو موسی رضي الله عنه دا فرمائیلې دی چې نبی کریم عليه السلام د خيبر په غنیمتونو کښې مونږ د مجاهدینو سره شریک کړو لیکن سوال دادې چې دا شرکت په کوم بنیاد باندې وو، ځکه چې غنیمت خو هغه چا ته ملاویرې چې په جنگ او قتال کښې شریک وی، حال دادې چې دوی په خپله وضاحت او کړو چې مونږ په جنگ کښې شریک نه وو بلکه د فتحې نه پس حاضر شوې وو؟

ددې باشکال جوابات مونږ وړاندې ذکر کړې دی او په مغازی کښې په دې باندې بحث راغلې دي البته اختصار سره مونږ دغه جوابات دلته دوباره ذکر کوو:

- ① موسی بن عقبه فرمائی چې اصل کښې د مجاهدینو په اجازت سره نبی عليه السلام دا حضرات په غنیمت کښې شریک کړې وو، چونکه مستحقین راضی وو نو ددې وجې نه هېڅ خبره نه ده.
- ② دوی ته ئې د مال فئ نه ورکړې وو، کوم چې د جنگ نه بغیر حاصل شوې وو.
- ③ دوی ته ئې د خمس نه ورکړې وو، په خمس کښې امام ته اختیار وی، چرته چې غواړی

(۱) سيرة ابن هشام: ۳۶۲/۴/۲، ذکر قدوم جعفر..... (عدة من حملهم مع عمرو بن أمية) --

(۲) پورته حواله، وفتح الباری: ۴۸۶/۷ --

خرج کولې شی، هم دې طرفته د علامه کرمانی رحمته الله علیه د قول مطابق د امام بخاری رحمته الله علیه میلان دې. (۱)

⑤ تحقیقی جواب دادې چې په غنیمت کښې اصل داده چې د تقسیم نه لږ مخکښې نور کسان چې په جنگ کښې شریک نه وی، راوړسی نو هغوی هم په تقسیم کښې شریکېږي، که د تقسیم نه پس راوړسی نو د غنیمت مستحق نه دی، دلته هم دغه شان شوې دی چې دا حضرات د فتحې نه پس لیکن د غنیمت د تقسیم نه مخکښې رارسیدلي وو نو ددې وجې نه دوی په تقسیم کښې شریک شو. (۲). حافظ رحمته الله علیه هم د مختلف احتمالات ذکر کولو نه پس دا آخری احتمال غوره گرځولي دي. (۳) په دې مسئله کښې تفصیل وړاندې په باب الغنیمه لمن شهد الواقعة وغیره کښې تیر شوې دي.

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: ددې حدیث مناسبت د ترجمة الباب سره ددې دعوي په بنیاد دي چې اشعريینو وغیره ته څه ورکړې شوې وو نو هغه د خمس نه وو، په دې باندې ابو عبید هم په کتاب الاموال کښې یقین ذکر کړې دي نو د ترجمې لفظ "من الخمس" سره به ددې مناسبت شی. (۴)

د باب شپږم حدیث د حضرت جابر رضی الله عنه دي.

۲۹۶۸: (۵) حَدَّثَنَا عَلِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْكَدِرِ سَمِعَ جَابِرًا - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «لَوْ قَدْ جَاءَنِي مَالُ الْبَحْرَيْنِ لَقَدْ أُعْطَيْتُكَ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا». فَلَمْ يَجِبْ حَتَّى قُبِضَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -، فَلَمَّا جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ أَمَرَ أَبُو بَكْرٍ مُنَادِيًا فَنَادَى مَنْ كَانَ لَهُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - دَيْنٌ أَوْ عِدَّةٌ فَلْيَأْتِنَا. فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ لِي كَذَا وَكَذَا. فَحُثِّلِي ثَلَاثًا - وَجَعَلَ سُفْيَانُ يَحْثُوبِيكَفِيهِ جَمِيعًا، ثُمَّ قَالَ لَنَا هَكَذَا قَالَ لَنَا ابْنُ الْمُنْكَدِرِ -

وَقَالَ مَرَّةً فَأَتَيْتُ أَبَا بَكْرٍ فَسَأَلْتُ فَلَمْ يُعْطِنِي، ثُمَّ أَتَيْتُهُ فَلَمْ يُعْطِنِي، ثُمَّ أَتَيْتُهُ الثَّالِثَةَ فَقُلْتُ سَأَلْتُكَ فَلَمْ تُعْطِنِي، ثُمَّ سَأَلْتُكَ فَلَمْ تُعْطِنِي، فَأَمَّا أَنْ تُعْطِنِي، وَإِمَّا أَنْ تَبْخَلَ عَنِّي. قَالَ قُلْتُ تَبْخُلُ عَلَى مَا مَنَعْتُكَ مِنْ مَرَّةٍ إِلَّا وَأَنَا أَرِيدُ أَنْ أُعْطِيكَ.

(۱) عمدة القاري: ۱۵/۶۰ وشرح الكرماني: ۱۳/۱۰۸ -

(۲) اعلاء السنن: ۱۲/۱۲۲ -

(۳) فتح الباري: ۶/۲۴۱ - ۲۴۲ -

(۴) فتح الباري: ۶/۲۴۱ -

(۵) قوله: سمع جابرا رضی الله عنه: الحديث، مر تخريجه في الكفالة، باب من تكفل عن ميت ديناً.... -

رجال الحديث

- ① علی: دا مشهور محدث حضرت علی بن المدینی رحمہ اللہ دی. د دوی تذکرہ پہ کتاب العلم، ”باب الفہم فی العلم“ کنبی تیرہ شوې ده (۱).
 ② سفیان: دا ابن عیینہ رحمہ اللہ دی. د دوی حالات اجمالاً د بده الوحی پہ ”الحديث الاول“ کنبی او تفصیل سره په کتاب العلم، ”باب قول المحدث.....“ کنبی تیر شوې دی (۲).
 ③ محمد بن المنکدر: دا محمد بن المنکدر بن عبد الله رحمہ اللہ دی (۳).
 ④ جابر: دا حضرت جابر بن عبد الله انصاری رحمہ اللہ دی (۴).

قوله: قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لو قد جاءنا مال البحرين
لقد أعطيتك هكذا وهكذا وهكذا: حضرت جابر رحمہ اللہ فرمائی چې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم ماته
فرمائیلي وو چې مونږ ته د بحرین مال راغی نو مونږ به تا ته درې لپې (متھی) ډکې کړو.
 په حدیث شریف کنبی چې د کوم مال ذکر دې نو دا جزیه وه، وړاندې په کتاب الجزیه کنبی
 د حضرت عمرو بن عوف رحمہ اللہ په حدیث کنبی ددې وضاحت راځي (۵) او دا مال حضرت علا،
 بن الحضرمی رحمہ اللہ رالیږي وو (۶) ابن بطال رحمہ اللہ دلته دا فرمائیلي دی چې غالباً دا مال د
 خمس یا د مال فئ وو (۷) لیکن د مذکورہ وضاحت په موجودگي کنبی ددې تاویل هیڅ
 ضرورت نشته (۸).

قوله: فلم یجئ حتی قبض النبی صلی الله عليه وسلم: لیکن دغه مال راغی، تردې
چې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د دنیا نه تشریف یووړ. یعنی د کوم مال وعده چې شوې وه د هغې د
راتللو نه مخکې د نبی صلی اللہ علیہ وسلم انتقال اوشو.

قوله: فلما جاء مال البحرين أمر أبو بكر منادياً، فنادی: من كان له عند
رسول الله صلى الله عليه وسلم دين أو عدة فليأتنا: هرکله چې د بحرین مال راغی

(۱) کشف الباری: ۲۵۶/۳.

(۲) کشف الباری: ۱/۲۳۸ و ۱۰۲/۳.

(۳) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الوضوء، باب صب النبی صلی اللہ علیہ وسلم وضوء.....

(۴) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الوضوء، باب من لم یبر الوضوء الا من المخرجین.....

(۵) انظر صحيح البخاری، کتاب الجزية والموادعة، باب الجزية والموادعة..... رقم (۳۱۵۸).

(۶) عمدة القاری: ۶۱/۱۵.

(۷) شرح ابن بطال: ۳۰۱/۵.

(۸) فتح الباری: ۲۴۲/۶.

نو خليفه اول حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ یو آواز کوونکی ته حکم اوکړو چې هغه اعلان اوکړی نو هغوی اعلان اوکړو چې په نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم باندې د چا قرض وی یا څه وعده وی نو هغه دې مونږ ته راشی چې مونږ ورته هغه ورکړو یا ورسره هغه وعده پوره کړو. ددې آواز کوونکی نوم د حافظ د قول مطابق ما ته معلوم نه شو. البته غالباً دا حضرت بلال رضی اللہ عنہ ووده.

قوله: فأتيت، فقلت: إن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لي كذا وكذا،

فجئاً لي ثلاثاً: نو زه ورته راغلم او ورته مې او وئيل چې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم ما سره د دریو لپو د راکولو وعده فرمائيلې وه نو هغوی ماته درې حثیه مال راکړو. د ثلاثاً نه مراد ثلاث حثیات دي چې د حثیه جمع ده، دا د ضرب او نصر دواړو نه استعمالیږي، د یو متبهي مقدار ته وئيلې شی او یو لفظ الحفنة دي، ددې معنی ده د دوو متبهي مقدار، البته ابو عبید دواړه په یو معنی کښې گرځولي دي، (۱) د باب په حدیث شریف کښې د دوو متبهي مقدار، یعنی د دوو لاسونو برابر مال مراد دي، لکه څنگه چې حضرت سفیان وړاندې وضاحت کړې دي (۲) مطلب دادې چې حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ ما ته درې ځله دواړه لاسونه ډک کړل، هم دا وعده نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم فرمائيلې وه، اعطيتك هكذا وهكذا وهكذا.

قوله: وجعل سفیان يحثو بكفيه جميعاً، ثم قال لنا: هكذا قال لنا ابن

المنكدر: او حضرت سفیان رضی اللہ عنہ مونږ ته دواړه لاسونه ډکولو سره اوبښودل، بیا ئې اوفرمائيل چې ابن المنكدر رضی اللہ عنہ مونږ ته هم دغه شان وئيلې وو. دا جمله د حضرت ابن المدیني رضی اللہ عنہ ده، ددې نه د حضراتو محدثينو د ضبط د کمال اندازه معلومیږي چې هغوی به څنگه یو یو جزیه او یو یو ادا محفوظه ساتله.

قوله: وقال مرة: فأتيت أبا بكر، فسئلت، فلم يعطني، ثم أتيت، فلم يعطني، ثم أتيت

الثالثة، فقلت: سئلتك، فلم تعطني، ثم سئلتك فلم تعطني، ثم سئلتك فلم

تعطني، فاما أن تعطيني، واما أن تبخل عني: او یو ځل ئې اوفرمائيل، زه

حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ ته راغلم او مال مې ترینه طلب کړو نو هغوی رانه کړو، بیا راغلم، بیا ئې رانه کړو، دریم ځل باندې راغلم او ورته مې او وئيل چې ما ستاسو نه مال طلب کړو لیکن تاسو رانه کړو، بیا مې طلب کړو لیکن تاسو رانه کړو، بیا مې په دریم ځل درخواست اوکړو نو بیا هم تاسو رانه کړو. اوس خو یا تاسو ماته مال راگرځئ یا زما په معامله کښې د بخل نه کار واخله.

(۱) فتح الباری: ۲۴۲/۶. وایضا عمدة القاری: ۶۱/۱۵. —

(۲) پورته حواله جات. —

(۳) فتح الباری: ۲۴۲/۶. —

دلته قائل حضرت سفیان ابن عیینہ رضی اللہ عنہ دي (۱).

قوله: قال: قلت تبخل علي، ما منعك من مرة إلا وأنا أريد أن أعطيك:

حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ د تعجب په طور سره او فرمائیل ته دا وائي چې ما تاسو سره د بخل معامله کړې ده (نو داسې څه خبره نشته)؟ ما خو چې کله هم تاسو ته د درکولو نه انکار کړې دي نو مقصد مې هم دا وو چې زه به تاسو ته ضرور درکوم. دلته د قال قائل حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ دي او مخاطب حضرت جابر او قلت جمله استفهاميه استعجابيه ده، دلته همزه

استفهام حذف شوې دي، په مغازی کښې هم دا لفظ همزه سره اقلت راغلي دي، (۲) د منع کولو وجه څه وه؟ دلته سوال دا دي چې هرکله حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ د حضرت جابر ضرورت خامخا پوره کوو نو بار بار ئې خالي لاس ولې واپس کوو؟ ددې مختلف جوابونه کيدې شي:

- ① في الحال ئې منع کوو، همیشه دپاره ئې نه منع کوو، یعنی اوس نه شم درکولې، بیا راشه.
- ② ددې معاملي نه اهم معاملات پېښ وو.
- ③ دوی ته چې ورکړې شي نو ددې په لیدلو سره نور خلق رانشی، ددې وجې نه ئې منع او فرمائیل.

بهر حال دا منع کول کلی نه. (۳). کما ذکر ابوبکر بنفسه.

قَالَ سُفْيَانُ وَحَدَّثَنَا عَمْرُو عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ جَابِرِ فَخَّالٍ حَتَّى وَقَالَ عَدَّهَا. فَوَجَدْتُهَا خَمْسِمِائَةً قَالَ فَخَذْتُ مِثْلَهَا مَرَّتَيْنِ. وَقَالَ يَعْنِي ابْنُ الْمُنْكَدِرِ وَأَيُّ دَاءٍ أَدْوَأُ مِنَ الْبُخْلِ. [ر: ۲۱۷۴]

دا مذکوره سند سره متصل دي او د عمرو نه مراد ابن دینار (۴) او د محمد بن علی (۵) نه مراد

د حضرت حسین نوسی او د حضرت علی کپوسی دي، (۶) حضرت جابر رضی اللہ عنہ فرمائی چې حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ یو ځل دواړه لاسونه ډک راکړل او وې فرمائیل چې څه مې ورته درکړې دی نو دا اوشماره، اومي کتل نو هغه پنځه سوه درهم وو، وې فرمائیل چې دومره دوه ځلې نورې هم واخله. ددې روایت د ذکر کولو مقصد د هغې زیاتوالي طرفته اشاره ده کوم چې د عمرو عن محمد بن علی په طریق کښې خو موندې کيږي لیکن د محمد بن المنکدر په طریق کښې نشته. د ابن المنکدر روایت د تعداد په

(۱) پورته حواله.

(۲) صحیح بخاری، کتاب المغازی، باب قصة عمان والبحرين، رقم ((۴۳۸۳)).

(۳) عمدة القاری: ۶۱/۱۵، وفتح الباری: ۲۴۲/۶.

(۴) ددوی حالات په کشف الباری، کتاب العلم کښې راغلي دي، اوگوري، ۳۰۹/۴.

(۵) د دوی حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الوضوء، باب من لم ير الوضوء الا من المخرجين....

(۶) فتح الباری: ۲۴۲/۶، وعمدة القاری: ۶۱/۱۵.

اعتبار سره مبهم وو، البته پورته طریق سره هغه ابهام ختم شو او دا معلومه شوه چې حضرت جابر رضی الله عنه ته حاصل شوې دراهم پنځلس سوه وو او د ثلاثاً معنی هم متعین او معلومه شوه،^(۱)

قوله: وقال - یعنی ابن المنکدر: وأی داء أدوی من البخل؟ او وې فرمائیل یعنی ابن المنکدر چې بل کوم مرض د بخل نه زیات خطرناک کیدې شی! د لفظ "وقال" ویونکې حضرت سفیان دې او د یعنی ویونکې ابن المدینی دې،^(۲) مطلب دادې چې حضرت سفیان وقال او فرمائیل، ددې وضاحت ابن المدینی رحمه الله او فرمائیلو چې د سفیان مراد د وقال نه ابن المنکدر دې چې ابن المنکدر به فرمائیل چې د بخل نه زیات بل کوم مرض زیات خطرناک کیدې شی؟

دا جمله د چا ده؟ د باب د حدیث د ظاهر نه دا معلومیږي چې د "وأی داء أدوی من البخل" والا جمله د ابن المنکدر رحمه الله ده لکه علامه ابویوسف یعقوب رحمه الله په الخیر الجاری کښې هم دا خبره اختیار کړې ده^(۳) البته دا صحیح نه ده، بلکه دا د حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه مقوله ده، په مغازی کښې ددې وضاحت راغلې دې، هلته دا هم دی چې حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه دا جمله درې ځله ارشاد او فرمائیل^(۴) دغه شان په مسند حمیدی کښې هم ددې وضاحت راغلې دې، هغوی د سفیان نه روایت کولو سره په دې حدیث کښې فرمائیلې دی، "وقال ابن المنکدر فی حدیثه"^(۵) ددې نه ددې جملې نسبت د حضرت ابوبکر رضی الله عنه طرفته واضح طور سره معلومیږي.^(۶)

د أدوی د لفظ تحقیق: قاضی عیاض رحمه الله فرمائی چې محدثین دا لفظ غیر مهموز نقل کوی یعنی د دوی یدوی دوی نه، ددې معنی ده د خیتې په مرض کښې اخته کیدل، لیکن صحیح ادوا همزه سره دي ځکه چې دا د داء نه دې نه چې د دوی نه^(۷) البته حافظ علیه الرحمة د محدثینو په نقل کرده لفظ کښې تاویل کولو سره فرمائی چې کیدې شی هغوی په همزه کښې د

^(۱) فتح الباری: ۲۴۲/۶، البته د ابن عساکر په یو روایت کښې د اعطانی ألفاؤ ألفاؤ ألفاؤ راغلې دی، یعنی د درهمونو مقدار درې زره وو- تاریخ مدینه دمشق: ۳۰/۳۲۳، حرف العین)۔

^(۲) فتح الباری: ۲۴۲/۶)۔

^(۳) الخیر الجاری..... لم اطلع علی هذا الكتاب!۔

^(۴) صحیح بخاری، کتاب المغازی، باب قصة عمان والبحرين، رقم ((۴۳۸۳))۔

^(۵) مسند الحمیدی: ۵۱۸/۲، احادیث جابر بن عبدالله..... رقم ((۱۲۳۳))، وفتح الباری: ۲۴۲/۶)۔

^(۶) فتح الباری: ۲۴۲/۶، وایضاً انظر لا مع الدراری وتعلیقانه: ۳۱/۷)۔

^(۷) پورته حواله جات، وعمدة القاری: ۶۱/۱۵)۔

تسهیل قاعده جاری کړې وی(۱)

ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: ترجمة الباب سره ددي حديث شريف په مناسبت کښې علامه عيني رحمته الله عليه خو دا فرمايلي دي چې د ترجمې د جزء "وما كان النبي صلى الله عليه وسلم يعد الناس ان يعطيهم من الفم، والانفال من الخمس" او د حديث د جملې "من كان له عند رسول الله صلى الله عليه وسلم دين او ماله" خپل مينځ کښې مناسبت دې (۲) علامه احمد الكوراني الحنفي د ترجمة الباب د جزء "من الفم" سره ددي حديث مطابقت بيان کړې دې او فرمايلي دي چې دا مال کوم چې د بحرین نه راغلي وو نو دا مال قی وو، لهذا مناسبت اوموندلې شو (۳) او ابن بطلان رحمته الله عليه دا مال د خمس ګرځولې وو، کما مرقه بل. په دې اعتبار سره به مناسبت د لفظ الخمس سره وي(۴)

او د حافظ عليه الرحمة رائي دا ده چې ظاهراً ترجمې سره د حديث مناسبت واضح نه دې البته دومره خبره کيدې شي چې د امام بخاري رحمته الله عليه په نزد چونکه د خمس او د جزیه مصارف يو دي، په دې مناسبت سره هغوی جزیه سره متعلق حديث د خمس د ترجمې لاندې نقل کړو(۵)

۲۹۲۹: (۱) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ حَدَّثَنَا قُرَّةٌ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - قَالَ يَنْمَارِسُ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَقْسِمُ غَنِيمَةً بِالْجُعْرَانَةِ إِذْ قَالَ لَهُ رَجُلٌ اُعْدِلْ. فَقَالَ لَهُ «شَقِيتَ إِنْ لَمْ أَعْدِلْ».

رجال الحديث

- ① مسلم بن ابراهيم: دا مسلم بن ابراهيم فراهيدى، ازدي رحمته الله عليه دې - د دوى تذکره په کتاب الايبان، "باب أحب الدين إلى الله أدومه" کښې تيره شوي ده(۶)
- ② قرة بن خالد: دا ابو محمد قرة بن خالد سدوسي بصرى رحمته الله عليه دې(۷)

¹ (فتح الباری: ۲۴۲/۶) -

² (عمدة القاری: ۶۱/۱۵) -

³ (الکوثر الجاری: ۶۱/۶) -

⁴ (شرح ابن بطلان: ۳۰۱/۵) -

⁵ (فتح الباری: ۲۴۲/۶) -

⁶ (قوله: عن جابر..... الحديث أخرجه مسلم. كتاب الزكاة. باب ذكر الخوارج وصفاتهم. رقم (۲۴۴۹ - ۲۴۵۰). وابن ماجه. كتاب السنة. باب في ذكر الخوارج. رقم (۱۷۲) -

⁷ (كشف الباری: ۴۵۵/۲) -

⁸ (د دوى د حالاتو دپاره او ګوري، كتاب مواقيت الصلاة. باب السمر في الفقه....) -

① عمرو بن دينار: مشهور تابعی حضرت عمرو بن دينار رضی اللہ عنہ دي. د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب کتابه العلم" کښې تیره شوې ده (۱).

② جابر بن عبدالله رضی الله عنهما: دا حضرت جابر بن عبدالله انصاری رضی الله عنهما دي (۲).

قال: بينما رسول الله صلى الله عليه وسلم يقسم غنيمه بالجعرانة

حضرت جابر بن عبدالله رضی اللہ عنہ فرمائی چې دې دوران کښې نبی کریم ﷺ د جعرانه په مقام کښې غنیمت تقسیموو.

دا واقعه د کوم وخت ده؟ نبی کریم ﷺ چې کله د حنین د غزوې نه فارغ شو نو د جعرانه مقام ته یې تشریف راوړو، دلته په راتلو سره یې د حنین غنیمتونه تقسیم کړل. دا واقعه د ۵ ذوالقعدة ۸ هجري ده (۳) د مسلم شریف په روایت کښې راځي چې نبی کریم ﷺ د حضرت بلال رضی اللہ عنہ د خادر نه چاندی راویستلو راویستلو سره په خلقو کښې تقسیموله او ډک ډک مټي به یې ورکولې.

قوله: أذقال له رجل: اعدل: نو یو سړی نبی کریم ﷺ ته اوونیل چې عدل اوکړئ. دا سړی څوک وو؟ دلته رجل (سړی) مبهم دي، دغه شان د مسلم شریف په روایت کښې هم "رجل" مبهم دي (۴). البته شارحینو په نورو روایتونو کښې نظر کولو سره ددې رجل د متعین کولو کوشش کړې دي لکه حافظ ابن حجر رحمته اللہ علیہ فرمائی چې دلته دوه واقعات دي. یو خو د باب د حدیث شریف واقعه چې په کومه کښې د چاندی د تقسیم ذکر دي او دویمه واقعه د حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ نه روایت ده، دا واقعه حضرت علی رضی اللہ عنہ لره د یمن په طرف د روانولو نه پس ده کومه چې په نهمه هجري کښې پېښه شوې وه. په دې کښې سره زر تقسیم شوې وو هغه هم صرف د څلورو کسانو مینځ کښې. اوس دا دوه قصې شوې، په دواړو کښې یو سړی د نبی کریم ﷺ په تقسیم باندې اعتراض اوکړو، البته د حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ په روایت کښې د معترض د نوم وضاحت کړې شوې دي چې هغه ذوالخویصره تمیمی وو (۵) او د حضرت جابر رضی اللہ عنہ په روایت کښې د معترض د نوم وضاحت نه.

(۱) کشف الباری: ۴/۳۰۹.

(۲) د دوی د حالانو دپاره اوگورئ، کتاب الوضوء، باب من لم یر الوضوء الا من المخرجین.....).

(۳) فتح الباری: ۸/۲۸، ۱۲/۲۹، وکشف الباری: کتاب المغازی: ۵۵۳.

(۴) صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب ذکر الخوارج وصفاتهم، رقم (۲۴۴۹).

(۵) پورته حواله. وسنن سعید بن منصور: ۲/۳۲۲، کتاب الجهاد، باب جامع الشهادة، رقم (۲۹۰۲).

(۶) صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوة فی الاسلام، رقم (۳۶۱۰)، وکتاب الادب، باب ما جاء فی قول الرجل: ویلک، رقم (۶۱۶۳)، وکتاب استتابة المرتدين، باب من ترک قتال الخوارج للتالف.....، رقم (۲۹۳۳). د حضرت ابوسعید دا روایت په بخاری شریف کښې په څو ځایونو کښې راغلې دي لیکن مونږ صرف د هغې ځایونو تخریج کړې دي په کومو کښې چې د ذوالخویصره..... [بقیه بر صفحه ۲۸۴].

دې شوې. ددې ابهام د ختمولو دپاره بعضې حضراتو خو دا اوونیل چې د باب په حدیث شریف کښې هم د مبهم رجل نه مراد ذوالخویصره تمیمی دې لیکن بنیاد ئې دا قائم کړو چې په دواړو روایتونو کښې هم یوه قصه ده (جدا جدا واقعات نه دي) لیکن حافظ علیه الرحمة دا یو وهم گرځولې دې.

بیا حافظ رحمته فرمائی چې ما ته د حضرت جابر رضی الله عنه د حدیث یو گواه هم ملاؤ شو، په هغې کښې هم سرې مبهم دې لکه د حضرت عبدالله بن عمرو بن العاص رضی الله عنه نه روایت دې چې د غزوه حنین په موقع باندې نبی کریم صلی الله علیه و آله ته یو سرې راغی، کوم وخت چې نبی صلی الله علیه و آله خه تقسیمول نو هغې سرې اوونیل، "یا محمد! اعدل" لیکن د حضرت عبد الله بن عمرو ددې حدیث دې ابهام لره ابن اسحاق په بنائسته سند سره ختم کړې دې او د حضرت عبد الله بن عمرو نه روایت کولو سره وائی چې دا ذوالخویصره وو، (د)

ددې روایت تخریج امام احمد او طبری هم کړې دې، د هغې الفاظ دادی: "ان ذوالخویصره التیمی رسول الله صلی الله علیه وسلم، وهویقسم الغنائم بحنین، فقال: یا محمد....." (د)

ددې وجې نه ددې روایتونو په ذریعې سره د حضرت جابر رضی الله عنه د روایت د مبهم سرې تعیین اوشو چې هغه ذوالخویصره وو، په دواړو واقعاتو کښې د تطبیق دپاره دا خبره کیدې شي چې معترض په دواړو ځایونو کښې هم دا سرې وو، کله چې د حنین غنیمتونه تقسیمیدل نو هغه وخت هم ذوالخویصره اعتراض کړې وو او د حضرت علی رضی الله عنه د رالیږلې شوی سرو زرو د تقسیم په وخت ئې هم اعتراض کړې وو (والله اعلم بالصواب)

علامه عینی رحمته هم د باب په حدیث کښې مبهم رجل ته ذوالخویصره وئیلې دی او هم دې ته ئې ترجیح ورکړې ده (د)

علامه ذهبي رحمته وغیره د ذوالخویصره نوم حرقوص بن زهیر نقل کړې دې (د).
قوله: قال: لقد شقیتُ ان لم أعدل: نبی کریم صلی الله علیه و آله او فرمائیل زه به شقی شم که عدل اونه کړم.

...بقیه از حاشیه گذشته [د نوم وضاحت راغلې دې، د حضرت ابوسعید خدری رضی الله عنه د حدیث د تشریح دپاره اوگوری، کشف الباری، کتاب المغازی، باب بعث النبی.....: ۵۷۱-۵۷۴، و کتاب الادب، باب ما جاء فی قول الرجل: ویلک: (۵۸۱-۵۸۲)۔

(^۱) سیره ابن هشام: ۴/۴۹۶، امر اموال هوازن.....، اعتراض ذی الخویصره التیمی)۔

(^۲) مسند احمد: ۲/۲۱۹، مسند عبدالله بن عمرو....، رقم (۷۰۳۸)، و تاریخ الامم والملوک للطبری: ۲/۱۷۶، سنة ۸۸هـ)

(^۳) فتح الباری: ۱۲/۲۹۱، وفتح الملهم، کتاب الزکاة، باب ذکر الخوارج.....: ۵/۱۴۸، رقم (۲۴۲۴)۔

(^۴) عمدة القاری: ۱۵/۶۲، ورجعه ابن الجوزی ایضا فی کشف المشمل: ۱/۷۱۱، وقال: هذا الرجل یقال له: ذوالخویصره، كذلك ذکره ابو سعید الخدری فی مسنده)۔

(^۵) عمدة القاری: ۱۵/۶۲، ومثله عند الحافظ فی الفتح: ۱۲/۲۹۲، کتاب استتابة المردتین، رقم (۶۹۳۳)۔

د شقیته معنی د شقیته په لفظ کښې دوه احتمالات دي. د متکلم صیغه ده یا د مخاطب البته اکثر و حضراتو تاء مضمومه سره د متکلم صیغه نقل کړې ده. ددې معنی واضحه ده چې که د عدل نه کار وانخلم نو زه به شقی شم. دلته دا یاد ساتنې چې شرط سره دا لازمی خبره نه ده چې واقع دې هم شی، ځکه چې نبی کریم ﷺ ددې نه بالکل نه دې چې عدل اونه کړی چې هغوی ته شقاوت لازم وی بلک هغوی مبارک خو عادل دی، ددې وجې نه هغوی شقی کیدې نه شی (۱). دویم طرفته قاضی عیاض تاء ته مفتوح یعنی د خطاب صیغه وائی، هم دې خبرې ته علامه نووی او ابن الجوزی هم ترجیح ورکوي، دغه شان اسماعیلی په خپل یو روایت، کوم چې د خپل شیخ المنيعی نه نقل کوي، کښې د عثمان بن عمر عن قره (رضی الله عنه) طریق نه هم مفتوح نقل کړې دې (۲).

په دې دویم صورت کښې به ددې جملې مطلب دا شی چې تہ خو گمراه شوې چې د داسې سړي اقتدار د خپل گمان مطابق، کوي کوم چې عادل نه دې، ښکاره خبره ده چې د ظالم سړي مقتدی او تابعداری کوونکي به هم ظالم وي.

دویم مطلب دادې چې تہ خو گمراه او بدبخت شوې چې هرکله د خپل نبی په باره کښې داسې قسم اعتقاد لرې، چې یو مسلمان ئې هیڅکله نه شی لرلې، تہ خو د اسلام نه خارج

شوې، ښکاره خبره ده چې څوک د اسلام نه خارج شو نو هغه شقی او بدبخت شو (۳). والله اعلم ترجمه الباب سره د حدیث مبارک مطابقت: ظاهراً ددې حدیث د ترجمه الباب سره څه مطابقت

نشته البته دا خبره کیدې شی چې په فئ، انفال، غنائم او اخماس کښې نبی کریم ﷺ ته د تصرف حق حاصل وو او په حدیث شریف کښې د غنیمتونو د تقسیم تذکره ده، او په ترجمه الباب کښې په دې باندې دلالت موجود دې، دغه شان خو به څه نه څه مطابقت پیدا شی

لیکن دا د تکلف او تعسف نه خالی نه ده. هذا ما قاله العيني (۴).

علامه کوراني حنفی رحمہ اللہ فرمائی چې ترجمې سره د حدیث شریف مطابقت د هغه سړي په

قول "اعدل" کښې دې ځکه چې هرکله ذوالخویصره اولیدل چې نبی ﷺ مؤلفه القلوب ته

زیات مال ورکوي نو هغه ته اعتراض پیدا شو او مؤلفه القلوب ته ورکړې کیدونکې مال د

خمس نه وو (۵). په ترجمه کښې خو د خمس ذکر وضاحت سره موجود دې نو مطابقت

او موندلې شو. والله اعلم بالصواب

(۱) فتح الباری: ۲۴۳/۶، وعمدة القاری: ۶۲/۱۵، وارشاد الساری: ۲۱۸/۵، وکشف المشکل من حدیث الصحیحین: (۷۱۱/۱)۔

(۲) پورته حواله جات، وانظر اخبار مكة للفاکهي: ۶۳/۵، رقم (۲۸۴۳)، ذکر مسجد الجعراة وما جاء فيه

(۳) پورته حواله جات، غير اخبار مكة..... والكوثر الجاری: ۱۱۹/۶۔

(۴) عمدة القاری: ۶۱/۱۵۔

(۵) الكوثر الجاری: ۱۱۹/۶، ومثله قال السهارنفوري رحمه الله في الابواب والتراجم:.... [بقية برصفحه آئنده...]

باب: مَا مَنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْأَسَارِيِّ مِنْ غَيْرِ أَنْ يُخَمَّسَ

د ترجمه الباب مقصد دلته هم امام بخاري رحمه الله هم هغه خپله خبره دوباره ذکر کوي چې د وخت امام ته په غنیمت کښې پوره اختیار حاصل دي، هغه په غنیمت کښې هر قسمه تصرف کولې شي، که د خمس جدا کولو نه مخکښې چاته ورکوي نو هم تهیګ ده او که ددې نه پس ورکوي نو هم صحیح ده (۱). کيفيات مصلحته.

د استدلال وجه داده چې نبی ﷺ به په قیدیانو باندې د اصل غنیمت په ذریعې سره احسان کوو او کله د خمس په ذریعې سره، ددې نه دا خبره ثابته شوه چې نبی کریم ﷺ ته په اصل غنیمت کښې هم پوره اختیار حاصل وو، په ترجمه الباب کښې د "من غیر أن یخمس" نه مراد اصل غنیمت دي او بغیر د احسان نه د تخمیس معنی ده د فدیې اخستلو نه بغیر پریخودل (۲) ځکه چې دغه وخته پورې د خمس حکم نازل شوې نه وو، د خمس حکم د بدر نه پس راغلی دي، حسب القول المشهور.

او ابن بطال رحمه الله فرمائی چې دلته د استدلال وجه داده چې د نبی کریم ﷺ دپاره دا خبره بالکل صحیح نه ده چې د داسې کار یا داسې څیز په باره کښې څه اووائی چې که حقیقه واقع شي نو جائز نه وي یعنې د جائز فعل په باره کښې به نبی ﷺ وینا کوي، داسې نه شي کیدي چې د نبی ﷺ بیان کړې شوې یو څیز د واقع کیدو نه مخکښې خو جائز وي او د واقع کیدو نه پس ناجائز، ددې نه ثابته شوه چې د امام دپاره دا جائز دی چې هغه قیدیان د فدیې اخستلو نه بغیر پریږدي، (۳) که دا کار جائز نه وو نو نبی کریم ﷺ به هیڅکله هم د معطم بن عدی د ژوند تمنا نه وه کړې، چونکه دا کار جائز وو نو ددې وجې نه ئې تمنا اوکړه چې که هغه سفارش کړې وي نو ما به هغه د فدیې اخستلو نه بغیر پریخودلې وو.

مجاهدین کله د غنیمت مالکان جوړیږي؟ ددې حدیث شریف نه دا مسئله هم راووتله چې مجاهدین د غنیمت مالکان هغه وخت جوړیږي چې کله مال د تقسیم نه پس د هغوی لاسونو ته راشي هم دا د مالکيه او د حنفیه مذهب دي او د امام شافعي رحمه الله رأي داده چې صرف د غنیمت په حاصلولو سره دوی مالکان جوړیږي (۴).

...بقیه از حاشیه گذشته [فیقول: والوجه عند هذا العبد الضعیف ان النبى ﷺ لما اعطى بعضهم ازید بعض، حمله المعارض على خلاف العدل، كما عند مسلم (رقم ۲۴۴۹)؛ فانه اخرج الحديث اثم ما فى البخارى، وکان تصرفه ﷺ ذلك من الخمس، فطابق الحديث الترجمة. الابواب والتراجم: ۱/۲۰۷] _

(۱) عمدة القاری: ۱۵/۶۲، وفتح الباری: ۶/۲۴۳ _

(۲) پورته حواله جات _

(۳) شرح ابن بطال: ۵/۳۰۴، وفتح الباری: ۶/۲۴۳ _

(۴) فتح الباری: ۶/۲۴۳، وعمدة القاری: ۱۵/۶۲ _ ۶۳ _

۲۹۷. (۱) حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جَبْرِ عَنْ أَبِيهِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ فِي أُسَارَى بَدْرٍ «لَوْ كَانَ الْمُطْعَمُ بْنُ عَدِي حَيًّا، ثُمَّ كَلَّمَنِي فِي هَؤُلَاءِ النَّتْنَى، لَتَرَكْتُهُمْ لَهُ». [۳۷۹۹]

رجال الحديث

- ① اسحاق بن منصور: دا ابو يعقوب اسحاق بن منصور کوسج رحمته الله دي.
- ② عبد الرزاق: دا د مصنف صاحب، امام عبد الرزاق بن همام صنعاني رحمته الله دي. ددي دواړو حالات په کتاب الايمان، "باب حسن اسلام المرم....." کښې تير شوي دي.
- ③ معمر: دا معمر بن راشد رحمته الله دي. ددوی تذکره د بده الوحي په "الحديث الخامس" کښې تيره شوي ده.
- ④ الزهري: دا ابن شهاب زهري رحمته الله دي. د دوی حالات اجمالاً په "بده الوحي" کښې بيان شوي دي.

- ⑤ محمد بن جبير: دا محمد بن جبير بن معطعم بن عدی رحمته الله دي.
- ⑥ ابيه: دا مشهور صحابي حضرت جبير بن معطعم قرشي رحمته الله دي.

قوله: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فِي أُسَارَى بَدْرٍ: لَوْ كَانَ الْمُطْعَمُ بْنُ عَدِي حَيًّا، ثُمَّ كَلَّمَنِي فِي هَؤُلَاءِ النَّتْنَى لَتَرَكْتُهُمْ لَهُ: د حضرت جبير بن مطعم رحمته الله نه روايت دي چې نبي کریم صلی الله علیه و آله د بدر د قيديانو متعلق او فرمائيل چې که مطعم بن عدی ژوندي وو، بيا ئې زما په وړاندې ددې بدبوداره خلقو سفارش کړې وو نو ما به د هغه په خاطر دوی پريخودلي وو.

د مطعم بن عدی د خاص کولو وجه: دوی د مکې مکرمې په سردارانو کښې وو او د شرک په حالت کښې وفات شوي وو، ليکن دده په نبي کریم صلی الله علیه و آله باندې دوه احسانات وو، يو خو دا چې کله نبي کریم صلی الله علیه و آله طائف ته د دعوت دپاره تشریف يوړلو او واپس راغلل نو هغه وخت ورته مطعم پناه ورکړې وه. دويم احسان دا وو چې د مکې مکرمې مشرکانو کله د بنوهاشم

(۱) قوله: عن ابيه رحمته الله: الحديث، أخرجه البخاري أيضاً، كتاب المغازی، باب (بلا ترجمة) بعد باب شهود..... رقم (۴۰۲۴)، و ابو داود، كتاب الجهاد، باب في المن على الاسير بغير فداء، رقم (۲۶۸۹).

(۲) كشف الباری: ۲/ ۴۲۰ - ۴۲۱ -

(۳) كشف الباری: ۱/ ۴۶۵ -

(۴) كشف الباری: ۱/ ۳۲۶، الحديث الثالث -

(۵) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الاذان، باب الجهر في المغرب -

(۶) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الغسل، باب من افاض على راسه ثلاثاً -

او بنو مطلب سره مقاطعه او باینکات کړې وو نو په دغه مقاطعه ختمولو کښې د مطعم لوڼې کردار وروڼه هم ددې احساناتو د وجې نه نښې کریم ﷺ داپورتنې جمله ارشاد او فرمائيله: **النتق دا جمع ده، ددې مفرد نَنْ وَتَيْنِ دې لکه څنگه چې د زَمَن جمع زَمَان او د جَزْم جمع جَزَم راځي، ددې معنی ده بدبودار او د بدر قیدیان ترینه مراد دی.**

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: ترجمه الباب سره ددې حدیث شریف مطابقت په دې معنی کښې دې چې نبي کریم ﷺ ددې خواهش اظهار کوی چې که داسې وې نو ما به داسې کړې وو، ښکاره خبره ده چې دغه مذکوره خواهش که چرته جائز نه وو نو ددې اظهار به ئې ولې کوو؟ معلومه شوه چې امام په غنیمت کښې پوره تصرف او اختیار لري، د خمس ویستلو نه بغیر هم په غنیمت کښې تصرف کولې شی. **والله اعلم بالصواب**

①۴ باب: بَابُ وَمِنْ الدَّلِيلِ عَلَى أَنَّ الْخُمْسَ لِلْإِمَامِ

وَأَنَّهُ يُعْطَى بَعْضَ قَرَابَتِهِ دُونَ بَعْضٍ

مَا قَسَمَ النَّبِيُّ -صلى الله عليه وسلم- لِيُنِي الْمَطْلَبَ وَيُنِي هَاشِمٍ مِنْ خُمُسٍ خَيْرٍ.
د ترجمه الباب مقصد: دا يو بل باب دې، وړاندې دغه شان خو بابونه تیر شوي دي، دلته هم امام بخاري رحمه الله دا فرمائی چې امام او حاکم د خمس په معامله کښې د تصرف پوره اختیار لري، څنگه چې غواړي نو په کښې تصرف کولې شی، خپلو بعضو رشته دارانو ته ورکوي او بعضو ته نه ورکوي نو داسې کولې شی.

وړاندې په باب "ومن الدليل على أن الخمس لنواب رسول الله صلى الله عليه وسلم...." کښې د مذهبونو تفصیل تیر شوې دې، په هغې کښې دا بیان شوې وو چې د احنافو په نزد اوس د ذوی القربى حق ساقط شوې دې او امام مالک ئې د خمس مصرف خو منی لیکن د خمس مستحق ئې نه منی. هلته دا هم ذکر کړې شوې وو چې امام بخاري رحمه الله په دې مسئله د امام مالک ملگري دې، دا موجود باب هم ددې سلسلې یوه کړۍ ده لکه د مصنف د رائي مطابق ذوی القربى مستحق نه دی، د خمس د نورو مصرفونو په شان صرف مصرف دی، امام ته اختیار دې چرته چې غواړي نو خرچ کولې شی، ذوی القربى ته ورکوي یا نه ورکوي، گویا دا

(۱) عمدة القاری: ۶۲/۱۵، وکشف الباری، کتاب المغازی: (۱۷۲)۔

(۲) العمدة ۶۲/۱۵، والفتح الباری: ۲۴۴/۶، واعلام الحديث للخطابی: ۱۴۵۵/۲، والکوثر الجاری: ۱۲۰/۶۔

(۳) عمدة القاری: ۶۲/۱۵، وشرح ابن بطال: (۳۰۴/۵)۔ قال الکورانى رحمه الله (الکوثر الجاری: ۱۲۰/۶): فان قلت: ليس فى الباب دلالة على انه من على احد من غير ان يخمس؟ قلت: قوله: لو كان مطعم حيا، وکلنى فيهم لترکتهم له كاف فى الدلالة۔

(۴) عمدة القاری: ۶۳/۱۵، والکوثر الجاری: ۱۲۱/۶، والابواب والتراجم: (۲۰۷/۱)۔

باب ذوالقربی سره متعلق دې. د مزید تفصیل دپاره دې هغه باب دوباره دې اوکتلی شی د کوم باب چې حواله ورکړې شوه.

دا خو د امام بخاری رحمته الله علیه دعوی ده او په دلیل کښې هغوی یو خو د حضرت عمر بن عبدالعزیز رحمته الله علیه قول نقل کړې دې او دویم ئې د حضرت جبیر رضی الله عنه حدیث نقل کړې دې.

د ترجمه الباب په الفاظو کښې تقدیم او تاخیر دې، لکه د "ومن الدلیل....دون بعض" پورې خبرمقدم دې او "ما قسم النبی الی آخره" مبتداء مؤخر ده (۱).

د بنی المطلب نه مراد المطلب بن عبد مناف دې کوم چې د نبی کریم صلی الله علیه و آله د نیکه عبدالمطلب تره دې، دا خلور ورونړه وو، مطلب، هاشم، نوفل او عبدشمس، ددې ټولو پلار عبد مناف دې (۲).

قَالَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ لَمْ يَعْزِمُ بِذَلِكَ، وَلَمْ يُخَصَّ قَرِيبًا دُونَ مَنْ أُخُوِّ إِلَيْهِ، وَإِنْ كَانَ الَّذِي أُعْطِيَ لِمَا يَشْكُو إِلَيْهِ مِنَ الْحَاجَةِ، وَلِمَا مَسَّتْهُمْ فِي جَنْبِهِ، مِنْ قَوْمِهِمْ وَخَلْقَائِهِمْ.

د مذکوره تعلیق لغوی او نحوی نچوږ په دې تعلیق باندې د پوهیدلو نه مخکښې ددې لغوی او نحوی تحلیل او گورئ.

په لم یعم کښې ضمیر فاعل نبی کریم صلی الله علیه و آله او ضمیر مفعول "هم" د قریش طرفته راجع کیږي کوم چې د نبی کریم صلی الله علیه و آله رسته دار دی.

د بڼک نه مراد بیا قسمه یعنی د غنیمت تقسیم دې، یا اعطاء الخمس دې، دویم راجع دې ځکه چې بحث د خمس جاری دې.

په دون من احوج إليه کښې د موصول عائد یعنی "هو" محذوف دې، اصل عبارت دغه شان پکار وو: "دون من هو احوج إليه" ابن مالک وائی چې داسې ډیر کم کیږي چې د موصول عائد محذوف

وی لکه د قرآن کریم په آیت (تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ) کښې یو قراءت د یحیی بن یعمر دې، هغه احسن د نون په ضمی سره روایت کوی، دا ددې وجې نه ضعیف ښودلې شوې دې چې په

دې کښې د عائد حذف موندلې کیږي یعنی اصل عبارت دادې: "تَمَامًا عَلَى الَّذِي هُوَ أَحْسَنُ". مزید فرمائی چې که کلام اوږد شی نو په دې کښې هېڅ حرج نشته، ددې دلیل د قرآن کریم

آیت: وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهُ فِي الْأَرْضِ إِلَهُ (۲) دې، په دې کښې د عائد حذف هم موندلې کیږي ځکه چې اصل عبارت دغه شان پکار وو: "وَفِي الْأَرْضِ هُوَ إِلَهُ" البته دا ضرری نه ده ځکه چې

کلام اوږد دې. علامه عینی رحمته الله علیه فرمائی چې په بعضې نسخو کښې "دون من هو احوج إليه"

(۱) عمدة القاری: ۶۳/۱۵)۔

(۲) پورته حواله، وسيرة ابن هشام: ۱۰۶/۱، اولاد عبد مناف وامهاتهم، اردو)۔

(۳) الانعام: ۱۵۴)۔

(۴) الزخرف: ۸۴)۔

ذکر دي، په دې صورت کښې ددې ټولو تکلفاتو ضرورت نشته. او ”أحوج“ د أوجه إلیه غیره نه دي، د احتاج یعنی محتاج کیدو په معنی کښې دي.

اعطی اکثر و حضراتو معروف بنودلې دي، په دې صورت کښې به ضمیر د نبی کریم ﷺ طرفته راجع کیږي. او علامه عینی ټي مجهول گرځوی او ددې معنی دا بیانوي: ”وإن كان الذي أعطى أبعد قرابة ممن لم يعط“ دلته د کان خبر محذوف دي، یعنی ممن لم يعط.

”لما يشكوه...“ جمله تعلیلیه ده، ځکه چې لرې رسته دار ته د ورکولو علت په کښې بیانېږي. ”ولما مستهم“ دا په اولنی لما باندې عطف دي او دواړو ځایونو کښې لمام مکسوره سره ده، دا لما میم مشدده سره نه ده.

”جنبه“ ددې معنی ده طرف او جهت.

”خلفاءهم“ حاء مهمله سره دا د حلیف جمع ده او په دې کښې هغه تکلیفونو او مصیبتونو طرفته اشاره ده کوم چې د مکې مکرمې د قریشو او د هغوی د ملگرو له طرفه نبی کریم ﷺ او صحابه کرامو رضی الله تعالی عندهم ته ورکړې شوې وو. (۱).

د مذکوره تعلیق مطلب: د حضرت عمر بن عبدالعزیز ددې تعلیق مطلب دادې چې نبی کریم ﷺ په ذوی القربی (قریشو) کښې ټولو ته ورنه کړه، نه ئې داسې او کړل چې څوک زیات ضرورت مند دي نو د هغه د ضرورت لحاظ نه ساتلو سره ئې نزدې کس ته ورکړو، بلکه ددې خلاف ئې او کړل چې یو نزدې کس دي، زیات ضرورت مند نه دي، دویم لرې کس دي لیکن زیات محتاج او ضرورت مند دي نو کوم چې زیات ضرورت مند دي او نزدې نه دي نو نبی کریم ﷺ هغه ته ورکړه او کوم کس چې نزدې دي لیکن ضرورت مند نه دي نو هغه ته ئې ورنه کړه.

او په دې ورکړه کښې ئې د دوو څیزونو خیال او ساتلو چې دهغې بیان په ”لما يشكوه“ کښې دي، یو احتیاج او ضرورت، دویم خیز نصرت او مدد ځکه چې د اسلام په شروع زمانه کښې په مسلمانانو باندې د غمونو بارانونه وو، هغه وخت دا خلق د ظلم وستم په مقابله کښې ثابت قدم پاتې شو او د الله تعالی او د هغه د رسول ﷺ مدد او تعاون ئې کوو. (۲).

د مذکوره تعلیق مقصد: ددې تعلیق مقصد خو پورتنی تقریر سره واضح شو چې امام ته اختیار دي چې د خمس مال چرته غواړي نو خرچ کولې شي، په دې کښې د هیچا تخصیص نشته، هم دا د امام مالک رحمه الله مذهب دي کوم چې امام بخاری رحمه الله اختیار کړې دي. ترجمې سره د تعلیق مناسبت: اوس ترجمه الباب سره ددې تعلیق مناسبت بالکل واضح شوي دي، امام بخاری رحمه الله چې د پوره تصرف کومه دعوی کړې وه، په هغې باندې د حضرت عمر

(۱) عمدة القاری: ۶۳/۱۵، وفتح الباری: ۶/۲۴۴، وارشاد الساری: ۵/۲۱۹، وشرح ابن بطلال: ۵/۳۰۶. (۲) عمدة القاری: ۶۳/۱۵، وفتح الباری: ۶/۲۴۴، وشرح القسطلانی: ۵/۲۱۰.

بن عبد العزيز رحمه الله ارشاد واضح طور سره دلالت کوي. په دې تعليق سره ضمن کښې د احنافو مذهب هم ثابتېږي، احناف دا فرماني چې ذوی القربى به د حصې مستحق وي ليکن د ضرورت او احتياج په بناء باندې، هم دا دوه څيزونه حضرت عمر بن عبدالعزيز په "لما يشکو..... إلى آخره" کښې بيان کړي دي، تفصيل وړاندې تير شو. (۱)

د ذکر کړې شوي تعليق تخریج: دا تعليق ابو زيد عمر بن شبة په خپل کتاب اخبار المدينة کښې موصولا او مطولا نقل کړې دي، هغې کښې دا د يو خط په شکل کښې دي، کوم چې حضرت عمر بن عبدالعزيز رحمه الله يو قریشي ته ليکلې وو، د هغې ابتدائي جملې داوې:

"اما بعد! فان الله تبارك وتعالى انزل القرآن على محمد، هدى وبصائر لقوم يؤمنون....." (۲)

۲۹۷۱: (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ قَالَ مَشَيْتُ أَنَا وَعُمَانُ بْنُ عَفَّانَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ، أُعْطِيتَ بَيْنَ الْمُطَّلِبِ وَتَرْكُتْنَا، وَنَحْنُ وَهُمْ مِنْكَ بِمَنْزِلَةٍ وَاحِدَةٍ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «إِنَّمَا بَنُو الْمُطَّلِبِ وَبَنُو هَاشِمٍ شَيْءٌ وَوَاحِدٌ».

رجال الحديث

① عبدالله بن يوسف: دا عبدالله بن يوسف تنيسي رحمه الله دي. د دوی حالات اجمالاً د بده الوسی په "الحديث الثاني" کښې تير شوي دي. (۳)

② الليث، عقیل، ابن شهاب: ددې درې واړو حضراتو حالات د بده الوسی په "الحديث الثالث" کښې تير شوي دي. (۴)

⑤ ابن المسيب: دا مشهور تابعی محدث حضرت سعید بن المسيب رحمه الله دي. د دوی تذکره د کتاب الايمان، "باب من قال: إن الايمان هو العمل" په ضمن کښې تيره شوي ده. (۵)

(۱) اردو باب ومن الدليل على ان الخمس لنواب رسول الله ﷺ..... باب رقم (۶)، (۱) -

(۲) تغليق التعليق: ۴۷۸/۳، وکتاب اخبار المدينة: ۱۳۲/۱، خصومة علي والعباس الى عمر رضي الله عنه - رقم، (۵۷۷). او د حضرت عمر بن عبد العزيز رحمه الله حالاتو دپاره اوگوري، کشف الباري: ۶۲۳/۱ -

(۳) قوله: عن جبير..... الحديث، اخرجه البخاري ايضاً، كتاب المناقب، باب مناقب قريش، رقم (۳۵۰۲)، وکتاب المغازی، باب غزوة خيبر، رقم (۴۲۲۹)، و ابو داود، کتاب الخراج والامارة.....، باب بيان مواضع قسم الخمس.....، رقم (۲۹۷۸ - ۲۹۸۰)، والنساء، کتاب الفیء، رقم (۴۱۴ - ۴۱۴۲)، وابن ماجه، کتاب الجهاد، باب فسة الخمس، رقم (۲۸۸۱) -

(۴) کشف الباري: ۲۸۹/۱ -

(۵) کشف الباري: ۳۲۴/۱ - ۳۲۶ -

(۶) کشف الباري: ۱۵۹/۲ -

⑥ جبير بن مطعم: دا حضرت جبير بن مطعم بن عدي رضي الله عنه دي. (۱)

د حديث مبارك ترجمه: حضرت جبير بن مطعم رضي الله عنه فرمائي چې زه او عثمان بن عفان رضي الله عنه د نبی اکرم صلی الله علیه و آله خدمت اقدس کښې حاضر شو او مونږ او وئيل چې يا رسول الله! تاسو خو بنو المطلب ته ورکړه او کړه ليکن مونږ مو محروم او ساتلو، حالانکه مونږ د يو جدا شان حاملين يو؟ جواب کښې نبی کریم صلی الله علیه و آله او فرمائيل چې بنو المطلب او بنو هاشم خو يو څيز دي. ترجمه الباب سره د حديث مطابقت وړاندې چې کوم تفصيل تير شو نو د هغې په رڼا کښې ددې حديث شريف ترجمه الباب سره مناسبت او مطابقت بالکل واضح او ښکاره دي.

خبر داوي: ددې حديث شريف تشريح وړاندې هم په کتاب الخمس کښې ”باب ومن الدليل على ان الخمس لنوائب رسول الله“ او په کتاب المغازی (۲) کښې تيره شوې ده، البته مونږ به دلته بعضې فائدي ذکر کوو.

په شئ واحد کښې د نسخو او د روايتونو اختلاف: علامه خطابی رحمته الله ليکلي دي چې دا حديث زمونږ نه حسن بن صالح روايت کړې دي او مونږ د ابن المنذر نه، په دې کښې ”شئ واحد“ راغلي دي، يعنې د سين مهمله کسره او د ياء د تشديد سره، ددې معنی ده هم مثل يعنی يو شان (۳).

حافظ عليه الرحمة فرمائي چې ما سره چې د بخاری شريف کومه اصل نسخه ده، په هغې کښې د کشميهې په روايت کښې د باب حديث، په مغازی کښې د مستملی روايت او د قریشو په مناقبو کښې د مستملی او د حموی په روايت کښې سي. بکسر السين المهملة وتشديد التحيانية. دي، ابن معين رحمته الله به هم دغه شان سين مهمله سره روايت کوو او خطابی رحمته الله هم دې روايت ته صحيح وئيلې دي (۴). البته اکثر و حضراتو دا لفظ د شين معجمه سره نقل کړې دي، قاضي عياض رحمته الله فرمائي چې په بخاری شريف کښې خو مونږ ته هم دغه روايت د څه اختلاف نه بغير رارسيدلې دي ليکن د بخاری نه علاوه کتابونو کښې د سي والا روايت دي او د اکثر و نقل کرده روايت صحيح دي، ددې واضح دليل د حديث مبارك دا الفاظ دي، ”وشبك بين اصابعه“ (۵) چې نبی کریم صلی الله علیه و آله تشبيک بين الاصابع کړې دي، يعنی څنگه چې دا دوه گوتې خپل مينځ کښې ملاؤ دي، دغه شان بنو هاشم او بنو المطلب هم خپلو

(۱) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الفسل، باب من افاض على راسه ثلاثاً.

(۲) کشف الباری، کتاب المغازی: (۴۴۴).

(۳) تلخيص الجبر، کتاب قسم الفیء والغنیمه: ۱۰۱/۳، رقم (۱۳۸۷)، وکشف المشکل: ۴/ من مسند جبير بن مطعم، رقم ((۲۸۵۶)).

(۴) فتح الباری: ۲۴۵/۶، وعمدة القاری: ۶۴/۱۵.

(۵) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الخراج.....، باب بيان مواضع قسم الخمس، رقم (۲۸۹۰).

کښې یو دی چونکه دلته مساوات بیانول مقصود دی، مماثلت او یوشان والې بیانول مقصود نه دی او نبی ﷺ دا وئیل غواړي چې مونږ او بنوالمطلب یو او مساوی یو (۱).
واحد یا احد: بیا په دې ځان پوهه کړئ چې په اکثر روایتونو کښې واحد دی، لیکن د ابو زید مروزي په روایت کښې شی احد راغلې دی نو بعضو اووئیل چې د دواړو لفظونو یو معنی ده (۲).

قَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ وَزَادَ قَالَ جَبْرِوَلَمْ يَقْسِمِ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - لَيَنِي عَبْدُ شَمْسٍ وَلَا لَيَنِي نُوْفَلٌ. وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ عَبْدُ شَمْسٍ وَهَاشِمٌ وَالْمُطَّلِبُ إِخْوَةٌ لِأُمِّهِ، وَأُمُّهُمْ عَاتِكَةُ بِنْتُ مَرْثَةَ، وَكَانَ نُوْفَلٌ أَخَاهُمْ لِأَبِيهِمْ. [۳۹۸۹، ۳۳۱۱].

لیث بن سعد وائی چې هم دا حدیث ماته یونس بن یزید ایلی هم روایت کړې دي، هغوی په خپل روایت کښې ددې الفاظو زیاتوالي کړې دي چې نبی کریم ﷺ بنو عبد شمس او بنو نوفل ته په خمس کښې نه وه ورکړې.....

د مذکوره تعلیق تخریج: دا تعلیق امام بخاری رحمه الله موصولاً او مسنداً په کتاب المغازی (۳) کښې د یحیی بن بکیر په طریق سره ذکر کړې دي (۴) لیکن حافظ فرمائی چې د عبد الله بن یوسف عن الليث د طریق نه هم دا روایت ما سره دي، دغه شان به دا روایت موصول وي، معلق نه (۵) لیکن معلق کیدل زیات راجح دی، ځکه چې حافظ په خپله هم دا روایت په خپل کتاب تغلیق التعلیقک په تعلیقاتو کښې شمار کړې دي (۶).

د مذکوره تعلیق مقصد: ددې مقصد واضح دي، کوم چې په لفظ د "وژاد" کښې موجود دي چې لیث د یونس بن یزید (۷) نه هم دا روایت اخستلې دي، په هغې کښې دا اضافه هم ده چې د حضرت جبیر بن مطعم (د دوی تعلق بنو نوفل سره وو) او د حضرت عثمان بن عفان (د دوی تعلق د بنو عبد شمس سره وو) د ژباړه دواړو د گزارش باوجود دوی ته هیڅ هم ورته کرل لکه څنګه چې د مغازی په روایت کښې د "شیئاً" الفاظ هم دي.

ترجمة الباب سره د تعلیق مناسبت: دلته مناسبت واضح دي چې ددې دواړو حضراتو د

(۱) فتح الباری: ۲۴۵/۶، وعمدة القاری: ۶۴/۱۵. _

(۲) پورته حواله جات. _

(۳) کتاب المغازی، باب عروة خیبر، رقم (۴۲۲۹). _

(۴) فتح الباری: ۲۴۵/۶، وعمدة القاری: ۶۴/۱۵، وارشاد الساری: ۳۱۹/۵. _

(۵) فتح الباری: ۲۴۵/۶. _

(۶) تغلیق التعلیق: ۴۷۹/۳. _

(۷) د یونس بن یزید ایلی رحمه الله حالات اجمالاً بدء الوحی: (۴۶۳/۱) او تفصیل سره کتاب العلم، باب من یرد الله به خیراً..... (۲۸۲/۳) کښې تیر شوي دي. _

گزارش باوجود نبی ﷺ دوی ته په خمس کښې هیڅ هم ورنه کړل، دا ددې خبرې د ثابتولو دپاره کافی ده چې په دې کارونو کښې اصل تصرف د امام دې، هغه چې څنگه او چرته غواړي نو صرف کولې شی، په هغه باندې هیڅ پابندی نشته. والله اعلم

قوله: وقال ابن اسحاق: عبد شمس وهاشم والمطلب إخوة لامر، وأمههم عاتكة

بنت مرة، وكان نوفل أخاهم لا يهيم: او ابن اسحاق وائی چې عبد شمس، هاشم او مطلب د یو مور نه وو، د دوی مور عاتکه بنت مره ده. او نوفل ددې ټولو پلار شریک ورور وو، یعنې د هغه مور دویمه وه. د عبد مناف د دوو ښځو نه څلور نارینه اولاد وو، چې په هغوی کښې د دریو مور خو عاتکه بنت مره بن هلال وه، ددې تعلق د بنو سلیم سره وو او د نوفل مور واقده بنت عمرو ده، ددې تعلق د بنو مازن سره وو. (۱)

امام ابن جریر لیکلې دی چې هاشم او عبد شمس دواړه په یو وخت پیدا شوي وو، د پیدائش په وخت هاشم اول پیدا شو لیکن د هغه یو خپه د عبد شمس د سر سره پیوسته وه، د جدا کولو په کوشش کښې دواړو اندامونو (سر او خپه) نه وینه روانه شوه، هغه وخت خلقو دا غلط خیال کوو چې ددې دواړو په اولاد کښې به جنگونه وي او وړاندې هم دغه شان اوشوه لکه په یوسل درې دیر شمه ۱۳۳ هجری کښې د بنو العباس او د بنو امیه بن عبد شمس مینځ کښې څو جنگونه اوشو. (۲)

ددې نه علاوه زبیر بن بکار په "نسب" کښې لیکلې دی چې خلقو به هاشم او مطلب ته د بنائست او د زینت د وجې نه بدران او عبد شمس او نوفل ته ابهران وئیل په دې کښې ددې خبرې دلالت دې چې په دې دواړو کښې یو خاص قسم تعلق او محبت وو چې وروستو بیا د دوی په اولاد کښې هم جاری وو، ددې وجې نه چې هر کله قریشو اتفاق سره د بنو هاشم مقاطعه او کره او په شعب ابی طالب کښې دوی پناه واخسته نو هغه وخت بنوالمطلب هم د بنو هاشم سره په شعب ابی طالب کښې داخل شو او بنو عبد شمس او بنو نوفل د قریشو سره د دوی په مقاطعه کوونکو کښې شامل وو او په شعب ابی طالب کښې داخل نه شو. (۳) په دې وادې کښې چې د دواړو قبیلو کوم خلق داخل شو، په هغې کښې دواړه قسم خلق وو، مسلمانان او مشرکان، مسلمانان خو ددې وجې نه داخل شو چې د هغوی مرګ او ژوند د نبی کریم ﷺ سره وو نو د الله او د رسول ﷺ په اطاعت کښې دا خلق دغه ځانې کښې قید وو او کفار د قبائلی غیرت په بنیاد او د ابو طالب په اطاعت کښې دغه ځانې کښې قید شو. هم په دې باندې ابو طالب یو مشهوره قصیده وئیلې ده چې "لامیه" سره مشهوره ده، په دې

(۱) سيرة ابن هشام: ۱/۱۰۶، اولاد مناف وامهاتهم).

(۲) پورته حواله، وفتح الباری: ۶/۲۴۵، وعمدة القاری: ۱۵/۶۴).

(۳) عمدة القاری: ۱۵/۶۴، وتاریخ ابن جریر: ۱/۵۰۴، ذکر نسب رسول الله ﷺ، ابن هاشم).

(۴) فتح الباری: ۶/۲۴۵، والکامل فی التاریخ: ۱/۵۵۴، نسب رسول الله ﷺ، و ذکر اخبار آباءه.....).

کښې هغوی د بنو نوفل او د بنو عبد شمس مذمت بیان کړې دي. دا قصیده په یو سل لس بیتونو باندې مشتمله ده، چې د هغې نه مونږ صرف څلور بیتونه لاندې ذکر کوو:

جزی الله عنا عبد شمس ونوفلا عقوبة شرها جل غیر آجل
 همیزان قسط لا یفیض شعیرة له شاهد من نفسه حق عادل
 لقد سفهت اخلاق قوم تهدلوا بنی خلف قیها ینا والعیاطل
 ونحن الصمیم من ذذابة هاشم وآل قصی فی الخطوب الاوائل (۱)

د بیتونو ترجمه: ① الله تعالی دې زمونږ له طرفه عبد شمس او نوفل ته خرابه بدله ورکړې، چې زړوی او غیر مؤخرویی.

② داسې د عدل میزان سره، چې د یو اوربشې برابر مقدار هم پرینږدی، په دې باندې هم د هغوی نه یو حق گو گواه وی.

③ د هغې قوم اخلاق خراب شو، چا چې مونږ پریځودو او بنو خلف بن جمع او غیاطل (بنو سهم) ئې خپل کړل.

④ مونږ د هاشم او د آل قصی د نسل خالص النسب خلق یو په اولنی تیر شوو حادثاتو کښې د تعلیق مقصد: لکه څنګه چې تاسو او کتل دوی ټول په نسب کښې برابر دی، لیکن نبی کریم ﷺ بعضو ته څه ورکړل او بعضو ته ئې ورنه کړل، نو دا ددې خبرې دلیل دی چې د نزدې کسانو ته ورکول علت نه دي، هم په دې خبره باندې د خبرداری دپاره امام بخاری رحمه الله دا تعلیق ذکر کړې دي (۲).

د مذکوره تعلیق تخریج: د امام محمد بن اسحاق، د صاحب المغازی دا تعلیق امام بخاری رحمه الله په خپل تاریخ کبیر و صغیر دواړو کښې د اسماعیل بن ابی اویس د طریق نه موصولا نقل کړې دي (۳)، ددې نه علاوه ابن جریر او زبیر بن بکار هم دا تعلیق ذکر کړې دي (۴).

①۸ باب: باب مَنْ لَمْ يُخَمِّسِ الْأَسْلَابَ. وَمَنْ قَتَلَ قَتِيلًا

فَلَهُ سَلْبُهُ مِنْ غَيْرِ أَنْ يُخَمِّسَ، وَحُكْمُ الْإِمَامِ فِيهِ.

لغوی او اصطلاحی اسلاب: اسلاب د سلب جمع ده، سلب د سین او د لام فتحې سره مصدر په معنی د مسلوب کښې دي، په دې کښې یو لغت د لام سکون سره هم دي، ددې معنی ده په

(۱) عمدة القاری: ۶۵/۱۵، و ذکر اوله فی زاد المعاد: ۳/۳۰، فصل (اسلام حمزة....)، وکامله فی سيرة ابن هشام: ۱/۲۷۲_۲۸۰، شعر ابی طالب فی استعطاف قریش، والروض الانف: ۱/۱۷۴_۱۷۹، فصل فی ذکر قصيدة لامية ابی طالب....)

(۲) لامع الدراری: ۳۱۱/۷.

(۳) فتح الباری: ۲۴۵/۶، و تغلیق التعلیق: ۴۷۹/۳، و التاريخ الكبير: ۴/۱، و التاريخ الصغير: ۶/۱.

(۴) عمدة القاری: ۶۴/۱۵، و تاریخ ابن جریر: ۵۰۴/۱.

زور سره اخستلې شوې ځکه چې سلبه معنی ده اخستل (۱).

اصطلاحاً ما یوجد مع المحارب من ملهوس وغیره، عند الجمهور (۲) یعنی جنگجو سره چې کوم لباس او اسلحه وغیره وی نو په هغې باندې ددې اطلاق کیږي. د سلب په احکاماتو کېنې ډیر تفصیلات دي چې هغه به مونږ ترتیب سره ذکر کوو.

تکلیفی حکم (د سلب مشروعیت): د امت د جمهورو فقهاء کرامو رحمهم الله موقف او رائي داده چې یو مسلمان مجاهد چې د جنگ دوران کېنې وړاندې شي او یو مشرک قتل کړي نو کوم مال و اسباب چې دغه مشرک سره وي، د هغې مستحق دا مسلمان مجاهد دي، په دې کېنې هیڅ اختلاف نشته. البته په دې کېنې د فقهاؤ اختلاف دي چې آیا ددې دپاره د امام اجازت هم ضروري دي یا نه؟

① نو د احنافو نه علاوه د نورو ټولو حضراتو، سوا د امام مالک نه، دا وائي چې ددې دپاره د امام د اجازت هیڅ ضرورت نشته، امام د سلب وضاحت او کړي یا اونه کړي، مجاهد به په هر حال کېنې ددې مستحق او حقدار وي.

② حضرات حنفیه کثر الله سوادهم ددې دپاره د امام اجازت شرط گرځوي، مثلاً امام دا او وائي چې د غنیمت جمع کیدو نه مخکېنې څوک یو کس قتل کړي فله سلبه یعنی د هغه سازو سامان به دده دپاره وي، ورنه په نورو صورتونو کېنې به دا سلب هم د غنیمت حصه وي چې د مجاهدینو مینځ کېنې به تقسیمېږي (۳).

امام طحاوی رحمهم الله فرمائي: "أمر السلب موكول للامام فيرى فيه رايه...." (۴).

③ د موالکو مذهب هم احنافو ته نژدې نژدې دي لیکن هغوی دا وائي چې د امام دپاره دا مناسب نه دی چې ابتداء کېنې هغه دغه شان د څه خبرې شرط اولگوي، البته د جنگ ختمیدو نه پس څه داسې خبره کیدې شي، ددې وجې نه چې د مجاهد په نیت کېنې فساد رانه شي. اصل کېنې مالکيه سلب هم د نفل حصه گرځوي نو د نفل په سلسله کېنې چې د هغوی کوم مذهب تیر شو هم هغه مذهب د هغوی په سلب کېنې هم دي (۵).

د امامانو دلیونه:

د جمهورو دلائل: په دې سلسله کېنې د جمهورو دلیل خو یو مشهور حدیث مبارک دي چې "من قتل قتيلاً، له عليه بيعة، فله سلبه" (۶) او دویم دلیل د حضرت سعد بن ابی وقاص رضي الله عنه قول

(۱) فتح الباری: ۲۴۷/۶، وعمدة القاری: ۶۵/۱۵، والاوجز: ۹/۱۸۵، والموسوعة: ۱۷۶/۲۵.

(۲) پورته حواله جات، ولسان العرب: ۳۱۷/۶، باب السین، مادة: سلب.

(۳) عمدة القاری: ۶۵/۱۵، وحاشیه ابن عابدین: ۲۶۰/۳، مطلب فی التنفیل، وفتح الباری: ۲۴۸/۶.

(۴) شرح معانی الآثار: ۱۴۶/۲، ۱۵۰، باب الرجل يقتل قتيلاً فی دار الحرب....

(۵) المنتقى: ۱۹۱/۳، والاوجز: ۹/۱۹۴، والشرح الكبير للدردير: ۱۹۰/۲.

(۶) رواه البخاری، ف. باب، واخرجه الجماعة غیر النسائي من حدیث.... [بقیه بر صفحه آنده...]

دې. "اللهم ارمقني رجلاً شديداً.....حق اقتله وأخذ سلبه" (د استدلال وجه داده چې دا احاديث مطلق او عام دی، په دې کښې هېڅ قسم قيد نشته).
 د احنافو دليلونه د احنافو يو دليل د حضرت عوف بن مالک رضي الله عنه حديث دي، فرماني:
 "ان مددياً اتبعهم قتل علجاً، فأخذ خالد بعض سلبه، وأعطاه بعضه، فذكر ذلك لرسول الله صلى الله عليه وسلم، فقال: لا تروء عليه يا خالد" (د).

"يو معاون هم دوی سره سره لاړو او هغه یو بهادر کافر قتل کړو نو حضرت خالد بن ولید رضي الله عنه د سلب بعضې حصه په خپله کيځوده او باقی حصه یې دغه سړی ته ورکړه، ددې ذکر نبي کریم صلی الله علیه و آله ته او کړې شو نو نبي صلی الله علیه و آله او فرمائیل، انې خالده! څه چې تا اخستلې دی نو هغه سړی ته یې مه واپس کوه"

دویم دلیل د باب حدیث دي، په کوم کښې چې د ابو جهل لعین د قتل قصه ذکر ده. په دې کښې نبي کریم صلی الله علیه و آله سلب معاذ بن جموح رضي الله عنه ته ورکړې وو (۵).
 دریم دلیل د شبر بن علقمه واقع ده، فرماني:

"بازنرت رجلاً یوم القادسیة قتلته، وأخذت سلبه، فأتیت به سعداً، فخطب سعد أصحابه، ثم قال: ان هذا

...بقیه از حاشیه گذشته] ابی قتاده رضي الله عنه، انظر جامع الاصول وتعليقاته: ۶۸۷/۲-۶۸۸، بوابن ماجه. کتاب الجهاد، باب المبارزة والسلب، رقم (۲۸۳۷).
 (۱) هو بعض حديث سعد بن ابی وقاص رضي الله عنه، أخرجه الحاكم، وكامله:

.....ان عبد الله بن جحش قال يوم احد: لا تأتي ندعوا الله؟ فخلوا في ناحية، فدعا سعد، فقال: يا رب، اذا لقينا القوم فلقيني رجلاً شديداً باسه، شديداً حرد، فاقاتله فيك، ويقاتلني، قم ارزقني عليه الظفر، حتى اقتله وأخذ سلبه. فقام عبدالله بن جحش، ثم قال: اللهم ارزقني غدارجلاً شديداً حرد، شديداً باسه، اقاتله فيك ويقاتلني، ثم ياخذني؛ فيجدع انفى واذنى، فاذا لقيتك غدا قلت: يا عبدالله، فيم جدع انفك واذنك؟ فاقول: فيك، وفي رسولك، فيقول: صدقت. قال سعد بن ابی وقاص: يا بنی، كانت دعوة عبد الله بن جحش خيراً من دعوتی، لقد رايته آخر النهار وان اذنه وانفه لمعلقان في خيط. انظر: المستدرک: ۸۶/۲، کتاب الجهاد، رقم (۲۴۰۹)، واخرجه البيهقي ايضا في الكبرى: ۵۰۲/۶، کتاب قسم الفیء والغنیمه، باب السب للقاتل، رقم (۱۲۷۶۹).
 (۲) المغنی: ۱۸۹/۹.

(۳) په جنگ موته کښې چې کوم لښکر د مدد او تعاون دپاره راغلې وو، د هغې یو سړې مراد دي، مددې په معنی د مددگار. د مسلم شریف وغیره د روایت نه معلومېږي چې ددې سړی تعلق د بنو حمیر سره وو. او گوري، مسلم، کتاب الجهاد والسير، باب استحقاق القاتل سلب القاتل، رقم (۴۵۷۰)، وسنن سعید بن منصور: ۲/۲۶۰، رقم (۲۶۹۷).

(۴) هذا ملخص من حديث طويل، رواه ابو داود في كتاب الجهاد، باب في الامام يمنع القاتل السلب، رقم (۲۷۹۱)، وسعيد بن منصور في سننه: ۲/۲۶۰، کتاب الجهاد، باب النفل والسلب.....، رقم (۲۶۹۷).

(۵) او گوري، حديث باب، رقم (۳۱۴۱)، ددې دليل سره متعلق خبرداري به وړاندې د حديث په تشریح کښې راشي.

سلب شېر، لهو غیر من اشق عشا، وانا قد نفلناه اياه“ (۱).

د استدلال وجه دلته د استدلال وجه واضح ده، لکه په اولنی حدیث شریف کښې نبی کریم ﷺ ددې دواړو حضراتو مینځ کښې فیصله او فرمائیل او سلب تې په دواړو کښې تقسیم کړو، که د امام اجازت شرط وو یا بس صرف قاتل مستحق وو نو ددې فیصلې ضرورت ولې پېښیدو؟

په دویم دلیل کښې راغلې دی چې نبی کریم ﷺ سلب معاذ بن جموح رضی الله عنه ته ورکړو او دا تې هم او فرمائیل چې “کلا کما قتله” دغه شان خو سلب ټولو ته ملاویدل پکار وو، لیکن دې برخلاف سلب صرف معاذ بن الجموح رضی الله عنه ته ورکړې شو، ښکاره خبره ده چې نبی کریم ﷺ خپل اختیار استعمال کړې دي.

په دریم دلیل کښې حضرت سعد رضی الله عنه دا بیان فرمائی چې “وانا قد نفلناه اياه” حالانکه دغه سلب د شېر حق دي نو ددې قول ضرورت ولې پېښ شو چې مونږ دا سلب ده ته د نفل په طور ورکړې دي؟ (۲).

د سلب مستحق څوک وی؟

① جمهور فقهاء: په دې جزء کښې د فقهاؤ اختلاف دي، نو د جمهور و دامام اعظم ابوحنیفه.

شافعی او احمد رحمهم الله په نزد د سلب مستحق هر هغه سړې کیدې شی چې د حصې مستحق وی یا د رضح مستحق وی، لکه غلام، ښځه، ماشوم، تاجر او ذمی ځکه چې په حدیث شریف کښې عموم دي “من قتل قتيلاً، له عليه بيعة فله سلبه” (۳).

البته د شوافعو په نزد ذمی ددې حکم نه مستثنی دي، د هغوی په نزد ذمی اگرچه د امام په اجازت سره په جنگ کښې شریک شوې وی لیکن هغه د سلب مستحق نه شی کیدې. د اجازت نه بغیر خو د ټولو اتفاق دي چې د هغه د سلب مستحق کیدې نه شی (۴).

② موالک: او د مالکيه مذهب په دې سلسله کښې دادې چې ددې سلب مستحق هغه کس وی چې صرف د سهم مستحق وی نو د هغوی په نزد ماشوم، ښځه او ذمی د سلب په مستحق کیدو کښې شامل نه دی البته که امام دوی ته اجازت ورکړی یا په دوی باندې جهاد فرض عین شی نو دوی به هم مستحق وی. ددې تفصیل نه معلومه شوه چې کوم کس د سهم مستحق نه وی او د رضح مستحق هم نه وی نو بالاتفاق په دې حکم کښې داخل نه دي (۵).

(۱) رواه سعيد في سننه: ۲/۲۵۸. في كتاب الجهاد، باب النفل والسلب في الغزو..... رقم (۲۶۹۲).

(۲) المغني: ۹/۱۹۲. وايضا انظر البناية شرح الهداية: ۷/۱۸۱ - ۱۸۴. واعلاء السنن: ۱۲/۲۸۲.

(۳) اوگوري، حدیث باب، رقم (۳۱۴۲). ومسلم، كتاب الجهاد، باب استحقاق القاتل..... رقم (۴۵۶۸).

(۴) حاشیه ابن عابدين: ۳/۲۶۱. والمغني: ۹/۱۸۹. وفتح القدير: ۵/۲۵۰. فصل في التنفيل، وسبل السلام شرح بلوغ المرام: ۴/۵۲-۵۳.

(۵) المغني: ۹/۱۹۱. والاوز: ۹/۱۸۵. والموسوعة: ۲۵/۱۷۸. وعمدة القاري: ۱۵/۶۹.

خپل ځان په خطرې کښې واچوی د سلب د مستحق کیدو دپاره چې کوم شرطونه دی نو په هغې کښې دا هم دې چې قاتل خپل ځان په خطرې کښې واچوی او په دې حالت کښې مقتول قتل کړی او د مرګ سره لوبې کوی ورنه بیا د سلب مستحق نه شی کیدې. مثلاً د صف نه غشی گزار کړی او هغې باندې یو کافر اولګی یا کافر په قلعه کښې بند وی او د یو مجاهد غشی دننه لار شی هغه کافر قتل کړی. (۴).

د مقتول د قتل کولو شرعی اجازت وی یو شرط دا هم دې چې کوم کافر قتلولې شی، نو د هغه قتل شرعاً جائز وی، ددې وجې نه ښځه، ماشوم، شیخ فانی، پاگل او د راهب وغیره قتلولو سره به څوک د سلب مستحق نه جوړیږي، ځکه چې ددې خلقو د قتل شرعاً ممانعت دې البته که په دې خلقو کښې یو کس په جنگ کښې شریک شو نو د داسې کس په قتلولو باندې به بیا د سلب مستحق وی ځکه چې د دوی قتل اوس جائز شو. (۵).

قتل ئې کړی یا یو شرط دا هم دې چې مقتول قتل کړی یا ئې د مقتول په حکم کښې کړی یعنی د هغه دومره قدرې وینه اوبهوی چې مسلمانان د هغه د شر نه محفوظ شی او هغه بالکل بې لاسو خپو کړی، مثلاً د هغه سترګې اوباسی، یا د هغه نظر ختم کړی یا د هغه خپې لاسونه کټ کړی. (۶).

د جنگ دوران کښې ئې قتل کړی: ددې نه علاوه یو شرط دا هم دې چې هغه وخت ئې قتل کړی چې کوم وخت جنگ جاری وی او مقتول په جنگ کښې مصروف وی که جنگ ختم شی او مشرکینو ته شکست اوشی، بیا یو مسلمان کافرانو پسې شی او په هغوی کښې یو کس قتل کړی نو دې به د سلب مستحق نه وی ځکه چې مشرکینو ته په شکست ملاویدو سره د هغوی شر هم ختم شوې دې. په دې کښې قیدی کافر، اوده وغیره هم داخل دی ځکه چې په دې صورت کښې قاتل خپل ځان په خطرې کښې وانه چوو. (۷) دا د جمهورو مسلک دې البته په شافعیه کښې د ابو ثور او ابن المنذر وغیره رائي دا ده چې کافر لره قتل کړې شی نو دا قاتل به په هر صورت کښې د هغه د سلب مستحق وی ځکه چې د "من قتل قتلاً فله سلبه" والا حدیث شریف عام دې. (۸).

ایا د سلب د مستحق کیدو دپاره کواهان ضروری دی؟ ① په دې باره کښې مشهورو اختلافی مسئلو کښې یو مسئله داده، جمهور فقهاء کرام ددې خبرې قائل دی چې د سلب د مستحق

(۱) المغنی: ۹/۲۹۰، والاوجز: ۹/۱۸۷، وللاستزاده انظر الموسوعة: ۲۵/۱۷۸-۱۷۹، و کتاب السیر الکبیر للشیبانی: ۲/۱۲۱، ابواب الانفال، مع شرحه للسرخسی.

(۲) الموسوعة: ۲۵/۱۷۹، والمغنی: ۹/۱۹۰، والاوجز: ۹/۱۸۶، ولدر المختار: ۳/۲۶۱.

(۳) الموسوعة: ۲۵/۱۷۹، والمغنی: ۹/۱۹۰، والاوجز: ۹/۱۸۷.

(۴) الموسوعة: ۲۵/۱۸۱، والمغنی: ۹/۱۹۱، والاوجز: ۹/۲۰۳.

(۵) پورته حواله جات، وفتح الباری: ۶/۲۴۹.

کیدو دپاره گواهان پیش کول ضروری دی، ترڅو چې قاتل گواهان پیش نه کړی چې قتل هم ده کړې دې نو دده د سلب د مستحق کیدو دعوی به مقبول نه وی ځکه چې په بعضو صحیح روایتونو کښې د "له علیه بیینه" د الفاظو وضاحت موجود دې (۱).

② دویم طرفته د امام مالک او امام اوزاعی رحمهما الله مسلک دادې چې ددې دپاره د گواهانو پیش کولو هیڅ ضرورت نشته، د قاتل دومره وینا هم کافی ده چې اناقتله.

د دوی دلیل د حضرت ابوقتاده او د حضرت معاذ بن الجموح رضی الله عنهما حدیثونه دي ذکرهما الامام فی هذا الباب چې په دې کښې نبی کریم صلی الله علیه و آله د دوی نه څه گواهان او قسم وغیره طلب نه کړو. لیکن حافظ ابن حجر رحمته الله فرمائی چې د حضرت ابوقتاده رضی الله عنه د گواهی نه طلب کولو دعوی کول ددې وجې نه صحیح نه ده چې د واقدی په مغازی (۲) کښې راغلې دی چې اوس بن خولی رضی الله عنه په دې موقع باندې گواهی ورکړې وه. او که بالفرض دا صحیح هم نه وي نو ممکنه ده چې نبی کریم صلی الله علیه و آله ته په بل څه ذریعه باندې دا خبره معلومه شوې وي چې قاتل هم ابوقتاده رضی الله عنه دې (۳).

د گواهانو نه څه مراد دی؟ بیا هغه حضرات چې گواهان پیش کول ضروری گنړی د هغوی په دې خبره کښې اختلاف دې چې د بینې (گواهان پیش کولو) نه څه مراد دې؟ نو بعضې حضرات خو د دوو کسانو گواهی ورکول شرط گرځوي، دا د امام احمد رحمته الله مذهب هم دې او بعضې نور حضرات وائی چې شهادة رجل وامرأتین او رجل ویدین هم کافی دې ځکه چې دعوی په مال کښې ده. او بعضې نور حضرات په دې معامله کښې شهادة رجل واحد هم کافی گنړی ځکه چې نبی کریم صلی الله علیه و آله د حضرت ابوقتاده رضی الله عنه په معامله کښې د یو گواه گواهی قبوله کړې وه او د هغه نه قسم هم اخستلې شوې نه وو. ابن العطیه وائی چې په دې باره کښې د اکثر و فقهائو هم دا قول دې (۴).

(۱) فتح الباری: ۲۴۹/۶، والموسوعة: ۱۸۲/۲۵، وشرح الابی علی مسلم: ۶۳/۵، باب استحقاق القاتل سلب القتل، والمغنی: ۱۹۴/۵-۱۹۵، کتاب الجهاد، فصل: لا تقبل دعوی القتل الا بیینه، رقم (۷۴۷۶)۔

(۲) د علامه واقدی په مغازی کښې د حضرت ابوقتاده په حق کښې په گواهی ورکونکو کښې د دوو حضراتو نومونه راغلې دي، عبدالله بن أنیس او الاسود بن الخزاعی رضی الله عنهما په دې کښې د حضرت اوس رضی الله عنه نوم مونږ ته ملاؤ نه شو، اوگوری، کتاب المغازی للواقدي: ۹۰۸/۳، غزوة حنین، غالباً دلته د حافظ نه تسامح شوې ده، ځکه چې په اصابت کښې هغوی په خپله د واقدی په حوالې سره د حضرت الاسود بن الخزاعی په باره کښې لیکلې دي شهد لابی قتادة بسلب قتيله يوم حنين والله اعلم. الاصابة: ۴۳/ القسم الاول، رقم (۱۵۳)۔

(۳) فتح الباری: ۲۴۹/۶، دغه شان اوگوری، الموسوعة: ۱۸۲/۲۵۔

(۴) پورته حواله جات، والمغنی: ۱۹۵/۹، واکمال الابی: ۶۳/۵، واکمال المعلم المطبوع مع اکمال الابی: ۶۳/۵، وسبل السلام: ۵۳/۴، کتاب الجهاد، رقم (۲۲)، والاوجز: ۲۰۵/۹۔

په سلب کښې به تخمیس جاری کیږي یا نه؟ دا یو بله مشهوره اختلافی مسئله ده.

① د شافعيه (المشهور عندهم)، حنابله، ابن المنذر او ابن جریر رحمهم الله وغیره مسلک دادې چې په سلب کښې به تخمیس نه جاری کیږي. مطلب دادې چې سلب به قاتل ته حواله کولې شي او ددې نه به خمس نه اخستلې کیږي. د دوی یو دلیل د حضرت عوف بن مالک او د حضرت خالد بن ولید رضی الله عنهما حدیث دې چې، "ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قطع بالسلب للقاتل، ولم يخمس السلب" (چې "نبي ﷺ قاتل ته د سلب ورکولو حکم جاری کړو او په هغې کښې ئې خمس وانه خستلو". او دویم دلیل د حضرت عمر رضی الله عنه قول دې، "إنا كنا لا نخمس السلب" (چې "مونږ به په سلب کښې خمس نه ویستلو".

② په دې مسئله کښې دویم مذهب د امام اوزاعی او مکحول رحمهما الله دې چې په سلب کښې به هم خمس جاری کیږي ددې حضراتو دلیل د قرآن پاک آیت «واعلموا انما غنمتم من شيء فان الله خمسہ وللمسول» دې ځکه چې دا آیت کریمه عام دې، نو ددې وجې نه په غنیمتونو کښې به مطلقاً تخمیس جاری کیږي هم دا مذهب د حضرت ابن عباس رضی الله عنهما هم دې.

③ په دې مسئله کښې دریم مذهب د اسحاق بن راهویه دې، هغوی فرمائي: "ان استكثر الامام السلب خمسہ، وذلك إلیه" چې "که امام دا اووینی چې د سلب مقدار ډیر زیات دې نو تخمیس دې پکښې جاری کړي او ددې اختیار به امام ته وي".

د دوی دلیل د ابن سیرین رحمته الله نه روایت شده حدیث دې چې حضرت براء بن عازب رضی الله عنه یو مرزبان د اهل فارس مذهبی مشر او فقیه، سره په بحرین کښې مبارزت او کړو، حضرت براء رضی الله عنه هغه په نیزه او ووهلو، چې هغې سره د مرزبان ملا ماته شوه، حضرت براء رضی الله عنه د هغه دواړه بنگړي واخستل او نور سامان هم، د ماسپڅین د مונځ نه پس دوی حضرت ابو طلحه رضی الله عنه ته راغلل او ټوله واقعہ ئې واوروله، نو حضرت ابو طلحه رضی الله عنه او فرمائیل چې مخکښې به مونږ په سلب کښې خمس نه اخستلو لیکن د براء چې کوم سلب دې نو دا معتدبه مال دې، ددې وجې نه به زه په دې کښې خمس اخلم، نو دا اولنې سلب وو چې په دې کښې تخمیس جاری

① صحیح مسلم، کتاب الجهاد، باب استحقاق القاتل سلب القاتل، رقم (۴۵۷۱)، وسنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب فی السلب لا یخمس، رقم (۲۷۲۱)۔

② التمهید: ۲۴۷/۲۳، حدیث ثامن وعشرون لیحیی بن سعید، والمصنف لابن ابی شیبہ: ۵۵۸/۱۷، کتاب السیر، من جعل السلب للقاتل، رقم (۳۳۷۶۱)۔

③ (الانفال: ۴۱)۔

④ (الموسوعة: ۱۸۳/۲۵، وعمدة القاری: ۶۵/۱۵، وفتح الباری: ۲۴۷/۶)۔

⑤ (پورته حواله جات، والمغنی: ۱۹۲/۹، والواجز: ۱۸۸/۹)۔

شو، ددې سلب مقدار دیرش زره وو(۱).

په دې مسئله کېنې څلورم مذهب د حنفیه او د مالکیه دې، ددې حضراتو په نزد سلب د نورو غنیمتونو په شان دې، دا د قاتل سره مختص نه دې بلکه قاتل او غیر قاتل ټول په دې کېنې برابر دي. امام به سلب د نفل په طور باندې ورکوي. اوس د احنافو په نزد د تنفیل محل غنیمتونو لره دارالاسلام ته منتقل کولو نه مخکېنې خو اربعة الاخماس دې او دارالاسلام ته د منتقل کولو نه پس خمس دې. او د مالکیه په نزد په هر حال کېنې خمس دې او د امام په رائي باندې موقوف دې، که امام مناسب او گنړی نو قاتل ته به ورکړي. ورنه نه دې ورکوي(۲)، که امر تفصیله فیا قیل.

په سلب کېنې به کوم کوم څیزونه ملاوېږي؟ په دې خبره کېنې د فقهاؤ اتفاق دې چې قاتل ته د مقتول کوم سلب ملاوېږي نو په دې کېنې به دا قاتل ددې څیزونو حقدار وي کپړي، ټوپي، پگړي، موزي او خادر وغيره، یعنی د استعمال څیزونه. دغه شان اسلحه او د جنگ آلات، مثلاً ډهال، خود، نیزه، چارۍ، توره، لیند کي او غشي.

دغه شان د مقتول د سورلي زین او واگې وغيره(۳). ددې څیزونو نه علاوه د مقتول په نورو څیزونو کېنې د امامانو اختلاف دې لکه د ائمه ثلثه په نزد د مقتول سورلي په سلب کېنې داخلش ده، د امام اوزاعي او امام مکحول هم دا مذهب دې، د دوی دلیل هغه حدیث مددی دې کوم چې وړاندې تیر شو، په هغې کېنې راغلې دي، "انه قتل علجا، فحازق سه وسلاحه".

او امام احمد رحمته الله سورلي د سلب نه خارج گنړي، هم دا قول د ابوبکر هم دې(۴) دا بحث د هغې سورلي په باره کېنې دې کومه سورلي چې د مقتول په استعمال کېنې وه لکه هغه سورلي چې د هغه په خیمه کېنې وي یا تختیدلې وي نو هغه بالاتفاق په سلب کېنې داخله نه ده(۵). ددې نه علاوه د مقتول تاج، بنگړي، گوتمه، طوق، پتکا، اگرچه د سرو زرو وي یا د

(۱) رواه سعيد في السنن: ۲/۲۶۳-۲۶۴. كتاب الجهاد، باب ما يخمس في النفل، رقم (۲۷۰۸). وابن عبد البر في التمهيد: ۲۳/۲۴۷. حديث ثامن وعشرون ليعبي بن سعيد. وعبدالرزاق في مصنفه: ۵/۱۵۸. كتاب الجهاد، باب السلب والمبارزة، رقم (۹۵۳۱).

(۲) عمدة القاری: ۱۵/۶۵، والموسوعة: ۲۵/۱۸۳. لیکن د احنافو تحقیقی مذهب هغه دې کوم چې په فتاوی هندیه کېنې د المحيط په حوالې سره نقل کړې شوي دي، هغه دا دې چې که امام داسې اووانی من قتل قتیلاً قله السلب بعد الخمس نو په دې صورت کېنې به په سلب کېنې تخمیس جاری کیږي او که مطلقاً من قتل قتیلاً اووانی نو تخمیس به نه جاری کیږي الفتاوی الهندیة: ۲/۲۱۸، الفصل الثالث في التنفيل، من كتاب السير.

(۳) البناء مع الهدایة: ۷/۱۸۴. وفتح القدير: ۵/۲۵۳. وحاشية ابن عابدین: ۳/۲۶۴. والمغنی: ۹/۱۹۳. والاوز: ۹/۱۹۰.

(۴) المغنی: ۹/۱۹۳، والاوز: ۹/۱۹۰. والدر المختار: ۳/۲۶۴، والموسوعة: ۲۵/۱۸۴.

(۵) پورته حواله جات.

بل خه خیز وی، دغه شان میانې د پیسو هغه تهیلن کومه چې ملا سره ترلې شی، او په دې کښې موجود پیسې، دا ټول خیزونه د ائمه نلته په نزد په سلب کښې داخل دی ځکه چې دا ټول خیزونه د حدیث شریف په عموم کښې داخل دی، یعنی "من قتل قتیلأ فله سلبه" دغه شان د براء بن مالک رضی الله عنه حدیث کوم چې اوس تیر شو، هغې کښې هم د بنگرو او پټکی ذکر راغلي دي. او د مالکيه مذهب ددې خیزونو په باره که داډې چې دا خیزونه په سلب کښې داخل نه دي، ځکه چې ددې خیزونو په ذریعې سره په جنگ خه مدد نه حاصلېږي (د بیا د امام احمد په نزد مقتول لره بالکل بې لاسه کول هم جائز دی، هم دا قول د امام اوزاعی هم دې اوابن منذر او سفیان ثوری رحمهم الله دا ناخوبنه گنړی، ځکه چې په دې کښې بدن ښکاره کیږي. او د امام احمد وغيره دلیل د حضرت سلمه بن الاکوع رضی الله عنه په حدیث شریف کښې د نبی کریم صلی الله علیه و آله دا جمله مبارکه ده، "له سلبه اجمع" (دغه شان حدیث "من قتل قتیلأ فله سلبه" هم د جمهورو د مذهب دپاره دلیل دي، ځکه چې په دې کښې هر خه داخلېږي، "وهذا يتناول جميعه" (د)

څېړدای د سلب متعلق مزید معلوماتو دپاره اوگورئ، اوجز المسالك: ۱۸۳/۹، کتاب الجهاد، باب ما جاء في السلب في النفل، والموسوعة الفقهية: ۱۲۶/۲۵، ۱۸۳، واعلاء السنن: ۲۴۵/۱۲، ۳۰۰، واحكام القرآن للرازي: ۴۹/۳، ۴۲، مطلب في سلب القتيل، وفتح الباری: ۲۳۴/۶، ۳۳۹. والله اعلم بالصواب. د سلب متعلق ددې ټولو تفصیلاتو نه پس اوس د باب سره متعلق بحثونه اوگورئ. د ترجمه الباب مقصد: امام بخاری رحمته الله ددې ترجمه الباب په قائلولو سره د هغه مشهور اختلاف طرفته اشاره کړې ده کوم چې د سلب په تخمیس کښې دې چې ددې خمس به ویستلې شی یا نه؟ امام بخاری رحمته الله په دې مسئله کښې د جمهورو سره ملگري دي، د هغوی د مذهب ثابتولو دپاره ئې دا باب قائم کړې دي (د).

قوله: ومن قتل قتیلأ فله سلبه: او څوک چې چالره قتل کړی نو ددغه مقتول سلب به د قاتل وی.

دا د حضرت انس رضی الله عنه حدیث شریف یوه حصه ده، پوره حدیث شریف داسې دي "ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال يوم حنين: من قتل قتیلأ فله سلبه. فقتل أبو طلحة يومئذ عشرين

(المغنی: ۱۹۳/۹، والمنتقى: ۱۹۱/۳، والاوجز: ۱۹۵/۹، والموسوعة: ۱۸۴/۲۵) _

(حدیث سلمة اخرجہ البخاری فی کتاب الجهاد، رقم (۳۰۵۱)، وانظر لتخریجه الکامل کشف الباری، کتاب الجهاد: ۴۵۸/۲) _

(المغنی: ۱۹۵/۹، وعمدة القاری: ۶۹/۱۵، والاوجز: ۲۰۶/۹) _

(عمدة القاری: ۶۵/۱۵، وفتح الباری: ۲۴۷/۶) _

رجلاً، فاعخذ اسلابهم“ (۱) چې ”د غزوه حنین په موقع باندې نبی کریم ﷺ ارشاد او فرمائیلو چې څوک چالره قتل کړي نو د هغه سلب به قاتل ته ملاویږي نو په دغه ورځ حضرت ابو طلحه انصاري رضی الله عنه شل کسان قتل کړل او د هغې ټولو سلب یې واخستلو“

قوله: من غیر ان یخمس: د سلب د تخمیس (خمس جاری کیدو) نه بغیر دا جمله د امام بخاری رحمه الله د تفقه (فقاہت) نه ده (۲) غالباً هغوی د حضرت انس رضی الله عنه مذكوره حدیث ذکر کولو سره ددې د عموم نه استدلال کړې چې په دې کښې د سلب د تخمیس وغیره څه خبره نشته، دا حدیث شریف چونکه مطلق دي، ددې وجې نه به په سلب کښې د تخمیس عمل نه وي والله اعلم

قوله: وحکم الامام فیه: او په دې کښې د امام حکم. دا د آخری جزء ترجمه ده، حکم مرفوع او مجرور دواړو طریقو سره لوستلې شوې دي، د مرفوع کیدو په صورت کښې به مطلب دا وي چې په سلب کښې به د امام رائي چلیږي، هغه چې څنگه غواړي نو هغه شان حکم به لگولې شي، د امام په حکم باندې څوک هم اعتراض نه شي کولې. په دې صورت کښې به دا مذهب د احنافو او د مالکيه تائید شي چې د امام د حکم او د هغه د اجازت نه بغیر به څوک د سلب مستحق نه جوړیږي، گویا امام بخاری رحمه الله په دې مسئله کښې ددې حضراتو سره ملګري دي. او د مجرور کیدو په صورت کښې به ددې مطلب دا شي چې د امام د فیصلې نه بغیر به هم قاتل د سلب مستحق وي، په دې صورت کښې به مؤلف علیه الرحمة د امام شافعي او امام احمد رحمهما الله ملګري شي.

مسئله سره متعلق تفصیل د باب په شروع کښې راغلې دي. بیا امام بخاری رحمه الله په باب کښې دوه احادیث نقل کړې دي:

(۱) رواه ابو داود، کتاب الجهاد، باب فی السلب يعطى القاتل، رقم (۲۷۱۸)، والحاكم فی المستدرک: ۳/ ۳۹۷، کتاب معرفة الصحابة، مناقب ابی طلحة..... رقم (۵۵۰۵)، وابن ابی شیبة فی مصنفه: ۲۰/ ۵۳۲، کتاب المغازی، غزوة حنین وما جاء فيها، رقم (۳۸۱۵۴)، و: ۲۰/ ۵۲۳، رقم (۳۸۱۴۳)۔

(۲) فتح الباری: ۶/ ۲۴۷، وقال العيني (۶۵/ ۱۵): من غیر ان یخمس“ ليس من لفظ الحديث، و اراد به ان السلب لا یخمس (۳)

۲۹۷۲. حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ الْمَاجِشُونِ عَنْ صَالِحِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ بَيْنَا أَنَا وَاقِفٌ فِي الصَّفِّ يَوْمَ بَدْرٍ فَنَظَرْتُ عَنْ يَمِينِي وَشِمَالِي فَإِذَا أَنَا بِغُلَامَيْنِ مِنَ الْأَنْصَارِ حَدِيثَةً أَسْنَانَهُمَا، تَمَنَّيْتُ أَنْ أَكُونَ بَيْنَ أَضْلَمَ مِنْهُمَا، فَعَمَزَنِي أَحَدُهُمَا فَقَالَ يَا عَمَّ، هَلْ تَعْرِفُ أَبَا جَهْلٍ قُلْتُ نَعَمْ، مَا حَاجَتَكَ إِلَيْهِ يَا ابْنَ أَخِي قَالَ أَخْبَرْتُ أَنَّهُ يَسُبُّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَئِنْ رَأَيْتُهُ لَا يَفَارِقُ سَوَادِي سَوَادَةً حَتَّى يَمُوتَ الْأَعْجَلُ مِنَّا. فَتَعَجَّبْتُ لِذَلِكَ، فَعَمَزَنِي الْآخَرُ فَقَالَ لِي مِثْلَهَا، فَلَمْ أَتُسَبَّ أَنْ نَظَرْتُ إِلَى أَبِي جَهْلٍ يَجُولُ فِي النَّاسِ، قُلْتُ الْإِنِّ هَذَا صَاحِبُكُمْمَا الَّذِي سَأَلْتُمَانِي. فَأَبْتَدَرَاهُ بِسَيْفَيْهِمَا فَضَرْبَاهُ حَتَّى قَتَلَاهُ، ثُمَّ انْصَرَفَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَأَخْبَرَاهُ فَقَالَ «أَيْكُمْ قَتَلَهُ». قَالَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا أَنَا قَتَلْتُهُ. فَقَالَ «هَلْ مَسَحْتُمَا سَيْفَيْكُمَا». قَالَا لَا. فَنَظَرَ فِي السَّيْفَيْنِ فَقَالَ «كِلَاكُمَا قَتَلَهُ». سَلَبَهُ لِمُعَاذِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ الْجُمُوحِ. وَكَانَا مُعَاذِ ابْنَ عَفْرَاءَ وَمُعَاذِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ الْجُمُوحِ.

رجال الحديث

- ① مسدد: دا مسدد بن مسرهد رحمته الله دي. د دوی تذکره په کتاب الایمان، "باب من الایمان ان یحب لایه....." کنبی تیره شوې ده (۱).
- ② یوسف بن الماجشون: دا یوسف بن یعقوب الماجشون بن عبد الله بن ابی سلمه رحمته الله دي.
- ③ صالح بن ابراهیم بن عبدالرحمن بن عوف: دا د مشهور صحابی حضرت عبدالرحمن بن عوف نوسی صالح بن ابراهیم رحمته الله دي (۲).
- ④ عن أبيه: ددي نه مراد ابراهیم بن عبدالرحمن بن عوف رحمته الله دي.
- ⑤ جده: د جده نه مراد مشهور صحابی حضرت عبدالرحمن بن عوف رحمته الله دي (۳).

قوله: قَالَ بَيْنَا أَنَا وَاقِفٌ فِي الصَّفِّ يَوْمَ بَدْرٍ.....: په دې حدیث شریف کنبی د ابو جهل لعین د قتل واقعہ ذکر کړې شوې ده، کومه چې په بدر کنبی پېښه شوې وه، ددې تفصیل چونکه په مغازی کنبی راغلې دي، ددې وجې نه دلته ددې دوباره د ذکر کولو ضرورت

(۱) قوله: عن جده: الحديث، أخرجه البخاري أيضا، كتاب المغازی، باب قتل ابی جهل، رقم (۳۹۶۴)، وباب (بلا ترجمة)، بعد بابتفضل من شهد بدراً، رقم (۳۹۸۸)، ومسلم، كتاب الجهاد والسير، باب استحقاق القاتل سلب القتل، رقم (۴۵۶۹) -

(۲) كشف الباری: (۲/۲) -

(۳) ددې دواړو د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الوكالة، باب اذا وكل المسلم حربيا في دار العرب.... -

(۴) ددې دواړو د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الجنائز، باب الكفن من جميع المال -

نشته (۱) البته دلت به مونږ د حدیث شریف د خه الفاظو او د جملو وضاحت خامخا کوو.

فاذا انا بعلامين من الانصار حديثه اسنانها

نو ما او کتل چې زه د دوو انصاري هلکانو مينځ کښې يم، چې دواړه کم عمره وو.

”حديثه اسنانها“ دا شبه جمله صفت دې د ”علامين“، ددې وجې نه مجرور هم دې او اسنانها مرفوع دې ځکه چې هغه د حديثه فاعل دې (۲) او ددې معنی ده کم عمری.

قوله: تمنيت أن أكون بين أضلع منها: ما تمنا او کره چې کاش زه ددې دواړو نه علاوه د يو طاقتور سړي په خوا کښې وې چې د هغه نه ماته څه فائده وي.

د أضلع لغوی او صرفی تحقيق: أضلع. بفتح الهیزة، وسكون الضاد، وفتح اللام صیغه د اسم تفضیل

ده. ددې معنی ده ډیر زیات قوی او طاقتور، ددې مصدر الضلعة دې، ددې معنی ده قوت او

طاقت، دا د علامه عینی رحمه الله تحقيق دې (۳). او حافظ رحمه الله دا بضم اللام د ضلع جمع بنودلې

ده، ددې معنی ده پښتې، ددې نه علاوه حافظ دا هم فرمائيږي دی چې دا د اکثر روایت دې

او د علامه عینی ذکر کړې شوی تحقيق ته ئې په وړوئ وئیلو سره د ضعیف ګرځولو کوشش

کړې دې (۴). لیکن راجع دلت به د علامه عینی تحقيق دې، هم دا امام نووی هم ذکر کړې

دې (۵) او علامه ابن الاثیر جزري رحمه الله هم دا اختیار کړې دې (۶)، ددې نه علاوه فهم ته ډیر

زیات نږدې هم دا تحقيق دي.

په أضلع کښې د نسخو اختلاف: بیا په دې ځان پوهه کړئ چې د بخاری شریف اکثر روایانو

دا لفظ د ضاد معجمه سره أضلع نقل کړې دي، لیکن د حموی په نسخه کښې أضلع. بالصاد

المهمله والحاء المهمله راغلې دي (۷) علامه ابن بطال رحمه الله فرمائي چې دا اختلاف د مسدد له

طرفه دي کوم چې د بخاری شیخ دي، ورنه هم دا روایت د یوسف بن الماجشون نه ابراهیم بن

حمزه په طحاوی کښې (۸)، موسی بن اسماعیل په ابن سنجر کښې او عفان په ابن ابی شیبه (۹)

(۱) کشف الباری، کتاب المغازی: ۱۰۳/۱۰۸.

(۲) عمدة القاری: ۱۵/۶۶، وفتح الباری: ۶/۲۴۸.

(۳) عمدة القاری: ۱۵/۶۶.

(۴) فتح الباری: ۶/۲۴۸، البته په مقدمه کښې دوی هم د عینی تحقيق اختیار کړې دي، هدی الساری: ۲۲۷، فصل ض. ل. حرف الضاد المعجمة، الفصل الخامس.

(۵) شرح النووی علی مسلم: ۲/۸۷، کتاب الجهاد، باب استحقاق القاتل سلب القتل.

(۶) جامع الاصول: ۸/۱۹۵، والنهایة فی غریب الحديث والاثار: ۳/۹۷، باب الضاد مع اللام.

(۷) عمدة القاری: ۱۵/۶۶، وفتح الباری: ۶/۲۴۸.

(۸) شرح معانی الآثار: ۲/۱۴۷، کتاب السير، باب الرجل يقتل قتيلاً....

کښي هم روايت کړې دي. په دې ټولو کښي اضلع دېځي او راجع روايت هم د اضلع والا دي. ځکه چې د دريو حافظانو راويانو په مقابلې کښي د يو حافظ راوي روايت ظاهر دي چې مرجوح به وي^۱. علامه قرطبي او قاضي عياض رحيمهما الله هم د اضلع والا روايت راجع گرځولي دي^۲.

قوله: لا يفارق سوادى سواده: زه به هغه پريږدم.

دا کلام په دغه کم عمرو هلکانو کښي د يو هلک دي. سواد. بفتح السين سړى ته وائي. چونکه دلري نه دسړى په شان خيز په نظرتورښکاري. ددې وجې نه سړى ته سواد هم وائي^۳.
قوله: حتى يموت الاعجل منا: تردې چې په مونږ کښي د چا مرگ زيات نژدى وي. هغه مړ شي.

بعضي حضراتو ويلي دي چې الاعجل تحريف دي. اصل کښي دا الاعجوزو ليکن حافظ فرمائي چې په روايت کښي مذکوره لفظ صحيح دي^۴. ددې نه علاوه دا جمله د ملازمت لزوم نه کنايه ده او په دې معني کښي کثير الاستعمال هم ده. مطلب دا دي چې ترڅو ما هغه قتل کړي نه وي. نو هغه به زه نه پريږدم.

اوس ددې کم عمره صحابي د عقل کمال او گوري چې د جنگ په حالت کښي. چرته چې د لويو لويو خلقو طاقت کار نه ورکوي. هلته هم د عقل لمن نه پريږدي او دا محتاطه جمله يې ارشاد او فرمائيله. حالانکه د سختې غصې تقاضه خو دا وه چې داسې ئې فرمائيلې وې. "حق اقبله" ليکن انجام چونکه مجهول وو، ددې وجې نه ئې حق يموت الاجل منا او فرمائيل^۵.

قوله: فلم أنشب أن نظرت إلى أبي جهل يبول في الناس: لږ وخت تير شوې وو چې ما ابو جهل اولیده، چې د خلقو مينځ کښي ئې چکر لگوو.

نشب نشوبا ونشأ د باب سمع نه دي ددې معني نه انختل او د لم انشب معني ده لم الهث ولم اتعلق بشئ غيره^۶. د باب په روايت کښي "يجول" راغلې دي او د مسلم شريف په روايت

^۱ (المصنف. لم اجده فيه رغم تنبهي. وانما اشار اليه الحافظان ابن حجر وابن بطال).

^۲ (ابن بطال: ۳۱۵/۵. والمعمدة: ۶۶/۱۵. والفتح: ۲۴۸/۶. والنووي على مسلم: ۸۷/۲-۸۸).

^۳ (پورته حواله جات).

^۴ (عمدة القاري: ۶۶/۱۵. المفهم لقرطبي: ۷۵/۱۱. باب اسحقاق القاتل سلب... ومشارك الانوار: ۵۹/۲) (ض ل ع).

^۵ (عمدة القاري: ۶۶/۱۵. وفتح الباري: ۲۴۹/۶).

^۶ (فتح الباري: ۲۴۹/۶).

^۷ (عمدة القاري: ۶۶/۱۵).

^۸ (پورته حواله. وشرح النووي على مسلم: ۸۸/۲).

کښې "یزول" راغلې دې (۱). د دواړو یو معنی ده، مطلب دادې چې ابوجهل ډیر زیات پریشان وو او خوا دیخوا گرځیده او په یو ځای باندې نه حصاریده (۲).

قوله: فابتدراه بسيفهما: نو دغه دواړو خپلې خپلې تورې اخستلو سره د ابوجهل طرفته تیزی او کړه.

ابتدرو بادرد دواړو یو معنی ده، مطلب سبقت او جلدی کول دی (۳). د مغازی په روایت کښې "فشداعلیه مثل الصقرین" الفاظ راغلې دي (۴)، چې "دا دواړه هلکان په ابوجهل باندې د شکرې په شان حمله آور شو".

قوله: فنظر فی السیفین، فقال: کلا کما قتله: نبی کریم ﷺ دواړو تورو ته په غور سره او کتل، بیا ئې او فرمائیل چې تاسو دواړو هغه قتل کړې دي. دلته دا خبره ده چې نبی کریم ﷺ دواړه تورې په غور او کتلې او ددې نه مخکښې ئې هم دا تپوس او کړو چې تاسو تورې صفا کړې خو نه دي، بیا ئې او فرمائیل چې تاسو دواړو قتل کړې دي، ددې ټولې کارگذاری مقصد څه وو؟

علامه مهلب رحمه الله فرمائی چې ددې مقصد دا ښودل وو چې د سلب د مستحق کیدو دپاره اثخان شرط دي او په دې باره کښې اثخان ته یو قسم امتیاز حاصل دي، هغه داسې چې نبی ﷺ ددې دواړو د تورو معائنه او فرمائیل چې د تورو دواړو طرفونو ته وینه څومره قدرې لگیدلې ده او د ابوجهل په بدن کښې کومه توره څومره قدرې ننوتلې ده، ددې وجې نه ئې دا سوال هم او کړو چې تورې مو صفا کړې خو نه دي؟ ځکه چې د صفا کولو په صورت کښې به د داخلیدو مقدار بدل شوې وو (۵). بیا نبی کریم ﷺ او فرمائیل چې "کلا کما قتله" ځکه چې نبی ﷺ اولیدل چې اثخان د یو کس فعل دي او دویم صحابی صرف په قتل کښې شرکت کړې دي لیکن نبی ﷺ د هغوی د زړه ساتلو دپاره او د تسلی دپاره دا جمله ارشاد او فرمائیل چې "کلا کما قتله" (۶).

قوله: سلبه لمعاذ بن عمرو بن الجموح: لیکن دده سلب د معاذ بن عمرو بن الجموح دي. مطلب دادې چې دواړه هلکان اگرچه په قتل کښې شریک دي، لیکن اثخان چونکه د معاذ بن عمرو له طرفه دي، ددې وجې نه سلب هم د هغه حق دي، دې ځای پورې خو خبره واضحه

(۱) صحیح مسلم، کتاب الجهاد والسير، باب استحقاق القاتل سلب..... رقم (۴۵۶۹) _

(۲) عمدة القاری: ۶۶/۱۵ _

(۳) پورته حواله _

(۴) صحیح بخاری، کتاب المغازی، باب (بلا ترجمه)، رقم (۳۹۸۸) _

(۵) پورته حواله، شرح ابن بطلال: ۳۱۲/۵، وفتح الباری: ۲۴۸/۶، وعمدة القاری: ۶۶/۱۵ _

(۶) شرح ابن بطلال: ۳۱۲/۵، وعمدة القاری: ۶۶/۱۵ _ ۶۷ _

ده. ددې نه پس ددې جملو نه احنافو او مالکيه دا استدلال کړې دې چې د مقتول په قتل کولو سره قاتل د سلب مستحق نه جوړېږي. بلکه د امام په ورکړې سره هغه ددې مستحق جوړېږي ورنه نبی ﷺ به سلب په دوی دواړو باندې تقسیم کړې وو. یو لره محروم ساتلو سره به نې دویم ته نه ورکړو. ددې نه معلومه شوه چې په دې معاملاتو کښې امام ته اختیار دې. قاله الطحاوی رحمه الله (۱) لیکن دا استدلال کمزوري دې ځکه چې دا خبره خو ټول مني چې د سلب مستحق مشغن وی او نبی ﷺ چې د تورو کومه معانته فرمائيلې وه نو د هغې مقصد هم دا وو چې دا او کتلې شی چې د اثنان د کوم کس په توري سره شوي دي، په دې بنیاد باندې سلب معاذ بن عمرو ته ورکړي شو.

دې جزء سره متعلق د احنافو دلیلونه د باب په ابتداء کښې راغلې دي.

المبته ددې حدیث په یو بل طریق، کوم چې امام ابوداؤد (۲) او امام احمد (۳) غیره نقل کړې دي، د هغې نه په مذکوره جزء باندې استدلال کیدې شی، په دغه طریق کښې راغلې دي چې نبی کریم ﷺ د ابوجهل توره حضرت عبدالله بن مسعود رضی الله عنه ته ورکړې وه حالانکه هغه مشغن هم نه وو، اصل حق د معاذ بن عمرو وو ځکه چې هغه مشغن وو نو د ابوجهل توره حضرت عبدالله بن مسعود رضی الله عنه ته ورکول ددې خبرې دلیل دې چې سلب څه شرعی حق (۴) نه دې بلکه قاتل که ددې مستحق جوړېږي نو دقتل په طور سره ددې حقدار گرځي والله اعلم بالصواب

قوله: وکانا معاذ بن عفراء، ومعاذ بن عمرو بن الجموح: او هغه دواړه کم عمره هلکان معاذ بن عفراء او معاذ بن عمرو بن الجموح رضی الله عنهما وو.

دواړو ځایونو کښې کلمه د معاذ منصوب ده، ځکه چې دا د کان خبر دې.

معاذ بن عفراء: دا حضرت معاذ بن الحارث بن رفاعه بن سواد الانصاري رضی الله عنه دې (۵) دوی د خپلې مور بې عفراء بفتح العين وسكون الفاء بنت عبید بن ثعلبه په حوالې سره مشهور دی (۶) بدر، احد او نورو ټولو غزواتو کښې د نبی کریم ﷺ سره ملګري وو (۷)

د حضرت معاذ رضی الله عنه یو فضیلت دا هم دې چې دوی د انصارو نه دی، چا چې د عقبه اولی د بیعت دوران کښې په مکه مکرمه کښې اسلام قبول کړو، د راجح قول مطابق دا شپږ

(۱) شرح ابن بطلال: ۳۱۲/۵، وشرح معانی الآثار: ۱۴۷/۲-۱۴۸، کتاب السیر، باب الرجل یقتل....

(۲) سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب من اجاز علی جریح مشغن..... رقم ((۲۷۲۲))

(۳) فی مسنده: ۴۴/۱، مسند عبدالله بن مسعود، رقم (۴۲۴۶)، وابن ابی شیبة فی مصنفه: ۵۶۰/۱۷، کتاب السیر.

باب من جعل السلب للقاتل، رقم (۳۳۷۶۵)، و: ۳۲۴/۲۰، رقم (۳۷۸۵۲)، کتاب المغازی، غزوة بدر الکبری..

(۴) سلب د شریعت حق دې یا د امام؟ په دې باندې به د باب په آخره کښې انشاء الله بحث راځي.

(۵) د دوی په نسب کښې نور قولونه هم دي، اوګوري تهذیب الکمال: ۱۱۵/۲۸.

(۶) پورته حواله، وعمدة القاری: ۶۷/۱۵، والاصابة: ۴۲۸/۳.

(۷) پورته حواله جات.

انصاری صحابه کرام رضی اللہ عنہم و و... نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د حضرت معاذ بن عفراء او حضرت معمر بن الحارث رضی اللہ عنہما مینخ کنبی ورورولی قائمه کړې وه (۱) امام نسائی رحمہ اللہ د دوی یو روایت "لا صلاة بعد العصر حتى تغرب الشمس...." ذکر کړې دې (۲) باقی پنځو امامانو سره د دوی څه روایت نشته. د دوی په وفات کنبی اختلاف دې چې کله اوشو او چرته اوشو؟
د راجح قول مطابق د دوی انتقال د حضرت علی رضی اللہ عنہ په زمانه خلافت کنبی شوې دې (۳) رضی الله عنه وارضاه.

معاذ بن عمرو بن الجموح: دا معاذ بن عمرو بن الجموح بن زید بن حرام انصاری خزرجی سلمی رضی اللہ عنہ دې (۴) دوی هم په بیعت عقبه کنبی شریک شوې دی، بدری صحابی دې (۵) کافي حدیث الباب.

دوی د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نه روایت کوی او د دوی نه روایت کوونکې صرف حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما دې (۶).

د علامه ذهبی رحمہ اللہ مطابق د دوی انتقال د حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ په زمانه کنبی شوې دې او د ابن اسحاق مطابق په خلافت عثمانی کنبی شوې دې (۷). والله اعلم. رضی الله عنه وارضاه.
ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: ترجمة الباب سره د حضرت عبدالرحمن بن عوف رضی اللہ عنہ د حدیث مطابقت په دې معنی کنبی دې چې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د ابوجهل په سلب کنبی خمس نه وو جاری کړې (۸).

قوله: قال محمد: سمع يوسف صالحاً، وإبراهيم أباه: [٣٤٢٦، ٣٤٢٧]

محمد وائی: يوسف د صالح نه اوریدلې دی او دهغوی پلار د حضرت عبد الرحمن بن عوف رضی اللہ عنہ

(۱) تهذيب الكمال: ۱۱۶/۲۸، والاصابة: ۴۲۸/۳.

(۲) تهذيب الكمال: ۱۱۶/۲۸، والاستيعاب بهامش الاصابة: ۳۶۴/۳.

(۳) سنن النسائي الكبرى: ۱/۱۵۵، كتاب الصلاة الاولى، باب النهي عن الصلاة بعد العصر، رقم (۳۸۱)، والحدیث اخرجه ايضا ابن ابی عاصم فی الأحاد والمثنائ: ۳۹۱، رقم (۵۵۵)، وابن ابی شعبة، رقم (۷۳۹۹)، وابو داود الطيالسي، رقم (۱۲۲۶)، وغيرهم من الامة، انظر للاستزادة تعليقات الشيخ محمد عوامة علی المصنف لابن ابی شعبة: ۱۰۸/۵، رقم (۷۳۹۹).

(۴) تهذيب الكمال: ۱۱۵/۲۸-۱۱۶، والعمدة: ۶۷/۱۵، والاصابة: ۴۲۸/۳، وتهذيب التهذيب: ۱۸۸/۱۰.

(۵) عمدة القاری: ۶۷/۱۵، والاصابة: ۴۲۹/۳، والاستيعاب بهامش الاصابة: ۳۶۱/۳.

(۶) پورته حواله جات، وسیر اعلام النبلاء: ۲۴۹/۱.

(۷) سیر اعلام النبلاء: ۲۵۰/۱.

(۸) سیر اعلام النبلاء: ۲۵۰/۱-۲۵۱، ولاستيعاب بهامش الاصابة: ۳۶۳/۳.

(۹) عمدة القاری: ۶۶/۱۵.

نه اوریدلې دي

د مذکورې جملې مطلب د محمد نه مراد په خپله امام بخاري رحمه الله دي او د يوسف نه مراد ابن ماجشون، د صالح نه مراد ابن ابراهيم او د ابراهيم نه مراد ابن عبد الرحمن بن عوف رحمه الله دي او د حضرت عبد الرحمن بن عوف رحمه الله دي او ددي ټولو اوریدل ترتیب سره ثابت دي، ددي نه علاوه دا جمله صرف د ابوذر او د ابو الوقت په نسخه کښې موندلې کېږي (۱).

د مذکورې جملې مقصد بعضې حضراتو د باب حدیث ته منقطع وئیلې دي. هغوی دا وائی چې د يوسف بن ماجشون او د صالح بن ابراهيم مینځ کښې یو راوی عبد الواحد بن ابی عون ساقط دي حالانکه د هغه ذکر ضروري دي، ددي وجې نه دا روایت منقطع دي. متصل نه دي اصل کښې هم دا روایت امام بزار هم په خپل مسند کښې ذکر کړې دي او سند هم دا د بخاري والا دي لیکن په هغې کښې عبد الواحد بن ابی عون هم دي، پوره سند او گوري نو خبره به آسانه شی. امام بزار په خپل روایت کښې فرمائی:

”حدثنا محمد بن عبد الملك القرشي وعلي بن مسلم قالوا: حدثنا يوسف بن أبي سلمة..... حدثنا عبد الواحد بن أبي عون، حدثني صالح بن إبراهيم.....، قال: بينا....“

ددي روایت د نقل کولو نه پس امام بزار دا هم فرمایلې دي: ”وهذا الحديث لانعله يروى عن عبد الرحمن بن عوف، عن رسول الله صلى الله عليه وسلم إلا من هذا الوجه بهذا الاسناد....“

بنکاره خبره ده چې اوس خبره سخته شوه چې بزار یوڅه وائی او امام بخاري بل څه وائی ددي اشکال او گرانوالی ختمولو دپاره امام بخاري دا پورتنی جمله ارشاد او فرمایلې چې عبد الواحد بن ابی عون اگرچه زما په سند کښې نشته لیکن په دي سره د حدیث په اتصال باندې څه فرق نه پریوځي، ددي وجه هم داده چې د يوسف سماع د صالح نه ثابته ده او د ابراهيم سماع هم د خپل پلار عبد الرحمن بن عوف رحمه الله نه ثابته ده، ددي وجې نه په دي کښې څه باک نشته او حدیث متصل دي نه چې منقطع (۲) والله اعلم

دویم حدیث د حضرت ابو قتاده رضي الله عنه دي.

۲۹۷۳: (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنِ ابْنِ أَفْلَحَ عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَامَ حُنَيْنٍ، فَلَمَّا التَقَيْنَا كَانَتْ لِلْمُسْلِمِينَ جَوْلَةٌ، فَرَأَيْتُ رَجُلًا مِنَ الشَّرِكِيِّينَ غَلَا رَجُلًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ، فَاسْتَدْرْتُ حَتَّى أَتَيْتُهُ مِنْ وَرَائِهِ حَتَّى ضَرَبْتُهُ بِالسَّيْفِ

(۱) عمدة القاری: ۶۷/۱۵.

(۲) مسند الامام البزار: ۲۲۵: ۳، باب ماروی سعد بن ابراهيم..... رقم (۱۰۱۳)، وعمدة القاری: ۶۸/۱۵، وارشاد

الساری: ۲۲۱/۵، فتح الباری: ۲۴۹/۶.

(۳) قوله: عن ابی قتادة.....: الحديث، مر تخريجه في كتاب البيوع، باب بيع السلاح في الفتنة....

عَلَى حَبْلِ عَاتِقِهِ، فَأَقْبَلَ عَلَى فَضْمَنِي صَمَّةً وَجَدْتُ مِنْهَا رِيحَ الْمَوْتِ، ثُمَّ أَذْرَكُهُ الْمَوْتَ فَأَرْسَلَنِي، فَلَحِقْتُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَقُلْتُ مَا بَالُ النَّاسِ قَالَ أَمْرُ اللَّهِ، ثُمَّ إِنَّ النَّاسَ رَجَعُوا، وَجَلَسَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَقَالَ «مَنْ قَتَلَ قَتِيلًا لَهُ عَلَيْهِ بَيِّنَةٌ فَلَهُ سَلْبُهُ» فَقُمْتُ فَقُلْتُ مَنْ يَشْهَدُنِي ثُمَّ جَلَسْتُ ثُمَّ قَالَ «مَنْ قَتَلَ قَتِيلًا لَهُ عَلَيْهِ بَيِّنَةٌ فَلَهُ سَلْبُهُ» فَقُمْتُ فَقُلْتُ مَنْ يَشْهَدُنِي ثُمَّ جَلَسْتُ، ثُمَّ قَالَ الثَّالِثَةُ مِثْلَهُ فَقَالَ رَجُلٌ صَدَقَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَسَلْبُهُ عِنْدِي فَأَرْضِهِ عَنِّي. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لَاهَا اللَّهُ إِذَا يَعْبُدُ إِلَى أَسَدٍ مِنْ أَسَدِ اللَّهِ يُقَاتِلُ عَنِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يُعْطِيكَ سَلْبَهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «صَدَقَ» فَأَعْطَاهُ فَبَغَتْ الذِّرْعُ، فَاثْبَعْتُ بِهِ فُخْرًا فِي بَنِي سَلَمَةَ، فَإِنَّهُ لَأَوَّلُ مَا لَ تَأْتَلْتُهُ فِي الْإِسْلَامِ. [ار: ۱۹۹۴]

رجال الحديث

- ① عبدالله بن مسلمه: دا عبدالله بن مسلمه رضي الله عنه دې. د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب من الدين الفرار من الفتن" کښې تیر شوې دي.
 - ② مالک: دا امام دارالهجرة مالک بن انس رضي الله عنه دې. د دوی تذکره د بده الوسی په "الحديث الثاني" کښې تیره شوې ده.
 - ③ يحيى بن سعيد: دا يحيى بن سعيد انصاري رضي الله عنه دې. د دوی حالات د بده الوسی په "الحديث الاول" کښې تیر شوې دي. [کشف الباری: ۱/۳۳۸، و: ۲/۳۲۱، باب صوم رمضان احتساباً...]
 - ④ ابن افلح: دا عمر بن کثیر بن افلح منسوب الی جد رضي الله عنه دې.
 - ⑤ أبي محمد: دا ابو محمد نافع دې چې د حضرت ابو قتاده رضي الله عنه مولى دې.
 - ⑥ أبو قتاده: دا مشهور صحابی حضرت ابو قتاده الحارث بن ربعی الانصاري رضي الله عنه دې.
- د حديث مبارک ترجمه: حضرت ابو قتاده رضي الله عنه فرمائي چې مونږ د حنين په کال ۸ هجري کښې، نبی کریم صلی الله علیه و آله سره د حنين طرفته اووتلو، چې کله زمونږ مخامخ کيدل د دشمن سره اوشو نو مسلمانانو ته (په شروع کښې) ناکامی اوشوه ما اوکتل چې يو مشرک په يو مسلمان باندې غالب راغلې دې نو زه راواپس شوم او د هغه د خټ رگ مې په توره اووهلو

① (کشف الباری: ۲/۸۰) -

② (کشف الباری: ۱/۲۹۰، و: ۲/۸۰) -

③ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب البيوع، باب بيع السلاح في الفتنة وغيرها) -

④ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب جزاء الصيد، باب لا يعين المحرم الحلال....) -

⑤ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الوضوء، باب النهي عن الاستنجاء باليمين) -

نو هغه زما طرفته متوجه شو او دومره زور ئې راته راكړو چې ما ته د مرگ بوټى محسوس شو، بيا هغه مړ شو او زه ئې هم پريخوډم!

ددې نه پس زه حضرت عمر رضي الله عنه سره ملاؤ شوم او د هغوى نه مې تپوس او كړو چې د خلقو څه اوشو؟ هغوى او فرمايل چې دا د الله تعالى فيصله وه (كومه چې پوره شوه) ددې نه پس مسلمانان دوباره راواپس شو او فتح ئې حاصله كړه، بيا نبى صلى الله عليه وسلم تشریف فرما شو او اعلان ئې او كړو چې، "من قتل قتيلاً، له عليه بينة، فله سلبه".

ددې اعلان په اوریدو سره، زه اودریدم او ما اووئیل چې زما دپاره به څوك گواهی وركړی؟ بيا كيناستم نبى صلى الله عليه وسلم بيان اعلان او كړو نو زه بيا اودریدم... دریم ځل نبى صلى الله عليه وسلم اعلان او كړو نو يو سړى اووئیل، يا رسول الله! دې رښتيا وائی او دده سلب ما سره دې، ليكن تاسو دوى زما په حق كښې راضى كړئ (چې دې ئې هم ماسره پرېږدى).

ددې سړى دې خبرې اوریدو سره، حضرت صديق اكبر رضي الله عنه او فرمايل، نه، د الله قسم! د الله تعالى په زمره كښې چې يو زمرې د الله تعالى او د هغه د رسول له طرفه قتال كوى، نبى صلى الله عليه وسلم به هيڅكله دا خوښه نه كړى چې د هغه سلب تاسو ته دركړى نبى صلى الله عليه وسلم د حضرت صديق اكبر تصديق او فرمائيلو او سلب ئې ابوقتاده ته وركړو ابوقتاده وائی چې ما په هغې سلب باندې (چې زره وه) په قبيله بنى سلمه كښې يو باغ واخستو د اسلام قبلوكو نه پس دا د ټولو نه اول مال وو چې ما ذخيره كړو. ددې حديث تشریح په كتاب المغازی كښې د غزوه حنین لاندې راغلې ده. (۱).

ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت په دې معنى كښې دې چې حضرت ابوقتاده رضي الله عنه ته كوم سلب وركړې شو په هغې كښې خمس نه وو جارې كړې شوې. (۲).

سلب شرعى حق دې يا د امامت حق؟ د باب په شروع كښې دا مسئله تيره شوې ده چې قاتل د مقتول د سلب حقدار وى او دا چې ددې دپاره د امام اجازت شرط دې يا نه؟ ددې مسئلې د نور وضاحت دپاره مونږ د ابن قيم رحمته الله عليه د كلام خلاصه نقل كوو، فرمائى چې په غزوه حنین كښې نبى كريم صلى الله عليه وسلم دا جمله هم ارشاد فرمائيلې وه، "من قتل قتيلاً، له عليه بينة، فله سلبه"، اوس د فقهاؤ اختلاف شو چې د سلب د مستحق كيدو بنياد شريعت دې يا شرط (يعنى چې امام شرط اولگوى او اجازت وركړى)؟

① امام شافعى او احمد خو د شريعت د حق كيدو قائل دى.

② امام مالك او امام ابوحنيفه د شرط قائل دى.

اوس د اختلاف ماخذ څه دې او د فقهاؤ اختلاف په كوم بنياد باندې دې؟

(۱) كشف البارى، كتاب المغازى: ۵۴۰-۵۴۱.

(۲) عمدة القارى: ۶۸/۱۵.

ماخذ او بنياد دا دې چې د نبی ﷺ مختلف حیثیتونه دي، نبی ﷺ مبارک امام هم دي او حاکم هم دي، مفتی هم دي او رسول هم دي اوس نبی ﷺ بعضې خبرې د رسالت د منصب لائق ارشاد فرمائی نو هغه عام شریعت جوړ شی او د هغې اطلاق په ټولو باندې وی. بعضې خبره د افتاء د منصب مناسب ارشاد او فرمائی، ددې واضح مثال د حضرت هند بنت عتبہ اچي د ابوسفیان رضی اللہ عنہ بی بی ده، مسئله ده، دا بی بی نبی ﷺ ته راغله او د خپل خاوند د بخل او په نان نفقه کنبې ئې د تنگی کولو شکایت او کړو نو نبی ﷺ او فرمائیل، ”خذ ما یکفیک، و ولدک بالمعروف“ دا فتوی ده، حکم او فیصله نه ده، ورنه نبی ﷺ به مدعی علیه هم طلب کړې وو. د دعوی د جواب ذکر کولو حکم به ئې فرمائیلې وو او حضرت هند رضی اللہ عنہا نه به ئې گواهان هم طلب کړې وو.

کله به څه خبره نبی ﷺ د امامت د منصب شایان شان فرمائیل، چې په هغې کنبې به د امت د هغه وخت، د هغه ځانې او د هغه کیفیت او د حالت کتلو سره فیصله فرمائیل، بیا به وروستو امامانو هم ددې رعایت ساتلو، د هغه مصلحت پیش نظر، کوم باندې چې به نبی ﷺ د زمانې، مکان یا د حالت په اعتبار سره تلو، ددې ځانې نه د فقهاؤ اختلاف پیدا کیدی، ددې ډیر مثالونه دي، چې په هغې کنبې یو مثال د ”من قتل قتیلًا....“ دي. اوس دا ارشاد کوم قسم کنبې داخل دي، په دې کنبې د امت د فقهاؤ اختلاف دي، نو هغه حضرات کوم چې ددې خبرې قائل دي چې دا ارشاد د امامت د منصب مطابق وو نو د هغوی په نزد دا حکم د امام سره متعلق دي او د امام په اجازت سره مشروط دي، او کوم حضرات چې ددې خبرې قائل دي چې دا ارشاد د رسالت او د نبوت د منصب شایان شان وو نو د هغوی په نزد دا د شریعت حکم دي چې څوک قاتل هم وی نو هغه به د مقتول د سلب مستحق وی، خواه د امام اجازت وی یا نه. ابن قیم رحمه الله فرمائی:

”وفي هذه الغزوة أنه قال: ”من قتل قتيلًا، له عليه بينة، فله سلبه“ (۱). وقاله في غزوة أخرى قبلها، فاختلف الفقهاء، هل هذا السلب مستحق بالشراع أو بالشرط؟ على قولين، هما روايتان عن أحمد. أحدهما: أنه له بالشراع، شرطه الامام أو لم يشراطه، وهو قول الشافعي. والثاني: أنه لا يستحق إلا بشرط الامام، وهو قول أبي حنيفة.

وقال مالك رحمه الله: لا يستحق إلا بشرط الامام بعد القتال. فلو ضل قبله، لم يجوز، قال مالك: ولم يبلغني أن النبي صلى الله عليه وسلم قال ذلك إلا يوم حنين، وإنما نفل النبي صلى الله عليه وسلم بعد أن برد القتال. وماخذ النزاع أن النبي صلى الله عليه وسلم كان هو الامام، والحاكم، والمفتي، وهو الرسول، فقد يقول الحكم بمنصب الرسالة، فيكون شرعاً عاماً إلى يوم القيامة، كقوله: ”من أحدث في أمرنا هذا ما ليس منه فهو رد“ (۲).

(۱) متفق عليه، مخرج سابقاً.

(۲) أخرجه البخاري، كتاب الصلح، باب إذا اصطلحوا على صلح جور.... رقم (۲۶۹۷).... [بقيه بر صفحه آئنده...]

وقوله: "من زرع في أرض قوم بغير إذنهم فليس له الشفعة من الزرع شيء وله نفقته" (١). وكعبه "بالشاهد، واليمين" (٢). "وبالشفعة فيما لم يقسم" (٣).

وقد يقول بنصب الفتوى، كقوله لهند بنت عتبة امرأة أبي سفيان. وقد شكت إليه شح زوجها، وأنه لا يعطيها ما يكفيها: "خذى ما يكفيك وولدك بالمعروف" (٤). فهذه فتيا لا حكم، إذ لم يدم بابي سفيان، ولم يستل منه من جواب الدعوى، ولا سئلها البينة.

وقد يقول بنصب الامامة، فيكون مصلحة للامة في ذلك الوقت، وذلك المكان، وعلى تلك الحال، فيلزم من بعده من الامة مراعاة ذلك على حسب المصلحة التي راعاها النبي صلى الله عليه وسلم زماناً ومكاناً وحالاً، ومن هاهنا تختلف الامة في كثير من المواضع التي فيها أثر عنه صلى الله عليه وسلم، كقوله صلى الله عليه وسلم: "من قتل قتيلاً فله سلبه" هل قاله بنصب الامامة، فيكون حكمه متعلقاً بالامة، أو بنصب الرسالة والنموة، فيكون شهاً عاماً؟ وكذلك قوله: "من احيا أرضاً ميتة فهي له" (٥) هل هو شرح عام لكل احد، اذن فيه الامام، أو لم ياذن أو هو راجع الى الامة، فلا يملك بالاحياء الا باذن الامام؟ على القولين، فالاول: للشافعي وأحمد في ظاهر مذهبهما.

والثاني: للابن حنيفة، وفرق مالك بين القلوات الواسعة، وما لا يتشام فيه الناس، وبين ما يقع فيه التشام، فاعتبر اذن الامام في الثاني، دون الاول (٦).

..

...بقية از حاشيه گذشته [ومسلم، كتاب الاقضية، باب نقض الاحكام الباطلة..... رقم (٤٤٩٢). (١٨). من حديث عائشة رضي الله عنها] _

(١) أخرجه احمد: ١٤١/٣، رقم (١٥٩١٥)، وابو داود (٣٤٠٣)، وابن ماجه (٣٤٦٦)، من حديث رافع خديج _

(٢) أخرجه مسلم (٤٤٧٢)، في الاقضية: باب القضاء باليمين والشاهد، من حديث ابن عباس _

(٣) أخرجه البخاري، كتاب البيوع، باب بي الشريك..... رقم (٢٢١٣)، وكتاب الشفعة، باب الشفعة فيما لم يقسم..... رقم (٢٢٥٧)، وفي مواضع اخرى، ومسلم، كتاب المساقاة، باب الشفعة، رقم (٤١٢٨)، وابو داود (٣٥١٤)، من حديث جابر بن عبد الله _

(٤) أخرجه البخاري، كتاب البيوع، باب من أجرى امر امصار..... رقم (٢٢١١)، والنفقات: باب اذا لم ينفق الرجل، فللمرأة ان تأخذ بغير علمه، رقم (٥٣٦٤)، ومسلم (٤٤٧٧)، في الاقضية: باب قضية هند _

(٥) رواه البخاري، في المزارعة: باب من احيا أرضاً مواتاً، تعليقا، ومالك في الموطأ موصولا: ٧٤٤/١، في الاقضية: باب القضاء في عمارة الموات، رقم (١٤٢٥)، عن ابن عمر رضي الله عنهما، ورواه غير واحد من الصحابة، انظر جامع الاصول: ٣٤٧/١ _ ٣٥١، الكتاب السادس.... _

(٦) زاد المعاد: ٤٨٩/٣ _ ٤٩١، فصل في ان من قتل قتيلاً فله سلبه _

①۹ باب: مَا كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

يُعْطَى الْمُؤَلِّفَةَ قُلُوبُهُمْ وَغَيْرُهُمْ مِنَ الْخُمْسِ وَنَحْوِهِ

د ترجمه الباب مقصد دلته امام بخاری رحمہ اللہ د مؤلفۃ القلوب مسئلہ بیانوی. دغه شان دا چې نبی صلی اللہ علیہ وسلم د خمس نه مؤلفۃ القلوب وغیره ته ورکول نو خبره هم هغه راغله چې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم ته د غنیمتونو په معاملہ کنبی مکمل اختیار حاصل وو، چرته چې به ئې مناسب گنرله نو خرج به ئې ترې نه کوو چې په دې کنبی مؤلفۃ القلوب هم داخل دی.

قاضی اسماعیل فرمائی: ”فی إعطاء النبي صلى الله عليه وسلم للمؤلفة من الخمس دلالة على أن الخمس إلى الإمام، يفعل فيه ما يرى من المصلحة“ (۱).

مؤلفۃ القلوب چاته وئیلې کیږی؟ د مؤلفۃ القلوب مختلف قسمونه دی:

① هغه خلق چې مسلمانان شوې خو وو لیکن اسلام د هغوی زړونو کنبی مضبوط شوې نه وو، راسخ شوې نه وو. نبی صلی اللہ علیہ وسلم به دغه خلقو ته مال ورکوو، دې دپاره چې اسلام ددې خلقو په زړونو کنبی راسخ شی، ځکه چې قاعده ده چې ”الانسان عهد الاحسان“ (۲).

② دغه خلق خو کافر وو لیکن ددوی په باره کنبی دا توقع وه چې کله دوی ځان ته نزدې کړي شی نو دوی به اسلام قبول کړی. دې خلقو ته به نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د زړه د رابنکلو دپاره مال ورکوو.

③ هغه کفار وو د چا په باره کنبی چې دا خطر وه چې دوی به خپلو گاونډیانو مسلمانانو ته تکلیف ورکړی، نو د مصلحت د وجې نه به دوی ته هم مال ورکړې کیدو.

په ترجمه الباب کنبی د ”المؤلفة قلوبهم“ نه مخکې دوه قسمونه او د ”وغيرهم“ نه آخری قسم مراد دي. (۳).

دا رائي چې د وغيرهم نه د مؤلفۃ القلوب دريم قسم مراد دي، نو دا د بخاری د عام شارحينو رائي ده البته مؤلف رحمہ اللہ چې په ترجمه الباب کنبی کوم احاديث ذکر کړي دي، په هغې کنبی د حضرت عمر او د حضرت زبير بن العوام رضي الله عنهما ذکر هم راغلي دي، دوی په دريم قسم کنبی شاملول بالکل ممکن نه دی، د دوی ایماني کیفیت خو ښکاره او معلوم دي، پاتې لا دا خبره چې دوی په کافرانو کنبی داخل او گنرلې شی، ددې وجې نه به دا وئیلې شی چې لفظ د

(۱) فتح الباری: ۶/۲۵۲.

(۲) اوگوری، الاعجاز والایجاز للتحالی: ۱/۹۲. والتمثیل والمحاضرة له: ما یتمثل به من ذکر الانسان..... وفوات الوفيات: ۳/۱۵۳. ترجمه السراج الوراق. رقم ((۳۷۹)).

(۳) عمدة القاری: ۱۵/۶۹. وفتح الباری: ۶/۲۵۲. واحکام القرآن للرازی: ۳/۱۵۹. البته ابن قدامه د مؤلفۃ القلوب شپږ قسمونه بیان کړي دي، دوه د کافرانو او څلور د مسلمانانو اوگوری، المغنی: ۶/۳۲۸-۳۲۹. باب قسمة الفیء..... المؤلفة قلوبهم..... فصل. رقم ((۵۱۰۷)).

وغيرهم عام دي. په دې کښې د مؤلفه القلوب نه علاوه ټول داخل دي. د دريم قسم کافران او ټول مسلمانان او دا به وئيلې شي چې دلته د حضور اکرم ﷺ هغه اختيار کلي بيانولې شي والله اعلم

”ونعوه“ کښې ضمير مجرور د الخمس طرفته راجع دي. ”اي ونحو الخمس“ ددې نه د خراج مال، جزیه او مال فني مراد دي. (۱).

د مؤلفه القلوب حصه اوس باقی ده یا نه؟ اوس سوال دادي چې د مؤلفه القلوب حصه باقی ده یا نه؟

د ائمه ثلثه په نزد د معتمد قول مطابق د مؤلفه القلوب حصه اوس هم په څه نه څه صورت کښې باقی ده، ساقطه نه ده.

ددې حضراتو يو قول د احتياج او د ضرورت د قيد سره هم مقيد دي. يعنې د هغوی حصه ساقط شوې ده ځکه چې اسلام ته اوس قوت و طاقت اوشان وشوکت حاصل شوې دي ليکن که څه وخت د دوی د زړه د رابښکلو ضرورت پيښ شو نو دوی ته به حصه ورکولې شي. (۲). د حنفیه قول دادي چې مؤلفه القلوب ته به حصه نه ملاويږي ځکه چې د دوی د حصې په ساقط کيدلو باندې د صحابه کرامو رضی الله عنهم اجماع شوې ده. (۳). د احنافو دليل د حضرت اقرع بن حابس او د عيسيه بن حصن رضی الله عنهما واقعه ده.

لکه امام بیهقي وغيره روايت نقل کړې دي چې دا دواړه حضرات صديق اکبر رضی الله عنه ته راغلل او د هغوی نه ئې تقاضه اوکړه، زمکه ئې او غوښتله او يو خط ئې اوليکه. بيا دا دواړه حضرات حضرت عمر رضی الله عنه ته ورغلل چې هغوی هم په دې خط باندې خپله گواهي درج کړې حضرت عمر رضی الله عنه هغه خط واخسته، په هغې ئې لارې تهوک کړې او هغه ئې وران کړو. د ورانولو نه پس ئې اوشلوو. دا حضرات د غصې په حالت کښې حضرت صديق اکبر رضی الله عنه ته راغلل او وې وئيل: ”ما ندری، الخليفة انت ام عمر؟!“ صديق اکبر رضی الله عنه او فرمائيل: ”هو انشاء الله“، خومره عجيبه جواب ئې ورکړو!!

حضرت عمر رضی الله عنه هغوی ته فرمائيلې وو چې اسلام هغه زمانه کښې ذليل وو، حضور ﷺ به ستاسو زړونه ساتل، اوس الله تعالی اسلام ته عزت ورکړې دي، لار شئ څه مو چې خوښه وی هغه کوئ، اسلام اوس ستاسو نه بې پرواه دي، ددې وجې نه په اسلام باندې اوسيرئ، گني نو ستاسو او زمونږ مينځ کښې به فيصله توره اوکړي. (۴)

(۱) عمدة القاری: ۶۹/۱۵، وفتح الباری: ۶/۲۵۲.

(۲) الموطاع الاوجز: ۶/۹۰، کتاب الزکاة، باب اخذ الصدقة ومن يجوز له اخذها، رقم ((۲۹/۶۶)).

(۳) فتح القدیر: ۲/۲۰۱، واحکام القرآن للرازی: ۳/۱۶۱، وفتح الملهم: ۵/۱۳۳.

(۴) سنن البیهقي الکبری: ۷/۳۲، کتاب قسم التصرفات، باب سقوط سهم المؤلفه قلوبهم.....، رقم (۱۳۱۸۹)، واحکام القرآن للرازی: ۳/۱۶۰-۱۶۱.

دا د حضرت عمر فاروق رضی الله عنه شان وو^(۱)
 حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه هم په دې مسئله کښې د حضرت عمر فاروق رضی الله عنه موافقت او کړو
 او په صحابه کرامو رضی الله عنهم کښې چا هم په دې باندې رد اونه کړو، گویا دا د صحابه کرامو رضی الله عنهم
 یو قسم اجماع منعقد شوه^(۲).

ددې واقعي نه معلومه شوه چې دا اتهام الحکم باتهام علت د قبیل نه دې، لکه څنگه چې د
 رمضان مبارک ختمیدو سره د هغې حکم یعنی روژه هم ختمیږي، دغه شان ذل الاسلام هم
 دې، یعنی د مال ورکولو چې کوم علت وو د هغې ختمیدلو سره مؤلفه القلوب ته مال ورکول
 هم ختم شو، ورنه دوباره به د اسلام ذلیل کیدل لازم راشي، وځای یې جوړ.

دویم جواب دادې چې دلته د صحابه کرامو رضی الله عنهم اجماع شوې ده، د شیخینو موافقت شوې
 دې او دا اجماع ناسخه ده او مذکوره حکم منسوخ شو^(۳).

خبردارې ابن رشد په بداية المجتهد کښې د امام ابو حنیفه رحمته الله علیه نه نقل کړې دی چې مؤلفه
 القلوب ته حصه ورکړې کیدې شي که چرته د امام په دې باندې رائي وي^(۴).
 لیکن عثمانی رحمته الله علیه دا نقل غریب ګرځولي دې او فرمائي:

”لم أجد هذا النقل عن أبي حنيفة، رحمه الله، في كتبنا إلى الآن، وليتثبت!“^(۵).

بهر حال په دې مسئله کښې چې د احنافو کوم مسلک دې نو هغه څه د دلیل نه بغیر نه
 دې^(۶).

مؤلفه القلوب ته به د کوم ځانې نه ورکړې کیده؟ ددې نه پس په دې کښې هم د امامانو
 اختلاف دې چې نبی کریم صلی الله علیه و آله به مؤلفه القلوب ته د کوم ځانې نه ورکوله؟

① د امام مالک او د یو جماعت خیال دادې چې هغوی ته به ئې د خمس نه ورکوله
 ② امام شافعی او د یو جماعت رائي داده چې دې خلکو ته به ئې د خمس الخمس نه
 ورکوله^(۷). د امام بخاری رحمته الله علیه رائي هم د امام مالک رحمته الله علیه رائي موافق ده. کما مر.

قوله: رواه عبد الله بن زيد، عن النبي صلى الله عليه وسلم: [ر: ۳۰۷۰]

دا خبره عبد الله بن زيد د نبی کریم صلی الله علیه و آله نه روایت کړې ده. عبد الله بن زيد بن عاصم انصاري.

(۱) احکام القرآن: ۱۶/۳، وفتح الملهم: ۱۳۴/۵، وشرح النقاية: ۱/۳۸۵، الرکاة، مصارف الزکاة)۔

(۲) شرح النقاية: ۱/۳۸۵، وفتح الملهم: ۱۳۴/۵)۔

(۳) بداية المجتهد: ۱/۲۷۵، کتاب الزکاة، الفصل الاول في عدة الاصناف..... المسألة الثانية)۔

(۴) فتح الملهم: ۱۳۴/۵)۔

(۵) ددې مسئلې د نور وضاحت دپاره او ګوري، احکام القرآن: ۱۶۰/۳-۱۶۱، مطلب: في المؤلفة القلوب،
 وفتح الملهم: ۱۳۳/۵-۱۳۵، والموسوعة الفقهية: ۲۳/۳۱۹، و: ۱۳/۳۶)۔

(۶) فتح الباری: ۶/۲۵۲، دغه شان او ګوري، کشف الباری، کتاب المغازی: ۵۵۳-۵۵۴)۔

مازنی. مدنی رحمۃ اللہ علیہ مشهور صحابی دی ^(۱).

د مذکورہ تعلیق مقصد مؤلف رحمۃ اللہ علیہ چې په ترجمه الباب کښې خپله کومه دعوی ذکر کړې ده. نو ددې تعلیق مقصد د هغې تقویت دې چې هم دا خیزد عبدالله بن زید نه روایت دې چې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم به مؤلفه القلوب وغیره ته د خمس وغیره نه ورکوله د مذکورہ تعلیق تخریج: په دې تعلیق کښې امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ د حضرت عبدالله بن زید رحمۃ اللہ علیہ هغه اوږد حدیث شریف طرفته اشاره کړې ده کوم چې مؤلف په مغازی ^(۲) کښې د حنین د قصې لاندې موصولا ذکر کړې دي ^(۳). د امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ نه علاوه امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ هم په کتاب الزکوة کښې دا حدیث موصولا ذکر کړې دي ^(۴).

ترجمه الباب سره د تعلیق مناسبت: د حضرت عبدالله بن زید رحمۃ اللہ علیہ د حدیث ابتدائی جملې دادی: ”لما افاء الله على رسوله صلى الله عليه وسلم يوم حنين، قسم في الناس في المؤلفة قلوبهم.“
هم په دې الفاظو کښې ترجمه الباب سره د تعلیق مطابقت دې ځکه چې په دې کښې مؤلفه القلوب ته د ورکړې کیدو تذکره ده ^(۵). ددې تعلیق نه علاوه امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ په باب کښې لس احادیث ذکر کړې دي، په هغې کښې اولنې حدیث د حضرت حکیم بن حزام رحمۃ اللہ علیہ دي

۲۹۷۴: (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَعُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ حَكِيمَ بْنَ حِزَامٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ قَالَ لِي «يَا حَكِيمُ، إِنَّ هَذَا الْمَالَ خَضِرٌ حُلُوٌّ، فَمَنْ أَخَذَهُ بِخَاوَةِ نَفْسٍ بُورِكَ لَهُ فِيهِ، وَمَنْ أَخَذَهُ بِأَشْرَافِ نَفْسٍ لَمْ يَبَارِكْ لَهُ فِيهِ، وَكَانَ كَالَّذِي يَأْكُلُ وَلَا يَشْبَعُ، وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى». قَالَ حَكِيمٌ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لَا أُرْزَأُ أَحَدًا بَعْدَكَ شَيْئًا حَتَّى أَفَارِقَ الدُّنْيَا. فَكَانَ أَبُو بَكْرٍ يَدْعُو حَكِيمًا لِيُعْطِيَهُ الْعَطَاءَ، فَيَأْتِي أَنْ يَقْبَلَ مِنْهُ شَيْئًا، ثُمَّ إِنَّ عُمَرَ دَعَا لِيُعْطِيَهُ فَأَبَى أَنْ يَقْبَلَ فَقَالَ يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ، إِنِّي أَعْرِضُ عَلَيْهِ حَقُّهُ الَّذِي قَسَمَ اللَّهُ لَهُ مِنْ هَذَا الْفَيْءِ، فَيَأْتِي أَنْ يَأْخُذَهُ. فَلَمْ يَرَزَأُ حَكِيمٌ أَحَدًا مِنَ النَّاسِ بَعْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى تُوَفِّي. [ر: ۱۳۶۱]

(۱) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الوضوء، باب لا يتوضا من الشك....

(۲) صحيح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة الطائف، رقم ((۴۳۳۰)).

(۳) فتح الباری: ۲۵۲/۶، وعمدة القاری: ۷۰/۱۵.

(۴) صحيح مسلم، کتاب الزکاة، باب اعطاء المؤلفة قلوبهم على الاسلام، رقم ((۲۴۴۶)).

(۵) فتح الباری: ۲۵۲/۶.

(۶) قولهما: ان حکیم بن ۳ الحديث مر تخریجه فی کتاب الزکاة، باب الاستغفار عن المسالة.

رجال الحديث

- ① محمد بن يوسف دا محمد بن يوسف فريابی رحمہ اللہ دې د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب ماکان النبی صلی اللہ علیہ وسلم یتخولہم....." کښې تیره شوې ده (۱).
- ② الاوزاعي دا مشهور محدث عبد الرحمن بن عمرو الاوزاعي رحمہ اللہ دې د دوی تفصیلی حالات په کتاب العلم، "باب الخروج فی طلب العلم" کښې تیر شوې دی (۲).
- ③ الزهري محمد بن مسلم ابن شهاب الزهري رحمہ اللہ اجمالی تذکره په "بدء الوحي" کښې تیره شوې ده (۳).
- ④ سعيد بن المسيب دا مشهور محدث حضرت سعيد بن المسيب رحمہ اللہ دې د دوی حالات د کتاب الايمان، "باب من قال: ان الايمان....." په ضمن کښې بيان شوې دی (۴).
- ⑤ عروہ بن الزبير: د مشهور تابعی حضرت عروہ بن الزبير رحمہ اللہ تذکره اجمالی طور په "بدء الوحي" کښې تیره شوې ده (۵).
- ⑥ حکيم بن حزام: دا د نبی صلی اللہ علیہ وسلم صحابی، حضرت حکيم بن حزام رحمہ اللہ دې (۶). د حديث شريف ترجمه: حضرت حکيم بن حزام رحمہ اللہ فرمائی چې ما د نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه طلب اوکړو، نبی صلی اللہ علیہ وسلم ما ته راکړو، بيا ما سوال اوکړو، نبی صلی اللہ علیہ وسلم بيا راکړو، بيا ئې او فرمائيل. ائې حکيم! دا مال بنائسته او خوشگوار دې، نو کوم سرې چې دا په نیک نیتۍ سره اخلي نو د هغه په مال کښې برکت نه وي، بلکه هغه داسې شی چې خوراک کوی لیکن..... د هغه خيټه نه ډکېږي او پورته لاس د ښکته لاس نه غوره دې. حضرت حکيم فرمائی، ما او وئيل ائې د الله رسوله! قسم په هغه ذات کوم ذات چې تاسو په حقه رالېږلې ئې! زه به ستاسو نه پس د هيچا نه وانخلم، تردې چې دنيا پرېږدم. نو حضرت ابوبکر به حضرت حکيم راغوښتو چې ورته څه ورکړي لیکن هغوی به ترې هيڅ نه اخستل بلکه انکار به ئې کوو. بيا حضرت عمر فاروق رضي اللہ تعالیٰ عنہ طلب کړو چې څه ورته ورکړي لیکن د هغوی نه ئې هم د اخستلو نه انکار اوکړو. ددې صورت حال په لیدلو سره، عمر فاروق رضي اللہ تعالیٰ عنہ او فرمائيل، ائې د مسلمانانو ډلې! زه په حکيم باندې د هغه حق پيش کوم. کوم چې الله تعالی هغه دپاره په مال فني کښې گيخوډې دې لیکن هغه ئې د

(۱) کشف الباری: ۲۱۶/۳.

(۲) کشف الباری: ۳۵۳/۳.

(۳) کشف الباری: ۳۲۶/۱. الحديث الثالث.

(۴) کشف الباری: ۱۵۹/۲.

(۵) کشف الباری: ۲۹۱/۱. تفصیلی حالاتو دپاره اوگوری، کشف الباری: ۴۳۶/۲.

(۶) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الزکاة. باب لا صدقة الا عن ظهر غني.

فېلو لونه انکار کوي دغه شان حضرت حکیم بن حزام د نبی کریم ﷺ د وفات نه پس ترمرگه پورې د خلقو نه هېڅ هم وانخستل الله اکبر!
خبرداري ددې حديث مبارک تعلق چونکه کتاب الزکوة سره دې، ددې وجې نه ددې تشریح به هلته ذکر کېږي.)

ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت دا حديث امام بخاري رحمه الله ددې وجې نه دلته ذکر کړې دې چې حضرت حکیم بن حزام رحمه الله په مؤلفه القلوب کښې ووي. نبی ﷺ به په دې بنياد باندې مختلفو موقعو باندې دوی ته مال وغيره ورکوي، چې د هغې ذکر په "سئلت فاعطان" کښې دې، نو مطابقت اوموندلې شو. (۲).
د باب دويم حديث د حضرت ابن عمر رضي الله عنهما دې

۲۹۷۵ (۲). حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُ كَانَ عَلَى اعْتِكَافٍ يَوْمَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، فَأَمَرَهُ أَنْ يَفِي بِهِ. قَالَ وَأَصَابَ عُمَرُ جَارِيَتَيْنِ مِنْ سَبَى حُنَيْنٍ، فَوَضَعَهُمَا فِي بَعْضِ بُيُوتِ مَكَّةَ - قَالَ - فَمَنَّ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَلَى سَبَى حُنَيْنٍ، فَجَعَلُوا يَسْعَوْنَ فِي السِّبْكِ فَقَالَ عُمَرُ يَا عَبْدَ اللَّهِ، انْظُرْ مَا هَذَا فَقَالَ مَنْ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَلَى السَّبَى. قَالَ أَذْهَبَ فَأَرْسِلَ الْجَارِيَتَيْنِ. قَالَ نَافِعٌ وَلَمْ يَعْمَرْ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - مِنَ الْجَعْرَانَةِ وَلَوْ أَعْمَرَ لَمْ يَخَفْ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ.

رجال الحديث

- ① ابو النعمان دا ابو النعمان محمد بن الفضل سدوسي رحمه الله دې د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب قول النبي صلى الله عليه وسلم، الدين النصيحة....." کښې تيره شوې ده. (۲).
- ② حماد بن زيد: دا حماد بن زيد بن درهم رحمه الله دې د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب المعاصي من امر الجاهلية...." کښې تير شوې دي. (۲).
- ③ ايوب دا ايوب سختياني رحمه الله دې د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب حلاوة الايمان" کښې

(۱) ددې حديث بعضې تشریحات، کشف الباری، کتاب الرقاق: ۳۹۷-۲۹۸ کښې راغلې دي.
(۲) د مؤلفه القلوب د نومونو دپاره اوگوري، کشف الباری، کتاب المغازی: ۵۵۴، مع حواله جات).
(۳) عمدة القاری: ۷۰/۱۵، والکوثر الجاری: ۱۲۵/۶-
(۴) قوله: ان عمر.... الحديث، مر تخريجه في الاعتكاف، باب الاعتكاف ليلا).
(۵) کشف الباری: ۷۶۸/۲-
(۶) کشف الباری: ۲۱۹/۲-.

راغلي ده (۱).

④ نافع دا نافع د ابن عمر رضي الله عنهما مولى دې د دوى تذکره په کتاب العلم "باب ذکر العلم والفتیالی المسجد" کښې تیره شوې ده (۲).

⑤ عمر بن الخطاب د خليفه ثانى حضرت عمر فاروق رضي الله عنه اجمالى تذکره په "بده الوسى" کښې بيان شوې ده (۳).

قوله: ان عمر بن الخطاب رضى الله عنه قال: يا رسول الله:

يو حديث او درې احكامات: دا حديث اصل کښې په درې مختلف حکمونو باندې مشتمل دې، يا داسې اووايي چې امام بخارى رحمه الله درې حديثونه په يو حديث کښې جمع کړي دي، ځکه چې راوى د ټولو نافع عن ابن عمر رضي الله عنهما دې.

اولنې حکم اعتکاف سره متعلق دې (۴)، چې د هغې تشریح به ددې لاندې راشي. دويم حکم د غزوه حنین د قيديانو متعلق دې، چې د هغې تشریح دلته مقصوده ده، دا دويم حکم د و اصاب عمر جاريتمين نه قال: اذهب فارسل الجاريتين پورې دې. دريم حکم عمرې سره متعلق دې، چې د "قال نافع: ولم يعتمر...." نه د حديث شريف د آخره پورې دې. ددې تشریح به په کتاب العمرة کښې راشي (۵).

قوله: وأصاب عمر جاريتمين من سبي حنين، فوضعهما في بعض بيوت

مكة..... او حضرت عمر رضي الله عنه ته د حنين په قيديانو کښې دوه وينزې حاصلې شوې، چې هغه دوى د مکې مکې مکرمې په يو کور کښې حصارې کړې. فرمائى چې نبى کریم صلی الله علیه و آله په هغه قيديانو باندې احسان او کړو، نو دا قيديان د مکې مکرمې په لارو کوڅو کښې په منډو تړپو وو نو عمر رضي الله عنه او فرمائيل، ائي عبدالله او گوره! څه خبره ده؟ هغوى جواب کښې او فرمائيل چې نبى کریم صلی الله علیه و آله قيديان آزاد کړي دي، عمر او فرمائيل، لار شه: دواړه وينزې آزادې کړه په دې حديث شريف کښې د بنو هوازن د دوو قيديانو ذکر دې، د قصې تفصيل تير شوې بابونو او په کتاب المغازی کښې تير شوې دې (۶).

(۱) کشف الباری: ۲/۲۶-.

(۲) کشف الباری: ۳/۶۵۱-.

(۳) کشف الباری: ۱/۱۳۹. د باب د حديث په ارسال او اتصال کښې د راويانو اختلاف دې، د بحث دپاره او گوري، کشف الباری، کتاب المغازی: ۵۳۸-۵۳۹-.

(۴) صحيح بخارى، کتاب الاعتکاف (الصوم)، باب الاعتکاف ليل، رقم ((۲۰۳۲))-.

(۵) کتاب الحج (العمرة)، باب کم اعتمر النبي صلی الله علیه و آله؟-.

(۶) کشف الباری، کتاب المغازی: ۵۳۲، باب قول الله تعالى: (ويوم حنين....))-.

دلته دا بیان کړې شوې دی چې د هوازن قیدیان په غنیمتونو کښې تقسیم شو نو دوه وینزې د حضرت عمر رضی الله عنه په حصه کښې راغللې. چې کله د هوازن قیدیانو اسلام قبول کړو نو نبی کریم صلی الله علیه و آله د هغوی د آزادولو حکم او کړو نو حضرت عمر رضی الله عنه هم د خپلې حصې دواړه وینزې آزادي کړې.

وینزې دوه وې یا یو وه؟ بیا په دې خان پوهه کړې چې په حدیث شریف کښې د جاریتین ذکر دې چې وینزې دوه وې، او د مسلم شریف (په روایت کښې صرف د یوې وینزې ذکر دې په دې دواړو روایتونو کښې تطبیق داسې دې چې وینزې اصل کښې دوه وې لیکن په هغې کښې یوه وینزه هغوی خپل خوی عبدالله ته هبه کړې وه، ددغه هبه کړې شوې وینزې نوم قلابه وو او دویمه وینزه حضرت عمر رضی الله عنه خپل خان سره ساتلې وه لکه ابن اسحاق د نافع عن ابن عمر د طریق نه یو روایت نقل کړې دې، چې د هغې الفاظ دادی:

”قال: بعثت جاریتی الی احوالی فی بنی جمح، لیصلحوالی منها، حق أطوف بالبيت، ثم اتیتهم، فخرجت من المسجد، فاذا الناس یشتدون، قلت: ما شانکم؟ قالوا: رد علينا رسول الله صلی الله علیه وسلم نساءنا وابنائنا. فقلت: دونکم صاحبکم، ففی فی بنی جمح، فانطلقوا، فاخذوها“ (اللفظ للحافظ).^(۱)

”ابن عمر رضی الله عنه فرمائی چې ما خپله وینزه قبیله جمح ته خپل ماما کره اولیږله، دې دپاره چې دغه خلق ئې زما دپاره تیاره کړې، تردې چې زه د بیت الله شریف د طواف نه فارغ شم. بیا هغوی ته راغلم او د مسجد نه راووتلم نو اومې کتل چې خلق منډې وهی ما تپوس او کړو چې څه خبره ده؟ (دا شور او غوغا ولې ده؟) نو هغوی او وئیل چې رسول الله صلی الله علیه و آله زمونږ ښځې او بچي مونږ ته واپس کړې دی. ما او وئیل چې خپلې ښځې ته لار شی، هغه په بنی جمح کښې ده نو دا خلق هلته لارل او هغه ئې هم خپل خان سره بوتله.“

ددې روایت نه معلومه شوه چې یوه وینزه ابن عمر رضی الله عنه ته ورکړې شوې وه ځکه الله اعلم بالصواب
قوله: وَزَادَ جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ مِنَ الْخُمْسِ:

او جریر په خپل طریق کښې د ”من الخمس“ اضافه نقل کړې ده.

د مذکوره تعلیق مقصد: ددې تعلیق دوه مقصدونه دی:

یو خو د حماد بن زید پورته ذکر کړې شوې روایت مرسل وو ځکه چې د نافع د عمر رضی الله عنه نه سماع ثابت نه ده بلکه لیدل ئې هم ثابت نه دی او د جریر بن حازم (د روایت مسند دې ځکه چې په دې کښې هغوی د ابن عمر نه نقل کوي.

(۱) صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب نذر الکافر، وما یفعل فیہ اذا اسلم، رقم (۴۲۹۴).—

(۲) سیره ابن هشام: ۴/۱۳۳، امر اموال هوازن..... وفتح الباری: ۸/۳۶.—

(۳) فتح الباری: ۸/۳۶.—

(۴) د جریر د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الصلاة، باب الخوخة وللمر فی المسجد).—

البته امام دارقطنی رحمته الله فرمائي چې د جرير روايت اگرچه موصول او مسند دي او د حماد بن زيد هغه مرسل دي، ليکن راجح روايت د حماد بن زيد دي، ځکه چې هغه د ايوب سختياني په روايتونو کښې د جرير نه زيات ثابت او قوي دي. (دويم مقصد دا ښودل دي چې د حضرت عمر په حصه کښې کومې دوه وينزې راغلې وې نو هغه د خمس وې).
د مذکوره تعليق تخريج ددې تعليق تخريج امام مسلم رحمته الله په کتاب الايمان (کښې موصولاً او مسنداً کړې دي).

قوله: وَرَوَاهُ مَعْمَرُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ ابْنِ عُمَرَ فِي النَّذْرِ وَلَمْ يَقُلْ يَوْمَ: [١٣٤]
او د اعتکاف والا حديث معمر د ايوب عن نافع عن ابن عمر رضي الله عنهما د طريق نه د نذر په حديث کښې نقل کړې دي او په هغې کښې د يوم اضافه نشته.
د مذکوره تعليق مقصد ددې تعليق مقصد دادې چې د اعتکاف والا حديث د معمر د طريق نه هم روايت دي ليکن په هغې کښې د يو ذکر نشته بلکه د مطلق نذر ذکر دي.
د تعليق تخريج دا تعليق امام بخاري رحمته الله موصولاً په کتاب المغازي (کښې ذکر کړې دي).

ترجمة الباب سره د حديث مناسبت: ترجمة الباب سره ددې حديث مناسبت د حديث په ابتدائي حصه "واصاب عمر جاريته من سبي حنين" کښې دي ځکه چې دا وينزې د خمس وې چې غير المؤلفه يعنې حضرت عمر رضي الله عنه ته ورکړې شوې. هم دا خبره د جرير په تعليق کښې هم راغلې ده. (والله اعلم بالصواب)
دريم حديث د حضرت عمرو بن تغلب رضي الله عنه دي.

٢٩٧٦ (حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ قَالَ حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ تَغْلِبٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ أَعْطَى رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَوْمًا وَمَنْعَهُ آخَرِينَ، فَكَأَنَّهُمْ عَتَبُوا عَلَيْهِ فَقَالَ «إِنِّي أُعْطِي قَوْمًا أَخَافُ ظُلْمَهُمْ وَجَزَعَهُمْ، وَأَكِلُ أَقْوَامًا

^١ (عمدة القاري: ٧١/١٥، وفتح الباري: ٢٥٣/٦، وشرح القسطلاني: ٢٢٤/٥، وشرح علل الترمذي لابن رجب، ترجمة حماد بن زيد بن درهم: ٤٦٣/١) -

^٢ (عمدة القاري: ٧١/١٥، وشرح القسطلاني: ٢٢٤/٥، والكوثر الجاري: ١٢٥/٦ - ١٢٦) -

^٣ (صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب نذر الكافر..... رقم (٤٢٩٤)) -

^٤ (تغليق التعليق: ٤٨٠/٣) -

^٥ (صحيح بخاري، كتاب المغازي، باب قول الله تعالى: (ويوم حنين.....) رقم (٤٣٢٠)) -

^٦ (تغليق التعليق: ٤٨٠/٣، وفتح الباري: ٢٥٣/٦) -

^٧ (عمدة القاري: ٧٠/١٥، وفتح الباري: ٢٥٢/٦، والكوثر الجاري: ١٢٥/٦ - ١٢٦، واللامع: ٣١٢/٧) -

^٨ (قوله: حَدَّثَنِي عمرو.....: الحديث، مر تخريجه في كتاب الجمعة، باب من قال في الخطبة.....) -

إِلَى مَا جَعَلَ اللَّهُ فِي قُلُوبِهِم مِّنَ الْخَيْرِ وَالْغَنَى، مِنْهُمْ عَمْرُو بْنُ تَغْلِبَ. فَقَالَ عَمْرُو بْنُ تَغْلِبَ مَا أَجِبْتُ أَنْ لِي بِكَلِمَةِ رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- خَيْرَ النَّعَمِ.

رجال الحديث

① موسی بن اسماعیل دا موسی بن اسماعیل تبو ذکی بصری رحمته الله دی. د دوی تذکره اجمالاً د بده الوحی په "الحديث الرابع" کښې تیره شوي ده (۱).

② جریر بن حازم دا جریر بن حازم "بالعلم المہملۃ والزای" رحمته الله دی (۲).

③ حسن دا مشهور تابعی بزرگ حضرت امام حسن بصری رحمته الله دی. د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب المعاص من امر الجاهلية...." کښې راغلي دي (۳).

④ عمرو بن تغلب دا د نبی صلی الله علیہ وسلم صحابی حضرت عمرو بن تغلب نمری رحمته الله دی (۴).

قال: أعطى رسول الله صلى الله عليه وسلم قوماً، ومنع آخرين، فكانهم عتوا عليه حضرت عمرو بن تغلب رحمته الله فرمائی چې نبی کریم صلی الله علیہ وسلم بعضې خلقو ته څه ورکړل او بعضو ته نه، گویا که محروم پاتې کیدونکې د نبی صلی الله علیہ وسلم نه خفه شو خلیل فرمائی چې عتاب هغې شکایت او د خفگان اظهار ته وئیلې شی چې د ناز په طور سره وی (۵).

قوله: فقال: إني أعطى قوماً أخاف ظلمهم وجزعهم: نو نبی صلی الله علیہ وسلم او فرمائیل چې زه هغې خلقو ته ورکوم، چې د کومو خلقو متعلق ما ته د زړه د مرض او کمزورتیا او د یقین د کمزورۍ او د ژړا، فریاد کولو ویره وی. ظلمهم ظاء او لام سره کوږوالی ته وئیلې شی، دلته ددې نه مراد د ایمان کمزورتیا او د زړه مرض دي (۶). په دې جمله کښې نبی کریم صلی الله علیہ وسلم بعضې خلقو ته د مال ورکولو علت او وجه بیان کړې ده چې د هغوی د ایمان د کمزورتیا د وجې نه هغوی ته مال ورکوم، چې چرته دا خلق واپس نه شی.

قوله: وأكل أقواماً إلى ما جعل الله في قلوبهم من الخير والغنى: او بعضې قومونه الله تعالی ته حواله کړم د کومو خلقو په زړونو کښې چې الله تعالی خیر او استغنا کیځودلې وی.

مطلب دا دی چې د اول قسم خلقو په مقابله کښې دا دویم قسم خلق دی، کوم چې د مال

(۱) کشف الباری: ۱/۴۳۳.

(۲) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الصلاة، باب الغوخة والمر في المسجد.

(۳) کشف الباری: ۲/۲۲۰.

(۴) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الجمعة، باب من قال في الخطبة بعد الثناء: اما بعد.

(۵) عمد القاری: ۷۱/۱۵، والقسطلانی: ۲۲۴/۵، وکتاب العين: ۷۵/۲، باب العين والتاء والياء....

(۶) عمدة القاری: ۷۱/۱۵، وارشاد الساری: ۲۲۵/۵، وفتح الباری: ۲۵۳/۶.

وغیره نه مستغنی او بی پرواه دی. ددوی زړونه د خیربسیگرې نه ډک دی. دا خلق د مال وغیره نه بغیر هم په خپل ایمان و یقین باندې مضبوط دی او مضبوط به وی. نو د داسې خلقو معامله څه گرانه نه ده. نه د دوی نه څه ویره او خطر شته. ددې نه علاوه د اول قسم خلق ډیر کم وی بلکه د اولې زمانې نه تر نن زمانې پورې د داسې خلقو ډیروالی او کثرت دې. چې نه په پیسو خرڅیږي او نه دین بدلوی. غالباً د نبی ﷺ په ارشاد مبارک کښې هم دې دې نکتې طرفته اشاره ده چې د اول قسم خلقو دپاره ئې "قوم" او د دویم قسم خلقو دپاره ئې د "اقوام" لفظ ارشاد او فرمائیلو چې د جمع صیغه ده او په کثرت او ډیروالی باندې دلالت کوی.

"غف" باندې کسره ده او الف مقصوره دې، دا د فقر (غریبی) ضد دې (۱).

قوله: منهم عمرو بن تغلب: چې په دوی کښې عمرو بن تغلب هم دې. یعنی الله تعالی دوی هم په دویم قسم خلقو کښې ساتلې دی، دوی د مال وغیره نه بی پرواه دی او زړونه ئې د خیربسیگرې نه ډک دی، که دوی مال ورهم نه کړې شی نو هیڅ خطر نشته.

قوله: فقال عمرو بن تغلب: ما أحب أن لی بکلمة رسول الله صلى الله عليه

وسلم حمراً النعم: نو عمرو بن تغلب رضی الله عنه فرمائی چې ما ته د نبی کریم ﷺ د مذکوره ارشاد په عوض کښې سره اوبسان هم خوښ نه دی په بکلمه کښې بآء د بدلیت او د عوض دپاره ده او نعم د نون د فتحې سره دې، او دا د جوهرې د قول مطابق د الانعام واحد دې. ددې عام طور سره اطلاق په اوبس باندې کیږي. او حمراً د حاء د ضمی سره او د میم د سکون سره دې (۲). بیا دا یاد ساتئ چې حمراً منصوب دې، ځکه چې دا د ان اسم مؤخر دې.

ددې جملې دوه مطلبونه دی: د حضرت عمرو بن تغلب رضی الله عنه ددې جملې دوه مطلبونه دی:

① بکلمه رسول الله..... ددې نه مراد هغه کلام دې کوم چې نبی کریم ﷺ د حضرت عمرو بن تغلب په باره کښې ارشاد فرمایلې وو چې دې هم د هغه خلقو نه دې او په هغوی کښې داخل دې. کومو خلقو ته چې الله تعالی د زړه بسیگره او د مال نه بی پرواهې نصیب کړې ده نو ددې جملې د وجې نه چې هغوی ته څومره قدرې خوشحالی ملاؤ شوه چې د هغوی د قول مطابق که ددې په بدله کښې ورته سره اوبسان هم ملاؤ شوې وو نو دومره قدرې به خوشحاله نه وو.

② د کلمې نه مراد هغه جمله ده کومه چې نبی کریم ﷺ د اولنی قسمه خلقو (ضعفاء الايمان ومرضی القلوب) په باره کښې ارشاد او فرمائیله په دې صورت کښې مطلب دادې چې په دوی کښې زما د نه شاملولو د وجې نه چې ما ته په دې باندې کومه خوشحالی ملاؤ شوه نو

(۱) پورته حواله جات).

(۲) الصحاح للجوهري: ۱۰۵۴، مادة نعم، وعمدة القاری: ۷۱/۱۵، وارشاد الساری: ۲۲۵/۵.

هغو مره خوشحالی به ماته د سرو اوښانو په ملاویدو باندې هم ملاؤ شوې نه وه. د خبر
النعم د تخصیص وجه واضحه ده چې سور اوښ به د عربو په نزد د ټولو نه قیمتی مال
وو والله اعلم بالصواب.

وَزَادَ أَبُو عَاصِمٍ عَنْ جَرِيرٍ قَالَ سَمِعْتُ الْحَسَنَ يَقُولُ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ تَغْلِبٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -
صلى الله عليه وسلم- أَتَى بِمَالِ أُوسَيْبٍ فَقَسَمَهُ. بِهَذَا: [ر: ۸۸۱]

د ابو عاصم نه مراد ضحاک دي، چې په النبیل سره مشهور وو. د
د مذکوره تعلیق مقصد: ددې تعلیق مقصد واضح دي. هغه دادې چې د باب په حدیث کښې
اختصار دي، دغه شان په دې کښې چې د کوم خیز د ورکولو او د نه ورکولو تذکره ده د هغې
نه مراد مال یا قیدی دې کوم چې نبی کریم ﷺ تقسیمول. ددې وجې نه د ابو عاصم روایت د
باب د حدیث په نسبت زیات واضح دي. د کشمینې په روایت کښې د سبې په ځانې شیی یعنی
شین سره دي او هم دا روایت زیات غوره دي ځکه چې دا ټولو خیزونو ته شامل او عام دي. د
د مذکوره تعلیق تخريج: دا تعلیق امام بخاری رحمه الله په کتاب الجمعة (د کښې موصولا نقل
کړې دي). د

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: ترجمة الباب سره ددې حدیث شریف مطابقت د
حدیث په ابتدائی حصه کښې دي، یعنی "اعطى رسول الله صلى الله عليه وسلم قوماً ومنع آخرين"
چې "نبی ﷺ بعضې خلقو ته مال ورکړ او بعضو ته ئې ورنه کړو". ددې نه چې څنگه دا
ثابتیږي چې امام ته په دې کارونو کښې مطلق اختیار دي نو دغه شان دا هم ثابتیږي چې
نبی ﷺ به مؤلفه القلوب ته مال ورکړو.
خلوړم حدیث شریف د حضرت انس بن مالک رضی الله عنه دي

۲۹۷۸/۲۹۷۷: (د) حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ
قَالَ النَّبِيُّ - صلى الله عليه وسلم - «إِنِّي أُعْطِيَ قُرْنًا أَتَأَلَّفُهُمْ، لِأَنَّهُمْ حَدِيثٌ عَهْدٌ بِجَاهِلِيَّةٍ».

(فتح الباری: ۲۵۳/۶، وعمدة القاری: ۷۱/۱۵، وارشاد الساری: ۲۲۵/۵) -

(د دوی حالانکشف الباری، باب القراءة والعرض: ۱۲۹/۳ کښې راغلي دي. -

(فتح الباری: ۲۵۳/۶، وعمدة القاری: ۷۱/۱۵، وارشاد الساری: ۲۲۵/۵) -

(صحيح البخاری، کتاب الجمعة، باب من قال فی الخطبة بعد الثناء رقم (۹۲۳)) -

(عمدة القاری: ۷۱/۱۵، وفتح الباری: ۲۵۴/۶، وتعلیق التعلیق: ۳۴۸۱، وشرح القسطلانی: ۲۲۵/۵) -

(قوله: عن انس: "الحديث اخرجه البخاری ايضا، نفس هذا الباب، رقم (۳۱۴۷)، وکتاب فضائل اصحاب
النبي ﷺ، باب ابن اخت القوم منهم رقم (۳۵۲۸)، وکتاب مناقب الانصار، باب مناقب الانصار، رقم
(۳۷۷۸)، وباب قول النبي ﷺ للانصار رقم (۳۷۹۳)، وکتاب المغازی، [بقیه بر صفحه آنده ...

رجال الحديث

- ① ابو الوليد دا ابو الوليد هشام بن عبد الملك طيالسي رضي الله عنه دې د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب علامة الايمان حب الانصار" کښې تير شوي دي (د).
- ② شعبه دا امير المؤمنين في الحديث شعبه بن الحجاج عتكي بصرى رضي الله عنه دې د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب المسلم عن سلم المسلمون من....." کښې تيره شوي ده (د).
- ③ قتاده دا قتاده بن دعامة رضي الله عنه دې.
- ④ انس دا د نبی صلی الله علیه و آله صحابي، حضرت انس بن مالک رضي الله عنه دې د دې دواړو حضراتو تذکره په کتاب الايمان، "باب من الايمان ان يحب لاهيه....." کښې تير شوي دي (د).
- د حديث شريف ترجمه: حضرت انس رضي الله عنه نه روايت دي چې نبی کریم صلی الله علیه و آله او فرمايل چې زه قريشو ته ورکوم، نو دا هغوی خپل خان سره د اموخته (مانوس) کولو دپاره، ځکه چې دا زمانه جاهليت سره نژدې دی.
- پنځم حديث شريف هم د حضرت انس رضي الله عنه دي.

۲۹۷۸: (د) حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ قَالَ أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ نَاسًا مِنَ الْأَنْصَارِ قَالُوا لِرَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - حِينَ أَقَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - مِنْ أَمْوَالٍ هَوَازِنَ مَا أَقَاءَ، فَطَفِقَ يُعْطِي رِجَالًا مِنْ قُرَيْشٍ الْيَمَانَةَ مِنَ الْإِبِلِ فَقَالُوا يَغْفِرُ اللَّهُ لِرَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يُعْطِي قُرَيْشًا وَيَدْعُنَا، وَسَيُؤَفِّنَا تَقَطُّرُ مِنْ دِمَائِهِمْ قَالَ أَنَسٌ فَحَدَّثَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بِمَقَالَتِهِمْ، فَأَرْسَلَ إِلَى الْأَنْصَارِ، فَجَمَعَهُمْ فِي قُبَّةٍ مِنْ أَدِيمٍ، وَلَمْ يَدْعُ مَعَهُمْ أَحَدًا غَيْرَهُمْ، فَلَمَّا اجْتَمَعُوا جَاءَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَقَالَ «مَا كَانَ حَدِيثٌ بَلَغَنِي عَنْكُمْ». قَالَ لَهُ فَقَهَاؤُهُمْ أَمَا ذَوُّوْا رِبْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَلَمْ يَقُولُوا شَيْئًا، وَأَمَّا أَنَا سَ مِنْهَا حَدِيثٌ أَسْنَاهُمْ فَقَالُوا يَغْفِرُ اللَّهُ لِرَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يُعْطِي قُرَيْشًا وَيَتْرُكُ الْأَنْصَارَ، وَسَيُؤَفِّنَا تَقَطُّرُ مِنْ دِمَائِهِمْ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -

بقیه از حاشیه گذشته [باب غزوة الطائف، رقم (۴۳۳۱-۴۳۳۴)، و کتاب اللباس، باب القبة الحمراء من ادم، رقم (۵۸۶۰)، و کتاب الفرائض، باب مولى القوم من انفسهم..... رقم (۶۷۶۲)، و کتاب التوحيد، باب قول الله تعالى: (وجوه يوم ذ ناضرة....) رقم (۷۴۴۱)، و مسلم، کتاب الزکاة، باب اعطاء المؤلفه..... رقم (۲۴۳۶-۲۴۴۲)، و الترمذی، کتاب المناقب، باب فضل الانصار و قريش، رقم (۳۹۰۱).]

(۱) کشف الباری: ۳۸/۲ -

(۲) کشف الباری: ۶۷۸/۱ -

(۳) کشف الباری: ۳/۲ -

(۴) قوله: اخبرني انس..... الحديث، مر تخريجه في الحديث السابق آنفاً -

عليه وسلم - «إِنِّي أُعْطِيَ رَجُلًا حَدِيثَ عَهْدِهِمْ بِكُفْرٍ، أَمَا تَرْضَوْنَ أَنْ يَذْهَبَ النَّاسُ بِالْأَمْوَالِ وَتَرْجِعُونَ إِلَيَّ رِحَالَكُمْ بِرَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -، قَوْلَ اللَّهِ مَا تَنْقَلِبُونَ بِهِ خَيْرٌ مِمَّا يَنْقَلِبُونَ بِهِ». قَالُوا بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ رَضِينَا. فَقَالَ لَهُمْ «إِنَّكُمْ سَتَرُونَ بَعْدِي أَمْرًا شَدِيدَةً، فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَلَى الْخَوْضِ». قَالَ أَنَسٌ فَلَمْ نَصْبِرْ. (۳۵۶۷، ۳۳۲۷، ۳۵۸۲، ۴۰۷۶، ۴۰۷۹، ۴۰۸۲، ۵۵۲۲، ۶۳۸۱، ۷۰۰۳)

رجال الحديث

- ① ابو اليمان دا ابو اليمان حضرت حکم بن نافع رضی اللہ عنہ دي
 - ② شعيب دا شعيب بن ابی حمزه رضی اللہ عنہ دي ددي دواړو حضراتو حالات اجمالاً د بده الوحي په "الحديث الثالث" کښې تير شوي دي.
 - ③ زهري دا محمد بن مسلم ابن شهاب زهري رضی اللہ عنہ دي ددوي حالات هم د بده الوحي د "الحديث الثالث" په ضمن کښې بيان شوي دي.
 - ④ انس د حضرت انس رضی اللہ عنہ تذکره په کتاب الايمان، "باب من الايمان....." کښې تيره شوي ده.
 - خبرداري: امام بخاري رضی اللہ عنہ د باب لاندې د حضرت انس رضی اللہ عنہ مشهور حديث اجمالاً او تفصيلاً دواړو طريقو سره نقل کړې دي، ددې تشریح په مغازی کښې راغلي ده.
 - د باب شپږم حديث د حضرت جبير بن مطعم رضی اللہ عنہ دي
- ۲۹۷۹: (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْأَوْسِيُّ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ ابْنِ شَهَابٍ قَالَ أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ جُبَيْرٍ قَالَ أَخْبَرَنِي جُبَيْرُ بْنُ مُطْعِمٍ أَنَّهُ يَبْنَاهُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَمَعَهُ النَّاسُ مُقْبِلًا مِنْ حُنَيْنٍ عَلَيَّتْ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - الْأَعْرَابُ يَسْأَلُونَهُ حَتَّى اضْطَرُّوا إِلَى سَمَرَةٍ، فَخِطَفَتْ رِدَاءُهُ، فَوَقَفَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَقَالَ «أَعْطُونِي رِدَائِي، فَلَوْ كَانَ عِنْدُ هَذِهِ الْعِصَاءِ نَعْمًا لَقَسَمْتُه بَيْنَكُمْ، ثُمَّ لَا تَجِدُونِي بِخَيْلٍ وَلَا كَدُوبًا وَلَا جَبَانًا». (۱۲۶۶۶)

(كشف الباری: ۱/ ۴۷۹ - ۴۸۰) -

(كشف الباری: ۱/ ۳۲۶) -

(كشف الباری: ۲/ ۴) -

(كشف الباری. کتاب المغازی: ۵۵۲ - ۵۵۹) -

(قوله: اخبرني جبير..... = "مر تخريجه في الجهاد، انظر كشف الباري، كتاب الجهاد: ۱/ ۲۲۲) -

رجال الحديث

- ① عبدالعزیز بن عبداللہ الاویسی دا عبد العزیز بن عبد اللہ اویسی رضی اللہ عنہ دې د دوی تذکره په کتاب العلم، ”باب الحرص علی الحديث“ کښې تیره شوې ده (۱).
 - ② ابراهیم بن سعد دا ابراهیم بن سعد بن عبد الرحمن بن عوف رضی اللہ عنہ دې صالح دا صالح بن کیسان رضی اللہ عنہ دې ددې دواړو حضراتو تذکره په کتاب الايمان، ”باب من کراه ان يعودنی الکفر.....“ کښې تیره شوې ده (۲).
 - ③ ابن شهاب دا محمد بن مسلم ابن شهاب زهري رضی اللہ عنہ دې د دوی تذکره په ”بدم الوسی“ کښې تیره شوې ده (۳).
 - ④ عمر بن محمد بن جبیر بن مطعم: دا د حضرت جبیر بن مطعم رضی اللہ عنہ نوسی عمر بن محمد رضی اللہ عنہ دې د دوی حالات په کتاب الجهاد، ”باب الشجاعة فی الحرب والجهن“ کښې تیر شوې دی (۴).
 - ⑤ محمد بن جبیر: دا محمد بن جبیر بن مطعم نوفلی رضی اللہ عنہ دې (۵).
 - ⑥ جبیر بن مطعم: دا ابو محمد جبیر بن مطعم نوفلی رضی اللہ عنہ دې (۶).
- د حدیث شریف ترجمه: حضرت جبیر رضی اللہ عنہ فرمائی چې د حنین نه د واپسې دوران کښې کله چې زه د رسول الله مبارک صلی اللہ علیہ وسلم سره ووم او نور خلق هم ورسره وو، بدوی خلق نبی صلی اللہ علیہ وسلم پورې وینختل، هغوی د نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه مال غوښته، تردې چې هغوی نبی صلی اللہ علیہ وسلم د کیکر یو اونې سره په پناه اخستلو باندې مجبور کړو نو کیکر د نبی صلی اللہ علیہ وسلم خادر مبارک رابښکۀ، ددې وجې نه نبی صلی اللہ علیہ وسلم اودریده او وې فرمائیل، زما خادر ما ته راکړه که ماسره ددې ازغی دار اونو برابر هم خاور (خاروی) وو نو ټول به ما په تاسو کښې تقسیم کړې وو، بیا به تاسو ما نه بخیل گنړئ، نه دروغژن او نه بزدل.
- ددې حدیث شریف تفصیلی تشریح چونکه په کتاب الجهاد (۷) کښې تیره شوې ده، ددې وجې نه مونږ دلته صرف په ترجمه باندې اکتفا کړې ده.
- ترجمه الباب سره د حدیث شریف مطابقت: ددې حدیث شریف مطابقت ترجمه الباب سره په

① (کشف الباری: ۳/۳۴)۔

② (کشف الباری: ۲/۱۲۰-۱۲۱)۔

③ (کشف الباری: ۱/۳۲۶، الحديث الثالث)۔

④ (کشف الباری، کتاب الجهاد: ۱/۲۲۳)۔

⑤ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الاذان، باب الجهر فی المغرب)۔

⑥ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الفسل، باب من افاض علی راسه ثلاثاً)۔

⑦ (کشف الباری، کتاب الجهاد: ۱/۲۲۴-۲۲۸)۔

دې جمله کښې ده، "لقسمة بینکم" (۱). چې "مال به ستاسو مینځ کښې تقسیم کړې وو" ځکه چې دا باندېچیان هم په مؤلفه القلوب کښې دی ددې وجې نه دا جمله نبی ﷺ د هغوی د تسلی او د زړه د ساتلو دپاره ارشاد فرمائيلې ده اووم حدیث د حضرت انس بن مالک رضی الله عنه دې

۲۹۸. (۱) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ كُنْتُ أَمْشِي مَعَ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَعَلَيْهِ بُرْدٌ نَجْرَانِي غَلِيظُ الْحَاشِيَةِ، فَأَذْرَكُهُ أَغْرَابِي فَجَذَبَهُ جَذْبَةً شَدِيدَةً، حَتَّى نَظَرْتُ إِلَى صَفْحَةِ عَاتِقِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَدْ أَثَرَتْ بِهِ حَاشِيَةُ الرِّدَاءِ مِنْ شِدَّةِ جَذْبَتِهِ، ثُمَّ قَالَ مُرَلِي مِنْ مَالِ اللَّهِ الَّذِي عِنْدَكَ. فَالْتَفَتَ إِلَيْهِ، فَضَحِكَ ثُمَّ أَمَرَهُ بِعَطَاءٍ. (۵۷۳۸، ۵۴۷۲)

رجال الحديث

① يحيى بن بكير: دا يحيى بن عبدالله بن بكير رضی الله عنه دی. د دوی حالات پدې الوصی کښې "الحديث الثالث" کښې تیر شوې دي (۲).

② مالک: دا امام دارالهجرة امام مالک بن انس رضی الله عنه دې. د دوی حالات پدې الوصی کښې "الحديث الثاني" کښې دي (۲).

③ اسحاق بن عبد الله: دا مشهور تابعی ابويحي اسحاق بن عبدالله بن ابي طلحة انصاري رضی الله عنه دې د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب من تعدى حيث ينتهي به المجلس" کښې تیره شوې ده (۲).

④ انس بن مالک: د حضرت انس رضی الله عنه تذکره په کتاب الايمان، "باب من الايمان أن يحب....." کښې تیرې شوې دي (۲).

قوله: قال: كنت أمشي مع النبي صلى الله عليه وسلم، وعليه برد نجراني غليظ

(۱) عمدة القاري: ۷۳/۱۵. حضرت گنگوهي رضی الله عنه فرمائي لقسمه بینکم" فيه الترجمة: حيث لم يكن هؤلاء كلاً في إيمانهم، والا لما فعلوا ما فعلوا". (لامع الدراري: ۳۱۳/۷) -

(۲) قوله: عن انس.... "الحديث، أخرجه البخاري أيضاً، كتاب اللباس، باب البرود والحبرة والشملة، رقم (۵۸۰۹). وكتاب الادب، باب التبسم والضحك، رقم (۶۰۸۸). ومسلم، كتاب الزكاة، باب اعطاء من سال بفحش وغلظة، رقم (۲۴۲۹ - ۲۴۳۰). وابن ماجه، كتاب اللباس، باب لباس رسول الله ﷺ، رقم (۳۵۵۳) -

(۳) كشف الباري: ۳۲۳/۱ -

(۴) كشف الباري: ۲۹۰/۱، والايمان: ۸۰/۲ -

(۵) كشف الباري: ۱۸۲/۳ -

(۶) كشف الباري: ۴/۲ -

الحاشية: حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ فرمائی چې زه نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم سره روان ووم، د دوی په بدن مبارک باندې د نجران جوړ کړې شوي یو خادر وو، چې د هغې غاړې پلنې وې. نجران د یمن د یو ښار نوم دی، چې د هغې خادرونه به مشهور وو او برد د هغې خادر نوم دی چې د هغې جمع برود او ابراد ده.

قوله: فأدركه أعرابي، فجذبه جذبة شديدة، حتى نظرت إلى صفحة عاتق النبي صلى الله عليه وسلم، قد أثرت به حاشية الرداء، من شدة جذبه: نو یو اعرابي نبی صلی اللہ علیہ وسلم اونیولو او ډیرې سختې سره یې د نبی صلی اللہ علیہ وسلم خادر مبارک رابښکۀ نو ما او کتل چې د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په څټ مبارک باندې د هغې خادر د رابښکلو د وجې نه ښې جوړې شوې دلت په دې روایت کښې جنډه راغلې دي، او د مسلم شریف په روایت کښې جنډه راغلې دي. البته د دواړو معنی یوه ده، یعنی رابښکل.

عاتق خو څټ ته وئیلې شی او د صفحه معنی ده غاړه او کناره، یعنی د څټ غاړه ده.

قوله: ثم قال: مر لي من مال الله الذي عندك: بیا هغه او وئیل چې تاسو سره د الله تعالی درکړې شوې کوم مال دی، د هغې نه ماته د راکولو حکم او کړئ مطلب دادې چې تاسو د خپل بیت المال ذمه دارانو ته او وایئ چې د الله تعالی په مال کښې ماته هم څه راکړی، ستاسو د خپل مال نه نه، نه ستاسو د والد صاحب د گټلې شوې مال نه، بلکه د هغه مال نه کوم چې ستاسو په خپل محنت سره گټلې شوې نه دی لکه په یو روایت کښې دا الفاظ هم دي: "لا من مالك، ولا من مال ابيك" (۱). او بعضي حضراتو وئیلې دي چې ددې نه مراد د زکوة مال دی، ځکه چې نبی صلی اللہ علیہ وسلم به ددې نه په مؤلفه القلوب باندې خرچ کړو (۲).

قوله: فالتفت إليه، فضحك، ثم أمر له بعطاء: نبی صلی اللہ علیہ وسلم د هغه طرفته متوجه شو، بیاني او خندل، بیاني هغه ته د څه مال ورکولو حکم او فرمائیلو.

مطلب دادې اول خو یې د حیرانتیا په طور سره ورته او کتل، بیاني د مزې په طور او خندل (۳). ددې حدیث شریف نه د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم د لوڼې صبر او برداشت ښه اظهار کیږي چې نبی صلی اللہ علیہ وسلم

(۱) عمدة القاری: ۷۳/۱۵، وفتح الباری: ۵۰۶/۱۰، وشرح القسطلانی: ۲۲۶/۵.

(۲) مسلم شریف، کتاب الزکاة، باب اعطاء من سال بفحش وغلظة، رقم (۲۴۲۹ - ۲۴۳۰).

(۳) عمدة القاری: ۷۳/۱۵، وشرح القسطلانی: ۲۲۶/۵، وفتح الملهم: ۱۳۵/۵.

(۴) فتح الباری: ۵۰۶/۱۰، وفتح الملهم: ۱۳۶/۵.

(۵) پورنه حواله جات.

(۶) فتح الملهم: ۱۳۶/۵، والکونثر الجاری: ۱۲۸/۶.

مبارک به د خلقو په تکلیفونو او بیوقوفیتوب باندې خومره قدرې د صبر نه کار اخستلو (۱).
ترجمه الباب سره د حدیث شریف مطابقت ترجمه الباب سره د حدیث شریف مطابقت په
آخری جمله کښې دې. "ثم امرله بعطاء" چې نبی ﷺ د دغه بانديچې په عجيبه انداز سره د
سوال کولو باوجود هم هغه ته د مال ورکولو حکم او فرمايلو. هم دا د زړه ساتل دی (۲).
یواهمه فائده د حضرت انس رضی الله عنه دا حدیث امام بخاری رحمه الله صرف د امام مالک د طریق نه
نقل کړې دې. کوم چې د اسحاق بن عبدالله نه روایت کوی. هم دا حدیث امام مسلم رحمه الله هم
نقل کړې دې. هغوی دا د امام مالک نه علاوه د امام اوزاعی. همام بن منبه او عکرمه بن
عمار د طریق نه هم نقل کړې دې لیکن هلته هم اصل روایت د مالک دې. او د نورو حضراتو
طرق د بعضې زیاتې فائدو د بیانولو په غرض سره نقل کړې شوې دی (۳).
بیا په دې خان پوهه کړئ چې دا حدیث د مؤطا په مشهورو نسخو کښې نشته.

امام دارقطنی رحمه الله فرمائی: "لم أر هذا الحديث عند أحد من رواة المؤطا، إلا عند يحيى بن بكير ومعن
بن عيسى، ورواه جماعة من رواة المؤطا عن مالك، لكن خارج المؤطا" (۴).

چې "د مؤطا کوم راویان دی نو په هغوی کښې د یو کس په نسخه کښې هم ما دا روایت نه
دې لیدلې، سوا د يحيى بن بكير او معن بن عيسى د نسخې نه او د مؤطا د راویانو یو
جماعت (۵) له دا حدیث د امام مالک نه نقل کړې دې، لیکن د مؤطا نه علاوه"
او ابن عبدالبر رحمه الله فرمائی چې د مؤطا دوو راویانو مصعب بن عبدالله زبیری او سليمان بن
سرد هم په خپلو خپلو نسخو کښې دا حدیث ذکر کړې دې (۶). البته د برصغیر په نسخو

کښې دا حدیث نه موندلې کیږي. والله اعلم بالصواب

د باب اتم حدیث د حضرت عبدالله بن مسعود رضی الله عنه دې.

۲۹۸۱: (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ لَمَّا كَانَ يَوْمَ حُنَيْنٍ أَثَرُ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَنَا سَافِي الْقِيَمَةِ

(۱) پورته حواله جات. فتح الباری: ۵۰۶/۱۰. وعمدة القاری: ۷۳/۱۵.

(۲) عمدة القاری: ۷۳/۱۵. فتح الباری: ۲۵۴/۶. ولا مع الدراری: ۳۱۳/۷.

(۳) فتح الباری: ۵۰۶/۱۰. او په صحیحینو کښې د حدیث د خایونو پیژندگلو وړاندې په تخریج کښې
کړې شوې ده.

(۴) فتح الباری: ۵۰۶/۱۰.

(۵) پورته حواله ددې حدیث مزید تشریح دپاره اوگوری، کشف الباری، کتاب الادب، باب التسم
والضحک: ۴۸۷-۴۹۱.

(۶) قوله: عن عبدالله (رضی الله عنه): الحديث. اخرجه البخاری ایضا. کتاب احادیث الانبياء. باب (بلا ترجمه) بعد باب
حدیث الغضر... رقم (۳۴۰۵) و کتاب المغازی، باب غزوة الطائف، رقم (۴۳۳۵-۴۳۳۶). [بقیه بر صفحه آنده...]

فَأَعْطَى الْأَقْرَعَ بْنَ حَابِسٍ مِائَةً مِنَ الْإِبِلِ، وَأَعْطَى عَيْنَةَ مِثْلَ ذَلِكَ، وَأَعْطَى أَنَسًا مِنْ أَشْرَافِ الْعَرَبِ، فَأَثَرُهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْقِسْمَةِ. قَالَ رَجُلٌ وَاللَّهِ إِنَّ هَذِهِ الْقِسْمَةَ مَا عُدِلَ فِيهَا، وَمَا أُرِيدَ بِهَا وَجْهَ اللَّهِ. فَقُلْتُ وَاللَّهِ لَا خَيْرَ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - . فَأَتَيْتُهُ فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ «فَمَنْ يَعْدِلُ إِذَا لَمْ يَعْدِلِ اللَّهُ وَرَسُولُهُ رَحِمَ اللَّهُ مُوسَى قَدْ أَوْذَى بِأَكْثَرِ مِنْ هَذَا فَصَبْرٌ»
[۳۲۲۴]، ۴۰۸۰، ۴۰۸۱، ۵۷۱۲، ۵۷۴۹، ۵۹۳۳، ۱۵۹۷۷.

رجال الحديث

- ① عثمان بن ابی شیبہ دا عثمان بن محمد بن ابی شیبہ کوفی رضی اللہ عنہ دی
- ② جریر دا جریر بن عبد الحمید ضبی رازی رضی اللہ عنہ دی
- ③ منصور دا منصور بن معتمر سلمی کوفی رضی اللہ عنہ دی. ددی درې وارو حضراتو محدثینو تذکره په کتاب العلم، "باب من جعل لاهل العلم....." کښې تفصیل سره تیره شوې ده (۱).
- ④ ابووائل دا ابووائل شقیق بن سلمه اسدی کوفی رضی اللہ عنہ دی. د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب خوف المؤمن من ان يحبط....." کښې تیر شوې دی (۲).
- ⑤ عبدالله د حضرت عبدالله بن مسعود رضی اللہ عنہ حالات په کتاب الايمان، "باب ظلم دون ظلم" کښې راغلي دي (۳).

قوله: قال: لما كان يوم حنين، أثر النبي صلى الله عليه وسلم أناساً في القسمة، فأعطى الأقرع بن حابس مئة من الإبل، وأعطى عينة مثل ذلك: حضرت عبدالله بن مسعود رضی اللہ عنہ فرمائی چې د غزوه حنین په موقع باندې په تقسیم کښې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم بعضې خلقو ته ترجیح ورکړه، لکه اقرع بن حابس ته نې سل اوبنان ورکړل، هم دومره نې عینې بن حصن ته هم ورکړل.

په دې عبارت کښې د فی القسمة نه مراد قسمة الخمس دي، نه چې قسمة الغنينة، ځکه چې په غنیمت کښې خو حصه متعین او معلومه وی، کومه چې د مجاهدینو وی (۴).

بقیه از حاشیه گذشته [و کتاب الادب، باب من اخبر صاحبه بما يقال فيه. رقم (۶۰۵۹). و باب الصبر علی الاذى. رقم (۶۱۰۰). و کتاب الاستئذان، باب اذا كانوا اكثر من ثلاثة.... رقم (۶۲۹۱). و کتاب الدعوات، باب قول الله تعالى: (وصل عليهم).... رقم (۶۳۳۶). و مسلم، کتاب الزکاة، باب اعطاء المؤلفه قلوبهم.... رقم (۲۴۴۷-۲۴۴۸).]

(۱) کشف الباری: ۲۶۶/۳-۲۷۲-

(۲) کشف الباری: ۵۵۹/۲-

(۳) کشف الباری: ۲/۲۵۷-

(۴) الکونین الجاری: ۱۲۹/۶-

اقرع بن حابس دا اقرع بن حابس بن عقال بن محمد بن سفیان تمیمی دارمی رضی الله عنه دې. دوی په مؤلفه القلوب کښې وو. نبی کریم صلی الله علیه و آله سره په فتح مکه، غزوه حنین او طائف کښې شریک وو. دې.

ذهبی رحمته الله علیه فرمائی چې د دوی اصل نوم فراش وو، او اقرع ئې لقب دې. د دوی دا لقب په نوم باندې غالب شو، دوی د عربو په اشرافو کښې وو، حضرت عبد الله بن عامر رضی الله عنه دوی د یو لښکر امیر جوړ کړې وو او د خراسان په طرف ئې لیږلې وو، هلته دوی زخمی شو او د زخمونو د طاقت نه لرلو د وجې نه هلته وفات شو. دې. رضی الله عنه وارضاه.

عیینه دا عیینه "بضم العين، مصغرا لعین" بن حصن بن حذیفه بن بدر الفزاری دې دوی هم په مؤلفه القلوب کښې وو. دې. امام ذهبی وائی چې دوی هم په خپل قوم کښې سید او مطاع وو، لیکن په طبیعت کښې ئې تیزی وه. دې. رضی الله عنه وارضاه.

ددې حدیث مبارک تفصیلی تشریح په کتاب المغازی او کتاب الادب وغیره کښې راغلې ده. دې. ترجمه الباب سره مطابقت: ددې حدیث مطابقت ترجمه الباب سره بالکل واضح دې. په دې کښې د تقسیم ذکر هم دې او د اقرع او عیینه رضی الله عنه ذکر هم دې، کوم چې په مؤلفه القلوب کښې وو.

د باب نهم حدیث شریف د حضرت اسماء بنت ابی بکر رضی الله عنها دې

٢٩٨٢: (٢) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ غَيْلَانَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا هِشَامُ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ أَسْمَاءَ ابْنَةِ أَبِي بَكْرٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - قَالَتْ كُنْتُ أَقْلُ النَّوَى مِنْ أَرْضِ الزُّبَيْرِ الَّتِي أَقْطَعَهُ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَلَى رَأْسِي، وَهِيَ مِنِّي عَلَى ثَلَاثِ فَرَسَخٍ. وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَقْطَعَ الزُّبَيْرَ أَرْضًا مِنْ أَمْوَالِ بَنِي النَّضِيرِ. [٤٩٢٦]

(١) عمدة القاری: ٧٤/١٥، والاستیعاب: ٧٠/١، باب اقرع، رقم (٦٩)۔

(٢) عمدة القاری: ٧٤/١٥۔

(٣) پورته حواله۔

(٤) پورته حواله جات، والکونثر الجاری: ١٢٩/٦، والاستیعاب: ١٣٥/٢، رقم (٢٠٦٦)۔

(٥) عمدة القاری: ٧٤/١٥، وايضا نظر الاستیعاب: ١٣٥/٢۔

(٦) کشف الباری، کتاب المغازی: ٥٥٧، دغه شان اوگوری، کتاب الادب: ٤٤٦۔

(٧) قوله: عن اسماء.....: الحديث، أخرجه البخاری ايضاً، كتاب النكاح، باب الغيرة، رقم (٥٢٢٤)، ومسلم، كتاب السلام، باب جواز ارداف المرأة الاجنبية.....، رقم (٥٦٩٢-٥٦٩٣)۔

رجال الحديث

- ① محمود بن غیلان دا محمود بن غیلان "بفتح المعجمة وسكون المثناة تحت عود الله دي (۱)."
- ② ابواسامه دا ابو اسامه حماد بن اسامه عود الله دي د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب فضل من علم وعلم" کښې تیره شوې ده (۲).
- ③ هشام دا هشام بن عروة بن زبیر قرشي عود الله دي
- ④ ابی ددي نه مراد حضرت عروة بن زبیر عود الله دي ددي دواړو حضراتو تذکره د بده الوحي په "الحديث الثاني" کښې راغلي ده (۳).
- ⑤ اسماء بنت ابی بکر د حضرت اسماء بنت ابی بکر رضی الله عنها حالات تفصیل سره په کتاب العلم، "باب من اجاب الفتيا باشارة اليد....." کښې تیر شوې دي (۴).
- د حديث شريف ترجمه: حضرت اسماء بنت ابی بکر رضی الله عنها فرمائی چې ما د هغې زمکې نه په سرباندي د لرگو بندلې منتقل کولې کومه زمکه چې نبی ﷺ حضرت زبیر رضی الله عنه ته د جائیداد په طور ورکړې وه، او ددي زمکې او زما د کور مینځ کښې فاصله دوه ثلث فرسخه وه.
- النوی د نواة جمع ده، بندل ته وئیلې شی او اقطعة: د اقطاع الارض نه ده، ددي معنی ده جائیداد ورکول او علی راسی جار مجرور انقل سره متعلق دي، او بعضی حضراتو دا حال ګرځولې دي..... حال کونها علی راسی..... (۵).
- "فرسخ" درې میله مسافت ته وئیلې شی (۶) نو د ثلث فرسخ معنی شوه دوه میله.
- قوله: وقال أبو حمزة عن هشام عن أبيه أن النبي صلى الله عليه وسلم أقطع الزبير أرضاً من أموال بني النضير او ابو حمزه د هشام عن ابيه د طریق نه نقل کوی چې نبی کریم ﷺ حضرت زبیر رضی الله عنه ته د بنونضير په زمکو کښې زمکه ورکړې وه.
- ابو حمزه "بفتح الصاد وسكون الميم" نه مراد حضرت انس بن عياض عود الله دي (۷).
- د مذکوره تعليق مقصد: دا تعليق امام بخاري عود الله دي د دوو فائدو بيانولو دپاره نقل کړې دي

(۱) د دوی د حالاتو دپاره اوګوري، کتاب مواقيت الصلاة، باب النوم قبل العشاء لمن غلب)۔

(۲) کشف الباری: ۴۱۴/۳۔

(۳) کشف الباری: ۲۹۱/۱، دغه شان اوګوري، ۴۳۲/۲۔ ۴۴۰۔

(۴) کشف الباری: ۴۸۷/۳۔

(۵) عمدة القاری: ۷۵/۱۵، وشرح القسطلانی: ۲۲۷/۵۔

(۶) القاموس الوحيد، مادة فرسخ۔

(۷) د دوی د حالاتو دپاره اوګوري، کتاب الوضوء، باب التبرؤ فی البيوت)۔

① ابواسامه دا حدیث موصولا نقل کړې دي. او ابو ضميره په دې معامله کښې دده مخالفت کړې دي او داني مرسل نقل کړې دي

② په دې تعلیق کښې د هغې زمکې تعیین او بنودنه شوې ده کومه چې حضرت زبیر رضی الله عنه ته ورکړې شوې وه چې هغه د یهودیانو وه او په مال فی کښې وه

دې وضاحت سره د علامه خطابی رحمته الله علیه هغه اشکال هم ختم شو. کوم چې وانی چې معلومه نه ده چې نبی صلی الله علیه و آله د مدینې منورې زمکه د جائیداد په طور څنگه ورکړه. چې د کومې اوسیدونکې په رضا او خوښه باندې اسلام کښې داخل شوې نه وو. دا زمکه خو د انصارو وه. په دې کښې نبی صلی الله علیه و آله څنگه تصرف او کړو؟

ددې اشکال نقل کولو نه پس علامه خطابی رحمته الله علیه ددې یو احتمالی جواب هم ذکر کړې دي چې کیدې شي دا په هغه زمکو کښې وه. کومې زمکې چې انصارو نبی صلی الله علیه و آله ته حواله کړې وې چې په مونږ کښې ددې زمکو د اوبه کولو او ددې د ساتلو طاقت نشته. د اوبو وغیره هلته څه انتظام نه وو. لهذا په دې زمکو باندې تاسو د خپلې رائې مطابق تصرف او کړئ نو ددې وجې نه حضرت زبیر رضی الله عنه ته ورکړې شوې زمکه په دغه زمکو کښې وه هدا رائي الخطابي (د لیکن ددې اشکال جواب هم هغه دي کوم چې په تعلیق کښې ذکر شو چې دا زمکه د انصارو نه وه بلکه د مدینې منورې د یهودیانو وه او په مال فی کښې وه.)

یو اشکال او د هغې جواب: دلته په روایت کښې د اقطاع ارض ذکر دي. او د ابوداؤد شریف په روایت کښې دي چې حضرت اسماء فرمائی چې: "ان رسول الله صلى الله عليه وسلم اقطع الزبير نغلا" (چې په جاگیر کښې نبی صلی الله علیه و آله د کهجورو باغ ورکړې وو.

په دې باندې دا اشکال کیږي چې د جاگیر ورکولو دستور دادې چې امام په خالی زمکه کښې جاگیر ورکوي. دې دپاره چې جاگیردار د هغې زمکې خیال اوساتي او هغه دوباره ژوندئ او آباده شي. باغ خو د مخکښې نه آباد وی نو هغه څنگه او ولی نبی صلی الله علیه و آله په جاگیر کښې ورکړو؟

ددې جواب دادې چې ابو عبیده قاسم بن سلام د ابن سیرین رحمته الله علیه نه نقل کړې دي. حضور اکرم صلی الله علیه و آله دا زمکه یو سړی ته ورکړې وه. هغه دا آباده کړه او دا زمکه په شنو شنو اونیو بوټو کښې بدله شوه. ددې نه پس هغې سړی نبی صلی الله علیه و آله ته عرض او کړو چې یا رسول الله! ددې زمکې د مشغولتیا د وجې نه زه ستاسو په خدمت کښې حاضریدې نه شم. ددې وجې نه تاسو دا زمکه زما نه واپس واخلي (د).

(اعلام الحديث: ۱۴۵۸/۲-۱۴۵۹، وفتح الباری: ۶/۲۵۴، وعمدة القاری: ۱۵/۷۵)۔

(فتح الباری: ۶/۲۵۴، وعمدة القاری: ۱۵/۷۵، دغه شان اوگوزی، بذل: ۱۰/۳۱۳، وشرح السنة: ۴/۴۱۳، کتاب البيوع، رقم (۲۱۸۶))۔

(ابو داؤد مع البذل: ۱۰/۳۱۳، کتاب الخراج..... باب فی اقطاع الارضين، رقم (۳۰۶۹))۔

(کتاب الاموال، رقم (۶۷۶)، بحواله تعليقات مصنف ابن ابی شیبة، محمد عوامة: ۱۷/۵۲۷، رقم (۳۳۶۵۹))۔

ددې وجې نه کیدې شی چې هم دغه زمکه نبی ﷺ حضرت زبیر رضی الله عنه ته ورکړې وی. والله اعلم
د مذکوره تعلیق تخريج ددې تعلیق متعلق حافظ ابن حجر رحمه الله په هدی الساری کنبې
فرمایلې دی چې "ورواية ابن ضمرة بار سالها لم أجدها" (۱)

ولكن.... الرواية بار سالها رواها ابن سعد في الطبقات: ۳/۱۴، ومن بني اسد بن عبد العزى بن قصي: الزبير بن
العوام، والهلاد ذري في فتوح البلدان: ۱/۳۲، اموال بني النضير، وانظر ايضا تعليقات الشيخ محمد عوامة على
المصنف: ۱۴/۵۲۸، رقم (۳۳۶۹۵) -

ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت په ترجمة الباب کنبې دوه الفاظ دي، "وغيرهم" او
"نحوه" ددې حديث مناسبت د ترجمة الباب لفظ وغيرهم سره هم کيدې شی او نحوهم سره
هم کيدې شی وغيرهم سره داسې چې د باب په شروع کنبې مونږ دا وئيلې دي چې که
وغيرهم عام او منلې شی نو دا ډيره غوره ده چونکه نبی ﷺ ته په دغه مالونو کنبې پوره
اختيار حاصل وو، ددې وجې نه به نبی ﷺ مسلمان او غيرمسلم دواړو ته مال ورکولو په دې
بنیاد باندې حضرت زبیر رضی الله عنه ته مذکوره جائيداد ورکړې شوي وو.
او نحوه سره ئې هم مطابقت کيدې شی چې په نحوه کنبې چونکه خراج، فئ او جزیه وغيره
ټول داخل دي. ددې وجې نه چې کوم حضرات مثلاً علامه خطابی (فئ قول) دا وائي چې
مذکوره زمکه د خمس نه ورکړې شوې وه نو مطابقت به من الخمس سره وی او کوم حضرات
چې دې ته مال فئ وائي نو د هغوی په نزد به مناسبت د نحوه سره وی، ځکه چې فئ هم په دې
کنبې داخل دي او هم ددې حضراتو دا قول راجح دي. ځکه چې مشهور قول د بنو نضير د
مال فئ دي والله اعلم بالصواب

د باب لسم حديث شريف د حضرت ابن عمر رضی الله عنه دې

۲۹۸۳ (۲) حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ الْيَقْدَامِ حَدَّثَنَا الْقُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ
قَالَ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ أَجْلَى الْيَهُودِ
وَالنَّصَارَى مِنْ أَرْضِ الْحِجَازِ، وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - لَنَا ظَهْرَ عَلَى
أَهْلِ خَيْبَرَ أَرَادَ أَنْ يُخْرِجَ الْيَهُودَ مِنْهَا، وَكَانَتْ الْأَرْضُ لَنَا ظَهْرَ عَلَيْنَا لِلْيَهُودِ وَلِلرُّسُولِ
وَلِلْمُسْلِمِينَ، فَسَأَلَ الْيَهُودُ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَنْ يَتْرُكَهُمْ عَلَى أَنْ يَكْفُوا
الْعَمَلَ، وَلَهُمْ نِصْفُ الثَّمَرِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «نُتْرِكُكُمْ عَلَى ذَلِكَ مَا
شِئْنَا». فَأَقْرَأُوهُ حَتَّى أَجْلَاهُمْ عُمَرُ فِي إِمَارَتِهِ إِلَى تَيْمَاءَ وَأَرِيحَا. (ار ۲۲۱۳)

(۱) هدى السارى: ۵۷، كتاب الجهاد، الفصل الرابع من المقدمة، هذا ما قاله الحافظ!

(۲) اعلام الحديث للخطابي: ۲/۱۴۵، رقم (۳۱۳۶)، وشرح السنة: ۴/۱۳، رقم (۲۱۸۶) -

(۳) قوله: عن ابن عمر....: الحديث، مر تخريجه في كتاب الاجارة، باب اذا استاجر ارضا....

رجال الحديث

- ① احمد بن المقدام دا احمد بن المقدام بن سليمان عجلي بصرى رحمته الله دي.
- ② فضيل بن سليمان دا فضيل بن سليمان نميري بصرى رحمته الله دي.
- ③ موسى بن عقبه دا د مغازی مشهور امام موسى بن عقبه رحمته الله دي.
- ④ نافع دا د ابن عمر رضي الله عنهما مولى نافع رحمته الله دي د دوی حالات په کتاب العلم، "باب ذکر العلم والفتيا في المسجد" کښې تیر شوې دي.

⑤ ابن عمر د ابن عمر رضي الله عنهما حالات په کتاب الايمان، "باب الايمان....." کښې راغلې دي. د حديث شريف ترجمه: حضرت ابن عمر رضي الله عنهما فرمائي چې حضرت عمر بن الخطاب رضي الله عنه يهود و نصاري د حجاز نه بهر ويستلي وو (د دې نه مخکښې) کله چې نبي صلی الله علیه و آله خيبر په يهوديانو باندې فتح موندلې وه نو نبي صلی الله علیه و آله د خيبر نه د هغوی د بهر ويستلو اراده فرمايلې وه او کله چې د خيبر دا زمکه نبي صلی الله علیه و آله فتح کړه نو دا د يهوديانو وه، د رسول الله وه او د مسلمانانو وه، نو کله چې يهوديانو ته دا خبر ملاؤ شو چې د دې ځانې نه زموږ د ويستلو اراده کړې شوې ده، هغوی نبي صلی الله علیه و آله ته درخواست او کړه چې موږ د دې ځانې نه بهر نه کړې شو، په دې شرط باندې چې په زمکه کښې به کار يهوديان کوي او په پيداوار کښې به ستاسو نيمه حصه وي. نبي صلی الله علیه و آله او فرمايل (تههیک ده) موږ تاسو په دې خبره باندې پرېږدو ليکن کوم وخت پورې چې زموږ خوښه وي، دغه شان هغوی (د هغوی په زمکو باندې) برقرار پريځودلې شو. تردې چې حضرت عمر رضي الله عنه د خپل خلافت په دور کښې دوی د تيمار و اريحا طرفته جلاوطن کړل.

د حديث د بعضو حصو تشریح: د باب په روايت کښې راغلې دي، "وكانت الارض لما ظهر عليها لليهود وللرسول وللمسلمين" په اکثرو نسخو کښې عبارت دغه شان دي، البته د ابن السکن په نسخه کښې لله وللرسول..... دې ښکاره خبره ده چې دا تعارض دي چې په اکثرو نسخو کښې لفظ د يهود دي او د ابن السکن په نسخه کښې لفظ د الجلالة يعنی لله دي. دا تعارض په دوو طريقو سره دفع کړې شوې دي.

① طريقه د ترجيح چې د ابن السکن روايت راجح او صحيح دي

- (۱) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب البيوع، باب من لم ير الوساوس.....)
- (۲) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الصلاة، باب المساجد التي على طرق المدينة.....)
- (۳) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الوضوء، باب اسباغ الوضوء.....)
- (۴) کشف الباری: ۴/۶۵۱_
- (۵) کشف الباری: ۱/۶۳۷_

② البته ابن ابی صفرة وائی چې د اکثر و نسخہ هم صحیح ده، یعنی د لليهود الفاظ په دې صورت کښې به اشکال داوی چې بیا به د لما ظهر علیها معنی څه وی؟ ځکه چې د مسلمانانو د غلبې نه پس ددې څه مطلب شو چې د يهوديانو زمکه؟ د اشکال جوابات ددې اشکال مختلف جوابونه دي.

① د لما ظهر علیها نه مراد دا دې چې کله د خیبر اکثر علاقه فتح شوه او هغه وخت پورې يهوديانو د مصلحت درخواست نه وو کړې. واضحه خبره داده چې دغه پورې زمکه د يهودو وه او د مسلمانانو هم لیکن کله چې د يهوديانو له طرفه د مصلحت درخواست راغی او په شرطونو باندې صلح او شوه نو زمکه د الله او د هغه د رسول ﷺ شوه.

② دا هم احتمال دي چې دلته مضاف محذوف وی، یعنی ثمره الارض چې د زمکې پیداوار د يهوديانو او د نبی اکرم ﷺ وو.

③ لفظ د "ارض" مفتوحه او غیر مفتوحه (فتح شوې او غیر فتح شوې) دواړو ته شامل دي او د ظهور نه مراد غلبه ده چې مسلمانان په يهوديانو باندې غالب وو، په دې صورت کښې به زمکه د يهوديانو، د رسول الله مبارک او د مسلمانانو وی، یعنی فتح شوې زمکه د مسلمانانو او غیر فتح شوې زمکه د يهوديانو).

قوله: تيماء وأريحا: تيماء "بافتح والهد" د شام طرفته یو وړوکی ښار دي، دا د شام او د وادی القرى مینځ کښې چې د حاجیانو کومه لاره ده هلته واقع ده. (۱).

أريحا سره متعلق وضاحت د کتاب الخمس په شروع کښې تیر شوې دي. (۲). ترجمه الباب سره د حدیث مطابقت: ظاهر کښې خو ترجمه الباب سره د حدیث مطابقت نه ښکاري ځکه چې په دې کښې نه د مؤلفه القلوب ذکر شته او نه د مال ورکولو؟ نو بعضې حضراتو وئیلې دي چې مطابقت موجود دي، په حدیث مبارک کښې راغلې دي، "وكانت الارض لما ظهر عليها لليهود وللرسول وللمسلمين" ددې الفاظو نه مصنف ترجمه ثابته کړې ده، هغه ځکه چې هر کله دغه زمکه د الله تعالی او د رسول وه نو په هغې کښې دوی ته د تصرف کولو حق هم حاصل وو، چې چاته نبی ﷺ ورکول او غواړی نو ورکولې شی، په دې کښې مؤلفه القلوب هم داخل دي او غیر مؤلفه القلوب هم داخل دي. که اذکر ناقبل.

البته د ټولو نه غوره توجیه د حضرت گنګوهی ﷺ ده، کومه چې هغوی په لاس کښې ذکر کړې ده، د هغې خلاصه داده چې د خیبر زمکه يهوديانو ته په مزارعت باندې ورکړې شوې وه، اوس چې به کله نبی ﷺ خارص د خرص دپاره لیږلو نو ورته به ئې حکم کوو چې د خرص

(۱) فتح الباری: ۲۵۵/۶، وعمدة القاری: ۷۵/۱۵.

(۲) معجم البلدان: ۶۷/۲، باب التاء والياء وما يليهما.

(۳) اوگوری، باب قول النبي ﷺ: احلت لكم الغنائم....

نه پس ربع يا ثلث ددې يهوديانو دپاره پرېږدئ هم دا ورکول دي او ددې ورکولو مقصد ښکاره خبره ده چې د زړونو ساتل وو.

بيا چې د ورکولو دا کوم عمل دي، نو دا به د خمس او د خمس په شان مالونو نه وو، ځکه چې کوم پيداوار به هم حاصلیده نو اول به د هغې خمس ويستلې شو، بيا په مجاهدينو کښې تقسيمیده، اوس په دې ځان پوهه کړئ چې مزارعت په نيمه باندې وو، بيا خارج ته حکم وو چې د ثلث يا ربع وغيره نصف نه علاوه هم د دوی دپاره پريخودلې شی. گویا اکثره حصه يهوديانو ته لاره او د مسلمانانو په حصه کښې، دغه شان په خمس کښې کمې راغئ، نو په خمس کښې هم يهوديانو ته ملاؤ شوه او د مسلمانانو مجاهدينو په حصه کښې هم هغوی ته ملاؤ شوه ځکه چې د مجاهدينو او د خمس دواړو حصې په واضحه توگه سره د ثلث يا ربع ورکولو د وجې نه کمې شوې وې. د حضرت الفاظ دادی:

”ولعل ایراد هذه الرواية ههنا لاجل ان النبي ﷺ كان يامر اصحابه ان يتركوا لهم بعد الخرص ربعا او ثلثا، كما تشهد به الروايات، وليس ذلك الا اعطاء؛ فكان هذا الحديث مباحنا سب الباب باعتبار اعطاء الغير المولقة ان اريد به المؤمنون، وان كان اعم ممن آمن، ولم يكمل ايبانه بعد، وممن لم يكن مؤمنا بعد، فهو من قبيل اعطاء المولقة، وكان ذلك اعطاء من الخمس ونحوه معا؛ لان ما كان يجرى الى المسلمين كان يخمس منه اولا، ثم يقسم بين الغانمين على حسب حصصهم، فما انتقص من نصيبهم وجباياتهم بترك الربع والخمس والثلث ونحوه انتقص بحسبه من الخمس ايضا، فكان هذا الخط لهم من المسلمين اعطاء ايضا.“
مولانا يحيى رحمة الله عليه ددې عبارت د نقل کولو نه پس فرمائی:

”فافهم، فانه غريب، وكم للاستاذ مثل ذلك من عجيب! (۱).“

۲۰) باب: مَا يُصِيبُ مِنَ الطَّعَامِ فِي أَرْضِ الْحَرْبِ

د ترجمه الباب مقصد: که یو مجاهد ته په دار الحرب کښې د خوراک دپاره څه ملاؤ شی، یا د خپلې سورت دپاره گیاه ملاؤ شی نو د هغې خوړل او استعمالول به ددې مجاهد دپاره جائز وی یا نه؟ دا اختلافی مسئله ده.

① د جمهور فقهاؤ په نزد ددې خوراک او استعمال جائز دي، په خوراک کښې هر هغه څیز داخل دي د کوم څیز خوړل چې عام طور سره د خلقو عادت وی، خواه د غنیمت د تقسیم نه وړاندې وی یا وروستو، د امام اجازت وی یا نه وی، ددې وجه دا ده چې په دار الحرب کښې د خوراک ځکاګ د څیزونو ملاویدل عام طور سره گران وی، ددې وجې نه د ضرورت له کبلې دي ته جائز وئیلې شوې دي، بیا د جمهورو په نزد که ضرورت نه وی نو بیا هم جائز دي.

② البته بعضې حضراتو مثلاً امام زهري او اوزاعي وغيره دا د امام اجازت سره مقید کړې دي. او سليمان بن موسى دا فرمائی چې ابتداء خو صحيح دی لیکن که امام منع او کړی نو

(۱) (لامع الدراری: ۳۱۳/۷ - ۳۱۴، وانظر ايضا تعليقاته: ۳۱۳/۷) -

بیا جائز نه دی هم دا قول د امام محمد رحمته الله علیه نه هم روایت دي. امام بخاری رحمته الله علیه دي ترجمه الباب سره د جمهور علماؤ تائید کړې دي او دا فرماني چې په دي څيزونو کښې به خمس وغيره نه جاري کيږي، بلکه د مجاهدينو دپاره به ددي خوراک او ځناورو باندې خوړل وغيره جائز او مباح وي (۱).

(۳) د احنافو په نزد په دي کښې نور وسعت هم شته، هغوی په دي حکم کښې دا څيزونه هم داخل گنړي لږگي، اسلحه، اس، او هغه تيل چې تقسيم شوې نه وي (۲). بيا د جمهورو په نزد پورته ذکر شوې حکم دارالحرب سره خاص دي، دا څيزونه ځان سره دارالاسلام ته راوړل جائز نه دي، که داسې اوکړي شو نو دا څيزونه به په غنيمت کښې داخلول ضروري وي (۳).

اوس د باب احاديث او گوري، امام بخاری رحمته الله علیه د جمهورو د موقف ثابتولو دپاره دلته درې حديثونه ذکر کړي دي، چې په هغې کښې اولنې د باب حديث د حضرت عبدالله بن مغفل رضي الله عنه دي.

۲۹۸۴: (۱) حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ هِلَالٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُغْفَلٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ كُنَّا مُحَاصِرِينَ قَصْرَ خَيْبَرَ، فَرَمَى إِنْسَانٌ بِجِرَابٍ فِيهِ شَحْمٌ، فَتَزَوْتُ لِأَخَذَةِ، فَالْتَفَتَ فَإِذَا النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَاسْتَحْيَيْتُ مِنْهُ. [۳۹۷۷، ۵۱۸۹]

رجال الحديث

① ابوالوليد: دا ابوالوليد هشام بن عبد الملك طيالسي رحمته الله علیه دي. د دوی تذکره په دي کتاب الايمان، "باب علامة الايمان حب الانصار" کښې تير شوې دي (۱).

(۱) فتح الباري: ۲۵۵/۶، وشرح النووي على مسلم: ۹۷/۲، واعلاء السنن: ۱۲۹/۱۲، وعمدة القاري: ۷۶/۱۵، والاوز: ۱۵۷/۹، والدر المختار: ۲۵۴/۳، والمغني: ۴۴۵/۸، وشرح السير الكبير: ۱۲۰/۲، باب ما يستعمل في دار الحرب، ويؤكل ويشرب) -

(۲) الدر المختار: ۲۵۴/۳ -

(۳) ددي مسئلې د نور وضاحت او شرطونو دپاره اوگوري، السير الكبير مع شرحه: ۱۲۰/۲ - ۱۲۳، والمغني: ۲۲۳/۹ - ۲۲۴، رقم (۷۵۵۴)، والاوز: ۱۵۱/۱ - ۱۶۳، واعلاء السنن: ۱۳۷/۱۲، والموسوعة الفقهية: ۳۰۷/۱ - ۳۰۹، (غنيمة: الاخذ من المغنيمة.....)، رقم (۱۸) -

(۴) قوله: عن عبدالله.....: الحديث، اخرجه البخاري ايضا، كتاب المغازي، باب غزوة خيبر، رقم (۴۲۱۴)، وكتاب الذبائح والصيد، باب ذبائح اهل الكتاب وشحومها.....، رقم (۵۵۰۸)، ومسلم، كتاب الجهاد، باب جواز الاكل من طعام الغنيمة.....، رقم (۴۶۰۵ - ۴۶۰۶)، وابو داود، كتاب الجهاد، باب اباحة الطعام في ارض العدو، رقم (۲۷۰۲)، والنسائي، كتاب الضحايا، باب ذبائح اليهود، رقم (۴۴۰) -

(۵) كشف الباري: ۳۸/۲ -

⑦ شعبه: دا امیر المؤمنین فی الحدیث شعبه بن الحجاج عتکی علیه السلام دې ددوی حالات په کتاب الایمان، "باب المسلم من سلم....." کښې تیر شوې دی (۱).

⑧ حمید بن هلال: دا حمید بن هلال عدوی بصری علیه السلام دې (۲).

⑨ عبدالله بن مغفل: دا د نبی صلی الله علیه و آله صحابی حضرت عبدالله بن مغفل (بزنه محمد) علیه السلام دې (۳).

قوله: قال: کنا محاصرين قصر خیبر، فرمى انسان بجواب فيه شحم: حضرت عبدالله بن مغفل علیه السلام فرمائی چې مونږ د خیبر د محل محاصره کړې وه چې د پورته ځانې نه یو سړی د څرمنې یو تهیلې راویشته، چې په هغې کښې وازگه وه جراب مزود ته وائی، یعنې د لارې د توبنې تهیلې، کومه چې د څرمن نه جوړه شوې وی، دا د جیم کسري او فتحې دواړو سره لوستلې شی، صحیح کسره ده، ددې جمع اچړه وچړې ده (۴).

قوله: فنزوت لاخذة: ما د هغې د نیولو دپاره تیزې سره ټوپ او وهلو.

نزوتنون او زای سره "ددې معنی ده ټوپ وهل، دا د باب نصر نه دې (۵).

د ابوداؤد (۶) د سلیمان بن المغیره په روایت کښې دا هم اضافه ده: "فالتزمته، فقلت: لا أعطی اليوم أحداً من هذا شيئاً" چې "ما هغه تهیلې اونیوله او ما اووئیل چې نن ورځ به زه هیچاته هم ددې نه څه نه ورکوم"

او د ابن وهب یو روایت چې د معضل سند (۷) سره روایت دې، هغې کښې هم دا راغلې دی چې حضرت کعب بن عمرو بن زید انصاری رضی الله عنه هغه تهیلې د هغوی نه واخسته، چې په دې باندې نبی صلی الله علیه و آله حضرت کعب ته او فرمائیل چې هغه ته خپله تهیلې ورکړه (۸).

قوله: فالتفت، فاذا النبي صلى الله عليه وسلم، فاستحييت منه: زه واپس شوم نو اومې لیدل چې اچانک نبی صلی الله علیه و آله هلته موجود وو نوماته د نبی صلی الله علیه و آله نه حیا راغله یعنې او شرمیدم.

(۱) کشف الباری: ۱/۶۷۸.

(۲) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الصلاة، باب یرد المصلی من مرین یدیه.

(۳) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب مواقیت الصلاة، باب من کره ان یقال للمغرب....

(۴) عمدة القاری: ۱۵/۷۶، وفتح الباری: ۶/۲۵۶.

(۵) پورته حواله جات، والقاموس الوحید، مادة نزو (۳).

(۶) سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب اباحة الطعام فی ارض العدو، رقم (۲۷۰۲).

(۷) والمعضل یفتح الضاد: ما سقط من سنده اثنان فصاعدا مع التوالی کقول مالک (ابن انس): قال رسول

الله صلی الله علیه و آله (فقد ترک فيه نافعاً، ثم ابن عمر)، وقول الشافعی: قال ابن عمر کذا (فقد ترک فيه: مالکاً، ثم نافعاً) =.

قواعد فی علوم الحدیث للعثماني: ۴۱، من الديباج المذهب: ۳۷، وتعليقات عبد الفتاح ابی غدة علی قواعد....

(۸) فتح الباری: ۶/۲۵۶.

”إِذَا“مفاجاتیه ده او مطلب دادې چې کله زه واپس شوم نو اچانک مې نبی ﷺ اولیدلو نو ماته حیا راغله، ځکه چې نبی ﷺ زما کار لیدلې وو او کوم الفاظ چې ما وئیلې وو هغه ئې اوریدلې وو. ددې نه هغه عزت او توقیر هم واضح شو کوم چې د نبی ﷺ د پاره د صحابه کرامو رضی الله عنہم په زړونو کښې وو دغه شان دا هم معلومه شوه چې دې حضراتو به د غیرت او حیا نه خلاف کارونو نه څنگه ځان بچ ساتلو او د داسې کارونو نه به لرې لرې اوسیدل. (۱)

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: ترجمة الباب سره ددې حدیث مطابقت د نبی ﷺ په انکار نه کولو کښې دې چې نبی ﷺ هغوی اولیدل چې د دشمن د زمکې نه خوراک کوی، ددې باوجود ئې ورته هم هیڅ اونه وئیل، بلکه د مسلم شریف په روایت کښې خو دا هم راغلې دی: ”فَإِذَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَتَبَسَّأَ“ (۲) چې نبی ﷺ خندل او دا خبره د نبی ﷺ په رضامندی باندې دلالت کوی ددې نه علاوه د ابوداؤد طیالسی (په روایت کښې دا اضافه هم ده، ”قَالَ: هَوْلُكَ“ چې نبی ﷺ او فرمائیل چې دا تهیلئ ستاسو ده) ددې حدیث د نور وضاحت دپاره اورگوئ، کشف الباری، کتاب المغازی: ۳۳۲-۳۳۳، وکتاب الذبائح والصید، باب ذبائح اهل الکتاب: ۲۷۳-۲۷۶.

ددې ټول تفصیل نه ددې کار جواز معلومېږي. دویم حدیث د حضرت ابن عمر رضی الله عنهما دې.

۲۹۸۵: (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - قَالَ كُنَّا نَصِيبُ فِي مَغَازِنَا الْعَسَلَ وَالْعِنَبَ فَنَأْكُلُهُ وَلَا تَرْفَعُهُ.

رجال الحديث

① مسدد: دا مسدد بن مسرهد رضی الله عنه دې د دوی حالات په کتاب الایمان، ”باب من الایمان ان یحب لایه.....“ کښې تیر شوې دی. (۲)

(۱) پورته حواله، عمدة القاری: ۷۶/۱۵، والکوثر الجاری: ۱۳۰/۶.

(۲) پورته حواله جات.

(۳) مسلم شریف، کتاب الجهاد، باب جواز الاکل من..... رقم (۴۶۰۵).

(۴) مسند ابی دواد الطیالسی: ۴۹۱/۱، وما اسند عن عبدالله بن مغفل رضی الله عنه، رقم (۹۵۹).

(۵) فتح الباری: ۲۵۶/۶، وعمدة القاری: ۷۶/۱۵.

(۶) قوله: عن ابن عمر رضی الله عنهما: ”الحديث، تفرد به البخاری، ولم یخرجه الا فی هذا الموضوع“ تحفه الاشراف:

۷۶/۶، رقم (۷۵۵۸).

(۷) کشف الباری: ۲/۲.

② حماد بن زید: دا حماد بن زید بن درهم رضی الله عنه دې د دوی تذکره په کتاب الایمان، "باب المعاصی من امر الجاهلیة....." کښې راغلې ده. (۱)

③ ایوب: دا ایوب سختیانی رضی الله عنه دې د دوی تفصیلی تذکره په کتاب الایمان، "باب حلاوة الایمان" کښې راغلې ده. (۲)

④ نافع: دا حضرت ابن عمر رضی الله عنهما مولی حضرت نافع رضی الله عنه دې د دوی تفصیلی حالات په کتاب العلم، "باب ذکر العلم والفتیای المسجد" کښې تیر شوې دي. (۳)

⑤ ابن عمر رضی الله عنه: دا حضرت ابن عمر رضی الله عنهما حالات په کتاب الایمان، "باب الایمان....." کښې راغلې دي. (۴)

قوله: عن ابن عمر رضي الله عنهما قال: كنا نصيب في مغازينا.... دا حضرت ابن عمر رضی الله عنهما نه روایت دې، فرمائی چې مونږ به په خپلو جنگونو کښې شهد او انګور حاصلول او هغه به مو خورل.

دا روایت اسماعیلی او ابونعیم هم نقل کړې دي، د دوی په روایت کښې د "الفواکه" اضافه هم ده. دغه شان اسماعیلی یو بل روایت د ابن المبارک رضی الله عنه د طریق نه نقل کړې دي، په هغې کښې د غوړو تذکره هم شته. (۵)

ددې نه علاوه یو بل روایت د جریر بن حازم رضی الله عنه د طریق نه هم روایت دې. په هغې کښې دې "اصبنا طعاماً واغناماً يوم اليرموك، فلم يقسم." چې د غزوه یرموک په موقع باندې مونږ ته خوراک او چیلې حاصلې شوې، چې تقسیم نه شوې، یعنی هغه په غنیمت کښې شاملولو سره تقسیم نه شوې، بلکه دا څیزونه مونږ سره پاتې شو.

د یرموک والا دا روایت موقوف دې، ځکه چې په دې کښې وضاحت دې چې دا د نبی صلی الله علیه و آله د زمانې واقعې ده، لیکن په دې موقوف روایت کښې هم څه حرج نشته ځکه چې د مرفوع روایت موافق دې. (۶)

① (کشف الباری: ۲/۲۱۹)۔

② (کشف الباری: ۲/۲۶)۔

③ (کشف الباری: ۴/۶۵۱)۔

④ (کشف الباری: ۱/۳۶۷)۔

⑤ (فتح الباری: ۶/۲۵۶، وعمدة القاری: ۱۵/۷۶، وكذا في رواية سعيد بن منصور في سننه: ۲/۲۷۱، لفظ الثمار، وهو متناول للفواكه، رقم (۲۷۳۵)، وشرح الزرقاني: ۳/۲۳، وسنن البيهقي الكبرى: ۹/۱۰۱، كتاب السير، باب السرية تاخذ العلف..... رقم (۱۷۹۹۴)۔

⑥ (تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر: ۳۱/۸۳، حرف العين)۔

⑦ (عمدة القاری: ۱۵/۷۶، وفتح الباری: ۶/۲۵۶)۔

قوله: ولا نرفعه: او دا به مونږ نه جمع کول.

ددې جملې يو مطلب خو دادې چې مونږ به دا نه ذخيره کوله. دويم مطلب دادې چې مونږ به دا د غنيمت ذمه دار يا نبی ﷺ ته نه حواله کوو، نه به مو د هغې د خوراک اجازت طلب کوو ځکه چې د مخکښې نه به د داسې قسم څيزونو د استعمال اجازت وو. (۱).

ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: ترجمة الباب سره ددې حديث مناسبت بالکل ښکاره دې، (۲)، حضرت ابن عمر رضی الله عنهما د نبی ﷺ د زمانې د جنگونو په باره کښې فرماني چې مونږ به د خوراک ځکاګ عام څيزونه استعمالول، او دا د جواز دليل دې. والله اعلم د باب دريم حديث شريف د حضرت عبد الله بن ابي اوفى رضی الله عنه دې.

۲۹۸۶: (۳) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي أَوْفَى - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - يَقُولُ أَصَابْنَا فِجَاعَةً لَيَالِي خَيْبَرَ، فَلَمَّا كَانَ يَوْمَ خَيْبَرَ وَقَعْنَا فِي الْحُمْرِ الْأَهْلِيَّةِ، فَأَتَتْحَرْنَاَهَا فَلَمَّا غَلَبَ الْقُدُورُ، نَادَى مُنَادِي رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - اكْفُوا الْقُدُورَ، فَلَا تَطْعَمُوا مِنْ لُحُومِ الْحُمْرِ شَيْئًا. قَالَ عَبْدُ اللَّهِ فَقُلْنَا إِنَّمَا نَهَى النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - لَأَتْمَا لَمْ تُخْمَسْ. قَالَ وَقَالَ آخَرُونَ حَرَمَهَا الْبَيْتَةُ. وَسَأَلْتُ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ فَقَالَ حَرَمَهَا الْبَيْتَةُ. [۳۹۸۳ - ۳۹۸۶، ۵۲۰۵]

رجال الحديث

- ① موسى بن اسماعيل: دا موسى بن اسماعيل تبو ذکى ﷺ دې. د دوى حالات د بده الوحي په "الحديث الرابع" کښې تير شوې دى. (۴).
- ② عبد الواحد: دا عبد الواحد بن زياد عبدی بصرى ﷺ دې. د دوى تذکره په کتاب الايمان، "باب الجهاد من الايمان" کښې تيره شوې ده. (۵).
- ③ الشيباني: دا سليمان بن ابي سليمان کوفى شيباني ﷺ دې. (۶).

(۱) پورته حواله جات، وشرح القسطلاني: ۲۲۸/۵.

(۲) عمدة القارى: ۷۶/۱۵، والکوثر الجارى: ۱۳۱/۶.

(۳) قوله: سمعت ابن ابي اوفى.....: "الحديث، اخرجه البخارى ايضا، كتاب المغازى، باب غزوة خيبر، رقم (۴۲۲، ۴۲۲۲، ۴۲۲۴)، وكتاب الذبائح والصيد، باب لحوم الحمر الانسية، رقم (۵۵۲۶)، ومسلم، كتاب الصيد والذبائح، باب تحريم اكل لحم الحمر الانسية (۵۰۱۰ - ۵۰۱۱)، والنساء، كتاب الصيد، باب تحريم اكل لحوم الحمر الاهلية، رقم (۴۳۴۴)، وابن ماجه، كتاب الذبائح، باب لحوم الحمر الاهلية، رقم (۳۱۹۲).

(۴) كشف البارى: ۴۳۳/۱.

(۵) كشف البارى: ۳۰۱/۲.

(۶) د دوى د حالاتو دپاره اوگورئ، كتاب الحيض، باب مباشرة الحائض.

③ ابن ابی اوفی دا مشهور صحابی حضرت عبداللہ بن ابی اوفی رضی اللہ عنہ دی ^(۱) خبر داری د حضرت عبداللہ بن ابی اوفی رضی اللہ عنہ ددی حدیث تشریح په کتاب الذبائح والصید کنبی راغلی ده ^(۲).

قوله: قال عبداللہ: فقلنا إنما نهى النبي صلى الله عليه وسلم، لأنها لم

تخمس. قال: وقال آخرون: حرماً البتة: عبداللہ وائی نو مونې او وئیل چې نبی صلی اللہ علیہ وسلم ددی خرونو د غوښې د خوړولو نه ددی وجې نه منع او فرمائیلې چې ددی خمس نه وو ویستلې شوې، فرمائی: او بعضې نورو صحابه کرامو او وئیل چې نبی صلی اللہ علیہ وسلم مطلقاً ددی خرونو تحریم فرمائیلې دي یعنی دا خرونه مطلقاً حرام دي.

مطلب دادې چې کله نبی صلی اللہ علیہ وسلم ددغه خرونو د غوښې نه ډک، او جوشیدلې کتو د راغورزو لو حکم او کړو او دهغې د خوراک نه ئې منع او فرمائیلې نو ددی د حرمت د علت په باره کنبی د صحابه کرامو دوه رائې پیدا شوې.

د بعضې صحابه کرامو رضی اللہ عنہم رائې دا وه چې چونکه دا په غنیمت کنبی شاملول پکار وو او په دې کنبی تقسیم جاری شوې نه وو، ددی وجې نه نبی صلی اللہ علیہ وسلم منع او فرمائیلې ځکه چې دا د غنیمت حصه ده او په دې کنبی تصرف جائز نه دي.

او د بعضې نورو صحابه کرامو رضی اللہ عنہم رائې دا وه چې نبی صلی اللہ علیہ وسلم ددی د خوراک نه مطلقاً منع فرمائیلې ده او مطلب دادې چې دا د خوراک څیز نه دي ^(۳).

په دې عبارت کنبی د عبداللہ نه مراد ابن ابی اوفی رضی اللہ عنہ دي، لکه د مغازی په روایت کنبی په بل طریق سره ددی وضاحت راغلی دي ^(۴).

قوله: وسئلت سعيد بن جبیر فقال: حرماً البتة: او ما د سعيد بن جبیر رضی اللہ عنہ نه تپوس او کړو نو هغوی او فرمائیل چې نبی صلی اللہ علیہ وسلم دا قسم خرونه مطلقاً حرام گرځولې دي ددی جملې ویونکې (قائل) شیبانی دي ^(۵) او دا فرمائی چې هرکله ما په دې مذکوره مسئله کنبی د صحابه کرامو دوه رائې اولیدې نو د تحقیق کولو دپاره ما د حضرت سعيد بن جبیر نه تپوس او کړو چې ددی ممانعت څه وجه وه؟ نو هغوی او فرمائیل، حرماً البتة.

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: ددی حدیث مطابقت هم ترجمة الباب سره واضح دي. ځکه چې په دې سلسله کنبی د ماکولاتو د خواکو ځکاکی څیزونه وغیره، طرفته د

^(۱) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الوضوء، باب من لم یر الوضوء الا من المخرجین....

^(۲) کشف الباری، کتاب الذبائح والصید: ۲۹۳-۲۹۵.

^(۳) فتح الباری: ۶/۲۵۷. وعمدة القاری: ۱۵/۷۷.

^(۴) پورته حواله جات، و کتاب المغازی، باب غزوة خیبر، رقم (۴۲۲۰).

^(۵) عمدة القاری: ۱۵/۷۷، وفتح الباری: ۶/۲۵۷. وشرح القسطلانی: ۵/۲۲۸.

صحابه کرامو عادت د جلدی وو، که داسې نه وه نو دې حضراتو به د نبی ﷺ په موجودگي کښې د داسې قسم قدم پورته کولو نه ځان ساتلو، دلته داسې اونه شوه نو ددې نه ثابته شوه او معلومه شوه چې د جنگ دوران کښې د خوراک ځکاګ د عام څیزونو خوراک جائز دې. (۱) والله أعلم بالصواب

وبه تم کتاب الخمس، ویلیه کتاب (أبواب الجزية والمواذعة) إن شاء الله.

.....

بسم الله الرحمن الرحيم

۲۲- أبواب الجزية والمواذعة

د نسخو اختلاف: د بخاری شریف د نسخو په اکثر روایتو کښې عنوان ”باب الجزية“ راغلي دي او لفظ د ”کتاب“ سره عنوان صرف د ابو نعیم او ابن بطال په نسخو کښې مذکور دي. او هم دا زیات مناسب دي لکه څنگه چې د حافظ رحمه الله رائي ده. (۲) او بسمله بسم الله الرحمن الرحيم هم د ابوذر نه سوا په ټولو نسخو کښې موجوده ده. (۳).

① باب: الجزية والمواذعة مع أهل الحرب

د ترجمة الباب مقصد: دلته د امام بخاری رحمه الله مقصد د جزیه احکامات او کافرانو سره د صلح کولو احکامات بیانول دي، کما قاله العینی. (۴).

لکه اهل حرب سره د وخت او د حالاتو په مناسبت سره صلح کیدي شی او کوم خلق چې ذمیان دي، د هغوی نه به جزیه اخستلې شی. تفصیل راروان دي.

د جزیه لغوی معنی: د لغت عالمانو او د حدیث شارحینو ددې لفظ درې معنې بیان کړې دي:

① لفظ ”جزية“ د جزای جزئی تجزیه نه مشتق دي، ددې معنی ده تقسیمول او یو څیز حصه حصه کول، جزیه هم په ذمیانو باندې تقسیمېږي.

② دا کلمه د جزاء نه مشتق ده، ددې معنی ده بدله، ځکه چې د جزیې د ادا کولو په بدله کښې ذمیانو ته په دارالاسلام کښې د اوسیدلو او د پاتې کیدلو اجازت ورکولې شی.

(۱) پورته حواله جات، والکوتر الجاری: ۱۳۱/۶-.

(۲) عمدة القاری: ۷۷/۱۵. وفتح الباری: ۲۵۸، ۲۵۹/۶. وشرح ابن بطال: ۳۲۷/۵-.

(۳) عمدة القاری: ۱۵/ وفتح الباری: ۲۵۸، ۲۵۹/۶. وارشاد الساری: ۲۲۹/۵-.

(۴) عمدة القاری: ۷۷/۱۵-.

۳) دا د اجزاء، افعال، نه ده، ددې معنی ده کفایت کول. وجه تسمیه ددې داده چې جزیه ادا کول هم د دغه سړی د عزت، ناموس، مال و جان د حفاظت دپاره کافی کیږي، په کوم سړی باندې چې جزیه مقرر کړې شي. (۱)

اصطلاحی معنی جزیه هغه مقرر مال دې کوم چې د کافر نه په دارالاسلام کښې د اوسیدلو د وجې نه او ددې په عوض کښې اخستلې شي. (۲)

یا داسې اووایی چې جزیه هغه مال دې کوم چې د ذمې د وجې نه په اهل کتابو باندې مقررولي شي. (۳)

د موادع معنی او مراد موادع د باب مفاعله مصدر دې ددې معنی ده پریخودل، او دلته ددې نه مراد دا دې چې د خه مصلحت په بناء باندې اهل حرب سره قتل و قتال د یو معلومې مودې پورې پریخودل. (۴)

بیا د امام بخاری رحمه الله په دې الفاظو کښې ”الجزية والموادعة مع اهل الذمة والحرب“ کښې لف نشر مرتب دې، ځکه چې د جزیه تعلق د ذمیانو سره او د موادعت تعلق د اهل حرب سره دې. (۵)
د جزیه مشروعیت: ددې نه پس په دې ځان پوهه کړئ چې د جزیه ثبوت او ددې مشروعیت د قرآن کریم، احادیث نبویه او د اجماع نه دې او د قیاس تقاضه هم داده. لکه د قرآن کریم دا آیت کریمه قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ ه کوم چې امام بخاری رحمه الله هم دلته ذکر کړې دې، د جزیه د مشروعیت دپاره اصل اصیل دې. (۶)

او په سنت کښې هم ددې په مشروعیت باندې ډیر احادیث مبارکه دي، مثلاً د حضرت مغیره بن شعبه رضی الله عنه نه روایت دې چې هغوی د ”جنگ نهاوند“ په موقع باندې د کسری فوج ته د خطاب په وخت فرمائیلې وو:

”امرنا بیینا رسول ربنا ان نقاتلکم حق تعبد و الله وحده او تؤدوا الجزية.....“ (۷)

(۱) پورته حواله، وفتح الباری: ۲۵۹/۶، و معجم مقاییس اللغة: ۱۴۵۵، والجامع لاحکام القرآن للقرطبی: ۱۱۴/۸، البنایة: ۲۳۸/۷، باب الجزية)۔

(۲) اعلاء السنن: ۴۲۹/۱۲)۔

(۳) عمدة القاری: ۷۷/۱۵، والنهاية فی غریب الحديث والاثر: ۷۱/۱)۔

(۴) عمدة القاری: ۷۷/۱۵، وفتح الباری: ۲۵۹/۶، وتحفه الباری: ۵۶۵/۳)۔

(۵) پورته حواله جات)۔

(۶) فتح الباری: ۲۵۹/۶، و عمدة القاری: ۷۸/۱۵، واعلاء السنن: ۴۲۹/۱۲)۔

(۷) اعلاء السنن: ۴۳۰/۱۲)۔

دغه شان د امت مسلمه هم په دې باندې اجماع ده چې د ذميانو نه به جزیه وصولیږي. (۱)
هر چې قیاس دې نو د قیاس تقاضه هم داده چې د دوی نه جزیه وصول کړې شي، ځکه چې
هر کله دا خلق زمونږ د مسلک او د دین تابع نه دی نو زمونږ د ملک (دارالاسلام) نه د فاندې
اخستلو کښې به دوی ته خامخا څه نه څه ورکول وي. دا خو د جزیه د وصولی ظاهري وجه
شوه. (۲)

ددې نه علاوه د جزیه په وصولولو کښې یو باطني حکمت هم دې او هغه دا چې کله دوی
جزیه ادا کړي او د وطن دویم نمبر خلق شمار شي نو د دوی نفس ته به خفگان اوری شي او
دوی په طبیعتونو کښې به د اسلام طرفته میلان پیدا شي، دې دپاره چې دوی هم ایک نمبر
خلق شمار شي، دغه شان دوی چې کله د مسلمانانو سره لین دین او میل ملاپ ساتي او
خپل مینځ کښې په معاملاتو کښې شرکت کوي نو دوی ته به د اسلام په صفتونو باندې د
خبریدو موقع ملاؤ شي، نو ممکنه ده چې دا څیز د دوی د اسلام قبلولو سبب جوړ شي. (۳)

د جزیه مشروعیت په اتمه (۸) هجری کښې او شویا په نهمه (۹) کښې، دواړه اقوال موجود دي (۴)
یو شبهه او د هغې جواب: ممکنه ده چې په ملحدینو کښې یو روشن خیال سړي دا شبهه پیش
کړي چې د ذميانو نه جزیه وصولول د دوی په کفر باندې رضامندی ده او دغه شان دوی لږه
په شرکيه مذهب باندې قائم اوسیدل مباح گرځولې شوې دي، د جزیه د ادا کولو په وجه
باندې د اسلام په بدله کښې په کفر باندې د دوی برقرار اوسیدل څنگه صحیح کیدی شي؟
ددې شبهې جواب ډیر واضح دې، هغه دا چې جزیه نه د اسلام بدل دې او نه د اسلام قیمت،
بلکه دا یو قسم ټیکس دې، چې په دارالاسلام کښې د اوسیدلو د وجې نه د دوی نه
وصولولې شي، دوی ته د جان و مال، د عزت او ناموس د حفاظت ضمانت ددې جزې په ادا
کولو باندې ورکولې شي، او په معاملاتو کښې د دوی نه د اسلام د لحاظ ساتلو ضمانت
اخستلې شي چې دا ذمیان به ددې احترام کوي.

دغه شان د دوی نه د جزیه د وصولولو مطلب بالکل دا نه دې چې د دوی په کفر باندې
رضامندی اختیارولې شي بلکه دا خو د هغوی په کفر اختیارولو باندې یو دنیوی سزا ده
ځکه چې په دې کښې د دوی ذلت دې،

لکه د الله تعالی ارشاد مبارک دې: (...حق يعطوا الجزية وهم صاغرون) (۵).

او د دوی نه جزیه اخستلو سره دوی ژوندی پریخودل خو داسې دی چې بغیر د جزیه اخستلو
مونږ دوی پریږدو او دوی باندې څه غرض نه لرو، ځکه چې عقلاً هم دا خبره صحیح نه ده چې

(۱) المغنی لابن قدامة: ۹۲۶۳، وپورته حواله) _

(۲) احکام القرآن: ۱۳۳/۳، سورة التوبة، فصل، واعلاء السنن: ۴۳/۱۲، الجواب عن شبهة الملحدين في الجزية

(۳) فتح الباری: ۲۵۹/۶ _

(۴) پورته حواله) _

(۵) التوبة: ۲۹ _

دوی ټول قتل کړې شی، که دا کار صحیح وو نو الله تعالی به یو کافر د یو لمحې دپاره هم ژوندې نه وو پریځودلې، اوس که الله تعالی دوی ژوندی ساتلې دی نو ددې مطلب هم دادې چې دوی ته دا سزا ورکړې شی، دې دپاره چې دوی ته د کفر نه د توبې کولو توفیق ملاؤ شی او د ایمان طرفته رغبت ملاؤ شی، نو هرکله چې د الله تعالی دا مقصد دې نو په دې کښې هیڅ باک نشته چې د الله تعالی له طرفه دوی ته مهلت ورکړې شی، دا خود الله تعالی په علم کښې ده چې بعضې به په دوی کښې ایمان راوړي او بعضې به د دوی په نسلونو کښې ایمان راوړي، نو ددې جزیه په وصولولو کښې او کفارو لره ژوندی پریځودلو کښې د الله تعالی ډیر لوڼې مصلحت دې.

بیا په دې کښې د مسلمانانو هم ډیرې فائدې دي، ځکه چې که چرته مسلمانان کافرو لره بالکل ژوندی نه پریږدي نو په دې کښې هم د مسلمانانو خرج دي، مثلاً په زمکو کښې زمینداري او د مجاهدینو خدمت به څوک کوی؟ دغه شان د اسلامي لښکر د خوراک ځواک انتظام به څوک کوی؟ د پلونو جوړول او د قلعه گانو د جوړولو فريضة به څوک ادا کوی؟ ددې وجې نه دا ټولې خبرې هم په ذهن کښې ساتل پکار دي. (۱).

وقول الله تعالى: قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ التوبة: ٢٩ أِذْلَاءً. و: السكنة / البقرة: ٦١ / و: آل عمران: ١١٣ / مصدر المسكين، يقال: فلان أسكن من فلان: أخرج منه، ولم يذهب إلى السكون.

او د الله تعالی قول چې په اهل کتابو کښې څوک ایمان نه راوړي او نه په قیامت باندې ایمان لري او نه هغه څیزونه حرام گنړي کوم څیزونه چې الله تعالی او د هغه رسول حرام ښودلې دي او نه رښتوني دین قبلوي، دوی سره جنگ او کړې، تردې چې دوی ماتحت شي او رعیت جوړیدلو سره جزیه ورکول منظور کړي.

د ایت کریمه شان نزول او مختصر تشویح: هرکله چې په مشرکانو باندې اهل اسلام ته غلبه حاصله شوه، خلق ډلې ډلې اسلام کښې داخل شو، په جزیره عرب کښې د مسلمانانو جرړې او بنیاد مضبوط شو او د الله تعالی آخري دین، دین محمدی ﷺ ښه خور شو او ښه ترقی ئې او کړه نو دا آیت نازل شو، کوم کښې چې الله تعالی اهل کتاب یهودیانو او عیسایانو سره د قتال کولو حکم فرمائيلې دې، هم دا وجه وه چې نبي ﷺ اسلامي لښکر روميانو سره د قتال دپاره تیار کړو او خلقو ته ئې په دې کښې د شرکت کولو دعوت ورکړو، چې ددې په نتیجه کښې د غزوة تبوک واقع پېښه شوه، ددې واقع مشهوره ده. (۲).

(۱) هذا ملخص ما قاله الرازي في احكام القرآن: ١٣٣/٣، فصل، سورة التوبة، والعثماني في اعلاء السنن: ٤٣٠/١٢، وكذا انظر البناية شرح الهداية: ٢٣٨/٧ و ٢٤١-.

(۲) عمدة القاري: ٧٨/١٥-.

”ید“ ائمه لغت ددې د شلو نه زیاتې معنې بیان کړې دي، لیکن دلته د ”ید“ نه مراد قهر او غلبه ده (۱). بیا د نفس خوشحالی ده او هر هغه سرې چې د یو ظالم جابر اطاعت اختیار کړې او هغه ته د زړه په رضامندی سره د لاس په ذریعه څه ورکړې نو وئیلې شی: ”اعطاء عن ید“ اوس به د حق یعطوا الجریة عن ید معنی داوی: ”تر دې چې د زړه په خوشی سره جزیه ادا کړې“ او د قهر او غلبې د معنې په اعتبار سره به مطلب دا وی چې جزیه ادا کوونکي به د مغلوب او مقهور کیدو د وجې نه جزیه ادا کوی. ددې یو بل مطلب هم بیان کړې شوې دې چې جزیه دوی په خپل لاس باندې ادا کړې، د چا په ذریعې سره ئې نه ورکوی (۲). والله اعلم

اذلاء: دا د امام بخاری رحمه الله په نزد د (وهم صاغرون) تفسیر دې، یعنی ”صاغرون“ معنی ذلیل او حقیر کیدل دي، لکه ابو عبید په خپل کتاب ”المجاز“ کښې لیکلې دي ”الصاغرة: الذلیل، الحقیر“ (۳) والمسکنة مصدر المسکین، يقال: أسکن من فلان أحوج منه.

او مسکنة د مسکین مصدر دې، لکه څنگه چې وئیلې شی أسکن من فلان یعنی هغه د فلانی نه زیات محتاج دې. د امام بخاری رحمه الله مشهور عادت دې چې هغه د څه لږ مناسبت د وجې نه د قرآن کریم نور آیتونه هم د باب لاندې ذکر کوی او د هغې تفسیر او تشریح کوی. دلته هم د مصنف رحمه الله ذهن بل طرفته منتقل شو او هغوی هم د اهل کتابو په باره کښې نازل شوې د یو بل آیت (وضربت علیهم الذلة والمسکنة) (۴) تفسیر شروع کړو چې لفظ ”مسکنة“ د مسکین مصدر دې لکه څنگه چې د أسکن من فلان معنی په أحوج من فلان سره بیانولې شی (۵).

قوله: ولم یذهب إلى السکون: او امام بخاری د سکون طرفته تګ اونه کړو مطلب دا دې چې امام بخاری رحمه الله د مسکین اشتقاق د سکون نه اونه کړو، بلکه هغوی دا د مسکنة نه ماخوذ ښودلې دې. ددې جملې ویونکي (قائل) څوک دې؟ ددې په باره کښې د حافظ صاحب رحمه الله خیال دا دې چې ددې جملې صحیح قائل د بخاری راوی فربری رحمه الله دې (۶).

ترجمة الباب سره د آیت کریمه مناسبت: علامه عینی رحمه الله فرمائی چې ترجمة الباب سره د آیت کریمه مناسبت د آیت کریمه په دې حصه کښې دې: (حق یعطوا الجریة عن ید وهم صاغرون) (۷)

(۱) پورته حواله. وتحفة الباری: ۵۶۵/۳. والقاموس الوحید، مادة یدی (۳)۔

(۲) فتح الباری: ۲۵۹/۶. واحکام القرآن: ۱۲۹/۳۔

(۳) فتح الباری: ۲۵۹/۶. وتحفة الباری: ۵۶۵/۳. والقسطانی: ۲۲۹/۵. وعمدة القاری: ۷۸/۱۵۔

(۴) البقرة: (۶۱)۔

(۵) عمدة القاری: ۷۸/۱۵. وتحفة الباری: ۵۶۵/۳. والقسطانی: ۲۲۹/۵. وفتح الباری: ۲۵۹/۶۔

(۶) فتح الباری: ۲۵۹/۶۔

(۷) عمدة القاری: ۷۸/۱۵۔

قوله: وَمَا جَاءَ فِي أَخْذِ الْجَزِيَّةِ مِنَ الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى وَالْمَجُوسِ وَالْعَجَمِ: او د يهوديانو، نصاری، مجوسیانو او عجمیانو نه د جزئی د وصولولو په بیان کښې دا کتاب دې دا د ترجمه الباب باقی حصه ده.

جزیه به د چانه اخستلې شی؟ ددې ځانې نه اختلافی مسئله شروع کیږی چې جزیه به د کومو خلقو نه اخستلې شی، آیا صرف د اهل کتابو نه یا د نورو مذهبونو د تابعدارو خلقو نه هم؟ تفصیل لاندې ذکر کولې شی:

① د امام شافعی او احمد رحمه الله علیهما مذهب دادې چې جزیه به صرف د اهل کتابو او مجوسیانو نه اخستلې شی. (۱) پاتې شوبت پرست، اهل هوی او باقی ټول کفار، نو د دوی نه به جزیه نه قبلېږی، ددې ټولو خلقو له طرفه به صرف اسلام قابل قبول وی. (۲).

هرچه مجوسیان دی نو چونکه د نبی کریم ﷺ نه ثابت دی چې هغوی د مجوسیانو نه جزیه اخستلې وه نو د سنت په ذریعې سره به په کتاب الله کښې تخصیص اوشی او د جزیه په حکم کښې به مجوسیان هم داخل شی. (۳).

② د امام مالک رحمه الله مذهب دادې چې د جزئی حکم هر کافر ته شامل دې. ددې وجې نه به د هر کافر نه جزیه وصولولې شی، خواه کتابی وی یا مجوسی وی، هندو وی یا سیک، عرب وی یا عجم. (۴).

لیکن د هغوی په نزد مرتد په دې عام کښې داخل نه دې، یعنی د هغه په حق کښې جزیه قابل قبول نه ده، دده دپاره خو دوه صورتونه جائز دی، توبه یا قتل.

هم دا مذهب د امام اوزاعی او د شام د فقهاء کرامو هم دې. (۵). دې حضراتو په دې سلسله کښې استدلال د حضرت بریده رضی الله عنه د روایت نه کړې دې، کوم چې امام مسلم رحمه الله وغیره نقل کړې دې، حضرت بریده رضی الله عنه فرمائی:

”کان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا أمر أميراً على جيش أو سرية أو صالة في خاصته بتقوى الله ومن معه من المسلمين خيراً، ثم قال: وإذا لقيت عدوك من المشركين فادعهم إلى ثلاث خصال: أو خلال فان هم أبوا فسلمهم الجزية، فان هم أجابوك فاقبل منهم، وكف عنهم.....“ (۶).

① پورته حواله، وفتح الباری: ۲۵۹/۶، والاوجز: ۱۹۱/۶، والمغنی: ۹۲۶۳، وکتاب الام: ۱۷۴/۴/۲.

② المغنی: ۹۲۶۶، رقم: (۷۶۴۲).

③ الفتح: ۲۵۹/۶، ۲۶۰، وکتاب الام: ۱۷۲/۴/۲، وعمدة القاری: ۷۸/۱۵، واحکام القرآن: ۱۲۰/۳.

④ المدونة الكبرى: ۴۶/۲، وفتح الباری: ۲۵۹/۶، وعمدة القاری: ۷۸/۱۵.

⑤ فتح الباری: ۲۵۹/۶، وعمدة القاری: ۷۸/۱۵.

⑥ الحديث اخرجه مسلم. كتاب الجهاد والسير، باب تامين الامام على البعوث ووصية..... رقم (۴۵۲۱) _ (۴۵۲۴)، و ابو داود، اول كتاب الجهاد، باب في دعاء المشركين، رقم (۲۶۱۲_۲۶۱۳)، والترمذی، ابواب السير، باب ما جاء في وصية ﷺ في القتال، رقم (۱۶۱۷)، وابن ماجه، ابواب الجهاد، وصية الامام، رقم (۲۸۵۸).

یعنی "دنبی ﷺ عادت مبارکه خو دا وو، چې کله به ئې څوک د لښکر یا د سړي امیر مقررولو، نو عادت مبارکه دا وو چې مذکوره امیر ته به ئې د خپل ذات او د عامو مسلمانانو په باره کښې د الله تعالی نه د ویریدو وصیت فرمائیلو، بیا به ئې ارشاد فرمائیلو..... او کله چې دشمن سره مخامخ شئ نو تاسو هغوی ته د دریو څیزونو دعوت ورکړئ..... که هغوی انکار او کړی نو د هغوی نه جزیه طلب کړئ، که په دې پاندې راضی شی نو د هغوی نه جزیه قبول کړئ او هغوی سره څه غرض مه ساتئ....."

ددې حدیث د عموم نه دا حضرات استدلال کوی چې دا حدیث ټولو مشرکینو او کافرانو ته عام دي، لکه څنگه چې دلته نبی ﷺ د مشرکین لفظ استعمال فرمائیلې دي، لهذا د کوم ځانې شرک چې هم وی، هر قسم شرک چې وی نو هغه ددې حدیث په عموم کښې داخل دي. (۱) اهل کتاب هم ښکاره خبره ده چې د هغوی اکثره حصه خلق مشرکان دي، څوک عزیر ﷺ ته ابن الله وائی او څوک عیسی ﷺ ابن الله منی.

دغه شان دا حضرات ددې خبرې نه هم دلیل نیسی چې نبی ﷺ د هجر د مجوسیانو نه جزیه وصول کړې ده، او دا ددې خبرې تقاضه کوی چې دلته د آیت کریمه د مفهوم مخالف اعتبار نه دي کړې شوي، بلکه مفهوم مخالف لره اعتبار ورکول دلته پریځودلې شوي دي، نو هرکله چې ددې حدیث په ذریعې سره د اهل کتابو تخصیص او کړې شو نو معلومه شوه چې په آیت کریمه کښې مذکوره کلمات «من اهل الکتاب» څه مفهوم مخالف نشته. (۲)

(۳) د احنافو حضراتو کثرت الله سوادهم مذهب د جزیه په اخستلو کښې دادې چې د اهل کتاب، مجوسیانو او د عجم د بت پرستو نه به جزیه اخستلې شی، هرچه د عربو بت پرست دي نو د هغوی نه به جزیه نه اخستلې کیږي، د هغوی دپاره اسلام دي یا توره، دریم هیڅ صورت نشته، دغه شان د مرتدینو نه به هم جزیه نه قبلېږي. (۴)

غالباً امام بخاری رحمه الله هم ددې مسلک قائل دي ځکه چې دلته هغوی د ترجمه الباب لاندې کوم الفاظ ذکر کړي دي، د هغې نه هم دا معلومېږي. (۵)

د احنافو مذهب د مالکيه په شان دي، فرق صرف دادې چې هغوی د مشرکین عرب نه هم د

(۱) شرح ابن بطلال: ۳۳۰/۵، واحکام القرآن للرازي: ۱۱۸/۳-۱۲۱-.

(۲) شرح ابن بطلال: ۳۳۰/۵، وفتح الباری: ۲۶۰/۶-.

(۳) الهدایة مع فتح القدیر: ۲۹۱/۵، وعمدة القاری: ۷۸/۱۵، واحکام القرآن: ۱۲۱/۳- قال الامام محمد بن الحسن الشیباني رحمه الله: ثم کل من يجوز استرقاقه من الرجال يجوز اخذ الجزية منه بعقد الذمة؛ کاهل الکتاب وعبدۃ الاوثان من العجم، ومن لا يجوز استرقاقه لا يجوز اخذ الجزية منه؛ کالمرتدين وعبدۃ الاوثان من العرب، والاصل فيه حدیثان.... السیر الکبیر مع شرحه للسرخسی: ۱۳۲/۳/۲، باب قتل الاسارى والمن عليهم. رقم الباب (۱۰۷)-.

(۴) عمدة القاری: ۷۸/۱۵، واوز المسالك: ۱۹۲/۶، وفيض الباری: ۴۷۲/۳-.

جزیه اخستلو قائل دی او احناف ددې قائل نه دی ددې حضراتو مستدل یو خو هم دغه آیت کریمه دې کوم چې امام بخاری رحمته الله علیه هم په باب کنبې ذکر کړې دي. دویم مستدل د حضرت عبدالرحمن بن عوف رضی الله عنه حدیث دې کوم چې ددې تذکره ده چې هغوی د هجر د مجوسیانو نه جزیه اخستلې وه. دا حدیث باب کنبې راروان دي. ^(۱) بیا قیاس هم د احنافو تائید کوی، هغه دا چې اهل کتاب، مجوسیان او عجمی بت پرستو لره غلامان جوړول جائز دی نو د دوی نه جزیه قبول به هم جائز وی. ددې عکس مرتد دي چې هغه لره غلام جوړول جائز نه دی لهذا د هغه نه جزیه اخستل هم جائز او صحیح نه دی. ^(۲)

د مشرکینو د عرب د تخصیص وجوهات: هرچه د مشرکین عرب او د مرتدینو نه جزیه نه اخستل دی نو ددې وجه داده چې د هغوی د کفر نوعیت او کیفیت لږ مختلف دي ځکه چې د هغوی کفر لږ زیات سخت دي، او گورئ: نبی صلی الله علیه و آله د مشرکینو د عرب مینځ کنبې لوټې شوې وو، قرآن کریم هم د هغوی په ژبه کنبې نازل شوې وو، ددې وجې نه معجزات د هغوی په حق کنبې زیات ښکاره وو، ددې ټولو باوجود د اسلام نه قبولولو مطلب چې ضد، بغض او طاقت ښودل نه دی نو نور څه دی؟ ^(۳)

دغه شان د مرتد معامله ده، هغه د هدایت نه پس تیاره، د اسلام او اطاعت نه پس د خپل حقیقي رب انکار کړې دي، حالانکه ده ته د اسلام د صفتونو هم معلومات وو، ددې وجې نه به د ده نه جزیه نه اخستلې کیږي، په سزا کنبې به د زیاتې او اضافې په طور سره دده په حق کنبې صرف توره یا صرف اسلام قابل قبول وی.

علامه رازی رحمته الله علیه په احکام القرآن کنبې نور وجوهات هم ددې تخصیص دپاره ذکر کړې دي. ① امام معمر رحمته الله علیه د علامه زهري رحمته الله علیه نه نقل کړې دي چې نبی صلی الله علیه و آله بت پرستو سره په جزیه باندې صلح کړې وه، البته ددې نه هغه بت پرست جدا وو کوم چې عرب وو.

② د الله تعالی ارشاد دي: **فَاَقْتُلُوا الشَّيْطَانَ الَّذِي يَدْعُوَكُمْ إِلَى الْغَوْلِ** (۱۰۷) دا آیت کریمه د عرب د بت پرستو په باره کنبې نازل شوې وو، ددې وجې نه دوی به یا خو قتلولې شی یا به دوی اسلام قبولوي. ^(۴) دغه شان ملا علی قاری رحمته الله علیه فرمائي چې د مشرکینو د عرب په باره کنبې زمونږ دا

^(۱) الفقه الحنفی وادلته: ۳۹۹/۲. والهدایة مع فتح القدیر: ۲۹۲/۵.

^(۲) شرح ابن بطلال: ۳۳۰/۵. والهدایة مع فتح القدیر: ۲۹۲/۵.

^(۳) مرقاة المفاتیح: ۵۵۵/۷. الفصل الثالث من باب الجزية. والهدایة مع فتح القدیر: ۲۹۲/۵. واوز المسالك:

۱۹۷/۶. والمبسوط للسرخسی: ۱۰/۱۲۶. باب المرتدين.

^(۴) التوبة: (۵).

^(۵) احکام القرآن: ۱۲۱/۳. مطلب فی الصابین. والاوز: ۱۹۳/۶. ۱۹۵. والمصنف لعبد الرزاق: ۳۲۶/۱۰. رقم (۱۹۲۵۹). وانظر كذلك كتاب السير الكبير مع شرح السرخسی: ۱۳۲/۳/۲. باب (۱۰۷) قتل الاسارى والمن عليهم

دلیل دي. (تقاتلونهم اویسلمونهم^(۱)) او د حضرت ابن عباس رضی الله عنه نه روایت دي چې نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل: "لا یقبل من مشرک العرب الا اسلام او السیف"^(۲).

د کومو خلقو نه به جزیه نه اخستلې کیږي؟ وړاندې چې کوم بحث اوشو نو د هغې تعلق دي سره وو چې جزیه په کومو خلقو باندې واجبه ده. اوس بحث دادې چې جزیه په کومو خلقو باندې واجبه نه ده، نو په دې سلسله کښې د حضراتو احنافو رحمهم الله دلیل دادې چې د عربو په بت پرستو، مرتدینو، بنځو، ماشومانو، معذور خلقو، نابینا، شیخ فانی او په کار باندې قدرت او طاقت نه لرونکي فقیرانو باندې جزیه واجبه نه ده^(۳).

د عرب بت پرستو او مرتدینو نه د جزیه نه اخستلو چې کومه وجه وه نو هغه مونږ وړاندې بحث کښې ذکر کړه، هرچه د بنځو، ماشومانو، معذورو خلقو او د شیخ فانی وغیره نه جزیه نه اخستل دی او په دوی باندې د نه واجب کیدلو چې کومه معامله ده نو د هغې وجه داده چې دوی په جنگونو کښې نه شی قتلولي، او قانون دادې چې کوم سړې د سزا په طور نه قتلېږي نو د هغه نه د جزیې مطالبه هم نه کیږي، چونکه جزیه خو ددې وجې نه لازمه شوې وه چې قتل ترینه ساقط کړې شی، ددې وجې نه چې د کوم سړي قتل واجب نه دي نو په هغه باندې جزیه هم لازمه نه ده او دا هغه کسان دي چې د دوی قتل جائز نه دي، ددې وجې نه په دوی باندې جزیه ادا کول هم لازم نه دي.

د حضرت عمر رضی الله عنه مولي حضرت اسلم فرمائی: "کتب عمر رضی الله عنه الی امراء الجزیة: ان لا یضعوا الجزیة الا على من جرت علیه الموائی، ولا یضعوا الجزیة على النساء والصبيان....."^(۴).

چې "حضرت عمر رضی الله عنه د جزیې وصولولو ذمه دارانو ته اولیکل چې هغوی جزیه لازمی نه کړي سوا د هغه سړي چې د چا په سر باندې چارۍ چلیدلې وي، یعنی بالغ وي او په بنځو او ماشومانو باندې جزیه لازمه نه کړي".

فقیر غیر معتمل، یعنی هغه فقیر چې د خه پيشې او صنعت وغیره باندې پوهیدلو باوجود په کار باندې قدرت نه لري، د داسې فقیر نه د جزیه نه اخستلو وجه داده چې حضرت عمر رضی الله عنه دا شرط لگولې وو چې د هغه فقیر نه به جزیه اخستلې کیږي څوک چې په کار باندې قدرت لري، لکه صله بن زفر فرمائی چې حضرت عمر رضی الله عنه د ذمیانو یو بوډا اولیدلو چې سوال کوي (خیر غواړي) حضرت تپوس او کړو چې تا ته خه تکلیف دي؟ سوال ولې کوي؟ نو بوډا

^(۱) (الفتح: ۱۶)۔

^(۲) (کتاب الخراج لابی یوسف القاضی، ومروقة المفاتیح: ۵۵۵/۷، عن الحسن قال: امر رسول الله صلی الله علیه و آله ان یقال العرب على الاسلام، ولا یقبل منهم غیره..... اعلاء السنن: ۱۲/۴۵۰، والفقه الحنفی وادلته: ۴۰۰/۲)۔

^(۳) (الفقه الحنفی وادلته: ۴۰۰/۲، والهدایة مع فتح القدیر: ۲۹۳/۵-۲۹۴)۔

^(۴) (سنن البیهقی: ۹۳۳۳، کتاب الجزیة، باب من یرفع عنه الجزیة، رقم (۱۸۷۰۰)، والهدایة مع فتح القدیر: ۲۹۴/۵، والفقه الحنفی وادلته: ۴۰۱/۲)۔

او وئیل چې ماسره مال نشته او زما نه جزیه اخستلې کېږي، ددغه پیسو پوره کولو دپاره سوال کوم حضرت عمر رضی الله عنه او فرمائیل چې مونږ تاسو سره انصاف اونه کړو ځکه چې مونږ ستاسو ځوانی او خوږه او اوس ستاسو نه جزیه هم اخلو بیا خلیفه خپلو ټولو کسانو ته اولیکل چې د شیخ فانی نه جزیه مه اخلي.

دغه شان د مملوک، مکاتب، مدبر، ام ولد او راهب کوم چې خلقو سره میل ملاپ نه ساتي، دوی نه به هم جزیه نه اخستلې کېږي.

وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ قُلْتُ لِمَجَاهِدٍ مَا شَأْنُ أَهْلِ الشَّامِ، عَلَيْهِمْ أَرْبَعَةُ دَنَانِيرَ وَأَهْلُ الْيَمَنِ عَلَيْهِمْ دِينَارٌ قَالَ جُعِلَ ذَلِكَ مِنْ قَبْلِ الْيَسَارِ

او ابن عیینة د ابن ابی نجیح نه روایت کوی چې ما د مجاهد نه تپوس او کړو چې ددې څه وجه ده چې په اهل شام باندې خو څلور دیناره لازم دی او په اهل یمن باندې صرف یو دینار لازم دي؟ نو هغوی او فرمائیل چې دا د مالدارۍ او د غریبۍ په حساب سره مقرر کړې شوې ده. یعنې شامی خلق چونکه مالدار دي ددې وجې نه د هغوی نه څلور دیناره اخستلې شي او یمنی خلق غریب دي نو د هغوی نه یو دینار اخستلې شي.

د مذکوره تعلیق تخریج: دا تعلیق امام عبدالرزاق رحمه الله په خپل مصنف کښې موصولاً "أخبرنا ابن عيينة عن ابن أبي نجيح" د سند سره نقل کړې دي. دغه شان ابو عبید رحمه الله هم په کتاب الاموال کښې دا بلاغاً روایت کړې دي.

د مذکوره تعلیق مقصد: امام بخاری رحمه الله دا اثر دلته ذکر کولو سره د جزیه په وصولۍ کښې د فرق طرفته اشاره کړې ده. د ذمیانو نه چې کومه جزیه وصولولې شي نو ددې به څومره مقدار وي، په دې کښې هم د ائمه اربعه اختلاف دي.

① د امام ابو حنیفه او په یو روایت کښې د امام احمد رحمه الله مذهب دادې چې خلق درې قسمه وي: مالدار، متوسط او فقیران، د مالدارو خلقونه به کال کښې اته څلوینست دینارونه

١) نصب الراية: ٤٥٣/٣، باب الجزية، الحديث الرابع، وكتاب الاموال لابن زنجويه: ١١٦٢، باب من تجب عليه الجزية ومن تسقط عنه، رقم (١٦٥) وكنز العمال: ٢١٣/٤، كتاب الجهاد، رقم (١١٤٧٣) اعلاء السنن: ٤٦٢/١٢، والهداية مع فتح القدير: ٢٩٤/٥، والفقه الحنفي وادلته: ٤٠١/٢.

٢) الهداية مع فتح القدير: ٢٩٤/٥، و٢٩٥، باب الجزية، وقال ابن رشد في بداية المجتهد: ٤٠٤/١، الفصل السابع في الجزية: فانهم اتفقوا على انها انما تجب بثلاثة اوصاف: الذكورية، والبلوغ، والحرية، وانها لا تجب على النساء والصبيان، اذا كانت انما هي عوض من القتل انما هو متوجه بالامر نحو الرجال البالغين، اذ قد نهى عن قتل النساء والصبيان، وكذلك اجمعوا انها لا تجب على العبيد.

٣) المصنف لعبد الرزاق: ٣٣٠/١٠، كتاب اهل الكتابين، باب كم يؤخذ منهم في الجزية، رقم: (١٩٢٧١)، وتغليق التعليق: ٤٨٢/٣، وعمدة القاري: ٧٩/١٥.

٤) كتاب الاموال، باب فرض الجزية، ومبلغها.....: ٥١/١، وتغليق التعليق: ٤٨٢/٣.

٥) المغنى لابن قدامة: ٩٢٦/٧ واعلاء السنن: ٤٣١/١٢.

اخستلې شی (یا څلور دیناره) د هرې میاشتې په حساب سره، دا درې درهمه جوړېږي، د متوسط قسم خلکو ته به څلور ویشته درهمه (یا دوه دیناره) یعنی هره میاشت کښې دوه دیناره او د فقیرانو ته به د ولس دیناره (یا یو دینار) میاشت کښې یو دینار (۱).

(۲) د امام ثوري، ابو عبید، په یو روایت کښې د امام احمد رحمهم الله مذهب دادې چې د جزیې څه خاص مقدار متعین نه دي، د امام په رائي باندې منحصره ده چې کم وصولوی یا زیاته (۲).

(۳) د امام شافعی رحمه الله مسلک دادې چې د مالدار او فقیر دواړو ته به یو دینار وصولولې شی (۳). البته امام ته دا اختیار دي چې ماکست او کړی یعنی د جزیې رقم د زیاتولو کوشش او کړی، تردې چې څلور دیناره د دوی نه واخستلې شی (۴).

(۴) د امام مالک رحمه الله غوره قول دادې چې د سرو زرو والو ته به څلور دیناره او د چاندی والو ته به څلویښت درهمه اخستلې شی (۵). او که ددې طاقت نه وي نو د ضرورت په قدر به کمولې شی (۶).

(۵) په حنابله کښې د امام ابوبکر غوره مسلک دادې چې د جزیې کم از کم مقدار یو دینار دي، او د زیات مقدار حد ئې مقرر نه دي، د امام احمد نه هم یو دا روایت مروی دي (۷). د مذهبونو دلائل: د احنافو دلیل د حضرت عمر رضي الله عنه فیصله ده کومه چې هغوی مختلفو گورنرانو او عاملینو ته لیرلې وه، لکه ابو عون محمد بن عبید الله الثقفي رحمه الله لیکي: "وضع عمر بن الخطاب رضي الله عنه في الجزية على رؤوس الرجال، على الغني ثمانية وأربعين درهماً، وعلى المتوسط أربعة وعشرين درهماً، وعلى الفقير اثني عشر درهماً".

امام ابوبکر بن ابی شیبې دا روایت په خپل "مصنف" کښې مرسلأ روایت کړې دي (۸). ابن زنجویه په "کتاب الاموال" کښې دا مسندأ روایت کړې دي او په دي مسند روایت کښې په یو راوی مندل باندې کلام دي لیکن مرسل روایت که مسندأ روایت کړې شی، خواه

(۱) فتح الباری: ۲۶۰/۶، واعلاء السنن: ۴۳۱/۱۲، والهدایة مع فتح القدير: ۲۸۹/۵.

(۲) المغنی لابن قدامة: ۲۶۷/، رقم (۷۶۴۰)، واعلاء السنن: ۴۳۱/۱۲.

(۳) احکام القرآن للجصاص: ۱۲۵/۳، واعلاء السنن: ۴۳/۱۲، و کتاب الام: ۲۷۹/۴.

(۴) فتح الباری: ۲۶۰/۶، و شرح النووی علی مسلم: ۸۲/۲.

(۵) شرح الزرقانی علی المؤطا: ۱۴۰/۲، جزیة اهل الكتاب والمجوس، وبداية المجتهد: ۴۰۴/۱، الفصل السابع فی الجزية، و اوجز المسالك: ۲۰۴/۶.

(۶) پورته حواله جات، و فتح الباری: ۲۶۰/۶.

(۷) المغنی لابن قدامة: ۹۲۶۷/، واعلاء السنن: ۴۳۱/۱۲.

(۸) المصنف لابن ابی شیبې: ۴۰۶/۱۷، کتاب السير، ما قالوا فی وضع الجزية، رقم (۳۳۳۱)، او پورته حواله جات.

په ضعیف طریق سره وی نو د ټولو په نزد حجت او دلیل وی. (۱).
دغه شان حارثه بن مضرب، د حضرت عمر رضی الله عنه نه روایت کوي:

”انه بعث عثمان بن حنيف، فوضع عليهم ثمانية واربعين درهماً، واربعة وعشرين، واثنى عشر.....“ (۲).
چې ”حضرت عمر رضی الله عنه عثمان بن حنيف روان کړو، نو هغوی په ذمیانو باندې اته څلویښت درهمه، څلور ویشټ درهمه او دولس درهمه مقرر کړل.“
دا حدیث مرسل او موصولاً متعدد طرقو سره روایت شوي دي او دا صحیح او مشهور حدیث دي، علامه ابن قدامه رحمته الله په المغنی کښې فرمائي چې ددې حدیث په صحت او شهرت کښې هیڅ شک و شبهه نشته خواه صحابه کرام رضی الله عنهم وی یا غیر صحابه، د ټولو په نزد ددې صحت منلې شوې دي، هیڅ یو منکر ددې انکار نه دي کړې او په دې کښې د چا اختلاف هم نشته، په دې حدیث باندې د حضرت عمر رضی الله عنه نه پس خلیفه گانو هم عمل کړې دي، چې ددې خبرې دلیل دي چې په دې باندې اجماع شوې ده او ددې خلاف عمل کول جائز نه دی تردې چې په خپله د امام شافعی رحمته الله نه روایت دي چې په دې حدیث باندې عمل کول مستحب دی. (۳).

د امام ثوري او ابو عبید وغيره وینا داده چې د جزیې د مقدار په سلسله کښې د نبی صلی الله علیه و آله او د حضرت عمر رضی الله عنه نه مختلف قسم احکامات روایت شوي دي، لکه نبی صلی الله علیه و آله حضرت معاذ رضی الله عنه ته دا حکم ورکړې وو چې د هر بالغ نه یو دینار وصول کړي (۴). دغه شان نبی صلی الله علیه و آله د نجران نصارو سره په دوه زره جوړو باندې صلح کړې وه، د نیمو جوړو ادا کول په صفر کښې وو او باقی نیمې په رجب کښې ادا کول ضروري وو (۵). او حضرت عمر رضی الله عنه د جزیې درې طبقي مقرر کړې وې چې په مالدار سړي باندې اته څلویښت درهمه، په متوسط باندې څلور ویشټ او په فقیر باندې دولس درهمه (۶).

دغه شان کله چې حضرت عمر رضی الله عنه د بنو تغلب نصارو سره صلح او کړه نو په هغې کښې دا فیصله هم شوې وه چې مسلمانان په زکوة کښې څه ادا کوي نو دوی به د هغې دوچند په

(۱) کتاب الاموال لابن زنجويه: ۱/۲۱۰، باب ارض العنوة تقر بایدی..... رقم (۲۵۸)، اعلاء السنن: ۱۲/۴۳۱

(۲) پورته حواله، ص: ۴۳۳، ۴۳۴، وفتح الباری: ۶/۲۶۰._

(۳) المغنی لابن قدامة: ۹۲۶۸، واعلاء السنن: ۱۲/۴۳۲-۴۳۳._

(۴) حدیث معاذ اخرجه الترمذی، ابواب الزکاة، باب ما جاء فی زکاة البقر، رقم (۶۲۳)، وابو داود، ابواب الزکاة، باب زکاة السائمة، رقم (۱۵۷۶)، والنسائی، کتاب الزکاة، باب زکاة البقر، رقم (۲۴۵۲-۲۴۵۵)، وابن ماجه، کتاب السنة، باب اجتناب الراي والقياس، رقم (۵۵)، وابواب الزکاة، باب صدقة البقر، رقم (۱۸۰۳). _

(۵) الحدیث اخرجه ابو داود فی سننه، کتاب الخراج..... باب فی اخذ الجزية، رقم (۳۰۴۱). _

(۶) المصنف لابن ابی شيبه: ۱۷/۴۰۶، رقم (۳۳۳۱۱)، والمغنی: ۹۲۶۷، واعلاء السنن: ۱۲/۴۳۱._

جزیه کښې ادا کوي. (۱) ددې ټولو واقعاتو نه دا ثابت شوه چې د جزیې معامله امام ته حواله ده چې هغه څنگه غواړي نو هغه شان فیصله به کوي. که د جزیې څه مقررې حد مقرر او متعین وو نو دا اختلاف به نه پيدا کیده او دا هم ممکنه نه ده چې که په متعین مقدار کښې اختلاف وي چې یو کس یو څه وصول کړي او او بل کس بل څه وصول کړي. (۲)

د جمهورو له طرفه جواب: په دې مسئله کښې اگرچه د جمهورو اختلاف دې چې جزیه به څومره مقدار کښې وي؟ لیکن په دې کښې هیڅ اختلاف نشته چې د د جزیې حد مقرر دې، په دې سلسله کښې صرف امام ثوري، ابو عبید و غیره رحمهم الله ددې قائل دي چې دا د امام په رائي باندې منحصر ده چې د ذمیانو نه څومره جزیه وصول کړې شي. نو د جمهورو له طرفه دې حضراتو ته دا جواب ورکړې شوې دې چې اصل کښې جزیه په دوه قسمه ده:

① الجزية بالتراض: دا هغه قسم دې چې د دوو ډلو مینځ کښې د صلحې په صورت کښې د دواړو په رضامندی سره فیصله کړې شي، په دې کښې به ددې خلقو نه هغه څیز اخستلې شي په کوم څیز باندې چې صلح شوې ده، په دې کښې تعدی (زیاتوالی) جائز نه دې، ددې دلیل د نبی ﷺ اهل نجران سره صلح ده، کوم چې نصاری وو، دویم دلیل د حضرت عمر رضی الله عنه هغه عمل دې کوم چې اوس تیر شو چې هغوی د مسلمانانو د زکوة دوچند مال د بنو تغلب نه وصول کړې وو.

② الجزية بالغلبة على الكفار: دا هغه قسم دې چې په دې کښې د وخت امام په کافرانو باندې په جنگ کښې د غلبې او تسلط حاصلولو نه پس، په دې کافرانو باندې د مالدار او فقیر و غیره په اعتبار سره جزیه مقرروي. (۳)

ملا علی قاری رحمه الله د علامه ابن الهمام په حوالې سره لیکي:

”الجزية على ضربين: جزية توضع بالتراض والصلح عليها، فقد ربح بحسب ما عليه الاتفاق، فلا يزداد عليه تحريزا عن العذر، واصله صلح رسول الله ﷺ اهل نجران وهم قوم من النصاري بقرب اليمن على مائتي ابي داود عن ابن عباس رضي الله عنهما قال: صلح رسول الله ﷺ اهل نجران على الف حلة، الحديث (۴) وصالح عمر رضي الله عنه نصارى بنى تغلب على ضعف ما يؤخذ من المسلم من المال (۵)، والضرب الثاني: جزية يبتدئ الامام بتوظيفها اذا غلب على الكفار.....“ (۶)

(۱) المغنی: ۹۲۶۷/، واعلاء السنن: ۴۳۱/۱۲، والمرقاۃ: ۶۶/۸، واوز المسالك: ۲۰۷/۶.

(۲) المغنی: ۹۲۶۷/، واعلاء السنن: ۴۳۱/۱۲.

(۳) الفقه الحنفی وادلته: ۳۹۸/۲، والمرقاۃ: ۶۶/۸، والاوز: ۲۰۷/۶، والبنایة: ۲۳۸/۷، باب الجزية.

(۴) رواه ابو داود، کتاب الخراج..... باب فی اخذ الجزية، رقم (۳۰۴۱).

(۵) انظر المصنف لابن ابی شیبة: ۵۶۲/۶، کتاب الزکاة، فی نصاری بنی تغلب: ما..... رقم (۱۰۶۸۴) والسنن الکبری للبيهقي: ۹۳۶۳/۳۶۴، کتاب الجزية، باب نصاری العرب تضعف..... [بقیه بر صفحه آئنده...]

چونکه د دواړو قسمونو نوعیت جدا جدا دي، ددې وجې نه ئې احکامات هم جدا جدا شو، د صلحې په صورت کښې ذميانو ته هم څه اختیار حاصل دي لیکن د شکست په صورت کښې هغوی ته هیڅ اختیار نشته، په دې سلسله کښې به د وخت امام فیصله کوي، دغه فیصله به د احنافو په نزد د حضرت عمر رضی الله عنه د فیصلې په رنډا کښې وي، د شوافعو په نزد به د حضرت معاذ رضی الله عنه د حدیث مطابق او د امام مالک رحمته الله علیه په نزد د هغوی د دلیل په بنیاد باندې فیصله کیږي.

د شوافعو دلیل: د حضرات شافعيه رحمهم الله مشهور دلیل په دې سلسله کښې د حضرت معاذ بن جبل رضی الله عنه هغه حدیث دي کوم چې اوس تیر شو چې:

”ان النبي صلى الله عليه وسلم إلى اليمن امرأة أن يأخذ..... ومن كل حال يعنى محتلباً. ديناراً أو عدله من المعافر، ثياب تكون باليمن“ (اللفظ لابي داؤد) (۱)

یعنی ”کله چې نبي صلی الله علیه و آله حضرت معاذ بن جبل رضی الله عنه د یمن طرفته روان کړو نو ورته ئې حکم اوکړو چې..... او د هر بالغ سړي نه یو دینار یا ددې برابر معافری کپړې واخله دا د یمنی کپړو یو قسم دي“

د شوافعو د دلیل جواب: دا د شوافعو دلیل دي، لیکن دا زمونږ خلاف ځکه حجت نه دي چې مونږ هم په دې باندې د عمل کولو قائل یو او دا په فقیر باندې محمول کوو (۲). دغه شان حضرت معاذ رضی الله عنه چې د اهل یمن نه یو دینار اخستلې وو نو ددې وجې د هغوی غریبی وه ځکه چې یمنی خلق غریبان وو، په دې باندې دلیل د حضرت امام بخاری رحمته الله علیه هغه تعلیق دي کوم چې د باب په ابتداء کښې تیر شو.....

”قال ابن عیینة عن ابن أبي نجيح: قلت لمجاهد: ما شان اهل الشام عليهم أربعة دنانير واهل اليمن عليهم دينار؟ قال: جعل ذلك من قبل اليسار“ (۳).

او امام ابوبکر جصاص رحمته الله علیه فرمائي چې د حضرت معاذ رضی الله عنه حدیث په صلح باندې محمول دي، ددې دلیل دادې چې ددې حدیث په بعضې طرق کښې د ”حالة“ (۴) اضافه هم موجود ده

بقیه از حاشیه گذشته [رقم (۱۸۷۹۴-۱۸۷۹۶)، و کتاب الخراج لیحیی بن آدم، رقم (۲۰۶-۲۰۸)، والخراج لابی یوسف القاضی ۱۲۹-۱۳۱، فصل فی شان نصاری بنی تغلب..... ونصب الراية فی تخریج احادیث الهدایة: ۴۵۵/۳، باب الجزية، من کتاب السیر]۔

(۱) مرقاة المفاتیح: ۶/۸، و اوجز المسالك: ۶/۲۰۷، وفتح القدير: ۵/۲۸۸-۲۸۹۔

(۲) الحدیث صححه الترمذی والحاكم فی کتاب الزکاة، زکاة البقر: ۱/۳۹۸، و مر تخریجه آنفا. وفتح الباری: ۶/۲۶۰۔

(۳) اعلاء السنن: ۱۲/۴۳۳، والمسوی: ۲/۱۶۷، و اوجز المسالك: ۶/۲۰۹۔

(۴) اعلاء السنن: ۱۲/۴۳۲، والمغنی: ۸/۹۲۶، و اوجز المسالك: ۶/۲۰۸۔

(۵) المصنف لعبد الرزاق: ۱۰/۳۳۰، رقم (۱۹۲۲۸)، وکان معمر یقول: هذا غلط، قوله: ”حالة“، ليس على النساء شیء، ”کذا فی نصب الراية: ۳/۴۳، رقم (۶۰۴۲)۔

او په دې باره کښې خوځه اختلاف نشته چې د ښځې نه به جزیه صرف د صلحې په صورت کښې اخستلې کیږي^(۱). هم دا خبره صاحب هدايه علامه مرغینانی رحمۃ اللہ علیہ هم فرمایلې ده، لکه هغوی لیکي: ”وما رواه محمول على أنه كان ذلك صلحاً، ولهذا أمره بالاحذ من الحالبة، وإن كانت لا يؤخذ منها الجريمه.....“^(۲).

او دا خو معلومه ده چې یمن د صلحې په ذریعې سره فتح شوې وو دا نه چې عنوة^(۳). د مالکيه دليل: امام مالک رحمۃ اللہ علیہ د خپل مذهب دپاره د استدلال په طور دا روایت پیش کړې دې، کوم چې د ”نافع عن أسلم مول عمر بن الخطاب“ د طریق نه مروی دې: ”أن عمر بن الخطاب رضی الله عنه ضرب الجريمه على أهل الذنب أربعة دنانير، وعلى أهل الورق أربعين درهماً، مع ذلك أرمق المسلمين، وضيافة ثلاثة أيام“^(۴).

چې ”حضرت عمر رضی اللہ عنہ په سرو زرو والو باندې څلور دیناره، په چاندی والو باندې څلویښت درهمه، دې سره اسلامي لښکر ته خوراک ورکول او درې ورځې میلستیا د جزیې په طور مقرر کړې وه“.

که دا اثر او کتلې شی نو هم دا خبره وړاندې راځي چې د سرو زرو والو نه به څلور دیناره اخستلې شی، د چاندی والو نه څلویښت درهمه او په دې کښې د مالدار یا د فقیر څه تقسیم نشته. ددې نه علاوه اثر کښې نور دوه څیزونه هم دي، یو دا چې اسلامي لښکر ته د خوراک ځکاڅ څیزونه ورکول چې په ذمیانو باندې به دا څیز هم واجب وی چې کله اسلامي لښکر د هغوی په علاقه باندې تیرېږي نو د هغوی د خوراک ځکاڅ انتظام به هم کوي^(۵).

دویم څیز درې ورځې میلستیا ده، ددې مطلب دادې چې کوم مسلمانان ددې خلقو په علاقه باندې تیرېږي نو ورته به دا خلق روتی او سالن وغیره ورکوي او د هغوی دپاره به د داسې رهائش بندوبست او انتظام کوي چې د گرمی او یخنۍ نه محفوظ وي^(۶). لیکن په دې څیزونو باندې عمل اوس د مالکيه په نزد نشته لکه علامه دردير مالکی رحمۃ اللہ علیہ فرمائي: ”وسقطت إضافة المجتاز عليهم من المسلمين ثلاثاً من الايام، وإنما سقطت عنهم للظلم الحادث عليهم من ولاية الامور.....“^(۷).

(۱) احکام القرآن: ۱۲۶/۳، واعلاء السنن: ۴۳۲/۱۲، واوز المسالك: ۲۰۸/۶.

(۲) الهدایه مع فتح القدير: ۲۹۱/۵.

(۳) اعلاء السنن: ۴۳۲/۱۲، کتاب الاموال لابن زنجويه: ۱۲۹/۱، رقم (۱۱۰)، والاوز: ۲۱۰/۶.

(۴) المؤطا: ۲۷۹/۱، کتاب الزکاة، باب جزیه اهل الکتاب..... رقم (۴۳)، والاوز: ۲۰۴/۶، ۴۱۱.

(۵) المنتقى: ۱۷۴/۲، والاوز: ۲۱۰/۶.

(۶) التمهيد لابن عبد البر: ۱۳۱/۲.

(۷) اوز المسالك: ۴۱۱/۶، والشرح الكبير للدردير مع الدسوقي: ۵۲۱/۲، فصل، ف، عقد العزم.

یعنی "په دميانو باندې د تيريدونکو مسلمانانو درې ورځې د ميلمستيا اضافه اوس ختمه شوه او ددې وجه داده چې حکمرانان به په دوی باندې نوې نوې طريقو سره ظلم و ستم کوی" د مالکيه د دليل جواب: دا خو د مالکيه دليل وو، ليکن ددې جواب ډير واضح دې، هغه دا چې که په دې اثر باندې مکمل عمل او کړې شي نو ددې مطلب هم هغه دې د کوم چې احناف قائل دی، ځکه چې مسلمانانو ته د خوراک فراهمی او درې ورځې ميلمستيا که څلويښتو سره ملاؤ کړې شي نو دا د اته څلويښت درهمو برابر جوړېږي(۱).

ترجیح راجح: د احنافو د مذهب د دليل په طور باندې مونږ وړاندې د حضرت عمر رضي الله عنه فيصله نقل کړې وه کومه چې د حارثه بن مضرب او محمد بن عبید الله الثقی رحمهما الله وغيره نه مروی ده، په دې روايت شوي آثارو کښې د انسانانو د دريو طبقاتو (مالدار، متوسط او فقير) تفصيل بيان شوي دي، ددې وجې نه د عمل په اعتبار سره هم دغه آثار به راجح وي، ځکه چې په دې کښې زیادت روايت شوې دي او دغه شان د هرې طبقې حکم په کښې هم موجود دي.

بيا دا خبره هم ده چې کوم حضرات د طبقاتو په حساب سره د جزیه مقرر کيدو قائل دي نو هغوی په دې روايت باندې هم عمل کوی کوم کښې چې صرف د اته څلويښتو درهمو تذکره ده، يعنی د حضرت عمرو بن میمون اودی رضي الله عنه اثر، ددې برخلاف حضرات شافعيه چونکه په اته څلويښت درهمو باندې انحصار کړي دي ددې وجې نه هغوی ددې اثرونو او رواياتو پريخودونکی شو، په کومو کښې چې د طبقاتو تمیز او په هغې کښې په هرې طبقې باندې د مقرر مقدار د تخصیص تذکره ده. هم ددې په بيان کښې امام جصاص رازی رحمته الله عليه فرمائی:

"فكان الخبر الذي فيه تفصيل الطبقات الثلاث أولى بالاستعمال، لما فيه من الريادة، وبيان حكم كل طبقة، ولان من وضعها على الطبقات فهو قائل بخبر الثمانية والاربعين، ومن اقتصر على الثمانية والاربعين، فهو تارك للخبر الذي فيه ذكر تمييز الطبقات، وتخصيص كل واحد بقدر منها....." (۲). والله أعلم بالصواب

۲۹۸۷: (۲) ۳۱۵ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ سَمِعْتُ عُمَرَ قَالَ كُنْتُ جَالِسًا مَعَ جَابِرِ بْنِ زَيْدٍ وَعُمَرُ بْنُ أَوْسٍ، فَحَدَّثَهُمَا بِجَالَةِ سَنَةِ سَبْعِينَ - عَامَ حَجِّ مُصْعَبِ بْنِ الزُّبَيْرِ بِأَهْلِ الْبَصْرَةِ - عِنْدَ دَرَجٍ زَمَزَمَ قَالَ كُنْتُ كَاتِبًا لِحُزْرُوبِ بْنِ مُعَاوِيَةَ عِمَ الْأَحْنَفِ، فَأَتَانَا كِتَابُ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ قَبْلَ مَوْتِهِ بِسَنَةِ فَرَّقُوا بَيْنَ كُلِّ ذِي فُحْرٍ مِنَ الْمَجُوسِ. وَلَمْ

(۱) احكام القرآن للرازي: ۱۲۶/۳، والاوجز: ۲۰۸/۶، و. ۲۱۰، واعلاء السنن: ۴۳۲/۱۲ -

(۲) احكام القرآن: ۱۲۶/۳، والاوجز: ۲۰۸/۶، واعلاء السنن: ۴۳۳/۱۲ -

(۳) قوله: سمعت عمرا الحديث، أخرجه الترمذي، كتاب السير، باب ما جاء في اخذ الجزية من المجوس، رقم (۱۵۸۶)، وابو داود، كتاب الخراج والفئ والامارة، باب في اخذ الجزية من المجوس، رقم (۳۰۴۳)، والنسائي في الكبرى، كتاب السير، رقم (۸۷۶۸) -

يَكُنْ عَمْرًا أَخَذَ الْحِزْبَةَ مِنَ الْمَجُوسِ، حَتَّى شَهِدَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -
صلى الله عليه وسلم- أَخَذَهَا مِنْ مَجُوسٍ هَجَرَ.

رجال الحديث

① علی بن عبدالله: دا مشهور د حدیثو امام علی بن عبدالله بن المدینی رحمته الله دې، د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب الفهم فی العلم" کښې تیره شوې ده. (۱).

② سفیان: دا مشهور محدث سفیان بن عیینه بن ابی عمران کوفی رحمته الله دې، د دې مختصر حالات د "بده الوسی" په اولنی حدیث کښې او تفصیل سره په کتاب العلم، "باب قول المحدث: حدثنا...." کښې تیره شوې دي. (۲).

③ عمرو: د مشهور تابعی حضرت عمرو بن دینار رحمته الله تذکره په کتاب العلم کښې راغلې ده. (۳)
قوله: قال: كنت جالسا مع جابر بن زيد وعمرو بن أوس: حضرت عمرو بن دینار رحمته الله فرمائی چې زه د جابر بن زید او عمرو بن اوس رحمهما الله سره ناست ووم. د جابر بن زید نه مراد ابو الشعثاء جابر بن زید بصری رحمته الله دې. (۴) او د عمرو بن اوس نه مشهور تابعی عمرو بن اوس بن ابی اوس رحمته الله مراد دې. (۵).

قوله: فحدثهما بجالة سنة سبعين عام حج مصعب بن الزبير بأهل البصرة عند درج زمزم: په ۷۰ هجري کښې، چې په دې کښې مصعب بن زبیر اهل بصره سره حج کړي وو، په دې کال باندې د زمزم کوهی پورې سره بجاله جابر بن زید او عمرو بن اوس ته بیان او کړو. بجالة: دا مشهور تابعی بجاله بفتح الباء الموحدة، بعدها جیم: بن عهدة بن سالم (تمیمی عنبری بصری رحمته الله دې). (۶).

دوی د جزء بن معاویه کاتب وو او د احنف بن قیس تره وو. (۷) دې د حضرت عمر، حضرت عبد الرحمن بن عوف، حضرت عمران بن حصین او حضرت عبدالله بن عباس رحمته الله نه هم

① (کشف الباری: ۲۹۷/۳) _

② (کشف الباری: ۱۰۲/۳ و ۲۶۰/۱) _

③ (کشف الباری: ۳۰۹/۴، باب کتابه العلم) _

④ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الغسل، باب من افاض علی راسه....) _

⑤ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب التهجد، باب من نام عند السحر) _

⑥ (تعليقات تهذيب الكمال: ۸/۴، وتعليقات تهذيب التهذيب: ۱۷/۱، وتوضيح المشتبه: ۷۳/۴) _

⑦ (تهذيب الكمال: ۸/۴، وتهذيب التهذيب: ۱۷/۱، وفتح الباری: ۲۶۰/۶) _

⑧ (پورته حواله جات، وطبقات ابن سعد: ۱۳۰/۷) _

حدیث روایت کوی د دوی نه په روایت کوونکو کښې عمرو بن دينار، عوف الاعرابی، قتاده بن دعامة او قشیر بن عمرو رحمهم الله تعالى وغیره شامل دی. (۱)

امام ابو ذرعه رحمته الله فرمائی: ”مکی ثقة“ (۲)

امام ابو حاتم رحمته الله فرمائی: ”هوشیخ“ (۳)

علامه جاحظ د دوی تذکره د بصرې په عبادت گزارو کښې کړې ده. (۴)

دغه شان مجاهد بن موسی او ابن حبان رحمهما الله هم د دوی توثیق فرمائیلي دي. (۵)
البته امام ربیع بن سلیمان د امام شافعی رحمته الله په حوالې سره نقل کړې دی چې امام صاحب د دوی په باره کښې فرمائیلي وو: ”بجالة رجل مجهول“ (۶).

علامه بیهقی رحمته الله لیکلې دی چې امام شافعی رحمته الله په ”کتاب الحدود“ کښې لیکلی دی چې دې مجهول دي او مشهور نه دي، دغه شان دا هم مشهوره نه ده چې جزء بن معاویه نومې څوک سرې د حضرت عمر رضی الله عنه عامل وو. بیا امام شافعی رحمته الله دا په ”کتاب الجزیه“ کښې ذکر کړه او وې فرمایل: ”حدیث بجالة متصل ثابت، لانه أدرك عمر، وكان رجلاً في زمانه، كاتباً لعماله“. ددې نه معلومه شوه چې امام شافعی رحمته الله هم د خپلو سابقه خبرو نه رجوع کړې وه چې بجاله مجهول دي، د کتاب الجزیه د عبارت نه معلومه شوه چې دې مجهول نه دي،

علامه بیهقی دې بیانولو سره لیکي: ”وكان الشافعي رحمه الله لم يقف على حال بجالة حين صنف كتاب الحدود، ثم وقف عليه حين صنف كتاب الجوزية، إن كان منقعه بعده“ (۷).

امام بخاری، ابوداؤد، ترمذی او نسائی رحمهم الله د دوی روایات اخستلي دي. (۸). صحیح بخاری شریف کښې د دوی ذکر صرف دې ځای کښې راغلي دي. (۹). رحمه الله رحمة واسعة.

(۱) تهذيب الكمال: ۸/۴، والجرح والتعديل: ۳۶۲/۲، رقم ((۱۷۳۷)) _

(۲) تهذيب الكمال: ۹/۴، والجرح والتعديل: ۳۶۲/۲، رقم ((۱۷۳۷)) _

(۳) پورته حواله جات _

(۴) تهذيب الكمال: ۹/۴، وتهذيب التهذيب: ۴۱۷/۱ _

(۵) تعليقات تهذيب الكمال: ۹/۴، وتهذيب التهذيب: ۴۱۷/۱ _ ۴۱۸ _

(۶) پورته حواله جات، وكتاب الام: ۵۲۲/۱۲/۷، كتاب الحدود، باب حد الذميين اذا زنوا، رقم ((۲۳۲۸۶)) _

(۷) السنن الكبرى للبيهقي: ۲۴۸/۸، كتاب الحدود، باب حد المذميين، رقم ((۱۷۱۲۳)) وكتاب الجزية، باب

المجوس اهل كتاب: ۹۱۸۹/، رقم ((۱۸۶۵۳))، وكتاب الام: ۱۷۴/۴/۲، كتاب الجزية، من يلحق باهل

الكتاب، رقم ((۱۳۱۹۳))، و تعليقات تهذيب الكمال: ۴۹/ _

(۸) تهذيب الكمال: ۴۹/ _

(۹) فتح الباري: ۲۶۰/۶، وعمدة القاري: ۸۰/۱۵ _

مصعب بن الزبیر: دا د مشهور صحابی حضرت زبیر بن عوام رضی الله عنه خوئی حضرت مصعب بن الزبیر بن العوام قرشی اسدی رضی الله عنه دی^(۱).

ابو عیسی او ابو عبدالله د دوی کنیت دی^(۲). د دوی مور بی بی رباب بنت انیف کلبیه ده^(۳). ډیر زیات بهادر وو او ډیر زیات حسین و جمیل، د خپل سخاوت د وجې نه به ورته "آنیة النخل" د شهدو گبین یا لوبنې، وئیلې کیدو، لیکن دې سره سره وینه تویونکې هم وو، مختار بن عبید الثقفی سره ئې جنگ او کړو او هغه ئې قتل هم کړو^(۴).

دې د خپل پلار شریک ورور حضرت عبدالله بن زبیر رضی الله عنه له طرفه د عراقینو (عراق و شام) امیر مقرر شوې وو، دا مقرر کیدل یو اعتبار سره د مصعب د یو تمنا نتیجه وه، چې د الله تعالی په نزد قبوله شوه. لکه ابن ابی الزناد د خپل پلار نه روایت کوی چې هغوی اوفرمائیل: د حجر په مقام باندې څلور حضرات جمع شو: عبدالله، مصعب، عروه د حضرت زبیر بن العوام ځامن، او ابن عمر رضی الله عنه. حضرت ابن عمر رضی الله عنه اوفرمائیل چې تمنا او کړئ، د خپل خپل خواهش اظهار او کړئ چې پته اولگی چې څوک څه غواړي؟ عبدالله بن زبیر رضی الله عنه اوفرمائیل چې زما خواهش د خلافت حصول دې او حضرت عروه بن زبیر رضی الله عنه اوفرمائیل چې زما تمنا او خواهش خو دا دې چې زما په ذریعې سره علم خور شی او زما نه خلق فائده حاصله کړي. او مصعب بن زبیر رضی الله عنه اوفرمائیل چې زما خواهش د اهل عراق د امارت حصول دي او عائشه بنت طلحه و سکینه بنت الحسین په خپله نکاح کنبې راوستل. حضرت ابن عمر رضی الله عنه اوفرمائیل چې زما تمنا خو صرف دا ده چې زما مغفرت او بخښنه او کړې شی. راوی وائی چې هر کس چې کومه تمنا کړې وه نو هغه ورته حاصله شوه، پاتې شو حضرت ابن عمر رضی الله عنه نو د هغوی به هم مغفرت کړې شوې وی^(۵).

اسماعیل بن ابی خالد رضی الله عنه فرمائی: "ما رأیت امیراً قط أحسن من المصعب"^(۶).

امام شعبی رضی الله عنه فرمائی: "ما رأیت امیراً قط علی منبر أحسن من مصعب"^(۷).

اوس تیر شو چې دې ډیر زیات حسین و جمیل وو، مدائنی رضی الله عنه فرمائی:

"کان یحسد علی الجمال"^(۸). چې د حسن د وجې نه به ورسره حسد کولې شو.

^(۱) سیر اعلام النبلاء: ۴/ ۱۴۰.

^(۲) پورته حواله، وطبقات ابن سعد: ۵/ ۱۸۲.

^(۳) سیر اعلام النبلاء: ۴/ ۱۴۱، وطبقات ابن سعد: ۵/ ۱۸۲.

^(۴) سیر اعلام النبلاء: ۴/ ۱۴۱، وطبقات ابن سعد: ۵/ ۱۸۳.

^(۵) سیر اعلام النبلاء: ۴/ ۱۴۱، وحلیه الاولیاء: ۲/ ۱۷۶، رقم (الترجمة ۱۷۱).

^(۶) سیر اعلام النبلاء: ۴/ ۱۴۱.

^(۷) پورته حواله و فوات الوفيات: ۴/ ۱۴۳، رقم (۵۲۵).

^(۸) پورته حواله جات.

د اموی خلیفه عبدالملک بن مروان او د مصعب بن زبیر د فوجونو مینځ کښې یو سخت او فیصله کن جنگ اوشو، مصعب خو دې دپاره وتلې وو چې شام به دوباره اخلو او د عبدالملک مقصود دفاع وه، ددې دواړو ټکراؤ د عراق یو وړوکی ښار "اوانا" (۱) سره نژدې د دیر الجاثق (۲) په مقام باندې اوشو، چې آخرکار په دې کښې فتح عبدالملک ته اوشوه او مصعب قتل شو. دا د ۷۲ هجري جمادی الاولی واقعه ده او دا د جمعرات ورځ وه، دې وخت کښې د مصعب همر څلویښت کاله وو. (۳)

د قتل نه پس د هغه سر کټ کړې شو او د عبد الملک وړاندې پیش کړې شو؛

عبد الملک بن مروان وائی: "رایت بقصر الکوفة رأس الحسين الشهيد، ثم رأس ابن زیاد، ثم رأس المختار، ثم رأس مصعب بن یزید عبدالملک" (۴).

حدیث شریف سره متعلق یو اصولی بحث: دلته حدیث سره متعلق یو خبره باندې ځان پوهه کړئ چې د حضرت عمرو بن دینار رضی الله عنه الفاظ دا وو:

"فحدثها بجمالة...." چې بجماله دغه دواړو ملگرو ته بیان کړه..... ددې نه معلومه شوه چې بجماله دا روایت عمرو ته نه وو بیان کړې او هغه مقصود بالتحديث هم نه وو، ددې باوجود عمرو د بجماله نه روایت کوی، دغه شان اوریدلې شوې حدیث روایت کول جائز دی او دا بالاتفاق د تحمل د وجوهو نه ده. (۵)

البته په دې کښې اختلاف دې چې په داسې صورت کښې "حدثنا" وئیل جائز دی یا نه؟ نو جمهور ددې د جواز قائل دی او امام نسائی او بعضې حضرات ددې نه منع کوی، او علامه برقانی رحمته الله فرمائی چې د "حدثنا" په ځانې "سمعت فلاناً" وئیل پکار دی. (۶)

د "درج معنی: "درج" د دال او د راء فتحې سره، د درجه جمع ده، پورو ته وئیلې شی. (۷) په المغرب کښې دی: "درج السلم: رتبة، الواحدة: درجة" (۸).

(۱) قال ابن خلکان: انا بليدة كثيرة البساتين والشجر، نزهة من نواحي دجيل بغداد، بينها وبين بغداد عشرة فراسخ من جهة تكريت..... "معجم البلدان: ۱/۲۷۴، باب الهمة والواو.....".

(۲) دیر الجاثلیق: دیر قدیم البناء، رحب الفناء، من طسوج مسکن قرب بغداد فی غربی دجلة، وهو رأس الحدين السواد وارض تكريت. معجم البلدان: ۲/۵۰۲، باب الدال والياء.....

(۳) سير اعلام النبلاء: ۴/۱۴۳، وطبقات ابن سعد: ۵/۱۸۳.

(۴) سير اعلام النبلاء: ۴/۱۴۳.

(۵) عمدة القاری: ۱۵/۷۹-۸۰، وفتح الباری: ۶/۲۶۰.

(۶) عمدة القاری: ۱۵/۸۰، وفتح الباری: ۶/۲۶۰.

(۷) عمدة القاری: ۱۵/۸۰، والصاح للجوهري: ۳۳۷، مادة "درج".

(۸) المغرب: ۲۸۴، الدال مع الراء.

قوله: قال: كنت كاتباً لجزء بن معاوية عم الاحنف: بجاله فرمائی چې زه د احنف د ترة جزء بن معاويه کاتب ووم.

جزء بن معاويه: دا جزء "بفتح الميم وسكون الزاي، وفي آخره همزة" (۱).

دا ابن معاويه بن حصين بن عبادة بن النزال بن مرة تميمي رضي الله عنه دې (۲). دې د حضرت عمر رضي الله عنه له طرفه د هواز عالم وو او د ترمذي شريف په روايت كښې راغلې دې چې جزء د "تنادر" عامل وو (۳). ليكن حافظ صاحب رحمته الله فرمائی چې تنادر هم د هواز يو كلي دې (۴).

د دوی په صحابي كيدو كښې اختلاف دې، حافظ ابن حجر رحمته الله د دوی شمار په صحابه كرامو رضي الله عنهم كښې كړې دې، د ابن الاثير جزري رحمته الله رائي هم داده، البته ابن عبدالبر رحمته الله د

دوی د صحبت انكار كړې دې (۵). ليكن حافظ د دوی قول رد كولو سره فرمائی چې دغه زمانه كښې به خليفه گانو هغه كسان عاملان مقررول څوك چې به صحابه كرام رضي الله عنهم وو

(۶). غير صحابه به عام طور باندې عاملان نه وو، ددې وجې نه غوره هم دا معلوميږي چې دا صحابي وو. د بلاذري د وضاحت مطابق حضرت جزء رضي الله عنه د حضرت امير معاويه رضي الله عنه

خلافت زمانې پورې ژوندې وو او دوی د زياد له طرفه څه ذمه دارئ هم ادا كړلې (۷).

الاحنف: دا مشهور مخضرم تابعي حضرت احنف بن قيس رضي الله عنه دې، د دوی حالات په كتاب الايمان، "باب المعاص من امر الجاهلية....." كښې تير شوې دي (۸).

قوله: فاتانا كتاب عمر بن الخطاب قبل موته بسنة: نو مونږ ته د حضرت عمر رضي الله عنه خط د دوی د وفات نه يو كال مخكښې راغی.

عمر بن الخطاب: د دويم خليفه حضرت عمر بن الخطاب رضي الله عنه اجمالی تذکره د "بدء الوحي" د اولنی حديث لاندې راغلې ده (۹).

(۱) ددې لفظ په ضبط كښې د محدثينو او د اهل نسب اختلاف دې، د محدثينو چې كوم مشهور قول دې نو مونږ هغه ذكر كړې دې، د نورو اقوالو دپاره اوگوري عمدة القارى: ۷۹/۱۵، وفتح البارى: ۲۶۰/۶، والاكمال لابن ما كولا: ۷۹/۲_۸۱، باب جرى وجزى.....) _

(۲) الاصابة: ۲۳۴/۱، والاستيعاب بهامش الاصابة: ۲۵۹/۱ _

(۳) انظر الجامع للترمذي، كتاب السير، باب في اخذ الجزية من المجوس، رقم (۱۵۸۶)، ولكن المثبت في رواية الترمذي مناذر "بذل تنادر" ولعل المثبت هو الصحيح، انظر معجم البلدان: ۱۹۹/۵، باب الميم والنون.....) _

(۴) فتح البارى: ۲۶۰/۶ _

(۵) الاصابة: ۲۳۴/۱، والاستيعاب بهامش الاصابة: ۲۵۹/۱، واسد الغابة: ۱۷۸/۱، باب الجيم والزاري _

(۶) الاصابة: ۲۳۴/۱ _

(۷) پورته حواله _

(۸) كشف البارى: ۲۲۳/۲ _

(۹) كشف البارى: ۲۳۹/۱ _

پورته ذکر کړې شوې واقع د ۲۲ هجري ده څکه چې د حضرت عمر رضي الله عنه وفات په ۲۳ هجري کښې شوې دي.^(۱)

قوله: فرقوا بين كل ذي محرم من المجوس: په مجوسيانو کښې چې چا خپل ډی محرم سره واده کړې وی نو هغه ترینه جدا کړئ.

مجوس، د مجوسی جمع ده چې د مجوسیت طرفته ئې نسبت شوې دي او مجوسيان په زړو تیرو شوو باطلو فرقو کښې یوه فرقه ده او دا کلمه د منج گوش معرب دي چې د یو سړي نوم دي، د هغه واره واره غوړونه وو، ددې فرقې نسبت د هغه طرفته کیږي او "مجوس" ورته وئيلې شی، دا هغه سړي وو چې ده مجوسیت ایجاد کړو او خلق ئې ددې طرفته راوېلل. د مجوسيانو نسبت (د خپل وهم مطابق پیغمبر) زرتشت طرفته هم کیږي او ددې وجې نه دوی ته زرتشتي هم وئيلې کیږي. د مشهور قول مطابق دوی د اور عبادت کوي او قتاده رضي الله عنه فرمائي چې دوی د نمر، سپوږمۍ او د اور عبادت کوي.

د خپلې ترقی په زمانه کښې دوی د دنیا په مختلفو ځایونو کښې آتش کډې د دوی د عبادت ځایونه، جوړې کړې، چې هلته به دوی د اور عبادت کوو، نن هم په هغې کښې څه موجودې دي او ددې مذهب منونکي ددې خبرې هم قائل وو چې یو خالق د خیر دي او بل خالق د شر دي، د خیر د خالق نوم یزدان او د شر د خالق نوم اهرمن دي.^(۲)

ایا مجوس په اهل کتابو کښې داخل دي؟ د امت ذ فقهاء کرامو په دې خبره کښې اختلاف دي چې مجوس اهل کتابو کښې داخل دي یا نه؟

ددې اختلاف دارومدار په دې مسئله باندې دي، وړاندې تیر شو چې د مجوسيانو نه به جزیه اخستلې کیږي یا نه؟ او په کوم بنیاد باندې به ترینه اخستلې کیږي؟ د مجوسيانو متعلق حضرات شوافع دا وائی چې دوی هم اهل کتاب دي، ددې په دلیل کښې هغوی د حضرت علی رضي الله عنه دا اثر پیش کوي:

"كان المجوس اهل كتاب يعرفونه، وعلم يدرسونه، فشراب أميرهم الخمر، فوقم على أخته، فرآه نفر من المسلمين، فبلا أصبح قالت أخته: أنك قد صنعت بها كذا وكذا، وقد رآك نفر لا يستون عليك، فدعا اهل الطمع، فاعطاهم، ثم قال لهم: قد علمتم أن آدم أنكح بنية بناته، فجاء أولئك الذين راوه، فقالوا: وبلاداً للبعد، إن في ظهرك حداً، فقتلهم، وهم الذين كانوا عنده، ثم جاءت امرأة، فقالت له: بلى، قد رأيتك، فقال لها: ويحاً لهني بني فلان، قالت: أجل، والله لقد كنت بغية، ثم تبت، فقتلها، ثم أسرى على ماني قلوبهم وعلى كتبهم، فلم يصح عندهم شيء"^(۳). (اللفظ لعبد الرزاق).

(۱) فتح الباری: ۶/۲۶۱.

(۲) د مذکوره تفصیلاتو دپاره اوگوری، اوجز المسالك: ۶/۱۹۱، ولسان العرب: ۶/۲۲۳، مادة: مجس، و روح المعانی: ۱۷/۱۲۹، سورة الحج: ۱۷، تفسیر قوله تعالى: (والنصارى والمجوس) و دائره معارف اسلامیه (اردو): ۱۸/۵۸۸.

(۳) انظر المصنف لعبد الرزاق، كتاب اهل الكتابين، باب هل يقاتل اهل الشرك [بقیه بر صفحه آئنده...]

یعنی "مجوس د یو کتاب حاملین وو، چې په هغې باندې پوهیدل، هغه ئې لوستلو، یوه ورځ د هغوی امیر شراب او ځکل، نو په خپله خور باندې ورغی، نو د مسلمانانو یوې ډلې هغه اولیده، چې کله سحر شو نو د هغه خور او وئیل چې تا ماسره داسې داسې کړې دی او حق خبره دا ده چې یو داسې ډلې ته لیدلې ئې چې په تا باندې به پردو وانه چوي. نو هغه اهل طمع (علماء سوء)، راوېلل، بیا ئې هغوی ته او وئیل چې تاسو ته ښه پته ده چې آدم عليه السلام به د خپلو خامنو نکاح د خپلو لونړو سره کولې (لهذا ما هم داسې کړی دی نو په دې کښې څه خرج دې؟) نو هغه خلق راغلل، چا چې دا سرې خپلې خور سره مبتلا لیدلې وو، وې وئیل چې د منحوس دپاره دې هلاکت وی، په تا باندې حد واجب شوې دې. نو هغوی دې قتل کړه، دا هغه خلق وو چې ده سره وو، بیا یو ښځه راغله، هغې او وئیل: او اما تاسو لیدلې ئې، نو امیر هغې ښځې ته او وئیل: د بنی فلان د زناکارې دپاره دې هلاکت وی، هغې ښځې او وئیل: صحیح ده (بالکل)، په خدائي قسم ازه زناکاره ووم، بیا ما توبه او کړه، هغه هغه ښځه هم قتل کړه، بیا ددغه خلقو په زړونو کښې چې څه وو او د هغوی په کتابونو کښې چې څه وو هغه اوچت کړې شو، دغه شان دوی سره هیڅ څیز روغ پاتې نه شو.

دا خو د شوافعو دلیل شو، لیکن ددې اثر په صحت کښې کلام دې، بعضې حضراتو دا متصل ښودلې دې او بعضو منقطع ښودلې دې (۱). او بعضې علماء حضرات خو ددې اثر د صحت بالکل قائل نه دی، لکه علامه ابن قیم او حافظ ابن بطال رحمة الله علیهما دې اثر ته غیر صحیح او غیر ثابت وئیلې دي (۲). بیا که چرته ددې صحت تسلیم هم کړې شی نو ددې مطلب هم دادې چې د دوی اسلاف هم اهل کتاب وو، ځکه چې د مذکوره اثر مضمون هم دادې چې دا خلق اول اهل کتاب وو، لیکن وروستو بیا کتاب د دوی د سینو نه اوویستلې شو، نو اوس څنگه دوی اهل کتاب شو؟

د دوی په اهل کتاب نه کیدو باندې هغه روایت هم دلالت کوی کوم چې د حسن بن محمد رضی الله عنه نه روایت دې، چې "لا تؤکل لهم ذبیحة، ولا تنکح لهم امرأة" (۳). چې "نه به د دوی ذبیحه خوړلې شی او نه د دوی د ښځو سره نکاح جائزه ده".

نو که دوی اهل کتاب وو نو ددوی ذبیحه خوړل او د دوی ښځو سره نکاح کول به خامخا

بقیه از حاشیه گذشته] حتی یؤمنوا.....؟ رقم (۱۹۲۶۲)، و کتاب اهل کتاب، اخذ الجزية من المجوس، رقم (۱۰۰۲۹)، وفتح الباری: ۲۶۱/۶، وعمدة القاری: ۸۰/۱۵، و کتاب الام: ۱۷۳/۴/۲، و سنن البیهقی الکبری، کتاب الجزية، باب المجوس اهل کتاب،: ۹۱۸۹، رقم (۱۸۶۵۰)۔

(۱) اعلاء السنن: ۴۳۹/۱۲۔

(۲) زاد المعاد فی هدی خبر العباد: ۱۵۴/۳، و شرح ابن بطال: ۳۳۱/۵، دلته اوگوری، نصب الراية: ۲۵۶/۲، والجوهر النقی: ۹۱۹۰۔

(۳) احکام القرآن: ۱۲۱/۳، و طبقات ابن سعد: ۲۶۳/۱، و المصنف لابن ابی شیبة: ۴۰۷/۱۷، کتاب السیر، ما قالوا فی المجوس..... رقم (۳۳۳۱۳)۔

جائز وو لکه څنگه چې الله تعالی د نورو اهل کتابو سره دا کارونه مباح ګرځولې دي (۱). په دې باره کښې چې مجوس په اهل کتابو کښې داخل نه دي د احناف حضراتو عليهم السلام دليل د قرآن کریم نه خو دا دي (انما اتول الكتاب على طائفتين من قبلنا). دې آيت کریمه کښې اهل کتاب ته په دوو ډلو کښې منحصر وئيلې شوي دي، که مجوس هم په اهل کتاب کښې وو نو بيا خو دا درې ډلې شوې، حالانکه دا خبره د آيت کریمه خلاف ده، ددې وجې نه د آيت کریمه په رنړا کښې مجوس په اهل کتابو کښې داخل نه دي (۲).

د احنافو دويم دليل هغه روايت دي کوم چې په مؤطا وغيره کښې د جعفر بن محمد بن علي عن ابيه د طريق نه روايت دي:

”ان عمر بن الخطاب رضي الله عنه ذكر المجوس، فقال: ما أدري كيف أصنع في أمرهم؟ فقال عبد الرحمن بن عوف: أشهد لسمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: سنوابهم سنة أهل الكتاب“ (۳).

يعني: ”حضرت عمر رضي الله عنه د مجوسيانو تذکره او کړه، بيا ئې او فرمايل چې ماته ددې مجوسيانو په سلسله کښې علم نشته چې زه څه او کړم؟ نو حضرت عبد الرحمن بن عوف رضي الله عنه او فرمايل چې ما د نبی کریم صلى الله عليه وسلم نه اوریدلې دي چې دوی سره د اهل کتابو په شان سلوک او کړي“.

دا روايت اگرچه منقطع دي ځکه چې د محمد ملاقات نه د عمر فاروق رضي الله عنه سره ثابت دي او نه د عبد الرحمن بن عوف رضي الله عنه سره ليکن ددې معنی د حسان نورو مختلفو طرقو د وجې نه متصل ده (۴). دغه شان ابو علي الحنفي هم دا روايت د امام مالک د طريق نه نقل کړې دي، چې د هغې تخريج بزار او دارقطني رحمة الله عليهما وغيره کړې دي او دا روايت مرسل دي چې زموږ په نزد حجت دي (۵). او په دې روايت کښې خو صراحتاً د ”في الجزية“ لفظ هم موجود دي (۶). بيا په طبراني کښې د مسلم بن العلاء الحضرمي د طريق نه ددې گواه هم موجود دي چې ”سنواب المجوس سنة أهل الكتاب“ (۷).

(۱) احکام القرآن للجصاص: ۱۲۱/۳، واوز المسالك: ۱۹۴/۶.

(۲) الانعام: ۱۵۶.

(۳) احکام القرآن للجصاص: ۱۲۱/۳، واوز المسالك: ۱۹۴/۴.

(۴) المؤطا، کتاب الزکاة، باب جزية اهل الكتاب.....، رقم (۴۲)، ومصنف ابن ابی شيبه: ۷۱/۷-۲۷، فی الزکاة، فی المجوس یؤخذ منهم.....، رقم (۱۰۸۷۰)، و۱۷/۴۰۹، کتاب السير (۳۳۳۱۹)، وسنن البيهقي الكبير: ۹۱۸۹/، کتاب السير، رقم (۱۸۶۵۴).

(۵) اوجز: ۲۰۰/۶، والتعليق الممجد على مؤطا محمد: ۱۷۶، کتاب الزکاة، باب الجزية.

(۶) اوجز: ۲۰۰/۶، والتمهيد لابن عبد البر: ۱۱۵/۲، ومسند البزار: ۲۶۴/۳، مسند عبد الرحمن بن عوف، رقم (۱۰۵۶).

(۷) فتح الباری: ۲۶۱/۶، والاوجز: ۲۰۱/۶.

(۸) مجمع الزوائد: ۱۳/۶، کتاب الجهاد، ماجاء فی الجزية، والطبراني فی الكبير: ۴۳۷/۱۹ [بقیه بر صفحه آنده..]

دغه شان ددې نه علاوه هم ددې خبرې خیال ساتئ چې شوافع ددې خبرې خو قائل دی چې مجوسیانو سره نکاح کول او د هغوی ذبیحه خوړل جائز نه دی لیکن بیا هم دا وائی چې دا خلق اهل کتاب دی، که دوی اهل کتاب وو نو دا کارونه به هم جائز وو؟(۱) دغه شان د باب حدیث هم په خپله په دې باندې دلالت کوی چې مجوس اهل کتابو کښې داخل نه دی او دوی د "اهل الکتاب" په عموم کښې شامل نه دی ورنه حضرت عمر رضی الله عنه چې د دوی نه د جزیې په وصولئ کښې کوم توقف کوی نو ددې څه مطلب دي؟(۲) ددې وجې نه صحیح هم دا معلومېږي چې مجوس په اهل کتاب کښې داخل نه دی، صرف د جزیې په وصولئ کښې دوی د اهل کتابو سره شریک دی، دا هم ددې وجې نه چې نبی صلی الله علیه و آله د دوی نه جزیه اخستلې ده، ددې وجې نه چې دوی په اهل کتابو کښې داخل دی(۳)، والله اعلم بالصواب.

یو اشکال او د هغې جواب: حدیث شارحینو دلته یو اشکال ذکر کړې دي چې د هغې تقریر دا دي چې د ذمیانو دیني عقائدو او شعائرو سره تعرض نه شی کیدی، مثلاً د مجوسیانو په نزد چونکه محرماتو سره نکاح کول جائز دی ددې وجې نه خلیفه او د خلیفه نائبان ددوی په دې کار کښې مداخلت نه شی کولې(۴)، او دلته د باب په حدیث کښې راغلې دی چې حضرت عمر رضی الله عنه د مجوسیانو د هغې جوړو د جدا کولو حکم کړې وو کوم چې خپل مینځ کښې محرم وو نو دا خو د هغوی په مذهبي عقیدو کښې مداخلت شو چې شرعی لحاظ سره صحیح نه کار نه دي.

ددې اشکال جواب دادې چې دلته دوه جدا جدا څیزونه دي، یو خو دا چې ذمیان خپل مذهبي معاملات پوره کوی. دویم دا چې ذمیان ددې معاملاتو اظهار هم د مسلمانانو په وړاندې اوکړی نو اولنې څیز خو جائز دي لیکن ددې دویم کار یعنې د مسلمانانو په وړاندې د ښکاره کولو، اجازت بالکل نشته، د حضرت عمر رضی الله عنه د حکم مطلب هم دا وو چې دوی خپل مینځ کښې محرماتو سره نکاح خو کولې شی لیکن د عامو مسلمانانو په وړاندې ددې اظهار نه شی کولې، نه ددې دپاره اجتماعات منعقد کولې شی، دغه شان څنگه چې د مسلمانانو د ودونو ښادو اعلان کیږي نو دغه شان اعلان هم نه شی کولې.

ددې مثال هغه شرطونه دي، کوم چې د امین الامه حضرت ابو عبیده بن الجراح رضی الله عنه له طرفه د دمشق د فتح کولو نه پس په نصاری باندې لگولې شوې وو، په هغې کښې بعضې شرطونه دا وو چې هغوی صلیب ښکاره نه شی اویزاندولې، د خپلو مخصوص خوشحالو (اخترانو) د

بقیه از حاشیه گذشته [رقم (۱۰۵۹)، مسلم بن العلاء الحضرمی]۔

(۱) المنتقى: ۲۷۶/۳، کتاب الزکاة، جزیة اهل الکتاب، رقم (۶۸۱)، والاوجز: ۲۰۲/۶، وشرح ابن بطلال: ۵/۳۳

(۲) عمدة القاری: ۸۰/۱۵، واعلام الحدیث للخطابی: ۱۴۶۲/۲۔

(۳) احکام القرآن: ۱۱۹/۳-۱۲۱۔

(۴) وفي الشامية: ۲۹۷/۳: نتر کهم وما یدینون "فصل فی الجزية، مطلب ليس المراد منه....."۔

اعلان نه شی کولې د گرجو دروازي مسلمانانو دپاره نه شی بندولې، وغيره وغيره(۱).
دې دپاره چې عام مسلمانان په فتنه کېنې مبتلا نه شی او د هغوی د شان و شوکت نه متاثره
نه شی(۲). والله اعلم

قوله: ولم يكن عمر أخذ الجزية من المجوس حتى شهد عبد الرحمن بن عوف:
او حضرت عمر رضي الله عنه د مجوسيانو نه جزيه نه وه اخستلې تردې چې حضرت عبد الرحمن بن
عوف رضي الله عنه (گواهي ورکړه.....

مذکوره جمله باندې سندی بحث: پورته ذکر شوې جمله يا خو د حضرت عمر رضي الله عنه د هغه خط
حصه ده د کوم خط تذکره چې پورته په حديث کېنې تيره شوه، په دې صورت کېنې به د
روایت حیثیت "رواية عمر عن عبد الرحمن بن عوف" وی یعنی حضرت عمر، د حضرت عبد الرحمن
نه روایت کوی لکه د ترمذی شریف (په روایت کېنې ددې وضاحت هم شته چې "فجاءنا
کتاب عمر: انظر مجوس من قبلک، فخذ منهم الجزية، فان عبد الرحمن بن عوف اخبرني.....".

لیکن اصحابو د "اطراف الحديث" دا حدیث په بجاله عن عبد الرحمن کېنې ذکر کړې دي(۳).
حافظ ابن حجر رحمته الله فرمائی چې ددې حضراتو دا کار صحیح نه دي، ځکه چې د حدیث په
ټولو طرقو کېنې هیڅ یو طریق کېنې هم دا خبره ذکر نه ده چې بجاله دا روایت د حضرت عبد
الرحمن بن عوف نه اخستلې دي بلکه د ترمذی شریف پورته ذکر شوې روایت خو په دې
باب کېنې واضح دي، ددې وجې نه دا روایت په "عمر بن الخطاب عن عبد الرحمن" کېنې ذکر کول
مناسب وو نه چې په "بجاله عن عبد الرحمن" کېنې(۴).

هېڅو دا کلمه د هاء او د جیم فتحې سره ده، د نبی صلی الله علیه و آله په زمانه کېنې په دې نوم سره څو
علاقې وې، چې په هغې کېنې هجربحرین، هجرنجران، هجرجازان او هجرمازن وغيره شامل
دي. لیکن دلته هجربحرین مراد دي، دې وخت کېنې دلته مجوسیان په لوئې تعداد کېنې
آباد وو، په ۸ یا ۱۰ هجری کېنې د نبی صلی الله علیه و آله په ژوند مبارک کېنې دا علاقه د حضرت علاء بن

۱) انظر نص تلك الشروط في تهذيب تاريخ دمشق الكبير: ۱/۱۵۰، باب كيف كان امر دمشق.....؟

۲) اعلام الحديث: ۲/۱۴۶۳، وفتح الباری: ۶/۲۶۱، وعمدة القاری: ۱۵/۸۰، واعلاء السنن: ۱۲/۴۴۱-۴۴۲،
وتحفة الباری: ۳/۵۶۵، وارشاد الساری: ۵/۲۳۰.

۳) د حضرت عبد الرحمن بن عوف حالاتو دپاره اوگوری: کتاب الجنائز، باب الکفن من جميع المال.

۴) الحديث اخرجه الترمذی فی ابواب السير، باب فی اخذ الجزية من المجوس، رقم (۱۵۸۷)، وایو داؤد،
کتاب الخراج.....، باب فی اخذ الجزية من المجوس، رقم (۳۰۴۳)، والنسائی فی الکبری، رقم (۸۷۶۸).

۵) انظر مثلا: تحفة الاشراف بمعرفة الاطراف: ۷/۲۰۷.

فتح الباری: ۶/۲۶۱، والنکت الظراف علی الاطراف: ۷/۲۰۸.

الحضرمی رضی اللہ عنہ په لاسونو مبارکو فتح شوې وه (۱). د مجوسيانو نه په جزيه اخستلو کښې چې کله د حضرت عمر رضی اللہ عنہ تردد پيدا شو نو حضرت عبد الرحمن بن عوف رضی اللہ عنہ ورته ددې علاقې حواله ورکړه چې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم ددې علاقې د مجوسيانو نه جزيه اخستلې وه. ترجمه الباب سره د حديث شريف مطابقت: ترجمه الباب سره د حديث شريف مطابقت په دې جمله کښې دې: "ان رسول الله صلى الله عليه وسلم اخذها من المجوس" (۲) په دې کښې د مجوسيانو نه د جزيه اخستلو تذکره ده، چې د مصنف رحمته الله مقصود دې.

۲۹۸۸: (۳) حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنِ ابْنِ مَرْثَمَةَ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَمْرَو بْنَ عَوْفٍ الْأَنْصَارِيَّ وَهُوَ خَلِيفٌ لِبَنِي عَامِرِ بْنِ لُؤْيٍ وَكَانَ شَهِيدًا بَدْرًا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ إِلَى الْبَحْرَيْنِ يَأْتِي بِمِزْنَتَيْهَا، وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - هُوَ صَالِحُ أَهْلِ الْبَحْرَيْنِ وَأَمَرَ عَلَيْهِمُ الْعَلَاءَ بْنَ الْحَضْرَمِيِّ، فَقَدِمَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ، فَسَمِعَتِ الْأَنْصَارُ بِقُدُومِ أَبِي عُبَيْدَةَ فَوَافَتْ صَلَاةَ الصُّبْحِ مَعَ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -، فَلَمَّا صَلَّى بِهِمُ الْفَجْرَ انْصَرَفَ، فَتَعَرَّضُوا لَهُ، فَتَبَسَّمَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - حِينَ رَأَاهُمْ وَقَالَ «أَطْنَقُكُمْ قَدْ سَمِعْتُمْ أَنَّ أَبَا عُبَيْدَةَ قَدْ جَاءَ بِشَيْءٍ». قَالُوا أَجَلُ يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ «فَأَبْشِرُوا وَأَمِلُوا مَا يَسُرُّكُمْ، فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَقْرَأُ خَشْيَ عَلَيْكُمْ، وَلَكِنْ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُبْسَطَ عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا كَمَا بُسِطَتْ عَلَى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، فَتَنَافَسُوهَا كَمَا تَنَافَسُوهَا وَتُهْلِكُكُمْ كَمَا أَهْلَكَتْهُمْ» [۳۷۹۱، ۶۰۶۱]

رجال الحديث

① ابو اليمان، ② شعيب: د حضرت ابو اليمان حکم بن نافع او د شعيب ابن ابی الحمزه الحمصي رحبه الله حالات د بده الوحي په شپږم حديث کښې تير شوې دي (۴).

(۱) معجم البلدان: ۳۹۳/۵، باب الهاء والجيم..... وعمدة القاری: ۸۰/۱۵. و ذکر ابن سعد فی طبقاته (۲۶۳/۱): ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم بعد قسمة الغنائم بالجعرانة ارسل العلاء الى المنذر بن ساوى عامل البحرين. يدعوهم الى الاسلام. فاسلم. وصالح مجوس تلك البلاد على الجزية. فتح الباری: ۲۶۲/۶. وهذه العبارة تدل على انها كانت فی سنة تسع: لان النبی صلی اللہ علیہ وسلم نزل بالجعرانة سنة تسع من الهجرة. -
(۲) عمدة القاری: ۷۹/۱۵. -

(۳) قوله: عمرو بن عوف الانصاري رضی اللہ عنہ: "الحديث، اخرجه البخاري ايضا في صحيحة، في كتاب المغازی، باب بلا ترجمة، بعد باب شهود الملائكة بدرا، رقم (۴۰۱۵)، وفي كتاب الرقاق، باب ما يحذر من زهرة الدنيا والتنافس فيها، رقم (۶۴۲۵)، ومسلم في صحيحة، كتاب الزهد، باب الدنيا سجن المؤمن وجنة الكافر، رقم (۷۴۲۵-۷۴۲۶)، والترمذي، في ابواب صفة القيامة (باب حدث: والله ما الفقر اخشى عليكم)، رقم (۲۴۶۲)، وابن ماجه في سننه، كتاب الفتن، باب فتنة المال، رقم (۳۹۹۷). -

(۴) كشف الباری: ۴۷۹/۱-۴۸۰. -

③ زهري: دا امام ابن شهاب زهري رحمته الله دې، د دوی تذکره په ”بدء الوحي“ کښې راغلې ده. (۱)
 ④ عروة بن الزبير: دا مشهور تابعي حضرت عروه بن زبير بن العوام رحمته الله دې. د دوی حالات د ”بدء الوحي“ په دويم حديث کښې ذکر شوې دي. (۲)

⑤ مسور بن مخرمه: دا مشهور صحابي حضرت مسور بن مخرمه رحمته الله دې. (۳)
 ⑥ عمرو بن عوف الانصاري: دا حضرت عمرو بن عوف الانصاري رحمته الله دې، دوی د اسلام کښې اولنو صحابه کرامو رحمته الله کښې او د بنو عامر بن لوئي ملگري او د بدر په شريکانو کښې دي. (۴)
 د دوی د نبي کریم رحمته الله نه روايت کوي. د دوی نه روايت کوونکې صرف حضرت مسور بن مخرمه رحمته الله دې. (۵) او د دوی نه صرف يو حديث روايت دې کوم چې په باب کښې ذکر شوې دې. (۶) په ائمه سته کښې د امام ابوداؤد رحمته الله نه علاوه باقي ټولو حضراتو د دوی نه روايت اخستلې دي. (۷) د حضرت عمر بن الخطاب رحمته الله د خلافت په دور کښې دوی وفات شو. (۸) رضي الله عنه وارضاه

دې ولي انصاري دې؟ دلته يو سوال دا پيدا کيږي چې حضرت عمرو بن عوف رحمته الله څنگه انصاري دې، حالانکه د اهل مغازي په نزد دا مشهوره ده چې دوی مهاجر وو، ددې خبرې تائيد ددې جملې نه هم کيږي: ”وهو حليف لبني عامر بن لؤي“ ددې جملې نه خو دا معلوميږي چې دوی مکي وو؟

حافظ ابن حجر رحمته الله ددې سوال دوه جوابونه ذکر کړي دي:

① کيدې شي چې دوی د معنې په اعتبار سره په انصاري باندې مشهور وي، ددې خبرې نه خو هيڅ خيز مانع نه دې چې د دوی تعلق اوس يا خزرج سره وي، بيا ئې په مکه مکرمه کښې اوسيدل اختيار کړي وي او هلته ئې بعضې قبيلو سره اتحاد کړي وي نو په دې اعتبار سره مهاجر او انصاري دواړه شو.

② لفظ د ”الانصاري“ وهم دې او دا د شعيب ابن ابي حمزه تفرد دې، ځکه چې په صحيحينو کښې دا حديث د امام زهري رحمته الله نه د هغوی پنځه شاگردان نقل کوي، شعيب بن ابي

(۱) کشف الباري: ۱/۳۲۶، الحديث الثالث.

(۲) کشف الباري: ۱/۲۹۱، و: ۲/۴۳۶.

(۳) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الوضوء، باب استعمال فضل وضوء الناس.

(۴) تهذيب الكمال: ۲۲/۱۷۴، والطبقات: ۴/۳۶۳، وتهذيب التهذيب: ۸/۸۵، والاستيعاب: ۲/۱۰۴، رقم (۱۹۵۲).

(۵) الطبقات: ۴/۳۶۳، وتهذيب الكمال: ۲۲/۱۷۵، والجرح والتعديل: ۶/۳۱۳، باب العين، رقم (۱۳۴۰).

(۶) تهذيب الكمال: ۲۲/۱۷۵.

(۷) پورته حواله.

(۸) فتح الباري: ۶/۲۶۲.

حمزه، معمر بن راشد، یونس بن یزید، موسی بن عقبه او صالح بن کیسان (۱) په دوی کښې د شعیب نه علاوه څوک هم د "الانصاری" لفظ نه روایت کوی، ددې وجې نه د حافظ صاحب یقین په دې باندې دې چې مذکوره لفظ وهم دې (۲). او علامه عینی (رحمته الله علیه) اولنې احتمال راجح ګرځولې دې چې دې انصاری هم دې او مهاجر هم د علامه قسطلانی (رحمته الله علیه) رائي هم داده (۳).

یو اهم خبر دا دی: د امام موسی بن عقبه (رحمته الله علیه) نه د حضرت عمرو بن عوف د نوم په سلسله کښې دوه اقوال روایت دی، لکه هغوی په خپل کتاب "المغازی" کښې د دوی نوم تصغیر سره عمیر بن عوف نقل کړې دې او د بخاری شریف د کتاب الرقاق روایت چې د موسی نه روایت دې په هغې کښې د تصغیر نه بغیر عمرو موجود دې (۴). ددې وجې نه ممکنه ده چې دا دواړه نومونه د دوی وی، کله ورته عمیر وئیلې شوې وی او کله ورته عمرو (۵). ابن عبد البر (رحمته الله علیه) لیکلې دی چې دوی ته عمیر هم وئیلې کیږي (۶). البته عسکری (رحمته الله علیه) د عمیر او د عمرو مینځ کښې تفریق کړې دې، دا دواړه ئې جدا جدا شخصیات ګرځولې دې لیکن صحیح داده چې دا د یو صحابی دوه نومونه دي (۷).

قوله: أن رسول الله بعث أبا عبيدة بن الجراح (۸) إلى البحرين يأتى بحزبتهما: چې رسول الله (ﷺ) بحرین ته د جزیې د وصولئ دپاره حضرت ابو عبیده بن الجراح (رحمته الله علیه) روان کړو. "بحرین" نن سبا یو مستقل ریاست دې لیکن په دغه زمانه کښې دا علاقه په عراق کښې شامله وه، دا د بصرې او د هجر مینځ کښې واقع دې، ددې اوسیدونکي دغه وخت کښې ډیر مجوسیان وو (۹). کما مر قبل ایضاً.

قوله: وكان رسول الله صلى الله عليه وسلم هو صالح أهل البحرين، وأمر عليهم العلاء (۱۰) بن الحضرمي: او نبی کریم (ﷺ) د بحرین اوسیدونکو سره صلح کړې

(۱) تحفة الاشراف: ۱۶۸/۸، مسند عمرو بن عوف الانصاری.....) _

(۲) فتح الباری: ۲۶۲/۶ _

(۳) عمدة القاری: ۸۱/۱۵، وارشاد الساری: ۲۳۰/۵ _

(۴) انظر صحيح البخاری. کتاب الرقاق. باب ما يحذر من زهرة الدنيا..... رقم (۶۴۲۵) _

(۵) عمدة القاری: ۸۱/۱۵، وفتح الباری: ۲۶۲/۶ _

(۶) الاستيعاب: ۱۰۴/۲، رقم (۱۹۵۲) _

(۷) عمدة القاری: ۸۱/۱۵، وفتح الباری: ۲۶۲/۶، وتهذيب التهذيب: ۸۶/۸ _

(۸) د دوی د حالاتو دپاره اوګوری، کتاب الشركة، باب الشركة فی الطعام.....) _

(۹) فتح الباری: ۲۶۲/۶ _

(۱۰) د دوی د حالاتو دپاره اوګوری، کتاب الشهادات، باب من امر بانجاز الوعد _

وه او په هغوی باندې ئې حضرت علاء بن الحضرمی امیر مقرر کړې وو په حدیث شریف کښې د مذکوره صلحي واقعه "سنة الوفود" یعنی د ۹ هجری (د) .

د مذکوره واقعي تفصیل: د جعرانه نه په واپسې باندې نبي کریم ﷺ حضرت علاء بن الحضرمی ﷺ د منذر بن ساوی العبدی په طرف روان کړو. مقصد هغه ته د اسلام دعوت ورکول وو او د هغه په نوم ئې یو خط هم اولیکه، منذر نبي ﷺ ته جوابی خط اولیکه، چې په هغې کښې د هغه د اسلام د قبلولو اطلاع وه، دا ئې هم لیکلې وو چې:

"وإن قد قرأت كتابك على أهل هجر، فبئهم من أحب الإسلام، وأصعبه، ودخل فيه، ومنهم من كرهه، وبارضى مجوس ويهود، فأحدث إلى في ذلك أمراً".

یعنی: "ما ستاسو خط اهل هجر ته اولوستلو، بعضو خو اسلام خوښ کړو، هغوی ته خوښ شو او ښه پرې اولگینه او په اسلام کښې داخل شو او بعضو ناخوښه کړو او زما په حکومت کښې مجوسیان او یهودیان هم دی، د هغوی په باره کښې تاسو ما ته څه اولیکي چې د هغوی متعلق ستاسو څه حکم دي؟"

نو نبي کریم ﷺ ورته په جواب کښې خط اولیکلو چې ترڅو تاسو حکومت ښه طریقي سره جاری ساتئ او د حکومتی کارونو خیال ساتئ نو مونږ به تاسو نه معزوله کوو او کوم سرې چې هم په مجوسیت او یهودیت باندې برقرار اوسیري نو هغه دپاره به جزیه ادا کول ضروری وی..... (د).

قوله: فقدم أبو عبيدة بمال من البحرين: نو حضرت ابو عبیده ﷺ څه مال سره د بحرین نه واپس شو.

حضرت ابو عبیده ﷺ چې د بحرین نه واپس کیدو نو ځان سره ئې د هغې څانې نه څه مال هم راوړلو، د هغې مال مقدار څه وو؟ نو په دې سلسله کښې حضرت ابن ابی شیبه ﷺ د حمید بن هلال د طریق نه مرسله روایت کړې دي چې ددغه مال مقدار اته لاکه وو، دا حضرت علاء ﷺ راستولې وو او دا د ټولو نه اولنې خراج وو، کوم چې د نبي ﷺ خدمت مبارک کښې پیش کړې شو (د).

خبرداري: د ابن ابی شیبه په نسخو کښې د مذکوره مال مقدار اته لاکه راغلې دي، او حافظ د ابن ابی شیبه نه یو لاک نقل کړې دي اود ابن سعد، یعقوب بن سفیان او د حاکم په روایتونو کښې د مذکوره مال مقدار اتیا زره ذکر شوې دي. والله اعلم بالحقیقة.

او گوري: تعليقات الشيخ محمد عوامة على المصنف: ۵۳۲/۱۹. -

(۱) فتح الباری: ۲۶۲/۶، وشرح القسطلانی: ۲۳۰/۵، وعمدة القاری: ۸۱/۱۵. -

(۲) الطبقات الكبرى لابن سعد: ۳۶۳/۴. -

(۳) المصنف لابن ابی شیبه: ۵۳۳/۱۹، کتاب الاوائل، باب اول ما فعل..... رقم (۳۶۹۵۵). وفتح الباری: ۵۱۷/۱، رقم (۴۲۱)، کتاب الصلاة.....، وهدی الساری: ۳۹۶، کتاب الصلاة. -

فسمعت الانصار بقدم أبي عبيدة، فوافقت صلاة الصبح مع النبي ﷺ، فلما صلى بهم الفجر انصرف، فتعرضوا له، فتبسم رسول الله صلى الله عليه وسلم حين راهم، وقال: أظنكم قد سمعتم أن أبا عبيدة قد جاء بشي

چې انصارو د حضرت ابو عبیده د واپسني واوریدل نو هغوی د سحر مونځ نبی کریم ﷺ سره اوکړو، کله چې نبی ﷺ هغوی ته د سحر مونځ اوکړو نو د واپسني دپاره راتاؤ شول نو انصار ورته مخامخ راغلل، چې نبی ﷺ هغوی اولیدل نو وې خاندل او ارشاد ئې اوفرمايلو، زما خیال دادې چې تاسو خلقو د ابو عبیده (د بحرین نه) د واپسني اوریدلې دی چې هغوی ځان سره څه راوړلې دی.

د حدیث نه مستنبط یوه فائده: د مذکوره پورتنی عبارت نه دا یو خبره مستنبط شوه چې صحابه کرام (مهاجرین و انصار) ﷺ به په ټولو مونځونو کښې د نبی ﷺ سره په جماعت کښې نه شریکیدل، البته دا چې څه واقع به پیښه شوه او دا چې صحابه کرامو ﷺ به په خپلو خپلو مساجدو کښې مونځ کوو، ځکه چې د هرې قبیلې خپل خپل مسجد وو چې هلته به هغوی جمع کیدل، ددې وجې نه چې هرکله نبی کریم ﷺ هغوی اولیدل چې د سحر په مانځه کښې ټول جمع دی نو دوی ته معلومه شوه چې دا ټول د څه کار په غرض سره راغلي دي او قرینه هم ددې کار په تعیین باندې دلالت کوی چې هغوی ته د مال و دولت ضرورت وو نو چې په دې مال کښې د هغوی دپاره هم څه گنجائش اوشي، البته د هغوی دا خواهش وو چې مهاجرینو ته هم په دې کښې څه حصه ملاویدل پکار دي، ددې وجې نه کله چې هغوی ته نبی ﷺ په بحرین کښې د جاگیردارو پیش کش اوکړو نو انصارو هم دا اوفرمايل:

”حق تقطع لاخواننا من المهاجرين مثل الذي تقطع لنا“ (هرکله چې مال راغی نو انصارو سوچ اوکړو چې په دې مال کښې د مهاجرینو هم حق دي.

او دا هم احتمال دي چې نبی ﷺ په خپله دوی سره وعده کړې وی چې کله مال راشي نو زه به ترینه تاسو خلقو ته درکوم، لکه حضرت جابر بن عبد الله انصاري رضي الله عنه سره نبی ﷺ وعده کړې وه چې د بحرین نه مال راشي نو زه به تاسو ته درکوم، بیا دا وعده د نبی ﷺ د وفات نه پس حضرت ابوبکر صدیق رضي الله عنه پوره کړې وه (۱). خلاصه دا شوه چې انصارو خو یا په خپله د مال باره کښې واوریدل نو راغلل چې په دې مال کښې زمونږ هم حق دي یا چونکه نبی کریم ﷺ ورسره وعده کړې وه ددې وجې نه حاضر شو (۲).

قوله: قالوا: أجل يا رسول الله: انصارو په جواب کښې اووئيل، آوجی! یا رسول الله! امام اخفش رحمته الله فرمائی چې اجل په معنی کښې د نعم په شان دي، البته په دې دواړو کښې

(۱) اوکوری، صحیح البخاری، کتاب المساقاة، باب القطائع، رقم ((۲۳۷۶))۔

(۲) انظر صحیح البخاری، کتاب الکفالة، باب من تکفل عن میت..... رقم ((۲۲۹۶))۔

(۳) فتح الباری: ۶/۲۶۲-۲۶۳۔

فرق دادې چې د نعم استعمال د جواب استفهام دپاره وی ځکه چې ددې استعمال په دې ځانې کښې غوره دې او چې کله تصدیق مقصود وی نو هلته د اجل استعمال د نعم په ځانې زیات غوره دې.

قوله: قال: فابشروا، وأملوا مايسركم: نبی ﷺ او فرمائیل، خوشحاله شه او د هغه څیز امید ساته چې تا خوشحاله کړی.

”ابشروا“ صورتاً خو امر دې لیکن معنا خبر دې، مطلب دادې چې د کوم مقصود دپاره تاسو ماته راغلې ئې، هغه حاصل شو او مال به تاسو ته ملاؤ شی.

قوله: فوالله، لا الفقر أخشى عليكم، ولكن أخشى عليكم أن تبسط عليكم الدنيا، كما بسطت على من كان قبلكم، فتنافسوها كما تنافسوها، وتهلككم كما

أهلكتهم: په ځانې قسم اتمه ستاسو د نهري لورې خطر نهشته بلکه دا ویره ده چې دنیا به په تاسو باندې فراخه کړې شی، لکه څنگه چې ستاسو نه مخکښې امتونو باندې کړې شوې وه، تاسو به هم په دې کښې دغه شان رغبت او کړئ څنگه چې هغوی رغبت کړې وو، بیا به تاسو دنیا د هغوی په شان هلاک کړی.

د ”تنافس“ معنی ده په یو څیز کښې رغبت ساتل او هغه څیز خپل ځان سره خاص کول، او په حدیث مبارک کښې دا خبره وئیلې شوې ده چې په دنیا کښې رغبت ساتل بعضې وخت کښې انسان د هلاکت په طرف روان کړی او ددې وجې نه آخرت برباد شی.

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: د باب مطابقت د حدیث دې لاندې جملو سره موندلې شی:

① ”ان رسول الله صلى الله عليه وسلم بعث ابا عبدة..... ياتي بجزيتها“ ځکه چې په دې کښې د جزیه ذکر دې او د ترجمې اولنې جزء جزیه ده.

② ”قدم أبو عبدة بهال من البحرين“ ځکه چې د بحرین نه کوم مال راغلې وو نو هغه د جزئې وو، دغه شان د بحرین اوسیدونکی دغه وخت کښې مجوسیان وغیره وو. ددې وجې نه د ترجمة الباب جزء ”الجزية“ او ”المجوس“ دواړو سره مناسبت موجود دې. والله اعلم بالصواب

..

① (فتح الباری: ۶/۲۶۳)

② (پورته حواله)

③ (پورته حواله، عمدة القاری: ۱۵/۸۱ وارشاد الساری: ۵/۲۳۱، دلته اوگوره، کشف الباری، کتاب المغازی: ۱۶۶)

④ (عمدة القاری: ۱۵/۸۱)

٢٩٨٩: حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ يَعْقُوبَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرٍ الرَّقِيُّ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُبَيْدٍ اللَّهِ الثَّقَفِيُّ حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْمُزَنِيُّ وَزِيَادُ بْنُ جُبَيْرٍ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ حَبِةَ قَالَ بَعَثَ عُمَرُ النَّاسَ فِي أَفْنَاءِ الْأَمْصَارِ يُقَاتِلُونَ الْمُشْرِكِينَ، فَأَسْلَمَ الْأَهْرُمَزَانُ فَقَالَ إِنِّي مُسْتَشِيرُكَ فِي مَغَازِي هَذِهِ. قَالَ نَعَمْ، مَثَلُهَا وَمَثَلُ مَنْ فِيهَا مِنَ النَّاسِ مِنْ عَدُوِّ الْمُسْلِمِينَ مَثَلُ طَائِرٍ لَهُ رَأْسٌ وَلَهُ جَنَاحَانِ وَلَهُ رِجْلَانِ، فَإِنْ كَسَرَ أَحَدَ الْجَنَاحَيْنِ نَهَضَتِ الرِّجْلَانِ بِجَنَاحِ وَالرَّأْسِ، فَإِنْ كَسَرَ الْجَنَاحَ الْآخَرَ نَهَضَتِ الرِّجْلَانِ وَالرَّأْسُ، وَإِنْ شَدَّ الرَّأْسَ ذَهَبَتِ الرِّجْلَانِ وَالْجَنَاحَانِ وَالرَّأْسُ، فَالرَّأْسُ كِسْرَى، وَالْجَنَاحُ قَيْصَرٌ، وَالْجَنَاحُ الْآخَرُ فَارِسٌ، فَمُرِّ الْمُسْلِمِينَ فَلْيَنْفِرُوا إِلَى كِسْرَى.

رجال الحديث

① الفضل بن يعقوب: دا د امام بخارى، رحمه الله، خاص شيخ، الفضل بن يعقوب رخامى بغدادى رحمه الله دې.

② عبدالله بن جعفر الرقى: دا امام عبدالله بن جعفر بن غيلان القرشى رحمه الله دې. ابو جعفر او ابو عبد الرحمن د دوى كنيته دې. د آل عقبه بن ابى معيط آزاد كرده غلام وو.

د دوى نسبت د رقه طرفته شوې دى او د دې وجې نه ورته الرقى "بفتح الراء المشددة، وكسر القاف المشددة" وئيلې كيږي، دا په عراق كېنې د فرات مشرقى غاړې سره يو مشهور ښار وو، اوس ختم شوې دې. دوى د عبيد الله بن عمرو، ابو المليح حسن بن عمر الرقى، عبد العزيز الدراوردي، معتمر بن سليمان او د موسى بن ايعين رحمه الله نه روايت كوي. د دوى نه په روايت كيونكو كېنې احمد ابن ابراهيم الدروقي، ابو الازهر نيسابوري، اسماعيل بن عبد الله الرقى، علي بن الحسين الرقى، ايوب بن محمد الوزان، سلمة بن شبيب، دارمي، عمرو الناقد، فضل بن يعقوب رخامى، محمد بن حاتم بن ميمون، محمد بن جبلة، ابو زرعة الدمشقي او ابو حاتم رحمه الله وغيره شامل دي.

١) قوله: بعث عمر: الحديث، أخرجه البخارى ايضا فى صحيحه، فى كتاب التوحيد، باب قول الله تعالى: (يا ايها الرسول بلغ ما أنزل اليك.....) رقم (٧٥٣٠)، وتحفة الاشراف بمعرفة الاطراف: (١٩/٨) _

٢) د دوى د حالاتو دپاره اوگورئ، كتاب البيوع، باب التجارة فى البر _

٣) تهذيب الكمال: ١٤/٣٧٦، وتهذيب التهذيب: ٥١٧٣، وتاريخ البخارى الكبير: ٥/٦٢، رقم (١٥٠)، واكمال مغلطاي: ٧/٢٨٥، رقم (٢٨٥٣)، والطبقات: ٧/٤٨٦ _

٤) عمدة القارى: ١٥/٨٢ _

٥) شيخانو او شاگردانو دپاره اوگورئ، تهذيب الكمال: ٣٧٧-٣٧٨ _

امام حاتم رضی اللہ عنہ فرمائی: ”ثقة، وهو أحب إلى من علي بن معبد الذي كان ببصر“ (۱).

امام يحيى بن معين رضی اللہ عنہ فرمائی: ”ثقة“ (۲).

امام عجلي رضی اللہ عنہ هم دوی ته ثقہ وئيلي دي (۳).

حافظ ذهبي رضی اللہ عنہ فرمائی: ”ثقة، حافظ“ (۴).

ابن شاهين رضی اللہ عنہ هم په خپل کتاب کښې الثقات کښې ذکر کړې دي (۵).

امام نسائي رضی اللہ عنہ فرمائی: ”ليس به باس قبل أن يتغير“ (۶).

حافظ ابن حجر رضی اللہ عنہ فرمائی: ”ثقة، لكنه تغير باخذة، فلم يفحش اختلاطه“ (۷). ابن حبان رضی اللہ عنہ هم دوی په کتاب الثقات کښې ذکر کړې دي او وائی چې په آخر عمر کښې دوی ته اختلاط واقع شوې وو (۸).

لیکن دا اختلاط او ذهني کمزوری نقصان ده نه دي، دا ځکه چې دې حضراتو یعنی حافظ صاحب او ابن حبان رحمهما الله په خپله ددې خبرې اعتراف کړې دي چې اختلاط نقصان ده نه دي، بلکه کم وو او کله کله به وو، چې د روایاتو دپاره نقصان ده نه دي. په ائمه سته کښې ټولو حضراتو د دوی روایات اخستلي دي (۹). چې دا په خپله د ثقافت یو دلیل دي.

په ۲۱ یا ۲۳ شعبان ۲۲۰ هجري کښې په رقه کښې ددوی انتقال او شو (رحمه الله تعالى رحمة واسعة) **المعتمر بن سليمان**: دا معتمر ”د عين سکون سره، د تاء فتحې سره او د ميم کسري سره، ابن سليمان رضی اللہ عنہ دي. په ټولونسخو کښې هم دا نوم راغلې دي، په مستخرج اسماعيلي وغيره کښې ددې حديث په سند کښې هم د بخاري په شان دي، یعنی معتمر، او د دمياطي رضی اللہ عنہ خيال دادي چې صحيح نوم معمر ”بفتح البهملة، وتشديد البفتوحة بغیر مثناة“ دي، هغوی ددې

(۱) الجرح والتعديل: ۲۹/۵، رقم (۱۰۴)، وتهذيب الكمال: ۳۷۸/۱۴ _

(۲) الجرح والتعديل: ۲۸/۵، رقم (۱۰۴)، وتهذيب الكمال: ۳۷۸/۱۴ _

(۳) اكمال مغلطاي: ۲۸۶/۷، وتهذيب التهذيب: ۱۷۴/۵ _

(۴) الكاشف للامام الذهبي: ۳۷۸/۱، رقم (۲۶۶۷) _

(۵) تعليقات تهذيب الكمال: ۳۷۸/۱۴، واکمال مغلطاي: ۲۸۵/۷ _

(۶) تهذيب الكمال: ۳۷۸/۱۴، وتهذيب التهذيب: ۱۷۳/۵، وميزان الاعتدال: ۴۰۳/۲، رقم: (۴۲۴۹) _

(۷) تقريب التهذيب: ۴۸۳/۱، رقم (۳۲۶۴)، وهدي الساري: ۵۸۰، الفصل التاسع، حرف العين) _

(۸) كتاب الثقات: ۳۵۱/۸ _

(۹) تقريب: ۴۸۳/۱، وتهذيب الكمال: ۳۷۶/۱۴ _

(۱۰) الثقات لابن حبان: ۳۵۲/۸، والطبقات الكبرى: ۴۸۶/۷، الكاشف: ۱، وتهذيب الكمال: ۳۷۸/۱۴، و ميزان

الاعتدال: ۴۰۳/۲، رقم (۴۲۴۹) _

دلیل دا پیش کړې دې چې عبد الله بن جعفر رقی د معتمر بن سلیمان نه روایت نه کوی، د هغوی ملاقات ثابت نه دې.

حافظ و عینی فرمائی چې صرف دا وجه چې عبد الله رقی دې او معتمر بصری دې، د دوی ملاقات ممکن نه دې. نو دومره قدرې خبره د صحیح روایتونو د رد کولو دپاره کافی نه ده، که مونږ دا اومنو چې دا دواړه د یو بل په ښارونو کښې نه دی داخل شوي نو آیا په یو حج یا یو غزوه کښې به هم د دوی ملاقات نه وی شوي؟... بیا د دمیاطی اعتراض په خپله د هغه د قول معارض دې، ځکه چې که معمر کیدل صحیح او ګرځولې شی، چې رقی نه دې او روایت کوی د سعید بن عیید الله نه چې بصری دې نو بعینه هم هغه اعتراض دلته هم کیږي چې که د رقی ملاقات د بصری سره ممکن نه دې نو د بصری ملاقات هم د رقی سره ډیر مشکل دې، حالانکه داسې څه خبره نشته. دواړه صورتونه ممکن دي.

ددې نه علاوه کومو حضراتو چې د بخاری په رجالو باندې کار کړې دې، په هغوی کښې چا هم د بخاری په رجالو کښې د معتمر بن سلیمان ذکر نه دې کړې، بلکه ټولو د بخاری په رجالو کښې متفق طور باندې د معتمر بن سلیمان تیمی بصری ذکر کړې دې.

اصیلی، ابن قرقول وغیره هم معتمر کیدل راجح ښودلې دې (۱). دلته د علامه کرمانی رحمته الله علیه نه تسامح شوې ده ځکه چې هغوی د بعضي حضراتو نه نقل کولو کښې معتمر ته اول معمر او وئیل، بیا ابن راشد یعنی معمر بن راشد (د عبدالرزاق صنعانی شیخ) دا عجیبه خبره ده، ځکه چې د عبد الله بن جعفر رقی روایت خو د معمر بن راشد نه هلو ثابت نه دې (۲).

② سعید بن عیید الله الثقفی: دا سعید بن عیید الله بن جبیر بن حیه الثقفی الجبیری البصری رحمته الله علیه دې (۳). دې د خپل تره زیاد، بکر بن عبد الله المزنی، حسن بصری، حکم بن اعرج او عبد الله بن بریده رحمهم الله وغیره نه روایت کوی. او د دوی نه د دوی ځوڼي اسماعیل، معتمر بن سلیمان، ابو عییده الحداد، بشر بن السری، خالد بن الحارث، روح بن عباد او مکی بن ابراهیم رحمهم الله تعالی وغیره روایت کوی (۴).

امام احمد، یحیی بن معین او ابو زرعة رحمهم الله تعالی فرمائی: "ثقة" (۵).

امام نسائی رحمته الله علیه فرمائی: "لیس به بأس" (۶).

امام ابن حبان رحمته الله علیه د دوی ذکر په کتاب الثقات کښې کړې دې (۷).

(۱) فتح الباری: ۲۶۳/۶، وعمدة القاری: ۸۲/۱۵.

(۲) پورته حواله جات، وشرح الکرماني: ۱۲۶/۱۳.

(۳) تهذيب الكمال: ۵۴۵/۱۰، وتهذيب التهذيب: ۶۱/۴، والتاريخ الكبير: ۴۹۵/۳، رقم ((۱۶۵۴)).

(۴) د شیخانو او شاگردانو دپاره او ګوري، تهذيب الكمال: ۵۴۵/۱۰، ۵۴۶.

(۵) الجرح والتعديل: ۳۸/۴، رقم (۱۶۷)، وخلاصة الخرجی: ۱۴۱.

(۶) تهذيب الكمال: ۵۴۶/۱۰، وتهذيب التهذيب: ۶۱/۴.

(۷) تهذيب الكمال: ۵۴۶/۱۰، والثقات لابن حبان: ۲۵۹/۸.

حافظ ذهبی رحمہ اللہ فرمائی: ”ثقة“ (۱).

ابن شاہین رحمہ اللہ ہم د دوی ذکر پہ کتاب الثقات کنبی کړې دي. البته امام دارقطنی رحمہ اللہ په دوی باندې جرح کړې ده او وئیلې نې دی چې دا مضبوط راوی نه دي، هغه روایات به دوی مسنداً نه روایت کول کوم چې نور حضرات موقفاً روایت کوي. دغه شان حافظ ابن حجر رحمہ اللہ هم د دوی په باره کنبی لیکي: ”صدوق، ربما وهم“ (۲). په دې سلسله کنبی په امام بخاری رحمہ اللہ باندې اعتراض ددې وجې نه نه شی کیدې چې هغوی د سعید بن عبید الله دوه روایات په خپل صحیح بخاری کنبی اخستلي دي. یو په اشربه (۳) کنبی، چې د هغې شواهد موجود دي، د باب دویم حدیث، چې په کتاب التوحید (۴) کنبی هم مختصراً راغلې دي، البته ددې شاهد هم موجود دي، ددې وجې نه د باب د حدیث هم دا مضمون د حضرت معقل بن یسار رحمہ اللہ نه هم روایت دي. د حضرت معقل بن یسار رحمہ اللہ روایت ابن ابی شیبہ (۵) د قوی سند سره روایت کړې دي. د بخاری نه علاوه ترمذی، نسائی او ابن ماجه رحمهم الله تعالى هم د دوی نه روایات اخستلي دي.

⑤ بکر بن عبدالله المزني: دا بکر بن عبد الله المزني البصري رحمہ اللہ دي.

⑥ زياد بن جبير: دا زياد بن جبير بن حية الثقفي الجبيري البصري رحمہ اللہ دي.

⑦ جبير بن حية: دا جبير بن حية بن مسعود بن معتب بن مالک بن عمرو بن سعد بن عوف ثقفي بصري رحمہ اللہ دي. دا د حضرت عروه بن مسعود ثقفي رحمہ اللہ وراره دي. د دوی کنيت ابوفرس يا ابوفرش او ابو زياد دي (۸). دوی د حضرت عمر بن الخطاب، حضرت عبد الله بن

(۱) (الكشاف: ۱/۴۴۱).

(۲) (الكمال مغلطای: ۵/۳۲۶، رقم (۲۰۱۱)).

(۳) (پورته حواله، وتهذيب التهذيب: ۴/۶۱، والمغني في الضعفاء: ۱/۴۰۹، وميزان الاعتدال: ۲/۱۵۰).

(۴) (تقريب التهذيب: ۱/۳۵۹، رقم (۲۳۶۶)، وتعليقات تهذيب الكمال: ۱۰/۵۴۶).

(۵) (صحيح بخاری، كتاب الاشربة، رقم (۵۵۸۴)).

(۶) (صحيح بخاری، كتاب التوحيد، رقم (۷۵۳)).

(۷) (المصنف: ۱۸/۲۸۷-۲۹۱، كتاب البعث والسرايا، توجيه النعمان بن مقرن الى نهاوند، رقم (۳۴۴۸۵)).

(۸) (ددې قصې د مزید تخريج دپاره اوگوري، تعليقات محمد عوامة على المصنف: ۱۸/۲۸۸).

(۹) (هدى السارى: ۵۷۰، الفصل التاسع فى سياق اسماء من طعن..... باب السين).

(۱۰) (تهذيب الكمال: ۱۰/۵۴۶).

(۱۱) (د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الفسل، باب عرق الجنب.....).

(۱۲) (د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الحج، باب نحر الابل المقيدة.....).

(۱۳) (تهذيب الكمال: ۴/۵۰۲، وتهذيب التهذيب: ۲/۲۶).

(۱۴) (طبقات ابن سعد: ۷/۱۸۸، واکمال مغلطای: ۳/۱۶۷).

عمر، حضرت مغیره بن شعبه او د حضرت نعمان بن مقرن رضی الله عنہ نه روایت کوی. د دوی نه بکر بن عبدالله المزنی او د دوی خوښی زیاده روایت کوی. (۱).
ابو الشیخ فرمائی: "جبیر د طائف او سیدونکی وو او هلته د یو مکتب معلم، بیا د هغه ځانې نه عراق ته منتقل شو، په عراق کښې په دیوان ځانه کښې کاتب جوړ شو، چې کله زیاده بن ابی سفیان د عراق والی جوړ شو نو هغوی د جبیر اکرام او اعزاز او کړو، خپل نزدیکت ئې ورکړو، دغه شان د دوی شان اوچت شو او زیاده دوی د اصفهان والی جوړ کړو." (۲).
سبط ابن العجمی رحمته الله فرمائی: "ثقة جلیل" (۳).

ابن حبان رحمته الله د دوی شمار په کتاب الثقات کښې جلیل القدر تابعینو کښې کړې دي. (۴).
دغه شان ابن خلفون په الثقات کښې د دوی ذکر او کړو او وې فرمائیل: "کان ثقة" (۵).
اکثرو امامانو د رجال دوی تابعی بنودلې دي، لیکن د حافظ ابن حجر رحمته الله رائي داده چې جبیر بن حیه صحابی دي، ددې وجې نه حافظ صاحب د دوی تذکره د "الاصابة" په اولنی قسم کښې کړې ده.

د هغوی وینا داده چې د صحیح بخاری د روایت نه دا ثابتیږي چې د حضرت عمر رضی الله عنہ د خلافت په زمانه کښې چې کوم فتوحات وو نو په هغې کښې جبیر شریک شوې وو، او امام بخاری رحمته الله مذکوره روایت د "زائدة بن ابی زیاد بن جهمر عنه" د طریق نه نقل کړې دي. (۶). او ما څوک نه دی لیدلې چې هغوی د دوی ذکر په صحابه کرامو رضی الله عنہم کښې کړې وی حالانکه دې د هغوی په شرطونو باندې پوره دي. دا ځکه چې د بنو ثقیف یو سړې هم د نبی صلی الله علیه و آله په حیات مبارک کښې ژوندې نه وو، مگر دا چې هغوی اسلام قبول کړې وو او په حجة الوداع کښې ئې شرکت کړې وو (دې هم ثقفی دي). البته ابو موسی المدنی د دوی شمار په صحابه کرامو رضی الله عنہم کښې کړې دي، د دوی یو حدیث ئې هم ذکر کړې دي بیا لیکي چې حدیث مرسل دي او دا خبره ئې صحیح بنودلې ده چې دا تابعی دي صحابی نه دي. (۷). لیکن زما په نزد د دوی صحابیت ناممکن نه دي، لکه کوم سړی چې د حضرت عمر رضی الله عنہ په زمانه خلافت کښې په فتوحاتو کښې شرکت کړې وی نو هغه به دغه وخت خامخا ځوان وی او په کومه واقعه کښې چې دې حاضر وو نو هغه د نبی صلی الله علیه و آله د وفات نه پس لس کال تیریدلو نه مخکښې پېښه

(۱) الجرح والتعديل: ۴۴۵/۲، وتهذيب الكمال: ۵۰۲/۴، واکمال مغلطای: ۱۶۷/۳. —

(۲) تهذيب الكمال: ۵۰۲/۴، وتهذيب التهذيب: ۲۶/۲. —

(۳) حاشیه سبط ابن العجمی علی الکاشف: ۲۸۹/۱. —

(۴) تهذيب التهذيب: ۶۳/۲. —

(۵) اکمال مغلطای: ۱۶۷/۳. —

(۶) لعل الحافظ رحمته الله اراد حدیث الباب، ولكن طريقه يخالف لما قاله الحافظ، والله اعلم. —

(۷) اکمال مغلطای: ۱۶۷/۳، والاصابة: ۲۲۵/۱. —

شوې ده، ددې وجې نه کم از کم د دوی لیدل به خامخا ثابت وی او دا خبره د صحابیت د شرف د حصول دپاره کافی ده (۱). د حضرت جبیر انتقال د اموی خلیفه عبد الملک بن مروان په زمانه کېښې او شو (۲). ابن عساکر رحمته الله لیکلې دی چې د حضرت عبدالله بن زبیر رضی الله عنه د شهادت په دویمه جمعه باندې حجاج بن یوسف خطبه ورکړه، او وې وئیل چې زما وهم او گمان دادې چې تاسو خلق د حق او باطل مینځ کېښې د تمیز کولو قابل پاتې نه شوي، زه ستاسو نه د دریو څیزونو باره کېښې تپوس کوم که د دغه سوالونو جوابونه تاسو صحیح راکړل نو ښه خبره ده، ورنه زه به په تاسو باندې جزیه لازم کړم او تاسو به ددې اهل هم یئ. سوالات دادې چې هغه کوم څیز دې چې دهغې نه هیڅ یو څیز مستغنی (بې پرواه) کیدې نه شي؟ هغه کوم څیز دې چې په کنیت سره پیژندلې شي او هغه کوم بچې دې چې دهغه پلار نشته؟ نو حضرت جبیر بن حیه او دریدو او وې فرمائیل چې ائې امیر! که ستا دا مذکوره اراده او عزم نه وي نو ما به تا ته جواب نه وو درکړې، پاتې شو هغه څیز چې د هغې نه هیڅ یو څیز مستغنی نه دې نو هغه نوم (انسم) دې، هغه څیز چې کنیت سره پیژندلې شي نو هغه ام الجنین ده او هغه ماشوم چې پلار ئې نه وو نو هغه حضرت عیسی عليه السلام دې. حجاج او وئیل ائې متکلمه! تاسو څوک یئ؟ وې فرمائیل: جبیر بن حیه ثقفی. حجاج او وئیل چې ستاسو صحیح جوابونه هم غلط شو، ددې نزدې رشته دارئ باوجود تاسو څنگه زما نه لرې یئ (ځکه چې حجاج په خپله هم ثقفی وو)؟ وې فرمائیل: ائې امیر! ته به د خپل قوم دپاره همیشه باقی نه ئې او نه ستا دا عزت همیشه دپاره دې، ځکه چې زمانه د مختلفو حالاتو ښکار کیرې او نن مونږ ستاسو نه د فائدې حاصلولو سره دا نه غواړو چې صبا مونږ ته د هغې سزا ملاویږي. راوی وائی چې حجاج دوی ته ډیر انعام ورکړ (۳).

قوله: قال: بعث عمر الناس في أفناء الامصار يقاتلون المشركين: حضرت جبیر بن حیه فرمائی چې حضرت عمر رضی الله عنه خلق لوئې لوئې ښارونو ته روان کړل چې دوی به مشرکانو سره قتال کوي.

”افناء“ د ”قنو“ بکس، الفاء وسکون النون ”جمع ده، ددې معنی ده ډله، د کمې او معمولی درجې خلق، دغه شان هغه سړې چې د هغه هیڅ قبيله نه وی نو هغه ته هم ”قنو“ وئیلې شي (۴). علامه کرمانی رحمته الله د ”الامصار“ په ځانې ”الانصار“ نقل کړې دې او دا ئې وئیلې دي چې په بعضې نسخو کېښې ”الامصار“ راغلې دي. په دې ځان پوهول پکار دی چې هم ”الامصار“ صحیح دي، د دوی د ذکر کرده کلمې دلته هیڅ معنی نه جوړیږي، ځکه چې انصار خو د مخکښې نه

(۱) الاصابة: ۲۲۵/۱، وتعليقات تهذيب الكمال: ۵۰۳/۴، وفتح الباری: ۲۶۳/۶.

(۲) تهذيب الكمال: ۵۰۳/۴، وتهذيب: ۶۳/۲، والتقريب: ۱۵۶/۱، رقم (۹۰۱).

(۳) اكمال مغلطای: ۱۶۸/۳.

(۴) فتح الباری: ۲۶۴/۶، وعمدة القاری: ۸۳/۱۵، والنهاية: ۴۸۸/۳، باب الفاء مع النون.

مسلمانان وو نو هغوی سره د جنگ کولو څه مطلب؟ او ددې نه پس په حدیث شریف کښې متصل "یقاتلون المشاکین" هم راغلې دې (۱).

قوله: فاسلم الهمرمزان: نو هر مزان اسلام قبول کړو. دلته د حدیث شریف په سیاق کښې ډیر زیات اختصار دې، ځکه چې د هر مزان د اسلام د قبولیت واقع فوراً نه وه پېښه شوې بلکه ددې نه مخکښې څو جنگونه شوې وو، د واقعاتو تفصیل چونکه ډیر زیات دې ددې وجې نه مونږ په دهغې د خلاصې پیش کولو کوشش کوو. د هر مزان د اسلام د قبولولو واقع: هر مزان "بضم الهاء وسكون الراء وضم الیم وتخفيف الزای وی آخره

نون" (۲) د عجم په لوئی لوئی بادشاهانو کښې وو، د دوی په حکومت کښې ډیرې زیاتې علاقې شاملې وې، مثلاً اهواز، جندی سابور، سوس، سرق، نهر بین، نهر تیری او مناذر وغیره. د قادسیه په مقام باندې د مسلمانانو او د ایرانیانو چې کوم مشهور جنگ "جنگ قادسیه" شوې وو، په دې جنگ کښې د ایرانیانو په لښکر کښې دې هم شامل وو، دا لښکر یزدجر روان کړې وو. د مسلمانانو د لښکر مشر حضرت سعد بن ابی وقاص رضی الله عنه او د ایرانیانو د لښکر مشر رستم وو، ایرانی لښکر په دوه لاکه جنگجو باندې مشتمل وو، دوی سره درې ډیرش (۳۳) هاتیان هم وو او هر مزان د میمنه مشر وو.

د ابن اسحاق رضی الله عنه وینا ده چې د مسلمانانو لښکر صرف په اووه یا اته زره کسانو باندې مشتمل وو، د دواړو ډلو مینځ کښې خطرناک او ډیر زیات سخت جنگ او شو، داسې جنگ او شو چې تاریخ ددې مثال ددې نه مخکښې نه وو لیدلې، د مسلمانانو د لښکر یوې ډلې په دغه ورځ باندې ډیره زیاته بهادری اوښودله او د بې مثاله بهادری نمونې ئې پیش کړې، په دوی کښې حضرت طلیحه الاسدی، حضرت عمرو بن معدیکرب، حضرت قعقاع بن عمرو، حضرت جریر بن عبدالله البجلی، حضرت ضرار بن خطاب، حضرت خالد بن عرفطه رضی الله عنهم او نور ډیر حضرات شامل وو.

د دواړو ډلو مینځ کښې دا جنگ د گل په ورځ یکم محرم ۱۴ هجري باندې او شو. اسلامی لښکر سره د الله مدد داسې شامل حال شو چې الله تعالی یو طوفان راولیږو، چې هغې د ایرانیانو او فارسیانو څیمې او ویستلې او د رستم تخت ئې د هغه د فوجیانو په وړاندې الټه کړو، نو هغه په یو خپر باندې سور شو او او تختیده، لیکن مسلمانانو هغه رالاندې کړو او جهنم ته ئې اور سوو، دغه شان ایرانی لښکر ته شکست او شو، مسلمانانو د دوی یو لویه ډله قتل کړه. د ایرانی لښکر یوه حصه په زنجیرونو کښې تړلې شوې وه، چې د هغې تعداد شل زره وو، دا ټول تباہ و برباد شو، دا د تختیدو نه پس قضا ده، او صرف د جنگ دوران

(۱) شح الکرمانی: ۱۲۷/۱۳، وارشاد الساری: ۲۳۱/۵، وفتح الباری: ۲۶۴/۶، وعمدة القاری: ۸۳/۱۵، ومثله قال ابن بطال ایضاً، انظر شرحه: ۳۳۴/۵. —
(۲) عمدة القاری: ۸۳/۱۵. —

کښې لس زره ایرانیان مړه کړې شول، مسلمانان مسلسل دوی پسې لگیدلې وو تردې چې آخرکار د بادشاه تخت "مدائن" ته ورغلل، چرته چې د کسری محل وو.

هرمزان هم په تختیدونکو کښې شامل وو، د مسلمانانو او د هرمزان مینځ کښې هم یو معرکه اوشوه، بیا د دواړو فریقو مینځ کښې صلح اوشوه، او دا صلح او معاهده څو ورځې پس هرمزان ماته کړه او د کردو یو ډلې نه ئې امدد ترلاسه کړو، نو مسلمانان بیا د دوی په مقابل کښې راغلل او مسلمانانو ته واضحه فتح ملاؤ شوه، د هرمزان په حکومت کښې چې کوم ځایونه شامل وو نو په هغې کښې په اهواز، مناذر او نهرتیری باندې اسلامی بیرغ ولگولې شو او دا د ۱۶ یا ۱۷ هجری واقعده.

د مذکوره علاقو نه چې هرمزان او تختیده نو د تستر په لاره روان شو او هلته په قلعه کښې پټ شو، د مشورې دپاره مسلمانانو حضرت عمر رضی الله عنه ته خط ولیکه چې څه طریقه اختیار کړې شی؟ نو د امیر المؤمنین رضی الله عنه په حکم باندې د هرمزان مقابل کولو دپاره حضرت جزء بن معاویه رضی الله عنه روان شو او مسلسل هرمزان پسې لگیدلې وو تردې چې زمکه ئې په هرمزان باندې تنگه کړه، هرمزان چې کله عاجز شو نو بیا ئې د صلحې درخواست اوکړه، ددې درخواست د منظوری دپاره حضرت عمر رضی الله عنه ته پیغام روان کړې شو، د کوم ځانې نه چې د رامهرمز، تستر، جندی سابور او د نورو ښارونو باره کښې منظوری راغله چې صلح دې اوکړې شی.

دلته د ایران بادشاه یزدجر به هر وخت ایرانیان راپورته کول چې دا عرب ستاسو په ښارونو باندې غالب راغلي دي، د دوی د مقابلې دپاره پاسې، نو هغه اهل فارس او اهل اهواز ته ولیکل چې د مسلمانانو سره د جنگ دپاره تیار او متحرک شی. دا خبر حضرت عمر رضی الله عنه ته هم اورسیده، دغه وخت حضرت سعد رضی الله عنه په کوفه کښې وو، حضرت عمر رضی الله عنه دوی ته خط ولیکه چې د حضرت نعمان بن مقرن سره یو لښکر د اهواز په طرف ولیږه، حضرت ابو موسی اشعری رضی الله عنه ته ئې هم ولیکل، دغه وخت دوی په بصره کښې وو، چې د اهواز په طرف یو لښکر روان کړئ او ددې امیر حضرت سهیل بن عدی رضی الله عنه مقرر کړه، او وې فرمائیل چې ددې دواړو ډلو اصل امیر به حضرت ابوسیره بن ابی رهم وی.

نو حضرت نعمان بن مقرن رضی الله عنه کوفی لښکر ځان سره روان کړو او د بصرې په لښکر باندې وړاندې شو، تردې چې رامهر ته اورسیدل او هلته هرمزان هم وو، دې د خپل فوج سره د اسلامی لښکر په طرف راووته، سابقه معاهده ئې ماته کړه، دواړه فوجونه مخامخ شو او سخت جنگ اوشو، چې په دې کښې هرمزان ته شکست اوشو او هغه د تستر په طرف او تختیده، چې کله بصری لښکر ته ددې واقعي اطلاع اوشوه چې د حضرت نعمان رضی الله عنه په قیادت کښې هرمزان ته شکست شوې دې او هغه د تستر په طرف تختیدلې دې نو دوی د تستر په طرف روان شو، چې هلته کوفی لښکر هم دوی سره ملاؤ شو، د حضرت ابوسیره بن ابی رهم رضی الله عنه په قیادت کښې بصری او کوفی لښکرونو د تستر محاصره اوکړه، دا محاصره څو میاشتو پورې جاري وه، دې دروان کښې د دواړو ډلو یو لوی تعداد قتل شو، آخر یو ورځ یو ایراني حضرت ابو موسی اشعری رضی الله عنه ته راغی او وې وئیل چې که تاسو ددې ښار

اوسیدونکو ته امان ورکړئ نو زه به ښار باندې تاسو ته قبضه درکړم، حضرت دا خبره منظوره کړه، نو هغه مسلمانانو ته هغه ځانې اوښوده د کوم ځانې نه چې ښار کښې دننه د دجله د یو شاخ اوبه داخليدې، دغه لاره باندې د مسلمانانو یوه ډله د بطخو په شان تیزې سره دننه داخله شوه، هغوی څوکیداران قتل کړل، د ښار لوټې دروازې ئې پرانستې، مسلمانانو د تکبیر نعره اوچته کړه او ټول په ټوله د سحر په وخت کښې داخل شو، چې هرکله هرمان دا صورت حال اولیده نو په قلعه کښې ئې پناه واخسته، څه صحابه کرام رضی الله عنهم د پسرې اولگیدل، دې دوران کښې د هرمان په لاس حضرت براء بن مالک او مجزاه بن نور رضی الله عنهما شهیدان شو، چې کله هرمان په قلعه کښې یو مکان کښې محصور شو او د یو څو کسانو نه علاوه څوک هم پاتې نه شو نو هغه اووئیل چې زما په ترکش کښې اوس هم ۱۰۰ غشي دي، تاسو کښې چې څوک هم وړاندې راځی نو زه به ئې قتل کړم، چونکه د خپلو سلو کسانو د قتلولو نه پس زما په قتلولو کښې تاسو ته څه فائده نشته، ددې وجې نه ماته امان راکړئ او حضرت عمر رضی الله عنه ماته راوړسوي، زما په باره کښې د هغوی مرضی ده چې څه فیصله کوي.

د هرمان دا مطالبه حضرت ابوسبره بن ابی درهم رضی الله عنه منظور کړه او حضرت انس او احنف بن قیس رضی الله عنهما ئې په دې باندې مامور کړل چې دې مدینې منورې ته اورسوي، دې حضراتو دې روان کړو، مدینې منورې ته چې کله نژدې شو نو د ه خپل ځان شاهانه لباس باندې مزین کړو، د عجم د بادشاهانو موافق ئې تاج او زیورات وغیره واغوستل، ددې نه پس په مدینه منوره کښې داخل شو، دا ټول د حضرت عمر رضی الله عنه کور ته اورسیدل، هغه ځانې کښې دوی ته اووئیلې شو چې هغوی په مسجد کښې تشریف فرما دي او د کوفې د یو وفد انتظار کوي، د هغه ځانې نه مسجدنبوی رضی الله عنه ته راغلل نو وې لیدل چې هغه سرې چې د هغه درعب او دبدبې د وجې نه ټوله دنیا ریږي، د خاورو په فرش باندې خوب کوي، ټوپي ئې ځان ته تکیه کړې ده او په مسجد کښې علاوه د هغوی نه څوک هم نشته، دره یی په لاس کښې نیولې ده، هرمان تپوس او کړو چې عمر چرته دې؟ جواب ملاؤ شو: هم دا عمر دې خلقو رو رو خبرې کولې چې آرام کښې خلل واقع نه شی، هرمان اووئیل چې د دوی محافظ او درباری چرته دې؟ جواب ملاؤ شو: "لیس له حجاب، ولا حرس، ولا کاتب، ولا دیوان" ډیر حیران شو او وې وئیل دا خونې کیدل پکار دی د عوامو د کثرت او د هغوی د تگ راتگ د وجې نه د حضرت عمر رضی الله عنه سترگې مبارکې اوغړیدې، نو کیناستلو، بیا ئې د هرمان په طرف اوکتل او وې فرمائیل: "الهرمان؟" خلقو جواب ورکړو: آوجی هرمان دې. لاندې باندې ئې ورته اوکتل او وې فرمائیل: "اعوذ بالله من النار، واستعین بالله" بیا ئې وفرمائیل: "الحمد لله الذی اذل بالاسلام هذا و اشیاعه".

وفد عرض اوکړو چې دا د اهواز بادشاه دې، دوی سره خبرې اترې اوکړې وې فرمائیل، اول ترینه دا زیورات وغیره کوز کړې، نو خلقو د هرمان لباس بدل کړو، ددې نه پس ورته

امیر المؤمنین مخاطب شو او وې فرمائیل چې تا د غدارۍ او بدعهدۍ څه نتیجه بیا موندله؟ هرمان او وئیل ائې عمر! د جاهلیت په زمانه کښې الله تعالی مونږ دواړه تنها پریځودلې وو، ددې وجې نه هغه وخت مونږ په تاسو باندې غالب راغلې وو، ځکه چې الله تعالی هغه وخت نه تاسو سره وو او نه مونږ سره وو، اوس چونکه تاسو ته د الله تعالی مدد حاصل دې، ددې وجې نه تاسو په مونږ باندې غالب راغلې په جواب کښې امیر المؤمنین او فرمائیل چې د جاهلیت په زمانه کښې تاسو په مونږ باندې ځکه غالب وئ چې تاسو متحد وئ، مونږ جدا جدا، بیا ئې او فرمائیل چې تا دا څو ځله بدعهدۍ او وعده خلافې او کړه، ددې په سلسله کښې ستا څه عذر دې؟ جواب کښې ئې او وئیل چې ماته ددې خبرې ویره ده چې د پوره خبرې ختمولو نه وړاندې تاسو ما قتل نه کړئ، وې فرمائیل چې د قتل ویره مه کوه، نو ددې نه پس هرمان اوبه طلب کړې، اوبه راوړلې شوې، چې کله هرمان اوبه ځکل غوښتل نو د هغه لاسونه رپیدل او وې وئیل چې ماته ویره ده چې د اوبو ځکلو دوران کښې تاسو ما قتل نه کړئ، امیر المؤمنین او فرمائیل، مه ویرېږه، اوبو ځکلو پورې به تاسو ته هیڅ هم نه وئیلې کیږي. په دې باندې هرمان ټولې اوبه واپولې، حضرت عمر رضی الله عنه او فرمائیل چې ده ته دوباره اوبه ورکړئ، قتل او تنده دواړه په ده باندې مه جمع کوئ. نو هرمان او وئیل چې اوس ماته د اوبو ضرورت نشته، ما خو لږه تسلی حاصلول غوښتل، امیر المؤمنین او فرمائیل چې زه به تا قتلوم. هرمان او وئیل چې تاسو ماته امان راکړې دې، څنگه به ما قتل کړئ؟ وې فرمائیل، دروغ وئ، ما تا ته کله امان درکړې دې؟ دلته حضرت انس رضی الله عنه او وئیل چې امیر المؤمنین! دې رښتیا وائی، امیر المؤمنین او وئیل ائې انسه! څوار شپې آیا زه هغه کس ته امان ورکړم چې هغه براء او مجزاه قتل کړې دی؟ د خلاصۍ څه صورت پیش کړه ورنه د سزا دپاره تیار شه، حضرت انس او وئیل، امیر المؤمنین! تاسو دوی ته دوه ځله امان ورکړې دې ځکه چې تاسو اول او فرمائیل، ”لا باس عليك حتى تخبرني“ بیا مو دا او فرمائیل: ”لا باس عليك حتى تشهيه“ دا خو امان دې، نورو حاضرینو هم د حضرت انس رضی الله عنه تائید او کړو، په دې باندې امیر المؤمنین د هرمان طرفته متوجه شو او وې فرمائیل چې تا ما سره دهوکه کړې ده لیکن په خدایې قسم چې زه به ستا په دهوکه کښې رانشم مگر دا چې ته اسلام قبول کړې، نو هرمان اسلام قبول کړو، امیر المؤمنین د هغه دپاره د کال دوه زره رقم مقرر کړو او په مدینه منوره کښې ئې د اوسیدو اجازت ورکړو.

هرمان ته چونکه عربی نه ورتله، ددې وجې نه ددې دواړو مینځ کښې د ترجمانی کولو ذمه داری حضرت مغیره بن شعبه او حضرت زید بن ثابت رضی الله عنه پوره کړه. حافظ ابن کثیر رحمه الله فرمائی چې وروستو د دوی په اسلام کښې حسن و جمال راغلې وو، دوی به هر وخت د حضرت عمر رضی الله عنه سره وو، کله به هم د هغوی نه نه جدا کیدو، د امیر المؤمنین د شهادت نه پس څه کسانو دا الزام اولگوو چې د ابولؤلؤ فیروز په لمسولو او دهوکه کولو کښې دده پټ لاس وو، په دې بنیاد باندې حضرت عبید الله بن عمر رضی الله عنه دا دواړه قتل کړل.

حافظ ابن کثیر رحمه الله مزید فرمائی چې کله حضرت عبید الله بن عمر رضی الله عنه د دوی د قتل کولو

دپاره توره اوچت کړو نو دوی "لا اله الا الله" او وئیل حضرت عمر رضی الله عنه ته دې ډیر گران وو او په جنگی کارونو کښې به ئې ددوی نه مشوره اخستله. کما فی حدیث الباب ایضاً (۱).
قوله: فقال: إني مستشيرك في مغازی هذه: نو حضرت عمر رضی الله عنه هر زمان ته او وئیل چې زه په خپلو جنگی کارونو کښې ستاسو نه مشوره اخستل غواړم د "مغازی" یاء مشدد ده، دویمه یاء د متکلم د ضمیر ده. (۲).

د "مغازی" نه د حضرت عمر رضی الله عنه څه مراد وو؟ ددې وضاحت د طبرانی او د مصنف ابن ابی شیبه (۳) د معقل بن یسار رضی الله عنه د روایت نه کیږي چې حضرت عمر رضی الله عنه د فارس، اصفهان او د آذربایجان په باره کښې د هر زمان نه تپوس او کړو، مشوره ئې ورسره او کړه چې د کومې علاقې نه د جنگ ابتداء او کړې شی، وجه ښکاره ده، چونکه هر زمان هم ددې علاقه سره تعلق ساتلو، ددې وجې نه په دې سلسله کښې معلومات ورته هم زیات وو. (۴).

قوله: قال: نعم، مثلها ومثل من فيها من الناس من عدو المسلمين مثل طائر له رأس، وله جناحان، وله رجلان: هر زمان او وئیل چې آوجی ددې جنگونو او د هغه کسانو، څوک چې په دې جنگونو کښې د مسلمانانو د دشمن په صورت کښې شریک وی، ددوی مثال دهغې مرغۍ په شان دې چې دهغې یوسر، دوه وزرې او دوه خپې وی. نعم حرف ایجاب دې، علامه کرمانی او عینی رحمهما الله فرمائی چې په کوم روایت کښې "نعم" د فعل مدح په صورت کښې راغلې دې، که دغه روایت صحیح وی نو مطلب به داوی چې ددې د ټولو نه ښه مثال د مرغۍ په شان دې.....

د فعل مدح کیدو په صورت کښې به تقدیری عبارت داسې وی: "نعم المثل مثلها" او په مثلها کښې چې کوم ضمیر مجرور دې، هغه د ارض طرفته راجع دې کوم چې د کلام د سیاق نه ذهن ته راځي او مثلهاد مبتدا کیدو د وجې نه مرفوع دې او وړاندې جمله "مثل طائر....." خبر دې. (۵).

(۱) تفصیلی واقعاتو دپاره اوگوری، العمدة: ۸۳/۱۵، والفتح: ۲۶۴/۶، والبدایة والنهاية: ۸۲/۷-۸۸، والکامل لابن الاثير: ۳۸۹/۲-۳۹۲، سنة سبع عشرة. ذکر فتح را مهر مز.....، والفاروق لشبلی: ۱۴۳-۱۴۵.

(۲) فتح الباری: ۲۶۴/۶، وعمدة القاری: ۸۳/۱۵.

(۳) المصنف لابن ابی شیبة: ۲۸۸/۱۸، کتاب البعث والسرائا، باب فی النعمان بن مقرن الی نهاوند، رقم (۳۴۴۸۵)، ومجمع الزوائد: ۲۱۵/۶.

(۴) فتح الباری: ۲۶۴/۶، وعمدة القاری: ۸۳/۱۵، وارشاد الساری: ۲۳۱/۵.

(۵) شرح الکرماني: ۱۲۷/۱۳، وعمدة القاری: ۸۴/۱۵.

قوله: فان كسر أحد الجناحين نهضت الرجلان بجناح والراس، فان كسر الجناح الآخر نهضت الرجلان والراس، وان شذخ الراس، ذهبت الرجلان والجناحان والراس: که ددې مرغی یو وزر مات کړې شی نو دواړه خپې، لاس او وزرې به اوچتوی او دا مرغی به حرکت کوی، که دویم وزر ئې هم مات کړې شی نو خپې او سر به اوچتوی، بیا به هم حرکت کوی. او که سر ورله مات کړې شی نو دواړو خپې، دواړې وزرې او سر هرڅه به ختم شی.

مطلب دادې چې که ددې مرغی په دواړو وزرو کښې یو وزر مات کړې شی نو بیا هم څه فرق نه راځي، په دویم وزر، سر او دواړو خپو سره به د حرکت کولو قابله وی، دغه شان که دویم وزر ئې مات کړې شی نو بیا به هم سر او خپې اوچتولې شی لیکن که سر ورله مات کړې شی نو قصه ختمه شوه، په دې صورت کښې به د خپو او د وزرو حیثیت بالکل ختم شی، ځکه چې اصل خیز خو سر دې.

د "شذخ" معنی ده ماتول، علامه ابن الاثیر رحمته الله فرمائی، چې دننه نه خالی خیز ماتولو ته شذخ ویلې دی، "تقول: شذخت راسه فان شذخ" (۱).

قوله: فالراس كسري، والجناح قيصر، والجناح الآخر فارسك: نو سر ئې کسری دې، او یو وزر قيصر او دویم وزر ئې د فارس قوم دې.

یو اشکال او د هغې جوابات: تاریخی طور باندې دا خبره منلې شوې ده چې د قيصر سلطنت جدا وو او د کسری جدا وو، قيصر د روم بادشاه وو او کسری د ایران بادشاه وو، ددې وجې نه دا وینا څنگه صحیح کیدې شی چې سر خو کسری دې او قيصر ئې وزر یعنی تابع دې حالانکه په حقیقت کښې خو قيصر د هغه تابع نه وو.

ددې اشکال جواب دا شوې دې چې د کسری مثال د سروو، ځکه چې په دغه زمانه کښې دده نه لوئې بادشاه نه وو، د دنیا لوئې لوئې بادشاهانو به دده نه ویره کوله او دده نه به ویریدل، دغه شان دې د دوی دپاره سر شو. دا جواب علامه کرمانی، عینی او قسطلانی رحمته الله

کړې دې (۲). لیکن د حافظ ابن حجر رحمته الله وینا داده چې د بخاری شریف دا روایت صحیح نه دې، صحیح روایت هغه دې کوم چې امام طبری رحمته الله د حضرت معقل بن یسار رضی الله عنه نه روایت

کړې دې، په هغې کښې دی: "فان فارس اليوم راس وجناحان" او دا روایت د ابن ابی شیبې د روایت هم موافق دې کوم چې وړاندې تیر شو چې حضرت عمر رضی الله عنه هر زمان سره کومه مشوره کړې وه نوهغه د فارس، اصفهان او د اذربيجان په باره کښې وه او هم دا خبره راجحه هم ده (۳).

(۱) پورته حواله جات، والنهایه فی غریب الحدیث والاثار: ۴۵۱/۲، باب الشین مع الدال)۔

(۲) شرح الکرماني: ۱۲۷/۱۳، وعمدة القاری: ۸۴/۱۵، وشرح القسطلانی: ۲۳۱/۵)۔

(۳) تاریخ ابن جریر الطبرانی: ۵۲۰/۲، سنة احدى وعشرين، ومجمع الزوائد: ۲۱۴/۶، ومصنف ابن ابی شیبې:

۲۸۸/۱۸، کتاب البعث والسرایا،، رقم (۳۴۴۸۵)۔

ددې وجه داده چې قیصر به په شام کښې وو یا شمالي علاقه کښې عراق، فارس او مشرق وغیره سره د هغه څه تعلق نه وو، ددې وجې نه دلته د قیصر د ذکر کولو هیڅ معنی نشته بیا حافظ صاحب د علامه کرمانی رحمۃ اللہ علیہ وغیره په رد کښې فرمائی چې که کسری د ټولو بادشاهانو سردار او ګرځولې شی په داسې حال کښې چې هغه د مشرق بادشاه وو، او د روم شاه قیصر د هغه نه کم او ګرځولې شی او په دې بنیاد باندې قیصر ته د کسری وزیر او وئیلې شی نو بیا هم دا مناسب وه چې دویم وزیر هغه بادشاهان او ګرځولې شی کوم چې د قیصر په مقابل کښې ښې طرفته وو، مثلاً د هندوستان او د چین بادشاهان لیکن د حضرت معقل بن یسار رضی اللہ عنہ حدیث په دې خبره باندې دلالت کوی چې د هرمان مراد هم هغه علاقې وې چې د کومو په باره کښې هغه ته معلومات حاصل وو، گویا که د ایران فوج په دغه وخت کښې په دریو ښارونو کښې وو، ددې فوج زیاته او لویه حصه په هغه ښار کښې اوسیده کوم ځانې چې کسری موجود وو، ددې وجې نه کسری سر شو او باقی ښارونو ته به وزیر او وئیلې شی، ځکه چې دې د دغه ټولو سردار وو. (۱) هم دا تحقیقی خبره معلومېږي ځکه چې د حافظ صاحب په رائي کښې وزن زیات دي.

قوله: فمر المسلمین فلینفروا الی کسری: نو تاسو مسلمانانو ته حکم ورکړئ چې هغوی د کسری په طرف لاړ شی.

د تاریخ طبری د مبارک بن فضاله په روایت کښې دی چې هرمان او وئیل چې تاسو ترینه وزیر پرې کړئ، سر به نرم شی، دا رائي حضرت عمر رضی اللہ عنہ ناخوښه کړه او وې فرمائیل چې اول به ترینه سر کټ کوم. ددې روایت په بنیاد باندې دا خبره کیدې شی چې هرمان ورته اول د دواړو وزرو د کټ کولو مشوره ورکړې وه لیکن هرکله چې حضرت عمر رضی اللہ عنہ دا مشوره ناخوښه او رد کړه نو هرمان دوباره صحیح مشوره ورکړه چې اول مقابل کسری سره کول پکار دی لکه څنګه چې د باب په حدیث شریف کښې دی. (۲)

وَقَالَ بَكْرٌ وَزَيَادٌ جَمِيعًا عَنْ جَبْرِ بْنِ حَيَّةَ قَالَ قَدَدْنَا عُمَرُ وَاسْتَعْمَلَ عَلَيْنَا النُّعْمَانُ بْنُ مُقَرِّنٍ، حَتَّى إِذَا كُنَّا بِأَرْضِ الْعَدُوِّ، وَخَرَجَ عَلَيْنَا عَامِلٌ كَسْرِي فِي أَرْبَعِينَ أَلْفًا، فَقَامَ تَرْجُمَانٌ فَقَالَ لِيُكَلِّمْنِي رَجُلٌ مِنْكُمْ. فَقَالَ الْمُبْغِيرَةُ سَلْ عَمَّا شِئْتَ. قَالَ مَا أَنْتُمْ قَالَتْ نَحْنُ أَنْاسٌ مِنَ الْعَرَبِ كُنَّا فِي شَقَاءٍ شَدِيدٍ وَبَلَاءٍ شَدِيدٍ، ثُمَّ صُفِّ الْجُلْدَ وَالنَّوَى مِنَ الْجُوعِ، وَتَلَبَّسُ الْوَبَرِ وَالشَّعَرِ، وَتَعْبُدُ الشَّجَرَ وَالْحَجَرَ، فَبَيْنَا نَحْنُ كَذَلِكَ، إِذْ بَعَثَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَرَبُّ الْأَرْضِينَ تَعَالَى ذِكْرَهُ وَجَلَّتْ عَظَمَتُهُ إِلَيْنَا نَبِيًّا مِنْ أَنْفُسِنَا، نَعْرِفُ أَبَاهُ وَأُمَّهُ، فَأَمَرَنَا نَبِيُّنَا رَسُولَ رَبِّنَا - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَنْ نَقَاتِلَكُمْ حَتَّى تَعْبُدُوا اللَّهَ وَحْدَهُ أَوْ تَوَدُّوا الْحِزْبَ، وَأَخْبَرَنَا نَبِيُّنَا - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَنْ رَسُولِهِ رَبِّنَا أَنَّهُ مَنْ قُتِلَ مِنَّْا صَارَ إِلَى الْجَنَّةِ فِي نَعِيمٍ لَمْ يَرِ مِثْلَهَا

(۱) فتح الباری: ۶/۲۶۴ -

(۲) پورته حواله، و تاریخ طبری: ۲/۵۲۰ -

قَطُّ، وَمَنْ بَقِيَ مِنْ أَمْلِكِ رِقَابِكُمْ. فَقَالَ النُّعْمَانُ رُبَّمَا أَشْهَدَكَ اللَّهُ مِثْلَهَا مَعَ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَلَمْ يُنْذِرْكَ وَلَمْ يُخْزِكَ، وَلَكِنِّي شَهِدْتُ الْقِتَالَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - كَانَ إِذَا لَمْ يُقَاتِلْ فِي أَوَّلِ النَّهَارِ انْتِظَرْتُ حَتَّى تَهْبِ الْأَرْوَاحُ وَتُخْضَرَ الصَّلَوَاتُ. [۷۰۹۲]

قوله: وقال بكر وزياد جميعاً: عن جبير بن حية، قال: فندبنا عمر: او بكر او زياد دواړه د حضرت جبير بن حية نه نقل كوي چې هغوی او فرمائیل چې حضرت عمر مونږ طلب كړو. مطلب دادې چې هر كله د هر زمان او د حضرت عمر رضي الله عنه مشوره او شوه او حضرت عمر رضي الله عنه د جنگي حكمت عملي فيصله او كړه نو بيا ئې د يته عملي جامه اغوستلو دپاره مجاهدين راوبلل او ورته ئې د جهاد دپاره د جمع كيدو او وئيل.

قوله: واستعمل علينا النعمان بن مقرن: او حضرت نعمان بن مقرن رضي الله عنه ئې زمونږ امير مقرر كړو.

حضرت نعمان بن مقرن رضي الله عنه: دا مشهور صحابي حضرت نعمان بن مقرن بن عائذ بن ميجا بن هجير بن نصر المزني رضي الله عنه دې. البته د ابن سعد رضي الله عنه رائي داده چې مقرن د دوی نيکه دې، د دوی د والد نوم هغوی عمرو ذکر كړې دې يعنی نعمان بن عمرو بن مقرن.

د دوی كنيت ابو عمرو يا ابو حكيم دې.

د دوی د نبی كريم صلی الله علیه و آله نه روايت كوي. د دوی نه په روايت كوونكو كښې د دوی ځوئي معاويه بن النعمان، جبير بن حية الثقفي، مسلم بن هيثم عدي، معقل بن يسار مزني او ابو خالد والبي رحمهم الله وغیره شامل دي.

د دوی د ټولو نه اول غزوه "غزوة خندق" ده، په فتح مکه كښې هم د نبی كريم صلی الله علیه و آله سره شريك وو، په دې موقع باندي د قبيله مزينه بيرغ د دوی په لاس كښې وو.

حضرت سويد بن مقرن رضي الله عنه د دوی ورور دې، مصعب بن عبدالله زبيري رضي الله عنه فرمائي چې حضرت نعمان رضي الله عنه خپلو اووه (۷) وروڼو سره هجرت كړې وو. دا اووه واړه وروڼه په "الهاذون" سره مشهور وو، حضرت عبدالله بن مسعود رضي الله عنه فرمائي چې د ايمان څه كورونه

١ (عمدة القاري: ۸۴/۱۵، وارشاد الساري: ۲۳۲/۵) -

٢ (تهذيب الكمال: ۴۵۸/۲۹، وسير اعلام النبلاء: ۳۵۶/۲، وطبقات ابن سعد: ۱۸/۶) -

٣ (طبقات ابن سعد: ۱۸/۶، واکمال مغلطاي: ۶۳/۱۲) -

٤ (تهذيب الكمال: ۴۵۹/۲۹، وسير اعلام النبلاء: ۳۵۶/۲) -

٥ (تهذيب الكمال: ۴۵۹/۲۹) -

٦ (پورته حواله، وطبقات ابن سعد: ۱۸/۶، واکمال مغلطاي: ۶۳/۱۲) -

٧ (تهذيب الكمال: ۴۵۹/۲۹، وعمدة القاري: ۸۴/۱۵) -

دی او د نفاق هم څه کورونه دی، د آل مقرن کورنی د ایمان په کورونو کښې ده (۱). د حضرت نعمان رضی الله عنه نه په خپله روایت دي، فرمائی چې د قبيله مزينه څلور سوه کسانو سره مونږ د

نبي صلی الله علیه و آله په خدمت کښې حاضر شو (۲).

علامه ابن عبدالبر رحمته الله وغيره ليکلي دي چې حضرت نعمان رضی الله عنه بيا په بصره کښې رهائش اختيار کړو او د هلته نه کوفې ته منتقل شو، ددې ځانې نه حضرت سعد رضی الله عنه دوی د "کسکر" په طرف روان کړل، چرته چې دوی د "زندورد" اوسيدونکو سره صلح او کره او مدينې منورې ته ئې د قادسيه د فتحې خوشخبري راوړه، ددې نه پس چې کله دې اطلاع حضرت عمر رضی الله عنه پريشان کړو چې د اصفهان، همذان، رې، اذربيجان او د نهاوند ايرانيان جمع شوې دي نو هغوی د نبي صلی الله علیه و آله ملگرو سره مشوره او کره، حضرت علي رضی الله عنه دا رائي ورکړه چې اهل کوفه ته پيغام ورکړئ چې د هغوی ۳۱۲ حصه خو اسلامي لښکر سره لاړه شي او ۱/۳ حصه ښځو وغيره سره پاتې شي او اهل بصره ته هم پيغام ورکړئ. حضرت عمر رضی الله عنه د دوی نه تپوس او کړو چې ددې خلقو امير څوک شي؟ حضرت علي او فرمايل چې تاسو په رائي کښې زمونږ نه زيات افضل او زيات پوهه ئې. نو حضرت عمر رضی الله عنه او فرمايل چې زه به په دوی باندې داسې سړې امير مقرر کړم چې ددې اهل هم وي. امير المؤمنين ددې نه پس مسجد طرفته روان شو نو حضرت نعمان رضی الله عنه ئې هلته په مانځه کښې مشغول بيا موندلو.

ددې نه پس د ابن ابی شيبه په روايت کښې دي چې امير المؤمنين کيनाستلو او انتظار ئې کوو چې کله دې د مانځه نه فارغ شو نو امير المؤمنين ورته اوويل چې زه تا لره امير جوړول غواړم؟ هغوی اوويل چې که دا ولايت او امارت د ټيکس د وصولي دپاره دې نو نه، ليکن د غازي په طور قبول دي. حضرت عمر رضی الله عنه او فرمايل: "فانك غاز" او دوی سره حضرت زبير، حذيفه، ابن عمر، الاشعث او عمرو بن معديكرب رضی الله عنه هم اووتل.

د کوفې او د بصري لښکر اخستلو سره دوی د ايرانيانو طرفته ورغلل، هلته د دوی په لاس اصفهان فتح شو، ددې نه پس د نهاوند غزوه چې په ۲۱ هجري کښې اوشوه، په هغې کښې دوی شهيد شو، ددې نه پس د لښکر قيادت حضرت حذيفه رضی الله عنه سمبال کړو، آخر دا چې کاميابي او کامراني حاصله شوه (۳). د دوی شهادت د جمعة المبارک په ورځ باندې اوشو، چې د هغې خبر حضرت عمر رضی الله عنه مسلمانانو ته د منبر نه ورکړو او بيا ئې د حضرت نعمان رضی الله عنه په ياد کښې ډير زيات اوږل (۴). رضي الله عنه وأرضاه

(۱) تهذيب الكمال: ۴۵۹/۲۹، وطبقات ابن سعد: ۲۰/۶، واکمال مغلطاي: ۶۳/۱۲.

(۲) تهذيب الكمال: ۴۵۹/۲۹، والاستيعاب: ۲۹۹/۲، ۳۰۰، باب النعمان.

(۳) تهذيب الكمال: ۴۵۹/۲۹، والاستيعاب: ۳۰۰/۲، والمصنف لابن ابی شيبه: ۲۸۹/۱۸، كتاب البعث والسرايا..... رقم (۳۴۴۸۵)، وفتح الباري: ۲۶۴/۶.

(۴) سير اعلام النبلاء: ۳۵۷/۲، وذكر الذهبي في ذلك حكاية ايضا..... [بقية بر صفحه آئنده...]

قوله: حتی إذا کنا بأرض العدو: تردې چې مونږ د دشمن په زمکه کښې وو. د "ارض العدو" نه مراد نهاوند دې، لکه څنگه چې د طبری وغیره په روایت کښې ددې وضاحت دې. (۱)

د نهاوند تعارف: نهاوند "بضم النون وتخفيف الهاء وفتح الواو وسكون النون وفي آخره دال مهملة" (۲) د همدان په جنوب کښې یو ښار دې، ددې تعمیر چونکه نوح علیه السلام کړې وو، ددې وجې نه دې ته "نوح اوند" وئیلې کیده، یعنی "عمرها نوح علیه الصلوة والسلام" بیا حاء په هاء سره بدله کړې شوه، دا ښار خپلو نهرونو او د باغاتو د وجې نه مشهور وو. (۳)

قوله: وخرج علينا عامل کسری فی أربعين ألفاً: او د کسری گورنر خلویښت زره کسانو سره زمونږ مخامخ شو.

د طبری په روایت کښې ددې عامل نوم بندار، او د ابن ابی شیبې په روایت کښې ذوالحاجبین مذکور دې، شاید په دې دواړو نومونو کښې یو د دوی لقب وی. (۴)

بیا په دې ځان پوهه کړئ چې د باب په حدیث کښې دې: "وخرج علينا عامل کسری فی أربعين ألفاً" دا د هغې لښکر تعداد دې کوم چې په اهل فارس او کرمان باندې مشتمل وو. د اصل لښکر تعداد یونیم لاک وو چې په هغې کښې د اهل نهاوند حصه ۲۰ زره، د اهل اصفهان ۲۰ زره، اهل قم وقاشان ۲۰ زره، د اهل ذریبجان ۳۰ زره او د نورو علاکو ۲۰ زره حصه وه. ددې ټولو مجموعه یولاک پنځوس زره جوړېږي. (۵)

بقیه از حاشیه گذشته [وتهدیب التهذیب: ۴۵۶/۱۰] _ وفی الطبرانی: (۵۲۱/۲): وکتب الی عمر بالفتح مع رجل من المسلمین، فلما اتاه قال له: ابشر یا امیر المؤمنین بفتح، اعز الله به الاسلام واهله، واذل به الکفر واهله، فحمد الله عز وجل، ثم قال: النعمان بعثک؟ قال: احتسب النعمان یا امیر المؤمنین. قال: فبکی عمر، واسترجع، قال: و من ویحک؟ قال: فلان و فلان حتی عدله ناسا کثیرا، ثم قال: و آخرین یا امیر المؤمنین لا تعرفهم. فقال عمر: وهو بکی: لا یضرهم ان لا یعرفهم عمر، ولكن الله یعرفهم.

(۱) عمدة القاری: ۸۴/۱۵، وفتح الباری: ۲۶۴/۶، و تاریخ الطبرانی: ۵۲۰/۲.

(۲) علامه عینی رحمه الله دا کلمه دغه شان ضبط کړې ده (۸۴/۱۵) او علامه یاقوت حموی نون لره مفتوح یا مکسور وئیلې دې (معجم البلدان: ۳۱۵/۵) او علامه عینی رحمه الله ددې انکار کړې دې چې نون مفتوح وی یا مکسور.

(۳) پورته حواله جات.

(۴) تاریخ طبری: ۵۲۰/۲، و مصنف ابن ابی شیبې: ۲۸۹/۱۸، کتاب البعث والسرایا..... رقم (۳۴۴۸۵)، والفتح: ۲۶۴/۶. البته علامه عینی او یاقوت الحموی رحمه الله یو دریم نوم هم ذکر کړې دې، الفیروزان چې مصحف کیدو سره په عمدة القاری کښې "الغیرزان جوړ شوې دې، کیدې شی چې د طباعت غلطی وی. او گوری، عمدة: ۸۴/۱۵، و معجم البلدان: ۳۱۶/۵، دغه شان او گوری، البداية والنهاية: ۱۱۰/۷.

(۵) عمدة القاری: ۸۳/۱۵.

قوله: فقام ترجمان، فقال: ليكني رجل منكم، فقال المغيرة: سل عما

شئت: نو ترجمان اودريده، وې وئيل په تاسو کښې دې يو کس ماسره خبرې اوکړې، حضرت مغیره رضي الله عنه او فرمائيل تپوس اوکړه چې څه تپوس کول غواړې. دلته په روايت کښې اختصار دې، مينځ کښې واقعات ذکر نه دي، ددې تفصيل دادې چې هرکله دواړه ډلې جمع شوې نو بنډار خپل قاصد د مسلمانانو په طرف روان کړو چې خپل يو کس راواستوي، چې هغه سره مونږ خبره اوکړو نو مسلمانانو حضرت مغیره رضي الله عنه روان کړو، د دواړو ډلو مينځ کښې فاصله يو نهر وو، حضرت مغیره رضي الله عنه روان شو او نهر نه واوړيدلو، هلته بنډار خپلو ملگرو سره مشوره اوکړه چې د مسلمانانو قاصد ته څنگه کينم؟ هغوی ورته اووئيل چې د بادشاهت شکل و صورت اختيار کړه، نو هغه په خپل تخت باندې کيناسته، په سر باندې ئې تاج کيخوده، شهزادگان د هغه مخامخ په دوو قطارونو کښې اودريدل، او د سرو زرو بنگرې او د ريښمو لباس ئې په بدن باندې وو، بيا هغه حضرت مغیره رضي الله عنه ته دننه د داخلیدو اجازت ورکړه، نو دوو کسانو دوی ځان سره اونيول او دننه لاړل، دوی سره خپله توره او نيزه هم وه، حضرت مغیره رضي الله عنه توره په قالين باندې رابښکه، دې دپاره چې دا خلق زما ددې کار نه اثر واخلي چې دې خلقو لږه به زما توره زخمی کوی (۱).

قوله: قال: ما أنتم؟: بنډار اووئيل: ته څه ئې؟

بنډار حضرت مغیره رضي الله عنه ته داسې خطاب اوکړه چې کلمه د "ما" ئې استعمال کړه کومه چې د غير ذوی العقول دپاره وضع شوې ده، دا د حقارت په طور سره چې ستا څه حيثيت دې چې مونږ سره د جنگ کولو دپاره راغلي ئې؟ (۲).

د ابن ابی شيبه په روايت کښې دا اضافه هم ده چې بنډار اووئيل، ائې عربو! لورې او مشقت تاسو خلق تنگ کړئ نو دلته راغلي، که تاسو غواړئ نو مونږ تاسو ته د لارې خرچه وغيره درکولې شو، تاسو خپل ښار ته واپس لاړ شئ. حضرت مغیره رضي الله عنه فرمائي چې دده په خبرې اوریدو سره ما د الله تعالی تعريف او ثناء بيان کړه، بيا مې اووئيل چې تا زموږ متعلق څه اووئيل نو په دې کښې غلطی نشته، مونږ هم دغه شان ووم (۳).

قوله: قال: نحن أناس من العرب، كنا في شقاء شديد، نمص الجلد والنوى

من الجوع ونلبس الوبر والشعر، ونعبد الشجر والحجر: حضرت مغیره بن شعبه رضي الله عنه او فرمائيل مونږ د عرب قوم څه کسان يو، مونږ ډير سخت د بدبختی ښکار وو، مونږ به د

(۱) فتح الباری: ۲۶۵/۶، وتاريخ الطبرانی: ۵۲۰/۲، والمصنف لابن ابی شيبه: ۲۸۹/۱۸، کتاب البعوث..... رقم (۳۴۴۸۵)، ومجمع الزوائد: ۲۱۴/۶. _

(۲) العمدۃ: ۸۵/۱۵، والفتح: ۲۶۵/۶، وتحفة الباری: ۵۶۵/۳، وارشاد الساری: ۲۳۲/۵. _

(۳) عمدة القاری: ۸۵/۱۵، وفتح الباری: ۲۶۵/۶. _

لوږې د وجې نه د اونیو پټت او هډوکی چوپل، د وړې او د ویختو لباس به مونږ اغوستلو او کانږو، اونیو عبادت به مو کوو.

”الویر“ د دې مفرد وېره دې، داوښ، سوې وغیره نرم ویختو او وړې وغیره دپاره استعمالیږي.^(۱)
قوله: فبینا نحن كذلك، اذ بعث رب السموات ورب الارضین - تعالی ذکره، وجلت عظمته - إلینا نبیا من أنفسنا، نعرف أباه وأمه: مونږ په دې حال کښې وو چې د اسمانونو او د زمکو رب..... د هغه ذکر دې اوچت او عظمت دې لوښې وی..... زموږ طرفته هم زموږ په نسل کښې یو نبی راواستوو، چې مونږ د هغه مور پلار پیژنو.
 یعنی مونږ د دې بدبختی او د غریبی ښکار وو، حقیقی رب مونږ هیرکړې وو چې رب ذوالجلال په مونږ باندې رحم او کړو او هغه هم زموږ په نسل کښې یو سړې منتخب کړو او زموږ د هدایت دپاره ئې راواستوو، چې هغه مونږ ډیر ښه پیژنو، د هغوی د حسب نسب د شرافت هم مونږ ته ښه پته ده چې په مونږ ټولو کښې اشرف او د نسب په اعتبار سره د ټولو نه غوره او په خبرو اترو کښې د ټولو نه زیات رښتونی انسان دې.^(۲)

قوله: فامر نبینا ورسول ربنا صلی الله علیه وسلم أن نقاتلکم حتی تعبدوا الله وحده، أو تؤدوا الجزیة: نو زموږ نبی او زموږ د رب پیغمبر ﷺ مونږ ته حکم راکړو چې مونږ تاسو سره قتال او کړو تر دې چې تاسو د یو خدای عبادت او کړئ یا تاسو مونږ ته جزیه راکړئ.
 د دې حدیث نه هم معلومه شوه چې د مجوسیانو نه جزیه اخستل صحیح دی، د کوم چې حضرت مغیره رضی الله عنه وضاحت کوی ځکه چې د هغوی مخاطب خلق مجوسیان وو.^(۳)

قوله: وأخبرنا نبینا عن رسالة ربنا أنه من قتل مناصراً إلى الجنة فی نعیم لم یر مثلها قط، ومن بقى منّا ملک رقابکم: دغه شان زموږ نبی مونږ ته زموږ د رب له طرفه دا پیغام هم راکړو چې په مونږ کښې څوک مقتول او شهید شی نو هغه به نیغ جنت ته ځي، په داسې نعمتونو کښې به وی، چې د هغې مثال بالکل لیدلې شوې نه دې. او څوک چې ژوندې پاتې شی نو هغه به ستاسو د سرونو مالک وی.
 یعنی مونږ په هر صورت کښې کامیاب یو، که شهادت راته ملاؤ شو نو جنت دې، چې د هغې هیڅ مثال نشته که ژوندې پاتې شو نو ستاسو د سرونو مالکان به یو، د نبی صلی الله علیه و آله په وینا مبارکه باندې چونکه زموږ سل فیصده یقین دې، د دې وجې نه مونږ د دې ځای نه تلونکی او واپس کیدونکی نه یو، نه ستاسو نه ویریدونکی یو، په طبری کښې د حضرت مغیره رضی الله عنه نه هم دا مفهوم او معنی روایت شوې ده،

(۱) القاموس الوحید، مادة: وبر“.

(۲) المصنف لابن ابی شیبة: ۲۸۹/۱۸، والعمدة: ۸۵/۱۵، وفتح الباری: ۲۶۵/۶، وابن بطال: ۳۳۵/۵.

(۳) فتح الباری: ۲۶۵/۶، وارشاد الساری: ۲۳۲/۵، وشرح الکرمانی: ۱۲۸/۱۳.

”وإنا والله، لا نرجع إلى ذلك الشقاء، حتى نغلبكم على ما في أيديكم“ (۱)

”وفيه فصاحة المغيرة، من حيث أن كلامه مبين لآحوالهم فيما يتعلق بدينهم: من المطعوم والملبوس، ودينهم من العبادة، وبنعاملتهم من الأعداء: من طلب التوحيد أو الجزية، ولبعادهم في الآخرة إلى كونهم في الجنة، وفي الدنيا إلى كونهم ملوكا للرقاب.....“ انظر الكواكب الدرية ۱۳/۱۲۸-.

فقال النعمان (۲): ربما أشهدك الله مثلها مع النبي ﷺ فلم يندمك ولم يخزك، ولكني شهدت القتال مع

رسول الله ﷺ، كان إذا لم يقاتل في أول النهار، انتظر حتى تهب الارواح، وتحضر الصلوات به دي باندې حضرت نعمان بن مقرن (رضي الله عنه) او فرمائيل (انبي مغیره!) تاسو ډیر وخت نبی کریم ﷺ سره په جنگونو کښې پاتې شوې ئې، هلته تاسو الله تعالی د پښیمانیا او د رسوائی نه محفوظ ساتلې ئې او زه هم په څو جنگونو کښې د نبی کریم ﷺ سره شریک پاتې شوې یم، ستاسو عادت دا وو چې که د ورځې په شروع کښې به مو قتال نه شروع کوو نو د مونځ نه پس به تاسو د مناسب هواگانو د چلیدو انتظار کولو.

د حضرت نعمان بن مقرن (رضي الله عنه) په دې پورتنی ارشاد کښې د شارحینو اختلاف: حضرت نعمان (رضي الله عنه) پورته ذکر شوې ارشاد مبارک په دوو حصو یعنی ”ربما أشهدك الله..... ولم يخزك“

او ”ولكني شهدت..... الخ“ باندې مشتمل دي، اوس ددې دواړو حصو په خپل مینځ کښې چې کوم ربط او تړون دي نو په هغې کښې د شارحینو اختلاف دي چې ددې جملو مطلب او مقصد څه دي؟

د علامه ابن بطال (رحمته الله علیه) میلان دي طرفته دي چې د اولنې جملې مفهوم هم مستقل دي او د دویمې جملې مفهوم هم مستقل دي، ددې دواړو مینځ کښې هیڅ تړون نشته، لکه دوی د اولنې جملې ”ربما أشهدك الله مثلها.....“ تشریح داسې کوي چې حضرت نعمان حضرت مغیره بن شعبه (رضي الله عنه) ته او فرمائيل چې مغیره! تاسو تیر شوې وخت کښې په دغه شان مشکل حالاتو کښې نبی کریم ﷺ سره پاتې شوې یئ، هغوی سره تاسو جنگونو کښې هم وئ، لیکن هغه مصیبتونو او پریشانو چرته تاسو پښیمانه نه کړئ کوم چې نبی ﷺ ته پیښ شوې وو، نه دي خبرې تاسو پریشانه کړئ چې تاسو ولې د غزواتو نه ژوندی راغلئ، ځکه چې ددغه مصیبتونو او پریشانو په مقابله کښې کوم نعمتونه او شهادت ملاویدل وو نو د هغې تاسو ته ښه علم وو.

او د حضرت نعمان (رضي الله عنه) دا ارشاد ”ولكني شهدت القتال مع رسول الله ﷺ“ دا د یو نوې کلام ابتداء او د نوې قصې شروع کول دي، چې په دې کښې حضرت نعمان (رضي الله عنه) خپل فوج ته د

(۱) فتح الباری: ۶/۲۶۵، وعمدة القاری: ۱۵/۸۵، وقال العلامة الكرمانی شارحا لكلام المغيرة: (۱)

(۲) قوله: النعمان الحديث، أخرجه الترمذی ایضا. كتاب السير، ما جاء فی الساعة التي يستحب فيها القتال.

نبی کریم ﷺ په باره کښې دا وئیلې دی چې که نبی ﷺ به د جنگ ابتداء د ورځې په شروع کښې نه کوله نو د جنگ نه به منع شو، تردې چې د الله تعالی د مدد، هواګانې او چلیبرې او د مونځ وخت شی. ددې معنې د تائید دپاره علامه ابن بطلال رحمته الله علیه دوه حدیثونه پیش کړي دي، کوم چې د حماد بن سلمه عن النعمان بن مقرن د طریق نه روایت دي چې "کان النبی صلی الله علیه وسلم اذا لم یقاتل اول النهار اخر القتال، حتی یرد الشمس وتهب ریاح النصر" (۱).

علامه ابن بطلال رحمته الله علیه مزید دا فرمائی چې غوره وختونه د مانځه وختونه دي، چې په دې کښې اذان هم دي او په حدیث شریف (۲) کښې راغلې دي: "الدعاء بین الاذان والاقامة لا یرد". چې د "اذان او اقامت مینځ کښې کومه دعا او غوښتنې شی نو هغه نه رد کیږي". مطلب دا شو چې د اذان او اقامت او دغه شان د مونځ نه پس د دعا موقع ملاؤ شی نو دا به د الله تعالی د امداد موجب وي (۳).

لیکن د حافظ ابن حجر، علامه عینی او حافظ کرمانی رحمهم الله قول دادې چې دا دواړه جدا جدا جملې خو دی لیکن ددې په خپل مینځ کښې تړون هم شته او دویمې جملې نه نوې قصه نه شروع کیږي، لکه څنګه چې د علامه ابن بطلال رحمته الله علیه خیال دي (۴). لکه په طبری کښې چې د مبارک بن فضاله کوم روایت دي، په هغې کښې مبارک د زیاد بن جبیر په واسطې سره د حضرت نعمان رحمته الله علیه د دواړو جملو مینځ کښې ربط او تعلق بیان کړي دي او ددې د سیاق نه دا خبره واضحه کیږي چې دویمه جمله د قصې په طور جمله مستأنفه نه ده، ددې خلاصه داده چې حضرت مغیره په حضرت نعمان رحمته الله علیه د لښکر په امیر باندې د قتال په شروع کولو کښې تأخیر کولو باندې اعتراض او کړو، چې د هغې جواب حضرت نعمان رحمته الله علیه مذكوره جملو کښې ورکړو (۵).

د مبارک بن فضاله د روایت خلاصه داده چې ایرانیانو مسلمانانو ته دا پیغام واستوو چې نهر نه تاسو راواوړئ یا به مونږ درشو؟ کوم نهر چې د دواړو مینځ کښې فاصله وه، نو

(۱) پورته حواله، واخرجه ابن ابی شیبۃ فی مصنفه: ۲۹۰/۱۸، کتاب البعوث..... رقم (۳۴۴۸۵)، من طریق عفان عن حماد عن ابی عمران الحونی عن علقمه عن معقل بن یسار.....

(۲) الحدیث، اخرجه ابو داود فی الصلاة، باب فی الدعاء بین الاذان والاقامة، رقم (۵۲۱)، والترمذی فی الصلاة، باب ما جاء ان الدعاء لا یرد بین الاذان والاقامة، رقم (۲۱۲)، وفی الدعوات، باب فی العفو والعافیه، رقم (۳۵۹۴-۳۵۹۳)، عن انس رحمته الله علیه.

(۳) شرح ابن بطلال: ۳۳۵/۵، وفتح الباری: ۲۶۵/۶، وعمدة القاری: ۸۵/۱۵.

(۴) قال العلامة الكرمانی رحمته الله علیه: فان قلت: ما معنى الاستدراك، وابن تومسطة بین كلامین متغایرین؟ قلت: كان المغيرة قصد الاشتغال بالقتل اول النهار بعد الفراغ من المكالمة مع الترجمان، فقال النعمان: ان وان شهدت القتال مع رسول الله ﷺ، لكنك ما ضبطت انتظاره للهبوب. شرح الكرمانی: ۱۲۹/۱۳.

(۵) فتح الباری: ۲۶۵/۶.

حضرت نعمان رضی الله عنه مسلمانانو ته حکم اوکړو چې تاسو ورشئ او حمله پرې اوکړئ، دغه شان دواړه لښکرې مخامخ شوې او یو بل ته نژدې راغلې، ایرانیانو د خپل فوج په وروستنۍ حصه کښې د اوسپنې میخونه وغیره بنځ کړل دې دپاره چې فوج واپس نه شی، حضرت مغیره رضی الله عنه چې هرکله د دشمن کثرت اولیده نو وې فرمائیل، د نن په شان ناکامی ما هیڅ کله نه ده لیدلې ځکه چې زموږ دشمن د تیاری کولو او ساه اخستلو دپاره آزاد پریخودلې شوې دي، په خدائې قسم! که معامله زما په لاسونو کښې وې نو ما به په دوی باندې په حمله کولو کښې جلدی کړې وه (۱). او د ابن ابی شیبې په روایت کښې دی، راوی وائی چې موږ د هغوی په وړاندې صف بندی اوکړه نو هغوی په موږ باندې ډیر زیات غشی او وړول، تردې چې موږ ته ئې په رارسیدلو کښې جلدی اوکړه نو حضرت مغیره رضی الله عنه حضرت نعمان رضی الله عنه ته او فرمائیل چې ددې ایرانیانو له طرفه په حمله کولو کښې جلدی شوې ده، ددې وجې نه که تاسو هم حمله اوکړئ نو مناسب به وی. په دې باندې حضرت نعمان رضی الله عنه او فرمائیل چې تاسو خود فضیلتونو او د مناقبو مالک یئ او حقیقت دادې چې په دغه شان جنگونو کښې تاسو د نبی صلی الله علیه و آله سره شریک پاتې شوې یئ (۲).

ددې نه پس د طبری په روایت کښې دی چې په خدائې قسم! ما په دوی باندې په حمله کولو کښې جلدی د هغه څیز د وجې نه اونه کړه کوم څیز چې ما په رسول الله صلی الله علیه و آله کښې اولیده (۳). خلاصه دا شوه چې حضرت نعمان رضی الله عنه په قتال کښې کوم تاخیر اوکړو نو د هغې وجه د نبی صلی الله علیه و آله فعل وو چې نبی صلی الله علیه و آله به چونکه دغه شان کول نو ددې وجې نه حضرت نعمان هم دغه شان اوکړل او د نمر د زوال انتظار ئې اوکړو. بیا چې علامه ابن بطلال رحمته الله علیه د بعضې جملو کومه تشریح کړې ده، هغه هم د اشکال نه خالی نه ده، لکه د "فلم یندمک" تشریح هغوی دا کړې وه چې کوم تکلیفونه او سختۍ نبی صلی الله علیه و آله ته پېښې شوې وې نو هغې سره تاسو د پریشانۍ او د پښیمانتیا ښکار نه شوی (۴).

حافظ رحمته الله علیه فرمائی چې ما ته چې کومه خبره صحیح ښکاری نو هغه داده چې د "فلم یندمک" نه مراد د نمر د زوال پورې تاخیر او صبر کول دی، کوم چې حضرت مغیره اوکړو، په دې باندې الله تعالی دوی شرمنده نه کړل. ددې نه علاوه ابن بطلال رحمته الله علیه د "ولم یخوک" په تشریح کښې یو بله نسخه اختیار کړه او "ولم یخوک" روایت کولو سره ئې ددې وضاحت شروع کړو، لیکن صحیح روایت دلته د خاء معجمه سره او د نون نه بغیر "ولم یخوک" دي، هم دا د

(۱) پورته حواله، وعمدة القاری: ۸۵/۱۵، وتاریخ الطبری: ۲/۶۲۰.

(۲) المصنف لاین شیبۍ: ۲۹۰/۱۸، کتاب البعوث..... رقم (۳۴۴۸۵)، ومجمع الزوائد: ۶/۲۱۵.

(۳) تاریخ الامم والملوک للطبری: ۵۲۱/۲، سنة احدى وعشرين.

(۴) شرح ابن بطلال: ۵/۳۳۵.

مستملی روایت دې او ماقبل سره زیات مناسب هم دې، دغه شان د عبدالقیس د وفد په روایت کښې "غزوایا ولاندامی" چې کومه جمله ده نو دا د هغې په شان هم ده. (۱)

ددې نه علاوه د ابن بطلال رحمه الله د کلام نه دا هم معلومیږي چې د "مثله" کوم ضمیر دې نو دوی دا د "شدة" یعنی د عصائب طرفته راجع کوی، کوم چې محذوف دې حالانکه نورو حضراتو د "مثله" ضمیر مجرور "وقعة" یا "غزوة" طرفته راجع کړې دې. (۲) یعنی په دغه شان غزواتو کښې الله تعالی تاسو ته د شرکت موقع درکړه البته علامه عینی رحمه الله د ابن بطلال رحمه الله په تقلید کښې ضمیر د شدة طرفته راجع کړې دې، بیا چې کومه تشریح کړې ده نو هغه ئې د نورو شارحینو موافق کړې ده او هم دې ته ئې راجع وئیلې دی چې د ابن بطلال رحمه الله تشریح د کلام د سیاق سره موافق نه ده. (۳) والله اعلم

د "حتى تهب الارواح" معنی او مطلب: د "تهب" مصدر "هویا" دې او دا د واحد مؤنث غائب صیغه ده، ددې فاعل الارواح دې او د هبوب معنی ده، هوا وغیره چلیدل.

"الارواح" د "ریح" جمع ده چې اصل کښې روح وو، د واؤ ساکن ماقبل چونکه مکسور دې ددې وجې نه واؤ په یاء سره بدل شو او ریح جوړ شو، ځکه چې د یو څیز جمع هغه څیز لره خپل اصل طرفته گرځوی، البته ابن جنی رحمه الله وئیلې دی چې د ریح جمع اریاح هم راځي. (۴) او دلته د ارواح نه مراد ارواح النصر دې، یعنی تردې چې د الله تعالی د نصرت او د مدد هواګانې او چلیږي، کما مر قبل عن ابن بطلال رحمه الله تعالی. (۵)

د "وتحضر الصلوات" مراد: دلته په روایت کښې "وتحضر الصلوات" وارد شوې دې او د ابن ابی شیبه په روایت کښې "وتزول الشمس" راغلې دې. (۶) کوم چې روایت بالمعنی دې ځکه چې د نمر د زوال نه پس د ماسپڅین د مونځ وخت شروع کیږي. (۷)

د غزوة نهاوند اختتام: وړاندې تیر شو چې حضرت مغیره بن شعبه رضی الله عنه او نورو بعضې ملګرو په حضرت نعمان بن مقرن رضی الله عنه باندې اعتراض کړې وو چې دې قتال نه شروع کوی؟ بیا ئې په دې باندې اضرار هم اوکړو لیکن حضرت نعمان رضی الله عنه په خپله خبره باندې مضبوط ولاړ وو او چې کله د نمر زوال او شو نو مسلمانانو له ئې جمع ورکړه، بیا په خپل اس باندې سور

(۱) پورته حواله، والفتح: ۲۶۵/۶، والعمدة: ۸۵/۱۵، والکواکب الدراری: ۱۲۹/۱۳، وارشاد الساری: ۲۳۲/۵

(۲) شرح الکرمانی: ۱۲۸/۱۳، وارشاد الساری: ۲۳۲/۵

(۳) عمدة القاری: ۸۵/۱۵

(۴) پورته حواله، وفتح الباری: ۲۶۵/۶، وشرح القسطلانی: ۲۳۲/۵

(۵) شرح ابن بطلال: ۳۳۵/۵

(۶) المصنف: ۲۹۰/۱۸، کتاب البعوث والسرایا..... رقم (۳۴۴۸۵)، وکذا فی مجمع الزوائد: ۲۱۶/۶

(۷) فتح الباری: ۲۶۵/۶، وعمدة القاری: ۸۵/۱۵

شو او د هر بیرغ قبیلې ته ورغلو، هغوی ته ئې د صبر او د ثابت قدمۍ تلقین ورکړو، بیا ئې لښکر ته او فرمائیل چې اول به زه د نعره تکبیر آواز اوچت کړم نو تاسو خلق به د حملې کولو دپاره تیار شئ، چې دویم تکبیر اوچت کړم نو تیاری به مکمل او پوره کړئ ځکه چې ددې نه پس به هیچا ته د تیاری کولو موقع نه ورکړې کېږي، بیا په دریم تکبیر سره به فوراً په دشمن باندې حمله کوئ، ددې نه پس حضرت نعمان رضی الله عنه واپس خپل ځانې ته تشریف راوړلو دویم طرفته دشمن هم زبردسته تیاری کړې وه، ددې وجې نه هغوی یو ډیر لوڼې لښکر او ډیرې زیاتې اسلحې سره صف بندی اوکړه، د ایرانی لښکر په روستنۍ حصه کښې د اوسپنې میخونه اچولې شوې وو، دې دپاره چې خپل فوجیان اونه تختی او نه وروستو واپس شی ددې نه پس حضرت نعمان رضی الله عنه اولنې تکبیر اوچت کړو، خلق د حملې دپاره تیاریدل شروع شو، هغوی دویم تکبیر اووئیل او خپله بیرغ ئې اوخوزولو، خلق تیار شوې وو، بیا ئې دریم تکبیر اووئیل نو ټولو په یوځای په دشمن باندې حمله اوکړه، د حضرت نعمان رضی الله عنه د امر لاندې چې کوم کسان وو هغوی په دشمن باندې داسې حمله اوکړه لکه څنګه چې اوږې باز په ښکار باندې حمله کوي، داسې سخت جنگ شروع شو چې بیا ددې نه پس وروستنۍ جنگونو کښې ددې مثال ډیر کم ملایوېږي، د نمر د زوال نه تر د تیاری خوریدو پورې د دشمن دومره کسان مړه شو چې د هغوی وینې زمکه لونده کړه، داسې چې ځناور او سورلۍ هم په هغې کښې خویدلې.

د بعضې خلقو د خیال مطابق د حضرت نعمان رضی الله عنه اس په دې وینه کښې اوخویده، چې د هغې نه وجې نه هغوی راپریوتل، یو غشي راغې چې د هغې د وجې نه حضرت نعمان رضی الله عنه شهید شو، د دوی ورور حضرت سوید بن مقرن رضی الله عنه، نه علاوه چاته هم د دوی د شهادت پته نه وه، بیا حضرت سوید دوی په څادر باندې پټ کړل او د شهادت خبر ئې پټ اوساتلو. ددې نه پس حضرت سوید رضی الله عنه بیرغ قائم مقام امیر حضرت حذیفه بن یمان رضی الله عنه ته حواله کړه، حضرت حذیفه حضرت سوید د نعمان بن مقرن رضی الله عنه په ځانې مقرر کړو او ورته ئې اووئیل چې د صورتحال د واضح کیدو پورې د حضرت نعمان د شهادت خبر پټ اوساتئ، ددې دپاره چې په اسلامي لښکر کښې بزدلی پیدا نه شی.

چې کله د شپې تیاره په خوریدو شوه نو مشرکانو تختیدل شروع کړل، مسلمانانو د هغوی تعاقب اوکړو، دا مشرکان په خپلو کنستې شوې کڼدو کښې پریوتل، د جنگ په دوران کښې د قتل کیدونکو نه علاوه چې کوم مشرکان په دې کڼدو وغیره کښې پریوتلو سره هلاک شو نو د هغوی تعداد د یو لاک نه زیات ښودلې شی. د ایرانی لښکر مشر بڼدار د جنگ دوران کښې خویدلې وو، په موقع باندې د هغه ځانې نه اوختیده نو حضرت نعیم یا حضرت سوید هغه پسي شو او حضرت قعقاع رضی الله عنه ته مخامخ ورغی نو په یو غر باندې اوخته او هلته پټ شو، آخر دا چې د حضرت قعقاع رضی الله عنه په لاس قتل شو او مسلمانانو ته

(۱) د حضرت نعمان د ددې ورور په باره کښې اختلاف دې چې دا څوک وو؟ بعضو سوید، بعضو نعیم او بعضو معقل نوم ښودلې دې. اوگوری، البدایة والنهاية: ۷/۱۱۰، وفتح الباری: ۶/۲۶۶)۔

لویه فتح حاصله شوه، په غنیمت کښې ډیر زیات مال په لاس راغی. د لښکر امیر حضرت حذیفه رضی الله عنه قیدیان او د مال غنیمت پنځمه حصه د حضرت سائب بن الاقرع سره د امیر المؤمنین په طرف روان کړل، ددې نه مخکښې حضرت طریف بن سهم رضی الله عنه د فتحې خوشخبری مدینې منورې ته اورلو دپاره روان شوې وو. دا ښار د اسلامي لښکر په لاسونو باندې فتح شو، مسلمانانو به دا فتح د "فتح الفتوح" په نوم سره یادوله ^(۱).

د حدیث شریف نه مستنبط فائدې ^(۱) د حدیث شریف نه د مشورې فضیلت معلومیږي چې لوئې مرتبې والا سړې کمې مرتبې والا سړی سره مشوره او کړې نو نه په دې کښې څه باک شته او نه په کښې د مشر کس څه توهین شته. دغه شان دا هم ده چې مفضل هم کله کله د افضل سړی امیر وی لکه او گورئ حضرت زبیر بن العوام رضی الله عنه په دې لښکر کښې وو د کوم لښکر امیر چې حضرت نعمان بن مقرن رضی الله عنه وو او دا متفق علیه خبره ده چې حضرت زبیر د حضرت نعمان رضی الله عنه نه غوره دې ^(۲).

^(۲) د حدیث شریف نه دا خبره هم معلومه شوه چې په جنگ کښې د ټولو نه مخکښې د لوئې دشمن قصد کول پکار دی، لکه څنگه چې ورته هر زمان مشوره ورکړې وه چې د کسری نه دې شروع او کړې شی، ځکه چې هر کله د طاقتور سړی جرړې کټ کړې شی نو کمزورې به په خپله باندې شکست تسلیموي ^(۳).

^(۳) د حدیث شریف نه د حضرت نعمان منقبت او د حضرت مغیره بن شعبه رضی الله عنه د جنگ په امورو کښې پیژندگلنه، قوت نفس، بهادری، فصاحت او بلاغت معلومیږي چې حضرت مغیره د بندار په وړاندې د هغه په دربار کښې کومه خطبه ارشاد فرمایلې وه، هغه مختصر خو وه لیکن ډیره زیاته بلیغه او اثرانداز هم وه. ددې وجې نه دا خطبه چې څنگه د هغوی په دنیوی حالاتو مثلاً د خوراک ځکاک وغیره په بیان باندې مشتمله ده نو دغه شان په دې کښې د هغوی چې کوم دیني کیفیت د اسلام نه وړاندې وو او کوم چې بیا د اسلام د قبلولو نه پس شو، ددې بیان په کښې هم دې، دغه شان په دې خطبه کښې د هغوی د معتقداتو مثلاً د توحید، رسالت او د قیامت په ورځ د ایمان بیان هم دې، دغه شان هغه بیان کوم چې رسول

^(۱) کوم صاحب چې د حضرت عمر رضی الله عنه طرفته خوشخبری اورلې وه نو د هغوی په باره کښې هم اختلاف دې چې دا څوک وو؟ حافظ ابن کثیر او سیف د دوی نوم طریف بن سهم ښودلې دې او د ابن ابی شیبې په روایت کښې د ابو عثمان نهدی نوم راغلي دي، حافظ ابن حجر رحمته الله فرماني چې ممکنه ده چې دې دواړو حضراتو مدینې منورې ته تشریف اورلې وی انظر فتح الباری: ۶/۲۶۶، والبدایة والنهایة: ۷/۱۱۰.

^(۲) د غزوة نهاوند د تفصیل دپاره او گورئ، البدایة والنهایة: ۷/۱۰۵-۱۱۲، تاریخ الاسلام (اردو) نجیب اکبر آبادی: ۳۰۸/۱.....

^(۳) فتح الباری: ۶/۲۶۶، وشرح ابن بطال: ۵/۳۳۴، وعمدة القاری: ۱۵/۸۵.

^(۴) پورته حواله جات.

الله ﷻ د معجزاتو، پېشن گویانو بیا ددغه پېشن گویانو باره کښې چې فرمایلې وو نو د هغې په واقع کیدو باندې هم دا خطبه مشتمله ده.^(۱)

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: د کتاب په شروع کښې چې مؤلف رحمته الله علیه کوم عنوان قائم کړې وو نو هغه "الجریة والموادعة" وو، لکه څنگه چې د باب دا آخری حدیث د موادعة یعنی مصالحت سره متعلق دي، نو حضرت نعمان بن مقرن رضی الله عنه چې په جنگ شروع کولو کښې کوم تاخیر او کړو، د الله تعالی د مدد د هواگانو او د نمر د زوال چې ئې کوم انتظار کړې وو نو دا موادعة وو یعنی د مصالحت امکان د هغوی په ذهن کښې وو ددې وجې نه هغوی د نمر د زوال پورې جنگ شروع نه کړو، د موادعة معنی هم داده چې په دشمن باندې د فتح یاب کیدو نه مخکښې قتال نه شروع کول او قتال دغه وخت پورې پریخودل، دا امکان په ذهن کښې ساتلو سره چې جنگ کیدې هم شی او کیدې نه هم شی.^(۲)

دغه شان ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت د حدیث په دې جمله کښې هم کیدې شی: "حق تعمدوا لله او تؤدوا الجریة" ځکه چې په دې کښې د جزیې ذکر دې چې د ترجمې اولنې حصه ده، لیکن په دې صورت کښې به اشکال دا وی چې بیا خود "الموادعة" ذکر بیکاره او فضول شو، ځکه چې د باب کوم احادیث تیر شو، په هغه ټولو کښې د ترجمې او د حدیث تعلق د "جزیة" لفظ سره وو، دلته هم که چرته تعلق لفظ "جزیة" سره وی نو الموادعة سره د کوم حدیث تعلق دي؟ که د هېڅ یو حدیث تعلق او ربط نشته نو ددې د ذکر کولو څه فائده؟

غالباً دې خیزلره په ذهن کښې ساتلو سره شارحینو اولنې توجیه ذکر کړې ده. والله اعلم بالصواب

② باب: إِذَا وَاَدَعَ الْإِمَامُ مَلِكَ الْقَرْيَةِ هَلْ يَكُونُ ذَلِكَ لِبَقِيَّتِهِمْ؟

د ترجمة الباب مقصد: په دې باب کښې امام بخاری رحمته الله علیه یوه بله مسئله ذکر کول غواړي، هغه دا چې د وخت خلیفه که چرته د یو ښار یا د یو کلی والی یا بادشاه سره صلح او کړی نو آیا دا صلح به ددغه کلی او ښار اوسیدونکو ته هم شامله وی یا نه؟ او ددغه ځانې اوسیدونکي خلق وغیره به په دې صلح کښې داخل وی یا نه؟

جواب استفهام دلته محذوف دي، یعنی "یکون" چې دا صلح به ددغه ځانې اوسیدونکو ته هم شامل وی.^(۳) امام بخاری رحمته الله علیه په مذکوره مسئله باندې د حضرت ابو حمید الساعدي رضی الله عنه حدیث د دلیل په طور باندې پیش کړې دي، په دې کښې صراحة دا خبره مذکوره خونه ده البته ددې حدیث په بعضې طرقو کښې ددې وضاحت موجود دي او غالباً هم دې طرفته

^(۱) الفتح: ۶/۲۶۶، والکرماني: ۱۳/۱۲۸، وعمدة القاری: ۱۵/۸۵، وارشاد الساری: ۵/۲۳۲۔

^(۲) المتواری علی تراجم ابواب البخاری: ۱۹۷، وعمدة القاری: ۱۵/۸۲۔

^(۳) عمدة القاری: ۱۵/۸۵، وتعفة الباری: ۳/۵۶۶۔

امام بخاری رحمه الله د خپل مشهور عادت موافق اشاره کړې ده، لکه ابن اسحاق رحمه الله په "السيرة" کښې فرمائی:

"لما انتهى رسول الله ﷺ إلى تبوك، أتاه يحنة (بن روبة، صاحب أيلة، فصالح رسول الله ﷺ، وأعطاه الجزية..... فكتب رسول الله ﷺ لهم كتاباً، فهو عندهم، فكتب ليحنة بن روبة:

بسم الله الرحمن الرحيم، هذه أمانة من الله و محمد النبي ﷺ رسول الله ليحنة بن روبة واهل أيلة، سفنهم وسيارتهم في البر والبحر: لهم ذمة الله، وذمة محمد النبي، ومن كان معهم من اهل الشام، واهل اليمن، واهل البحر، فمن أحدث منهم حدثاً فإنه لا يحول ماله دون نفسه، وإنه طيب لبن أخذه من الناس، وإنه لا يحل أن ينعوا ماء يردونه، ولا طريقاً يردونه، من برأوبهر" (۱).

يعني "چې کله نبي ﷺ تبوک ته اورسيدو نو یحنه (یوحنا) بن روبه، د ايله والی نبي ﷺ ته راغی، نبي ﷺ سره ئې مصالحت او کړو او جزیه ئې په خدمت اقدس کښې پیش کړه..... نبي کریم ﷺ ورته یو خط ورکړو، کوم چې هغه سره موجود دې، نبي ﷺ چې یحنه بن روبه ته کوم خط لیکلې ورکړې وو نو د هغې مضمون دادي:

"بسم الله الرحمن الرحيم، د ايله د والی او ددې د اوسیدونکو دپاره د الله تعالی او د محمد النبي، رسول الله ﷺ له طرفه دا امان نامه ده، د دوی د کشتو او د گاډو دپاره، په زمکه او سمندر دواړو کښې، د دوی دپاره د الله تعالی او د محمد النبي ﷺ ذمه داری ده او د هغه چا دپاره هم چې کوم خلق د شام، یمن او د سمندر نه دې خلقو سره دی، په دوی کښې چې څوک هم نوې کار کوی (یعنی د معاهدې خلاف ورزی کوی)، نو د هغه مال به د هغه ذات دپاره حائل او مانع نه جوړیږي تردې چې کوم کس د ده هغه مال واخلی نو دا به د هغه دپاره حلال وی. او دا هم جائز نه دی چې د اوبو یو ګودر یا چینې ته د راتګ نه دوی منع کړې شی، نه دا جائز دی چې دوی یوه لاره اختیار کړي او دوی منع کړې شی، خواه د اوچې لاروی یا د سمندر".

ددې نه استدلال کولو سره جمهور علماء وائی چې یو بادشاه یا والی سره صلح کول به د هغه ټول قوم او ټولو علاکو ته شامل وی، ځکه چې هرکله هغه د صلحې درخواست پیش کړو نو گویا هغه د خپل نفس، د خپل قوم او د خپلو ټولو علاکو دپاره د صلحې درخواست پیش کړو چې دې ټولو ته حفاظت او امان ملاؤ شی.

علامه ابن بطال رحمه الله لیکي: "والعلماء مجمعون على أن الامام إذا صالح ملك القرية أنه يدخل في ذلك الصلح بقبيتهم، لانه إنما صالح على نفسه، ورعيته، ومن يلى أمرة، وتشتمل عليه بلده وعمله، ألا ترى أن لي

(۱) بيا مشاة تحتانية مضمومة. بعدها حاء مهملة مفتوحة. ثم نون مشددة مفتوحة. وآخره هاء.)

(۲) السيرة النبوية لابن هشام: ۵۲۵/۴/۲-۵۲۶، غزوة تبوك، في سنة تسع، و شرح ابن بطال: ۳۳۶/۵، وفتح الباري: ۲۶۷/۶، وعمدة القاري: ۸۶/۱۵، وارشاد الساري: ۲۳۳/۵.)

کتاب النبی تاملین ملک ایله واهل بدده“ (۱).

البته په دې کښې اختلاف دې چې که چرته بادشاه د یو مخصوص او متعین جماعت دپاره د صلحې درخواست پیش کړی چې دې خاص قسم جماعت ته دې امان ورکړې شی نو په دې کښې به بادشاه هم داخل وی یا نه؟

نو د جمهورو مسلک خو هم دادې چې په دې صورت کښې به دغه بادشاه په دې صلح و امان کښې داخل نه وی ترڅو چې ئې خپل تعیین نه وی کړې، دا حضرات ددې خبرې دلیل دا پیش کوی چې د حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه د خلافت په زمانه کښې اشعث بن قیس د څه خلقو سره مرتد شو او په یو محل کښې پټ شو، بیا هغه د اويا کسانو دپاره امان طلب کړو او خلیفه ورته امان هم ورکړو، نو دې د محل نه راووته او اويا سړی ئې اوشمارل او خپل ځان ئې په دوی کښې شامل نه کړو، حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه او فرمائیل چې ستا دپاره امان نشته، مونږ خو به تا قتلوو، په دې باندې اشعث اسلام قبول کړو او د حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه لور سره ئې نکاح اوکړه (۲).

دغه شان کله چې حضرت ابوموسی اشعری رضی الله عنه د توستریا د سوس محاصره اوکړه نو د هغوی امیر اووئیل چې تاسو زما سلو کسانو ته پناه ورکړئ نو زه به ستاسو دپاره د قلعه دروازه پرانځم کړم؟ حضرت ابوموسی اشعری رضی الله عنه د هغه خبره منظور کړه، نو هغه خپل سل کسان او ملگری شمارل او جدا کول شروع کړل، حضرت ابوموسی رضی الله عنه (په زړه زړه کښې) وئیل، د الله تعالی نه امید دې چې هغه به ماته په ده باندې قابو راکړی او د سلو کسانو د شمارلو نه پس به دده نه خپل ځان هیر شی، نو هم دغه شان اوشوه چې هغه سل کسان شمار کړل، هغوی ئې جدا کړل او خپل ځان ترینه هیر شو، حضرت ابوموسی رضی الله عنه هغه گرفتار کړو نو هغه اووئیل چې تاسو خو ماته امان راکړې وو؟ حضرت ابوموسی رضی الله عنه او فرمائیل چې ما خو تا ته هیڅ قسم امان نه دې درکړې، واوره الله تعالی د څه دهو کې نه بغیر ماته په تا باندې قابو راکړې دې، بیا ئې د هغه سر والوزولو (۳).

اکثر امامان ددې واقعاتو نه استدلال کولو سره هم دا وائی چې د بادشاه یا د امیر خپل ځان لره منتخب کول ضروری دی، ورنه په دې مخصوص جماعت کښې به دې داخل نه وی. لیکن په مالکیه کښې د امام اصبح او د امام سخنون قول دادې چې خپل ځان منتخب کول نه ضروری دی او نه ددې حاجت شته، بلکه په دې باندې قرینه هم کافی ده، ځکه چې بادشاه کله د نورو خلقو دپاره امان طلب کوی نو خامخا هغه خپل ځان هم په دې کښې شاملوی او ددې مقصود هم دادې چې ده ته هم امان حاصل شی (۴). والله اعلم بالصواب

(۱) شرح ابن بطلال: ۳۳۶/۵، وفتح الباری: ۲۶۷/۶-.

(۲) شرح ابن بطلال: ۳۳۷/۵، والمتواری: ۱۹۸-.

(۳) شرح ابن بطلال: ۳۳۶/۵-.

(۴) شرح ابن بطلال: ۳۳۷/۵-.

۲۹۹. حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ بَكَّارٍ حَدَّثَنَا وَهَيْبٌ عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى عَنْ عَبَّاسِ السَّاعِدِيِّ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ غَزَوْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - تَبُوكَ، وَأَهْدَى مَلِكُ أَيْلَةَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بَغْلَةً بَيْضَاءَ، وَكَسَاءً بَرْدًا، وَكَتَبَ لَهُ بِحَرِّهِمْ. [۱۲۱۱]

رجال الحديث

- ① سهل بن بكار: دا ابوبشر سهل بن بكار دارمی بصری رضی اللہ عنہ دی. (۲).
 - ② وهيب: دا وهيب بن خالد بن عجلان بصری رضی اللہ عنہ دی.
 - ③ عمرو بن يحيى: دا عمرو بن يحيى بن عمارة مازنی رضی اللہ عنہ دی، ددی دواړو حضراتو مختصر حالات په کتاب الايمان، "باب من كره ان يعود في الكفر....." كښې تير شوې دي. (۲).
 - ④ عباس الساعدي: دا عباس بن سهل ساعدي رضی اللہ عنہ دی. (۲).
 - ⑤ ابو حميد الساعدي: دا ابو حميد عبد الرحمن الساعدي رضی اللہ عنہ دی. (۲).
- د حديث شريف ترجمه: حضرت ابو حميد الساعدي رضی اللہ عنہ فرمائي چې مونږ په غزوة تبوك كښې د نبي كريم صلی اللہ علیہ وسلم سره شركت وكړو او د ايله بنار (بمادشاه نبي كريم صلی اللہ علیہ وسلم ته يو سپين خچر په هديه كښې پيش كړو، نبي صلی اللہ علیہ وسلم هغه ته يو ښكلي څادر وركړو او هغه ته ئې د هغه د سمندري علاقه په باره كښې امان اوليكلو او ورته ئې وركړو.
- دا د يو اوږد حديث حصه ده، كوم چې په كتاب الزكاة كښې تير شو. (۲). امام بخاري رحمته اللہ علیہ باب د مناسبت د وجې نه ددې يو حصه دلته ذكر كړې ده.
- قوله: وكساء بردا:** په ټولو نسخو كښې واو سره "وكساء" دي او د ابوذر په نسخه كښې فاء سره "فكساء" دي او هم دا غوره دي، ځكه چې د فعل "كساء" فاعل نبي كريم صلی اللہ علیہ وسلم دي.
- د دواړو مينځ كښې فرق دادې چې كه واو سره "وكساء" او وييلي شي نو مطلب به داوی چې د ايله بادشاه ورته خچر هم وركړو او څادر ئې هم وركړو، حالانكه دا خبره غلطه ده، دا ځكه غلطه ده چې هغه نبي صلی اللہ علیہ وسلم ته صرف خچر وركړې وو، په جواب كښې ورته نبي صلی اللہ علیہ وسلم څادر

١) قوله: عن أبي حميد الساعدي رضی اللہ عنہ: الحديث، مر تخريجه في الزكاة، باب خرص التمر).

٢) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الزكاة، باب خرص التمر).

٣) اوگوري، كشف الباري: ۱۱۵/۲-۱۱۸).

٤) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الزكاة، باب خرص التمر).

٥) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الصلاة، باب فضل استقبال القبلة).

٦) قال ابن قزوين: هي مدينة بالشام على النصف ما بين طريق مصر ومكة، على شاطئ البحر، من بلاد الشام. انظر عمدة القاري: ۸۶/۱۵).

٧) صحيح البخاري، كتاب الزكاة، باب خرص التمر، رقم (۱۴۸۱).

ورکړو او د هغه د علاقو او درعايا دپاره ئې ورته امان ورکړو

او که فاء سره "فکساء" او وئيلې شي نو مطلب ئې بالکل واضح دې چې د بادشاه کار خچر په هديه کښې ورکول وو او د نبی ﷺ کار په هديه کښې خادر ورکول. امان ليکل او ورکول وو او هم دا صحيح خبره ده. (١)

د بحر نه حه مراد دې؟ دلته په "بحرهم" کښې د بحر نه مراد کلي يا ښار دې، چونکه دوی د سمندر په غاړه باندې اوسيدل ددې وجې نه ئې د دوی د کلي يا د ښار نه تعبير په بحر سره کړې دې او مقصود ددې اوسيدونکی يا ددې علاقې دی. (٢). علامه انور شاه کشميري رحمه الله ددې "بحرهم" ترجمه په دې الفاظو سره کړې ده: "هغه کلي چې د درياب په غاړه وي" (٣). مدینه منوره هم چونکه سمندر سره نژدې ده، ددې وجې نه حضرت سعد بن عبادة رضی الله عنه په دې باندې د بحيرة اطلاق او کړو او وې فرمائيل چې:

"لقد اصطلح اهل هذه البحيرة على أن يتوجهوا، فيعصونه بالعصاة، فلما أبى الله ذلك بالحق الذي أعطاك الله شراق بذلك....." (٤).

چې اهل مدینه دا فيصله کړې وه چې د عبداللہ بن ابی بن سلول تاج پوشی او دستاربندي به کولې شي، دې به د خپلې علاقې چودهری مقررولې شي، د نبی ﷺ د راتگ نه پس دا ټوله قصه ختمه شوه، د عبداللہ بن ابی د مشرئ ارمان پوره نه شو، دده رسئ دده په غاړه کښې انختې ده ددې وجې نه داسې قسم شرارتونه کوي.

ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: علامه ابن المنیر رحمه الله ليکي چې د بخاري شريف په روايت کښې صيغه د امان ده، نه چې صيغه د طلب چې بادشاه امان طلب کړې وي ليکن ددې باوجود امام بخاري رحمه الله د خپل عادت د وجې نه د باب د حديث نه مذکوره استدلال او کړو چې بادشاه چې د حضور اکرم ﷺ په خدمت اقدس کښې کومه هديه پيشه کړه نو د هغه مقصد ددې په ذريعې سره د خپل حکومت د بقاء درخواست پيش کول وو او د هغه د حکومت بقاء هم هله ممکنه وه چې هرکله د هغه قوم او رعايا هم باقی وي، نتيجه هم دا شوه چې د هغه دا مصالحت د خپل رعايا دپاره وو. (٥). هم دا مقصد د ترجمة الباب هم دې علامه

(١) فتح الباری: ٢٦٦/٦، وعمدة القاری: ٨٦/١٥، وشرح القسطلانی: ٢٣٣/٥.

(٢) فتح الباری: ٢٦٧/٦، وعمدة القاری: ٨٦/١٥، وشرح القسطلانی: ٢٣٣/٥.

(٣) فیض الباری: ٤٧٤/٣.

(٤) صحيح البخاری، کتاب التفسير، باب (والسمع من الذين اتوا الكتب)..... رقم (٤٥٦٦)، والقصة رواها ابن هشام ايضا، ولكن لا يوجد فيها هذه اللفظة - اعنى البحيرة - انظر سيرته: ٥٨٨/٣/٢، خروج قوم ابن ابی عليه..... وغضب الرسول.....).

(٥) فتح الباری: ٢٦٧/٦.

عینی رحمته د علامه ابن المنیر رحمته دا وضاحت اختیار کړې دې. (۱) او حافظ ابن حجر رحمته فرماني چې ترجمه الباب سره د حدیث شریف د مطابقت دپاره دومره خبره کافی نه ده ځکه چې امام بخاری رحمته د خپل مشهور عادت موافق د حدیث د ذکر کولو نه بغير هم دا خپله مدعا حاصلولې شوه. حقیقت کښې امام بخاری رحمته د خپل یو بل عادت مطابق دلته دا طریقه اختیار کړې ده چې کله دوی یو حدیث ذکر کولو سره د هغې نورو طرقو طرفته اشاره کوي، دلته هم دوی د سیره ابن اسحاق د یو روایت طرفته اشاره کړې ده کوم چې اوس وړاندې تیر شو، په کوم کښې چې ددې خبرې وضاحت دې چې د ایله بنار بادشاه نبی عليه السلام سره مصلحت او کړو او جزیه ئې ادا کړه، بیا هغه ته نبی عليه السلام یو خط ورکړو چې په هغې کښې هغه دپاره د امان ورکولو وضاحت وو. (۲) والله اعلم بالصواب

③ باب: الْوَصَايَا بِأَهْلِ ذِمَّةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

وَالذِّمَّةُ الْعَهْدُ، وَالْإِلُّ الْقَرَابَةُ.

د ترجمه الباب مقصد: دلته امام بخاری رحمته دا بیانول غواړي چې نبی عليه السلام کومو غیرمسلمو سره عهد کړې وو، خواه هر قسم عهد چې وی، نو دوی سره د ښیګړې معاملې ساتل پکار دی، بغير د څه وجې دوی لږه تنګول پکار نه دی او د نبی عليه السلام د عهد پوره والي پکار دې. د الوصاة معنی: الوصاة "بفتح الواو، والمهمله مخففا" ددې معنی ده وصیت، او د وصیت مختلف معنی دی چې په هغې کښې یو معنی ده چا سره ښیګړه کول. (۳)

د الذمة او د الال معنی: بیا ددې نه پس امام بخاری رحمته په ترجمه الباب کښې د دوو کلماتو معنی بیان کړې دي لکه څنگه چې د هغوی عادت دې چې په حدیث مبارک کښې کوم لفظ راشي نو که هغه په قرآن کریم کښې هم راغلې وی نو د هغې وضاحت او تفسیر کوي، اولنئ کلمه "الذمة" ده او دویمه کلمه "الال" ده. د اولنئ کلمې معنی ئې کړې ده چې عهد او دویمې کلمې معنی ئې په قرابت (رشته داری) سره کړې ده کوم چې د امام ضحاک رحمته اختیار کړې شوې تفسیر دې، لکه هغوی د قرآن کریم د آیت مبارکه (لَا يَرْقُوهَن فِي مَوْنِ الْاَوْلَا ذِمَّة) (تفسیر هم په دې کلماتو سره کړې دې). (۴)

امام بخاری رحمته چې د "الذمة" کومه معنی بیان کړې ده نو ددې نه علاوه ددې لفظ نورې معنی هم شته، مثلاً: امان، ضمان، حرمت او حق وغیره. اهل ذمه ته هم ذمه ددې وجې نه

(۱) عمدة القاری: ۸۶/۱۵۔

(۲) فتح الباری: ۶/۲۶۷، وایضا ارشاد الساری: ۵/۲۳۳۔

(۳) فتح الباری: ۶/۲۶۷۔

(۴) التوبة: ۱۰/۱۔

(۵) فتح الباری: ۶/۲۶۷، و روح المعانی: ۱۰/۳۴۹، سورة التوبة، الآية: ۹۔

ونیلې شی چې هغوی د مسلمانانو په عهد و امان کښې داخل شی (د). او بعضې حضراتو ونیلې دی چې د "الان" اطلاق بعضې وخت کښې په عهد باندې هم کیږي (د).

۲۹۹۱: (د) حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُو جَرْمَةَ قَالَ سَمِعْتُ جُوَيْرِيَةَ بِنَ قُدَامَةَ التَّمِيمِيَّ قَالَ سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قُلْنَا أَوْصِنَا يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ. قَالَ أَوْصِيكُمْ بِذِمَّةِ اللَّهِ، فَإِنَّهُ ذِمَّةُ نَبِيِّكُمْ، وَرِزْقُ عِيَالِكُمْ. [ر: ۱۳۲۸]

رجال الحديث

① آدم بن ابی ایاس: دا ابو الحسن آدم بن ابی ایاس عبدالرحمن عسقلانی رحمته الله دی.
 ② شعبه: دا امیر المؤمنین فی الحديث شعبه بن حجاج عتکی رحمته الله دی. ددې دواړو حضراتو حالات په کتاب الایمان، "باب المسلم من سلم المسلمون....." کښې تیر شوې دي (د).
 ③ ابو جرمة: دا ابو جرمة نصر بن عمران بصری رحمته الله دی. د دوی تذکره په کتاب الایمان، "باب اداء الخمس من الايمان" کښې راغلې ده (د).

④ جویریة بن قدامة التميمی: دا جویریة بن قدامة بن مالک بن زهير تميمی سعدی رحمته الله دی (د). اکثر و امامانو د رجالو دوی تابعی بنودلې دي او په لویو تابعینو کښې ئې د دوی شمار کړې دي (د). د دوی نه علاوه یو بل شخصیت دی چې د هغه نوم جاريه بن قدامة دی، دا د حضرت علی عليه السلام په ملګرو کښې وو او دا صحابی دی (د). اکثر ائمه رجال په دې دواړو شخصیاتو کښې جدائی کوي او وائی چې جاريه جدا شخصیت دی او جویریة جدا شخصیت دی، د راجح قول مطابق اولنې صحابی دی او دویم تابعی دی. لیکن د حافظ ابن حجر او حافظ مغلطائی رحمهما الله وغیره میلان دې طرفته دی چې دا دواړه نومونه د یو شخصیت دي، یا جاريه نوم دی جویریة لقب دی، یا جویریة نوم دی او جاريه لقب دی خو بهر حال دا جدا جدا شخصیات نه دي بلکه د یو سړي دوه نومونه دي او دا صحابی دی (د).

① (عمدة القاری: ۸۶/۱۵، و روح المعانی: ۳۵۰/۱۰)۔

② (فتح الباری: ۲۶۷/۶)۔

③ (قوله سمعت عمر..... عليه السلام: الحديث، تفرد به البخاری، انظر تحفة الاشراف: ۱۹/۸)۔

④ (كشف الباری: ۶۷۸/۱)۔

⑤ (كشف الباری: ۷۰۱/۲)۔

⑥ (اکمال مغلطای: ۲۶۱/۳، رقم (۱۰۳۶))۔

⑦ (الجرح والتعديل: ۴۶۳/۲، والنقات: ۱۶۶/۴، وتهذيب الكمال: ۱۷۴/۵، وفتح الباری: ۲۶۷/۶)۔

⑧ (تهذيب الكمال: ۸۰/۴، رقم (۸۸۶))۔

⑨ (الاصابة: ۲۱۸/۱، وفتح الباری: ۲۶۷/۶، وتهذيب التهذيب: ۱۲۵/۲)۔

حافظ ابن حجر رحمته الله په خپل موقف باندې دا استدلال پيش کوي:

① جویریه تمیمی دې او جاريه هم تمیمی دې، ددې وجې نه دا خبره څه لرې نه ده چې دا دواړه شخصیات یو وی.

② د مصنف ابن ابی شیبې رحمته الله په روایت کښې د جویریه په ځانې د جاريه وضاحت موجود دې او حدیث د دواړو یو دې او دواړه دا حدیث د ابو جمره نه روایت کوي، ددې نه هم ذهن ته دا خبره راځي چې دا دواړه د یو شخصیت نومونه دي. رحمته الله و الله اعلم

جویریه بن قدامه د حضرت عمر رضی الله عنه نه روایت کوي او د دوی نه روایت کوونکې هم صرف ابو جمره نصر بن عمران رحمته الله دي. رحمته الله

په بخاري شریف کښې د دوی ذکر صرف د باب په دې حدیث کښې راغلې دې، باقی پنځو امامانو د دوی نه روایت نه دې اخستلي. رحمته الله و الله اعلم وارضاه.

⑤ عمر بن الخطاب: د دویم خلیفه، حضرت عمر بن الخطاب رضی الله عنه دې د دوی حالات د "بده الوحی" په اولنی حدیث کښې تیر شوي دي. رحمته الله

د باب د حدیث شریف ترجمه: مونږ او وئیل، امیر المؤمنین امونږ ته بڼه خبره او کړئ او وصیت او کړئ، وې فرمائیل، زه تاسو خلقو ته د الله تعالی د عهد سره د خیر ښیگرې وصیت کوم ځکه چې دا ستاسو د نبی صلی الله علیه و آله د عهد او د ستاسو د اهل و عیال د رزق سبب دي.

د حدیث شریف مزید تفصیل: دلته چې امام بخاري رحمته الله کوم روایت ذکر کړو نو هغه ډیر زیات مختصر دي او باب سره د مناسبت د وجې نه ددې په ذکر کولو باندې امام بخاري رحمته الله بس والې کړې دي، پوره حدیث امام جمال الدین مزی رحمته الله په "تهذیب الکمال" کښې نقل کړې دي، جویریه بن قدامه فرمائي:

"حجبت، فمررت بالمدينة، فمررت بالمدينة، فخطب عمر، فقال: اني رايت الليلة ديكا نقر في نقرة او نقرتين، فما كان الا جمعة او نحوها حق اصيب، قال: الشام، ثم اذن لاهل العراق، قال: وكنا آخر من دخل، قال: فكلما دخل قوم بكوا او ثنوا. قال: وكنت فيمن دخل فاذا عمامة او برد اسود قد عصب على طعنته، واذا الدماء تسيل، قال: قتلنا: او صننا، ولم يساله الوصية احد غيونا، قال: اوصيكم بكتاب الله: فانكم لن تفلحوا ما اتبعتموه، قال: قتلنا: او صننا، قال: اوصيكم بالهاجرين، فان الناس سيكثون ويقتلون، اوصيكم بالانصار؛

① (المصنف لابن ابی شيبه: ۵۹۳/۲۰، كتاب المغازی، رقم (۳۸۲۱۸)، وتعليقات تهذيب الكمال: ۱۷۶/۵) _

② (تهذيب التهذيب: ۱۲۵/۲، رقم (۲۰۳)) _

③ (تهذيب الكمال: ۱۷۵/۵) _

④ (تهذيب الكمال: ۱۷۶/۵، واكمال مغلطای ک ۲۶۱/۳، رقم (۱۰۳۶)) _

⑤ (كشف الباري: ۲۳۹/۱) _

فانهم شعب الاسلام الذي لجأ اليه، و اوصيكم بالاعراب؛ فانهم اصلكم و ما دتكم، ثم سألته بعد ذلك، قال: انهم اخوانكم وعدو عدوكم، و اوصيكم بذرمتكم؛ فانها ذمة نبيكم، و رزق عيالكم، قوموا عنى، فما زاد على هؤلاء الكلمات“ (۱).

يعنى ”زۀ چي د حج د مناسكو نه فارغ شوم او مدينې منورې ته لاړم نو حضرت عمر رضي الله عنه خطبه ارشاد او فرمائيله او وي وئيل چې ما د شپې په خوب كښې يو چرگ اوليدو چې هغه په ما يو يو يا دوه ټونگې اولگولې، ددې نه پس تقريباً يو هفته تيره شوې وه چې دوى زخمى شو، راوى وائى چې امير المؤمنين اول صحابه كرامو رضي الله عنهم، بيا اهل مدينه ته د ملاقات اجازت وركړو، بيا اهل شام ته، بيا اهل عراق ته او د ټولو نه په آخر كښې ورسره مونږ ملاقات او كړو، كله چې به يو قوم د ملاقات په غرض داخل شو نو هغوى به ژړل او تعريفونه به ئې كول. راوى وائى چې په ملاقات كوونكو كښې زۀ هم شامل ووم، چې داخل شوم نو اومې ليدل چې د هغوى په زخم باندې پټكى يا تور خادر سره پټې تړلې شوې وه او د زخم نه وينه بهيدله، مونږ ورته درخواست او كړو چې وصيت راته او كړئ، دا درخواست زموږ نه علاوه بل چا نه وو كړې، امير المؤمنين او فرمائيل، زۀ تاسو ته د بنسټگري وصيت په كتاب الله سره كوم ځكه چې ترڅو تاسو ددې تابعدارى كوي نو گمراه به نه شئ، مونږ او وئيل نور هم څۀ او فرمائې، وي فرمائيل، زۀ تاسو ته دا وصيت كوم چې مهاجرينو سره بڼۀ سلوك ساتئ، ځكه چې خلق خو به زياتيږي ليكن دا مهاجرين به كميږي او انصارو سره درته د بنسټگري كولې ځكه كوم ځكه چې دوى د اسلام هغه كندې دى د چا طرفته چې اسلام پناه اخستلې وه او باندې چيانو سره درته د بڼۀ سلوك وايم ځكه چې هم دغه خلق ستاسو اصل او بنياد دي، ستاسو ورونه دي او ستاسو د دشمنانو دشمنان دي، دغه شان زۀ تاسو ته دا حكم كوم چې ذميانو سره بڼۀ سلوك كوي ځكه چې دا هغه خلق دى چې ستاسو نبي صلى الله عليه وسلم ورسره عهد كړې دې او هم دوى ستاسو اهل و عيال ته د رزق ملاويدلو دپاره سبب جوړيږي، په آخره كښې امير المؤمنين او فرمائيل چې اوس ددې ځانې نه پاسئ، ددې نه پس ئې څۀ خبره اونه كړه“.

فانده: د حضرت عمر رضي الله عنه شهادت دا واقعۀ د حضرت عمرو بن ميمون رضي الله عنه نه هم روايت شوې ده (په كوم كښې چې د باب د حديث ددې الفاظو ”اوصيكم بذرمة الله فانه ذمة نبيكم و رزق عيالكم“ په ځانې دا الفاظ منقول دي:

”واوصيه بذرمة الله تعالى، و ذمة رسوله صلى الله عليه وسلم ان يوفى لهم بعهدهم، وان يقاتل من ورائهم، ولا يكلفوا الا طاقتهم“.

(۱) تهذيب الكمال: ۱۷۵/۵-۱۷۶. و اخرج اوله الامام البخارى فى تاريخه: ۲/۲۴۱، رقم (۲۳۲۵)، ومثله عند ابن ابى شيبه فى مصنفه: ۵۹۳/۲۰. كتاب المغازى، ما جاء فى خلافه عمر بن الخطاب رضي الله عنه، رقم (۳۸۲۱۸) صحيح البخارى، كتاب فضائل اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم، قصة البيعة..... رقم (۳۷۰۰) _

”او زمانه پس چې کوم خليفه راځي، هغې خليفه ته هم وصيت کوم چې هغه د الله تعالى او دهغه د رسول ﷺ د عهد خيال اوساتي داسې چې د دوی د عهد پوره والې او کړې، درې دوی دپاره جنگ او کړې او د طاقت او قوت نه زيات بوج په دوی باندې وانه چولې شي“
ددې وجې نه ددې حديث د پورته ذکر شوې حصې نه دا خبره معلومېږي چې د اهل جزيرې نه دې دومره قدرې جزیه وصول کړې شي څومره چې هغوی قوت او طاقت لري او په دې معامله کښې ورسره ظلم او زياتې اونه کړې شي(۱).

د ورزق عيالکم مطلب: د باب د حديث ددې الفاظو ”ورزق عيالکم“ مطلب دادې چې ددې اهل ذمه او اهل خراج نه چې کوم رقم وصولېږي نو هغه ستاسو د اهل و عيال دپاره رزق جوړېږي او د هغې په ذريعې سره تاسو ددې خپل اهل و عيال د ضرورتونو بندوبست کوئ(۲).
ترجمة الباب سره د حديث مناسبت: ترجمة الباب سره د حديث مناسبت واضح دې چې ترجمة الباب ذميانو سره د خيربنیگري اختيارولو و او په حديث شريف کښې هم دغه خبره ده چې حضرت عمر رضي الله عنه ذميانو سره د خيربنیگري کولو وصيت کړې وو.

④ باب: مَا أَقْطَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْبَحْرَيْنِ. وَمَا

وَعَدَمِنْ مَالِ الْبَحْرَيْنِ وَالْحِزْبَةِ، وَلَمَنْ يُقْسَمُ الْفِيءُ وَالْحِزْبَةُ

د ترجمة الباب وضاحت او مقصد: دا ترجمة الباب په دريو جزونو باندې مشتمل دې، په دې درې واړو جزونو کښې مصنف رضي الله عنه درې مختلف قسم احکامات بيان کړې دي او هم ددغه احکاماتو په ترتيب سره ئې درې حديثونه هم ذکر کړې دي(۳). لکه د اولنې حديث تعلق اولنې حکم سره، د دويم حديث تعلق دويم حکم سره او د دريم حديث تعلق د دريم حکم سره دې. د ترجمة الباب اولنې جزء ”ما اقطع النبي صلى الله عليه وسلم من البحرين“ دې.

د ”اقطاع“ لغوی او اصطلاحی معنی: ”اقطع“ د باب افعال نه د ماضی مذكر صيغه ده، وئيلې شي ”اقطع فلاناً أرضاً“ يعنی چاته زمکه ورکول، د هغه په نوم کول(۴).

د شريعت په اصطلاح کښې د وخت د خليفه له طرفه د الله تعالى په ورکړې شوې مال کښې چاته څه ورکولو ته ”اقطاع“ وئيلې شي، ليکن ددې زيات استعمال په دې کيږي چې چاته زمکه د جائيداد په طور باندې ورکړې شي اوس د خليفه خوښه ده چې چا ته جائيداد ورکوي، نو هغه لره د دغه جائيداد مالک جوړوي چې هغه دې زمکې لره آباده کړي يا ئې

(۱) فتح الباری: ۶/۲۶۷.

(۲) پورته حواله، والکرماني: ۱۳/۱۳۰.

(۳) فتح الباری: ۶/۲۶۸، وعمدة القاری: ۱۵/۸۶.

(۴) القاموس الوحيد، مادة: قطع(۳).

ورته څه خاص وخت پورې حواله کړی، ددې وجې نه چاته جائیداد ورکول کله خو د تمليک په طور وی او کله بغیر د تمليک نه وی.

هم ددې وجې نه فوج ته هم "مقطعین" وئیلې شی، یعنی د جائیداد خاوند (۱)، او دلته د امام بخاری رحمته الله علیه مقصد ددې کار جواز بنودل دی چې خلیفه یو اهل او قابل سړی ته هر وخت کښې زمکه د جائیداد په طور سره ورکولې شی. لکه د نبی کریم صلی الله علیه و آله د بحرین زمکو لره جائیداد جوړول د باب د اولنی حدیث شریف نه ثابت دی، چې نبی صلی الله علیه و آله ددې اراده کړې وه او په دې معامله کښې ئې انصارو سره څو ځله خبره هم کړې وه چې تاسو خلق دا زمکې واخلي لیکن هر کله چې هغوی انکار او کړو نو نبی صلی الله علیه و آله خپله اراده پریخودله.

د امام بخاری رحمته الله علیه د استدلال طریقه: امام بخاری رحمته الله علیه دلته د نبی صلی الله علیه و آله ددې ارادې نه استدلال کړې دې چې خبره مستقبل کښې کیدله نو هغه ئې په ماضی کښې واخستله گویا که نبی صلی الله علیه و آله دغه خلقو ته جائیداد ورکړو، د نبی صلی الله علیه و آله په حق کښې دا معامله بالکل واضحه ده ځکه چې نبی صلی الله علیه و آله د یو داسې کار حکم نه شی ورکولې چې هغه کار ناجائز وی. لهذا هم دا معلومه شوه چې دا کار یعنی چاته جائیداد ورکول د وخت د خلیفه له طرفه صحیح دی. حافظ ابن حجر رحمته الله علیه لیکي:

"فاما إقطاعه صلی الله علیه و آله من البحرين فالحديث الاول دال على أنه صلى الله عليه وسلم هم بذلك، وأشار به على الانصار مراراً، فلما لم يقبلوا تركه، فنزل المصنف ما بالقوة منزلة ما بالفعل، وهو في حقه صلى الله عليه وسلم واضح لانه لا يامر الا بما يجوز فعله" (۲).

د باب په حدیث شریف کښې د بحرین نه مراد د عراق مشهور ښار دې (کوم چې اوس مستقل ریاست دی)، وړاندې دا خبره تیره شوې ده چې اهل بحرین سره نبی صلی الله علیه و آله مصالحت کړې وو او په هغوی ئې جزیه لازم کړې وه. بیا په دې حدیث شریف کښې چې د بحرین د زمکو انصارو ته د جائیداد په طور باندې د ورکولو کوم ذکر راغلې دې نو ددې نه مراد دا دې چې ددې زمکو نه کوم خراج او جزیه وصولیږي نو هغه به د انصارو دپاره خاص وی. ددې زمکو آمدن به انصارو ته څی، دا مطلب او مقصد نه دې چې هغوی به ددې زمکو مالکان هم شی ځکه چې دصلحې زمکه نه تقسیميږي او نه چاته د جائیداد په توگه ورکړې کیدې شی. (۳). والله اعلم

۲۹۹۲: (۴). حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ قَالَ سَمِعْتُ أَنَسًا - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ دَعَا النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - الْأَنْصَارَ لِيَكْتُبَ لَهُمْ بِالْبَحْرَيْنِ فَقَالُوا

(۱) عمدة القاری: ۸۶/۱۵، والنهابة لابن الاثير الجزري: ۴/۸۲، باب القاف مع التاء.

(۲) فتح الباری: ۲۶۸/۶، ومثله فی شرح القسطلانی: ۵/۲۳۴، وعمدة القاری: ۸۷/۱۵.

(۳) فتح الباری: ۲۶۸/۶، وارشاد الساری: ۵/۲۳۳، وعمدة القاری: ۸۷/۱۵.

(۴) قوله: أنسا رضی الله عنه: الحديث، مر تخريجه فی کتاب المساقاة، باب القطنان.

لَا وَاللَّهِ حَتَّى تَكْتُبَ لِإِخْوَانِنَا مِنْ قُرَيْشٍ بِمِثْلِهَا. فَقَالَ ذَاكَ لَهُمْ مَا شَاءَ اللَّهُ عَلَى ذَلِكَ يَقُولُونَ لَهُ قَالَ «فَإِنَّكُمْ سَتَرُونَ بَعْدِي أَثَرَهُ، فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي». (ار: ۱۲۲۴۷)

رجال الحديث

- ① احمد بن يونس: دا احمد بن عبد الله بن يونس تميمي يربوعی رحمته الله دې د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب من قال: ان الايمان هو العمل" کښې تيره شوې ده. (۱).
- ② زهير: دا زهير بن معاوية بن حديج رحمته الله دې د دوی تفصيلی حالات په کتاب الايمان، "باب الصلوة من الايمان" کښې راغلې دي. (۲).
- ③ يحيى بن سعيد: دا مشهور تابعی، د مدينې منورې فقيه، حضرت يحيى بن سعيد الانصاري رحمته الله دې د دوی مختصر تذکره په "بدء الوحي" کښې او تفصيلی تذکره په کتاب الايمان، "باب صوم رمضان....." کښې تيره شوې ده. (۳).
- ④ انس رحمته الله: د مشهور صحابي حضرت انس بن مالك رحمته الله حالات په کتاب الايمان، "باب من الايمان ان يحب لآخيه....." کښې راغلې دي. (۴).
- د اثرة ضبط او معنى: د باب په حديث کښې چې د "اثرة" کوم لفظ راغلې دې نو دا مختلفو طريقو سره ضبط کړې شوې دي.
- ① ابن الاثير رحمته الله دا لفظ همزه او ثاء د دواړو فتحې سره ضبط کړې دي. (۵).
- ② صاحب مطالع او علامه جيانى رحمهما الله دا لفظ د همزه ضمه او د ثاء سکون سره "اثرة" ضبط کړې دي.
- ③ بعضې حضراتو دا د همزه کسره او د ثاء سکون "اثره" سره ضبط کړې دي. (۶).
- علامه ازهرى رحمته الله فرمائی چې د "اثرة" معنى ده استيثار. اود استيثار معنى ده خود غرضى او ذاتى فائده لټول، د دې ضد ايشاردې (يعنى خپل ځان باندې نور وخلقوته ترجيح ورکول). (۷)

① (کشف الباری: ۱۵۹/۲)۔

② (کشف الباری: ۳۶۷/۲)۔

③ (کشف الباری: ۱/۲۳۸، ۲/۳۲۱)۔

④ (کشف الباری: ۴/۲)۔

⑤ (النهاية في غريب الحديث والاثار: ۱/۲۲، باب الهمزة مع التاء)۔

⑥ (عمدة القاری: ۸۷/۱۵)۔

⑦ (بورته حواله، والقاموس الوحيد، مادة: اثر)۔

ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: د ترجمة الباب اولنی جزء سره ددې حديث مناسبت ښکاره دې چې نبي ﷺ انصارو ته د جائيداد ورکولو اراده ښکاره کړه، ددې نه ددې کار جواز معلومېږي. کما مر قهله (۱).

د ترجمة الباب دويم جزء ”وما وعد من مال البحرين“ ددې جزء مقصد دادې چې بادشاه وقت که په جزيه وغيره کښې چا ته خصوصي طور باندې څه مال وغيره ورکول او غواړي نو په شريعت کښې ددې گنجائش شته او ددې اجازت دې. لکه د باب په دويم حديث شريف کښې دا مضمون راغلې دې چې حضرت جابر رضي الله عنه ته نبي ﷺ فرمايلې وو چې که د بحرين مال راغی نو مونږ به ترينه تاسو ته دومره دومره درکړو دا دوی سره د نبي ﷺ وعده وه چې بيا د نبي ﷺ وفات نه پس د هغوی جانشين مبارک حضرت صديق اکبر رضي الله عنه پوره کړه او د کوم مال وعده چې شوې وه نو هغه ئې حضرت جابر رضي الله عنه ته حواله کړو.

۲۹۹۳: (۱) حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ أَخْبَرَنِي رَوْحُ بْنُ الْقَاسِمِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ لِي «لَوْ قَدْ جَاءَنَا مَالُ الْبَحْرَيْنِ قَدْ أُعْطِيتَ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا». فَلَمَّا قُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَجَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ قَالَ أَبُو بَكْرٍ مَنْ كَانَتْ لَهُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عِدَّةٌ فَلْيَأْتِنِي. فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَدْ كَانَ قَالَ لِي «لَوْ قَدْ جَاءَنَا مَالُ الْبَحْرَيْنِ لَأُعْطِيتَ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا». فَقَالَ لِي احْتِ. فَحَثَوْتُ حَتَّى فَقَالَ لِي عُدَّهَا. فَعَدَدْتُهَا فَإِذَا هِيَ خَمْسِمِائَةٍ، فَأَعْطَانِي أَلْفًا وَخَمْسِمِائَةٍ. [ر: ۲۱۷۴]

رجال الحديث

① علي بن عبدالله: دا مشهور امام حديث حضرت علي بن عبدالله ابن المديني رضي الله عنه دې د دوی تفصيلي حالات په كتاب العلم، ”باب الفهم في العلم“ کښې تير شوې دي (۲).
② اسماعيل بن ابراهيم: دا اسماعيل بن ابراهيم بن مقسم رضي الله عنه دې چې مشهور په ”بابين عليه“ سره دې د دوی مختصر تذکره په كتاب الايمان، ”باب حب الرسول ﷺ من الايمان“ کښې راغلې ده (۳).

خبرداري: د علامه عيني او علامه قسطلاني رحمه الله نه ددې حديث په سند کښې دا

(۱) عمدة القاری: ۱۵/ و ارشاد الساری: ۵/ ۲۳۴-.

(۲) قوله: عن جابر رضي الله عنه: الحديث، مر تخريجه في الكفالة، باب من تكفل عن ميت ديناً.....-.

(۳) كشف الباری: ۳/ ۲۵۶-.

(۴) كشف الباری: ۲/ ۱۲-.

تسامح او شوه چې دې دواړو حضراتو اسماعیل بن ابراهیم د "ابن علیه" په ځانې ابو معمر بن اسماعیل بن ابراهیم گنرلې دې (۱). حالانکه ضحیح خبره داده چې دلته د اسماعیل نه مراد "ابن علیه" دې، ددې وجه داده چې د باب په حدیث کښې د امام بخاری رحمته الله علیه شیخ ابن المدینی رحمته الله علیه دې او د اسماعیل بن ابراهیم شیخ روح بن القاسم او دا منلې شوې خبره ده چې د ابن المدینی په شیخانو کښې چې د اسماعیل بن ابراهیم په نوم سره کوم شیخ دې نو هغه ابن علیه دې. ابن المدینی د ابو معمر نه روایت نه کوی، دغه شان د روح بن القاسم په شاگردانو کښې ابو معمر داخل نه دې. بلکه د هغوی شاگرد خو ابن علیه دې (۲).

(۳) روح بن القاسم: دا ابو غیاث روح بن القاسم تمیمی عنبري بصری رحمته الله علیه دې (۳).

(۴) محمد بن المنکدر: دا مشهور تابعی محمد بن المنکدر رحمته الله علیه دې (۴).

(۵) جابر بن عبدالله رضی الله عنهما: دا مشهور صحابی حضرت جابر بن عبدالله رضی الله عنه دې (۵).

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: د حضرت جابر رضی الله عنه ددې حدیث شریف مناسبت د ترجمة الباب د دویم جزء سره بالکل واضح دې، د تشریح ضرورت نه لری (۶).

تنبيه: مرشد هذا الحديث في الخمس، باب ومن الدليل على ان الخمس لنواب المسلمين..... د ترجمة

الباب دریم جزء "ولمن يقسم الفم والجزية" دې په دې جزء کښې امام بخاری رحمته الله علیه د حضرت عباس بن عبدالمطلب رضی الله عنه حدیث ذکر کړې دې او ددې خبرې طرفته ئې اشاره کړې ده چې د مال فئ او د مال جزیه مصرفونه څه دی؟ دا کوم کوم ځانې کښې خرچ کیدی شی او کوم قسم خلق به ددې مستحق وی (۷). ددې مسئلې تفصیل په کتاب الخمس کښې مختلفو ځایونو کښې تیر شوې دې چې د جزیې وغیره مستحق کوم خلق دی. دغه شان د جزیې تعریف هم د کتاب الجزیه په شروع کښې تیر شوې دې.

د مال فئ تعریف: فئ هغه مال ته وئیلې کیږی چې بغیر د جنگ او د قتال نه د کافرانو نه حاصل کړې شی (۸). بیا چې دلته په فئ باندې د جزیې کوم عطف کړې شوې دې نو دا د عطف الخاص علی العام د قبیل نه دې، ځکه چې جزیه هم د مال فئ یو قسم دې (۹).

(۱) عمدة القاری: ۸۷/۱۵، وشرح القسطلانی: ۵/۲۳۴.

(۲) انظر تهذيب الكمال: ۱۹/۳، و: ۹۲۵۲/۶، وتحفة الاشراف: ۲/۳۵۹، رقم (۲۰۱۵).

(۳) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الوضوء، باب ما جاء في غسل البول.

(۴) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الوضوء، باب صب النبي صلی الله علیه وسلم وضوءه.....

(۵) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الوضوء، باب من لم ير الوضوء الا من المخرجين.....

(۶) عمدة القاری: ۸۷/۱۵.

(۷) فتح الباری: ۶/۲۶۹.

(۸) عمدة القاری: ۸۶/۱۵، وبدائع الصنائع: ۷/۱۱۶، کتاب السیر، فصل في احكام الغنائم.....

(۹) عمدة القاری: ۸۶/۱۵، وفتح الباری: ۶/۲۶۹.

مال فی به څنګه تقسیمولې شی؟ دلته دا مسئله هم ده کومه کښې چې د صحابه کرامو رضی الله عنہم اختلاف هم دې چې د مال فی په تقسیمولو کښې به امام او حاکم کومه طریقه اختیاروی؟ په دې کښې درې مذهبونه دي:

① امام به په تقسیم کښې مساوات او برابري اختیاروی، ټولو ته به برابر حصه ورکوي، دا د حضرت ابوبکر و حضرت علي رضی الله عنہما او د حضرت امام شافعي رحمته الله علیه مذهب دې او د امام احمد بن حنبل رحمته الله علیه نه هم دا یو روایت دې.

② امام به په تقسیم کښې غوره والې اختیاروی، یعنی امام ته پکار دی چې د ښو او د درجاتو خیال او لحاظ اوساتي، چاته زیات ورکړي او چاته کم ورکړي، دا د حضرت عثمان و حضرت عمر رضی الله عنہما مذهب دې، هم دا قول د حضرت امام مالک رحمته الله علیه هم دې. حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنہ به د اسلام وړاندې والې او د نسب د برترۍ وغیره لحاظ ضروري نه ګڼلو او ددې خبرې قائل وو چې ددې کارونو تعلق آخرت سره دې، یو سړې اول اول او وړاندې مسلمان شوې دې نو د هغه دا عمل د الله تعالی دپاره دې، ددې اجر او ثواب هم په الله تعالی باندې موقوف دې، ددې وجې نه د مال په مستحق جوړیدلو کښې دا خبرې بنیاد جوړول پکار نه دی.

او حضرت عمر فاروق رضی الله عنہ به د مرتبو او درجاتو خیال او لحاظ ساتلو، په دې بنیاد باندې به د مال د تقسیمولو په وخت به ئې حضرت عائشه صدیقه رضی الله عنہا ته زیات مال ورکوي او حضرت حفصه رضی الله عنہا ته کم، حالانکه دواړه د نبی صلی الله علیه و آله بیبيانې وې او حضرت حفصه رضی الله عنہا ته به ئې فرمائیل چې لورې ستاسو په نسبت حضرت عائشه رضی الله عنہا ته زیات مال ددې وجې نه ورکوم چې نبی کریم صلی الله علیه و آله ته هغه ستاسو په نسبت زیاته محبوبه وه، دغه شان د نبی صلی الله علیه و آله تعلق ستاسو د پلار په ځانې د هغې د والد صاحب حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنہ سره زیات وو! دغه شان حضرت عمر فاروق رضی الله عنہ به د خپل ځوی حضرت عبدالله بن عمر په نسبت حضرت اسامه بن زید بن حارثه رضی الله عنہ ته زیاته حصه ورکوله او ابن عمر ته به ئې فرمائیل چې اسامه ته په تاسو باندې دا فضیلت حاصل دې چې ستاسو په نسبت ورسره د نبی صلی الله علیه و آله تعلق زیات وو او ستاسو د والد صاحب نه د نبی صلی الله علیه و آله په نظر کښې د حضرت اسامه والد صاحب زیات خوښ وو. (۱)

(۱) فتح الباری: ۶/۲۶۹، زکرة المفاتیح: ۸/۱۰۴، وبداية المجتهد: ۱/۴۰۳)۔

(۲) مرقاة المفاتیح: ۸/۱۰۴، وانظر للاستزادة: المصنف لابن أبي شيبة: ۱۷/۴۷۲-۴۷۶، کتاب السير، ما قالوا فی الفروض وتدوين الدواوين، رقم (۳۳۵۳۹)، والسنن الكبرى للبيهقي: ۶/۳۴۹-۳۵۱، کتاب قسم الفی والغنیمه، باب التفضيل على السابقه والنسب، رقم (۱۲۹۹۲-۱۲۹۹۸)، وكشف الاستار: ۲/۲۹۲-۲۹۵، کتاب الجهاد، باب قسمة الاموال و تدوين العطاء، رقم (۱۷۳۶)، وقصة اسامة بن زيد أخرجه الترمذی ايضا، کتاب المناقب، باب مناقب زيد بن حارثه، رضی الله عنہ، رقم (۳۸۱۳)۔

۵) په دې سلسله کښې د احنافو مذهب دادې چې دا معامله امام ته سپارلې شوې ده، چاته ورکوي يا نه ورکوي، برابري کوي يا چاته زيات او چاته کم ورکوي، په دې کښې امام ته اختيار دې. (۱)

هم دا يو روايت د امام احمد بن حنبل رحمته الله هم دې. (۲)

په مال في کښې به خمس ويستلې شي يا نه؟ د قرآن کریم د آيت «واعلموا انما غنمتم من شئ فان الله خمسہ.....» په رنړا کښې په مال غنيمت کښې خو خمس ويستلې کيږي ليکن په مال في کښې هم خمس شته يا نه، دا اختلافي مسئله ده. امام شافعي رحمته الله د جمهور فقهاؤ د رأيي نه جدا شوې دې او دا قول ئې اختيار کړې دې چې په مال في کښې هم خمس شته، دا مذهب نه په صحابه کرامو رضي الله عنهم کښې د چا شته او نه د هغوي نه پس د يو تابعي وغيره شته، ددې وجې نه دې قول ته تفرد وئيلې کيږي، امام ابن المنذر رحمته الله فرمائي:

”انفرد الشافعي بقوله: ان في الفئ الخمس كخمس الغنينة، ولا يحفظ ذلك عن أحد من الصحابة ولا من بعدهم....“ (۳)

۲۹۹۴: (۴) وَقَالَ اِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ عَنْ أَنَسِ أُنِيَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ فَقَالَ «انْثُرُوهُ فِي الْمَسْجِدِ» فَكَانَ أَكْثَرَ مَالٍ أُتِيَ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - إِذْ جَاءَهُ الْعَبَّاسُ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَعْطِنِي إِنِّي قَادَيْتُ نَفْسِي وَقَادَيْتُ عَقِيلًا. قَالَ «خُذْ». فَخُتَا فِي ثَوْبِهِ، ثُمَّ ذَهَبَ يَقْلُهُ، فَلَمْ يَسْتَطِعْ. فَقَالَ أُمْرَبُضُمُّ رَفْعُهُ إِلَيَّ. قَالَ «لَا. قَالَ فَارْقَعُهُ أَنْتَ عَلَيَّ. قَالَ «لَا». فَتَنَزَّرَ مِنْهُ، ثُمَّ ذَهَبَ يَقْلُهُ فَلَمْ يَرْفَعْهُ. فَقَالَ أُمْرَبُضُمُّ رَفْعُهُ عَلَيَّ. قَالَ «لَا». قَالَ فَارْقَعُهُ أَنْتَ عَلَيَّ. قَالَ «لَا». فَتَنَزَّرَ أَحْمَلُهُ عَلَيَّ كَاهِلِهِ ثُمَّ انْطَلَقَ، فَمَا زَالَ يَتْبَعُهُ بَصَرُهُ حَتَّى خَفِيَ عَلَيْنَا عَجَبًا مِنْ حِرْصِهِ، فَمَا قَامَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَثَمَّ مِنْهَا دِرْهَمٌ. (۵)

رجال الحديث

① ابراهيم بن طهمان: دا امام ابراهيم بن طهمان خراساني رحمته الله دې. (۶)

(۱) شرح ابن بطلال: ۵/ ۳۴۰، وفتح الباري: ۶/ ۲۶۹، ومروقات المفاتيح: ۸/ ۹۸.

(۲) المغني لابن قدامة: ۶/ ۳۲۰ - ۳۲۱، كتاب الوديعه، باب قسمة الفئ.....، فصل، رقم (۵۰۹۲).

(۳) فتح الباري: ۶/ ۲۶۹، ومروقات المفاتيح: ۸/ ۹۸، وبداية المجتهد: ۱/ ۴۰۳، والجواهر النقي: ۶/ ۲۹۴، باب الخمس

في الفئ..... والمغني: ۶/ ۳۱۳، وشرح ابن بطلال: ۵/ ۲۵۱، واعلاء السنن: ۱۲/ ۸۷.

(۴) مر هذا التعليق بهذا الاسناد في الصلاة، باب القسمة وتعليق.....، وذكر هناك من وصله.

(۵) د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الوضوء، باب من اغتسل عریانا وحده.

۲) عبد العزيز بن صهيب: دا عبد العزيز بن صهيب بنانی بصری رحمته الله دی، د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب حب الرسول....." کښې تیر شوي دي (۱).

۳) انس: دا مشهور صحابي حضرت انس بن مالک رحمته الله دی، د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب الايمان ان يحب لآخيه ما يحب لنفسه" کښې تیره شوي ده (۲).

ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: د حضرت انس رحمته الله د حديث د ترجمة الباب دريم جزء سره مناسبت واضح دي، کوم حديث کښې چې د حضرت عباس بن عبد المطلب رحمته الله يوه واقعه ذکر کړې شوې ده، ځکه چې په ترجمه کښې دا سوال وو چې د مال فئ او د مال جزیه مستحق څوک دی؟ نو بيا ددې خبرې جواب حضرت امام بخاری رحمته الله د حديث په ذريعه سره او کړو چې په دې کښې د ټولو مسلمانانو حق دي، په دې معامله کښې د فقير او د مالدار هيڅ خصوصيت نشته، که څه خصوصيت وو نو حضرت عباس رحمته الله ته به د مال فئ نه هيڅ هم نه ملاویدل ځکه چې هغه خو مالدار وو (۳).

۵) باب: اِثْمُ مَنْ قَتَلَ مُعَاهِدًا بَغَيْرِ جُرْمٍ

د ترجمة الباب مقصد: دلته امام بخاری رحمته الله دا فرمايلي دي چې يو سړي ذمی يا معاهد لره قتل کړي او بغير د څه جرم او بغير د څه حق نه ذمی لره قتل کړي نو دې ډیر سخت گناهگار دي او دده دا کار چې ذمی قتل کړي، په هيڅ صورت کښې به دا کار قابل قبول نه وي. يوه اهمه فائده: د ترجمة الباب په سلسله کښې د امام بخاری رحمته الله يو عادت دا هم دي چې ترجمه مقيد راوړي او روايت مطلق راوړي، مقصد ئې داوی چې په روايت کښې د ترجمة الباب د قيد لحاظ کړې شوي دي، د روايت اطلاق مراد نه دي (۴). ددې عادت مطابق مصنف رحمته الله دا ترجمه هم مقيد ذکر کړه او روايت مطلق دي ځکه چې په دې کښې د "بغير جرم" قيد موجود نه دي ليکن چونکه د شريعت د قاعدو نه دا خبره ثابته ده چې د جرم او د څه حق په بنياد باندې خو مسلمان قتلول هم جائز دی نو ددې وجې نه د ذمی قتلول به هم جائز وي، ددې وجې نه د باب د حديث شريف په دې الفاظو "من قتل معاهدا لم يرحم....." کښې به د بغير جرم يا د بغير حق قيد خامخا ملحوظ وي ځکه چې گناهگار به صرف په هغه صورت کښې وي چې کله قتل په ناحقه او د څه جرم نه بغير او کړې شي (۵).

۱) کشف الباری: ۱۲/۲-

۲) کشف الباری: ۴/۲-

۳) فتح الباری: ۲۶۹/۶-

۴) کشف الباری: ۱۷۵/۱-

۵) فتح الباری: ۲۷۰/۶-

ددې نه علاوه هم دا روایت د ابو معاویه عن الحسن بن عمرو عن مجاهد د طریق نه هم روایت دې، په هغې کښې د "بغیر حق" وضاحت شته، دغه شان د باب ددې حدیث مزید وضاحت د هغه روایت نه هم کیږي کوم چې د حضرت صدیق اکبر رضی الله عنه نه روایت دې، په هغې کښې دې: "من قتل معاهداً فی غیر کتبه، حرماً الله علیه الجنة...." (چې "چا یو ذمی بغیر د څه حق نه قتل کړو نو الله تعالی به په هغه باندې جنت حرام کړي....")

۲۹۹۵: (۲) حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَمْرِو حَدَّثَنَا مُجَاهِدٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَالَ: «مَنْ قَتَلَ مُعَاهِدًا مُرَّرَ رَأْيُهُ الْجَنَّةَ، وَإِنْ رِيحَهَا تَوَجَّدُ مِنْ مَسِيرَةٍ أَرْبَعِينَ عَامًا» [۴۵۱۶]

رجال الحديث

① قيس بن حفص: دا قيس بن حفص ابو محمد دارمی بصری رحمته الله دې د دوی حالات په کتاب العلم، "باب وما أوتيتم من العلم...." کښې تیر شوي دي (۲).

② عبد الواحد: دا ابوبشر عبد الواحد بن زياد بصری رحمته الله دې د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب الجهاد من الايمان" کښې تیره شوي ده (۲).

③ الحسن بن عمرو: دا مشهور محدث حضرت حسن بن عمرو فقيمي تميمي کوفی رحمته الله دې (۲) د دوی د حضرت مجاهد، سعيد بن جبیر، حکم بن عتيبه، ابو الزبير، منذر الثوري، محارب بن دثار، ابراهيم نخعی او د خپل ورور فضيل بن عمرو رحمته الله نه روایت نقل کوي. او د دوی نه په روایت کوونکو کښې امام سفیان ثوري، عبدالله بن المبارك، حسن بن صالح، حفص بن غياث، عبد الواحد بن زياد، ابو معاویه، ابوبکر بن عياش، محمد بن فضيل او د دوی وراره عمرو بن الغفار بن عمرو رحمته الله وغيره د علم لوڼي لوڼي شخصيات شامل دي (۲).

① السنن الكبرى للامام البيهقي: ۱۳۳/۸، كتاب القسامة، باب اثم من قتل ذميا بغير جرم.... رقم (۱۶۴۸۲)، والمصنف لابن ابي شيبة: ۳۱۴/۱۴، كتاب الديات، في قتل المعاهد، رقم (۲۸۵۲۶) -

② الحديث اخرج ابو داود، كتاب الجهاد، باب في الوفاء للمعاهد وحرمة ذمته، رقم (۲۷۶۰)، والنسائي، كتاب القسامة، باب تعظيم قتل المعاهد، رقم (۴۷۵۱، ۴۷۵۲) -

③ قوله: عن عبد الله بن عمرو رضي الله عنه: الحديث، اخرج البخاري ايضا، كتاب الديات، باب اثم من قتل ذميا بغير جرم، رقم (۶۹۱۴)، والنسائي، كتاب القسامة، باب تعظيم قتل المعاهد، رقم (۴۷۵۴)، وابن ماجه، كتاب الديات، باب من قتل معاهدا، رقم (۲۶۸۶) -

④ كشف الباري: ۵۲۶/۴ -

⑤ كشف الباري: ۳۰۱/۲ -

⑥ تهذيب الكمال: ۲۸۳/۶، وتهذيب التهذيب: ۳۱۰/۲، والتاريخ الكبير: ۲۹۸/۲، رقم (۲۵۳۵) -

⑦ د استاذانو او د شاگردانو دپاره اوگوري، تهذيب الكمال: ۲۸۳/۶ - ۲۸۴ -

امام علی بن المدینی رحمہ اللہ فرمائی چې ما د یحیی بن سعید الانصاری نه تپوس او کړو چې په حسن بن عبید الله او حسن بن عمرو کښې تاسو ته زیات محبوب څوک دی؟ وې فرمائیل چې په دواړو کښې زیات حسن بن عمرو دې "الحسن بن عمرو اثبتهما" (۱). امام ابوبکر بن اثم دامام احمد رحمہ اللہ نه روایت کوی چې هغوی د حسن بن عمرو په باره کښې او فرمائیل "ثقة" (۲) امام یحیی بن معین رحمہ اللہ فرمائی: "ثقة، حجة" (۳).

امام ابو حاتم رحمہ اللہ فرمائی: "لا بأس به، صالح" (۴). دغه شان علامه ذهبی، حافظ ابن حجر، امام ابن حبان، امام نسائی او علامه عجلې رحمہم د دوی توثیق کړې دي (۵). امام سفیان ثوری رحمہ اللہ هم ددې حسن بن عمرو نه نقل کړې دی چې زما پلار عمرو زه د حضرت سعید بن جبیر رحمہ اللہ په خدمت کښې حاضر کړم، هغه وخت زه ډیر وړوکې ووم او قرآن کریم مې وئیلې وو، کله چې حضرت سعید بن جبیر رحمہ اللہ زما قرآن دانی اولیده نو زما والد صاحب ته ئې او فرمائیل: "تعلم من مثل هذا القرآن" (۶). چې "د داسې کس نه تاسو هم قرآن کریم زده کړئ" (۷).

حسن بن عمرو مزید فرمائی چې ابراهیم نخعی رحمہ اللہ د وفات په وخت دا وصیت کړې وو چې دده کپړې ماته را کړئ (۸). دوی د عباسی خلیفه ابو جعفر المنصور د خلافت په اول وختونو کښې ۱۴۲ هجری کښې په کوفه کښې وفات شو (۹). د امام بخاری رحمہ اللہ نه علاوه امام ابوداؤد، نسائی او ابن ماجه رحمہم د دوی نه روایات اخستلي دي (۱۰). دغه شان په صحیح بخاری کښې ددوی ذکر صرف په دوو ځایونو کښې راغلې دي، یو خو ددې باب په حدیث کښې، کوم چې په دې طریق سره په کتاب الدیات (۱۱) کښې هم راغلې دي،

(۱) پورته حواله: ۶/۲۸۴، والجرح والتعديل: ۳/۲۹، رقم ((۱۰۷)).

(۲) پورته حواله جات).

(۳) تهذيب الكمال: ۶/۲۸۵، والجرح والتعديل: ۳/۲۹، رقم ((۱۰۷)).

(۴) پورته حواله جات).

(۵) الكاشف للذهبي: ۱/۳۲۸، والتقريب لابن حجر: ۱/۲۰۷، رقم (۱۲۷۱)، وتهذيب التهذيب: ۲/۳۱۰، وتعليقات تهذيب الكمال: ۶/۲۸۵).

(۶) الطبقات لابن سعد: ۶/۳۴۱، وتهذيب الكمال: ۶/۲۸۵).

(۷) الطبقات الكبرى: ۶/۳۴۱).

(۸) پورته حواله، وتهذيب الكمال: ۶/۲۸۵).

(۹) تهذيب الكمال: ۶/۲۸۵).

(۱۰) صحيح بخاری، کتاب الدیات، باب اثم من قتل ذميا.... رقم (۶۹۱۴)).

دویم په کتاب الادب (کنښي) د. رحمه الله تعالی رحمة واسعة

④ مجاهد: دا شیخ القراء حضرت مجاهد بن جبرمکی رضی الله عنه دې، د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب الفهم فی العلم" کنښي راغلي ده.

⑤ عبدالله بن عمرو: دا مشهور صحابی حضرت عبدالله بن عمرو بن العاص رضی الله عنه دې. د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب المسلم من سلم المسلمون....." کنښي تیر شوي دي. د حديث شريف سند سره متعلق یو اهم بحث: ددې حديث د سند په باره کنښي په امام بخاري رضی الله عنه باندې دا اعتراض کړې شوي دي چې دا حديث منقطع دي، ځکه چې د حضرت مجاهد سماع د حضرت عبدالله بن عمرو رضی الله عنه نه ثابت نه ده، لکه علامه برديجي رحمته الله په خپل کتاب "المتصل والمرسل" کنښي ليکي: "مجاهد عن ابن عمرو، ولم يسمع منه".

ددې نه علاوه امام دارقطني رحمته الله د امام بخاري رحمته الله طريق رد کولو سره وائي چې د: "مروان بن معاوية عن الحسن بن عمرو عن مجاهد عن جنادة بن ابی أمية عن عبدالله بن عمرو" طريق زيات صحيح دي ځکه چې په دې کنښي د حضرت مجاهد او د حضرت عبدالله بن عمرو رضی الله عنه مينځ کنښي د يو واسطې يعنې د جناده اضافه ده نو په دې سره به انقطاع د حديث منقطع کيدل ختم شي او حديث به متصل شي.

ليکن ددې حضراتو دا خبره د څو وجوهاتو د وجې نه صحيح نه ده:

- ① د امام مجاهد رحمته الله سماع د حضرت عبدالله بن عمرو رضی الله عنه نه ثابت نه ده، او دې مدلس هم نه دي چې د تدليس الزام پرې اولگولې شي.
- ② په دواړو طرقو کنښي تطبيق هم ممکن دي چې امام مجاهد دا روايت اول د جناده نه اوريدلي وي، بيا چې کله د هغوی ملاقات حضرت عبدالله بن عمرو سره اوشو نو د هغوی نه

① انظر صحيح بخاري، كتاب الادب، باب ليس الواصل بالمكافي، رقم (٥٩٩١) _

② فتح الباري: ٢٧٠/٦، وعمدة القاري: ٨٨/١٥ _

③ كشف الباري: ٣٠٧/٣ _

④ كشف الباري: ٦٧٩/١ _

⑤ عمدة القاري: ٨٨/١٥ _

⑥ اخرجہ النسائي في الصغرى، كتاب القسامة، باب تعظيم قتل المعاهد، رقم (٤٧٥٤)، والكبرى:

٢٢١/٤، كتاب القسامة، تعظيم قتل المعاهد، رقم (٦٩٥٢)، وكتاب السير: ٢٢٥/٥..... رقم (٨٧٤٢)، واحمد في

مسند: ٦٤٦/٢، مسند عبدالله بن عمرو..... رقم (٦٧٤٥)، والبيهقي في الكبرى: ١٣٣/٨، رقم (١٢٤٨٣)،

و: ٩٢٠/٥، رقم (١٨٧٣٣) _

⑦ هدى الساري: ٥٢٦، وعمدة القاري: ٨٨/١٥، وايضا انظر تحفة الاشراف: ٢٨٥/٦، و: ٣٧٧ _

نې هم اوریدلې وی یا دواړو په یو وخت د حضرت عبدالله نه اوریدلې وی، ددې نه پس چې کله حضرت مجاهد دا روایت بیانوی نو کله د حضرت عبدالله بن عمرو نه نقل کوی او کله د جناده نه (۱).

④ حافظ ابن حجر رحمته الله فرمائی چې د عبدالواحد په مقابله کښې مروان اگرچه اثبت دې او هغوی په سند کښې د یو راوی اضافه هم نقل کړې ده لیکن د عبدالواحد تابعدار موجود دی لکه ابومعاویه نې تابعداری کړې ده، ابن ماجه دا په خپل طریق سره روایت کړې دې (۲). دغه شان عمرو بن عبدالغفار فقیمی هم د دوی تابعداری کوی، کوم چې امام اسماعیلی نقل کړې دې نو په ظاهره د عبدالواحد روایت راجع دې (۳). د اصیلی یو تسامح: د صحیح بخاری د ټولو نسخو په دې خبره باندې اتفاق دې چې د باب حدیث په "مسند عبدالله بن عمرو بن العاص رضی الله عنه" کښې دی لیکن اصیلی رحمته الله د "الجرجانی عن الغریبی" د طریق نه "عبدالله بن عمر" (بضم العين، بغیر واو) نقل کړې دې، او دا تصحیف دې، ددې نشاندې جیانی رحمته الله کړې ده (۴).

قوله: عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: "من قتل معاهداً لم يرح رائحة الجنة" حضرت عبدالله بن عمرو بن العاص رضی الله عنه د نبی کریم صلی الله علیه و آله نه روایت کوی چې نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل چې کوم کس یو ذمی قتل کړو نو هغه به د جنت خوشبو او نه مومی د "یرح" معنی او ضبط: دلته فعل د "یرح" د لم جازمه د وجې نه مجزوم دې، ددې په ضبط کښې درې اقوال دي:

- ① ابو عبید رحمته الله فرمائی چې دا د راحه یراحه روحانه دې.
 - ② ابن التین رحمته الله فرمائی چې دا د اراحه یراحه اراحه نه دې، مزید فرمائی چې اولنې ضبط غوره دې او هم دا قول د اکثر و دې.
 - ③ ابن الجوزی رحمته الله فرمائی چې دا د راحه یراحه نه دې.
- او په درې واړو صورتونو کښې معنی یوه ده، علامه جوهری رحمته الله فرمائی چې ددې معنی ده بونی موندل، "راح الشی یراحه ویراحه: اذا وجد ریحته" (۵).

(۱) پورته حواله فتح الباری: ۶/۲۷۰، وتعلیقات الشیخ محمد عوامة علی المصنف: ۱۴/۳۱۴._

(۲) رواه ابن ماجه فی کتاب الدیات، باب من قتل معاهداً، رقم ((۲۶۸۶))._

(۳) هدی الساری: ۵۲۶، وفتح الباری: ۶/۲۷۰._

(۴) فتح الباری: ۶/۲۷۰، وعمدة القاری: ۱۵/۸۸._

(۵) پورته حواله جات، وارشاد الساری: ۵/۲۳۵، وشرح ابن بطال: ۸/۵۶۴، وشرح الکرمانی: ۱۳/۱۳۲، والصحاح للجوهري: ۴۳۶، مادة: روح (۳)._

قوله: وإن ربحها توجد من مسيرة أربعين عاماً: او د جنت خوشبو خو د څلویښت کالو په مسافت کښې محسوسیږي.

د باب د حدیث شریف مطلب دادې چې د جنت خوشبو چې دومره تیزه ده چې که یو سړې څلویښت کاله فاصله او مسافت کښې لرې وی نو هغه ئې هم محسوسولې شي لیکن د ذمی د قتل دا سزا ده چې قاتل به د داسې خوشبوئې نه هم محروم وی کومه خوشبو چې د څلویښتو کالو په مسافت هم محسوسیږي، جنت ته داخلیدل خو لرې خبره ده. ددې مقصد وعید دې چې جنت ته اول کوم خلق داخلېږي نو هغوی سره به دې نه داخلېږي، د خپلې سزا خوړلو نه پس به داخلېږي. یا دا چې الله تعالی ئې په خپل خاص رحمت سره معاف کړي بهر حال د ذمی د قتل نه پرهیز ضروري دې او دا قتل د څه حق او د څه جرم نه بغیر بالکل جائز نه دي. (۱)

یا د باب په حدیث کښې چې کومه سزا بیان کړې شوې ده نو دا د مستحل سزا ده، یعنی کوم کس چې د څه حق نه بغیر د ذمی قتل لره جائز او حلال او گنېزی نو د هغه به دا سزا وی. په حدیث کښې په مذکوره عدد کښې د راویانو اختلاف او ددې د اعداد توجیه: د جنت خوشبو به څومره مسافت او فاصلې سره محسوسیږي، په دې کښې مختلف روایات دي، د حضرت عبدالله بن عمرو رضی الله عنه روایت کښې اکثر روایانو "أربعین عاماً" نقل کړې دي، او د عمرو بن عبدالغفار په روایت کښې د "سبعین" لفظ راغلې دې د کوم روایت تخریج چې اسماعیلی کړې دي، د حضرت ابوهریره رضی الله عنه (۲) او د حضرت ابوبکره (۳) په حدیثونو کښې هم د "سبعین" لفظ راغلې دې او د مؤطا او د مسلم شریف (۴) په روایت کښې، چې راوی ئې حضرت ابوهریره رضی الله عنه دي، کښې د خمسائة سنة الفاظ راغلې دي یعنی پنځه سوه کاله. د عدد ددې اختلاف مشهوره توجیه هم هغه ده کومه چې محدثین او شارحین حضرات په

(۱) شرح ابن بطلال: ۳۴۱/۵، وعمدة القاری: ۸۹/۱۵، وارشاد الساری: ۲۳۵/۵. _

(۲) انظر الجامع للترمذی، کتاب الدیات، باب فیمن یقاتل نفساً..... رقم (۱۴۰۳)، ومسند ابی یعلی: ۴۶۷/۵، مسند ابی هریره، رقم (۶۴۲۱)، والسمندرک: ۱۳۸/۲، کتاب الجهاد، رقم (۲۵۸۱)، وشرح السنة: ۲۷۶/۵، کتاب القصاص، باب اثم من قتل معاهدا، وجامع الاصول: ۶۵۱/۲، کتاب الجهاد، رقم (۱۱۳۸)، وجمع الجوامع: ۳۱۰/۳، حرف الهمزة، رقم (۹۰۴۱). _

(۳) شرح السنة: ۳۷۶/۵، کتاب القصاص، رقم (۲۵۱۶)، ومسند الامام البزار: ۹۱۰۲، حدیث ابی بکره، رقم (۳۶۴۰)، ومسند احمد، رقم (۲۰۷۴۳)، و(۲۰۷۸۹)، مسند ابی بکره نفع، و موارد الظمان رقم (۳۶۸)، رقم (۱۵۳۱-۱۵۳۰)، والسمندرک: ۱۳۷/۲، رقم (۲۵۷۹)، وسنن البیهقی الکبری: ۲۲۹/۸-۳۳۰، رقم (۱۶۴۸۴). _

(۴) الحدیث اخرجه مسلم فی کتاب اللباس والزینة، باب النساء الکاسیات العاریات، رقم (۵۵۸۲)، و(۷۱۹۴)، الا ان العدد المعین غیر مذکور فيه، ومالك فی المؤطا: ۹۱۳/۲، کتاب اللباس، باب ما یکره للنساء لبسه من الثیاب، رقم (۷). _

داسې مقاماتو کښې ذکر کوی چې د حدیث مراد د مسافت او د فاصلې لرې والې دي چې د جنت خوشبو د ډیر لرې وخت نه محسوسیږي، نو د مسافت دا لرې والې په مختلفو عددونو سره تعبیر کړې شو، کله څلویښت کالوسره، کله اویا او کله د پنځو سوو کالو ذکر او کړې شو(۱).
ترجمة الباب سره د حدیث مناسبت: ترجمة الباب سره د حدیث مناسبت بالکل واضح دي، ترجمة الباب ذمی لره د څه حق او جرم نه بغیر د قتل کولو په بدئ کښې وه، په حدیث کښې هم ددې جرم سزا بیان کړې شوې ده چې د داسې مجرم به سخته سزا وی(۲). ددې نه ددې خبرې اندازه لگولې شی چې په اسلام کښې د ذمی هم څومره قدرې حقوق دی چې یو مسلمان ددې خبرې نه ویرولې کیږي چې ذمی ته څه قسم تکلیف او نه رسولې شی.

⑥ باب: اخراج اليهود من جزيرة العرب

د ترجمة الباب مقصد: امام بخاری رحمه الله مقصد خو دلته واضح دي، دا وئیل غواړي چې یهودیانو ته په جزيرة العرب کښې د اوسیدلو اجازت نشته، یهودیان به ددې ځای نه ویستلي کیږي(۳).

د جزيرة العرب تعریف او په دې کښې د کفارو د اقامت حکم: هیڅ یو کافر ته هم په جزيرة العرب کښې د اقامت اختیارولو او جزيرة العرب لره د وطن جوړولو اجازت نشته، په دې باندې د څلورو وارو امامانو عليهم السلام اتفاق دي، البته د دوی په دې خبره کښې اختلاف دي چې ددې حکم اطلاق په کومو کومو علاقو یا په کومو کومو ښارونو باندې کیږي؟

① لکه د امام شافعی رحمه الله په نزد دا حکم چې کفار په جزيرة العرب کښې اقامت اختیارولي نه شی، صرف د حجاز(۴) سره خاص دي، چې په دې کښې مکه مکرمه، مدینه منوره، خیبر، یمن، فدک، یمامه او دې سره خوا کښې چې څومره علاقې دي دا ټولې په کښې داخل دي(۵).
② د امام اعظم ابو حنیفه رحمه الله او د امام مالک رحمه الله په نزد دا حکم ټول جزيرة العرب ته شامل دي یعنې د عدن ابین د آخری حد نه د عراق د کلو پورې په اوږدوالي سره او جده او ددې د مضافاتو نه تر د شام د کنارو په پلنوالي سره، قاله الاصمعي رحمه الله(۶).

یو اهم خبره دا وي: دلته ددې خبرې وضاحت هم پکار دي چې د کفارو د اقامت کوم ممانعت دي نو دا د دریو ورځو نه زیات وخت دپاره دي، که د دریو ورځو نه کم اقامت اختیار کړي، مثلاً د تجارت وغیره په غرض سره پاتې شی نو بیا ورته اجازت دي، لیکن د وخت د حاکم

(۱) (الاجز: ۱۶/۱۷۱)۔

(۲) (عمدة القاری: ۱۵/۸۸)۔

(۳) (عمدة القاری: ۱۵/۸۹)۔

(۴) وانما سمي حجازاً لانه حيز بين تهامة ونجد. انظر المغني: ۹۲۸۶، واعلاء السنن: ۱۲/۵۲۳)۔

(۵) (المغني: ۹۲۸۵۶، والاجز: ۱۵/۴۹، وشرح النووي على مسلم: ۱۵/۲، اول كتاب المساقاة.....)۔

(۶) (فتح القدير: ۳۰۱/۵، والاجز: ۱۵/۶۵۵، والمغني: ۹۲۸۵، رقم (۷۶۶۹))۔

اجازت به ضروری وی. البته د امام شافعی رحمه الله په نزد ددې رعایت نه مکه مکرمه او ددې حرم مستثنی دې، په مکه مکرمه کښې هېڅ یو کافر ته نه د داخلیدو اجازت شته او نه ورته د چا د داخلولو اجازت شته، که یو سړې خفیه طور سره (پټ) داخل شی نو دې به ترینه ویستلې شی، که دې دوران کښې مړ شو او دفن هم شو لیکن وروستو معلومه شوه نو په دې شرط که چرته لاش تې خراب شوې نه وی، نو دده قبر به پرانستلې شی او د حرم نه بهر به او غورخولې شی، ددې وجې نه دا د حرم شریف خصوصیت دې چې دلته هېڅ یو کافر نه شی داخلیدلې.

د فریقینو دلیلونه: په پورتنۍ مسئله کښې فریقین ددې ټولو روایتونو نه دلیل نیسی، په کومو روایتونو کښې چې د مشرکینو او د یهودیانو، نصارو د جزیره العرب نه د ویستلو حکم شوې دې، مثلاً: "أخرجوا المشركين من جزيرة العرب" (یا لا یجتمع دینان فی جزیره العرب) وغیرهما من الروایات.

البته د جزیره العرب په اطلاق کښې چونکه ددې حضراتو اختلاف دې، امام شافعی او امام احمد رحمهما الله ټې حجاز سره خاص کوی، ددې وجې نه دا حضرت د پورتنۍ احادیثو په کلماتو "جزیره العرب" باندې د "العام ارید به الخاص" اطلاق کوی او ددې نه "حجاز" مراد اخلي. دغه شان په یو روایت کښې د "جزیره العرب" په ځانې "الحجاز" راغلي دي. لکه د حضرت ابو عبیده بن الجراح رضی الله عنه روایت دې چې نبی صلی الله علیه و آله د وفات نه مخکې چې کوم آخری کلام فرمائيلې وو، نو هغه دا وو چې "أخرجوا اليهود من الحجاز".

او امام ابو حنیفه او امام مالک رحمهما الله دا ټول روایتونه په خپل عموم باندې حمل کوی او

(۱) فتح الباری: ۱۷۱/۶، رقم (۳۰۵۳)، والدر المختار: ۳/۳۰۱، کتاب الجهاد، فصل فی الجزیه، والواجز:

۶۵۰/۱۵، والمغنی: ۹۲۸۶، وحاشیه الدسوقي مع الشرح الكبير للدردير: ۵۱۹/۲-۵۲۰، فصل عقد الجزیه)۔

(۲) الحديث اخرج البخاری فی نفس هذا الباب، وفي مواضع من صحيحه، ومسلم فی صحيحه، كتاب الوصية، باب ترك الوصية لمن ليس له شيء... رقم (۴۲۰۱)، ولم يخرج غير الشيخين، من رواية ابن عباس رضي الله عنهما.)

(۳) انظر المؤطا للامام مالك بن انس: ۸۹۲/۲-۸۹۳، كتاب الجامع، باب فی اجلاء اليهود من المدينة. (۱۷-۱۹)، وابن ابی شيبه: ۵۱۵/۱۷، رقم (۳۳۶۶۳)، وايضا برقم (۲۹۶۱۷)۔

(۴) شرح الكرماني: ۱۳/۱۳۲، وعمدة القاري: ۱۵/۸۹)۔

(۵) الحديث اخرج ابن ابی شيبه: ۵۱۵/۱۷، كتاب السير، لا يجتمع اليهود والنصارى... رقم (۳۳۶۶۲)، وابن

ابی عاصم، الأحاد والمثاني: ۴۰، رقم الترجمة (۱۰)، واحمد فی مسنده: ۵۲۰/۱، ۵۲۳، مسند ابی عبيدة بن

الجراح... رقم (۱۶۹۱)، وايضا (۱۶۹۹)، والطيالسي فی مسنده: ۱۲۳/۱، رقم (۲۲۶)، والحميدي فی مسنده:

۴۶/۱، رقم (۸۵)، والبخاری فی التاريخ الكبير: ۵۷/۴، رقم (۱۹۵۰)، باب السين، والدارمي فی سننه:

۳۰۵/۲-۳۰۶، كتاب الجهاد، باب اخراج المشركين... رقم (۲۴۹۸)، وابو يعلى فی مسنده: ۳۵۹/۱، رقم

(۸۶۹)، والبيهقي فی الكبرى: ۹۳۵۰، كتاب الجزية، باب لا يسكن الحجاز... رقم (۱۸۷۴۹)۔

دا فرمائی چې دا حکم ټول جزیره العرب ته شامل دي، چې په دې کښې عراق، شام، جده او عدن وغيره ټول شامل دي. د احنافو او د مالکيه د امامانو استدلال هم د حضرت ابو عبیده رضی اللہ عنہ د پورتنۍ روایت نه دي، فرمائی چې نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم دا هم فرمائیلي وو: ”واخرجوا اهل نجران من جزيرة العرب“ (۱) لکه هم په دې فرمان نبوی صلی اللہ علیہ وسلم باندې عمل کولو سره وروستو حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ په خپل دور کښې اهل نجران ددې ځانې نه بهر ویستلې وو. ابن قدامه رحمہ اللہ د احنافو پورتنۍ دلیل رد کوي او فرمائی چې حضرت عمر رضی اللہ عنہ د نجران نصاری ددې وجې نه بهر نه وو ویستلې چې هغوی په جزیره العرب کښې اوسیدل، بلکه ددې وجه دا وه چې هغوی سره نبی صلی اللہ علیہ وسلم صلح په دې شرط باندې کړې وه چې هغوی به سودي لین دین نه کوي، لیکن هرکله چې هغوی دا وعده پوره نه کړه نو حضرت عمر رضی اللہ عنہ ددې وعده د نه پوره کولو د وجې نه هغوی د نجران نه بهر او ویستل (۲).

علامه ظفر احمد عثمانی رحمہ اللہ فرمائی چې په ظاهره باندې د ابن قدامه دا دعوی صحیح نه ده، بلکه د حضرت عمر رضی اللہ عنہ دا مذکوره کار د نبی صلی اللہ علیہ وسلم وصیت د پوره کولو دپاره وو، لکه د امام مالک رحمہ اللہ په مؤطا کښې کلام، د علامه سرخسی وضاحت او د علامه ابو عبید قول په دې باندې دلالت کوي (۳) او هم دا د حضرت عمر بن عبدالعزیز رضی اللہ عنہ نه هم نقل دی، علامه بلاذري د حضرت عمر بن عبدالعزیز رضی اللہ عنہ رحمهما الله نه نقل کوي چې:

”ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال في مرضه: ”لا يبقين دينان في ارض العرب“ فلما استخلف عمر بن الخطاب رضی الله عنه أجلى اهل نجران إلى النجرائية، واشترى عقاراتهم وأموالهم“ (۴) په خپله هم د حضرت عمر بن عبدالعزیز رضی اللہ عنہ عمل هم دا نقل کړې شوې دي چې کله هغوی خليفه جوړ شو نو هغوی دميان د مدينې منورې نه بهر او ویستل او د هغوی غلامان وغيره ئې په مسلمانانو باندې خرڅ کړل. اوگوري، البصيف: ۵۱۶/۱۷، رقم: ۳۳۶۶۵.....

ددې وجې نه راجحه خبره داده چې حضرت عمر رضی اللہ عنہ د نجران کوم نصاری جلا وطن کړې

(۱) وفي الدر المختار: ويمنعون من استيطان مكة والمدينة: لانهما من ارض العرب. وقال عليه السلام: لا يجتمع في ارض العرب دينان قال ابن عابدين رحمہ اللہ: قوله: لانهما من ارض العرب افاد ان الحكم غير مقصور على مكة والمدينة بل جزيرة العرب كلها كذلك الفتاوى الشاميه: ۳۰۱/۳، مع الدر، فصل في الجزية، من كتاب الجهاد، وايضا انظر فتح القدير: ۳۰۱/۵، والهداية: ۲۹۶/۴-۲۹۷.

(۲) ابن ابي شيبة في مصنفه: ۵۱۵/۱۷، كتاب السير، رقم (۳۳۶۶۲)، والدارمي في سننه: ۳۰۶/۲، رقم (۲۴۹۸)، وابن ابي عاصم في الاحاد والمثاني: ۴۰، واحمد في المسند: ۵۲۰/۱، رقم (۱۶۹۱)، والبيهقي في الكبرى: ۹۳۵۰/، رقم (۱۸۷۴۹)، وابو يعلى في مسنده: ۳۵۹/۱، رقم (۸۶۹).

(۳) المغني: ۹۲۸۶/.

(۴) انظر المؤطا: ۸۹۳/۲، كتاب الجامع، باب في اجلاء اليهود من المدينة، رقم (۱۹).

(۵) فتوح البلدان ۷۷-۷۸، صلح نجران.

وو، د هغې وجه هم دا وصیت وو، دې سره سره د هغوی د سود خورۍ معامله هم وه، دغه شان هغوی د جنگ سامان یعنی اسونه او اسلحه وغیره هم تیاره کړې وه، چې ددې وجې نه د هغوی له طرفه حضرت عمر رضی الله عنه ته مختلف خطرات پېښ وو چې دوی چرته مسلمانانو ته نقصان اونه رسوی، ددې خطراتو د وجې نه هغوی اهل نجران د یمن نه اووېستل او د عراق طرفته ئې منتقل کړل. (۱). والله اعلم بالصواب

د علامه طبري رحمته الله علیه خاص وائي: ددې مسئلې په باره کښې د علامه ابن جریر الطبري رحمته الله علیه رائي دا ده چې مذکوره حکم جزیره العرب سره خاص نه دي، بلکه کومه علاقه چې هم د مسلمانانو وی او د مسلمانانو غلبه وی نو داسې علاقه کښې به یو مشرک ته هم د اوسیدلو، د اقامت اختیارولو او د وطن جوړولو اجازت بالکل نه وی، خواد دغه د مسلمانانو مفتوحه علاقه وی یا ددغه علاقې اوسیدونکي مسلمانان شوې وی، په دې شرط چې مسلمانانو ته ددې مشرکانو ضرورت نه وی یا امام المسلمین دې مشرکانو سره د صلحې کولو په وخت دا وعده نه وی کړې چې تاسو به ددې علاقې نه مونږ نه اوباسو، نو که د دواړو ډلو مینځ کښې څه داسې شرط مقرر شوې نه وی نو د وخت په امام باندې به د داسې علاقې نه د مشرکانو ویستل واجب وی.....

علامه ابن بطل رحمته الله علیه فرمائي: "قال الطبري: فيه من الفقه ان النبي صلى الله عليه وسلم بين لائمة المؤمنين اخرايم كل من دان بغير دين الاسلام من كل بلدة للمسلمين؛ سواء كانت تلك البلدة من البلاد التي اسلم عليها اهلها، او من بلاد العنوة، اذالم يكن بالمسلمين ضرورة اليهم، ولم يكن الاسلام يومئذ ظهر في غير جزيرة العرب ظهور قهر، فبان بذلك ان سبيل كل بلدة قهر فيها المسلمون اهل الكفر، ولم يكن تقدم قبل ذلك من امام المسلمين لهم عقد صلح على اقرارهم فيها ان على الامام اخراجهم منها، ومنعهم القرار بها....." (۲).

البته ابن جریر طبري رحمته الله علیه په دې خپل قول کښې متفرد معلومېږي، لیکن په دې کښې هیڅ شک نشته چې که په دې باندې عمل کړې شوې وو نو نن به ډیرې داسې علاقې وې چې هلته به د کفر خاتمه بالکلیه شوې وه او دا په موجوده او سابقه مسلمان ریاستونو کښې چې کوم د غیر مسلمو تسلط دي نو دا به نه وو.

په حرم مکی او په نورو مساجدو کښې د کفارو داخله: پورته عبارت کښې چې دا کومه مسئله بیان کړې شوه نو دا د کفارو او د مشرکانو په جزیره العرب کښې د اقامت اختیارولو سره متعلق وه، اوس دلته یوه بله مسئله داده چې کفار په حرم مکی، مسجد حرام او په نورو

(۱) اعلاء السنن: ۵۲۴/۱۲. قال صاحب البدائع: انظر البدائع: ۱۱۴/۷. کتاب السير، قبیل فصل فی احکام الغنائم.....) واما ارض العرب فلا یترک فیها کنسة ولا بیعة، ولا یباع فیها الخمر والخزیر، مصرًا کان او قرية او ماء من مياه العرب، ویمنع المشرکون ان یتخذوا ارض العرب مسکنًا ووطنا، کذا ذکره محمد؛ تفضیلا لارض العرب علی غیرها، وتطهیرا لها عن الدین الباطل. قال علیه اسلام: لا یجتمع دینان فی جزيرة العرب" (شرح ابن بطل: ۳۴۲/۵، وفتح الباری: ۲۷۲/۶، وعمدة القاری: ۹۰/۱۵)۔

مساجدو کنبې داخلیدې شی یا نه؟

په دې مسئله کنبې هم اختلاف دي، جمهور علماء ددې خبرې قائل دي چې کفار په حرم مکی، مسجد حرام وغيره کنبې داخلیدې نه شی البته دا حضرات په حرم، مسجد حرام او په نورو مساجدو کنبې دا فرق هم بیانوي چې په اول الذکر (حرم، مسجد حرام وغيره) کنبې خو څوک داخلیدې نه شی، د وخت په امام باندې د دوی منع کول واجب دي، او په نورو مساجدو کنبې دوی د مسلمانانو په اجازت او مرضی باندې داخلیدې شی، ددې نه بغیر داخلیدې نه شی (۱). او د امام ابوحنیفه رحمته الله مشهور قول د جواز دي چې کفار په دې ټولو مقاماتو کنبې داخلیدې شی (۲).

د جمهورو دلیلونه: ① د الله تعالی ارشاد دي: **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نجس فلا يقربوا المسجد الحرام بعد عامهم هذا** (۳).

په آيت کریمه کنبې د "المسجد الحرام" نه پوره حرم مراد دي (۴). او ددې نه هم دا معلومیږي چې کفارو ته په حرم مکی او په مسجد حرام کنبې د داخلیدو اجازت نشته، د نبی صلی الله علیه و آله د دور نه تر نن وخته پورې هم په دې باندې عمل راوړان دي.

② حضرت ابوموسی اشعري رضی الله عنه یو ځل حضرت عمر فاروق رضی الله عنه ته تشریف راوړلو او په لاس کنبې ئې یو خط وو، حضرت عمر او فرمائیل چې خپل کاتب راوبله چې هغه دا خط اولولی، حضرت ابوموسی اشعري او فرمائیل چې هغه خو په مسجد کنبې داخلیدې نه شی، وې فرمائیل ولې؟ حضرت ابوموسی او فرمائیل چې هغه خو نصرانی دي ددې واقعي نه هم دا معلومه شوه چې غیرمسلم په مسجد کنبې نه شی داخلیدې، دغه شان دا هم چې دا خبره د هغوی په نزد مشهوره وه (۵).

③ مشرکینو ته نجس وئیلې شوې دي، لهذا د هغوی داخله هم دغه شان په مسجد کنبې ممنوع کیدل پکار دي لکه څنگه چې جنب سړي، حائضه او نفساء بنځو دپاره ممنوع ده، بلکه د مشرک نجاست خو ددې نجاستونو نه زیات دي (۶).

④ ټولو مسجدونو سره متعلق چې کوم دلیل دي نو هغه د حضرت علی رضی الله عنه واقعده، هغوی یو مجوسی اولیده چې د مسجد په منبر باندې ناست وو، هغه د هغه ځانې نه راکوز کړې شو

(۱) انظر المغنی: ۹۲۸۷/، والام: ۵۴/۱، باب ممر الجنب والمشرک..... من کتاب الطهارة: ۱۷۷/۴، کتاب السير، مسألة اعطاء الجزية على سکنی بلد..... والواجز: ۱۵۶۵۰-۶۵۲-.

(۲) المغنی: ۹۲۸۷/، واعلاء السنن: ۵۲۹/۱۲، واحکام القرآن: ۱۱۴/۳-.

(۳) التوبة: ۲۸-.

(۴) المغنی: ۹۲۸۶/، واحکام القرآن: ۸۹/۳، والواجز: ۶۵۰/۱۵، واعلاء السنن: ۵۲۹/۱۲-.

(۵) المغنی: ۹۲۸۷/، والواجز: ۶۵۲/۱۵-.

(۶) پورته حواله جات-.

او حضرت اووهلو او د ابواب کنده په طرف ئې بهر اوويستلو (۱). ددې واقعي نه د مسجد دخول مشروط کيدل معلوم شو چې اجازت په هرحال کښې ضروري دې.
 د امام اعظم رحمته الله عليه دليلونه: ① نبي کریم صلی الله علیه و آله د ثقیف وفد په خپل مسجد کښې حصار کړې وو، حالانکه هغوی کافران وو او مساجد ټول برابر او يوشان دی، ددې وجې په مسجد حرام کښې کافر داخلیدې شی (۲).

② دغه شان نبي صلی الله علیه و آله حضرت ثمامه ابن اثال رضی الله عنه د شرک په حالت کښې په مسجد نبوی کښې حصار کړې وو (۳).

③ حضرت ابوسفیان بن حرب رضی الله عنه به هم د اسلام د قبلولو نه مخکښې مسجد نبوی ته صلحي دپاره تلوراتلو (۴).

د احنافو د مذهب تحقيق: دلته د علامه ظفر احمد عثمانی رحمته الله عليه د قول مطابق احنافو ته د امام اعظم رحمته الله عليه په قول باندې په پوهیدلو کښې مغالطه شوې ده، په دې بنیاد باندې اکثر د مذهب نقل کوونکو دا نقل کړې دی چې امام اعظم رحمته الله عليه ددې خبرې قائل دی چې کافر ته په مسجد حرام، حرم مکی او نورو مساجدو کښې د داخلیدو مطلقاً اجازت دې (۵).

لیکن د امام اعظم او په نورو علماء احنافو کښې د چا هم دا مذهب نه دې بلکه دوی ټول دا خبره د وخت د امام او د بنار د حکم په اجازت باندې موقوف بنائی چې که د دوی اجازت وی نو داخلیدې شی ورنه نه شی داخلیدې. دغه شان د مذهب د نورو امامانو سره چې د احنافو کوم اختلاف دې، د هغې بنیاد هم دادې چې جمهور د منع کولو د وجوب قائل دی چې په امام باندې دا لازم دی چې کفارو لره په حرم کښې د داخلیدو نه منع کړی، او امام ابوحنیفه رحمته الله عليه د عدم وجوب قائل دې چې منع کول او کفارو لره په حرم کښې د داخلیدو نه منع کول واجب نه دی، د وخت امام چې څنگه مصلحت او مناسب گنړی هغه شان دې اختیار کړی، علامه آلوسی رحمته الله عليه د مذهبونو د اختلاف د نقل کولو نه پس د امام اعظم رحمته الله عليه د دلیل

① (المغنی: ۹۲۸۷، والاوجز: ۶۵۱/۱۵)۔

② (عن عثمان بن ابی العاص رضی الله عنه: ان وفد ثقیف لما قدموا علی رسول الله صلی الله علیه و آله ضرب لهم قبة فی المسجد، فقالوا: یا رسول الله، قوم انجاس! فقال رسول الله صلی الله علیه و آله: انه لیس علی الارض من انجاس الناس شی، انما انجاس الناس علی انفسهم. "الفظ للجاص: ۱۱۵/۳، التوبة: ۲۸، وكذا انظر سنن ابی داود، کتاب الخراج..... باب ما جاء فی خبر الطائف، رقم (۳۰۲۶)، ومسنند احمد: ۱۴۸/۵، حدیث عثمان بن ابی العاص، رقم (۱۸۰۷۴)، ومسنند ابی داود الطيالسی: ۵۰۱/۱، رقم (۹۸۱)، وما اسند عن عثمان.....)۔

③ (عن ابی هريرة رضی الله عنه قال: بعث النبی صلی الله علیه و آله خيلاً قبل نجد، فجاءت برجل من بنی حنیفة، یقال له: ثمالة بن اثال، فربطوه بسارية من سواری المسجد..... "انظر الصحيح للبخاری، کتاب المغازی، باب وفد بنی حنیفة، وحديث ثمالة..... رقم (۴۳۷۲)۔

④ (السير الكبير مع شرحه للسرخسی: ۹۶/۱/۱، واعلاء السنن: ۵۳۰/۱۲، والاوجز: ۶۵۲/۱۵)۔

⑤ (قال الموفق فی المغنی (۹۲۸۶/): وقال ابو حنیفة: لهم دخوله كالحجاز كله"۔

په طور باندې دا آیت کریمه هم نقل کړې دې «اولئك ماكان لهم ان يدخلوها الا خائفين» (۱) ددې آیت نه هم دا معلومېږي چې که کفار په حرم او زمونږ په مساجدو وغيره کښې داخلېږي نو ويري هغره به داخلېږي» (۲) او دا د ويري کيفيت به هم هله حاصلېږي چې کله دوی د مسلمانانو په اجازت سره داخلېږي. ددې تحقيق د نقل کولو نه پس علامه عثمانی رحمته الله عليه ليکي:

”وهذا هو مذهب الحنفية في هذا الباب، ولكنهم لا يرون المنع واجبا، فلم يمنعهم الامام والمسلمون عن ذلك كان حسنا، وان اذنوا لهم فيه لحاجة فلا بأس به، هذا هو الحق الذي ظهر من كلام القوم“ (۳).

علامه عثمانی رحمته الله عليه دلته ددې خبرې وضاحت کړې دې چې ”هذا هو الحق“ دوی ته ددې ضرورت ددې وجې نه پېښ شو چې د امام محمد رحمته الله عليه په اقوالو کښې ظاهري تعارض دې، په دې مسئله کښې د دوی دوه اقوال دي، لکه د دوی تصنيف ”الجامع الصغير“ د عبارت نه اجازت معلومېږي، فرماني: ”ولا بأس بان يدخل أهل الذمة المسجد الحرام“ (۴). په دې عبارت کښې د کراحت سره سره جواز طرفته اشاره ده. او د سير کبير (۵) د عبارت نه ممانعت معلومېږي، ددې تعارض د ختمولو دپاره علامه عثمانی رحمته الله عليه دا پورتنی ارشادات او فرمايل، ځکه چې ممکن حده پورې د تعارض دفع کولو دپاره د جمع والی او د تطبيق صورت اختيارول پکار دی. (۶) د علامه عثمانی رحمته الله عليه د مؤقف تائيد د امام ابوبکر جصاص رحمته الله عليه ددې آیت کریمه (اولئك ماكان لهم ان يدخلوها الا خائفين) (۷) د تفسير نه هم کيږي، فرماني چې د الله تعالی ددې ارشاد مبارک خلاصه داده چې که کفار مساجدو ته د اجازت نه بغير داخل شي نو په مسلمانانو باندې دا لازم دی چې دوی لره بهر اوباسی، که دغه شان معامله دوی سره اونه کړې شوه نو مساجدو ته د داخلیدو په وخت به کفار به ويري او بهي خطري شي او د شريعت مطلوب دې کفارو لره ویرول او خوفزده کول دي. (۸).

(۱) البقرة: (۱۱۴)۔

(۲) روح المعاني: ۱/۴۹۶، سورة البقرة: (۱۱۴)۔

(۳) اعلاء السنن: ۱۲/۵۳۱۔

(۴) اعلاء السنن: ۱۲/۵۳۰، والدر المختار: ۳/۳۰۱، کتاب السير، فصل في الجزية، وكتاب الحظر والاباحة: ۲۷۴/۵، فصل في البيع۔

(۵) عن الزهري: ان ابا سفيان بن حرب كان يدخل المسجد في الهدنة، وهو كافر، غير ان ذلك لا يحل في المسجد الحرام، قال الله تعالى: (انما المشركون نجس فلا يقربوا المسجد الحرام)، انظر السير الكبير: ۱/۹۶/۱، باب دخول المشركين المسجد، رقم الباب (۲۷)۔

(۶) اعلاء السنن: ۱۲/۵۳۱۔

(۷) البقرة: (۱۱۴)۔

(۸) احكام القرآن للجصاص الرازي: ۱/۶۱، سورة البقرة، ذكر وجوه النسخ۔

د جمهورو د دلیلونو جواب: دامام اعظم علیه السلام له طرفه د جمهورو د دلیل د آیت کریمه یا ایها الذین

آمنوا انما البشر کون نجس..... مختلف جوابونه ورکړي شوي دي، لاندې هغه ذکر کولي شي:

① د بنو ثقیف وفد چې د نبی صلی الله علیه و آله خدمت کښې حاضر شوي وو نو دا غزوة تبوک نه پس وو، دغه وخت سورة توبه هم نازل شوې وو، ددې باوجود نبی صلی الله علیه و آله دا خلق په مسجد نبوی کښې حصار کړل. نو هرکله چې ددغه خلقو باطنی نجاست په مسجد نبوی کښې د حصارولو نه مانع نه شو نو په حرم او په حجاز کښې حصارول به په طریقه اولی سره ممنوع نه وی ځکه چې د طهارت کوم شرط دي نو هغه خو د مسجد د داخلیدو دپاره دي نه چې د نورو ځایونو دپاره، نو هرکله چې دغه خلق د طهارت نه بغیر په مسجد نبوی کښې داخل شو نو په نورو ځایونو کښې د دوی باطنی نجاست بنیاد جوړول او دوی منع کول به څنگه صحیح شي؟

② د آیت کریمه معنی دا هم کیدې شي چې په دې کښې کومه منع او نهی راغلي ده «فلا یقربوا المسجد الحرام نو ددې تعلق د مشرکانو یو خاص ډلې سره دي، د کومې ډلې چې په مکه مکرمه کښې او په نورو مساجدو کښې د داخلیدو نه ممانعت وو، نه هغوی ذمیان کیدې شو یعنی د عربو مشرکان، ددې وجې نه صرف دوه صورتونه کیدې شو چې یا خو اسلام قبول کړي یا توره چې په دې سره د دوی خټونه او وهلي شي؟»

③ په آیت کریمه کښې چې د مکې مکرمې د داخلیدو نه کوم ممانعت دي نو ددې تعلق یو خاص عمل سره دي یعنی حج. او مطلب دادې چې اوس دا خلق د حج دپاره نه شي راتلي، ددې وجې نه نبی صلی الله علیه و آله حضرت ابوبکر صدیق رضی الله عنه ته حکم کړې وو، چې کله حج ته لاړ شي نو یوم النحر باندې په منی کښې دا اعلان او کړئ، «ان لا یحج بعد العام مشرک» چې ددې کال نه پس دي هېڅ یو مشرک هم حج له نه راځي.

④ د آیت کریمه معنی دا هم کیدې شي چې مشرکین اوس د غلبې په صورت کښې په مکه مکرمه کښې نه شي داخلیدي، دغه شان په مسلمانانو باندې د لویي کولو په صورت کښې هم نه شي داخلیدي. ددې مرسته ددې آیت کریمه نه هم کیږي «اولئک ماکان لهم ان یدخلوها»

① (اعلاء السنن: ۵۲۸/۱۲)۔

② (پورته حواله، واحکام القرآن: ۱۱۴/۳، سورة التوبة، هل يجوز دخول المشرك المسجد؟)۔

③ (اعلاء السنن: ۵۲۸/۱۲، واحکام القرآن: ۸۸/۱، سورة البقرة، الحث على نظافة البدن والثياب، وقال السرخسي في تاويل هذه الآية: الدخول على الوجه الذي كانوا اعتادوا في الجاهلية على ما روى انهم كانوا يطوفون بالبيت عراة، والمراد القرب من حيث التدبير والقيام بعمارة المسجد الحرام.....) شرح كتاب السير الكبير: ۹۸/۱/۱، رقم (۲۷)۔

④ (الهداية: ۲۳۹/۷، كتاب الكراهية، مسائل متفرقة، وعمدة القاري: ۳۰۰/۱۴، رقم (۳۵۰۳)، باب هل يستشفع

الى اهل الذمة.....)۔

⑤ (البقرة: ۱۱۴)۔

نو دا معلومه شوه که کافران ذمیان وی نو دوی هلته داخلیدی شی ځکه چې په دې صورت کښې به دوی مقهور او مغلوب وی او حربی کافر نه شی داخلیدی، مگر دا چې د امام نه د امان اجازت واخلی او داخل شی نو بیا داخلیدی شی. هر چې د جهورو دویم او څلورم دلیل دې نو احناف هم ددې قائل دی چې په عامو مساجدو کښې د کافرانو داخلیدل د امام یا د عامو مسلمانانو په اجازت سره مشروط دی، ددې وجې نه دا دواړه د احنافو خلاف دلیل نه شی جوړیدی، لکه څنگه چې وړاندې تیر شو. پاتې شوه دا خبره چې د شرک نجاست او پلیتی د مسجد د داخلیدو نه مانع ده، نو دا مونږ نه منو ځکه چې ددې تعلق د هغوی د باطن اود اعتقاد سره دې او دا څیز نه د مسجد د تقدس او پاکوالی دپاره نقصان ورکونکې دې او نه د مسجد د ناپاکۍ سبب دې. ^(۱) والله اعلم بالصواب

د غیر مسلمو عبادت خانو ته د تلو حکم: فقهاء کرامو لیکلې دی چې د مسلمانانو دپاره د یهودیانو معبدونو، د عیسایانو کلیساگانو او د هندوانو مندورونو ته تلل مکروه دی. د کراهت وجه داده چې دا ځایونه د شیطان ځایونه دي، ددې وجې نه دې ځایونو ته د تللو نه ځان ساتل پکار دی، دا مطلب بالکل نه دې چې دې ځایونو ته د تللو دپاره د مسلمانانو حق نشته. والله اعلم. ^(۲)

قوله: وَقَالَ عُمَرُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «أَقْرَبُكُمْ مَا أَقْرَبُكُمْ اللَّهُ بِهِ: [۳۱۱۳]

او حضرت عمر رضی الله عنه د نبی کریم صلی الله علیه وسلم نه روایت کوی فرمائی چې نبی صلی الله علیه وسلم یهودیانو ته وئیلې وو چې زه هغه وخته پورې تاسو دلته برقرار ساتم ترڅو چې الله تعالی تاسو دلته برقرار ساتی. د مذکوره تعلیق تفصیل او مقصد: پورتنی کلمات رسول الله صلی الله علیه وسلم د خیبر د یهودیانو دپاره ارشاد فرمائیلې وو، د خیبر د فتح کولو نه پس نبی صلی الله علیه وسلم خپله اراده دا ښکاره کړې وه چې یهودیان ددې ځای نه اووېستلې شی، ځکه چې اوس علاقه د مسلمانانو په ملکیت کښې راغلې وه، هر کله چې یهودیانو ته د نبی صلی الله علیه وسلم ددې ارادې پته اولگیده نو هغوی د نبی صلی الله علیه وسلم په خدمت کښې عرض او کړو چې مونږ ددې ځای نه اونه وېستلې شو، ددې په بدله کښې به زمونږ له طرفه عمل وی او مسلمانانو ته به نیم پیداوار ورکولې شی، نبی صلی الله علیه وسلم د دغه یهودیانو دا درخواست قبول کړو او دا وضاحت ئې هم او فرمائیلو چې مونږ ترکوم وخته پورې تاسو دلته باقی ساتل غواړو نو هغې پورې به اوسیرئ، چې کله مونږ ستاسو ویستل غواړو نو بیا به مونږ هغه وخت تاسو اوباسو، دا خبره یهودیانو اومنله، په دې خبره باندې دا معامله جاری وه، تردې چې دا خلق حضرت عمر رضی الله عنه د خلافت په دور کښې ددې

^(۱) (اعلاء السنن: ۱۲/۵۳۰)۔

^(۲) (الهدایة: ۷/۲۳۹، کتاب الکراهیة، مسائل متفرقة، والاوجز: ۱۵/۶۵۳)۔

^(۳) حاشیة ابن عابدین: ۵/۲۷۴، کتاب الحظر والاباحه، فصل فی البیع، والفتاوی الهندیة: ۵/۳۴۶، کتاب الکراهیة، الباب الرابع عشر فی اهل الذمة.....)۔

خانی نه او ویستل او د تیماء او د اریحاء طرفته نې اولیېل(۱).
 امام بخاری رحمه الله په ترجمه الباب کښې د مذکوره مقصد ثابتولو او مدلل کولو دپاره دا
 تعلیق پیش کړو چې یهودیان او نور کافران به د جزیره العرب نه ویستلې شی، دوی ته به
 دلته د اوسیدو اجازت نه ورکړې کیږي.
 د مذکوره تعلیق تخریج: دا تعلیق امام بخاری رحمه الله په خپل "صحیح" کښې کتاب الحرث
 کښې موصولاً ذکر کړې دي(۲).

ترجمه الباب سره د تعلیق موافقت: ترجمه الباب سره د مذکوره تعلیق مناسبت بالکل واضح
 دي ځکه چې ترجمه الباب د یهودیانو د ویستلو وه او د تعلیق تعلق هم ددې سره دي،
 پورتنی ذکر شوې تفصیل ښه طریقې سره ددې خبرې وضاحت کوي.

۲۹۹۶: (۲) ۳۴۷- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي سَعِيدُ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِيهِ
 عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ بَيْنَمَا نَحْنُ فِي الْمَسْجِدِ خَرَجَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
 وَسَلَّمَ - فَقَالَ «انْطَلِقُوا إِلَى يَهُودَ». فَخَرَجْنَا حَتَّى جِئْنَا يَتَّيْتُ الدَّرَاسِ فَقَالَ «أَسْلِمُوا تَسْلَمُوا،
 وَاعْلَمُوا أَنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ، وَإِنِّي أُرِيدُ أَنْ أَجْلِبَكُمْ مِنْ هَذِهِ الْأَرْضِ، فَمَنْ يَجِدْ مِنْكُمْ
 بِمَالِهِ شَيْئًا فَلْيَبِيعْهُ، وَإِلَّا فاعْلَمُوا أَنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ».

رجال الحديث

① عبدالله بن يوسف: دا عبدالله بن يوسف نینسی رحمه الله دي. د دوی مختصره تذکره د "بده
 الوسی" په دویم حدیث کښې تیره شوې ده(۳).

② الليث: دا امام ابو الحارث لیث بن سعد فهمی رحمه الله دي. د دوی تذکره د "بده الوسی" په دریم
 حدیث کښې تیره شوې ده(۴).

③ سعيد المقبري: دا ابو سعد سعید بن کیسان مقبری مدنی رحمه الله دي. د دوی حالات په کتاب
 الايمان، "باب الدین یس"..... کښې بیان شوې دي(۵).

(۱) انظر الصحيح للبخاري، كتاب الحرث، باب اذا قال رب الارض: افرک ما افرک الله..... رقم (۲۳۳۸) -

(۲) پورته حواله، وكذا وصله مسلم في صحيحه، كتاب المساقاة، باب المساقاة..... رقم (۳۹۶۷) -

(۳) قوله: عن أبي هريرة رضي الله عنه: الحديث، أخرجه البخاري أيضا، كتاب الاعتصام..... باب قوله تعالى: (وكان
 الانسان أكثر شئ جدلاً) رقم (۷۳۴۸)، وكتاب الاكراه، باب في بيع المكره ونحوه..... رقم (۶۹۴۴)، ومسلم،
 كتاب الجهاد، باب اجلاء اليهود من الحجاز، رقم (۴۵۹۱)، وابو داود، كتاب الخراج..... باب كيف كان اخراج

اليهود.....؟ رقم (۳۰۰۳) -

(۴) كشف الباري: ۱/ ۲۸۹ -

(۵) كشف الباري: ۱/ ۳۲۴ -

(۶) كشف الباري: ۲/ ۳۳۶ -

۴) ایبه دلتهد "اب" نه مراد د سعید المقبری والد صاحب ابو سعید کیسان بن سعید المقبری رضی الله عنه دی. (۱)

۵) ابوهریره رضی الله عنه: د حضرت ابوهریره رضی الله عنه حالات په کتاب الایمان، "باب امور الیمان" کښې تیر شوې دي. (۲)

قوله: قال: بينما نحن في المسجد خرج النبي صلى الله عليه وسلم، فقال:

انطلقوا إلى يهود: حضرت ابوهریره رضی الله عنه فرمائی چې مونږ صحابه کرام په مسجد کښې ناست وو چې نبی کریم صلی الله علیه و آله د خپلې حجرې نه راووتلو او وې فرمائیل، د یهودیانو طرفته لاړ شئ.

په حدیث شریف کښې د یهودیانو نه څوک مراد دی؟ پورتنی حدیث کښې دا راغلې دي چې "انطلقوا الى يهود" اوس سوال دادې چې ددې نه د یهودیانو کومه قبيله مراد ده؟ ددې سوال د جواب نه وړاندې په دې باندې ځان پوهه کړئ چې کله نبی صلی الله علیه و آله مدینې منورې ته تشریف راوړلو نو دغه وخت دغه ځانې کښې د کفارو درې قسمونه وو:

۱) کفار محاربین، چې باقاعده به ئې د دشمنۍ اعلان کوو، د جنگ دپاره راضی وو او د نبی صلی الله علیه و آله او د مهاجرینو د وجود برداشت کولو دپاره بالکل تیار نه وو.

۲) کفار مترددین، کوم چې ددې خبرې په انتظار کښې وو چې گورو چې ددې مسلمانانو به څه انجام وي؟ که غالب شو نو مونږ به هم دوی سره شو، ورنه د خپل پلار نیکه په دین باندې به قائم پاتې شو. بیا د دوی هم درې قسمونه وو: یو خو هغه وو چې باطناً ئې د نبی صلی الله علیه و آله غلبه غوښتله، لکه بنو خزاعه، دویم هغه قسم خلق دی چې باطناً ئې د نبی صلی الله علیه و آله د شکست تمنا کوله لکه بنو بکر، درېیم قسم هغه خلق وو چې ظاهراً خو نبی صلی الله علیه و آله سره وو او باطناً د نبی صلی الله علیه و آله د دشمنانو ملگری وو لکه منافقین.

۳) د مدینې منورې یهودیان، یعنی بنونضیر، بنوقریظه او بنوقینقاع وغیره، دوی سره د نبی صلی الله علیه و آله دا معاهده شوې وه چې یو بل سره به نه جنگ کوو او نه به د یو بل خلاف د یو قبیلې مدد کوو (۱). لیکن چونکه د یهودیانو په فطرت کښې مکر او د هوکه بازی داخل ده، دلته هم ددې کار نه منع نه شو او ددې معاهدې پوره والې ئې اونه کړو، نو د ټولو نه مخکښې بنوقینقاع دا معاهده ماته کړه او په یهودیانو کښې د ټولو نه مخکښې هم دوی د مدینې منورې نه جلاوطن کړې شو، د دوی د جلاوطن کیدو دا واقعه د پنځلسم شوال دویمې (۲) هجری ده. (۳). د بنوقینقاع نه پس په یهودیانو کښې بنونضیر وعده خلافي او کړه، نبی صلی الله علیه و آله

(۱) د دوی د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب الاذان، باب وجوب القراءة للامام والمأموم.....) _

(۲) کشف الباری: ۱/۶۵۹ _

(۳) انظر فتح الباری: ۷/۳۳۰، وکشف الباری، کتاب المغازی: ۱۷۸-۱۷۹ _

(۴) کشف الباری، کتاب المغازی: ۱۸۲ _

دوی هم د مدینې منورې نه جلا وطن کړل او دا د څلورمې هجري د ابتداء واقع ده. بنو قریظه چونکه په غزوۀ خندق کېنې د قريشو ملګرتیا اوکړه او نبی ﷺ سره ئې خپله معاهده ماته کړه، ددې وجې نه دوی هم په ۵ هجري کېنې قتل کړې شو، د دوی ښځې او بچي غلامان کړې شو. د يهوديانو ددې قبيلو د جلاوطن کيدو دا ټول مذکوره واقعات چې دی نو دا د غزوۀ خیبر نه وړاندې دی او حضرت ابوهريره رضی الله عنه د خیبر د فتح کولو نه پس راغی او اسلام ئې قبول کړو، ددې وجې نه د حدیث دا الفاظ ”بینما نحن فی المسجد.....“

یهود “مشکل ثابتیری چې دلته د یهودیانو نه څوک مراد دی؟ د علامه قرطبی رحمته الله علیه د کلام د سیاق نه ذهن ته دا راځی چې دلته د یهودیانو نه مراد بنونضیر دی. لیکن دا جواب په هغه صورت کېنې قابل قبول کیدې شی چې: د ”بینما نحن“ نه مراد ”بینما المسلمون“ وی، اوس به مطلب داوی چې دوی د یو زور امر حکایت بیانوی، چې په هغې کېنې دوی په خپله شریک نه وو، لیکن په اول وخت کېنې چې کوم حضرات مسلمانان شوې وو نو د هغوی نه ئې ددې په باره کېنې څه اوریدلې وو او د هغې نه تعبیر دوی د ”نحن“ په صیغې د متکلم سره اوکړو.

حافظ ابن حجر رحمته الله علیه فرمائی چې د باب په دې حدیث کېنې د کومو یهودیانو تذکره اوشوه نو د دوی د نسب وضاحت ما ته چرته ملاؤ نه شو چې دا څوک وو؟ ظاهره خو داده چې د بنوقینقاع، بنونضیر او بنو قریظه نه پس څه یهودیان په مدینه منوره کېنې پاتې شوې وو، هغوی ترینه مراد دی. لکه د باب په حدیث شریف کېنې چې کومه مکالمه ذکر ده نو دا دوی سره شوې وه، دغه دوران کېنې حضرت ابوهريره رضی الله عنه هم موجود وو، ددې مکالمې دوران کېنې نبی ﷺ د دوی د ویستلو اراده هم ښکاره کړه، دې دپاره چې جزیره العرب د یهودیانو او د نورو کافرانو نه بالکل پاک او صفا شی. والله اعلم بالصواب

قوله: فخرجنا حتی جئنا بیت المدراس: نومونږ اووتلو، تردې چې بیت المدراس ته راغلو. د بیت المدراس معنی: ددې لفظ دوه معنې بیان کړې شوې دی:

① بیت المدراس هغه ځای ته وئیلې شی چرته چې به د یهودیانو عالم (ربی) هغوی ته د مذهبي کتابونو تعلیم ورکوو.

② د مدراس نه د یهودیانو هغه عالم مراد دې، کوم چې به د هغوی کتاب لوسته او هغوی ته به ئې ښوده. په اولنی صورت کېنې د ظرفیت او په دویم صورت کېنې د فاعلیت معنی ده.

(۱) تفصیل دپاره اوگوری، کشف الباری، کتاب المغازی: (۲۹۶)۔

(۲) فتح الباری: (۲۷۱/۶)۔

(۳) پورته حواله و ذکر الحافظ رحمته الله علیه فیه وجوها اخرى ایضا، انظرها ان شئت۔

(۴) ارشاد الساری: (۲۳۵/۵)۔

(۵) پورته حواله، قال الحافظ فی فتح الباری (۲۷۱/۶): والاول ارجح لان

پورته ترجمه کښې اولنې صورت اختیار کړې شوې دي.

قال: اسلموا تسلموا، واعلموا ان الارض لله ورسوله، والى اريد ان اجليكم من هذه الارض
نبی ﷺ او فرمائیل، اسلام قبول کړئ، نو محفوظ او مامون به شئ، او په دې ځان پوهه کړئ
چې زمکه د الله تعالی او د هغه د رسول ده، دغه شان دا چې زه تاسو ددې زمکې (حجاز
مقدس، نه جلا وطن کول غواړم.

د نبی کریم ﷺ دا ارشاد مبارک "اسلموا تسلموا" د جوامع الکلم نه دي، چې د خپل اختصار
باوجود په کښې د دنیا او آخرت ټولې کامیابۍ راټولې شوې دي، دغه شان دا ارشاد مبارک
د لفظي او معنوي بلاغت جامع مثال دي (۱). ددې حدیث په نورو طرُقو کښې د "اسلموا
تسلموا" جمله مکرر راغلې ده، چې نبی ﷺ دا خبره څو ځله ارشاد او فرمائیل، لیکن امام
بخاری رحمه الله غالباً دلته د اختصار د وجې نه صرف یو جمله ذکر کړې ده (۲).

د "واعلموا....." جمله ابتدایه مستانفه ده او مطلب دادې چې کله نبی ﷺ دا او فرمائیل
چې "اسلموا تسلموا" نو گویا هغوی تپوس او کړو چې "لم قلت هذا وکرته؟" چې تاسو مونږ ته
دا الفاظ ولې او وئیل او دا مو ولې تکرار کړل یعنی ولې مو بار بار او وئیل؟ ددې په جواب
کښې نبی ﷺ او فرمائیل چې په دې خبره ځان ښه پوهه کړئ چې زه ستاسو ویستل
غواړم، که تاسو خلقو اسلام قبول کړو نو د جلا وطن کیدو نه به بچ شئ او د نورو مشکلاتو
نه به هم بچ شئ کوم مشکلات چې د جلا وطنۍ نه هم زیات سخت کیدي شي (۳).

قوله: فمن یجد منکم بما له شیئاً فلیبعه : ددې وجې نه د کوم سړي په ملکیت چې څه
داسې خیزوی چې غیر منقول وی نو هغه دې دلته خرڅ کړي.

د یجد مشتق منه او معنی: په حدیث شریف کښې چې د "یجد" لفظ راغلې دي نو دا د وجدان
نه مشتق دي یا د وجد نه مشتق دي، د وجدان معنی ده موندل او د وجد معنی ده محبت. که
د وجدان نه مشتق او منلې شي نو په دې صورت کښې به د پورتنۍ جملې مطلب دا شي چې
هغه خیزونه چې د هغې منتقل کول سخت او مشکل وي لکه اونې وغیره، یا د هغې منتقل
کول ناممکن وي لکه جائیداد وغیره نو که ددې څوک اخستونکې دلته ملاؤ شي، خرڅ ئې
ممکن وي نو دا خرڅ کړئ، گویا نبی ﷺ ددې ارشاد مبارک په ذریعې سره دغه یهودیانو ته

بقیه از حاشیه گذشته [فی الروایة الاخری: حتی انی المدراس..... "ولکن رده العینی ﷺ (۸۹/۱۵) حیث
قال: ما تم ترجیح لان معنی انی المدراس ای جاء مکان دراستهم للتوراة ونحوها"]
(۱) ارشاد الساری: ۲۳۵/۵.

(۲) انظر الصحيح للبخاری، کتاب الاکراه، باب فی بیع المکره، رقم (۶۹۴۴)، وسنن ابی داود، کتاب
الخراج..... باب کیف کان اخراج اليهود؟ رقم (۳۰۰۳).

(۳) عمدة القاری: ۹۰/۱۵، وفتح الباری: ۲۷۱/۶، وارشاد الساری: ۲۳۵/۵.

ددې خبرې اجازت ورکړو چې که تاسو ددې څیزونو خرڅول غواړئ نو بالکل خرڅولې شئ
که د وجد نه مشتق او منلې شی نو په دې صورت کښې به مطلب دا شی چې هغه څیزونه چې
تاسو ته محبوب او خوښ دي نو هغه تاسو خرڅولې شئ (۱).

قوله: وَالَا فاعلموا أن الأرض لله ورسوله: او که داسې نه وی خرڅ مو نه کړل نو پوهه
شئ چې زمکه د الله تعالی او د هغه د رسول ده.

مطلب دادې چې تاسو خپل مملوکه څیزونه خرڅولې شئ، تاسو ته اجازت دې خرڅ ئې
کړئ. ورنه ددې ځانې نه وتل خو ستاسو دپاره مقدر دی، ددې وجې نه په هر حال کښې چې
وی تاسو به ددې ځانې نه ویستلې شئ، د الله تعالی مشیت هم دادې چې هغه ستاسو ددې
زمکو وارثان مسلمانان او ګرځوی ددې وجې نه ددې ځانې نه اوځئ (۲).

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: حضرت ابوهریره رضی الله عنه ددې حدیث شریف
مطابقت ترجمه الباب سره په دې معنی کښې دې چې په دې کښې د نبی صلی الله علیه و آله دا ارشاد
مبارک نقل کړې شو چې نبی صلی الله علیه و آله د یهودیانو د ویستلو اراده فرمائیلې وه، وجه دا وه چې
نبی صلی الله علیه و آله د عرب په زمکه باندې د کفارو موجودګی نه خوښوله، لیکن قدرت ته دا منظوره نه
وه چې دا خپله اراده ئې پوره کړې وې لیکن وصیت ئې اوکړو چې غیرمسلم د جزیره العرب
نه اوباسئ، نو په دې وصیت باندې بیا وروستو حضرت عمر فاروق رضی الله عنه د خپل خلافت په
زمانه کښې عمل اوکړو او باقی پاتې ټول یهودیان او کفار ئې د هغه ځانې نه بهر کړل، دا د
ترجمة الباب مقصود وو (۳).

۲۹۹۷: (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ الْأَحْوَلِ سَمِعَ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ سَمِعَ ابْنَ
عَبَّاسٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - يَقُولُ يَوْمَ الْخَيْبِ، وَمَا يَوْمُ الْخَيْبِ ثُمَّ بَكَى حَتَّى بَلَ دَمْعُهُ
الْحَصَى. قُلْتُ يَا أَبَا عَبَّاسٍ، مَا يَوْمُ الْخَيْبِ قَالَ اشْتَدَّ بِرَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -
وَجَعَهُ فَقَالَ «اِنَّنِي بَكَيْتُ لَكُمْ كِتَابًا لَا تَضِلُّوا بَعْدَهُ أَبَدًا». فَتَنَازَعُوا وَلَا يَنْبَغِي
عِنْدَ نَبِيِّ تَنَازُعٍ فَقَالُوا مَا لَهُ أَهْجَرَ اسْتَفْهَمُوهُ. فَقَالَ «ذُرُونِي، فَإِلَّذِي أَنَا فِيهِ خَيْرٌ مِمَّا تَدْعُونِي
إِلَيْهِ - فَأَمَرَهُمْ بِثَلَاثٍ قَالَ - أَخْرِجُوا الْمُشْرِكِينَ مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ، وَأَجِيزُوا الْوَفْدَ بِحَوْمَا كُنْتُ
أَجِيزُهُمْ». وَالثَّالِثَةُ خَيْرٌ، إِمَّا أَنْ سَكَتَ عَنْهَا، وَإِمَّا أَنْ قَالَهَا فَتَسَيَّئْتُهَا. قَالَ سُفْيَانُ هَذَا
مِنْ قَوْلِ سُلَيْمَانَ. [ر: ۱۱۴]

(۱) پورته حواله جات.

(۲) عمدة القاری: ۹۰/۱۵، وارشاد الساری: ۲۳۵/۵، وشرح الکرمانی: ۱۳۳/۱۳.

(۳) هذا خلاصة ما ذكره العيني في العمدة: ۸۹/۱۵، وايضا انظر ارشاد الساری: ۲۳۵/۵، وشرح ابن
بطال: ۳۴۱/۵ - ۳۴۲.

(۱) قوله: ابن عباس رضی الله عنه: "الحدث، مر تخريجه في كتاب العلم، باب كتابة العلم".

رجال الحديث

① محمد: دلته د امام بخاری رحمہ اللہ د شیخ محمد بارہ کنبی هیخ یو راوی دا وضاحت نه دې کړې چې د محمد نه خوک مراد دی؟ د حافظ ابن حجر رحمہ اللہ راښی داده چې د محمد نه مراد ابن سلام دې، ځکه چې د کتاب الوضوء په یو روایت کنبی "حدثنا محمد حدثنا ابن عیینة" راغلي دې. (۱) په دې باندې حافظ رحمہ اللہ یقین کړې دې چې څنگه دغلته ابن سلام مراد دې نو دلته هم ابن سلام مراد دې (۲) او د محمد بن سلام بیکندي رحمہ اللہ حالات په کتاب الایمان، "باب قول النبی ﷺ: انا اعلمکم بالله....." کنبی تیر شوي دي. (۳)

② ابن عیینة: دا مشهور امام حضرت سفیان ابن عیینة رحمہ اللہ دې د دوی تذکره د "بده الوسی" د اولنی حدیث په ضمن کنبی اجملاً او په کتاب العلم، "باب قول المحدث: حدثنا....." کنبی تفصیلاً تیره شوي ده. (۴)

③ سلیمان: دا سلیمان بن ابی مسلم الاحول رحمہ اللہ دې. (۵)

④ سعید بن جبیر: دا مشهور تابعی حضرت سعید بن جبیر اسدي رحمہ اللہ دې.

⑤ عبدالله بن عباس رضی اللہ عنہما: دا مشهور صحابی حضرت عبدالله بن عباس هاشمی رضی اللہ عنہما دې. د دې دوو حضراتو تذکره د بده الوسی په "الحديث الرابع" کنبی ذکر کړې شوي ده. (۶)

(۱) انظر صحيح البخاری، کتاب الوضوء، باب غسل المرأة اباهما الدم..... رقم (۲۴۳)۔

(۲) فتح الباری: ۶/۲۷۱، ورد عليه العینی: کعادته مواضع شتی: حيث قال: لا يلزم من قوله في الوضوء: حدثنا ابن سلام عن ابن عیینة، ان يكون هنا ايضا ابن سلام عن ابن عیینة؛ لانه قال في عدة مواضع: عن محمد بن يوسف البيكندي عن ابن عیینة، و روى الاسماعيلي هذا الحديث عن الحسن بن سفیان عن محمد بن خلاد الباهلي عن ابن عیینة..... (انظر العمدة: ۱۵/۹۰) هذا الكلام منه: كما ترى: ولكنه ايضا لا يخلو عن النظر؛ لانه كما لا يلزم من ان يكون ابن سلام، كذلك لا يلزم ان يكون ابن يوسف البيكندي، ولا سيما اذا صرح الامام البخاری رحمہ اللہ في جميع المواضع من كتاب الوضوء، بنسب محمد بن يوسف، الا محمدا الذي نحن بصدده، فانه قال هناك فقط: محمد عن ابن عیینة غير منسوب، كما ذكر هنا ايضا غير منسوب، ومن ثم لم يقل هناك في الوضوء: ابن سلام كما اشرنا اليه الآن، ثم ان اراد العینی رحمہ اللہ بقوله: و روى الاسماعيلي..... انه يمكن ان يكون ابن خلاد فهو مما لا يمكن لان ابن خلاد الباهلي لا يروى عنه الامام البخاری، ولا هو من شيوخه، نعم ابن خلاد من تلامذة ابن عیینة الامام، (انظر تهذيب الكمال: ۲/۱۶۹-۱۷۰)، فلعل هذا الامر اوقعه في الحيرة، والله اعلم بالصواب. والعلامة القسطلاني ايضا جزم بقول الحافظ، انظر شرحه: ۵/۲۳۵)۔

(۳) كشف الباری: ۲/۹۳)۔

(۴) كشف الباری: ۱/۲۳۸، و: ۳/۱۰۲)۔

(۵) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب التهجد، باب التهجد بالليل)۔

(۶) كشف الباری: ۱/۳۴۵)۔

خبردارې: د حضرت عبدالله بن عباس رضي الله عنه ددې روايت تشرېح په كتاب العلم او كتاب المغازی كښې راغلې ده (۱).

ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت په دې جمله كښې دې، "أخرجوا المشركين من جزيرة العرب" ليكن دا اشكال پرې كيږي چې ترجمة الباب خو د يهوديانو د ويستلو ده، او په حديث شريف كښې د مشركانو د ويستلو تذكره ده، نو دا څنگه مطابقت شو؟

ددې جواب دادې چې لفظ د مشرك عام دې چې يهوديانو ته هم شامل دې، دلته د بوجه قابله خبره دا ده چې اكثر يهوديان د الله تعالى د وحدانيت قائل وى، د مسلمانانو نه پس د دنيا هم دا يو قوم دې چې د توحيد قائل دى، ددې باوجود د ذوى د ويستلو حكم دې نو د مشركانو او د نورو كافرانو د ويستلو حكم خوبه په طريقه اولى سره وى (۲). والله اعلم دلته ددې خبرې لحاظ هم ساتل پكار دى چې د باب په روايت كښې د نسخو اختلاف دې، په يو نسخه كښې "أخرجوا المشركين....." او په دويمه نسخه كښې، كومه چې د جيانى نسخه ده، "أخرجوا اليهود....." راغلې دې، روايتى حيثيت سره دا اولنئ نسخه زياته غوره او راجح ده (۳).

①۴ باب: إِذَا غَدَرَ الْمُشْرِكُونَ بِالْمُسْلِمِينَ هَلْ يُعْفَى عَنْهُمْ

د ترجمة الباب مقصد: دلته د امام بخارى رحمه الله مقصد دادې چې كه مشركان مسلمانانو سره د هوكه او كړې يا مسلمانانو سره وعده خلافى او كړې نو آيا دوى ته معافى كيږي شى؟ مصنف رحمه الله په دې سلسله كښې څه فيصله كن خبره نه ده كړې، وجه داده چې په روايت الباب كښې كومه واقعه نقل شوې ده، په هغې كښې د امامانو او د فقهاؤ اختلاف دې، چې كومې بنځې نبي عليه السلام ته زهر ورکړې وو نو آيا هغې ته سزا ورکړې شوې وه يا نبي عليه السلام هغه معاف كړې وه (۴).

د مذكوره مسئلې تفصيل: قاضى عياض رحمه الله فرمائى چې په دې باب كښې روايتونه مختلف دى، چې نبي عليه السلام دا يهودنږه قتل كړې وه يا نه؟ لكه د صحيح مسلم د حضرت انس رضي الله عنه د روايت، په ابوداؤد شريف كښې د حضرت جابر رضي الله عنه د روايت (۵)، دغه شان د ابن هشام (۶) د

(۱) كشف البارى، كتاب العلم: ۴/ ۳۳۰-۳۸۵، وكتاب المغازی: ۶۷۲-۶۷۷.

(۲) عمدة القارى: ۱۵/ ۹۰، وفتح البارى: ۶/ ۲۷۱.

(۳) فتح البارى: ۶/ ۲۷۱.

(۴) فتح البارى: ۶/ ۲۷۲، وعمدة القارى: ۱۵/ ۹۱.

(۵) سنن ابى داود، كتاب الديات، باب فيمن سقى رجلاً سماً..... رقم (۴۵۱۰).

(۶) سيرة ابن هشام: ۳/ ۳۳۸، بقیة امر خيبر، امر خيبر، امر الشاة المسمومة.

ذکر کړې تفصیل نه دا معلومېږي چې نبی ﷺ دغه ښځه نه وه قتل کړې، بلکې د حضرت انس رضی الله عنه د مسلم شریف روایت خو صراحتاً د قتل نفی کوي، فرماني:

”ان امرأة يهودية اتت رسول الله صلى الله عليه وسلم بشاة مسمومة، فاكل منها، فجن بها إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم، فسأله عن ذلك، فقالت: أردت لاقتلك، قال: ما كان الله يسلطك على ذاك، قال: أو قال: على قال: قالوا: ألا نقتلها؟ قال: لا“ (۱).

يعني ”يو يهودی ښځې نبی ﷺ ته د زهرو نه ډکه چیلۍ راوړله، نبی ﷺ د هغې نه لږ شان خوراک اوکړو، بیا دغه ښځه د نبی ﷺ خدمت کښې حاضرې کړې شوه نو نبی ﷺ ددې ښځې نه په چیلۍ کښې د زهرو اچولو تپوس اوکړو نو هغې ښځې او وئیل چې زما ستاسو د قتل کولو اراده وه. نبی ﷺ او فرمائیل چې الله تعالی به تاسو ته ددې موقع نه درکوي، یا ئې دا او فرمائیل چې الله تعالی به تاته په ماباندې تسلط نه درکوي. صحابه کرامو رضی الله عنهم عرض اوکړو، چې آیا مونږ دا قتل نه کړو؟ نبی ﷺ او فرمائیل، نه“.

او د حضرت ابوسلمه په روایت کښې راغلې دې کوم چې د ابوداؤد شریف (۲) روایت دې، چې نبی ﷺ دغه ښځه قتل کړه، هم دا مضمون امام عبدالرزاق په ”مصنف“ کښې د معمر بن راشد (۳) او علامه ابن سعد رحمه الله په ”طبقات“ کښې د ”ابن لهيعة عن عمر مولى عقبة“ د طریق نه نقل کړې دي (۴). ددې تعارض د ختمولو دپاره امام بیهقي رحمه الله خو دا فرمائیلې دی چې کیدې شي چې نبی ﷺ اول معافی فرمائیلې وی لیکن ددې واقعي نه چې کوم دویم یعنی حضرت بشر بن البراء بن معرور رحمه الله متاثره شوې وو او ددې واقعي نه یو کال پس وفات شوې وو نو نبی ﷺ د دوی په قصاص کښې دا ښځه هم قتل کړه (۵). هم دا جواب علامه سهیلی رحمه الله هم کړې دې او نبی ﷺ چې دې ښځې ته کومه معافی کړې وه نو ددې وجه ئې دا ښودلې ده چې د نبی ﷺ دا عادت نه وو چې د خپل ذات دپاره د چا نه انتقام واخلې، ددې وجې نه ئې دې ښځې ته معافی کړې وه، بیا د حضرت بشر رحمه الله په بدله کښې قصاصاً قتل کړه (۶). البته

(۱) انظر صحيح مسلم، كتاب السلام، باب السم، رقم (۵۷۰۵).

(۲) سنن أبي داود، كتاب الديات، باب فيمن سقى رجلاً سما..... رقم (۴۵۱۱).

(۳) المصنف لعبد الرزاق: ۵۳/۶، كتاب اهل الكتاب، هل يقتل ساحرهم؟ (۱۰۰۳)، و: ۱۸۸/۱۰، كتاب الجامع، باب الحجامة..... رقم (۱۹۹۸۳).

(۴) الطبقات الكبرى لابن سعد: ۱۷۲/۱، ذكر علامات النبوة بعد نزول الوحي).

(۵) دلائل النبوة للبيهقي: ۲۶۲/۴، واختاره النووي في شرحه على مسلم: ۲۲۲/۲، وقال: قال القاضي: وجه الجمع بين هذه الروايات والا قويل انه لم يقتلها اولا حين اطلع على سمها، وقيل له: اقتلها، فقال: لا فلما مات بشر بن البراء من ذلك سلمها لاوليائه، فقتلوها قصاصاً، فيصح قولهم: لم ديقتلها اي: في الحال، ويصح قولهم: قتلها اي: بعد ذلك. وكذا السيوطي، انظر الديباج: ۸۴۸/۲).

(۶) الروض الانف للسهيلي: ۲/۲۴۳، فصل: وذكر الشاة المسمومة.....).

حافظ ابن حجر رحمته الله د نبی صلی الله علیه و آله ددې معافۍ یو بله وجه هم لیکلې ده چې ممکنه ده چې د نبی صلی الله علیه و آله ددې معافۍ د وجې نه دا ښځه اسلام قبول کړی او ددې قتل د حضرت بشر رضی الله عنه د وفات پورې ددې وجې نه مؤخر کړې شو چې د حضرت بشر په وفات سره به د قصاص وجوب متحقق او ثابت شی، نو هر کله چې د قصاص وجوب متحقق شو نو دغه ښځه بیا قصاصاً قتل کړې شوه^(۱). علامه سحنون مالکی رحمته الله خو په دې خبره باندې د محدثینو اجماع نقل کړې ده چې نبی صلی الله علیه و آله دغه ښځه قتل کړې وه^(۲). لیکن څنگه چې پورتنی تفصیل نه معلومه شوه چې دا مسئله متفق علیه نه ده بلکه مختلف فیه ده، ددې وجې نه د اجماع دعوی کول صحیح نه دي. والله اعلم بالصواب

ددې نه پس چې امام بخاری رحمته الله په ترجمه الباب کښې کوم سوال ذکر کړې دي، هغه او گورئ چې په پورتنۍ مسئله کښې د فقهاؤ څه موقف دي؟ ددې جواب دادې چې دا کار په امام او حاکم باندې موقوف دي چې غدار او خیانتگر ته څه سزا ورکوی؟ که هغه خیال او کړی چې د قتل ضرورت نشته نو د تنبیه او خبردراي په طور باندې نوره سزا ورکولې شی او معافۍ ورته هم کولې شی، مثلاً د جرم نوعیت معمولی وی او که حاکم او امام ددې مجرم قتل مناسب او ضروري او گنړی نو قتل دې کړی، مثلاً دا چې جرم ئې غیر معمولی وی لکه یو مسلمان قتل کړی وغیره وغیره، لکه نبی صلی الله علیه و آله عرینین قتل کړې وو ځکه چې هغوی نبی صلی الله علیه و آله سره وعده خلافي کړې وه او د نبی صلی الله علیه و آله شپونکې حضرت یسار رضی الله عنه ئې قتل کړې وو، علامه مهلب رحمته الله فرمائی:

”ويعنى عن المشركين إذا غدروا بشئ يستدرک إصلاحه وجبره، ويعصم الله تعالى منه، إذا رأى الإمام ذلك، وإن رأى عقوبتهم عاقبتهم بما يؤدى إليه اجتهاده، وإما إذا غدروا بالقتل أو بما لا يستدرک جبره، ومالا يعصم من شره، فلا سبيل إلى العفو كما فعل النبى صلى الله عليه وسلم في العرنيين (عاقبتهم بالقتل)“^(۳).
په چا باندې زهر خوړلو سره د قتلولو حکم: دلته یوه بله مسئله هم ده، هغه دا چې که یو کس باندې زهر او خوړلې شی او هغه قتل شی نو زهر ورکوونکې به قصاصاً قتل کولې شی یا نه؟ په دې مسئله کښې هم د علماؤ اختلاف دي، د جمهور علماؤ موقف هم دادې چې په دې کښې قصاص واجب دي او پورتنی مذکوره صورت کښې به زهر ورکوونکې قتل کولې شی او د متقدمین احنافو حضراتو په نزد زهر ورکولو سره قصاص نه واجبېږي، اگرچه زهر خوړلو والا مړ شی^(۴). لیکن د متاخرین احنافو فتوی د جمهورو په قول باندې ده، ځکه چې

^(۱) فتح الباری: ۴۹۷/۷، وارشاد الساری: ۲۳۷/۵.

^(۲) عمدة القاری: ۹۱/۱۵، وشرح النووی علی مسلم: ۲۲۲.

^(۳) انظر لحدیث العرنيين، صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب قصة عكل وعربنه، رقم (۴۱۹۲).

^(۴) شرح ابن بطال: ۳۴۷/۵.

^(۵) البحر الرائق شرح كنز الدقائق: ۹۱۸، کتاب الجنایات، باب ما یوجب... [بقیه بر صفحه آنده...]

په دې زمانه کښې فساد نور هم زیات شوی دې نو د مفسدینو د شر نه عامه الناس لره محفوظ کول به هم دغه شان ممکن وی، امام رافعی رحمته الله علیه فرمائی:

”والعمل على هذه الرواية في زماننا، لانه ساء في الارض بالفساد، فيقتل دفعا لشاة“ (۱)

الشيخ محمد تلي العثماني حفظه الله: ”ولا شك ان زماننا اكثر فسادا، فالعمل بقول الجمهور اولى، ان شاء الله تعالى“. تكلمة فتح الملهم: ۳۳۸/۲-.

۲۹۹۸: (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي سَعِيدٌ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ لَمَّا فُتِحَتْ خَيْبَرُ أُهْدِيَتْ لِلنَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - شَاةٌ فِيهَا سَمٌّ فَقَالَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «اجْمَعُوا إِلَيَّ مَنْ كَانَ هَاهُنَا مِنْ يَهُودٍ». فَجَبَعُوا لَهُ فَقَالَ «إِنِّي سَأَبْلُكُمْ عَنْ شَيْءٍ فَهَلْ أَنْتُمْ صَادِقِي عَنْهُ». فَقَالُوا نَعَمْ. قَالَ هُمُ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «مَنْ أَبُوكُمْ». قَالُوا فُلَانٌ. فَقَالَ «كَذَبْتُمْ، بَلْ أَبُوكُمْ فُلَانٌ». قَالُوا صَدَقْتَ. قَالَ «فَهَلْ أَنْتُمْ صَادِقِي عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُ عَنْهُ». فَقَالُوا نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ، وَإِنْ كَذَبْنَا عَرَفْتَ كَذِبَنَا كَمَا عَرَفْتَهُ فِي آيِنَا. فَقَالَ هُمْ «مَنْ أَهْلُ النَّارِ». قَالُوا نَكُونُ فِيهَا يَسِيرًا ثُمَّ تَخْلُقُونَا فِيهَا. فَقَالَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «اخْسُوا فِيهَا، وَاللَّهِ لَا تَخْلُقُكُمْ فِيهَا أَبَدًا». ثُمَّ قَالَ - هَلْ أَنْتُمْ صَادِقِي عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُكُمْ عَنْهُ. فَقَالُوا نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ. قَالَ «هَلْ جَعَلْتُمْ فِي هَذِهِ الشَّاةِ سُمًّا». قَالُوا نَعَمْ. قَالَ «مَا حَمَلَكُمْ عَلَى ذَلِكَ». قَالُوا أَرَدْنَا إِنْ كُنْتَ كَاذِبًا نَسْتَرِيحُ، وَإِنْ كُنْتَ نَبِيًّا لَمْ يَضُرَّكَ. [۴۰۰۳، ۵۴۴۱]

خبرداري: دا سند معمولی اختلاف سره اوس یوه باب وړاندې په ”باب إخراج اليهود“ کښې تیر شوی دې.

په حدیث شریف کښې د مذکوره واقعي تفصیلات: د باب په حدیث باندې د پوهیدلو دپاره دا ضروری ده چې مونږ ددې پس منظر او نورو جزئیاتو او تفصیلاتو باندې هم نظر واچوو. هرکله چې خیبر فتح شو او د جنگ حالات برابر شو نو یهودی ښځې د نبی صلی الله علیه و آله د دعوت پروگرام جوړ کړو، دغه وخت نبی صلی الله علیه و آله ام المؤمنین حضرت صفیه رضی الله تعالی عنہا سره وو، نو دغه ښځې یو ورپسې کړې شوې چیلن د نبی صلی الله علیه و آله خدمت کښې حاضرې کړه، دې ښځې ددې خبرې تحقیق د مخکښې نه کړې وو چې نبی صلی الله علیه و آله ته د نورو اندامونو په مقابلې کښې د چیلن خپه زیاته خوښه ده نو ټوله چیلن کښې دغه ښځې زهر ګډ کړل او د هغې په دغه غوښه کښې ئې زهر

بقیه از حاشیه گذشته [القصاص.....ورد المختار: ۳۸۵/۵، والام للشافعی: ۴۲/۶، کتاب جراح العمد، الرجل یسقی الرجل السم.....والمغنی: ۲۱۲/۸]-

(۱) انظر تقریرات الرافعی علی رد المختار: ۳۲۳/۲-

(۲) قوله: عن ابی هريرة رضی الله عنه: ”الحديث، اخرجہ البخاری ایضا، کتاب المغازی، باب الشاة التي سمت للنبي صلی الله علیه و آله بغیبر، رقم (۴۲۴۹)، و کتاب الطب، باب ما یذكر فی سم النبي صلی الله علیه و آله، رقم (۵۷۷۷)-

زیات مقدار کښې شامل کړل، چې کله دغه چیلن د نبی ﷺ او د صحابه کرامو وړاندې د خوراک دپاره پیش کړې شوه نو نبی ﷺ ترینه دغه مذکوره غوښه اوچته کړه، د هغې نه ئې بوتی باندې چک اولگوو لیکن د تیرولو وخت رانغې، نبی ﷺ سره نزدې حضرت بشر بن البراء بن معرور هم ناست وو هغوی هم ددې نه څه واخسته لیکن هغوی نمری تیره کړه او نبی ﷺ نمری واپس کړه، بیا ئې او فرمائیل چې دا هډوکې ما ته وانی چې په دې کښې زهر دی، بیا نبی ﷺ هغه ښځه راوغوښتله، تپوس ئې ترینه اوکړو نو هغې ددې خبرې اقرار اوکړو چې ما په دې کښې زهر ګډ کړې دی (۱). ددې نه پس د باب حدیث شریف ته اوګورئ.

قوله: قال: لما فتحت خيبر أهديت للنبي صلى الله عليه وسلم شاة. فيها سم:

حضرت ابوهريره رضي الله عنه فرمائی چې هر کله خیبر فتح شو نو نبی کریم ﷺ ته په هدیه کښې یو چیلن پیش کړې شوه چې زهر په کښې اچولې شوې وو. د صحیح مسلم په حوالې سره اوس تیر شو چې دا چیلن پیش کوونکې یو یهودی ښځه وه، اهل سیرو ددې ښځې نوم زینب بنت الحارث نقل کړې دې، دا د سلام بن مشکم ښځه وه او د مرحب خور یا وریره وه (۲). د کلمه سم تحقیق: په کلمه سم کښې درې لغتونه دي، دا د سین فتحه، ضمه او کسره درې واړو حرکاتو سره لوستلې شوې دې او فتحه په کښې افصح حرکت دې، ددې جمع سم او سموم ده ددې معنی زهر ده (۳).

فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «اجْمَعُوا إِلَيَّ مَنْ كَانَ هَاهُنَا مِنْ يَهُودٍ». فَجِئُوا لَهُ فَقَالَ «إِنِّي سَأَبْلُغُكُمْ عَنْ شَيْءٍ فَهَلْ أَنْتُمْ صَادِقِي عَنْهُ». فَقَالُوا نَعَمْ. قَالَ هُمُ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «مَنْ أَبُوكُمْ». قَالُوا فُلَانٌ. فَقَالَ «كَذَبْتُمْ، بَلْ أَبُوكُمْ فُلَانٌ». قَالُوا صَدَقْتَ.

نو نبی ﷺ او فرمائیل، دلته چې څومره یهودیان دي، دا ټول جمع کړئ چې زه دوی سره ملاؤ شم، نو دوی ټول په یو ځای باندې جمع کړې شو نو نبی ﷺ هغوی ته او فرمائیل، زه ستاسو نه د یو خبرې تپوس کول غواړم، آیا تاسو به ماته په دې معامله کښې رښتیا وایئ؟ ټولو اووئیل چې اوجی نبی ﷺ او فرمائیل، ستاسو پلار څوک دې؟ هغوی اووئیل چې فلانې دې، نبی ﷺ او فرمائیل چې تاسو دروغژن یئ، بلکه ستاسو پلار څو فلانې دې هغوی اووئیل چې تاسو رښتیا اووئیل.

ابن حجر رحمه الله لیکلې دی چې دلته د "فلان" نه څوک مراد اخستلې شوې دې، ماته معلومه نه شوه (۴).

(۱) انظر سيرة ابن هشام: ۳۵۲/۳/۲، امر الشاة المسمومة، ودلائل النبوة للبيهقي: ۴/۲۶۳.

(۲) عمدة القاری: ۹۱/۱۵، وفتح الباری: ۴۹۷/۷، وسنن ابی داود، کتاب الدیات، باب فیمن سقی رجلا

سما.....رقم (۴۵۰۹)، ودلائل النبوة: ۴/۲۶۳، والروض الانف: ۲/۲۴۳.

(۳) عمدة القاری: ۹۱/۱۵، وارشاد الساری: ۵/۲۳۶.

(۴) ارشاد الساری: ۵/۲۳۶، وهدي الساری: ۴۱، الجزية والموادعة.

قَالَ «فَبَلَّ أَنْتُمْ صَادِقِي عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُ عَنْهُ» فَقَالُوا نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ، وَإِنْ كَذَبْنَا عَرَفْتَ كَذِبَنَا كَمَا عَرَفْتَهُ فِي آيِنَا. فَقَالَ لَهُمْ «مَنْ أَهْلُ النَّارِ». قَالُوا نَكُونُ فِيهَا يَسِيرًا ثُمَّ تَخْلُقُونَا فِيهَا.

نبی ﷺ او فرمائیل، که زه ستاسو نه د خه خیز په باره کښې تپوس او کرم نو آیا تاسو به رښتیا او وایی؟ هغوی او وئیل چې اې ابو القاسم! آوجی مونږ به رښتیا وایو، ځکه چې که مونږ تاسو ته دروغ او وایو نو هم به تاسو ته معلومه شی، لکه څنگه چې زمونږ د پلار نیکه په باره کښې تاسو ته معلومه شوه چې مونږ دروغ وایو، نو نبی ﷺ ترینه پوښتنه او کړه، جهنمیان به څوک وی؟ هغوی جواب ورکړو چې خه ورځې خو به مونږ په جهنم کښې یو، بیا به تاسو خلق زمونږ ځایونه ډک کړئ.

سبحان الله! د بدبختی او د ضداو عناد انتها ته او گورئ، یهودیانو په خپل مذکوره جواب کښې د خپلې یوې عقیدې اظهار کړې دي چې دا د دوی خپل یو خیال او گمان دي، د دوی خیال دا وو چې الله تعالی به یهودیانو ته دومره ورځې عذاب ورکوي څومره ورځې چې دوی د غوا د بچی عبادت کړي وو او هغه څلویښت ورځې دي، ددې نه زیات عذاب به مونږ ته نه راکړي کیږي (۱). د یهودیانو دا خیالی عقیده قرآن کریم هم ذکر کړې ده، د الله تعالی ارشاد دي: وَقَالُوا لَنْ تَمَسَنَا النَّارُ اِلَّا اَيَّامًا مَّعْدُودَةً قُلْ اَتَّخِذُكُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ يَخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ اَمْرًا يَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ هَلْ تَدْعِي عَقِيدَةً اِظهار کړې دي چې څو ورځې خو به مونږ ته سزا ملاو شي لیکن ددې نه پس ستاسو نمبر دي.

د "تخلفونا لغوی او صرفی تحقیق": "تخلفونا" په اصل کښې تخلفوتنا وو، لکه د ابوذر په نسخه کښې تخلفوتنا راغلې دي، دلته ددې یو نون ساقط شوې دي، د حرف جازم او ناصب نه بغیر هم د نون حذف کول یو لغت دي او دا د خلف یخلف نه دي، ددې معنی ده د چا نائب او قائم مقام کیدل، ددې نه خلف هم دي، خلف هر هغه سړی ته وئیلې شي چې د چا نه پس راشي او د هغه نائب او خلیفه وي، لیکن په دې کښې یو فرق هم دي، که دا لفظ د لام سکون سره وي نو ددې معنی ده نائب فی الشرع د شر په کارونو کښې نائب، او که د لام حرکت سره وي نو ددې معنی ده نائب فی الخیر د خیر په کارونو کښې نائب او قائم مقام (۲).

قوله: فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «اُخْسُوا فِيهَا»: نو نبی ﷺ او فرمائیل چې هم تاسو په دې کښې خوار او ذلیل اوسیرئ.

سپې ته د شړلو او رټلو دپاره اخسا وئیلې کیږي، یعنی لرې شه، دلته په دې جمله کښې دوه احتمالات کیدي شي. اول احتمال خو دا دي چې نبی ﷺ دوی ته بد دعا کړې ده، یعنی الله

(۱) الجامع لاحکام القرآن للقرطبي: ۱۰/۲.

(۲) عمدة القاری: ۹۱/۱۵، وارشاد الساری: ۲۳۶/۵.

تعالی دې او کړې چې هم تاسو په دې کښې ذلت او خواری سره داخل شئ. دویم احتمال دادې چې دا زجر، توبیخ او رتنه ده یعنې تاسو په دې کښې ورک شئ (۱).

قوله: وَاللّٰهُ لَا تَخْلُقُكُمْ فِيْهَا اَبَدًا :- په خدایې قسم مونږ به کله هم په جهنم کښې ستاسو ځانې ډک نه کړو.

یعنې ستاسو دا وهم او گمان بالکل باطل دې چې تاسو به د جهنم د سزا یو څو ورځې مستحق یئ، بیا به مونږ د هغې خشاک جوړ شو، دا خو کیدې نه شی چې مونږ د جهنم مستحق شو، زمونږ خو پیدائش د جنت دپاره شوې دې. دلته که د چا په ذهن کښې دا اشکال پیدا شی چې گناهکار مسلمانان به هم جهنم ته داخلېږي، نو د نبی ﷺ دا پورتنۍ خبره څنگه صحیح شوه چې مونږ خو به جهنم ته نه داخلېږو؟

ددې جواب دادې چې گناهکار مسلمانان به په جهنم کښې د سزا خوړلو نه پس بالآخر راوځي، ددې وجې نه د مسلمانانو جهنم ته داخلیدل به عارضی وی، په خلاف د یهودیانو، یهودیان خو به په جهنم کښې همیشه دپاره اوسېږي، د جهنم نه ددې یهودیانو وتل ممکن نه دی، ددې وجې نه دلته د خلافت او د نیابت د معنې تصور هم نه شی کیدي (۲).

ثُمَّ قَالَ - هَلْ اَنْتُمْ صَادِقِي عَنْ شَيْءٍ اِنْ سَأَلْتُكُمْ عَنْهُ. فَقَالُوا نَعَمْ يَا اَبَا الْقَاسِمِ. قَالَ « هَلْ جَعَلْتُمْ فِيْ هَذِهِ الشَّاعَةِ سُمًّا ». قَالُوا نَعَمْ. قَالَ « مَا حَمَلَكُمْ عَلَى ذٰلِكَ ». قَالُوا اَرَدْنَا اِنْ كُنْتَ كَاذِبًا نَسْتَرِيْحُ، وَاِنْ كُنْتَ نَبِيًّا لَمْ يَضُرَّكَ.

نبی ﷺ بیا او فرمائیل، که زه ستاسو نه د یو څیز په باره کښې تپوس او کړم نو آیا تاسو به رښتیا او وایی؟ هغې ټولو او وئیل چې ایې ابوالقاسم! اوجې نبی ﷺ تپوس او کړو چې آیا تاسو په دې چیلۍ کښې زهر گډه کړې دی؟ هغوی او وئیل چې اوجې نبی ﷺ ترینه تپوس او کړو چې تاسو دا حرکت ولې او کړو؟ هغوی او وئیل چې زمونږ دا اراده وه چې که تاسو د خپل نبوت په دې دعوی کښې دروغ ژن یئ نو مونږ به ستاسو نه راحت حاصل کړو ځکه چې مونږ به درنه خلاص شو، او که تاسو واقعی نبی یئ نو دا زهر به تاسو ته نقصان او نه رسوی.

د باب په حدیث شریف کښې درې سوالات او د هغې جوابات ذکر دی، سوالات د نبی ﷺ له طرفه او جوابات د یهودیانو له طرفه وو، ددې یهودیانو دا بدبختی او بدنصیبی او گورۍ چې په درې واړو جواباتو کښې ئې دروغ وئیلې دی، په اولنۍ دوو جواباتو کښې خو ئې دروغ او خباثت ښکاره دې، او د دریم سوال په جواب کښې د یهودیانو دا وینا چې "اَرَدْنَا اِنْ كُنْتَ كَاذِبًا نَسْتَرِيْحُ، وَاِنْ كُنْتَ نَبِيًّا لَمْ يَضُرَّكَ" دا هم د دروغو نه خالی نه ده، ځکه چې د نبی ﷺ د کیدل، مبعوث من الله کیدل دوی ته د نمر په شان ښکاره وو، په قرآن کریم کښې د الله تعالی

(۱) پورته حواله جات، وشرح الکرمانی: ۱۳/۱۳۴)۔

(۲) فتح الباری: ۱۰/۲۴۶، وشرح الکرمانی: ۱۳/۱۳۴، وارشاد الساری: ۵/۲۳۶)۔

ارشاد دې: «الذين آتيناهم الكتاب يعرفونه كما يعرفون أبناءهم»^(۱) لیکن بنی اسرائیل چونکه خپل ځان د دنیا اعلی ترین مخلوق گنړی او خپل نسب د ټولو نه غوره گنړی، د دې وجې نه دوی دا برداشت نه کړې شو چې اشرف الانبیاء والرسل، خاتم النبیین والمرسلین عليه السلام د عربو او د بنو اسماعیل نه ولې راواستولې شو؟ هم دا وجه وه چې دوی همیشې د نبی عليه السلام او د هغوی ملگرو ته په تکلیف رسولو کښې لگیا وو او قیامت پورې به دوی په دې کښې مشغول وی، دا هغه ډله ده چې د همیشې نه د اسلام او د مسلمانانو دشمنان دی، د دوی نه د خیر توقع ساتل بالکل عبث کار دې، د الله تعالی ارشاد دې: «لتجدن اشد الناس عداوة للذين آمنوا اليهود.....»^(۲) د قرآن کریم د دې واضح اعلان نه پس هم که دوی لره څوک خپل دوست گنړی نو دا بیوقوف نه دې نو څه دی؟

یو سوال او د هغې جواب: د باب حدیث شریف او د مسلم شریف روایت، چې اوس مخکښې تیر شو، دواړو کښې ظاهراً تعارض دې چې هلته کومه مکالمه نقل کړې شوه نو هغه د نبی عليه السلام او د یو یهودی ښځې زینب بنت الحارث مینځ کښې وه او دلته چې کومه مکالمه ده نو هغه د نبی عليه السلام او د یهودیانو مینځ کښې ده.

ددې جواب واضح دې چې په دې کښې هیڅ تعارض نشته، ممکنه ده چې نبی عليه السلام دواړو سره خبرې اترې کړې وی او د زهر و په حقله ئې تپوس کړې وی، لکه د باب په حدیث کښې د زهر د گډ کولو وجه ئې دا ښودلې ده چې: «ان کنت کاذباً نستريح، وان کنت نبیاً لم یضرك» چې د دې مفهوم نعوذ بالله د نبی عليه السلام قتلول دی، هغه ښځې هم دا خپل مقصد بیان کړې وو چې: «اروت لاقتلك»^(۳) چې هر کله د دواړو مقصود یو شو نو په ظاهره دا معلومه شوه چې ددغه ښځې دا کار د ټولو مشرکانو د مشورې نتیجه وه، د دې وجې نه نبی عليه السلام د ټولو نه تپوس او کړو او ورته ئې دا خبره په گوته کړه چې مونږ ته ستاسو د مکر و فریب ښه پته ده.^(۴)

د عربو مشهور ادیب ډاکټر منیر عجلانی د یو دستاویز انکشاف کړې دې کوم چې په آرمیني ژبه کښې وو، د هغې نه هم دا ثابتیږي چې نبی عليه السلام ته د زهر و ورکولو دا عمل د یو کس کار نه وو، بلکه په دې کښې د یهودیانو ټول قوم شامل وو، د دې دستاویز متن دلته

^(۱) البقرة/۱۴۶-

^(۲) المائدة/۸۲-

^(۳) الصحيح لمسلم، کتاب الطب، باب السم، رقم (۵۷۰۵)-

^(۴) پورته متن کښې چې کوم مؤقف دې نو د دې تائید د تاریخ نه هم کیږي، نبی عليه السلام ته چې کومې ښځې زهر ورکړې وو نو د هغې پلار حارث، تره یسار، خاوند سلام بن مشکم او ورور مرحب یا زبیر د مسلمانانو په لاس باندې قتل شوي وو، د دې وجې نه دا ښځه د انتقام په اور کښې سوزیده او د نبی عليه السلام د قتل ئې ډیره زیاته تمنا لرله، نو نورو یهودیانو هم د دې د استعمالولو منصوبه جوړه کړه، دغه شان د نبی عليه السلام په خوراک کښې زهر گډ کړې شو. فتح الباری: ۴۹۷/۷، والروض الانف: ۲/۲۴۳، وعمدة القاری: ۹۱/۱۵، وسنن ابی داود، کتاب الدیات، باب فیمن سقی رجلاً سمًا.....، رقم (۵۹۰۹)-

ذکر کولې شی: "يقال ان الامة اليهودية تحسد امة النصارى، ولما جاء محمد ﷺ، وعظم امره، اجتمع رؤساء اليهود، وقالوا اني انفسهم:

"لنضمه اليها؛ بان تزودة باحكام ديننا، فينشرها بين الناس، وبذلك تتغلب على النصارى وانا جيلهم".

ولكن المسلمين الذين اتصروا على اعدائهم، وفتحوا الفتوحات العظيمة لم يكتثروا لليهود، ولم يقيموا لهم وزنا؛ بل اضطروا احيانا الى قتالهم،

فعاد رؤساء اليهود الى الاجتماع والتفكير في اسلوب يتخلصون به من محمد.....، فاختروا من نسايتهم فتاة جميلة، وقالوا لها: "يجب عليك ان تدعى محمدا الى وليمة، وتقتليه".

فعلت المرأة ما امرها الرؤساء به. انظر تعليقات على دلائل النبوة للبيهقي: ۲/۳۵۸.

کیدې شی چې د حضرت عمر رضي الله عنه په شهادت کېنې هم ددې خلقو سازش شامل وی او دا د یو کس یعنی د "فیروز" عمل نه وی.

ایا دې ښځې اسلام قبول کړې وو؟ د بعضو روایاتو نه دا معلومیږي چې دې ښځې اسلام قبول کړې وو، لکه د امام زهري رحمته الله علیه نه هم دا روایت نقل دې چې دې ښځې اسلام قبول کړې وو، هم په دې باندې امام سلیمان الیتمی رحمته الله علیه هم یقین کړې دې، د دوی په روایت کېنې دا الفاظ هم دی، کوم چې د دغه ښځې د اسلام په قبولیت باندې دلالت کوي:

"وقد استبان لي الآن انك صادق، وانا اشهدك ومن حضراتي على دينك، وان لا اله الا الله، وان محمداً عبده ورسوله". "اوس ماته دا خبره واضحه شوه چې تاسو رښتونی یی او زه تاسو او نورو حاضرینو لره گواه جوړوم او دا وایم چې زه ستاسو په دین باندې یم او دا چې د الله تعالی نه سوا هیڅوک معبود نشته او محمد ﷺ د هغه بنده او رسول دې".

دا جملې دغه ښځې هغه وخت اووئیلې چې کله هغې اولیدل چې په نبی ﷺ باندې ددې زهرو اثر اونه شو، نو ددې نه پس نبی ﷺ هغې ته معافی اوکړه، لکه څنگه چې د حافظ ابن حجر رحمته الله علیه قول اوس د باب د اولنی حدیث په تشریح کېنې تیر شو. (د حافظ ابن حجر رحمته الله علیه د صنیع نه هم دا معلومیږي چې هغوی واقعی طور سره دا ښځه په صحابیاتو کېنې شماری، ددې وجې نه هغوی ددې ښځې ذکر په "الاصابة" کېنې په القسم الاول کېنې کړې دې. (د والله اعلم بالصواب

نبی بشر وی: د باب په حدیث کېنې یهودیانو نبی ﷺ ته د زهرو ورکولو وجه دا بیان کړه چې "وان كنت ديبالم يضرك" چې که تاسو واقعی نبی یی نو دا زهر به په تاسو باندې اثر نه

(۱) فتح الباری: ۷/۴۹۷، والمصنف لعبد الرزاق: ۶/۵۳. کتاب اهل الکتاب، هل يقتل ساحرهم؟ رقم (۱۰۰۵۳) والسيرة الحلبية: ۲/۷۷۰، غزوة خيبر والمرقا: ۱۱/۷۴، کتاب الفضائل..... الفصل الثاني، رقم (۵۹۳۱) (الاصابة في تمييز الصحابة: ۴/۳۱۴)۔

کوی لیکن د دوی دا خبره غلطه ده، د نبی دپاره دا ضروری نه ده چې د زهر و اثر پرې اونه شی، نبی چونکه بشر وی ددې وجې نه پرې د زهر و اثر هم کیدې شی، د جادو و اثر پرې هم کیدې شی، کما یلی بعد ابواب لکه څنگه چې نور انسانی عوارض نبی ته پېښیږي نو دغه شان دا څیزونه پرې هم اثر کولې شی.

د نبی ﷺ معجزه: په نبی ﷺ باندې چې ددې زهر و ظاهري اثر اونه شو نو دا د نبی ﷺ معجزه وه، په عامو حالاتو باندې دا نه شی قیاس کیدې، لیکن ددې زهر و اثر د نبی ﷺ د وفات په وخت کښې ښکاره شو، په صحیح مسلم شریف کښې د حضرت انس رضی الله عنه د روایت په آخره کښې راغلې دی چې د نبی ﷺ په تالو مبارک کښې ما ته د دغه زهر و اثرات ښکاره طور سره معلومیدل، د نبی ﷺ په وفات کښې یو ښکاره سبب دا زهر هم وو. ددې وجې نه به حضرت عبدالله بن مسعود قسم خوړلو سره فرمائیل چې نبی ﷺ ته الله تعالی د شهادت مرگ ورکړې دي. (۱)

حقیقی مؤثر د الله تعالی ذات دي: د باب د حدیث نه یو دا فائده معلومه شوه چې حقیقی مؤثر صرف د الله تعالی ذات دي، د هغه د اجازت او د حکم نه بغیر هیڅ یو څیز نه نقصان رسولې شی او نه چاته څه فائده ورکولې شی، او گوري ددغه زهریله خوراک نه حضرت بشر رضی الله عنه فوراً متاثر شو او نبی ﷺ د هغې د فوري اثراتو نه بچ پاتې شو او دغه وخت پرې زهر و اثر اونه کړو. (۲)

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت په دې معنی کښې دي چې یهودیانو نبی ﷺ باندې د زهریله خوراک خوړلو کوشش او کړو، نو دغه شان یهودیانو د هوکه بازی او خیانت او کړو لیکن ددې باوجود نبی ﷺ ددې سازش ټول کردارونه معاف کړل، هم ددې نه ترجمه ثابتیږي چې په دې صورت کښې معاف کیدې هم شی او د ضرورت مطابق ورته نورې سزاگانې هم ورکړې کیدې شی. (۳) والله اعلم بالصواب

(۱) انظر الصحيح لمسلم. كتاب الطب، باب السم، رقم (۵۷۰۵)، وعمدة القاری: ۹۲/۱۵، وكشف الباری، كتاب المغازی: ۶۷۰، وتكملة فتح الملهم: ۳۱۲/۴.

(۲) اخرجہ الحاكم فی المستدرک: ۶۰/۳، كتاب المغازی:، رقم (۴۳۹۴)، قال عبدالله بن مسعود رضی الله عنه: لان احلف تسعا ان رسول الله ﷺ قتل احب الي من احلف واحدة انه لم يقتل، وذلك ان الله عز وجل اتخذه نبيا، واتخذه شهيدا. وايضا الطبقات الكبرى لابن سعد: ۳۱۴/۸، من كلام ام بشر بن البراء رضی الله عنه.

(۳) عمدة القاری: ۹۲/۱۵، وفتح الباری: ۲۴۷/۱۰.

(۱) عمدة القاری: ۹۱/۱۵.

① باب: دُعَاءُ الْإِمَامِ عَلَى مَنْ نَكَّثَ عَهْدًا

د ترجمه الباب مقصد: دلته د امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ مقصد او مطلب دادې چې که یو سړې وعده خلافې او کړی نو دده په حق کښې امام ته بد دعا کول جائز دی. (۱).

۲۹۹۹: (۱) حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا ثَابِتُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ قَالَ سَأَلْتُ أَنَسًا - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - عَنِ الْقُنُوتِ. قَالَ قَبْلَ الرُّكُوعِ. فَقُلْتُ إِنَّ فَلَانًا يَزْعُمُ أَنَّكَ قُلْتَ بَعْدَ الرُّكُوعِ، فَقَالَ كَذَبَ. ثُمَّ حَدَّثَنَا عَنِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَنَّهُ قَنَتَ شَهْرًا بَعْدَ الرُّكُوعِ يَدْعُو عَلَى أَحِبَّاءٍ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ - قَالَ - بَعَثَ أَرْبَعِينَ أَوْ سَبْعِينَ - يَشْكُ فِيهِ - مِنَ الْقُرَاءِ إِلَى أَنَاسٍ مِنَ الْبُشْرِكِينَ، فَعَرَضَ لَهُمْ هَؤُلَاءِ فَقَتَلُوهُمْ، وَكَانَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَهْدٌ، فَمَارَأَيْتُهُ وَجَدَ عَلَى أَحَدٍ مَا وَجَدَ عَلَيْهِمْ. [ار: ۹۵۷]

رجال الحديث

① ابوالنعمان: دا ابوالنعمان محمد بن فضل السدوسي رحمۃ اللہ علیہ دې د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب قول النبي صلى الله عليه وسلم: الدين النصيحة لله....." کښې تیره شوې ده. (۲).

② ثابت بن يزيد: دا ثابت بن يزيد بصری رحمۃ اللہ علیہ دې. (۳).

③ عاصم: دا عاصم بن سليمان بن ابي مسلم الاحول رحمۃ اللہ علیہ دې. (۴).

④ انس: د حضرت انس بن مالک رضي الله عنه حالات په کتاب الايمان، "باب من الايمان أن يحب لآخيه ما يحب لنفسه" کښې راغلې دي. (۵).

او دا ټول سند په بصريانو باندې مشتمل دي. (۶).

خبرداري: ددې حديث شريف پوره تشریح په کتاب الوتر کښې او گوري يوه اهمه فائده: د يو کافر په حق کښې خيرې کول د نبی عليه السلام عادت مبارک نه وو، ترڅو چې به د نبی عليه السلام دا اميد وو چې دا کافر خپل باطل دين پريخودلې شي او اسلام قبلولې شي نو هغه ته به ئې خيرې نه فرمائيلې، او گوري انبي عليهم السلام ته دا وئيلې شوې وو چې قبيله دوس ته

① (عمدة القارى: ۹۱/۱۵) -

② (قوله: سالت انسا رضي الله عنه: الحديث، مر تخريجه فى الوتر، باب القنوت قبل.....) -

③ (كشف البارى: ۷۶۸/۲) -

④ (د دوى د حالاتو دپاره او گوري، كتاب الاذان، باب بدء الاذان) -

⑤ (د دوى د حالاتو دپاره او گوري، كتاب الوضوء، باب الماء الذى يغسل به شعر الانسان) -

⑥ (كشف البارى: ۴/۲) -

⑦ (فتح البارى: ۶/۲۷۳، وعمدة القارى: ۹۲/۱۵) -

خیرې او کړې، لیکن نبی ﷺ د هغوی په حق کښې د هدایت دعا او فرمائیل، لیکن ددې برخلاف چې هرکله بنو سلیم وعده خلافې او کړه، غداری او خیانت ئې او کړو نو نبی ﷺ د هغوی دپاره خیرې او فرمائیلې، ځکه چې د هغوی د هدایت نه نبی ﷺ مایوسه شوې وو، نو الله تعالی د نبی ﷺ خیرې قبولې کړې او د نبی ﷺ رښتون والې ئې خلقو ته ښکاره کړو چې مونږ د خپل نبی هیڅ یو خبره نه رد کوو (۱)، والله اعلم بالصواب

دویمه فائده: د مونږونو نه پس، دغه شان په خطبو کښې چې د مسلمانانو د دشمنانو او مخالفینو دپاره خیرې کیږي، د هغې اصل هم دا قصه ده، په کومه کښې چې نبی ﷺ د بنو سلیم دپاره د خیرو په طور یو میاشت پورې قنوت نازل لوستلې وه، نو ددې خبرې نه ددې کار جواز او مشروعیت ښه طریقي سره معلومېږي (۲).

ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت: ترجمة الباب سره د حدیث شریف مناسبت واضح دي، ترجمه وعده خلافې کوونکو دپاره د خیرې کولو د جواز وه، هم دا جواز د باب د حدیث نه ثابتېږي.

① باب: أَمَانُ النِّسَاءِ وَجَوَارِهِنَّ

د ترجمه الباب مقصد: دلته امام بخاری رحمه الله دا مسئله بیانوي چې یوه ښځه چاته امان ورکړي او دا بیانوي چې که ښځه امان ورکړي نو ددې دا امان ورکول به معتبر وي (۳). د مسئلې تفصیل وړاندې راځي.

د جوار معنی: جوار، بکس، الجیم وضها. د باب مفاعله مصدر دي، ددې معنی ده اجاره او د اجاره معنی ده چاته پناه ورکول، مدد کول او حفاظت کول (۴). اوس مطلب هم دا شو چې ښځه چاته امان هم ورکولې شي او پناه وغیره هم ورکولې شي.

۳۰۰۰: (۵) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ أَبَا مَرْثَةَ مَوْلَى أُمِّ هَانِي ابْنَةَ أَبِي طَالِبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أُمَّ هَانِي ابْنَةَ أَبِي طَالِبٍ تَقُولُ ذَهَبْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - عَامَ الْفَتْحِ فَوَجَدْتُهُ يَغْتَسِلُ، وَفَاطِمَةُ ابْنَتُهُ تَسْتُرُهُ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقَالَ «مَنْ هَذِهِ». فَقُلْتُ أَنَا أُمُّ هَانِي بِنْتُ أَبِي طَالِبٍ. فَقَالَ «مَرْحَبًا بِأُمِّ هَانِي». فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ غُسْلِهِ قَامَ، فَصَلَّى ثَمَانَ رَكَعَاتٍ مُلَحِّفًا فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ، فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، زَعَمَ ابْنُ

(۱) عمدة القاری: ۹۲/۱۵ -

(۲) پورته حواله -

(۳) عمدة القاری: ۹۲/۱۵، وارشاد الساری: ۲۳۷/۵ -

(۴) عمدة القاری: ۹۲/۱۵، وفتح الباری: ۲۷۳/۶، وشرح الکرماني: ۱۳۵/۱۳ -

(۵) قوله: ام هانی ابنه ابی طالب: الحدیث، مر تخريجه فی کتاب الغسل، باب التستر فی الغسل..... -

أَمِي عَلَى أَنَّهُ قَاتِلٌ رَجُلًا قَدْ أَجَرْتُهُ فَلَانَ بْنِ هُبَيْرَةَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صلى الله عليه وسلم - «قَدْ أَجَرْنَا مَنْ أَجَرْتَ يَا أَمَّ هَانِي». قَالَتْ أُمُّ هَانِي وَذَلِكَ ضَعْفَى. [ر: ۲۷۶]

رجال الحديث

- ① عبدالله بن يوسف: دا عبدالله بن يوسف تينسي عليه السلام دې.
 - ② مالک: دا امام دارالهجرة مالک بن انس عليه السلام دې. ددې دواړو حضراتو تذکره د "بده الوحي" په دويم حديث کښې تيره شوې ده. (۱)
 - ③ ابو النضر: دا ابو النضر سالم بن ابی اميه عليه السلام دې چې د عمر بن عبید الله مولى دې. (۲)
 - ④ ابو مروه: دا ابو مروه يزيد بن مروه عليه السلام دې چې د ام هانى عليها السلام مولى دې. د دوى حالات په کتاب العلم، "باب من تعدى حيث ينتهى به المجلس....." کښې راغلې دي. (۳)
 - ⑤ ام هانى: دا د نبى عليه السلام د تره لور حضرت ام هانى عليها السلام ده. (۴)
- د حديث شريف ترجمه: حضرت ام هانى عليها السلام فرمائى چې د فتح مکه په کال زه د نبى عليه السلام خدمت اقدس کښې حاضره شوم، اومې ليدل چې نبى عليه السلام غسل کوى او حضرت فاطمه عليها السلام د سترپوشى دپاره ولاړه وه، نو ما ورته سلام اوکړو، نبى عليه السلام او فرمائيل چې څوک دى؟ ما جواب کښې او وويل چې ام هانى يم. نو نبى عليه السلام ماته پخیر راغلې او وويل، هرکله چې د غسل نه فارغ شو نو نيت ئې اوترلو او اودريدل او بدن باندې يو کپړې اچولو سره ئې اته رکعت اوکړل. ما او وويل يا رسول الله! زما د ورور حضرت على خيال دې چې هغه به هغه سړې قتلوى چاته چې ما پناه ورکړې ده، يعنى فلان ابن هبیره، نبى عليه السلام او فرمائيل ائې ام هانى! تا چې چاته پناه ورکړې ده نو هغه ته مونږ هم پناه ورکړې ده او دا د ځانښت وخت خبره ده. **بنسخه امان ورکولې شى:** د باب حديث په دې مسئله کښې واضح دى چې بنسخه امان ورکولې شى، دغه شان دا چې بنسخې کوم سړى ته امان ورکړې وي نو هغه لره قتلول حرام دى، د نبى عليه السلام لورې مبارکې حضرت زينب عليها السلام هم خپل خاوند حضرت ابو العاص بن الربيع عليه السلام ته امان ورکړې وو. (۵). ددې نه هم جواز واضح دې، هم دا د حجاز او د عراق د جمهورو يعنى د

(۱) کشف الباری: ۲۸۹/۱-۲۹۰، امام مالک دپاره نور اوگورئ، کشف الباری: ۸۰/۲-.

(۲) د دوى د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب الوضوء، باب المسح على الخفين-.

(۳) کشف الباری: ۲۱۴/۳-.

(۴) د دوى د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب الغسل، باب التستر فى الغسل عند الناس-.

(۵) روى الطبرانى عن انس رضي الله عنه: ان زينب بنت رسول الله ﷺ اجارت ابا العاص، فاجاز النبى ﷺ.

جوارها.....= المعجم الكبير: ۴۲۵/۲۲-۴۲۶، ذکر سن زينب و وفاتها، ومن اخبارها، رقم (۱۰۴۸-۱۰۴۹)

وقد اخرج الطبرانى عن ام سلمة رضي الله عنها ايضا. انظر معجمة الكبير: ۲۲/۲۷۵، وما اسندت ام سلمة رضي الله عنها، ابو

بكر بن عبد الرحمن..... عن ام سلمة..... رقم (۵۹۰)، وكذا انظر: ۲۲/۲۷۵.... [بقية برصفحه آئنده...]

امام اعظم ابوحنیفه، امام مالک، امام شافعی، احمد، ابو ثور، اسحاق بن راهویه، ثوري او امام اوزاعی رحمهم الله وغيره مذهب دي. البته په مالکيه کښې دوو حضراتو عبدالملک بن الماجشون او سحنون رحمهما الله د جمهورو نه جدا دا وئيلي دي چې د ښځې اجازت ورکول د امام په اجازت باندې موقوف دي، که امام دا پناه ورکول نافذ کړي خو صحيح ده ورنه د ښځې پناه ورکول مردود او ناقابل قبول ده، ليکن دا قول شاذ دي. والقول ما قاله الجمهور والله اعلم بالصواب

ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: ترجمة الباب سره د باب د حديث شريف مناسبت په دي جمله کښې دي، "قد اجرنا من اجرت" (۱)، نو ددي نه ددي خبرې جواز معلومېږي چې د ښځې چاته امان ورکول صحيح او جائز دي.

① باب: ذِمَّةُ الْمُسْلِمِينَ وَجَوَارُهُمْ وَاحِدَةٌ يُسْعَى بِهَا أَدْنَاهُمْ

يعني د مسلمانانو ذمه او امان يو دي، معمولي سرې هم ددي کوشش کولې شي. د ترجمة الباب مقصد: دلته د ترجمة الباب مقصد دا دي چې که د مسلمانانو يو جماعت يا يو طبقه يو حربي کافر ته امان ورکولې شي نو ددي حکم يو دي، د چا اختلاف سره به دا حکم نه بدلېږي، دا امان به د ټولو له طرفه معتبر وي. مطلب دا شو چې که يو حربي کافر ته د مسلمانانو له طرفه امان ورکولې شي نو دا امان به د ټولو له طرفه وي، خواه امان ورکونکي يو معمولي درجي والا سرې وي يا د شريفې طبقې سرې وي، غلام وي يا آزاد، سرې وي يا ښځه، ددي نه پس چاته دا حق نشته چې دا امان ختم کړي او چاته چې امان ورکړې شوې دي نو هغه ته څه قسم نقصان اورسوي. (۲)

په ترجمة الباب کښې مذکور لفظ د "ادناهم" نه مراد "اقلهم عدداً" دي، يعني يو سرې هم امان ورکولې شي، خواه سرې وي يا ښځه. (۳)

بقية از حاشيه گذشته [رقم (۱۰۴۷)]_ ايضا انظر نصب الراية في تخریج احاديث الهداية: ۳/۳۹۶، رقم ((۵۸۱۳_۵۸۱۲))

(۱) شرح ابن بطلال: ۳۴۹/۵، وعمدة القاری: ۹۳/۱۵، خلورو وارو مذهبونو دپاره اوگوري، المغنی: ۹۱۹۵/ والام: ۲/۴/۲۸۴، والمدونة الكبرى: ۴۶/۲، والهداية: ۵۶۴/۲، وفتح القدير: ۲۱۰/۵، فصل الامان)_

(۲) قا الحافظ في الفتح (۲۷۳/۶): قال ابن المنذر: اجمع اهل العلم على جواز امان المرأة الا شينا ذكره عبد الملك_ يعني ابن الماجشون صاحب مالک_ لا احفظ ذلك عن غيره، قال: ان امر الامان الى الامام، وتناول مما ورد مما يخالف ذلك على قضايا خاصة، قال ابن المنذر: وفي قول النبي ﷺ يسعي بذمتهم ادناهم دلالة على اغفال هذا القائل)_

(۳) عمدة القاری: ۹۳/۱۵)_

(۴) عمدة القاری: ۹۳/۱۵، وارشاد الساری: ۲۳۸/۵، وفتح الباری: ۲۷۴/۶)_

(۵) پورته حواله جات)_

ایا د غلام امان ورکول معتبر دی؟ پورته چې کوم مذهب نقل کړې شو نو دا د جمهور و دی، د امام مالک، شافعی، احمد، سفیان ثوری، اوزاعی، لیث او ابو ثور رضی الله عنہم (۱) مسلک هم دادې چې که یو غلام چاته امان ورکړی نو دا به معتبر وی، په احنافو کښې د امام محمد رضی الله عنه (۲) مسلک هم دا دی. او امام اعظم او امام ابو یوسف رحمهما الله دا وائی چې د غلام امان ورکول به هغه وخت معتبر وی چې کوم وخت دده مالک ده ته د قتال اجازت هم ورکړی، مطلب دادې چې د عبد ماذون (چاته چې اجازت ورکړې شوې وی) امان ورکول معتبر دی، د غیر ماذون یعنی د عبد محجور امان غیر معتبر دی. اوس په عبد محجور کښې گویا ددې حضراتو اختلاف دی، د قتال دپاره چې کوم غلام ته اجازت ورکړې شوې وی نو هغه کښې هیڅ اختلاف نشته. (۳)

د ماشوم امان ورکول: ابن المنذر رحمته الله فرمائیلي دي چې د ماشوم د امان ورکولو په غیر معتبر کیدو باندې د اهل علم اجماع ده. لیکن حافظ ابن حجر رحمته الله ددې کلام سره اختلاف کوی او فرمائی چې دا حکم مطلق نه دی، بلکه مقید دی، لکه د صبی مراهق او د ممیز او فهمیم (چې په ښه بده باندې پوهیږي) امان ورکول معتبر دی. (۴). لیکن په خپله امام شافعی رحمته الله د ممیز ماشوم امان ورکول غیر معتبر گنړی، کالصبی الغیر المیز (۵).

د احنافو په نزد ددې مسئلې تفصیل دادې چې که د امام ابو حنیفه رحمته الله په نزد ممیز ماشوم که د قتال نه منع کړې شوې وی نو د هغه امان غیر معتبر دی لیکن امام محمد رحمته الله ددې ماشوم د امان د صحت قائل دی چې دده امان ورکول صحیح او معتبر دی. او که ماشوم ممیز وی او د قتال اجازت ورته ورکړې شوې وی نو د ټولو په نزد دده امان مقبول او معتبر دی. (۶). د امام مالک رحمته الله شاگرد سحنون وائی چې د ممیز ماشوم امان مطلقاً معتبر دی، او د دوی نور شاگردان د ماشوم امان د امام په اجازت باندې موقوف گنړی. (۷). او د امام احمد رحمته الله نه په دې سلسله کښې دوه روایتونه نقل شوې دي، په یو روایت کښې د صحت قائل دي او په دویم کښې د غیر معتبر کیدو قائل دي. (۸).

(۱) المدونة الكبرى: ۴۲/۲، والمغنی: ۹۱۹۵، وکتاب الام: ۴/۲۸۴، باب فی الامان، واعلام الحديث: ۱۴۷۰/۲

(۲) الهدایة: ۵۶۵/۲

(۳) پورته حواله، والفتاوی الهندية: ۱۹۸/۲

(۴) فتح الباری: ۲۷۴/۶

(۵) کتاب الام: ۲/۴/۲۸۴، باب فی الامان، واذا امن من دون البالغين والمعنوه قاتلوا ولم یقاتلوا لم یجز امانهم

(۶) الهدایة مع البناية للعینی: ۱۲۹/۷، کتاب السیر، فصل، وکتاب السیر الكبير مع شرحه للسرخسی: ۱۷۸/۱/۱

(۷) المدونة الكبرى: ۴۱/۲، کتاب الجهاد، فی امان المرأة والعبد والصبي، والمنقذی: ۳۴۶/۴

(۸) المغنی لابن قدامة: ۹/۱۹۶

د مجنون امان ورکول: د امت د جمهورو علماؤ په نزد د مجنون او د لیونی امان ورکول غیر معتبر دي، د کافر په شان په دې کبسي هم د چاڅه اختلاف نشته. (١).

٣٠٠١ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ عَنْ أَبِيهِ قَالَ خَطَبَنَا عَلَى فَقَالَ مَا عِنْدَنَا كِتَابٌ نَقْرُؤُهُ إِلَّا كِتَابُ اللَّهِ، وَمَا فِي هَذِهِ الصَّحِيفَةِ فَقَالَ فِيهَا الْجَرَاحَاتُ وَأَسْنَانُ الْإِبِلِ، وَالْمَدِينَةُ حَرَمٌ مَا بَيْنَ غَيْرِ إِلَى كَذَا، فَمَنْ أَحْدَثَ فِيهَا حَدَّثًا أَوْ أَوَى فِيهَا مُحَدِّثًا، فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لَا يَقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَدْلٌ، وَمَنْ تَوَلَّى غَيْرَ مَوَالِيهِ فَعَلَيْهِ مِثْلُ ذَلِكَ، وَذِمَّةُ الْمُسْلِمِينَ وَاحِدَةٌ، فَمَنْ أَخْفَرُ مُسْلِمًا فَعَلَيْهِ مِثْلُ ذَلِكَ. (ر: ١٧٧١)

قوله: "خطبنا على" الحديث، مرتخرجه في كتاب العلم، باب كتابة العلم.

رجال الحديث

① محمد: د محمد نه مراد محمد بن سلام بيکندي دي. ددې وضاحت ابن السکن رحهما الله کړې ده. د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب قول النبي صلى الله عليه وسلم: انا اعلمکم بالله....." کبسي تیر شوي دي. (٢).

② وکیع: دا د حدیثو مشهور امام حضرت وکیع بن الجراح رضی الله عنه دي. د دوی حالات په کتاب العلم، "باب كتابة العلم" کبسي تیر شوي دي. (٣).

③ الاعمش: دا امام سلیمان بن مهران دي چې مشهور په اعمش رضی الله عنه دي. د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب ظلم دون ظلم" کبسي راغلي ده. (٤).

④ ابراهيم التيمي: دا مشهور محدث، د وخت امام ابراهيم بن يزيد بن شریک رضی الله عنه دي. د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب خوف المؤمن من أن....." کبسي تیره شوي ده. (٥).

⑤ ابيه: د ابيه نه مراد د حضرت ابراهيم والد يزيد بن شریک رضی الله عنه دي. (٦).

⑥ علي: دا د نبی صلی الله علیه و آله خوم، خلورم خليفه، حضرت علي ابن ابی طالب رضی الله عنه دي. د دوی تفصیلی تذکره په کتاب العلم "باب اثم من كذب النبي صلى الله عليه وسلم" کبسي بیان شوي ده. (٧).

١ (پورته حواله، وفتح الباری ٦/٢٧٤، والسير الكبير مع السرخسی: ١/١/٢٠٠، کتاب الامان، رقم، (٤٦)).

٢ (فتح الباری: ٦/٢٤٧، وکشف الباری: ٢/٩٣).

٣ (کشف الباری: ٤/٢١٩).

٤ (کشف الباری: ٢/٢٥١).

٥ (کشف الباری: ٢/٥٤٤).

٦ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب فضائل المدينة، باب حرم المدينة).

٧ (کشف الباری: ٤/١٤٩).

خبردارې: د حضرت علي عليه السلام د باب د حديث تشرېح مونږ په كتاب العلم، "باب كتابة العلم" (١) او "فضائل المدينة، باب حرم المدينة" كښې بيان كړې ده.

ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت په دې جمله كښې دې: "وزيمة المسلمين واحدة" چې د مسلمانانو ذمه او عهد يو وي، لهذا كه يو عاقل بالغ مسلمان چاته پناه وركړې نو دا به معتبر وي. (٢).

حضرت امام بخاري رحمه الله په ترجمة الباب كښې ذكر كړې شوې كلماتو "يسعى بذمتهم ادناهم" په ذريعې سره هغه روايت طرفته اشاره فرمايلې ده، كوم چې وړاندې د سفيان عن الاعمش طريق سره "باب اثم من عاهد ثم غدار" كښې راځي، د هغې الفاظ دادې: "و ذمة المسلمين واحدة، يسعى بها ادناهم" هم دا معنی د حضرت عبدالله بن عمرو بن العاص رضي الله عنه نه هم مرفوعاً روايت ده، د هغوی د روايت تخريج امام احمد (٣)، او ابن ماجه رحمهما الله وغيره (٤). كړې دې، فرمائي: "المسلمون تتكافؤ دماؤهم، وهم يد على من سواهم، يسعى بذمتهم ادناهم" (٥).

⑪ باب: إِذَا قَالُوا صَبَأْنَا وَلَمْ يُحْسِنُوا أَسْلَمْنَا

يعنى دا باب ددې خبرې په بيان كښې دې چې كله مشركان "صباا" او وائي او "اسلما" بڼه طريقي سره اونه وائي.

د ترجمة الباب مقصد: دلته امام بخاري رحمه الله دا وئيل غواړي چې كه د جنگ دوران كښې مشركان دا او وائي چې صباا يعنى مونږ د خپل زور دين نه واوړيدو او دې جملې سره د دوى مقصد داوى چې مونږ اسلام قبلوو، ستاسو په دين كښې داخليږو، ليكن "اسلما" اونه وائي نو آيا د دوى دا وينا چې "صباا" ددې دپاره كافى ده چې دوى سره جنگ بندى او كړې شى او د دوى مزيد قتل بند كړې شى. (٦)، نو د امام بخاري رحمه الله جواب په اثبات كښې دې چې آو اوس به دوى سره جنگ نه كيږي.

او علامه ابن المنير رحمه الله فرمائي چې د ترجمة الباب مقصد دادې چې د مقصدونو اعتبار په

(١) كشف الباري، كتاب العلم: ٤/٢٢٣-٢٤١) _

(٢) فتح الباري: ٦/٢٧٤، وعمدة القاري: ١٥/٩٤، وإرشاد الساري: ٥/٢٣٨) _

(٣) مسند الامام احمد: ٢/٦٥٧-٦٥٨، مسند عبدالله بن عمرو..... "رقم (٦٧٩٧) وأيضاً برقم (٧٠٩٢ و ٦٩٢) _

(٤) سنن ابن ماجه، كتاب الديات، باب المسلمون تتكافؤ دماؤهم، رقم (٢٦٨٥) وعن ابن عباس أيضاً، رقم (٢٦٨٣) _

(٥) فتح الباري: ٦/٢٧٤، وعمدة القاري: ١٥/٩٤، وإرشاد الساري: ٥/٢٣٨، دغه شان اوگوري، المصنف لابن أبي شيبة: ١٨/١٠١-١٠٧، وكتاب السير، باب في أمان المرأة والمملوك) _

(٦) فتح الباري: ٦/٢٧٤، وعمدة القاري: ١٥/٩٤، شرح ابن بطلال: ٥/٣٥٢) _

دلیل او قرینو سره وی، دا دلیل خواه لفظی وی یا غیر لفظی، خواه په هر قسم ژبه کښې چې وی (۱). دلته مناسب رائي هم د ابن المنیر رحمۃ اللہ علیہ معلومېږي چې ترجمه الباب عام اوساتلې شي او دا اووئیلې شي چې لفظ د "صبا" سره ترجمه خاص نه ده، بلکه هر قسم جمله چې دا مفهوم ادا کړي نو هغه به معتبر وي، دغه شان دا چې امان په هر قسم ژبه کښې ورکړې شي نو هغه به معتبر وي، مطلوب صرف دادې چې دغه کلمه یا دغه جمله امان ورکوي او مضمون امان او ذمې ته شامل وي.

د کلمه "صبا" صرفی او لغوی تحقیق: "صبا" د باب نصر نه د جمع متکلم ماضی صیغه ده، ددې مصدر "صبا" دې، ددې معنی ده مذهب بدلول، وئیلې شي: "صبا فلان: إذا خرج من دینه ال دین غیره" هم په دې بنیاد باندې د مکې مکرمې مشرکانو نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته "صابی" وئیلې، ځکه چې د مشرکانو د خیال او گمان مطابق نبی صلی اللہ علیہ وسلم د خپل پلار نیکه د مذهب بت پرستی پریخودلې وه او دویم دین یعنی اسلام ئې اختیار کړې وو. (۲).

وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ فَعَلَّ خَالِدٌ يَقْتُلُ فَقَالَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «أَبْرَأُ إِلَيْكَ مِمَّا صَنَعَ خَالِدٌ».. [ر: ۳۰۸۳]

او حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما فرمائي چې حضرت خالد بن ولید (هغوی) قتلول، نو نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل، اتي الله خالد چې څه او کړل، نوزده هغې نه د براءت اعلان کوم. د مذکورې تعلیق تخريج: امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ پورتنې تعلیق مسنداً په کتاب المغازی کښې (۳)، دغه شان کتاب الاحکام کښې (۴) نقل کړې دې. ددې نه علاوه امام نسائي رحمۃ اللہ علیہ هم دا حدیث موصولاً روایت کړې دي (۵).

په تعلیق کښې د مذکورې واقعي تفصیل: د حضرت عبدالله بن عمر رضی اللہ عنہما په پورتنې ذکر شده تعلیق کښې ډیر زیات اجمال او اختصار دي، په دې کښې چې کومه واقعه ذکر ده نو د هغې خلاصه دا ده چې حضرت خالد بن ولید رضی اللہ عنہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم د یو لښکر امیر جوړ کړو او د تبلیغ په غرض سره ئې د بنو جذیمه په طرف روان کړو، دا واقعه د غزوه حنین نه وړاندې ده، هر کله چې هغوی ته حضرت خالد بن ولید رضی اللہ عنہ د اسلام دعوت ورکړو نو هغې خلقو صحیح طریقې سره د اسلام اقرار اونه کړو، د "اسلمنا" په ځانې ئې "صبا" اووئیل، مقصد ئې دا وو چې مونږ ستاسو دین قبلوو، لیکن حضرت خالد بن ولید رضی اللہ عنہ د هغوی دا اقرار قبول نه کړو او د ظاهر لفظ په بنیاد باندې ئې د هغوی قتلول شروع کړل، کله چې نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته ددې اطلاع

(۱) فتح الباری: ۲۷۴/۶، وعمدة القاری: ۹۴/۱۵، والمتواری علی تراجم أبواب البخاری: (۱۹۹)۔

(۲) عمدة القاری: ۹۴/۱۵، وفتح الباری: ۵۸۵۷/۸، والقاموس الوحید، مادة "صبا"۔

(۳) صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب بعث النبی صلی الله علیه وسلم خالد بن ولید..... رقم (۴۳۳۹)۔

(۴) صحیح البخاری، کتاب الاحکام، باب إذا قضی الحاكم بجور أو..... رقم (۷۱۸۹)۔

(۵) سنن النسائي، کتاب آداب القضاة، باب الرد علی الحاكم إذا قضی بغير الحق، رقم (۵۴۰۷)۔

اوشوه نو ډیر زیات خفه شو او وې فرمائیل، ”اللهم! انی ابرأ الیک مما صنع خالد“.
په دې کار باندې د خفگان کولو او د نبی ﷺ د ناراضه کیدو نه هم په واضحه توګه دا معلومېږي چې په هر قوم کښې ددې مفهوم دپاره یعنې د اسلام د قبلولو دپاره کوم الفاظ استعمالېږي نو د هغې اعتبار به کولې شی، هم دغه الفاظ به د هغوی له طرفه کافی شافي ګنړلې شی.

په مذکور واقع کښې حضرت خالد بن ولید ؓ چونکه اجتهاد کړې وو، چې په هغې کښې ترینه خطا واقع شوه، ددې وجې نه نبی ﷺ هغه معذور او ګنړلو او هم ددې وجې نه ئې قصاص نه کړو، بلکه نبی ﷺ حضرت علی ؓ ته مال ورکړو او د بنو جذیمه طرفته ئې روان کړو او د هغوی د مقتولینو دیت د بیت المال نه ادا کړې شو.^(۱)

د حدیث شریف نه مستنبطه یو مسئله: علامه ابن بطال ؒ فرمائی چې که قاضی او حاکم یو ظالمانه فیصله او کړی یا د اهل علمو د اقوالو او د دوی د رائې نه خلاف څه فیصله او کړی نو دا فیصله به بالاتفاق مردود وی. البته که دا فیصله د اجتهاد په رنډا کښې وی یا حاکم د خپل کار څه مناسب تاویل پیش کړی، لکه څنګه چې حضرت خالد بن ولید ؓ او کړل نو په دې صورت کښې به حاکم ګناهګار خوندی لیکن ضمان به پرې لازم شی عند عامة اهل العلم. بیا د امت د فقهاؤ په دې خبره کښې اختلاف دې چې دا ضمان به څوک ادا کوی؟ آیا د بیت المال نه به ادا کولې شی یا به ئې د حاکم خاندان (عاقله) ادا کوی؟

① نو د حضرت امام اعظم ابوحنیفه، امام ثوری، احمد او اسحاق رحمهم الله قول دادې چې که دا فیصله د څه قتل یا د زخمی کولو وی نو دیت به د بیت المال نه ادا کولې شی.

② د امام شافعی، اوزاعی او د صاحبینو رحمهم الله مسلک دادې چې مذکوره دیت به د حاکم په عاقله او خاندان باندې لازم وی، د حاکم خاندان به دا ضمان ادا کوی.

③ ابن الماجشون ؒ خو دا وائی چې په دې کښې بالکل ضمان نشته.^(۲)

ترجمة الباب سره د مذکوره تعلیق مناسبت: ترجمة الباب سره د حضرت عبد الله بن عمر ؓ

ددې مذکوره تعلیق مناسبت په ظاهره واضح نه دې ځکه چې ترجمه خو د ”إذا قالوا: صبا...“

”وه، لیکن ددې لاندې چې کوم حدیث ذکر شو نو هغې کښې ددې خبرې تذکره نشته.

نو ددې اشکال جواب دادې چې د امام بخاری ؒ یو مشهور عادت دا هم دې چې هغوی

بعضې وخت کښې د حدیث یو جمله یا یو جزء ترجمه او ګرځوی، بیا دغه جمله یا جزء ترجمه

کښې نه ذکر کوی نو دلته هم دغه معامله ده چې ترجمه خو ئې د ”صبا“ قائمه کړه لیکن دا

^(۱) انظر صحيح البخاری، کتاب المغازی، باب بعث النبي صلى الله عليه وسلم خالد بن وليد إلى..... رقم (۴۳۹). وفتح الباری: ۶/۲۷۴، وعمدة القاری: ۱۵/۹۴.

^(۲) شرح ابن بطال: ۸/۲۶۰-۲۶۱، کتاب الاحکام، باب إذا قضی الحاكم بجور..... وعمدة القاری: ۱۵/۹۴، وفتح الباری: ۶/۲۷۴، والمغنی: ۸/۲۸۸، آخر فصل من کتاب الجراح، رقم (۶۷۷۳).

نې په حديث کښې ذکر نه کړه، بلکه ددې حديث يوه حصه ئې نقل کړه او ددې طرفته ئې اشاره او کړه او هم په دې ئې اکتفاء او بس والې او کړو. (۱)

وَقَالَ عُمَرُ إِذَا قَالَ مَتْرَسٌ فَقَدْ آمَنَهُ، إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ الْأَلْسِنَةَ كُلَّهَا. [ر: ۲۹۸۹]

او حضرت عمر بن الخطاب رضي الله عنه او فرمايل چې کله يو مسلمان چاته داسې او وائي چې مه ويرېږه نو حقيقت کښې ورته ده امان او پناه ورکړه، ځکه چې الله تعالى خو په ټولو ژبو باندې پوهيږي.

د مذکوره تعليق تخريج: دا تعليق امام عبدالرزاق صنعاني رحمته الله عليه په خپل "مصنف" کښې د ابو وائل طريق سره موصولا نقل کړې دې. (۲)

د حضرت عمر رضي الله عنه مکمل فرمان: پورته ذکر شوې کلمات يعنې "اذا قال: مترس، فقد آمنه، ان الله يعلم الالسنه كلها" د حضرت عمر رضي الله عنه د فرمان يو جزء دې، کوم چې دوی ملک فارس کښې يو لښکر ته د هدايت نامې په طور ليږلې وو، هغه لښکر کوم چې په جهاد کښې مصروف وو، مکمل متن لاندې ذکر کولې شي:

"عن ابى وائل قال: جاءنا كتاب عمرو بن نحر بن نحر، فقال: اذا حاصرتم قسراً فلا تقولوا: انزلوا على حكم الله، فانهم لا يدرون ما حكم الله؟ ولكن انزلوهم على حكمكم، ثم اقصوا فيهم، واذا لقي الرجل الرجل، فقال: لا تخف، فقد آمنه، واذا قال: مترس، فقد آمنه، ان الله يعلم الالسنه كلها" (۳).

يعنې: "د حضرت ابو وائل رضي الله عنه نه روايت دې چې مونږ ته د حضرت عمر رضي الله عنه يو خط راغی په داسې حالت کښې چې مونږ د فارس د محل محاصره کړې وه، په هغې کښې ئې فرمايلې وو چې کله تاسو د يو محل (يا د قلعه) محاصره او کړئ نو داسې مه وايئ چې د الله تعالى فيصله قبلولو سره لاندې راشئ، ځکه چې هغوی ته معلومه نه ده چې د الله تعالى فيصله څه ده؟ بلکه هغوی په خپله فيصله باندې لاندې راولئ، چې کله هغوی راکوز شي نو فيصله او کړئ، چې کله يو بنده د بل بنده سره ملاقات اوشي او هغه ورته او وائي چې مه ويرېږه نو حقيقت کښې ورته دې ويونکی امان ورکړو او که "مترس" او وائي نو بيا ئې هم امان ورکړو، ځکه چې الله تعالى خو په ټولو ژبو باندې پوهيږي.

د "مترس" لغوی تحقيق او ضبط: "مترس" د فارسي ژبې جمله ده، ددې معنی ده "مه ويرېږه" او دا جمله د دوو څيزونو نه مرکبه ده، د ميم او ترس نه، ميم خو د اهل فارس په نزد د نفی معنی ورکوي، او ترس د امر صيغه ده د ترسیدن نه، ددې معنی ده ويريدل، اوس ددې جملې معنی دا شوه چې "لا تخف" يعنې مه ويرېږه. (۴)

(۱) فتح الباری: ۶/۲۷۴، وعمدة القاری: ۱۵/۹۴.

(۲) المصنف لعبد الرزاق: ۵/۱۵۰-۱۵۱، کتاب الجهاد، باب دعاء العدو، رقم (۹۴۹۲) و (۹۴۹۴).

(۳) پورته حواله، وعمدة القاری: ۱۵/۹۴، وتغليق التعليق: ۳/۴۸۳، وفتح الباری: ۶/۲۷۴-۲۷۵.

(۴) عمدة القاری: ۱۵/۹۴، وفتح الباری: ۶/۲۷۵.

ددې نه علاوه د حديث د عالمانو ددې جملې په ضبط کښې هم اختلاف دې، امام اصيلي رحمته الله خو دا د ميم او د تاء فتحې او د راء سکون سره ضبط کړې ده او ابو ذر ميم مکسور او تاء ساکن بنودلې ده. (۱)، حافظ ابن حجر رحمته الله دا کلمه ميم مفتوحه، تاء مشدده او راء ساکنه

سره ضبط کړې ده، بيا فرمائي: "وقد تخفف التاء، وبه جزم بعض من لقيناه من العجم" (۲) او بعضې حضراتو دا کلمه د تاء سکون او د راء فتحې سره لوستلې ده، ليکن د علامه عيني رحمته الله د قول مطابق راجح ضبط د امام اصيلي رحمته الله دې چې ددې طرفته حافظ رحمته الله هم په دې خپل قول کښې اشاره کړې ده "وبه جزم بعض من لقيناه من العجم" (۳).

قوله: وقال: تكلم لا بأس. او حضرت عمر رضي الله عنه هرمان ته او فرمائيل، هيڅ خبره نه ده، خبره كوه.

ددې جملې تعلق يو بلې واقعي سره دې، چې د هغې تفصيل د كتاب الجزيه په شروع كښې راغلې دې. (۴)

د حضرت انس رضي الله عنه روايت دې، د هغې خلاصه داده چې د فارس ښار د تَستَر د محاصري دوران كښې هرمان گرفتار شو، بيا دې د حضرت انس رضي الله عنه په ملگرتيا كښې د حضرت عمر رضي الله عنه په خدمت كښې روان كړې شو، چې كله ده سره خليفه ثاني خبرې اترې كول غوښتل نو دې خاموشه شو، په دې باندې حضرت عمر رضي الله عنه او فرمائيل، "تكلم، لا بأس عليك" ددې نه پس د دواړو مينځ كښې خبرې اترې شروع شوې، چې د هغې تفصيل اوږد دې.

حضرت انس رضي الله عنه فرمائي چې بيا حضرت عمر رضي الله عنه د هرمان د قتل احكامات جاري كول او غوښتل نو حضرت انس رضي الله عنه او وئيل چې دا خو تاسو نه شئ كولې، ځكه چې تاسو خو ده ته "تكلم لا بأس عليك" وئيلي دي، حضرت عمر رضي الله عنه او فرمائيل آيا تاسو سره نور هم څوك شته چې ددې خبرې گواهي وركړي چې ما دا جمله وئيلې ده؟ نو حضرت زبير رضي الله عنه هم د حضرت انس رضي الله عنه موافقت او كړو، په دې باندې حضرت عمر رضي الله عنه هرمان قتل نه كړو، بيا وروستو هرمان اسلام قبول كړو. (۵)

د مذكوره اثر تخريج: د حضرت عمر رضي الله عنه مذكوره اثر مختصراً امام ابن ابی شيبه په خپل مصنف كښې (۶)، او يعقوب بن سفيان په خپل تاريخ كښې نقل كړې دې، دغه شان سعيد بن

(۱) عمدة القاری: ۹۵-۹۴/۱۵-.

(۲) فتح الباری: ۲۷۵/۶-.

(۳) پورته حواله، وعمدة القاری: ۹۵/۱۵-.

(۴) انظر باب الجزية والموادعة مع أهل الذمة، د هرمان د اسلام د قبلولو واقعه-.

(۵) عمدة القاری: ۹۵/۱۵، وفتح الباری: ۲۷۵/۶، والمصنف لابن أبي شيبه: ۱۸/۱۰۹-۱۱۰، كتاب السير، باب في الأمان، ما هو؟ وكيف هو؟ رقم (۳۴۰۸۴)، وكتاب البعث والسرايا: ۱۸/۳۰۴، ما ذكر في تستر، رقم (۳۴۵۰۶).

(۶) المصنف لابن أبي شيبه: ۱۸/۱۰۹-۱۱۰، رقم (۳۴۰۸۴)، وكتاب البعث والسرايا: ۱۸/۳۰۴، رقم (۳۴۵۰۶).

منصور په خپل سنن کښې^(۱) ددې تخریج کړې دې^(۲).
د مذکوره اثر نه یو معلومه شوي فائده: علامه ابن المنیر رحمته الله فرمائی چې د مذکوره اثر نه دا فائده معلومه شوه چې که یو عام حاکم خپله یو د فیصله هیږه کړی او دوه سړی گواهی اوکړی چې حاکم دا فیصله کړې وه نو په حاکم باندې به دا لازم وی چې په هغه فیصله باندې عمل اوکړی او هغه نافذه کړی. دغه شان که چرته حاکم د یو کس په شهادت قبلولو کښې پریشان شی، په دې کښې توقف اوکړی، بیا دویم کس د اولنی کس په موافقت کښې گواهی ورکړی نو اوس شک او شبهه ختمه شوه او دې سره به د اولنی کس گواهی هم نه متاثره کیږي.^(۳) والله اعلم بالصواب

ترجمه الباب سره د تعلیق مناسبت: ترجمه الباب سره د مذکوره تعلیق مناسبت په دې معنی کښې دې چې په تعلیق کښې دا راغلي دي چې امان ورکونکي لاتخف او وائی یا ممتن، یا تکلم لایاس، نو دې سره به امان متحقق شی، ځکه چې دا ټولې جملې په امان ورکولو باندې دلالت کوي، خواه هره ژبه چې استعمال کړی یا هر قسم تعبیر چې وی، نو اولنی دواړه جملې خو ظاهراً هم په دې خبره باندې دلالت کوي چې د کوم سړی په مخکښې دا جملې او وئیلې شی نو مراد د دینه امان دې او د دریمې جملې دلالت په دې معنی کښې دې چې مخاطب ته دا وئیلې کیږي چې ته بې ویرې او بې خطري خبرې اترې کوه، تاته به هیڅ هم نه وئیلې کیږي او هم دا امان دې، لکه څنگه چې مذکوره واقعیه هم په دې باندې دلالت کوي.

⑫ باب: الْمَوَادَعَةُ وَالْمُصَالَحَةُ مَعَ الْمُشْرِكِينَ بِالْمَالِ وَغَيْرِهِ،

وَأَيْضًا مَنْ لَمْ يَفِ بِالْعَهْدِ

د ترجمه الباب مقصد: دلته امام بخاری رحمته الله ددې کار د مشروعیت او جواز ښودل غواړي چې که مشرکانو سره د مصالحت کولو په وخت د مال وغیره ادا کولو ضرورت پېښ شی نو دا جائز دی. تفصیل وړاندې راځي.^(۴)

په ترجمه الباب کښې چې کوم لفظ د ”وغیره“ راغلي دي نو ددې عطف په ”بالمال“ دې چې مشرکانو ته مال هم ادا کیدې شی، ددې نه علاوه قیدیان وغیره هم، یعنی که د مشرکانو کسان مسلمانانو سره قید وی نو د هغوی د آزادیدو په بدله کښې هم مصالحت کیدې شی، او بالعکس.^(۵)

(۱) سنن سعید بن منصور: ۲/۲۵۲، کتاب الجهاد، باب قتل الاسارى..... رقم (۲۶۷۰)، وأخرجه البيهقي من طريق الثقفى عن حميد الطويل: ۹/ ۱۶۴، کتاب السير، باب كيف الامان؟ رقم (۱۸۱۸۳).
(۲) عمدة القارى: ۱۵/۹۵، وفتح البارى: ۶/۲۷۵، وتغليق التعليق: ۳/۴۸۳.
(۳) فتح البارى: ۶/۲۷۵.
(۴) عمدة القارى: ۱۵/۹۵.
(۵) پورته حواله، وفتح البارى: ۶/۲۷۵، وشرح القسطلانى: ۵/۲۳۹.

قوله: وقوله: "وإن جنحوا للسلم فاجنح لها وتوكل على الله: الآية/ الانفال: ٦١/
او د الله تعالى قول: او که مشرکانو د صلحې مطالبه او کړې نو تاسو هم صلح او کړئ.
د ایت کریمه تفسیر: پورتنی آیت کریمه ترجمه د امام بخاری رحمه الله د تفسیر مطابق کړې
شوي ده، هغوی د "جنحوا" تفسیر په "طلبوا" سره کړې دي، او نورو حضراتو مفسرینو د دې
تفسیر په "مالوا" سره کړې دي، په دې صورت کښې به ترجمه دا شي "او که مشرکان د
صلحې طرفته مائل شي نو تاسو هم دې طرفته مائل شئ" (او صلح او کړئ) "ځکه چې د جناح
لغوی معنی ده مائله کیدل".^(۱)

او کلمه د "السلم" د سین فتحه او کسره سره، د دې معنی ده صلح، دا د ابو عبیده رضي الله عنه قول
دي او ابو عمر رضي الله عنه فرمائي چې سلم که د سین فتحې سره وي نو د دې معنی ده صلح او که
کسره وي نو د دې معنی ده اسلام.^(۲)

د ایت مبارکه نه د امام بخاری رحمه الله استدلال او ترجمه الباب سره مطابقت: امام بخاری رحمه الله د
پورتنی آیت کریمه نه په دې خبره باندې استدلال کړې دي چې مشرکانو سره صلح کول جائز
او صحیح کار دي.^(۳)

د دې نه ترجمه الباب سره مطابقت هم معلومېږي چې هر کله مشرکانو سره صلح جائز ده نو دا
صلح په مال سره هم کیدې شي او بغیر د مال نه هم کیدې شي، بغیر د مال نه د صلحې حکم
خو امام بخاری رحمه الله د کتاب په شروع کښې ذکر کړې وو او دلته ئې د هغې صلحې تذکره
او کړه کومه صلح چې مال سره وي، دې سره چې څنگه د مفسف رضي الله عنه مدعی ثابت شوه نو دغه
شان د صلحې دوه تقسیمونه هم مخې ته راغلل چې د صلحې یو قسم خو صلح بالمال دي او
دویم صلح بغیر المال دي.

فائده: آیت کریمه چې په شرط سره مقید کړې شو چې "که دوی صلح کول او غواړي نو تاسو
هم صلحه او کړئ" د دې نه دا معلومېږي چې د صلحې معامله مقیده ده، مطلق نه ده چې که
دې سره د مسلمانانو نقصان کیږي نو بیا دې هم صلح او کړې شي بلکه دې خبرې ته به خیال
کولې شي چې مسلمانان په کوم حال کښې دي، که د دوی حال سره صلح مناسب ده، په صلح
کولو کښې ئې فائده ده نو صلح کول صحیح دي، د دې برخلاف که مسلمانان غالب وي او په
صلح کولو کښې څه مصلحت او فائده هم نه وي نو بیا صلح کول صحیح نه دي.^(۴)

ترجمه الباب کښې د ذکر شوي مسئلې تفصیل: مشرکانو سره د مال نه بغیر خو صلح کول
جائز دي، په دې کښې د هیچا اختلاف نشته، د مال نه بغیر صلح نبی صلی الله علیه و آله په حدیبیه

(۱) پورته حواله جات، والقاموس الوحيد، مادة جنح "وتفسير القرطبي: ۳۹/۸"۔

(۲) فتح الباری: ۲۷۵/۶، وعمدة القاری: ۹۵/۱۵۔

(۳) فتح الباری: ۲۷۶/۶، وکتاب السير الكبير مع شرحه للسرخسی: ۱۶-۳/۵، باب المواعدة)۔

(۴) ۱- ۱۱- ۷۷۶/۶، حکام القرآن: ۴۰/۸)۔

کښې د قریشو مشرکانو سره کړې وه، لیکن که مشرکانو ته د مال ورکولو ضرورت پېښ شې، د مال په بدله کښې ورسره صلح کول وی او خدانخواستې داسې حالات پېدا شې چې هغوی د مال اخستلو نه بغیر په صلح کولو باندې نه راضی کیږي نو اوس به څه کیږي؟
 ① نو امام اوزاعی رحمته الله علیه خو په دې صورت کښې دا فرمائی چې مشرکانو ته د صلح په بدله کښې مال ادا کول جائز نه دی، البته د ضرورت په وخت جائز دی، مثلاً دا چې مسلمانان د جنگی نقصاناتو نه محفوظ کول وی نو بیا ورته مال ورکړې کیدې شې. (۱)

② امام شافعی او امام احمد بن حنبل رحمهما الله فرمائی چې صلح خو د عوض نه بغیر کیدل پکار ده، لیکن که د مجبورۍ حالت وی او د دشمن تعداد زیات وی، د مال ورکولو نه بغیر د اهل اسلام حفاظت ناممکن شې او دا خطر پېښه شې چې مسلمانانو ته به ډیر سخت نقصان ورسوي نو په داسې صورت کښې د مال په عوض کښې صلح کیدې شې: لان ذلك من معانی الضرورات.

ددې په خلاف که صرف دا صورت وی چې مسلمانان کمزروي خو دی لیکن د مقابلي کولو طاقت لري نو د مال په ادا کولو باندې صلح کول جائز نه دی، که مسلمان قتل هم شې نو شهید به شې، چې لوڼې لوڼې فضیلتونه ئې دي، ددې نه علاوه د مسلمانانو شان ددې نه زیات اوچت او لوڼې دې چې مشرکانو ته د رحم درخواست او کړی او د جنگ بندۍ دپاره ورته اوواځي. (۲)

③ په دې مسئله کښې د احنافو او د مالکیه په باره کښې علامه ابن بطلال رحمته الله علیه فرمائی چې په دې سلسله کښې د امام مالک او امام ابوحنیفه څه روایت او قول مونږ ته معلوم نه دي (۳) لیکن علامه عینی رحمته الله علیه د احنافو مسلک د امام شافعی او د مالک د مسلک په شان نقل کړې دي، لکه فرمائی:

”مذهب اصحابنا ان للامام ان یصلحهم بهال یاخذة منهم، او یدفعه إلیهم، إذا کان الصلح خیراً فی حق المسلمین لقوله تعالی: (وان جنحو للسلم فاجنح لها)، والبال الذی یؤخذ منهم یصرف مصارف الجریة“ (۴)
 او د مالکیه مذهب هم په دې سلسله کښې د ائمه ثلاثه په شان دي، په دې شرط چې څه فاسد شرط او نه لگوي، علامه دردیر رحمته الله علیه ددې وضاحت کړې دي، فرمائی:
 ”ویجوز للامام..... البهانة ای صلح الحربی مدة لیس لهوفیه، تحت حکم الاسلام، لصلحة کالعجز عن

(۱) د صلح حدیبه تفصیل دپاره اوگوری، کشف الباری، کتاب المغازی: ۳۵۹-۳۷۲-

(۲) شرح ابن بطلال: ۳۵۵/۵، وفتح الباری: ۲۷۶/۶، وعمدة القاری: ۹۷/۱۵-

(۳) شرح ابن بطلال: ۳۵۶/۵، وفتح الباری: ۲۷۶/۶، وعمدة القاری: ۹۷/۱۵-

(۴) شرح ابن بطلال: ۳۵۶/۵، وعمدة القاری: ۹۷/۱۵-

(۵) عمدة القاری: ۹۷/۱۵، دغه شان اوگوری، کتاب السیر الکبیر مع السرخسی: ۳/۵-۱۶، باب المودعة

قتالهم مطلقاً، أو في الوقت الحاضر..... إن خلا عقد البهاده..... عن شرط فاسد، فإن لم تخل عنه لم تجز، كشرط بقاء مسلم أسير تحت أيديهم..... وإن بهال..... إلا لخوف مباهاة ضرراً من دفع المال منهم أولهم.....(۱).

د صلحې په بدله کښې مشرکانو ته د مال د ادا کولو مثالونه: په تاریخ کښې داسې ډیر مثالونه موجود دي چې د مشرکانو د شر نه د محفوظ کیدو دپاره د ضرورت په وخت کښې مسلمانانو مال هم ادا کړې دي. علامه قرطبي رحمته الله علیه په خپل تفسیر کښې نقل کړې دي چې نبی صلی الله علیه و آله عینه بن حصن فزاری او حارث بن عوف مری ته د غزوۀ احزاب په موقع باندې د صلحې پیشکش کړې وو چې نبی صلی الله علیه و آله به دوی ته د مدینې منورې د کهجورو د پیداوار دریمه حصه ورکوی لیکن ددې دپاره به تاسو دا کار کوئ چې بنو غطفان واپس کړئ او د قریشو ملګرتیا پرېږدئ.....(۲).

سعید بن عبدالعزیز رحمته الله علیه فرمائی چې د جنگ صفین په موقع باندې حضرت معاویه رضی الله عنه مشرکانو سره د مال په بدله کښې صلح کړې وه. هم دا د عبدالملک بن مروان په باره کښې هم روایت دي چې کله هغه عبدالله بن زبیر رضی الله عنه سره په جنگ کښې مصروف وو نو دوی رومی بادشاه سره په دې خبره صلح کړې وه چې روزانه به درته زر دیناره ادا کوو.....(۳).

۳۰۰۲: (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا بِشْرٌ - هُوَ ابْنُ الْمُفَضَّلِ - حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَتْمَةَ قَالَ انْطَلَقَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَهْلٍ وَفُحَيْصَةُ بْنُ مَسْعُودٍ زَيْنًا إِلَى خَيْبَرٍ، وَهِيَ يَوْمَئِذٍ صُلَحٌ، فَتَفَرَّقَا، فَأَتَى فُحَيْصَةُ إِلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَهْلٍ وَهُوَ يَتَشَحَّطُ فِي دَمٍ قَتِيلًا، فَقَدَنَّهُ ثُمَّ قَدِمَ الْمَدِينَةَ، فَانْطَلَقَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سَهْلٍ وَفُحَيْصَةُ ابْنًا مَسْعُودٍ إِلَى النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -، فَذَهَبَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ يَتَكَلَّمُ فَقَالَ «كَتَبْتُ كِتَابًا» وَهُوَ أَهْدَى الْقَوْمِ، فَكَتَبْتُ فَتَكَلَّمَا فَقَالَ «أَتَحْلِفُونَ وَتَسْتَحِقُّونَ قَاتِلَكُمْ أَوْ صَاحِبَكُمْ؟» قَالُوا وَكَيْفَ نَحْلِفُ وَلَمْ نَشْهَدْ وَلَمْ نَرَقَالَ «فَتُبْرِيكُمْ هُوَذَا بِمُحْسِنِينَ». فَقَالُوا كَيْفَ نَأْخُذُ أَيْمَانَ قَوْمٍ كَفَّارٍ فَعَقَلَهُ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - مِنْ عِنْدِهِ. [ار: ۲۵۵۵]

رجال الحديث

① مسدد: دا مسدد بن مسرهد رحمته الله علیه دي. د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب من الايمان ان يحب لآخيه ما يحب لنفسه" کښې تيره شوې ده.....(۴).

(۱) الشرح الكبير مع حاشية الدسوقي: ۵۲۷/۲، باب في الجهاد، فصل عقد الجزية)۔

(۲) الجامع لاحكام القرآن: ۴۱/۸)۔

(۳) عمدة القاري: ۹۷/۱۵، وشرح ابن بطال: ۳۵۵/۵، نیز حاشية الدسوقي على الشرح الكبير: ۵۲۷/۲)۔

(۴) قوله: عن سهل بن أبي حنمة: الحديث، مر تخريجه في كتاب الصلح، باب الصلح المشركين)۔

(۵) كشف الباري: ۲/۲)۔

۲) بشو: دا ابو اسماعیل بشر بن المفضل بن لاحق بصری رحمته الله دې د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب قول النبی صلی الله علیه وسلم: رب مبلغ أوعى....." کښې تیره شوې ده. (۱)

۳) یحیی: دا مشهور محدث یحیی بن سعید الانصاری رحمته الله دې د دوی تذکره په "بده الوحی" کښې اجمالاً او په کتاب الایمان، "باب صوم رمضان احتساباً.." کښې تفصیل سره تیره شوې ده. (۲)

۴) بشیر بن یسار: دا بشیر بن یسار مدنی رحمته الله دې. (۳)

۵) سهل بن ابی حنمه: دا ابو محمد سهل بن ابی حنمه انصاری رحمته الله دې. (۴)

قوله: قال: انطلق عبد الله بن سهل و محيصة بن مسعود بن زيد إلى خير

وهي يومئذ صلح: حضرت سهل بن ابی حنمه رحمته الله فرمائی چې حضرت سهل بن عبد الله او

محيصة بن مسعود (د) د خيبر طرفته روان شو او او دادغه ورځو کښې د صلحې والا زمکه وه.

قوله: فتفرقا فأتى محيصة إلى عبد الله بن سهل، وهو يتشخط في دم قتيلاً،

فدفنه ثم قديم المدينة: هلته دا دواړه حضرات جدا شو، بيا حضرت محيصة د عبد الله بن

سهل طرفته راغی، په داسې حالت کښې چې په وینو کښې لت پت مقتول پروت وو، نو

هغوی حضرت عبد الله هلته دفن کړو، بيا مدينه منوره کښې حاضر شو.

دلته واقعه داده چې حضرت عبد الله بن سهل او حضرت محيصة بن مسعود رحمتهما الله نورو څه

ملگرو سره د خيبر طرفته تشریف یوړلو، مقصد دا وو چې خپل اهل و عيال ته کهجورې

ورکړي چې د خپل اهل و عيال دپاره د خيبر کهجورې راوړي، خيبر ته د رسيدلو نه پس دا

دواړه حضرات جدا شو او په خپلو خپلو مصروفیاتو کښې مشغول شو، په مقرره ورځ باندي

چې کله حضرت محيصة د حضرت عبد الله بن سهل طرفته راغی نو وې ليدل چې په يو چينه

يا کوهی کښې په وینو کښې لت پت پروت دې، ست مبارک ئې مات شوې دې او د بدن نه

ئې روح مبارک تلې دې، هلته د دوی نه علاوه څوک هم نه وو چې د قاتل معلومات

اوشي، ددې وجې نه حضرت محيصة رحمته الله هغوی هلته دفن کړل او په خپله مدينې منورې ته

واپس راغی. (۱)

(۱) کشف الباری: ۳/۲۲۲.

(۲) کشف الباری: ۱/۲۳۸، و: ۲/۳۲۱.

(۳) د دوی د حالاتو دپاره اوگورې، کتاب الوضوء، باب الوضوء من غير حدث).

(۴) د دوی د حالاتو دپاره اوگورې، کتاب البيوع، باب بيع الثمر على رؤوس النخل).

(۵) د دوی دواړو د حالاتو دپاره اوگورې، کتاب الصلح، باب الصلح مع المشركين).

(۶) عمدة القاری: ۱۵/۹۶، والقسطلانی: ۵/۲۳۹، وسيرة ابن هشام: ۲/۳۵۵، تسمية النفر الدارين الذين اوصى لهم رسول الله.....).

د-یتشخط-معنی: دا د باب تفعل نه د مضارع صیغه ده، ددې ماده "شخط" ده، د حدیث عالمانو ددې لفظ څو معنې بیان کړې دي، لیکن مطلب د ټولو یو دی، یعنی په وینو کښې لټ پټ کیدل، کماذکرنا فوق ایضاً).

او "قتیلاً" د حال کیدو د وجې نه منصوب دې).

قوله: فانطلق عبدالرحمن بن سهل ومحبيصة وحويصه ابناً مسعوداً الى النبي

صلى الله عليه وسلم: نو حضرت عبدالرحمن بن سهل، محيصه او حويصه د نبی ﷺ طرفته روان شو.

یعنی کله چې مدينې منورې ته اورسیدل نو ددې نه پس حضرت محيصه ﷺ د نورو دوو صحابه کرامو ﷺ سره د نبی ﷺ په خدمت اقدس کښې حاضر شو، دې دپاره چې حضرت عبدالله بن سهل ﷺ سره کومه واقعه او شوه نو چې نبی ﷺ د هغې نه خبر کړي. حضرت عبدالرحمن بن سهل ﷺ دا د حضرت عبد الله بن سهل ﷺ ورور، د حضرت حويصه او محيصه ﷺ وراره (حضرت عبدالرحمن بن سهل بن زيد بن كعب بن عامر بن عدي بن مجدعه بن حارثه حارثي انصاري ﷺ دې) دوی مور بی بی لیلی بنت رافع بن عامر بن عدي ده).

د ابن سعد، ابن عبدالبر او د دوی په اتباع کښې د ابونعیم اصفهانی خیال دادې چې حضرت عبد الرحمن بن سهل ﷺ په غزوة احد، غزوة خندق او نورو ټولو غزواتو کښې شریک وو (بلکه ابن عبدالبر یو قول دا هم نقل کړې چې دا بدری صحابی دې). ابن سعد مزید فرمائی چې دا هغه صحابی دې، چې د غزوة بدر نه پس د عمرې په نیت باندي وتلې وو لیکن په مکه مکرمه کښې قریشو قیدی کړو، بیا د حضرت ابوسفیان ﷺ د ځوئی عمرو په بدله کښې آزاد شو کوم چې په بدر کښې گرفتار شوي وو).

(۱) قال الخطابي في اعلام الحديث: ١٤٦٧/٢: يتشخط، أي: يضطرب في الدم. وقال ابن الاثير (النهاية: ٤٤٩/٢، باب الشين مع الحاء، وجامع الاصول: ٢٨٦/١٠): معناه: يتخبط في دمه، ويضطرب، ويتمرغ. وقال الداودي، كما حكاه العيني في العمدة (٩٦/١٥): المتشخط: المختضب.... (۳).

(۲) عمدة القاري: ٩٦/١٥، وشرح القسطلاني: ٢٣٩/٥.

(۳) دا د ابن اخي.... ترجمه ده، په الاصابه کښې ابن عم دې چې غلط دي، تفصيل به وړاندې راشي.

(۴) انظر الاصابة: ٤٠٢/٢، ومعرفة الصحابة: ٢٧٣/٣، وعمدة القاري: ٩٥/١٥.

(۵) الاصابة: ٤٠٢/٢، ومعرفة الصحابة للاصبهاني: ٢٧٣/٣.

(۶) پورته حواله جات، والاستيعاب بهامش الاصابة: ٤٠٢/٢.

(۷) الاستيعاب بهامش الاصابة: ٤٠٢/٢، وهو قول العسكري ايضاً: انظر الاصابة: ٤٠٢/٢.

(۸) الاصابة: ٤٠٢/٢.

دې د نبی کریم ﷺ نه روایت کوی او د دوی نه محمد بن کعب قرظی رضی الله عنه و غیره روایت کوی).

یو ځل مار حضرت عبد الرحمن بن سهل رضی الله عنه او خورلو، نبی صلی الله علیه و آله خبر شو نو وې فرمائیل چې دې عماره بن حزم ته بوځی چې هغه ئې دم کړی صحابه کرامو رضی الله عنهم عرض او کړو یا رسول الله! هغه وخت پورې به دې وفات شی، نبی صلی الله علیه و آله ته چونکه علم وو چې ده ته به شفاء حاصلیږي، ددې وجې نه ئې او فرمائیل چې اگرچه دې وفات شی بیا ئې هم بوځی. نو صحابه کرامو رضی الله عنهم دې د حضرت عماره بن حزم طرفته بوتلو او الله تعالی دوی ته شفاء ورکړه. حضرت عمر بن الخطاب رضی الله عنه دوی لره د حضرت عتبه بن غزو ان رضی الله عنه د وفات نه پس د بصرې گورنر مقرر کړې وو.

محمد بن کعب قرظی رضی الله عنه فرمائی چې حضرت عبد الرحمن بن سهل رضی الله عنه په یو غزوه کښې وو، د حضرت عثمان رضی الله عنه د خلافت زمانه وه او حضرت امیر معاویه رضی الله عنه د شام امیر وو، دې دوران کښې د دوی مخې ته د شرابو څه منگی تیر شو نو دوی خپله نیزه واخسته او د هغوی طرفته متوجه شو او په هر منگی کښې ئې سوړې او کړو، د منگو اوړونکي چې کوم غلامان وو نو هغوی حضرت عبد الرحمن بن سهل رضی الله عنه سره په جگړه شو او خبره زیاته شوه، هغه کله چې حضرت امیر معاویه رضی الله عنه ته دا خبره اورسیدو نو هغوی او فرمائیل چې دې پرېږدئ، دې بوډا شوې دې او عقل ئې رخصت شوې دې. حضرت عبد الرحمن رضی الله عنه او فرمائیل چې هیڅکله نه زما عقل ختم شوې نه دې، لیکن خبره داده چې نبی صلی الله علیه و آله مونږ ددې خبرې نه منع کړې یو چې مونږ په خپلو لوښو یا خپلو خیتو کښې شراب واچوو.

د حافظ ابن حجر رحمته الله علیه رائي: په ائمه سیر او ائمه مغازی کښې د اکثر و امامانو رائي داده چې حضرت عبد الرحمن بن سهل بن زید الحارثی الانصاری او حضرت عبد الرحمن بن سهل انصاری دوه کسان نه دی، بلکه دا یو سړې دې، ددې وجې نه چې کله تراجم کښې د دوی تذکره راغله نو دې حضراتو دا یو کس شمار کړو او هیڅ تفریق ئې په کښې اونه کړو چې دا فلانې دې او دا فلانې دې. لیکن حافظ ابن حجر رحمته الله علیه په دې دواړو کښې فرق او کړو چې دا جدا جدا دوه شخصیات دی، ددې وجې نه حافظ رحمته الله علیه د دواړو ترجمه جدا جدا لیکلې ده او

دې خبرې ته ئې ترجیح ورکړې ده چې دا دوه کسان دی، فرمائی: ”والظاهر انها اثنان“ (۱). ابن سعد رحمته الله علیه و غیره د حضرت عبد الرحمن بن سهل انصاری متعلق درې واقعات نقل کړې دی، کوم چې اوس مونږ ذکر کړل، یعنی د مار د خورلو واقعه، د عمرې د ادا کولو دپاره

(۱) (الاصابة: ۴۰۱/۲).

(۲) (الاصابة: ۴۰۲/۲، ومعرفة الصحابة للاصبهانی: ۲۷۳/۳).

(۳) (معرفة الصحابة: ۲۷۴/۳).

(۴) (پورته حواله، والاصابة: ۴۰۲/۲، والاستيعاب: ۴۰۲/۲، ومعجم الصحابة: ۱۵۰/۲، باب العين، رقم (۶۲۵)).

(۵) (الاصابة: ۴۰۲/۲).

مکي مکرمې ته د تلو او هلته د گرفتاریدو او د آزادیدو واقعه او د حضرت معاویه رضی الله عنه په دور کښې چې کومه واقعه پېښه شوې وه.

ددې درې وارو واقعاتو په باره کښې د حافظ رحمۃ الله علیه تحفظات دي، هغوی فرماني چې د مار د خوړلو کومه واقعه ده نو کیدې شي چې دا حضرت عبد الرحمن بن سهل الحارثي الانصاري سره هم پېښه شوې وي، دغه شان دا دواړه شخصيات شمار کیدې شي. لیکن د قید او د آزادیدو چې کومه واقعه ده نو هغه مشکله ده، ځکه چې د چا په باره کښې دا اختلاف وي چې دا بدری دي یا نه؟ او کوم چې دغه کال باندې د عمرې د ادا کولو نه پس گرفتار شوې وي هغه د خیبر په موقع باندې کم عمره نه شي کیدې، او د باب په حدیث کښې ورته "أحدث القوم" (۱) فرمایلې شوې دي. دغه شان دا کوم چې د خیبر په موقع باندې کم عمر وي، د هغه په باره کښې شل، پنځویش کاله پس حضرت معاویه رضی الله عنه دا نه شي وئیلې چې "إنه شیخ ذهب عقله" ځکه چې دې وخت کښې به د دوی عمر زیات نه زیات خلونښت کاله وي او دا عمر داسې نه وي چې په دې باندې د بودا توب اطلاق او کړې شي او په دې عمر کښې چاته ذاهب العقل او وئیلې شي. ددې وجې نه ښکاره داده چې دا دواړه جدا جدا کسان دي (۲). والله اعلم بالصواب

حویصه بن مسعود: دا حضرت حویصه بن مسعود بن کعب بن عامر بن عدی بن مجدعه انصاري رضی الله عنه دي (۳). ددوی کنیت ابوسعده دي (۴). د غزوۀ بدر نه علاوه په نورو ټولو غزواتو کښې دې د نبی صلی الله علیه و آله سره شریک وو (۵).

ددوی د اسلام قبلولو واقعه: حضرت حویصه د خپل ورور محیصه رضی الله عنه نه مشر وو، لیکن د اسلام قبلولو شرافت مخکښې کشر ورور ته حاصل شو، بیا مشر ته حاصل شو. ابن اسحاق ذکر کړې دي چې د مشهور یهودی کعب بن اشرف د قتل نه پس نبی صلی الله علیه و آله صحابه کرامو رضی الله عنهم ته دا او فرمایل چې تاسو ته په کوم یهودی باندې هم قدرت حاصلیري نو هغه قتلوي. ابن سبینه یا ابن سبینه نومي یو سرې یهودی تاجر وو، چې د کپړې تجارت به ئې کوو، ددې اعلان نه پس یو ورځ حضرت محیصه رضی الله عنه موقع بیامونده او هغه ئې قتل کړو، په

(۱) پورته حواله، دغه شان اوگوری، حدیث باب)۔

(۲) الاصابه: ۴۰۲/۲)۔

(۳) الاصابه: ۳۶۳/۱، والاستيعاب بهامش الاصابه: ۳۹۳/۱)۔

(۴) الاستيعاب بهامش الاصابه: ۳۹۳/۱، ومعجم الصحابة: ۱۱۶/۳، رقم (۱۰۸۳)، باب الميم)۔

(۵) الاستيعاب بهامش الاصابه: ۳۹۴/۱، والاصابه: ۳۶۳)۔

(۶) قوله: محیصه "بضم الميم وفتح الحاء المهملة، وهو اخو حویصه..... ويقال فيهما جميعا بتشديد الياء وتخفيفا، انظر عمدة القاري: ۹۵/۱۵، وقال النووي: والاشهر هو التشديد". تهذيب الاسماء واللغات: ۱/۱۷)۔

دې باندې حضرت حویصه رضی الله عنه ډیر خفه شو چې په دغه وخت کښې ئې لا اسلام قبول کړې نه وو، ده به خپل کشر ورور محیصه وهلو او دا به ئې ورته وئیل چې د الله دشمنه اتا هغه قتل کړو حالانکه ستا په خپته کښې چې کومه وازگه ده نو دا هم د هغه په اخستلې شوې مال سره جوړه شوې ده؟ حضرت محیصه رضی الله عنه ورته په جواب کښې او وئیل، په خدائې قسم ماته دده د قتل کولو حکم هغه ذات کړې دې چې که ستا د قتل کولو حکم ما ته راکړی نو تا به هم قتل کړم. ددې په اوریدو سره حویصه ډیر حیران شو او د خپل ورور ته ئې په سوالیه انداز کښې او وئیل چې په خدائې قسم که محمد صلی الله علیه و آله زما د سر وهلو حکم تا ته اوکړی نو آیا ما به هم قتل کړې؟ حضرت محیصه رضی الله عنه په جواب کښې او وئیل چې بالکل که هغوی ماته دا حکم اوکړی نو زه به په دې باندې ضرور عمل کوم. ددې په اوریدو سره حویصه او وئیل چې په خدائې قسم دا دین ډیر عجیبه دې کوم چې ته دې حال ته رارسولې ئې، ددې نه پس حضرت حویصه رضی الله عنه اسلام قبول کړو. (۱).

حضرت حویصه رضی الله عنه د نبی صلی الله علیه و آله نه روایت کوی. د دوی نه په روایت کونکو کښې محمد بن سهل بن ابی حشمه او د دوی نوسی حرام بن سعد بن محیصه شامل دي. (۲). رضی الله عنه وارضاه خبردارې: د باب په حدیث کښې د حضرت محیصه رضی الله عنه نسب داسې بیان کړې شوې دي، ”محیصه بن مسعود بن زید“ او دا نسب صحیح نه دي، صحیح نسب دادې چې ”محیصه بن مسعود بن کعب“ او وئیلې شی. مولانا احمد علی سهارنپوری رحمته الله علیه د علامه کرمانی وغیره حوالې سره لیکلې دی چې امام بخاری رحمته الله علیه چې محیصه بن مسعود بن زید نقل کړې دي نو دا د دوی وهم دي. (۳).

وهم چاته لاحق شوې دي؟ علامه کرمانی رحمته الله علیه وغیره دلته چې د امام بخاری رحمته الله علیه طرفته کوم د وهم نسبت اوکړو، دا صحیح نه دي، ځکه چې دا د مصنف وهم نه دي بلکه د یو راوی وهم دي. د امام بخاری رحمته الله علیه نه علاوه آئمه خمسو هم دا حدیث روایت کړې دي، چې په هغې کښې امام ترمذی (۴) او په بعضې طرقو کښې امام نسائی او امام مسلم (۵) په دې الفاظو او نسب کښې د امام بخاری رحمته الله علیه موافقت کړې دي، ددې نه هم دا معلومیږي چې دا د یو راوی وهم

(۱) هذه القصة لاسلامه اخرجها ابو داود في كتاب الخراج والامارة والفتى، باب كيف كان اخراج اليهود من المدينة؟ رقم (۳۰۰۲)، وابن اسحاق في سيرة ابن هشام: ۴۱/۲، والطبرانی في الكبير: ۳۱۱/۲۰، رقم (۷۴۱)، والاصبهاني في معرفة الصحابة: ۱۶۴/۲، رقم (۲۳۳۳)، والحافظ في الاصابة: ۳۶۳/۱. —

(۲) الاستيعاب بهامش الاصابة: ۳۹۴/۱. —

(۳) حاشية صحيح البخاري للسهارنپوري: ۱/۴۵۰، والكرمانی: ۱۳/۱۳۸، وفتح الباري: ۶/۲۷۶. —

(۴) سنن الترمذی، ابواب الديات، باب ماجاء في القسامة، رقم (۴۳۴۲، ۴۳۴۶، ۴۳۴۷). —

(۵) سنن النسائی، كتاب القسامة..... ذكر اختلاف ألفاظ الناقليين لخبر سهل..... رقم (۴۷۱۸ و ۴۷۱۹)، وصحيح مسلم، كتاب القسامة..... باب القسامة، رقم (۴۳۴۲، ۴۳۴۶، ۴۳۴۷). —

دې او په سلسله کښې امام بخاري رحمه الله لره ملامته کول صحيح نه دي. اوس په دې مسئله کښې حتمی خبره کول مشکل دی چې دا پورتنی راویانو کښې د کوم راوی وهم دي؟
د باب په حدیث شریف کښې د مذکوره صحابه کرامو رضی الله عنهم د رشته دارئ نوعیت ددې نه پس دلته یو بحث دا هم دي چې د باب په حدیث شریف کښې د خلورو صحابه کرامو حضرت عبدالله بن سهل، حضرت عبدالرحمن بن سهل، حضرت محیصه بن مسعود او حضرت حویصه بن مسعود رضی الله عنهم د رشته دارئ څه کیفیت دي او دا حضرات خپل مینځ کښې د یو بل څه دي؟
په دې سلسله کښې تحقیقی خبره داده چې حضرت محیصه و حویصه دواړه تروته دي او حضرت عبدالله او عبدالرحمن دواړه ورپرونه دي.

د یرو علماؤ او محدثینو ته ددې نه مغالطه شوې ده چې د نسب په بیانولو کښې هغوی محیصه بن مسعود بن زید وئیلې شوې دي، کما فی حدیث الباب ایضا په دې شان سره دا دواړه حضرات خپل مینځ کښې د تره بچی جوړېږي، او دا خبره بالکل غلطه ده، تردې چې په بعضې روایتونو کښې راویانو د "ابن عم لهما" الفاظ نقل کړي دي، د حافظ ابن حجر رحمه الله په شان محقق نه دلته تسامح او شوه چې هغوی د حضرت عبدالرحمن بن سهل رضی الله عنه په ترجمه ذکر کولو کښې دوی ته "ابن عم حویصه و محیصه" او وئیل، البته د حویصه او د محیصه نسب ئې بالکل صحیح بیان کړې دي او د علامه عینی الفاظ صحیح صورت حال واضعوي، هغوی فرمائي: "ابن اخی حویصه و محیصه".

۱) دا حدیث په مسند سهل بن ابی حثمه کښې شمار کړي شوي دي، اگرچه یو ځایي کښې د حضرت محیصه نوم هم راغلي دي. انظر تحفة الاشراف: ۳۲۲/۸، رقم (۱۱۲۴۱)، او ددې حدیث په طرقو کښې تلاش کولو سره دا خبره مخې ته راغله چې د سهل بن ابی حثمه نه دا حدیث دوه حضرات روایت کوي، بشیر بن یسار او ابولیلی بن عبدالله بن عبدالرحمن بن سهل. دویم چې کوم راوی دي د دوی په طریق کښې چې روایات مروی دي نو په هغې کښې یا خو صرف محیصه بن مسعود دي او یا محیصه، د ذکر په کښې بالکل هیڅ ذکر نشته، او اولنې چې کوم راوی دي یعنې بشیر بن یسار نو د دوی د روایت چې کوم طرق دي په هغې کښې محیصه بن مسعود بن زید دي یا محیصه بن مسعود یا نور الفاظ بیا چې د بشیر بن یسار کوم شاگردان دي په هغوی کښې یحیی بن سعید الانصاری او سعید بن عبید شامل دي او د سعید بن عبید روایتونو کښې هم ذکر نه دي، ددې وجې نه په ظاهره دا معلومېږي چې مذکوره وهم یحیی بن سعید یا د هغوی یو شاگرد ته پېښ شوې دي، والله اعلم بالصواب. ددې حدیث د طرقو دپاره او گورئ تحفة الاشراف: ۸۹/۴، رقم (۴۶۴۴). ددې حدیث د پوره تخریج دپاره او گورئ جامع الاصول و تعلیقاته: ۲۸۰/۱۰، و ابن ماجه، ابواب الدیات، باب القسامة، رقم (۲۶۷۷-۲۶۷۸).

۲) د امام نسائی د یو روایت نه ددې تائید کېږي، په هغې کښې دی: فجاء اخوه و عما حویصه و محیصه، و هما عما عبد الله بن سهل "سنن نسائی، کتاب القسامة، رقم (۴۷۲۱)، دغه شان او گورئ، السنن الکبری للبيهقي: ۲۰۷/۸-۲۰۸، کتاب القسامة، باب اصل القسامة، رقم (۱۶۴۳۶).
۳) سنن النسائی، کتاب القسامة..... ذکر اختلاف الفاظ الناقلين لخبر سهل..... رقم (۴۷۱۷)، و فی رواية ابی داود، ایضا: ابنا عمه: حویصه و محیصه "سنن، کتاب الدیات، باب القسامة، رقم (۴۵۲۰).
۴) الاصابة: ۴۰۲/۲، و: ۳۶۳/۱.
۵) عمدة القاری: ۹۵/۱۵.

په دې ځان داسې پوهه کړې چې د حضرت محيصة نيکه د کعب دوه ځامن مسعود او زيد دى (نور هم کيدې شى) د مسعود په اولاد کښې محيصة او حويصة دى او د زيد په اولاد کښې سهل وغيره، بيا د سهل په اولاد کښې عبدالله بن سهل او عبد الرحمن بن سهل رضي الله عنه دى، دغه شان دا حضرات خپل مينځ کښې تروڼه او ورپرونه شو. (۱)

دا تفصيل ښه ياد کړئ، اکثر دلته مغالطه کيږي. (۲) والله اعلم بالصواب

قوله: فقال: أتخلفون وتستحقون قاتلكم أو صاحبكم؟ قالوا: وكيف نخلف ولم

نشهد، ولم نر؟ نو نبی عليه السلام او فرماييل، چې تاسو د قسم کولو دپاره تيار يئ، دغه شان به تاسو ته قاتل ملاؤ شى؟ دې حضراتو عرض او کړو چې مونږ په کوم بنياد باندې قسم او کړو، حالانکه مونږ په موقع باندې موجود نه وو او نه مونږ څوک ليدلې دى؟ يعنى هرکله چې دې حضراتو نبی عليه السلام ته پوره واقعه بيان کړه نو نبی عليه السلام او فرماييل چې تاسو خلق قسم او کړئ چې فلانې قاتل دى، دغه شان به ستاسو مقصد حاصل شى او تاسو ته به قاتل ملاؤ شى. په دې باندې دې حضراتو د قسم کولو نه انکار او کړو او وې وئيل چې قسم خو به هغه سړې کوى چا ته چې قاتل معلوم وي او هغه په موقع باندې موجود هم وي، حالانکه زمونږ معامله دغه شان نه ده.

قوله: قال: فتبريكم يهود بخمسين. فقالوا: كيف نأخذ أيمان قوم كفار؟ فعقله

النبى عليه السلام من عنده: نبی عليه السلام او فرماييل چې يهوديان به پنځوس قسمونه او کړي او ستاسو په وړاندې به د براءت اظهار او کړي. دې حضراتو او وئيل، چې مونږ د يو کافر قوم په قسمونو باندې څنگه اعتماد او کړو؟ نو نبی عليه السلام په خپله باندې ديت ادا کړو.

په "من عنده" کښې دوه احتمالات دى، يو خو دا چې نبی عليه السلام د خپل خاص مال نه ديت ادا کړو. دويم دا چې دا ديت د بيت المال نه ادا کړې شو. (۳)

ددې حضراتو صحابه کرامو رضي الله عنهم استحقاق ثابت شوې نه وو، ددې باوجود نبی عليه السلام ديت ددې وجې نه ادا کړو چې جگړه ختمه شى او ددې حضراتو تسلى هم اوشى، ځکه چې د هغوى په نزد عرف هم دا وو چې د ديت ملاويدو په صورت کښې به دا خبره گنرلې کيده چې د مقتول اولياؤ سره انصاف شوې دى. (۴) والله اعلم

ددې نه علاوه دلته د قسامت مسئله بيان کړې شوې ده، د هغې تفصيل به انشاء الله دويم جلد کښې راشي. (۵)

(۱) ددې مسئلې صحيح شکل او نقشه داسې ده:—

(۲) اوگورئ، اوجز المسالك: ۱۶۴/۱۵—۱۶۵—

(۳) عمدة القارى: ۹۶/۱۵—

(۴) عمدة القارى: ۹۶/۱۵، وشرح ابن بطال: ۳۵۵/۵—

(۵) انظر، كتاب الديات، باب القسامة—

قوله: فذهب عبدالرحمن يتكلم: فقال: كبر، كبر - وهو أحدث القوم - فسكت،

فتكلم: نو حضرت عبدالرحمن خبرې شروع کړې نو نبی ﷺ او فرمائیل چې مشرانو ته موقع ورکوه او دې په دغه راتلونکو کسانو کښې د ټولو نه کشر وو، نو دې خاموشه شو او حضرت محیصه وحویصه ﷺ خپله مدعا پیش کړه.

د حدیث نه مستفاد یو حکم: د نبی ﷺ د ارشاد مبارک "کبر کبر" نه دا حکم معلوم شو چې د مشرانو په موجودگي کښې کشرانو ته خبرې کول پکار نه دی، دا د ادب نه خلاف دی، حضرت محیصه وحویصه ﷺ چونکه دواړه مشران وو او حضرت عبدالرحمن کشر وو نو نبی ﷺ د مشرانو خیال ساتلو سره د هغوی وراړه عبدالرحمن ﷺ منع کړو چې د دوی په وړاندې تاسو خبره مه کوئ. (۱).

یو اعتراض او د هغې جوابونه: دلته دا یو اعتراض کیږي چې حضرت عبدالرحمن بن سهل چې د مقتول ولی وو، هغه خاموش کړې شو او حضرت حویصه او محیصه ﷺ ته د خبرې کولو دپاره اووئیلې شو، حالانکه د خبرې حق خو د مقتول د ولی وو؟

① ددې جواب دادې چې د نبی ﷺ مقصود دا وو چې د واقعي په صورت او کیفیت باندې ځان پوهه کړې شی، هرچه د دعوي حقیقت دې نو دلته د هغې متعلق بحث نه دی، ځکه چې که دا خبره مقصود وه نو بیا به حضرت عبدالرحمن خبره کوله چې د هغه حق هم وو.

② ددې خبرې احتمال هم دې چې حضرت عبدالرحمن په خپله دا دواړه حضرات د خپل طرفه د خبرې کولو دپاره وکیلان جوړ کړل چې خبره تاسو او کړئ. (۲). والله اعلم

په ترجمة الباب باندې یو اشکال: امام بخاری رحمه الله په ترجمة الباب کښې دا الفاظ ذکر کړي وو، "وإثم من لم يف بالعهد" په دې الفاظو باندې حافظ صاحب رحمه الله دا اعتراض کړې دې چې د باب په حدیث کښې خو یو څیز هم داسې نشته چې په دې جزء باندې دلالت کوی یا ددې موافقت کوی. (۳).

د مذکوره اشکال جوابونه: شیخ الحدیث حضرت مولانا محمد زکریا کاندهلوی رحمه الله ددې اعتراض درې جوابونه کړي دي:

① مصنف رحمه الله په دې باب کښې څو څه مناسب حدیث ذکر کول غوښتل لیکن د هغې موقع ملاو نه شوه. کما هو المعروف عند الشراة فی مثل هذه المواضع. (۴).

(۱) عمدة القاری: ۹۶/۱۵، وقد بوب الامام البخاری رحمه الله بابا ایضا فی کتاب الادب، ای: باب اکرام الکبیر..... و ذکر تحت حدیث الباب، رقم (۶۱۴۳) -

(۲) عمدة القاری: ۹۶/۱۵، وشرح الزرقانی: ۲۰۸/۴، رقم (۱۶۹۶)، والاوزج: ۱۶۸/۱۵ -

(۳) فتح الباری: ۲۷۶/۶، والابواب والتراجم: ۲۰۸/۱، وتعلیقات لامع الدراری: ۳۲۹/۷ -

(۴) الابواب والتراجم: ۲۰۸/۱، وتعلیقات اللامع: ۳۲۵/۷ -

② په داسې ځايونو كښې زما په نزد غوره توجيه داده چې امام بخاري رحمته الله عليه دلته قصد او ذهنونو د متوجه كولو دپاره او په دې باندې د تنبيه كولو دپاره چې ددې مناسب څه حديث مې بل ځانې ذكر كړې دي، دلته ئې ذكر نه كړو... لكه وعده خلاف كس ته به د هغه په دې كار باندې چې كومه گناه وي، ددې ذكر په څو رايونو كښې راغلې دي، كه امام بخاري رحمته الله عليه په يو روايت وغيره باندې انحصار كوو نو چاته دا وهم كيدې شو چې مذكوره گناه دې قسم سره خاص ده حالانكه د مصنف مقصود خو دا دې چې د وعده خلافئ په گناه باندې مختلفو طريقو سره خبرداري او كړې شي، ددې وجې نه هغوی دلته څه خاص حديث ذكر نه كړو.

په دې سلسله كښې چې امام بخاري رحمته الله عليه كوم مختلف حديثونه ذكر كړې دي نو هغه دې ددې ترجمې مشاراليه او گنرلې شي چې امام ددې ترجمې په ذريعې د هغه حديثونو طرفته اشاره كړې ده، په كومو كښې چې د وعده خلافئ مذمت او د گناه تذكره راغلې ده. (١).

③ دا هم كيدې شي چې مذكوره كوم روايت د وعده خلافئ په مذمت كښې بيان شوې دې نو امام بخاري رحمته الله عليه ددې په ذريعې سره په دې خبره باندې خبرداري كړې دي چې د وعده پوره كول خپلول پكار دي. (٢). والله اعلم بالصواب

ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: د حافظ ابن حجر رحمته الله عليه رائي داده چې ترجمة الباب سره د حديث مناسبت په دې جمله كښې دي، "انطلق عبدالله بن سهل ومحبيصة..... الى خيبر، وهي يومئذ صلح" (٣) او په دې معنى كښې چې نبي عليه السلام د خيبر يهوديانو سره صلح كړې وه، د هغې شرط دا وو چې هغوی به نبي عليه السلام ته د خيبر د باغونو نيم پيداوار ورکوي (٤). ددې نه هم دا ثابت شوه چې مشرکانو سره په دواړو صورتونو كښې صلح كيدې شي، چې د مشرکانو نه مال واخستې شي نو داسې هم جائز دي او داسې هم چې د ضرورت په وخت كښې مشرکانو ته مال ورکړې شي، دا د ترجمة الباب مقصود وو.

او د علامه مهلب رحمته الله عليه مطابق د حديث د آخرى جزء نه ترجمه ثابتېږي، "فقتله النبي صلى الله عليه وسلم من عنده" چې نبي عليه السلام د خپل طرفه ديت ادا كړو، دا ئې ددې وجې نه ورکړې وو چې د مقتول وينه ضائع نه شي، دغه شان د يهوديانو تاليف هم مقصود وو چې كيدې شي دغه شان ددې يهوديانو دپاره د اسلام لاره جوړه شي، او دغه شان د يهوديانو د شرارت او رذالت نه د خپل ځان او د مسلمانانو حفاظت هم مقصود وو، دغه شان ترجمة الباب سره مطابقت ثابتېږي. (٥).

(١) الابواب والتراجم: ٢٠٨/١ - ٢٠٩، وتعليقات اللامع: ٣٢٥/٧ -

(٢) پورته حواله جات -

(٣) فتح الباري: ٢٧٦/٦ -

(٤) كشف الباري. كتاب المغازی: ٤١٤، باب غزوة خيبر -

(٥) شرح ابن بطلال: ٣٥٥/٥، وفتح الباري: ٢٧٦/٦ -

او علامه عینی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چې حديث سره د ترجمه الباب مناسبت د "وهي يومئذ صلح" نه هم حاصلېږي او د "فعلقه النبي صلى الله عليه وسلم من عنده" نه هم حاصلېږي ځکه چې مشرکانو سره مصالحت بالمال وو. (۱)

گویا علامه عینی رحمۃ اللہ علیہ پورتنی دواړه اقوال جمع کړي دي. (۲)

باب: فُضِّلَ الْوَفَاءُ بِالْعَهْدِ (۱۳)

د ترجمه الباب مقصد او ماقبل سره مناسبت: تیر شوې باب کښې چونکه د مصالحت او د موادعت ذکر وو، ددې وجې نه امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ دلته دا اوونیل چې کله مصالحت کیږي نو بیا د هغې پوره کول ضروري وي او ددې وعدي د پوره کولو ډیر فضیلتونه دي او په خپله یو ښه صفت هم دي. (۳)

۳۰۰۳: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سَفْيَانَ بْنَ حَرْبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ هِرَقْلَ أَرْسَلَ إِلَيْهِ فِي رَكْبٍ مِنْ قُرَيْشٍ كَانُوا تِجَارًا بِالشَّامِ فِي الْمُدَّةِ الَّتِي مَادَّ فِيهَا رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- أَبَا سَفْيَانَ فِي كُفَّارِ قُرَيْشٍ. [ر: ۷]

رجال الحديث

- ① يحيى بن بكير: دا امام يحيى بن بكير رحمۃ اللہ علیہ دي.
- ② الليث: دا امام ابو الحارث ليث بن سعد فهمي رحمۃ اللہ علیہ دي. ددې دواړو حضراتو تذکره د "بدء الوحي" په "الحديث الثالث" کښې تیره شوې ده. (۴)
- ③ يونس: دا يونس بن يزيد ايلي رحمۃ اللہ علیہ دي، د دوی مختصر تذکره په "بدء الوحي" او تفصیلي تذکره په کتاب العلم، "باب من یرد الله به خیرا...." کښې راغلي ده. (۵)
- ④ ابن شهاب: دا امام محمد بن مسلم بن شهاب زهري رحمۃ اللہ علیہ دي. د دوی مختصر ترجمه په "بدء الوحي" کښې تیره شوې ده. (۶)

(۱) عمدة القاری: ۱۵/۹۵.

(۲) عمدة القاری: ۱۵/۹۷.

(۳) قوله: عبد الله بن عباس اخبره: الحديث، مر تخريجه في بدء الوحي.

(۴) كشف الباری: ۱/۳۲۳-۳۲۵.

(۵) كشف الباری: ۱/۴۶۳، و: ۲۸۲/۳.

(۶) كشف الباری: ۱/۳۲۶، الحديث الثالث.

⑤ عبيدالله بن عبدالله بن عتبة: دا د مدينې منورې فقيه عبيدالله بن عبدالله بن عتبة بن مسعود رضي الله عنه دې د دوی اجمالی تذکره په ”بدء الوحي“ کښې او تفصيلی تذکره په کتاب العلم، ”باب مقیصم سبام الصغیر؟“ کښې راغلي ده. (۱)

⑥ عبدالله بن عباس: د مشهور صحابي حضرت عبدالله بن عباس رضي الله عنه حالات اجمالی طور په ”بدء الوحي“ کښې او تفصيل سره په کتاب الايمان، ”باب کفران العثم، وکفر دون کفر“ کښې تیر شوي دي. (۲)

⑦ ابوسفیان: دا مشهور صحابي حضرت ابوسفیان صخر بن حرب رضي الله عنه دې د دوی تذکره د ”بدء الوحي“ په ”الحديث السادس“ کښې تیره شوي ده. (۳)

د باب د حديث ترجمه: حضرت ابن عباس رضی الله عنه فرمائی چې حضرت ابوسفیان ابن حرب رضی الله عنه ما ته او وئیل چې د روم بادشاه زه د قريشو او د سورلو سره خپل طرفته او غوښتم، کله چې زه د شام طرفته د تجارت په غرض سره تلې ووم، دا د هغه زمانې خبره ده چې کوم وخت نبی علیه السلام د قريشو د کفارو په معامله کښې حضرت ابوسفیان سره صلح کړې وه.

د باب حديث د بدء الوحي د شپږم حديث حصه ده، د دې مکمل تشریح هلته تیره شوې ده. (۴)
ترجمة الباب سره د حديث مطابقت: علامه ابن بطال رحمه الله فرمائی چې د وعده خلافی مذمت او د وعده د پوره کولو فضيلت په قرآن و حديث کښې ځانې په ځانې موجود دي. حقيقت کښې امام بخاری د هغه حديث هغې سوال طرفته اشاره کړې ده، کوم سوال چې هرقل د ابوسفیان نه کړې وو چې ”هل يغدر؟“ آیا هغه وعده خلافی هم کوي؟ د سوال وجه دا وه چې وعده خلافی یو داسې عمل دی چې په ټوله معاشره کښې بد او سپک گنلې شی او د پیغمبرانو په صفاتو کښې (چې د انسانیت مقدس ترین هستیاني دي) دا عمل نه دی چې پیغمبران او انبیاء هم په دې صفت باندې متصف شی، ځکه چې هیڅ یو نبی کله هم غدار او وعده خلاف کیدې نه شی. (۵)

ددې نه د وعده د پوره کولو فضيلت او اهميت معلومېږي چې کوم صفت د انبیاء کرامو او د پیغمبرانو وی نو هغه به معمولی صفت نه وی، بلکه د هغې اهميت به ډیر زیات وی، هم دا د امام بخاری رحمه الله مقصود هم دی. والله اعلم بالصواب.

(۱) کشف الباری: ۱/۴۶۶، و: ۳/۳۷۹

(۲) کشف الباری: ۱/۴۳۵، و: ۲/۲۰۵

(۳) کشف الباری: ۱/۴۸۰

(۴) کشف الباری، الحديث السادس، من بدء الوحي: ۱/۴۸۵-۴۸۷

(۵) ابن بطال: ۵/۳۵۶، وفتح الباری: ۶/۲۷۶، وعمدة القاری: ۱۵/۹۷، والقسطانی: ۵/۲۴۰

١٣) باب: هَلْ يُعْفَى عَنِ الذِّمِّي إِذَا سَحَرَ

د ترجمه الباب مقصد: که یو ذمی په یو مسلمان باندې جادو او کړو نو آیا دا ذمی معاف کیدې شی یا به دې قتلولې شی یا به بله څه سزا ورکولې شی؟
په دې مسئله کېنې چونکه اختلاف دې، د امت د فقهاؤ په دې کېنې اختلاف دې ددې وجې نه امام بخاری رحمه الله علیه د خپل عادت مطابق دا "هل" استفهامیه سره ذکر کړې ده، یقین سره ئې څه حکم نه دې بیان کړې لیکن کوم حدیث چې ئې ترجمه کېنې ذکر کړې دې، هغې سره د دوی مذهب معلومېږي چې دا ذمی به معاف کولې شی (۱).

د امت د فقهاؤ د اختلاف تفصیل: ① علامه باجی د امام مالک رحمهما الله مسلک دا نقل کړې دې چې ذمی جادوگر به نه شی قتلولې لیکن دوه صورتونه داسې دی چې په دې دوو صورتونو کېنې به قتلولې شی:

(۱): د خپل سحر او جادو په ذریعې سره یو مسلمان ته نقصان اوسوي. په دې صورت کېنې چونکه دده وعده خلافی کړې ده، ددې وجې نه دده سزا به قتل وی البته که اسلام قبول کړي نو بیا نه شی قتلولې.

(ب): د مسلمانانو نه علاوه د خپل مذهب په یو سړي باندې ئې جادو او کړو، ددې په نتیجه کېنې هغه سړې مړ شی نو قصاصاً به دې قتلولې شی او که هغه کس مړ نه شی نو صرف سزا به بیا دې جادوگر ته ورکولې شی (۲).

② د امام احمد رحمه الله په نزد باندې هم که ساحر په خپل سحر سره یو سړې قتل کړی نو دې به قصاصاً قتلولې شی، صرف په جادو باندې به د قتل سزا نه وی (۳).

③ د امام شافعی رحمه الله مذهب هم دادي چې که د جادوگر په جادو سره څوک مړه شی نو دې به قتلولې شی او که څوک مړه نه شی نو بیا نه قتلېږي، په دې شرط چې دې په خپله ددې خبرې اقرار او کړې چې دا مقتول زما د جادو په نتیجه کېنې مړ شوی دې (۴).

امام ابو حنیفه رحمه الله فرمائی چې که جادوگر د خپل جادو اقرار او کړي یا څه دلیل سره دده سحر او جادو ثابت شی نو سزا به ئې قتل وی او دده توبه به هم نه قبلېږي، په دې معامله

① (عمدة القاری: ۹۷/۱۵، وفتح الباری: ۲۷۷/۶)۔

② (المنتقى: ۹۱۰۲/، کتاب العقول، الباب الثانی فی قتل الغيلة، والاوجز: ۹۰/۱۵)۔

③ (المغنی لابن قدامة: ۹۳۷/، کتاب المرد، احکام السحر.....)۔

④ (قال الشافعی رحمه الله: واذا سحر رجلا فمات، سئل عن سحره، فان قال: انا اعمل هذا لا قتل، فاخطئ القتل واصيب. وقد مات من عملي ففيه الدية، وان قال: مرض منه، ولم يميت، اقسام اولياؤه: لمات من ذلك العمل. وكانت الدية، وان قال: عملي يقتل المعمول به، وقد عمدت قتله به، قتل به قوداً: انظر الام: ۲۵۵/۸، کتاب القسامة، باب الحكم فی الساحر.....)۔

کښې مسلمان، ذمی، آزاد او غلام ټول برابر دی. البته یو قول دا هم دې چې مسلمان ساحر خو به قتلولي شی او کتابی به نه شی قتلولي (۱).

د امام اعظم رحمته الله علیه دلیلونه: (۱): د امام اعظم رحمته الله علیه یو دلیل دا م المؤمنین حضرت حفصه واقعده، لکه د نافع عن ابن عمر د طریق نه روایت دې چې د حضرت حفصه یوې وینزې په حضرت حفصه باندې جادو او کړو، په معلوماتو کولو باندې د هغې جرم ثابت شو او هغې اقرار هم او کړو، حضرت حفصه حضرت زید ته او وئیل چې دا دې قتل کړې شی. حضرت زید دا وینزه قتل کړه، البته دا خبره چې کله حضرت عثمان ته معلومه شوه نو هغه خفه شو، په دې باندې حضرت عبدالله بن عمر هغوی ته حاضر شو او د حقیقت نه ئې خبردار کړو.

د حضرت عثمان د خفه کیدو وجه هم دا وه چې دا کار د هغوی د اجازت نه بغیر شوې وو (۲)، ددې نه دا مطلب اخستل غلط دی چې حضرت عثمان د جادوگر د قتلولو قائل نه وو (۳).

(۲) حضرت امام اعظم دویم دلیل د حضرت عمر فرمان دې، حضرت بجاله فرمائی چې زه د جزء بن معاویه کاتب ووم، چې هغوی ته د حضرت عمر خط راغی چې "اقتلوا کل ساحر وساحرة، فقتلنا ثلاث سواحر" (۴).

(۳) دغه شان د حضرت عمر په باره کښې راځي چې هغوی یو جادوگر گرفتار کړو او سینې پورې ئې په زمکه کښې ښخ کړو، په دې حال کښې ئې پریخوډه، تردې چې هغه سرې مړ شو (۵).

(۴) د حضرت حسن بصری نه روایت دې، فرمائی، "یقتل الساحر ولا یستتاب" (۶).

(۵) د نبی کریم صلی الله علیه و آله نه هم د جادوگر سزا قتل روایت شوې ده، په جامع ترمذی کښې د حضرت جندب بن عبدالله نه منقول دی چې نبی فرمائی "حد الساحر ضربة بالسيف" (۷). دا ټول روایتونه

(۱) احکام القرآن للجصاص: ۵۰/۱، وروح المعانی: ۳۳۹/۱، والاولجز: ۹۰/۱۵.

(۲) احکام القرآن: ۵۰/۱، وروح المعانی: ۳۳۹/۱، والموطا للامام مالک: ۸۷۱/۲، کتاب الديات، باب ماجاء فی الغيلة والسحر، رقم (۱۴/۱۵۱۸).

(۳) انظر كلام الباجی فیہ فی المنتقى: ۹۱۰/۱، والاولجز: ۹۷/۱۵، وانظر ايضا السنن الكبرى للبيهقي: ۱۳۶/۸، رقم (۱۶۴۹۹)، والمصنف لابن ابی شيبه: ۵۹۲/۱۴، کتاب الحدود، باب ما قالوا فی الساحر.....، رقم ((۲۹۵۸۳)).

(۴) اخرجہ ابو داود، فی کتاب الخراج.....، باب فی اخذ الجزية من المجوس، رقم (۳۰۴۳)، واحمد فی مسنده، حديث عبدالرحمن بن عوف الزهري: ۱۹۰/۱، و۱۹۱، رقم (۱۶۵۷)، واحکام القرآن: ۵۱/۱، ومسنند ابی يعلى الموصلي، مسند عبدالرحمن بن عوف، رقم (۸۵۸).

(۵) احکام القرآن: ۵۱/۱، والمصنف لعبد الرزاق: ۹۴۸۰/، کتاب العقول، باب قتل الساحر، رقم (۱۹۰۲۶).

(۶) المصنف لابن ابی شيبه، کتاب الحدود، باب ما قالوا فی الساحر.....، رقم ((۲۹۵۷۹)).

(۷) رواه الترمذی فی کتاب الحدود، باب ما جاء فی حد الساحر، رقم (۱۴۶۰)، والحاكم فی المستدرک: ۴۰۱/، کتاب الحدود، رقم (۸۰۷۳)، والبيهقي فی الكبرى: ۲۳۴/۸، کتاب القسامة..... [بقیه بر صفحه آئنده...]

په دې خبره باندې دلالت کوي چې ساحر به قتلولې شي، بيا چونکه په دې روايتونو او آثارو کښې ددې خبرې تفريق نشته چې ساحر مسلمان وي يا غير مسلم، ددې وجې نه امام اعظم ابو حنيفه فرمائي چې مطلقاً به ساحر قتلولې شي خواه مسلمان وي يا غير مسلم وي (۱).
دائمه ثلثه دليلونه: ائمه ثلثه چونکه مطلقاً د ساحر د قتلولو قائل نه دي. په دې خبره کښې هغوی په مسلمان او غير مسلم کښې فرق کوي چې ساحر اهل کتاب به نه شي قتلولې نو په دې سلسله کښې د هغوی دليل د نبی هغه مشهوره واقعه ده. په کومه واقعه کښې چې په نبی باندې جادو شوې وو چې لبيد بن الاعصم يهودی په نبی باندې جادو کړې وو، ليکن نبی هغه قتل نه کړو کماي روايه الباب.

د ابن قدامه وينا داده چې د قياس تقاضه هم داده چې اهل کتاب جادوگر قتل نه کړې شي، ځکه چې دده شرک ددې کار نه زياته لويه گناه ده، په دې شرک باندې دې نه قتلېږي چې دې مشرک دې نو د جادوگر کيدو په وجه به دده قتلول څنگه جائز شي؟ (۲).

دائمه ثلثه دليلونو نه جوابونه: علامه ابن قدامه چې د خپل مسلک کوم دليل پيش کړو، هغه دا وو چې نبی ﷺ ته ښه پته هم اولگيده چې لبيد بن الاعصم يهودی په ما باندې جادو کړې دې ليکن ددې باوجود نبی ﷺ هغه قتل نه کړو، ددې نه معلومه شوه چې اهل کتاب جادوگر به نه شي قتلولې. ليکن ددې حديث نه استدلال کول په څر و جوهاتو سره صحيح نه دي.

① معامله چونکه د نبی ﷺ د خپل ذات اقدس وه او وړاندې دا خبره تيره شوې ده چې نبی ﷺ به د خپل ذات اقدس دپاره د هيچا نه څه قسم انتقام نه اخستلو، ددې وجې نه هغوی مبارک لبيد بن اعصم قتل نه کړو، ورنه دا خبره به لازم راغلې وه چې نبی ﷺ د خپل ذات دپاره انتقام واخستلو.

② علامه مهلب فرمائي، ددې جادو د وجې نه نبی ﷺ ته څه نقصان نه وو رسيدلې، نو ددې وجې نه نه د وحې سلسله بنده شوه، نه په شرعي احکاماتو کښې څه مشکل او خلل واقع شو بلکه د خپل ذات حده پورې څه وهم واقع شوې وو لکه څنگه چې د حضرت عائشې رضی الله عنها د باب په حديث کښې دي، "حق کان يخيّل اليه انه صنع شيئاً ولم يصنعه" بيا ددې نه علاوه دا خبره هم وه چې الله تعالی نبی ﷺ په دې حالت کښې يواځې پرېنخودلو، بلکه د هغوی مبارک ئې پوره پوره مدد او فرمائيلو او علاج ئې ورته هم اوښودلو، ددې وجې نه نبی ﷺ دغه يهودی جادوگر معاف کړې وو.

لکه علامه ابن بطال رحمه الله دا وجوهات بيانوي او ليکي چې:

بقية از حاشيه گذشته [باب تكفير الساحر..... رقم (۱۶۵۰۰)، والجامع الصغير مع فيض القدير للمناوي: ۴۹۸/۳، حرف الحاء، رقم (۳۶۸۸)، وسنن الدار قطنی، كتاب الحدود، رقم (۱۱۲)] _

(۱) المغنی لابن قدامة: ۹۳۷، وفيه ايضاً: والقياس ايضاً يقتضي ذلك؛ لانه جناية اوجبت قتل المسلم، فاجبت قتل الذمی كالقتل _

(۲) المغنی: ۹۳۷، والاوجز: ۹۰/۱۵ _

”وعلى هذا القول لاحجة لابن شهاب في أن النبي عليه السلام لم يقتل اليهودي الذي سحره لوجوه منها: أنه قد ثبت عن الرسول أنه كان لا ينتقم لنفسه، ولو عاقبه لكان حاكماً لنفسه. قال المهلب: وأيضا فإن ذلك سحر لم يضره عليه السلام، لأنه لم يفقد شيئا من الوحي، ولا دخلت عليه داخله في الشريعة وإنما اعتراه شيء من التسخيل والتوهم، ثم لم يتركه الله على ذلك، بل تداركه، ثم عصمه وأعلمه بموضع السحر.....“ (۱).

هرچه دا خبره ده چې شرک لویه گناه ده، ددې باوجود د شرک سزا قتل نه دې نو د جادو سزا څنگه قتل کيدې شي؟ نو ددې جواب دادې چې د يو انسان شرک اختيارول د هغه د ذات پورې محدود وي، ددې ضرر وړاندې چاته نه رسېږي او د جادو معامله داسې نه ده، د هغې نقصان او ضرر متعدي وي ځکه چې ددې په ذريعه سره جادوگر خلقو ته نقصان رسوي نو د احنافو په نزد جادوگر مطلقاً د قطاع الطريق په حکم کښې دې چې څنگه د قطاع الطريق (ډاکو) سزا قتل دې نو دغه شان د جادوگر سزا هم قتل دې ځکه چې دا دواړه په دې خبره کښې مشترک دي چې دوی په زمکه کښې فساد خوروي. (۲).

د مسلمان جادوگر حکم: پورته د کتابي يا د ذمي جادوگر حکم بيان کړې شوي دي ليکن که دا جادوگر مسلمان وي نو دده به څه سزا وي؟

① امام اعظم رحمته الله چونکه د مسلمان او د غير مسلم مينځ کښې د فرق کولو قائل نه دې نو ددې وجې نه د دوی په نزد د مسلمان جادوگر سزا هم قتل دې.

② هم دا قول د امام مالک او احمد رحمهما الله هم دې، په صحابه کرامو او تابعينو کښې حضرت عمرو بن عمر، عثمان، علي بن ابي طالب، قيس بن سعد، جندب او د حضرت عمر بن عبد العزيز رضي الله عنهم وغيره هم ددې قائل دي، ځکه چې د نبی کریم صلی الله علیه و آله ارشاد دې، ”حد الساحر ضربة بالسيف“ (۳).

③ او د امام شافعي رائي داده چې صرف د جادو د وجې نه به جادوگر نه شي قتلېدې، ترڅو چې دې جادوگر ددې خپل جادو په ذريعه سره څوک قتل کړې نه وي، هم دا قول د ابن المنذر او په يو روايت کښې د امام احمد رحمهم الله هم دې. (۴). د دوی استدلال ددې نه دې

(۱) شرح ابن بطلال: ۳۵۸/۵-۳۵۹، وايضا فتح الباری: ۶/۲۷۷، وعمدة القاری: ۱۵/۹۸.

(۲) الدر المختار: ۳/۳۲۴. قال ابن شجاع: فحكم في الساحر والساحرة حكم المرتد والمردة، وقال حنقلا عن ابي حنيفة: ان الساحر قد جمع مع كفره السعي في الارض بالفساد، والساعي بالفساد اذا قتل قتل. انظر البيان للصابوني: ۸۵/۱، والاحكام للرازي: ۵۱/۱.

(۳) الحديث مر تخريجه آنفاً.

(۴) المغنی لابن قدامة: ۹۳۵، کتاب قتال اهل البغی، فصل السحر، والام: ۲/۲۳۶، رقم (۲۸۲۳)، وهو قول ابن حزم كذلك، انظر المحلی: ۱۲/۴۱۰.

چې د حضرت عائشې رضی اللہ عنہا یو مدبرې وینزې په دوی باندې جادو او کړو نو هغوی دا وینزه خرڅه کړه (۱). ددې نه معلومه شوه چې د ساحر سزا قتل نه دي، ورنه ددې وینزې خرڅول به جائز نه وو، بلکه دا به په هر حالت کې قتلولې شوه او هم دا قتل به واجب وو (۲).

دغه شان د نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم ارشاد مبارک دي، "لا یحل دم امرئ مسلم الا باحدى ثلاث....." (۳). په دې حدیث مبارک کې د درې قسمه خلقو وینه حلاله گرځولې شوې ده، یعنی قصداً قتل کوونکې، محصن زانی او مرتد. او دا کوم چې جادوگر دي نو دده نه د دریو لویو گناهونو صدور نه دي شوې، ددې وجې نه دده وینه حلالیدل پکار نه دی چې دې واجب القتل او گرځولې شی (۴).

د ائمه ثلاثه دلیلونه: د ائمه ثلاثه اولنې دلیل خو هغه دي کوم چې اوس پورته تیر شو. د دوی دویم دلیل د حضرت عمر هغه خط دي کوم چې هغوی حضرت جزء بن معاویه ته لیکلي وو، "اقتلوا کل ساحر....." (۵) چې ددې په نتیجه کې هغوی درې څلور جادوگران قتل کړي وو، دا خبره مشهوره هم شوه، ددې باوجود هیڅ یو صحابی په دې کار باندې نکیر اونکړو، گویا په دې باندې د ټولو صحابه کرامو رضی اللہ عنہم اجماع وه چې ساحر به قتلولې شی. د دوی دریم دلیل د حضرت حفصه رضی اللہ عنہا واقعه ده، کومه چې وړاندې تیره شوه چې هغوی خپله یوه جادوگره وینزه قتل کړې وه (۶).

د اختلاف مدار: حنفیه چې د جادوگر د قتل قائل دي نو ددې وجه داده چې دا کس فسادی دي او په زمکه کې فساد خوروي او کافر هم دي او د مالکيه په نزد دې زندیق دي او دده سزا بس قتل ده. او امام شافعي رحمته الله د جادوگر د کفر قائل نه دي، بلکه صرف یو گناه نې گنړی، د گناه سزا تعزیر او تادیب خو کیدې شی لیکن قتل نه شی کیدې، البته دا چې ددې جادو په ذریعې سره دې څوک قتل کړی نو په دې صورت کې به دې قصاصاً قتلولې شی، نه چې د ارتداد، کفر او د زندیقیت د وجې نه به قتلولې شی (۷).

(۱) المغنی: ۹۳۵، والسنن الکبری للبيهقي: ۲۳۷/۸، کتاب القسامة، باب من لا یكون سحره کفراً..... رقم (۱۶۵۰۶)، والمصنف لعبد الرزاق، کتاب العقول، باب قتل الساحر، رقم (۱۹۰۲۰-۱۹۲۰).

(۲) المغنی: ۹۳۵، والام: ۲۳۷/۲، کتاب الاستسقاء، الحكم فی الساحر والساحرة، رقم (۲۸۲۶).

(۳) وتمامه: إن یزنی بعد ما احصن، او یقتل انسانا فیقتل، او یکفر بعد اسلامه فیقتل. "رواه الترمذی فی الفتن، باب ما جاء لا یحل دم امرئ الا باحدى ثلاث، رقم (۲۱۵۹)، وابو داود فی الديات، باب الامام یامر بالعفو فی الدم، رقم (۴۵۰۲)، والنسائی فی تحریم الدم، باب ذکر ما یحل به دم المسلم، رقم (۴۰۱۹)، عن عثمان رضی اللہ عنہ.

(۴) المغنی: ۹۳۵، والام للشافعی: ۲۳۷/۲، الحكم فی الساحر والساحرة، رقم (۲۸۲۶).

(۵) مر تخريجه آنفاً.

(۶) المغنی لابن قدامة: ۹۳۶.

(۷) احکام القرآن للعثماني: ۴۱/۱، والمنتقى للبايجي: ۹۱۰/۱، کتاب العقول.

یو اهم خبرداری: پورتنی تفصیلاتو نه په ظاهره دا معلومیږي چې د حنفیه په نزد هر قسم جادو کفر دې لیکن دا خیال صحیح نه دې، لکه امام ابو منصور ماتریدی رحمه الله علیه فرمائي: "ان القول بان السحر كفر على الاطلاق خطأ بل يجب البحث عن حقيقته، فان كان في ذلك رد مألوم من شرط الايمان فهو كفر، وإلا فلا" (۱).

یو دویم خبرداری: بیا د احنافو په نزد دا حکم چې ساحر به قتلولې شی، په دې کسې ذمی، مسلم، آزاد، غلام، بنځه او سپرې ټول برابر دی، نو دا حکم هغه وخت دې چې کله جادوگر د خپل جادو په ذریعې سره فساد خوروی، ددې برخلاف که دا جادوگر فسادی نه وی نو سپرې خو به قتلولې شی لیکن بنځه به نه شی قتلولې، کما فی المرتد یقتل، والمرتدة لا تقتل، بل تحبس (۲). والله اعلم بالصواب

د ساحر توبه به قبلولې شی یا نه؟ جادوگر که دا او وائی چې زه توبه کوم نو دده توبه به قبلولې شی یا نه؟ په دې کسې اختلاف دې:

- ① دموالکو رحمته په زړه دده توبه مطلقاً نه شی قبلولې، په هر حال کسې به دې قتلولې شی (۱).
 - ② او د شوافعو رحمته په نزد به مطلقاً قبلولې شی (۲).
 - ③ د احنافو او د حنابلو رحمته په دې مسئله کسې دوه روایتونه دي، لکه ابن عابدين فرمائي چې په فتح القدیر (۳) کسې دی چې د ساحر توبه به نه شی قبلولې، ظاهر مذهب هم دادي (۴). هم دا خبره علامه ابن قدامه هم نقل کړې ده، هغوی لیکي:
- "فيه روايتان، إحداهما: أنه لا يستتاب، وهو ظاهر ما نقل عن الصحابة، فإنه لم ينقل عن أحد منهم أنه استتاب ساحراً، وعن عائشة رضي الله عنها (۵)، أن الساحرة سئلت أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم وهم متوافرون هل لها من توبة؟ فما افتأها أحد" (۶).

(۱) احكام القرآن للعثماني: ۱/۴۱، اقوال الفقهاء في السحر والساحر، وروح المعاني: ۱/۳۳۹، وتفسير المدارك: ۱/۶۱.

(۲) احكام القرآن للرازي: ۱/۶۱، ورد المختار: ۳/۳۲۳.

(۳) ذكره الباجي في المنتقى: ۲/۹۱۰، والاوجز: ۱۵/۹۸.

(۴) السنن الكبرى للبيهقي: ۸/۲۳۶، كتاب القسامة، باب قبول توبة الساحر.....، وفتح الباري: ۱۰/۲۰۲، والنووي مع مسلم: ۲/۲۲۱، كتاب السلام، باب السحر.

(۵) فتح القدیر: ۵/۳۳۳، كتاب السير، باب احكام المرتدين.

(۶) حاشية ابن عابدين: ۳/۳۲۳، مطلب في الساحر.....، باب المرتد.

(۷) انظر للقصة بتامها السنن الكبرى للبيهقي: ۸/۲۳۵-۲۳۶، كتاب القسامة، باب قبول توبة الساحر.....، رقم (۱۶۵۰۵)، وتفسير ابن جرير الطبري: ۱/۳۶۶-۳۶۷، سورة البقرة، الآية (۱۰۲).

(۸) المغني: ۹۳۶، والاوجز: ۱۵/۸۸.

لیکن تحقیقی قول ددې حضراتو په نزد هم دادي چې د جادوگر توبه مقبوله ده، لکه صاحب د مدارک علامه نسفی د پورتنی قول رد کوی او فرمائی چې د فرعون د جادوگرانو توبه قبوله کړې شوه، ددې وجې نه دا وینا غلطه ده چې د ساحر توبه مقبوله نه ده (۱).

او ابن قدامه فرمائی: ”والرواية الثانية: يستتاب، فان تاب قبلت توبته، لانه ليس باعظم من الشرك، والشرك يستتاب، ومعرفة السحر لا تمنع قبول توبته، فان الله تعالى قبل توبة سحرة فرعون، وجعلهم من اوليائه.....“ (۲). والله اعلم بالصواب

وَقَالَ ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنِي يُونُسُ بْنُ ابْنِ شَهَابٍ سُبُلَ أَعْلَى مِنْ سَحَرٍ مِنْ أَهْلِ الْعَهْدِ قَتْلَ قَالَ بَلَّغْنَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- قَدْ صَنِعَ لَهُ ذَلِكَ، فَلَمْ يَقْتُلْ مَنْ صَنَعَهُ، وَكَانَ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ.

رجال الحديث

① ابن وهب: دا مشهور محدث او فقيه ابو محمد عبد الله بن وهب قرشي مصري رحمة الله عليه دي. د دوی تفصیلی تذکره په کتاب العلم، ”باب من یرد الله به خیراً یفقهه...“ کښې تیرد شوي ده (۳).

② یونس: دا یونس بن یزید ایلی قرشي دي. د دوی مختصر تذکره په بدء الوحي کښې او تفصیلی تذکره په کتاب العلم کښې پورته ذکر شوي باب کښې راغلي ده (۴).

③ ابن شهاب: د ابن شهاب زهري حالات د ”بدء الوحي“ په دریم حدیث کښې تیر شوي دي (۵). د مذکوره تعلیق مقصد: په ترجمة الباب کښې مونږ دا وئیلې دي چې د اهل کتاب جادوگر په باره کښې د امام بخاري میلان دې طرفته دي چې دې به معاف کولې شي، ددې مدعا د ثابتولو دپاره امام بخاري د ابن شهاب دا تعلیق نقل کړې دي، ددې نه دا ثابتیږي چې ذمی ساحر به معاف کولې شي لکه څنگه چې نبی پاک معاف کړې وو. لیکن ددې استدلال جواب مونږ د احنافو وغیره له طرفه وړاندې ذکر کړې دي.

د مذکوره تعلیق تخريج: دا تعلیق ابن وهب په خپل ”جامع“ کښې موصولاً نقل کړې دي (۶).

① (تفسير المدارك: ۱/۶۱، البقرة، الآية: ۱۰۲، وروح المعاني: ۱/۳۳۹)۔

② (المغني: ۹۳۶/۱، والاوجز: ۱۵/۸۸، سحر سره متعلق نور بحث دپاره اوگوري، كشف الباري، كتاب الطب،

ص: ۹۶-۱۲۶)۔

③ (كشف الباري: ۳/۲۷۷)۔

④ (كشف الباري: ۱/۴۶۳، و: ۳/۲۸۲)۔

⑤ (كشف الباري: ۱/۳۲۶)۔

⑥ (تغليق التعليق: ۳/۴۸۵، والفتح: ۶/۲۷۷، والعمدة: ۱۵/۹۷، اردو تغليق: ۵/۴۵۸)۔

قوله: سئل: أعلی من سحر من أهل العهد قتل: د ابن شهاب نه تپوس او کړې شو چې په اهل عهد کښې که څوک جادو او کړې نو آیا د هغه سزا قتل ده؟

”سئل“ فعل ماضی مجهول دې او په اهل کښې همزه د استفهام دپاره ده او علی حرف جار دې چې د وجوب معنی ته متضمن او شامل دې (د)، یعنی که په اهل عهد او اهل کتاب کښې څوک جادو او کړې نو آیا د هغه قتلول واجب دی؟

قوله: قَالَ بَلَّغْنَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - قَدْ صَنَعَ لَهُ ذَلِكَ، فَلَمْ يَقْتُلْ مِنْ صَنَعِهِ، وَكَانَ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ. د ابن شهاب ورته په جواب کښې او وئیل چې مونږ ته دا خبره رارسیدلې ده چې په نبی باندې هم جادو کړې شوې وو لیکن هغوی جادوگر قتل نه کړو او هغه د اهل کتابو نه وو.

دلته امام بخاری ترجمه خود ذمی قائمه کړې ده او په سوال کښې ”اهل العهد“ اود ابن شهاب په جواب کښې ”اهل الکتاب“ ذکر دې، په دې کښې د اشکالی څه خبره نشته ځکه چې د اهل کتابو نه مراد هم اهل عهد دی، ورنه دا خو حریبان دی او قتل ئې واجب دی (د) دغه شان د عهد او د ذمه یو معنی ده او ددې نه د ابن شهاب د جواب وضاحت هم کیږي چې د اهل کتاب نه مراد هم اهل ذمه او اهل عهد دی (د).

ترجمة الباب سره د تعلیق مناسبت: ترجمة الباب سره د مذکوره تعلیق مناسبت او مطابقت هم واضح دې کوم چې د پورتنی تقریر نه ظاهر دې.

٣٠٠٤ (د) حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - سَجَرَ حَتَّى كَانَ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ أَنَّهُ صَنَعَ شَيْئًا وَلَمْ يَصْنَعْهُ. [٣٠٩٥، ٥٤٣٠، ٥٤٣٢، ٥٤٣٣، ٥٧١٦، ٦٠٢٨]

رجال الحديث

① محمد بن المثنى: دا ابو موسى محمد بن المثنى بن عبيد بصرى دې د دوى تذکره په کتاب الايمان، ”باب حلاوة الايمان“ کښې راغلې ده (د).

١ (عمدة القارى: ٩٧/١٥) -

٢ (شرح الكرمانى: ١٣٩/١٣) -

٣ (عمدة القارى: ٩٧/١٥، وفتح البارى: ٢٧٧/٦) -

٤ (قوله عن عائشة رضي الله عنها الحديث، أخرجه البخارى ايضا، كتاب بدء الخلق، باب صفة ابليس و جنوده، رقم (٣٢٦٨)، وكتاب الطب، باب السحر، رقم (٥٧٦٣) و (٥٧٦٥-٥٧٦٦)، وكتاب الادب، باب قول الله تعالى: (ان الله يامر بالعدل....)، رقم (٦٠٦٣)، وكتاب الدعوات، باب تكرير الدعاء، رقم (٦٣٩١)، ومسلم، كتاب السلام، باب السحر، رقم (٥٧٠٣-٥٧٠٤) -

٥ (كشف البارى: ٢٥/٢) -

- ۲) یحیی: دا امام یحیی بن سعید القطان دې د دوی تذکره په کتاب الایمان، "باب من الایمان ان يحب لایه....." کښې تیر شوې ده. (۱).
- ۳) هشام: دا هشام بن عروة بن الزبير قرشی دې.
- ۴) ابی: دا اب نه مراد حضرت عروة بن الزبير دې ددې دواړو حضراتو حالات اجمالاً په "بده الوحي" کښې او تفصیل سره په "کتاب الایمان" کښې تیر شوې دی. (۲).
- ۵) عائشة: دا ام المؤمنین حضرت عائشه صدیقه حالات په "بده الوحي" کښې تیر شوې دی. (۳).
- قوله: أن النبي صلى الله عليه وسلم سحر، حتى كان يخيل إليه أنه صنع شيئاً ولم يصنعه.: د حضرت عائشې رضی اللہ تعالیٰ عنہا نه روایت دې چې په نبی باندې جادو او کړې شو، چې د هغې په نتیجه کښې نبی ته دا وهم او گمان لاحق شو چې ما فلانې کار کړې دې او حقیقت کښې به ئې هغه کار نه وو کړې.
- په دې حدیث مبارک کښې حضرت عائشې هغه مشهور واقعي طرفته اشاره کړې ده په کومه واقعه کښې چې په نبی باندې د جادو کیدو او د هغې په نتیجه کښې د اثراتو د ظاهر کیدلو تذکره ده، دلته امام بخاری د هغې واقعي خه حصه نقل کړې ده او مکمل واقعه ئې په کتاب الطب (۴). کښې نقل کړې ده او ددې پوره تشریح هم هلته ذکر شوې ده. (۵).
- ترجمة الباب سره د حدیث مطابقت: ترجمة الباب سره د حدیث مناسبت دغه شان دې چې نبی ﷺ هغه یهودی لبيد بن الاعصم معاف کړې وو، باوجود ددې چې د هغه دا جرم ډیر لوټې او قبیح وو لکه څنگه چې اوس مونږ پورته ذکر کړل، دا خبره اگرچه د باب په حدیث شریف کښې نشته لیکن په تفصیلی واقعه او حدیث کښې موجود ده. (۶).
- وقال الحافظ رحمته الله: "واشار بالترجمة الى ما وقع في بقية القصة ان النبي ﷺ لما عوفي امر بالبشر فرددت، وقال: كرهت ان اثير على الناس شراً". لکه د کتاب الطب په روایت کښې راغلې دی:
- "يا رسول الله، أفلا؟ أي تنشرت" فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: أما والله، فقد شغاني وأكره أن اثير على أحد من الناس شراً" (۷).

(۱) کشف الباری: ۲/۲.

(۲) کشف الباری: ۲۹۱/۱، و: ۴۳۲/۲-۴۴۰.

(۳) کشف الباری: ۲۹۱/۱.

(۴) صحيح البخاری، کتاب الطب، باب السحر، رقم (۵۷۶۳).

(۵) کشف الباری، کتاب الطب، ص: ۱۰۴-۱۱۹.

(۶) فتح الباری: ۲۷۷/۶، وعمدة القاری: ۹۸/۱۵، وارشاد الساری: ۲۴۰/۵.

(۷) صحيح البخاری، کتاب الطب، باب هل يستخرج السحر؟ رقم (۵۷۶۵).

⑮ باب: مَا يُحَذِّرُ مِنَ الْغَدْرِ

د ترجمه الباب مقصد: امام بخاری دلتہ دا فرمائی چې که کافرانو سره مصالحت اوشی نو ددې مطلب دا نه دې چې مسلمانان بې فکره او د دشمن له طرفه غافل شی، بلکه بیدار اوسیدل پکار دی، کافران خلق دی، معلومه نه ده چې څه وخت وعده خلافی کوی او صلح ماته کړی او د عالمی حربی قوانینو خلاف ورزی او کړی او حمله آور شی، ددې وجې نه غافله کیدل صحیح نه دی بلکه هوښیار او بیدار اوسیدل پکار دی.

قوله: وقوله تعالى: وان يريدوا ان يخذعوك فان حسبك الله: الآية/ الانفال: ٢٢
او د الله تعالی قول دې چې که دا کافران او مشرکان تاسو ته د هوکه درکول او غواړی نو الله تعالی ستاسو دپاره کافی دې.

وقوله تعالى..... ددې عطف په وړاندې لفظ غدر باندې دې، کلمه د حسب د سین مهمله سکون سره ده، چې ددې معنی ده کافی کیدل (۱).

مطلب دادې چې که کافران او مشرکان تاسو سره صلح او کړی او دې صلح کولو سره د دوی نیت د هوکه کول وی، تیاری کول وی، مزید قوت او طاقت حاصلول وی او بیا تاسو ته مقابله ته راتلل وی نو په دې کښې د ویریدلو هیڅ خبره نشته، ځکه چې د الله تعالی قهار او جبار ذات یواځې ستاسو دپاره کافی دې (۲).

زمونږ په وړاندې چې کومه نسخه موجود ده نو په هغې کښې د آیت کریمه صرف هم دا حصه نقل کړې شوې ده کومه چې د ابوذر نسخه ده، او په ابن عساکر کښې د (عزیز حکیم) پورې ایتونه نقل کړې شوې دي (۳). ددې نسخې په اعتبار سره پوره آیتونه د ترجمې سره لاندې ذکر کولې شی.

(وان يريدوا ان يخذعوك فان حسبك الله هو الذي أيدك بنصرة وبالمؤمنين، وألف بين قلوبهم لو أنفقت مافي الارض جميعاً ما ألفت بين قلوبهم ولكن الله ألف بينهم انه عزيز حكيم) (۴).
”او که دا کافران او مشرکان تاسو ته د هوکه درکول او غواړی نو الله تعالی ستاسو دپاره کافی دې، دا هغه ذات دې چې د خپل نصرت او د مؤمنانو په ذریعې سره ئې تاسو ته قوت درکړو او د مؤمنانو زړونه ئې پیوست کړل، که د زمکې په مخ باندې څومره څه دی دا ټول هم

(۱) فتح الباری: ۲۷۷/۶، وقال العيني انه معطوف على ما يحذر..... "انظر عمدة القاري: ۹۹: ۱۵] علامه آلوسی رحمه الله د کلمه حسب "متعلق ليکي: "فحسب صفة مشبهة بمعنى اسم الفاعل، والكاف في محل الجر. كما نص عليه غير واحد.... وقال الزجاج: انه اسم فعل بمعنى كفاك، والكاف في محل نصب "روح المعاني: ۶/ ۲۸)
(۲) ارشاد الساري: ۵/ ۲۴۱-
(۳) پورته حواله، وعمدة القاري: ۱۵/ ۹۹، وروح المعاني: ۶/ ۲۸، والقرطبي: ۸/ ۴۲-
(۴) الانفال: ۶۲- ۶۳-

تاسو خرچ کړې وې نو د دوی زړونه به تاسو ته و و جوړ کړې، لیکن الله تعالی هغه ذات دې چا چې د دوی مینځ کښې جوړ او موافقت پیدا کړو، بیشکه هغه غالب او حکمت والا دې.“
پورتنی آیت کریمه کښې دې خبرې طرفته اشاره ده چې که مسلمانانو ته دا معلومه شی چې دشمن چې کومه د صلحې خبره کوی نو دا سراسر د هوکې بازی ده او مکر و فریب دې، د تیاری کولو مهلت غواړي نو بیا هم ددې کافرانو خبره قبلول پکار دی، په دې کښې څه ویره وغیره محسوسول پکار نه دی نو ددې وجې نه صلح دې او کړې شی او وړاندې معامله دې الله تعالی ته او سپارلې شی، د هغه په ذات باندې دې یقین او کړې شی لیکن ددې کافرانو له طرفه غافلې کیدل او بې پرواه کیدل هم پکار نه دی،

حافظ ابن حجر لیکي: ”وفي هذه الآية إشارة إلى أن احتمال طلب العدو للصلح خديعة لا ينعم من الاجابة إذا ظهر للمسلمين بل يعزم ويتوكل على الله“ (۱).

علامه مهلب فرمائي چې ددې نه علاوه په دې آیت کریمه کښې ددې خبرې دلالت هم دې چې نبی ﷺ ټول ژوند مبارک کښې د مکر و فریب نه محفوظ وو، ددې خبرې ضمانت په دې آیت کریمه کښې ورکړې شوې دې، دا خصوصیت د نبی ﷺ نه علاوه هیچاته حاصل نه دې ځکه چې د الله تعالی ارشاد دې چې الله تعالی به تاسو خلق محفوظ ساتي (۲)، ددې وجې نه د امت اجماع ده چې نبی معصوم فی الرساله دې او د خلقو د مکر و فریب او د هوکې بازی نه هم محفوظ پاتې شو (۳).

د ترجمه الباب او آیت کریمه مینځ کښې مناسبت: امام بخاری په ترجمه الباب کښې دا وئيلي وو چې کفارو سره د مصلحت کولو باوجود بیدار اوسیدل پکار دی او د آیت کریمه مفهوم دا وو چې که د کافرانو اراده د وعده خلافی کولو وی نو په دې کښې د پریشانی هېڅ خبره نشته، نو اوس د آیت کریمه او د ترجمه الباب مینځ کښې مناسبت دا شو چې الله تعالی باندې توکل کولو او یقین کولو سره دې مصلحت او کړې شی ځکه چې هغه ذات هرڅه کولې شی او د کفارو د مکر و فریب نه غافلې کیدل هم پکار نه دی بلکه بیدار اوسیدل پکار دی، دې سره سره د اسبابو انتظام هم کول پکار دی. دا د ټولو نه غوره طریقه ده، والله اعلم بالصواب

۳۰۰۵ (۱) حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْعَلَاءِ بْنِ زُبَيْرٍ قَالَ سَمِعْتُ بُسْرَةَ بْنَ عُبَيْدِ اللَّهِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا إِدْرِيسَ قَالَ سَمِعْتُ عَوْفَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ -

(۱) فتح الباری: ۶/۲۷۷ -

(۲) قال الله عز وجل: (والله يعصمك من الناس) (المائدة/۶۷) -

(۳) شرح ابن بطال: ۵/۳۵۷ -

(۴) قوله: عوف بن مالك رضي الله عنه: الحديث، أخرجه أبو داود، كتاب الادب، باب ما جاء في المزاح، رقم (۵۰۰۰)، وابن ماجه، كتاب الفتن، باب اشراط الساعة، رقم (۴۰۴۲)، و باب الملاحم، رقم (۴۰۹۵) -

صلى الله عليه وسلم - فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ، وَهُوَ فِي قَبَّةٍ مِنْ أَدَمٍ فَقَالَ «اعْدُدْ سِتًّا بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ، مَوْتِي، ثُمَّ فَتَحَ بَيْتَ الْمُقَدِّسِ، ثُمَّ مَوْتَانِ يَأْخُذُ فِيكُمْ كَقُعَاصِ الْغَنَمِ، ثُمَّ اسْتِفَاضَةُ الْمَالِ حَتَّى يُعْطَى الرَّجُلُ مِائَةَ دِينَارٍ فَيُظْلَمُ سَاطِطًا، ثُمَّ فِتْنَةٌ لَا يَبْقَى بَيْتٌ مِنَ الْعَرَبِ إِلَّا دَخَلَتْهُ، ثُمَّ هَذَنَةٌ تَكُونُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ بَنِي الْأَصْفَرِ فَيَغْدِرُونَ، فَيَأْتُونَكُمْ تَحْتَ ثَمَانِينَ غَايَةً، تَحْتَ كُلِّ غَايَةٍ اثْنَا عَشَرَ أَلْفًا».

رجال الحديث

① الحميدي: دا ابو بكر عبدالله بن زبير حميدي مكي دي. دوى تذكره د "بده الوحي" د اولنى حديث په ضمن كښې راغلي ده (۱).

② الوليد بن مسلم: دا ابو العباس الوليد بن مسلم قرشي دي (۲).

③ عبدالله بن العلاء بن زبر: دا ابو عبدالرحمن يا ابو زبر (۳). عبدالله بن العلاء بن زبر بن عطار د بن عمرو ربعي، شامي دمشقي دي. دا د مشهور محدث ابراهيم بن عبدالله بن العلاء والد صاحب او د بشر بن العلاء ورور دي (۴).

د دوى د خوئي ابراهيم د وينا مطابق دوى په ۷۵ هجري كښې پيدا شو (۵).

دي د بسر بن عبيد الله، يزيد بن ثور، ربيعه بن مرثد، سالم بن عبدالله بن عمر، ضحاک بن عبدالرحمن، عطيه بن قيس، عمر بن عبدالعزيز، قاسم بن محمد بن ابى بكر، قاسم بن عبدالرحمن، مكحول او د نافع د ابن عمر د مولى، نه علاوه د نورو گڼو حضراتو نه د حديث روايت كوي.

او د دوى نه د دوى خوئي ابراهيم، زيد بن حباب، عمر بن ابى سلمه، الوليد بن مسلم، محمد بن شعيب، مروان بن محمد، شبابه بن سوار، ابو مسهر او ابو المغيرة وغيره د حديث روايت كوي (۶). امام احمد بن حنبل فرمائي، "مقارب الحديث" (۷).

(۱) كشف الباري: ۱/۲۳۷.

(۲) د دوى د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب مواقيت الصلاة، باب وقت المغرب.

(۳) قوله: زبر: يفتح الزاري المعجمة وسكون الموحدة. انظر التقريب: ۱/۵۲۱، رقم (۳۵۳۲)، واكمال ابن ماكولا: ۴/۱۶۲، وشرح القسطلاني: ۵/۲۴۱.

(۴) تهذيب الكمال: ۱۵/۴۰۵-۴۰۶، والاكمال لمغلطاي: ۸/۱۰۹، رقم (۳۱۱۰).

(۵) تهذيب الكمال: ۱۵/۴۱۰، وسير اعلام النبلاء: ۷/۳۵۱، والاكمال لمغلطاي: ۸/۱۰۹، وكتاب الثقات لابن حبان: ۷/۲۷.

(۶) د دوى استاذانو او شاگردانو دپاره اوگوري: تهذيب الكمال: ۱۵/۴۰۶-۴۰۷.

(۷) تهذيب الكمال: ۱۵/۴۰۷، وتهذيب التهذيب: ۵/۳۵۰، وسير اعلام النبلاء: ۷/۳۵۰.

عباس دوری، ابوبکر بن ابی خيثمه، عثمان بن سعيد دارمی او معاویه بن صالح د امام یحیی بن معین نه نقل کړې دی چې هغوی فرمائی، "ثقة" (۱).
دغه شان امام ابو داؤد فرمائی، "ثقة" (۲).
امام نسائی فرمائی، "لیس به پاس" (۳).
ابن سعد د دوی شمار په شامیانو کښې "الطبقة الخامسة" کښې کړې دي، دغه شان فرمائی، "كان ثقة إن شاء الله" (۴).
عبد الرحمن بن ابراهيم د حیم فرمائی، "كان ثقة، وكان من اشراف الهدى" (۵).
هشام بن عمار فرمائی: "بخ، ثقة، سمع من القاسم أبي عبد الرحمن وعمر بن عبد العزيز، هو قديم" (۶).
امام ابو حاتم فرمائی، "يكتب حديثه" (۷).
مزید فرمائی، "هو أحب إلي من أبي معيد حفص بن غيلان" (۸).
امام دارقطنی فرمائی، "ثقة يجمع حديثه" (۹).
ابن حبان د دوی ذکر په کتاب الثقات کښې کړې دي (۱۰).
امام عجلې او حافظ ابن عبد الرحيم هم دوی ته ثقه وئيلي دي (۱۱).
او ابن شاهين هم دي په "الثقات" کښې ذکر کړې دي (۱۲).
د حضرت عبدالله بن العلاء انتقال په ۱۲۴ یا ۱۲۵ هجري کښې او شو، سيعد بن عبد العزيز د

- ۱ (تهذيب الكمال: ۴۰۷/۱۵-۴۰۸، وتهذيب التهذيب: ۳۵۰/۵، وتاريخ بغداد: ۱۰/ وتاريخ عثمان بن سعيد الدارمي: ۱۵۳، رقم (۵۳۴)) _
- ۲ (تهذيب الكمال: ۴۰۸/۱۵، وتاريخ بغداد: ۱۷/۱۰، وسير اعلام النبلاء: ۳۵۱/۷) _
- ۳ (تهذيب الكمال: ۴۰۸/۱۵، والاكمال للمغلطاي: ۱۰۹/۸) _
- ۴ (الطبقات الكبرى لابن سعد: ۴۶۸/۷) _
- ۵ (تهذيب الكمال: ۴۰۸/۱۵، وتهذيب التهذيب: ۳۵۰/۵، وسير اعلام النبلاء: ۳۵۰/۷، والمعرفة والتاريخ للفوسى: ۱۰/۱، وفي سنة خمس وستين ومائة) _
- ۶ (المعرفة والتاريخ للفوسى: ۲۲۸/۲، رقم (۲۳۱)، وتهذيب الكمال: ۴۰۹/۱۵) _
- ۷ (تهذيب الكمال: ۴۰۹/۱۵، وتهذيب التهذيب: ۳۵۰/۵) _
- ۸ (الجرح والتعديل: ۱۵۸/۵، رقم (۵۹۲)، بورتته حواله جات) _
- ۹ (تهذيب الكمال: ۴۰۹/۱۵، وسير اعلام النبلاء: ۳۵۱/۷، وتهذيب التهذيب: ۳۵۱/۵) _
- ۱۰ (كتاب الثقات: ۲۷/۷) _
- ۱۱ (الاكمال للمغلطاي: ۱۰۹/۸، وتهذيب التهذيب: ۳۵۱/۵) _
- ۱۲ (بورتته حواله جات) _

دوی د جنازې مونځ او کړو، دوفا تپه وخت د دوی عمر ۸۵ کاله وو. (رحمه الله تعالى رحمة واسعة)
 خبردارې: حضرت عبدالله بن العلاء بن زبیر متفق علیه ثقہ دې، لیکن معلومه نه ده څه وجه
 اوشوه چې ابن حزم ظاهري د خپل عادت موافق ده ته ضعیف وئیلې دې او ددې نسبت ئې د
 امام یحیی بن معین طرفته کړې دې چې هغوی ده ته ضعیف وئیلې دې. (۱) لیکن ددې جرح
 هیڅ اعتبار نشته، ددې وجوهات لاندې ذکر کولې شی.
 اول دا چې دا جرح مبهمه ده، ابن حزم ددې وجې نه ده بیان کړې چې دې ولې ضعیف دې او
 مبهم جرح معتبر نه وی. (۲)

دویم دا چې د یحیی ابن معین طرفته کوم نسبت کړې شوې دې نو دا په ظاهره صحیح نه
 معلومېږي ځکه چې وړاندې مونږ ذکر کړې دی چې امام ابن معین دوی ته ثقہ وئیلې دي (۳)
 دریم دا چې د امام مسلم نه علاوه نورو پنځو امامانو د دوی روایات قبول کړې دي، دا هم
 ددې خبرې دلیل دې چې دې ضعیف نه دي. (۴)

④ بسو بن عبدالله: دا جلیل القدر فقیه بسو بن عبدالله حضرمی شامی دې. (۵)
 دې د واثله بن الاسقع، عمرو بن عبسه، رویف بن ثابت، سنان بن عرفه، عبدالله بن محیریز او
 د ابو ادريس خولانی رضی الله عنهم نه روایت کوی. او د دوی نه چې څوک روایت کوی نو په
 هغوی کښې عبدالله بن العلاء بن زبیر، عبد الرحمن بن یزید بن جابر، زید بن واقد، داؤد بن
 عمرو الاودی رحمهم الله وغیره شامل دي. (۶)
 امام عجلې او امام نسائی فرمائی، "ثقة" (۷).

(۱) پورته حواله جات، وتهذيب الكمال: ۱۵/۴۱۰، و کتاب الثقات: ۲۷/۷.

(۲) المحلی لابن حزم: ۱۰۵/۶، کتاب الاطعمة، حکم استعمال اوانی اهل کتاب، رقم (۱۰۲۴)، ومیزان الاعتدال
 للذهبي: ۲/۴۶۴، رقم (۴۴۶۶)، وتهذيب التهذيب: ۳۵۱/۵.

(۳) قواعد فی علوم الحديث للعثماني: ۱۷۴-۱۷۵، و: ۲۶۸، وشرح نخبة الفكر: ۱۳۶، والجرح مقدم علی
 التعديل..... قال الحافظ: له فی البخاری حدیثان، احدهما: فی تفسیر الاعراف بمتابعة زید بن واقد، كلاهما عن
 بسرين عبيدالله، والآخر: فی الجزية، وروی له اصحاب السنن. هدی الساری: ۵۸۳، حرف العين، الفصل التاسع
 سياق اسماء من طعن.....).

(۴) قال ابن حجر رحمه الله فی التهذيب (۳۵۱/۵): قال شيخنا فی شرح الترمذی: لم اجد ذلك عن ابن معین
 بعد البحث، ووقع فی المحلی لابن حزم فی الکلام علی حدیث ابی ثعلبة فی آنية اهل کتاب: عبد الله بن
 العلاء ليس بالمشهور (انظر المحلی: ۱۰۵/۶)، وهو متعقب بما تقدم).

(۵) میزان الاعتدال: ۲/۴۶۴، وسیر اعلام النبلاء: ۴/۵۹۲، والاکمال لمغلطای: ۲/۳۸۴.

(۶) تهذيب الكمال: ۴/۷۵، وسیر اعلام النبلاء: ۴/۵۹۲، والاکمال لمغلطای: ۲/۳۸۴.

(۷) د استادانو او شاگردانو دپاره ئې اوگوری، تهذيب الكمال: ۴/۷۶.

(۸) پورته حواله، وتهذيب التهذيب: ۱/۴۳۸.

ابو مسهر فرمائی، "احفظ اصحاب ابی ادریس عنه: بسم بن عبد الله" (۱).
 مروان بن محمد فرمائی "هو من كبار اهل المسجد، ثقة من اهل العلم" (۲).
 حافظ ذهبی فرمائی: "ثقة....." وکان من علماء دمشق (۳).
 د حدیث اصولو سره د دوی خومره شوق وو او ددې دپاره به ئې خومره محنت کوو نو ددې
 اندازه د دوی ددې قول نه کیږي، فرمائی:
 "انه كان ليبلغني الحديث في البصر، فارحل فيه مسيرة ايام" (۴).
 چې "کله به ماته معلومه شوه چې په فلانی ښار کښې حدیث موجود دې نو ما به د هغې د
 حصول دپاره خو ورځې سفر کوو"
 د اصول سته اصحابو د دوی روایات اخستلي دي (۵).
 تقریباً په ۱۱۰ هجری کښې د اموی خلیفه هشام بن عبد الملك په خلافت کښې دوی وفات
 شو (۶). رحمه الله رحمة واسعة
 خبرداري: ابن حبان د دوی ترجمه په کتاب الثقات کښې درج کړې ده لیکن دې ئې تبع تابعی
 بنودلې دي (۷). دا خبره په ظاهره صحیح نه ده ځکه چې دې د واثله بن اسقع او د عمرو بن
 عبسه په شان جلیل القدر صحابه کرامو (رضی الله عنهما) نه روایت کوي، ددې وجې نه به ئې دوی لیدلې
 هم وي، ملاقات به ئې هم ورسره کړې وي، لهذا دې تبع تابعی نه دې بلکه تابعی دي.
 ⑤ ابو ادریس دا مشهور بزرگ تابعی ابو ادریس عائد الله بن عبد الله خولانی دې د دوی
 حالات په کتاب الايمان، "باب بلا ترجمة" کښې راغلي دي (۸).
 ⑥ عوف بن مالک دا مشهور صحابی حضرت عوف بن مالک الاشجعي دي (۹).
 د حدیث شریف سند سره متعلق یوه فائده: زمونږ د نظر وړاندې چې کوم حدیث دې هغې
 کښې عبد الله بن العلاء ددې خبرې وضاحت کړې دې چې هغوی دا حدیث براه راست د بسر
 بن عبد الله نه اوریدلې دي، "قال: سمعت بسم بن عبد الله....." او هم دا روایت امام طبرانی هم

(۱) پورته حواله جات، وسیر اعلام النبلاء: ۵۹۲/۴، والثقات لابن حبان: ۱۰۹/۶. _

(۲) تهذيب الكمال: ۷۶/۴، وتهذيب التهذيب: ۴۳۸/۱. _

(۳) سير اعلام النبلاء: ۷۷/۴. _

(۴) تهذيب الكمال: ۷۷/۴. _

(۵) تهذيب الكمال: ۷۷/۴، وتهذيب التهذيب: ۴۳۸/۱، وسير اعلام النبلاء: ۵۹۲/۴. _

(۶) سير اعلام النبلاء: ۵۹۲/۴. _

(۷) كتاب الثقات للتميمي: ۱۰۹/۶. _

(۸) كشف الباري: ۴۸/۲. _

(۹) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، كتاب الصلح، باب الصلح مع المشرکين. _

روایت کړې دې، په هغې کښې ددې دواړو مینځ کښې د یو دریم راوی زید بن واقد تذکره هم ده (۱). د حافظ صاحب د تصریح مطابق د طبرانی دا روایت د اصول حدیث په اصطلاح کښې د "المزید فی متصل الاسناد" (۲) د "المزید فی متصل الاسناد" (۳) د

"والمزید فی متصل الاسناد: ما زید فی اثناء اسناده راو، ومن لم یزده اتقن من زاده، وشرطه ان یقع التصحیح بالسامع فی موضع الریادة فی روایة من لم یزدها، والا ترجحت الریادة، وکان الخبر المزید فیہ مدلسا او منقطعاً او مرسلًا خفیاً". وانظر ایضاً شرح النخبة: ۹۲، ثم المخالفة..... (۴) د قبیل نه دې او دې سره د صحیح بخاری د روایت په صحت کښې څه فرق نه پریوځي، ځکه چې اول په دې روایت کښې د سماع وضاحت دې.

او دویم دا چې امام ابوداؤد (۵)، ابن ماجه (۶) او اسماعیلی (۷) رحمهم الله هم دا حدیث مختلفو ترکیبونو سره نقل کړې دې او په هیڅ یو طریق کښې هم زید بن واقد نشته (۸).

قوله: قال: أتیت النبی صلی الله علیه وسلم فی غزوة تبوک: حضرت عوف بن مالک فرمائی چې زه د نبی په خدمت کښې حاضر شوم، کوم وخت چې دوی مبارک په غزوة تبوک کښې وو.

د تبوک غزوه چونکه په نهمه هجری کښې شوې وه نو صحابی چې کومه خپله واقعه نقل کړې ده هغه د نهمې هجری ده (۹) د مستدرک حاکم په روایت کښې ددې بیان هم دې چې دا واقعه د سحر د وخت ده (۱۰).

قوله: وهو فی قبة من آدم: او نبی ﷺ په یو قبه کښې آرام فرما وو چې د څرمن نه جوړه شوې وه.

قبة د قاف پیش سره او باء مشدده مفتوحه سره، ددې اطلاق په هر هغه څیز باندې کیږي کوم چې گول جوړ شوې وي، لکه گنبد، خیمه وغیره لیکن دلته هغه خیمه مراد ده کومه چې د

(۱) رواه الطبرانی فی المعجم الکبیر: ۱۸/۴۰-۴۱، ابو ادریس الخولانی عن عوف، رقم (۷۰)۔

(۲) قال العلامة العثماني رحمه الله فی قواعد علوم الحدیث (۴۵)۔

(۳) انظر سنن ابی داود، کتاب الادب، باب ما جاء فی المزاح، رقم (۵۰۰)۔

(۴) انظر سنن ابن ماجه، کتاب الفتن، باب اشراط الساعة، رقم (۴۰۴۲)۔

(۵) السنن الکبری للبيهقي: ۹۳۷۴، رقم (۱۸۸۱۷)، کتاب الجزية، باب مهادة الائمة بعد رسول.....۔

(۶) عمدة القاری: ۱۵، وفتح الباری: ۲۷۷/۶۔

(۷) عمدة القاری: ۱۵/۹۹، وفتح الباری، کتاب المغازی، باب غزوة تبوک: (۶۳۲)۔

(۸) قال: دخلت علی رسول الله ﷺ فی غزوة تبوک فی آخر السحر..... "انظر المستدرک للحاکم: ۳/۶۳۰،

کتاب معرفة الصحابة، ذکر مناقب عوف بن مالک..... رقم (۶۳۲۴)، وايضا انظر معرفة الصحابة، للاصبهانی: ۴/ باب من اسمه: عوف)۔

پورته نه گول وی ددې جمع قباب او قبیة ده^(۱).

د سنن ابی داؤد په روایت کښې ددې نه پس دا اضافه هم ده

قوله: "فسلمت، فرد، وقال: ادخل. فقلت: أکملی یا رسول الله! قال: کلک،

فدخلت":^(۲) "نو ما سلام او کړو، هغوی جواب راکړو او وی فرمائیل چې دننه راشه! ما

او وئیل چې دننه پوره پورته درشم؟ نبی ﷺ او فرمائیل، بالکل! نو زه دننه داخل شوم."

مطلب دادې چې خیمه چونکې وړه وه، گنجائش کم وو، ددې وجې نه حضرت عوف بن مالک

د گپ شپ په طریقې سره تپوس او کړو چې مکمل داخل شم؟ نبی ﷺ د هغوی په گپ باندې

پوهه شو ددې وجې نه ئې جواب هم د هغوی په انداز کښې ورکړو چې او پوره پوره داخل

شه، د خیمې د وړوگوالی پرواه مه کوه.

لکه عثمان بن ابو العاتکه^(۳) د حدیث راوی، فرمائی: "إنما قال: ادخل کل، من صغر القبة"^(۴).

ددې طریق نه دا هم معلومه شوه چې صحابه کرامو رضی الله عنہم به نبی ﷺ سره مزاح کوو یعنی گپ

شپ به ئې لگوو^(۵).

قوله: فقال: اعدد ستا بین یدی الساعة موتی ثم فتح بیت المقدس: نو نبی

تپوس او کړو، د قیامت دپاره شپږ څیزونه شمار کړه (یو) زما وفات، (دویم) د بیت المقدس

فتح. مطلب دادې چې ددې شپږو کارونو د واقع کیدو نه مخکښې به قیامت نه قائمیږي،

لکه په حدیث کښې د "ستا" نه مراد "ست علامات لقیام القيامة" دی^(۶).

په دې کښې اولنئ نشانی په ۱۱ هجری ربیع الاول کښې ثابته وه، کله چې نبی ﷺ ددې دنیا

نه تشریف فرما شو. او دویمه نشانی د حضرت عمر بن الخطاب رضی الله عنہ په زمانه کښې

پنځلسمه هجری کښې ثابته شوه چې هغه کال باندې بیت المقدس فتح شوه^(۷).

قوله: ثم موتان یاخذ فیکم کقعاص الغنم: بیا به په کثرت او ډیروالی سره مرگونه

په تاسو کښې داسې خوریرې لکه څنگه چې په گډو چیلو کښې یو خاص بیماری خوریرې

او ټول څاروی اچانگ هلاک کړي.

د موتان ضبط: موتان د میم پیش او د واو سکون سره دې، او بعضې حضراتو دا وئیلې دی

چې پیش سره د بنو تمیم لغت دې، د دوی نه علاوه د عربو نور قبائل ئې فتحې سره لولی،

^(۱) عمدة القاری: ۹۹/۱۵ _

^(۲) سنن ابی داود، کتاب الادب، باب ما جاء فی المزاح، رقم (۵۰۰۰) _

^(۳) حواله بالا، رقم (۵۰۰۱)، وفتح الباری: ۶/۲۷۷-۲۷۸ _

^(۴) بذل المجهود: ۴۰۱/۱۳، رقم (۵۰۰۰) _

^(۵) عمدة القاری: ۹۹/۱۵، وفتح الباری: ۶/۲۷۸ _

^(۶) البداية والنهاية: ۵۵/۷، فتح بیت المقدس علی یدی عمر بن الخطاب، والکامل لابن الاثیر: ۲/۳۴۷ _

لکه بليد احمق او بيوقوف ته "موتان القلب" هم وئيلې شي ليکن د ميم مضموم کيدل غوره او مشهور دی. (۱)

بيا ابن جوزی فرمائی چې بعضې محدثين حضرات ددې لفظ په ادا کولو کښې غلطی کوي، ځکه چې دا هغوی د ميم او د واو ضمې سره لولی او دا بالکل غلط دي، موتان خو هغه زمکې ته وئيلې شي په کومه زمکه باندې چې زمينداري نه کيږي او د هغې څه انتظام وغيره نه کيږي (۲) او د ابن السکن په روايت کښې دا لفظ تشبيه سره "موتتان" دي، چې ددې لفظ دلته هيڅ موقع او محل نشته. (۳)

د موتان معنی: قزاز او خطابی ددې کلمې معنی "مرگ" بيان کړې ده، او ابن الاثير بنزري وغيره ددې معنی "الموت الكثير الوقوع" بنودلې ده. (۴) يعنی کثرت سره د مرگونو واقع کيدل چې ددې تعبير ويا، سره کيدې شي ځکه چې وبائی مرضونو مثلاً طاعون وغيره سره هم مرگونه کثرت سره واقع کيږي.

د قعاص ضبط: قعاص د قاف پيش او د عين مهمله فتحې سره دي، هم دا راښيي د لغت او د حديث د جمهورو امامانو مثلاً د ابن قرقول، ابن الاثير وغيره هم ده (۵)، ليکن حافظ ابن حجر دا عقاص ليکلي دي يعنی عين ئې په قاف باندې مقدم بنودلې دي (۶)، چې صحيح نه دي او دا د حافظ صاحب وهم دي. (۷)

د قعاص معنی: قعاص يو قسم بيماری ده چې ځناورو ته لگي، چې ددې په نتيجه کښې د دوی د پوزې نه يو توره ماده راوځي او فوری مرگ واقع کيږي. دا د القعص نه مشتق دي چې ددې معنی ده فوری مرگ، "يقال: قعصته واقعصته: اذا قتلتها سريعاً" (۸) او د ابن فارس وينا داده

(۱) عمدة القاری: ۹۹/۱۵، وارشاد الساری: ۲۴۱/۵، وفتح الباری: ۲۷۸/۶.

(۲) عمدة القاری: ۹۹/۱۵، وفتح الباری: ۲۷۸/۶، وکشف المشکل: ۱۱۰۸/۱، مسند عوف بن مالک، رقم (۲۳۴۲)، ومشارق الانوار: ۱/۳۹۰، الميم مع الواو.

(۳) عمدة القاری: ۱۰۰/۱۵، وارشاد الساری: ۲۴۱/۵.

(۴) النهاية فی غريب الحديث والاثار: ۴/۳۷۰، باب الميم مع الواو، وعمدة القاری: ۹۹/۱۵، وفتح الباری: ۲۷۸/۶، وارشاد الساری: ۲۴۱/۵، واعلام الحديث للخطابی: ۱۴۶۸/۲.

(۵) النهاية لابن الاثير: ۸۸/۴، وعمدة القاری: ۱۰۰/۱۵، والقاموس الوحيد، مادة: قعص.

(۶) فتح الباری: ۲۷۸/۶.

(۷) فی هامش طبعة بولاق: کذا فی نسخ الشارح التي بايدينا، والذي فی نسخ البخاری بتقديم القاف علی العين. وبه ضبط القسطلانی، وهو فی کتب اللغة، والمتعين من قول ابی عبيد، ومنه اخذ: الاقصاص. (انظر تعليقات محب الخطيب علی فتح الباری: ۲۷۸/۶).

(۸) النهاية: ۸۸/۴، وفتح الباری: ۲۷۸/۶، وعمدة القاری: ۱۰۰/۱۵، وارشاد الساری: ۲۴۱/۵.

چې دا د سینې بیماری ده، ددې دوجې نه دومره قدرې تکلیف وی چې گویا خټ ماتېږي. (۱)
د ټم مواتان مطلب: په دې جمله کې د قیامت په نژدې علامتونو کې دریم نمبر علامت ښودلې شوې دي، چې دومره کثرت سره به مرگونه وی لکه څنگه چې وبا خوره شی او څنگه چې په ځناورو کې وبا خورېږي او فوراً په سوونو ځناور هلاک کړي، دغه شان پورته ذکر کړې شوې وبا به هم په زرگونو لکونو خلق فنا کړي. د شارحینو وینا ده چې دا نشانی هم د طاعون عمواس په شکل کې واقع شوې ده، چې په دې کې په دریو ورځو کې تقریباً اویا زره کسان وفات شوې وو چې په کې صحابه کرام رضی الله عنهم هم شامل وو، دا طاعون د بیت المقدس د فتح کولو نه پس د حضرت عمر فاروق په زمانه کې په ۱۷ هجری کې خور شوې وو. (۲)

لکه په خپله د حدیث راوی حضرت عوف بن مالک نه امام حاکم (۳) نقل کړې دی چې د پورتنی ذکر شوی طاعون مصداق طاعون عمواس دي، دغه شان د حافظ ابن کثیر (۴) او د علامه تورپشتی رائي هم داده. (۵)

قوله: ثم استفاضة المال (۱) حتى يعطى الرجل مائة دينار فيظل ساخطاً:
 بیا به د مال کثرت وی، تردې چې که چاته سل دیناره هم ورکړې شی نو بیا به هم هغه خفه وی. په دې جمله کې د قیامت د نژدیکت څلورمه نشانی بیان شوې ده چې یو زمانه به داسې راشي چې مال به ډیر زیات وی، تقریباً هر سړي به مالدار وی، ددې وجې نه که چاته سل دیناره هم ورکړې شی (چې یو لوڼې رقم شمارلې شی) او ورته اووئیلې شی چې دا دینارونه واخله نو هغه به خفه شی چې دا دومره معمولی رقم ولې راکوي؟ او دې لره به سپک گنړي. (۲)
 دا څلورمه نښه د خلیفه ثالث حضرت عثمان بن عفان په دور خلافت کې او موندلې شوه چې کله د فتوحاتو ډیروالې شو او مسلمانانو د کفر لوڼې لوڼې مرکزونه فتح کړل نو مال و دولت ډیر زیات شو او تقریباً هر سړي مالدار او دولت مند شو. (۳)

(۱) عمدة القاری: ۱۵/۱۰۰، وفتح الباری: ۶/۲۷۸.

(۲) پورته حواله جات، وارشاد الساری: ۵/۲۴۱، والبداية والنهاية: ۷/۷۸، شی من اخبار طاعون عمواس.

(۳) المستدرک للحاکم: ۴/۴۶۹، کتاب الفتن والملاحم، رقم (۸۳۰۳).

(۴) البداية والنهاية: ۶/۲۲۶، فصل فی ترتیب الاخبار بالغيوب.....

(۵) کتاب الميسر: ۴/۱۱۵۱، رقم (۴۰۵۲)، باب الملاحم من کتاب الفتن، وشرح الطیبی: ۱۰/۷۷، وفيضان

القدر للمناوی، رقم (۴۶۵۷).

(۱) قال العلامة الخطابي رحمه الله: استفاضة المال: كثرته، واصله التفرق والانتشار، يقال: فاض الماء، وفاض الحديث: اذا انتشر. اعلام الحديث: ۲/۱۴۶۹.

(۲) عمدة القاری: ۱۵/۱۰۰، وشرح القسطلانی: ۵/۲۴۱.

(۳) پورته حواله جات، ۶/۲۷۸.

قوله: ثم فتنه لا يبقى بيت من العرب إلا دخلته: بیا به فتنه خوره شی، د عربو هیڅ یو کور به پاتې نه شی چې په هغې کښې دا فتنه داخله نه شی. په دې جمله کښې د پنځمې نښې بیان دې چې بیا به یو داسې زمانه راشي چې هر طرفته به فتنه وي، لوټ مار به وي، د خلقو د مال و جان ضمانت به نه وي، د عربو هیڅ یو کور او هیڅ یو ځای به ددې فتنې نه محفوظ پاتې نه شی او هر سرې به ددې نه متاثره وي. ددې علامت ابتداء د حضرت عثمان د شهادت نه اوشوه چې د هغوی د شهادت نه پس فتنې خورې شو او ترننه پورې جاری دی. (۱) الله تعالی ته علم دې چې دا صورت حال به کوم وخت پورې جاری وي.

قوله: ثم هدنة تكون بينكم وبين بني الاصفريغدرتون فيأتونكم تحت ثمانين غاية تحت كل غاية اثنا عشر الفاً: بیا صلح ده، چې ستاسو او دروميانو مینځ کښې به وي، نو هغوی به وعده خلافي او کړي، تاسو سره د جنگ کولو دپاره به د اتياؤ (۸۰) بیرغو لاندې راشي، د هر بیرغ لاندې به دولس زره کسان وي (ټول لښکر به تقریباً په لس لاکه کسانو باندې مشتمل وي).

د هدنة معنی او ضبط: هدنة د هاء پیش او د دال سکون سره دې. ددې معنی ده سکون، راحت. البته دلته ددې معنی ده صلح. ددې دواړو مینځ کښې فرق دادي چې صلح عام ده او هدنة خاص ده. که د جنگ شروع کیدو نه پس صلح اوشي نو دې ته هدنة وائی او ددې د نوم وجه داده چې ددې صلحې د وجې نه د دواړو فریقو مینځ کښې سکون واقع شی او د پريشانۍ حالت ختم شی. (۲) او د بنوالاصفر نه مراد روميان دي. (۳)

د غایه معنی او د روایتونو اختلاف: دلته د غایه معنی ده بیرغ، چونکه په لښکر کښې د راتلونکو کسانو دپاره دا د حد او د انتها حیثیت لري چې بیرغ اوړونکې سرې چرته اودریزې نو هلته نور لښکریان هم اودریزې او که هغه روان شی نو نور لښکریان هم روان شی، ددې وجې نه بیرغ ته غایه وئیلې شی.

”قال الجواليقي: ”غاية وراية واحد، لانها غاية المتبهم، اذا وقفت وقف، واذا مشيت تبعها“ (۴).

لکه د سنن ابی داؤد (۵) یو روایت چې د ذومخبر نه روایت دې، په هغې کښې د ”رايه“ لفظ

(۱) پورته حواله جات)۔

(۲) فتح الباری: ۶/۲۷۸، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۰)۔

(۳) پورته حواله جات، وکشف الباری: ۱/۵۳۸، واعلام الحديث للخطابی: ۲/۱۴۶۹)۔

(۴) فتح الباری: ۶/۲۷۸، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۰، وشرح ابن بطلال: ۵/۳۵۸، ولسان العرب: ۱۰/۱۶۳، باب العين، مادة غیا)۔

(۵) سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب الصلح مع العدو، رقم (۲۷۶۷)، وکتاب الملاحم، باب ما ی ذکر فی قرن المائة، رقم (۴۲۹۲)۔

دې (۱) او علامه ابن الجوزي فرمائي چې دا لفظ بعضې حضراتو "غابه" بيا موحده سره روايت كړې دې ددې معنی ده ځنگل، گویا كه چې د غیر مسلمو لښكر سره د نيزو كوم كثر ت وى نو د هغې د وجې نه دې ته ځنگل (غابه) وئيلې شوې ده. (۲) او علامه خطابی فرمائي چې گنړو اونو ته "غابه" وئيلې شى او دلته لفظ د استعارې په طور استعمال شوې دې لكه د غابه نه مراد هغه بيرغونه دى كومې چې د لښكر د اميرانو دپاره اوچتولې شى او دې سره سره نيزو ته هم حركت وركولې شى، گویا كه چې د بيرغ د اوچتولو او نيزو ته د حركت وركولو چې كوم عمل دې نو د هغې نه تعبیر په غابه سره كړې شوې دې (۳).

شپږمه نېټه: پورتنى جمله كښې د قيامت په علامتونو كښې شپږم علامت بيان كړې شوې دې چې د مسلمانانو او د كافرانو مينځ كښې به يو خطرناك جنگ واقع شى، بيا به صلح اوشى، ليكن كافران به وعده خلافې او كړې او د لوي حملې دپاره به جمع شى، د كفارو د لښكر تعداد به تقريباً لس لاکه وى. (۴) دا نېټه تردې وخت پورې واقع شوې نه ده، د امام مهدى د تشریف راوړلو نه پس به دا نېټه هم واقع شى.

د قيامت د علامتونو ترتيب: دلته مناسب معلومېږي چې د قيامت نه مخكښې مخكښې كوم لوئې لوئې واقعات او حادثات به ښكاره كيږي، نو د احاديثو په رنړا كښې د هغې څه تفصيل هم بيان كړې شى.

د قيامت د علامتونو دوه قسمونه دي، وړوكى علامتونه او لوئې علامتونه.

د وړوكي علامتونو تعداد ډير زيات دې (۵) او هم دا علامتونه به د لويو علامتونو دپاره د مقدمې په شان وى.

(۱) هذا ما قاله ابن حجر فى الفتح (۲۷۸/۶)، ولكنى لم اجد فيها ما قاله الحافظ، ولعله من اختلاف النسخ، نعم، قد ورد الحديث بلفظ راية "بدل غابة" فى المستدرک للحاكم، فقيه: فيقبلون فى ثمانين راية، كل راية اثنا عشر الفا". انظر المستدرک: ۳/۶۳۰، رقم (۶۳۲۴)، أخرجه من طريق أبى بكر احمد بن سلمان بن الحسن الفقيه.

(۲) عمدة القارى: ۱۵/۱۰۰، وفتح البارى: ۲۷۸/۶، وكشف المشكل: ۴/۱۳۳، مسند عوف: رقم (۲۳۴۲).

(۳) پورته حواله جات، واعلام الحديث للخطابى: ۲/۱۴۶۹، ولسان العرب: ۱۰/۱۶۳، مادة "غيا".

(۴) شرح الكرماني: ۱۳/۱۴۱، د حساب په اعتبار سره دا تعداد ۹ لاکه ۲۰ زره جوړيږي. حافظ صاحب فرمائي (۲۷۸/۶): وجملة العدد المشار اليه تسعمائة الف وستون الفا.

(۵) حضرت شاه رفيع الدين د احاديثو په رنړا كښې د قيامت تقريباً ۲۷ واړه علامتونه ذكر كړي دي، په هغې كښې يو څو دلته ذكر كولې شى: چې كله بادشاهان د زمكې او د ملك پيداوار خپل ذاتي دولت جوړ كړي يعنې دا په شرعى مصرف كښې نه خرچ كوي، زكوة به د تاوان په طور ادا كوي. خلق به امانت د غنيمت په شان پاك او حلال گنړي. خاوند به د خپلې ښځې اطاعت كوي. د دين علم به د دنيوي غرض دپاره حاصلولې شى. شراب خوري او زناكارى به زياته شى. د باطل مذهبونو، د دروغژن حديثونو او د بدعتونو به ترقي وى. اوگوري، كتاب د قيامت نه مخكښې ... [بقية بر صفحه آتده...]

علماؤ لیکلې دی چې کله واره علامات ټول ښکاره شې نو داسې به اوشی چې عیسایان به په ډیرو ملکونو باندې غلبه او کړې او قبضه به ئې کړې. په عربو او د شام په ملک کې به د ابوسفیان په اولاد کې یو سرې پیدا شې چې سادات به قتل کړې، د هغه حکومت به په مصر او شام وغیره کېږي وی. (۱)

دې دوران کې به د روم د بادشاه د عیسایانو یو فرقې سره جنگ او دویمې فرقې سره به صلح اوشې، جنگ کونکې فرقه به د روم پایه تخت قسطنطنیه باندې قبضه او کړې، بادشاه به دارالخلافه پرېږدي او شام ته به راشي او د عیسایانو د صلح پسند ډلې په مدد سره به اسلامي فوج د یو خطرناک جنگ نه پس په قابض فوج باندې فتح یاب شې، د دشمن د شکست نه پس به په موافق فرقه کې یو سرې او وائی چې "غلب الصلیب....." ددې په اوریدو سره به په اسلامي لښکر کې یو سرې ده سره په جگړه شې او اوبه وائی چې "بل الله غلب" چې نه د الله تعالی دین اسلام غالب شو او ددې په برکت سره فتح نصیب شوه. دا دواړه به خپل خپل قوم د مدد دپاره راطلب کړې چې ددې د وجې نه به خانه جنگي شروع شې. د اسلام بادشاه به شهید شې، عیسایان به په شام باندې قبضه او کړې او ددې دواړو عیسائی ډلو به خپل مینځ کې صلح اوشې. (۲) باقی مسلمانان به مدینې منورې ته واپس شې، د عیسایانو حکومت به خیبر پورې خور شې.

د امام مهدی تلاش: دې وخت کې به مسلمانان په دې پريشانۍ کې وي چې حضرت امام مهدی تلاش کول پکار دي، دې دپاره چې دې زمونږ ددې مصیبتونو د دفع کولو ذریعه جوړه شې او د دشمن د پنجې نه مو نجات نصیب شې. حضرت امام مهدی به دې وخت مدینه منوره کې وي لیکن ددې ویرې د وجې نه به مکې مکرمې ته لاړ شې چې خلق چرته زما په شان کمزورې سرې ددې لوڼې او عظیم الشان کار دپاره منتخب نه کړې، ددغه زمانې اولیاء کرام او ابدال عظام به دې تلاش کوي. (۳)

امام مهدی به اوپیژندلې شې: دې دوران کې به امام مهدی د رکن او د مقام ابراهیم مینځ کې طواف کوي، د سرو یو جماعت به دې اوپیژني او دده په لاس باندې به بیعت او کړې، د

بقیه از حاشیه گذشته [به خه کیږي؟ ص: ۲۳-۲۴، بتغیرو تصرف] دغه شان اوگورئ جامع الترمذی، کتاب الفتن، باب فی علامه حلول المسخ والخسف، رقم (۲۲۱۰)، عن علی و (۲۲۱۱)، عن ابی هریره (رضی الله عنه)۔

(۱) کنز العمال، کتاب الفتن والاهواء.....، قسم الاقوال، رقم (۳۱۰۳۳-۳۱۰۳۵)، وفیض القدير للمناوی: ۱۶۸/۴، حرف السین، رقم (۴۷۶۸)، والمستدرک: ۵۴۷/۴، کتاب الفتن والملاحم، رقم (۸۵۳۰)۔

(۲) د باب د حدیث په الفاظو یم هدنة تكون بینکم و بین بنی الاصفیر، فیغذرون "کښې دې واقعي طرفته اشاره ده، دغه شان اوگورئ سنن ابی داود، کتاب الملاحم، ما ی ذکر من ملاحم الروم، رقم (۴۲۹۲)، والمستدرک للحاکم: ۴۶۷/۴، کتاب الفتن والملاحم، رقم (۸۲۹۸)، وصحیح ابن حبان، رقم (۶۷۰۸)۔

(۳) سنن ابی داود، کتاب المهدی، رقم (۴۲۸۶)۔

بیعت په وخت به د آسمان نه دا آواز راشي، "هذا خليفة الله المهدى، فاستمعوا له وأطيعوا" دا آواز به ټول عام او خاص خلق واورى. دې وخت کښې به د امام مهدى عمر مبارک څلویښت کاله وى (۱).

د امام مهدى فوج: د خلافت په مشهوریدو سره به د مدینې منورې فوجونه امام مهدى له مکې مکرمې ته راشي، د شام، عراق او د یمن اولیاء کرام او ابدال عظام به دده په ملګرتیا کښې او د عربو د ملکونو ډیر زیات سړي دده په فوجونو کښې داخل شی. دې به په کعبه مبارکه کښې مدفون خزاني راوباسي او په مسلمانانو کښې به ئې تقسیم کړي، کومو ته چې رتاج الکعبه وئيلي شی (۲).

د اهل خراسان لښکر: کله چې دا خبر اسلامي دنیا کښې خور شی نو د خراسان نه به د حارث نومې سړي په مقدمة الجیش کښې کمان د منصور نومې سړي سره وى، دې به یو لوتې فوج واخلي او د امام مهدى د مدد دپاره به حاضر شی (۳).

د عیسائی فوجونو اجتماع: د عربو د فوجونو د جمع کیدو چې عیسایان واورى نو دوى به هم د څلورو وارو طرفونو نه د فوجونو د جمع کولو کوشش کوي، د خپلو ملکونو او د روم د ملکونو نه به ګڼر فوجونه د امام مهدى د مقابلې کولو دپاره په شام کښې جمع شی، د دوى د فوجونو به دې وخت کښې اویا بیرغ وى (۴) او د هر بیرغ لاندې به دولس زره فوجیان وى (۵). عیسایانو سره د امام مهدى جنګ: حضرت امام مهدى به د مکې مکرمې نه مدینې منورې ته واپس شی او د نبی کریم ﷺ زیارت باندې به مشرف شی او ددې نه پس به د شام په طرف روان شی، دمشق سره نژدې به د عیسائی فوجونو سره مخامخ شی، دې وخت کښې به د امام مهدى فوج په دریو ډلو کښې تقسیم شی، یو ډله به د عیسائی فوج د ویرې له وجې نه اوتختی، الله تعالى به د دوى توبه هیڅکله قبوله نه کړي، باقی مانده فوج کښې به څه شهیدان شی اود بدر او احد د شهیدانو مرتبې ته به اورسى او څه به کامیاب شی او همیشه دپاره به د ګمراهۍ او د خراب انجام نه بچ شی.

په دویمه ورځ به بیا حضرت مهدى د عیسایانو د مقابلې دپاره راوځي، په دې ورځ به د

(۱) پورته حواله، ومشکاة المصابیح، کتاب الفتن، باب اشراط الساعة، من الحسان، رقم (۵۴۵۶)۔

(۲) الحديث اخبره ابو داود، کتاب المهدى، رقم (۴۲۸۶)، وموارد الظمان: ۴۶۴، رقم (۱۸۸۱)، والمصنف لعبد الرزاق، رقم (۲۰۹۳۴)، باب المهدى، والمعجم الكبير: ۳۹۰/۲۳، مجاهد عن ام سلمة، رقم (۹۳۱)، ومسند احمد: ۶۳۵/۸، رقم (۲۷۲۲۴)، مسند ام سلمة (رضي الله عنها)۔

(۳) وفى آخر هذا الحديث: "وجب على كل مؤمن نصره" سنن ابى داود، کتاب المهدى، رقم (۴۲۹۰)۔

(۴) د اویا لفظ په ظاهره د قلم سبقت دې، صحيح ۸۰ دى، لکه څنگه چې د باب په حديث کښې راغلې دى، ددې تشریح هم وړاندې تیره شوې ده۔

(۵) د باب د حديث الفاظو کښې "فیاتونکم تحت ثمانین غایه، تحت کل غایه اثنا عشر الفا" دې واقعي طرفته اشاره ده۔

مسلمانانو یوه ډله دا عهد او کړی چې د فتح موندلو یا شهادت نه بغیر به میدان نه پریردو، دوی به ټول په ټوله شهیدان شی، باقی لږ کسان به امام مهدی ځان سره واپس لښکرگاه ته بوځي. په دریمه ورځ به بیا دغه شان اوشی چې یو ډله به دا عهد او کړی چې د فتح موندلو یا شهادت نه بغیر به میدان نه پریردو او دوی ټول به هم شهیدان شی، په صبا به بیا دغه شان اوشی او کوم لږ خلق چې پاتې شی هغوی به د امام مهدی په ملگرتیا کښې لښکرگاه ته واپس لاړشی.)

د امام مهدی فتح په څلورمه ورځ به امام مهدی هغه تعداد بوځي کوم چې د رسدگاه محافظین وی او په تعداد کښې به ډیر زیات کم وی، دوی به دشمن ته شکست ورکړی او په دې ورځ به الله تعالی لښکر ته فتح نصیب کړی. عیسایان به دومره قدرې اووژلي شی چې د باقی کسانو د دماغو نه به د حکومت هغه بوټی ختم شی او انتهای ذلت او رسوا کیدلو سره به اوختی.

ددې نه پس به امام مهدی انتهای انعامات او اکرامونه په مجاهدینو کښې تقسیم کړی لیکن په دې مال باندې به چاته هم څه خوشحالی ملاؤ نه شی، وجه به دا وی چې د جنگ د وجې نه به ډیر خاندانونه او قبیلې داسې وی چې په سلو کسانو کښې به یو یو کس بچ وی. ددې نه پس به امام مهدی د اسلامی خلافت په نظم و نسق کښې مصروف شی او څلورو وارو طرفونو ته به خپل فوجونه خواره کړی.)

د قسطنطنیه ازادی او د دجال ښکاره کیدل: امام مهدی چې ددې کارونو نه فارغ شی نو د قسطنطنیه د فتح کولو دپاره به روان شی، چې د بحیره روم ساحل ته اورسی نو د قبيله بنو اسحاق او یا زره بهادر کسان به په کشتو کښې سواره کړی او د استنبول د فتح کولو دپاره به ئې مقرر کړی، چې کله دا کسان د ښار فصیل ته نزدې اورسی نو د تکبیر نعره به اوچته کړی چې د هغې په برکت سره به فصیل او غورځیرې، مسلمانان به حمله کولو سره په ښار کښې داخل شی.

امام مهدی به لا د ملک په انتظام وغیره مصروف وی چې دا افواه به خوره شی چې دجال د مسلمانانو تباهی او کړه. ددې خبر په اوریدو سره به امام مهدی د شام په طرف روان شی او د خبر د تحقیق کولو دپاره به پنځه یه نهه سواره کسان اولیرې، چې تحقیقات اوشی نو پته به اولگی چې دا هسې افواه وه لیکن څه موده پس به دجال ښکاره شی.)

د دجال بد صورتی، بد اخلاقی او غلط هوکتنه: دجال به د یهودو د قوم نه وی، دده لقب به

۱) الصحيح لمسلم، کتاب الفتن، باب فی فتح قسطنطنیه..... رقم (۷۲۳۵)، وباب اقبال الروم فی کثرة القتل..... رقم (۷۲۳۸)۔

۲) مسلم، کتاب الفتن، باب اقبال الروم فی کثرة القتل..... رقم (۷۲۳۸)، واحمد فی مسنده: ۳۱/۲، مسند ابن مسعود، رقم (۳۶۴۳)، و: ۱۴۵/۲، (۴۱۴۶)، وابو داود الطيالسی: ۲۰۱/۱، رقم (۳۸۴) وآخرون۔

۳) مسلم، کتاب الفتن..... باب لا تقوم الساعة حتى يمر الرجل..... رقم (۷۲۹۳)، عن ابی هريرة۔

مسيح^(١) وی او بنی سترگه به ئی پرسیدلې وی^(٢)، ویخته به ئی گلگوتې^(٣) پې یو لوڼې
خر باندې به سور وی، اول به دده ظهور د عراق او د شام مینځ کښې اوشی هلته به دې د
نبوت دعوی او کړی. ددې ځانې نه به اصفهان ته لاړ شی^(٤)، دلته به ورسره او یا زره یهودیان
وی، دلته راتلو سره به دجال د ځداني دعوی او کړی او بڼه فساد به خور کړی.

د خلقو د ازمینست دپاره به الله تعالی دده نه خلاف عادت ډیر کارونه ښکاره کړی^(٥)، لکه
ده سره به یو اور وی چې د هغې نه به دې په دوزخ سره تعبیر کوی او یو باغ به ورسره وی
چې هغې ته به جنت وائی، مخالفین به په اور کښې او ملگری به جنت کښې اچوی، لیکن
دغه اور به حقیقت کښې د باغ په شان او باغ به حقیقت کښې د اور خاصیت لری^(٦). دده په
حکم سره به په زمکه کښې ښخې کړې شوې خزاني ده سره شی^(٧). بعضې کسانو ته به وائی
چې زه ستاسو مړه مور پلار ژوندی کوم دې دپاره چې تاسو زما د ژوندی کولو دا قدرت
اووینئ او زما د ځدایی یقین او کړئ نو دې به شیطانانو ته حکم او کړی چې د دوی د
والدینو هم شکل شی او د زمکې نه راوځئ نو شیطانان به هم دغه شان او کړی.
دجال به حرمینو ته نه شی داخلیدي: دغه شان به دې ډیرو ملکونو باندې تیر شی، د مکې
مکرمې طرفته به راشی لیکن په مکه مکرمه باندې به د فرشتو څوکی وی، ددې وجې نه به
هلته داخل نه شی^(٨)، ددې ځانې نه به د مدینې منورې اراده او کړی، دغه وخت به د مدینې

^(١) بخاری، کتاب الفتن، باب ذکر الدجال، رقم (٧١٢٥-٧١٢٦)، عن ابی بکره، ومسلم، کتاب الفتن.....باب
ذكر الدجال.....رقم (٧٣٢٢)، عن ابن عمر رضی اللہ عنہما _

^(٢) صحيح البخاری، کتاب الفتن، باب ذکر الدجال، رقم (٧١٢٣)، ومسلم، کتاب الفتن.....باب ذکر
الدجال.....رقم (٧٣٢٢)، والترمذی، کتاب الفتن، باب فی صفة الدجال، رقم (٢٢٤١) _

^(٣) فی روایة مسلم: انه شاب ققط، کتاب الفتن، باب ذکر الدجال.....رقم (٧٣٣٣)، من روایة النواس بن
سمعان الکلابی، رضی اللہ عنہ _

^(٤) مسلم، کتاب الفتن.....باب فی بقية من احاديث الدجال، رقم (٧٣٥٣)، عن ام شریک _

^(٥) مسلم شریف، کتاب الفتن.....باب ذکر الدجال.....رقم (٧٣٣٣)، عن النواس بن سميان الکلابی _

^(٦) مسلم شریف، کتاب الفتن.....باب ذکر الدجال.....رقم (٧٣٣١)، والبخاری، کتاب احاديث الانبياء، باب
ما ذکر عن بنی اسرائیل، رقم (٣٤٥٠)، عن حذيفة رضی اللہ عنہ _

^(٧) مسلم شریف، کتاب الفتن.....باب ذکر الدجال.....باب ذکر الدجال.....رقم (٧٣٣٣)، عن النواس بن
سمعان الکلابی _

^(٨) البخاری، کتاب الفتن، باب لا یدخل الدجال المدينة، رقم (٧٣٣٣)، ومسلم، کتاب الفتن.....باب فی صفة
الدجال، وتحريم المدينة عليه.....رقم (٧٣٣٥)، عن ابی سعید الخدری رضی اللہ عنہ _ وفي قصة تميم الداری
رضی اللہ عنہ: وانی مخبر کم عنی، انی انا المسيح، وانی اوشک لی فی الخروج، فاخرج فاسیر فی الارض، فلا ادع قرية
الا هبطتها فی اربعین ليلة، غیر مکه وطیبة، فهما محرمتان علی کلثاهما، كلما اردت ان ادخل واحدة، او واحدا
منهما، استقبلنی ملک بیده السلف صلتا؛ یصدنی عنها، وان علی کل نقب منها... [بقیه برصفحه آئنده...]

منورې اووه دروازې وی، د هرې دروازې په حفاظت باندې به دوه دوه فرشتې مقررې وی چې د هغوی د ویرې له وجې نه به د جال د خپل فوج سره هم هلته داخل نه شي. دغه شان مدینه منوره کښې به درې ځله زلزله راشي چې د هغې د وجې نه به منافقان وغیره اویریزې او بهر ته به اوځي او د جال په جال کښې به گرفتار شي.

د عیسی علیه السلام نازلیدل او امام مهدی سره ملاقات: امام مهدی به د جال نه مخکښې دمشق ته رسیدلې وی او د جنگ تیاری به یې کړې وی، دې دوران کښې به مؤذن د مازیگر اذان کوي، خلق به د مانځه په تیاری کښې مشغول وی چې حضرت عیسی به د دوو فرشتو په اوږو باندې تکیه لگولو سره د آسمان نه د دمشق د جامع مسجد په مشرقی میناره باندې تشریف فرما شي او اواز به اوکړي چې پورې راوړئ نو پورې به حاضرې کړې شي. لاندې راکوزیدو نه پس به ددې دواړو حضراتو ملاقات اوشي، امام مهدی به ورسره ډیر زیات خوش اخلاقي او عاجزی سره مخامخ شي او ورته به وائي یا نبی الله! امامت اوکړئ. حضرت عیسی به ورته وفرمائي چې امامت هم تاسو اوکړئ. نو امام مهدی به مونځ ورکړي او حضرت عیسی به ورپسې اقتداء اوکړي.

د اسلامي لښکر او د جالی فوج مقابله: د مونځ نه چې فارغ شي نو امام مهدی به قیادت حضرت عیسی ته سپارل غواړي نو هغوی به ورته وفرمائي چې نه! قیادت هم تاسو اوکړئ زه خو صرف د جال د قتلولو دپاره راغلي يم.

شپه به خیر و عافیت سره تیره کړي ددې نه پس به امام مهدی یو لوتی لښکر واخلي او میدان ته به راشي، حضرت عیسی به اس او نیزه او غواړي چې د جال د شر نه د مخ زمکه پاکه کړي، نو عیسی به په جال باندې او اسلامي لښکر به د جال په لښکر باندې حمله اوکړي، ډیر زیات خطرناک جنگ به شروع شي. دې وخت کښې به د حضرت عیسی ساه دا خاصیت وی چې ترڅو ئې نظر رسي نو هغې پورې به ئې ساه هم اثر کوي او کوم کافر ته چې د حضرت عیسی ساه رسیږي نو هلته به هغه ختمیږي. د جال تختیدل: د عیسی د مقابلې کولو نه به د جال ویریزې او د لد مقام ته به اوختي،

بقیه از حاشیه گذشته [ملائكة يحرسونها..... قال رسول الله ﷺ : هذه طيبة، هذه طيبة، هذه طيبة. یعنی المدینه..... صحیح مسلم، الفتن، باب قصة الجساسة، رقم (۲۹۴۲-۷۳۸۶)۔

(۱) صحیح بخاری، کتاب الفتن، باب ذکر الدجال، رقم (۷۲۱۵-۷۱۲۶)۔

(۲) پورته حواله، رقم (۷۱۲۴)، و مسلم، کتاب الفتن..... باب قصة الجساسة، رقم (۷۳۸۶)، والترمذی، کتاب الفتن، باب..... الدجال لا یدخل المدینه، رقم (۲۲۴۲)، عن انس بن مالک (رضی الله عنه)۔

(۳) مسلم، کتاب الفتن..... باب ذکر الدجال..... رقم (۷۳۳۳)، عن النواس بن سمعان، والمصنف لابن ابی شیبة: ۲۹۳/۲۱، کتاب الفتن، رقم (۳۸۸۰۴)، عن ابن سیرین، والمعجم الكبير للطبرانی: ۹۶۰/، رقم (۸۳۹۲)، عن عثمان بن ابی العاص (رضی الله عنه)، ومجمع الزوائد: ۳۴۲/۷۔

(۴) مسلم شریف، کتاب الفتن..... باب ذکر الدجال..... رقم (۷۳۳۳)، عن النواس بن سمعان)۔

حضرت عیسیٰ علیه السلام به ورپسې شی او بیا به نې مومی او په نیزې سره به نې هلاک کړی، خلقو ته به دده هلاکت ښکاره کړی چې دجال مردار شو.

د دجال د قتلولو نه پس به دده د لښکر همت ختم شی او ټول به تباه ویرباد شی، یهودیان چې ددې لښکر زیاته حصه به وی، ته به هیڅ څیز پناه نه ورکوی، هر کانړې او بوټې به نې په نهه کوی چې انې د الله بنده ادا یهودی او گوره او دې قتل کړه، لیکن غرقد نومې اونه به ورته پناه ورکوی او دده حال به نه ښکاره کوی.)

د متاثره ښارونو نوې تعمیر او د انصاف قائلول: د دجال د فتنې د ختمیدو نه پس به حضرت مهدی او عیسیٰ علیه السلام د هغې ښارونو دوره او کړی کوم چې دجال تباه کړې وی، متاثره خلقو ته به تسلی ورکړی، د لوڼې اجر خوشخبری به ورته ورکړی او د هغوی د دنیوی نقصانونو ازاله به اوکړی.)

دویم طرفته به حضرت عیسیٰ علیه السلام د خنزیر د قتل، د صلیب د ماتولو او د کفارو نه د جزیه قبولولو احکامات جاری کړی او ټول کافران به د اسلام طرفته راوبلی.) د الله تعالی په فضل وکرم سره به هیڅ یو کافر په اسلامي ښارونو کښې پاتې نه شی، ظلم او بې انصافی به ختمه شی او هر طرفته به انصاف او عدل پورته وی، ټول خلق به د الله تعالی په عبادت کښې سرگرم وی. د امام مهدی د خلافت وخت به اووه (۷)، اته (۸) یا نهه (۹) کاله وی نو ابتدائی اووه کاله به د عیسایانو د فتنې د ختمولو او د ملک په انتظام کښې، اتم کال دجال سره په جنگ کښې او نهم کال به د حضرت عیسیٰ علیه السلام په ملګرتیا کښې تیر شی. دې حساب سره به د دوی عمر ۴۹ کاله وی. ددې نه پس به حضرت مهدی وفات شی.

په حضرت عیسیٰ علیه السلام باندې وحی: د امام مهدی د تجهیز او تکفین نه پس به ټول کارونه د حضرت عیسیٰ علیه السلام لاس ته راشی، ټول مخلوقات به ډیر زیات امن و امان سره ژوند تیروي، په حضرت عیسیٰ علیه السلام باندې به وحی نازله شی چې زه په خپلو بندګانو کښې داسې طاقت ور بندګان ښکاره کوم چې په هیڅ یو کس کښې به د هغوی د مقابلې کولو طاقت نه وی، ددې وجې نه به حضرت عیسیٰ علیه السلام مخلصین واخلی او کوه طور ته به منتقل شی.)

۱) پورته حواله، و باب لا تقوم الساعة حتى يمر الرجل..... رقم (۷۲۹۹)، عن ابی هريرة..... وسنن ابی داود، کتاب الملاحم، باب خروج الدجال، رقم (۴۳۲۱)، والبخاری، کتاب الجهاد، باب قتال اليهود، رقم (۲۹۲۶)

۲) التصريح بما تواتر في نزول المسيح: ۱۱۸، الحديث الخامس، عن النواس)۔

۳) ابو داود، کتاب الملاحم، باب خروج الدجال، رقم (۴۳۲۴)، والمصنف لابن ابی شيبه: ۲۱/۲۳۵، کتاب الفتن، رقم (۳۸۶۸۱)۔

۴) عن ابی سعيد الخدري..... يملك سبع سنين ابو داود، کتاب المهدی (۴۲۸۵)، وايضا، رقم (۴۲۸۶)۔

۵) المصنف لابن ابی شيبه: ۲۱/۲۸۷، کتاب الفتن، ما ذکر في فتنة الدجال، رقم (۳۸۷۹۳)۔

۶) ابو داود، رقم (۴۲۸۶-۴۲۸۷)۔

۷) مسلم شريف، کتاب الفتن..... باب ذکر الدجال..... رقم (۷۳۳۳)، عن النواس بن سميان رضي الله عنه

والترمذي، کتاب الفتن، باب ما جاء في فتنة الدجال (۲۲۴۰)۔

د یاجوج و ماجوج راوتل: د مذکوره وحی په تعمیل کولو کښې به حضرت عیسی د کوه طور په قلعه کښې نزول او فرمائی (کومه چې نن صبا موجوده ده) او د جنگ سازو سامان په مهیا کولو کښې به سرگرم وی چې دې دوران کښې به د یاجوج و ماجوج قوم د سکندر دیوال مات کړی او په مخ د زمکې باندې به څلور وارو طرفونو ته خواره شی، په مضبوطه قلعه کښې د پناه اخستلو نه به یې د دوی نه د بچ کیدو هیڅ صورت نه وی، دوی به د خلقو په قتل و غارت کښې هیڅ پرواه نه کوی.

د یاجوج و ماجوج تباہ کاری: د دوی تعداد به دومره زیات وی چې کله د دوی اولنی ډله بحیره طبریه (۱) ته راوړسې نو د هغې ټولې اوبه به اوڅکي او هغه سمندر به اوج شی، چې کله وروستنۍ ډله دلته راوړسې نو هغوی به وائی چې کیدې شی دلته هډو اوبه تیرې شوې نه دی، دوی ټول به په ظلم و ستم، قتل و غارت، پرده اخستلو، تکلیف رسولو او قید کولو کښې مشغول شی، په دې حالت کښې چې کله دوی شام ته اورسیږي نو اوبه وائی چې مونږ خود زمکې والا خلق نیست نابود کړل، راځائی چې اوس د آسمان والا هم ختم کړو نو په آسمان باندې به غشی وروی چې د الله تعالی قدرت سره به په وینو لیت پیت واپس راشی، ددې په لیدلو سره به دوی ډیر خوشحاله شی چې اوس خوزمونږ نه سوا هیڅوک نشته (۲).

د حضرت عیسی ﷺ دعا او د یاجوج و ماجوج هلاکت: د یاجوج و ماجوج ددې فتنې دوران کښې به په مسلمانانو باندې د خوراک سختی راشی، آخر به حضرت عیسی ﷺ د دعا کولو دپاره پاسی، ددوی ملگری به وروستو ولاړوی او آمین به وائی نو الله تعالی به یو قسم بیماری "نفخ" (۳) نازله کړی، دې مرض سره به د یاجوج و ماجوج قوم په یو شپه کښې ختم شی (۴). چونکه د دومره مرگونو د وجې نه به ډیره سخته بدبوئی خوره شی، ددې وجې نه به حضرت عیسی ﷺ بیا خپلو ملگرو سره دعا او کړی نو الله تعالی به اوږدو اوږدو وختونو او جسمونو والا "عنقا" نومې ځناور راواستوی نو دغه ځاړوی به بعضې او خوری او نور به مختلفو جزیرو او سمندرونو کښې او غورزوی او د هغوی د وینو وغیره نه به د زمکې مخ صفا کولو دپاره څلویښت ورځې باران او ورپې، دا باران به دومره قدرې زیات وی چې هیڅ یو پوخ او کچه مکان به د سسیدلو نه به یې پاتې نه شی.

د امن و برکت اووه کاله او د حضرت عیسی ﷺ وفات: دې باران سره به پیداوار ډیر زیات

(۱) تفسیر البیضاوی مع الشهاب: ۲۳۶/۶، سورة الکهف/۹۹)۔

(۲) الطبرية۔ بفتح الطاء والباء۔ بحيرة من اعمال الاردن في طرف الغور وفي جبل، وجبل الطور مطل عليها..... معجم البلدان للحموي بتصرف: ۱۷/۴، باب الطاء والباء.....)۔

(۳) مسلم، رقم (۷۳۳۳ - ۷۳۳۴)، حدیث النواس بن سمعان، وترمذی، کتاب الفتن، رقم (۲۲۴۰)۔

(۴) نفخ د نون او غین فتحې سره هغه چینجی ته وائی کوم چې د اوبښ او د چیلۍ په پوزه کښې وی، دغه شان او گوری کتاب السیر للتوربشتی: ۱۱۶۷/۴، رقم (۴۱۰۴)۔

(۵) مسلم، رقم (۷۳۳۳)، ترمذی، رقم (۲۲۴۰)۔

برکتناک او زیات شی، داسې چې یو سیر غله او د یو غوا یا د یو چیلن شوده (په) به د یو خاندان دپاره کافی کیږي (۱)، ټول خلق به ډیر زیات عیش و عشرت کښي وی، په مخ د زمکه به د مؤمنانو نه سوا نور هیڅوک نه وی، کینه او حسد وغیره به د خلقو نه پورته شی، ماران او مضرخناور درندگان به خلقو ته څه نقصان نه رسوي. د یاجوج او ماجوج د قوم چې د تورو کوم نیامونه او کمانونه وغیره وی هغه به د خشاک په طور په کار راځي (۲)، دا حالات به اووه کالو پورې جاری وي. ددې نه پس به رو رو خواهشات نفسانیه شروع شی. دا ټول واقعات د عیسی سره متعلق دي، په زمکه باندې به د حضرت عیسی قیام څلویښت کاله وی، حج به اوکړي، نکاح به اوکړي، اولاد به ئې پیدا شی، بیا به دوی مبارک وفات شی او د نبی ﷺ په روضه مبارکه کښي به دفن شی (۳).

د حضرت عیسی د وفات نه پس به قبيله قحطان (۴) کښي جهجاه نومي سړي د دوی خليفه شی، چې عدل او انصاف سره به د خلافت امور پوره کوي، د دوی نه پس به یو څو نور بادشاهان وی، چې د هغوی په زمانه کښي به بیا کفریه او جاهلانه رسومات عام شی او علم به ډیر زیات کم شی (۵).

د شپې اوږدیدل او د توبې دروازه بندیدل: څه موده پس به د ذی الحجه په میاشت کښي د نوې اختر د ورځې نه پس شپه دومره اوږده شی چې مسافرو به تنگه شی، ماشومان به د خوب نه بیدار شی او څاروی به د څرن کولو دپاره بې قراره شی، اخر دا چې خلق به د ویرې او د پریشاني د وجې نه په ژړا ژړا سره توبه کوي، د دریو څلورو شپو په مقدار باندې چې کله داسې حالت تیر شی نو ددې نه پس به د پریشاني په حالت کښي نمر د سپوږمۍ په شان معمولی رنډا سره د مغرب نه راوخیږي، دې وخت کښي به ټول خلق د الله تعالی د وحدانیت

(۱) جامع ترمذی، رقم (۲۲۴۰)، و مسلم، رقم (۷۳۳۳)۔

(۲) ويستوقد المسلمون من قسيهم ونشابههم "انظر الجامع للترمذی، کتاب الفتن، باب ماجاء فی فتنه الدجال، رقم (۲۲۴۰)، من رواية النواس (۳)۔

(۳) پورته حواله جات، و ابو داود، کتاب الفتن، رقم (۴۳۲۳)، و ابن ابی شیبہ: ۲۱/۲۰۰، کتاب الفتن، رقم (۳۸۶۲۹)، و مسند احمد: ۲/۲۹۰، رقم (۷۸۹۰)، مسند ابی هريرة، و: ۲/۴۳۷، رقم (۹۶۳۰)، والتصريح بما تواتر فی نزول المسيح: ۲۴۰، احاديث اخرى مما اخرجه المحدثون..... رقم (۵۸)، و: ۳۹۳، رقم (۱۰۱)، و احیاء علوم الدین: ۴۷۳، کتاب آداب النکاح، ربع العادات، الباب الاول..... والفردوس بمأثور الخطاب: ۴/۳۶۵، فصل، والعلل المتناهية: ۲/۴۳۳، رقم (۱۵۲۹)، ذکر عیسی، وعمدة القاری: ۱۶/۴۰، ومشكاة المصابيح، باب نزول عیسی..... کتاب الفتن، رقم (۵۵۰۸)۔

(۴) جامع ترمذی، کتاب الفتن، باب بلا ترجمة، رقم (۲۲۲۸)، و مسلم، کتاب الفتن، باب لا تقوم الساعة حتی یمر الرجل بقبر..... رقم (۷۲۶۸-۷۲۶۹)، و بخاری، کتاب المناقب، باب ذکر قحطان، رقم (۳۵۱۷)، و کتاب الفتن، باب تغییر الزمان حتی..... رقم (۷۱۱۷)۔

(۵) صحيح بخاری، کتاب الفتن، باب ظهور الفتن، رقم (۷۰۶۱-۷۰۶۶)، عن غير واحد من الصحابة)۔

اقرار او کړی لیکن بې فائدي..... ځکه چې دې وخت کښې به د توبې دروازه بنده شی، ددې نه پس به نمر د خپل معمول د رنډا سره د مشرق نه راخیږي (۱).
 د دابة الارض ښکاره کیدل: خلق به په دې حالت کښې وی چې د صفا غره به د زلزلې د وجې نه اوشلیږي چې د هغې نه به یو عجیبه قسم ځناور ښکاره شی (۲)، لکه د شکل په اعتبار سره به دا ځناور د اووه قسمه ځناورو سره مشابهت لري، په مخ کښې د سپرې سره، خپو کښې اوبښ سره، خټ کښې اس سره، لکۍ کښې غوښې سره، کوناتي کښې هوسۍ سره، په ښکرونو کښې باره سینګۍ سره او په لاسونو کښې د بیزو سره (۳)، دې سره سره به ډیر زیات فصیح اللسان وی (۴).

ددې ځناور په یو لاس کښې به د حضرت موسی همسا، په دویم لاس کښې به ورسره د حضرت سلیمان گوتمه وی، ددې رفتار به ډیر زیات تیز وی چې دا چا پسې شی نو څوک به هم ترینه بچ کیدي نه شی، دا ځناور به په هر انسان باندې یو ښه لګوی، که د ایمان والا وی نو د موسی په همسا سره به د هغه په مخ باندې یو لکیره رابښکی چې د هغې د وجې نه به ددې مؤمن مخ روښانه شی، که کافر یا منافق وی نو د حضرت سلیمان په گوتمې سره به د هغه په پوزه یا خټ باندې تور مهر لګوی چې د هغې د وجې نه به ددې انسان مخ بې رونقه شی، که په یو دسترخوان باندې څو کسان ناست وی نو د هر یو سپرې د ایمان او کفر په پته اولګی، دا ځناور چې ددې کار نه فارغ شی نو غائب به شی.
 د مغرب نه چې نمر راوخیږي او دابة الارض ښکاره شی نو ددې نه پس به د شپیلۍ پوک وهلو پورې شپې شلې (۱۲۰) کاله زمانه وی (۵).

د ایماندارو د مرکې هوا: دابة الارض چې غائب شی نو ددې نه پس به د جنوب د طرف نه یو مزیداره هوا اوچلیږي چې د هغې د وجې نه به د هر مؤمن په ترڅ (بغل) کښې یو درد پیدا شی چې د هغې د وجې نه به ترتیب سره افضل، فاضل او بیا ناقص وفات کیدل شروع شی، شرط

(۱) بخاری، کتاب الفتن، باب (بلا ترجمه)، رقم (۷۱۲۱)، ومسلم، کتاب الايمان، باب بيان الزمن الذي لا يقبل..... رقم (۳۹۶)، وفيه بحث نفيس في روح المعاني: ۴۲۴/۸- ۴۲۷، سورة الانعام، الآية: ۱۵۸-.

(۲) قال الله جل ذكره: (واذا وقع القول عليهم اخرجنا لهم دابة من الارض تكلمهم.....) (النمل: ۸۲)، وتفسير الكشف والبيان: ۵۱۰/۴- ۵۱۲-.

(۳) قد اختلف الروايات في صفات هذه الدابة، انظر المصدر السابق، ومفاتيح الغيب للرازي: ۲۴/ ۵۷۳، سورة النمل، وتفسير السمعاني: ۱۱۴/۴ و ۱۱۵-.

(۴) روح المعاني: ۳۱۲/۲۰، سورة النمل، تفسير الآية/ ۸۲، واخبار مكة للفاكهي: ۳۹/۴، ذكر الدابة وخروجها..... رقم (۲۳۴۶- ۲۳۴۷)-.

(۵) تفسير الكشاف والبيان: ۵۱۰/۴- ۵۱۲، و روح المعاني: ۳۱۱/۲۰- ۳۱۵، تفسير السمرقندي: ۵۰۵/۲، وفتح القدير: ۱۸۹/۴، وفتح الباري، كتاب الرقاق: ۳۵۴/۱۱، باب بلا ترجمه، رقم (۶۵۰۶)، واخبار مكة للفاكهي: ۳۹/ باب الدابة وخروجها، ومن اين تخرج من مكة-.

به دا وی چې بس فاسق نه وی. (۱).

دغه شان قیامت ته نژدې به دا نښه هم ښکاره شی چې څاروی، کانړی او چابک وغیره به کثرت سره گویا کیږي، چې کورونو کښې دننه کوم امور دی د هغې او د نورو خبرو اترو خبر به ورکوي. (۲).

د حبشیانو غلبه او په شام کښې د خلقو اجتماع چې کله ټول مؤمنان ددې دنیا نه رخصت شي نو حبشیان به غالب شي، ټوله دنیا کښې به د هغوی حکومت خور شي، دوی به خانه کعبه وړانه کړي (خو حج به بند شي) (۳)، قرآن کریم به د زړونو، ژبو او کاغذونو نه پورته شي، د الله تعالی او د آخرت ویره به د زړونو نه ختمه شي، شرم و حیا به ختمه شي خلق به برسرعام د خړو او سپو په شان بدفعلي کوي (۴)، د حاکمانو ظلم او جهالت به زیات شي، جهالت به دومره قدرې زیات شي چې هیڅوک به لفظ "الله" وئیلو والا پاتې نه شي (۵).

چې د ټولې دنیا دا حالت وی نو دې دوران کښې به نسبتاً د شام په ملک کښې امن او ارزانی زیاته وي نو ټول خلق به د خپلو بچو سره د شام په طرف روان شي (۶).
اور به خلقو لږه په شام کښې جمع کړي: کله چې د قیامت واقع بالکل نژدې شي نو یو ډیر لوڼي اور به د جنوب له طرفه ښکاره شي د خلقو طرفته به راځي، د هغې نه د بچ کیدلو دپاره به خلق وارخطا منډې وهي او اور به مسلسل دوی پسې لگیدلې وي، آخر به دا اور دې خلقو لږه شام (محشر) ته اورسوی، ددې نه پس به هغه اور غائب شي، دې وخت کښې به د مجموعی طور آبادي اکثریت په شام کښې وي (۷). ددې نه پس به د قیامت د قائمیدو اولنې

(۱) مسلم، کتاب الفتن، باب ذکر الدجال.....، رقم (۷۳۳۳)، ورقم (۷۳۴۱)، والترمذی، رقم (۲۲۴۰)۔

(۲) عن ابی سعید الخدری رضی الله عنه قال: قال رسول الله ﷺ: والذي نفسي بيده لا تقوم الساعة حتى تكلم السباع الانس، وحتى تكلم الرجل عذبه صوته، وشراك نعله، وتخبره فخذه بما احدث اهله من بعده. رواه الترمذی، وقال: هذا حديث حسن غريب.....، کتاب الفتن، باب ما جاء في كلام السباع، رقم (۲۱۸۱)۔

(۳) صحيح البخاری، کتاب الحج، رقم (۱۵۹۱) و (۱۵۹۶)، ومسلم، کتاب الفتن، رقم (۸۳۹۵)، ومسنند الطيالسي: ۶۹۶/۲، رقم (۲۴۹۴)، مسند ابی هريرة، وابن حبان، کتاب التاريخ، باب بدء الخلق، ذکر الموضع الذي يبائع فيه المهدي، رقم (۶۸۲۷)۔

(۴) صحيح البخاری، رقم ۱۵۱۶، مسند احمد: ۳۱۲/۲، رقم (۸۰۹۹)، ومستدرک الحاكم: ۴۹۹/۴، رقم (۸۳۹۵) ومسنند الطيالسي: ۶۹۶/۲، رقم (۲۴۹۴) مسند ابی هريرة، وابن حبان، کتاب التاريخ، باب بدء الخلق، ذکر الموضع الذي يبائع فيه المهدي، رقم (۶۸۲۷)۔

(۵) مسلم، کتاب الفتن، رقم (۷۳۳۳)، والترمذی، کتاب الفتن، رقم (۲۲۴۰)، عن النواس بن سمعان)۔

(۶) مسلم، کتاب الايمان، باب ذهاب الايمان آخر الزمان، رقم (۲۳۴/۱۴۸)، والترمذی، کتاب الفتن، باب منه، رقم (۲۲۰۷)۔

(۷) المستدرک للحاكم: ۵۴۹/۴، کتاب الفتن والملاحم، رقم (۸۵۳۸)، عن عبدالله بن مسعود)۔

(۸) ابو داود، کتاب الملاحم، باب امارات الساعة، رقم (۴۳۱۱)، ومسلم..... [بقية برصفحه آئنده...]

علامت داوی چې خلق به درې څلور کاله په غفلت کښې پراته وی او دنیوی نعمتونه، مالونه او شهوتونه به زیات شی.

د شپیلۍ اواز، مرګونه او د کائنات د نظام فنا کیدل: د جمعة المبارک په ورځ، چې د عاشورې ورځ به هم وی،^(۱) سحر به خلق په خپلو خپلو کارونو کښې مشغول وی چې اچانک به یو باریک آواز واوریدلې شی، دا به د شپیلۍ آواز وی، ټولو طرفونو کښې به دا آواز یو شان اوریدې شی او خلق به حیران وی چې دا آواز څنگه او د کوم څانې نه راځي؟ روږو به دا آواز د آسماني بجلۍ د ګرږ په شان سختیږي او تیزیږي، خلقو کښې به ددې د وجې نه ډیره بې قراری او بې چینی خوره شی، چې کله دا آواز پوره سخت شی نو خلق به د ویرې او د هیبت د وجې نه مړه کیدل شروع شی، په زمکه باندې به زلزله راشي^(۲)، ددې ویرې نه به خلق کورونه پریږدي او د میدانونو په طرف به روان شی، وحشی ځناور به ویریږي او هغوی به هم انسانانو سره ملاؤ شی^(۳)، ځانې په ځانې به زمکه او شلیږي^(۴)، سمندرونه به اوخوټکیږي^(۵)، لوټي لوټي غرونه به د مالوچو په شان والوزي^(۶)، د خاورو د وجې نه به په ټوله دنیا باندې تیارة خوره شی، دغه آواز به وخت په وخت سختیږي، تردې چې ددې د زیات هیبت ناک کیدو د وجې نه به اسمانونه او شلیږي او ستوری به ریزه ریزه شی^(۷). ددې نه څه موده پس به دوباره د پیدائش او د تخلیق عمل شروع شی، بیا به دویم ځل باندې شپیلۍ پوک وهلې شی او ټول خلق به د قبرونو نه راوځي او میدان حشر کښې به جمع کیږي او د حساب کتاب عمل به شروع شی^(۸).

الله تعالی دې مونږ ټول ددې ورځې د سختو نه محفوظ اوساتي او الله تعالی دې مونږ ټول د

بقیه از حاشیه گذشته [کتاب الفتن، رقم (۷۲۴۲-۷۲۴۳)، والمترمذی، کتاب الفتن، رقم (۲۱۸۳)، وصحیح البخاری مع فتح الباری: ۳۷۸/۱۱، رقم (۶۵۲۲)، کتاب الرقاق، باب الحشر]—

^(۱) مسلم، کتاب الفتن، رقم (۷۳۴۱)، حدیث عروۃ بن مسعود—

^(۲) قال الله تعالی: (اذا زلزلت الارض زلزالها) (الزلزال/۱)—

^(۳) قال الله تعالی: (واذا الوحوش حشرت) (التکویر/۵)—

^(۴) قال الله تعالی: (يوم تشقق الارض عنهم سراعاً) (ق/۴۴)—

^(۵) قال الله تعالی: (واذا البحار فجرت) (الانفطار/۳)—

^(۶) قال الله تعالی: (واذا الجبال نسفت) (المرسلات/۱۰)، وقال ايضاً: (وتكون الجبال كالعهن المنفوش) (القارعة/۵)—

^(۷) قال جل ذكره: (اذا السماء انفطرت، واذا الكواكب انتثرت) (الانفطار/۱-۲)—

^(۸) مسلم شریف، کتاب الفتن.....، باب فی خروج الدجال.....، رقم (۷۳۴۱)، عن عروۃ بن مسعود الثقفی، وباب ما بین النفختین، رقم (۷۳۷۴)، والبخاری فی التفسیر، سورة الزمر، رقم (۴۹۳۵)— دا ټول تفصیلات د حضرت شاه رفیع الدین دهلوی رحمۃ اللہ علیہ در سالي "علامات قیامت" نه لږ بدلون او حذف سره اخستلې شوې دي، او ګوري مذكوره رساله مطبوعه مع "د قیامت نه مخکښې به څه کیږي؟" (ص: ۴۴، ۲۳)—

نبی ﷺ د شفاعت مستحق او ګرځوی. آمین

ترجمة الباب سره د حديث مناسبت: ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت په دې جمله کښې دې، "فيغدون" چې دغه روميان به د هوکه او وعده خلافی او کړی، ددې وجې نه بې پرواه او غافله کيدل پکار نه دی، بلکه هوښيار تيا سره تيارې هم کول پکار دی. (۱) والله اعلم بالصواب

باب: ١٦: كَيْفَ يُنْبِذُ إِلَى أَهْلِ الْعَهْدِ

يعني د مصالحت او د معاهدې د ختميدو اطلاع دشمن ته څنگه ورکړې شي؟
د ترجمة الباب مقصد: امام بخاری دلته دا فرماني چې که اهل عهد سره صلح شوي وي او بيا دې مصالحت او صلح ددې خبرې تقاضه او کړه چې دا وعده او عهد برقرار او نه ساتلی شي نو څه کول پکار دی؟

ددې سوال جواب په هغې آيت کریمه او حديث مبارک کښې موجود دې کوم چې په باب کښې ذکر دی چې دا کافران د څه اعلان په ذریعه يا په بلې څه ذریعې سره خبر کړې شي چې اوس مونږ دا عهد او وعده برقرار ساتل نه غواړو، لهذا د فلاني تاريخ نه يا د نن نه دې معاهده ختمه او ګڼلې شي. (۲)

قوله: وقوله: (وإما تخافن من قوم خيانة فأنبذ إليهم على سواء: الآية/ الانفال: ٥٨/
او د الله تعالی دا وينا چې که تاسو صلی الله علیه وسلم ته د يو قوم له طرفه دا ويره پيښه وي چې دوی به وعده خلافی او بد عهدي او کړی نو دوی ته د دوی عهد او وعده واپس کړئ دې دپاره چې تاسو او دا خلق برابر شئ.
د "نبذ" معنی: پورته په ترجمة الباب کښې، دغه شان په آيت کریمه او راتلونکي حديث کښې د "نبذ" د مختلفو مشتقاتو ذکر دې، دا د باب ضرب نه دې، ددې اصل معنی ده ويشتل ليکن دلته ددې نه مراد دې وعده ماتول (۳).

د سواء معنی او د ايت تفسير: حضرت ابن عباس خو د سواء معنی بيان کړې ده مثل سره، او امام کسائي ددې تفسير په عدل سره کوي. (۴)

علامه ازهری فرماني چې مطلب دادې چې که تاسو يو قوم سره صلح او کړئ، معلومه شي چې هغوی وعده خلافی کول غواړي نو بيا هم تاسو په وعده ماتولو کښې جلدی مه کوئ، بلکه خبر ورته اوليږئ چې تاسو وعده ماتوي، دغه شان به تاسو او دشمنان په دې علم کښې برابر

(۱) عمدة القاری: ۱۵/۹۹-.

(۲) فتح الباری: ۶/۲۷۹، و عمدة القاری: ۱۵/۱۰۰، وقال ابن بطال رحمه الله: اجمع العلماء ان للامام ان يبدا من يخاف خيانتة وغدره بالحرب بعد ان يعلمه بذلك. انظر شرحه: ۵/۳۶۰-.

(۳) عمدة القاری: ۱۵/۱۰۰-.

(۴) فتح الباری: ۶/۲۷۹، و عمدة القاری: ۱۵/۱۰۱-.

شی چې معاهده ختمه شوې ده، بیا پرې حمله او کړی. (۱)
 ۳۰۰۶: حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ
 قَالَ بَعَثَنِي أَبُو بَكْرٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - فِيمَنْ يُؤْذَنُ يَوْمَ النَّحْرِ بِمَنْ لَا يَحْجُجُ بَعْدَ الْعَامِ مُشْرِكٌ، وَلَا
 يَطُوفُ بِالْبَيْتِ عُرْيَانٌ. وَيَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ يَوْمَ النَّحْرِ، وَإِنَّمَا قِيلَ الْأَكْبَرُ مِنْ أَجْلِ قَوْلِ النَّاسِ
 الْحَجُّ الْأَصْغَرُ. فَتَبَدَّ أَبُو بَكْرٍ إِلَى النَّاسِ فِي ذَلِكَ الْعَامِ، فَلَمْ يَحْجَّ عَامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ الَّذِي حَجَّ فِيهِ
 النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - مُشْرِكٌ. (ار: ۳۶۲)

رجال الحديث

- ① ابو اليمان: دا مشهور محدث ابو اليمان حکم بن نافع دي.
 - ② شعيب: دا شعيب بن ابي حمزه دي. ددې دواړو حضراتو تذکره د "بده الوسی" په "الحديث السادس" کښې تیره شوې ده. (۲)
 - ③ زهري: د مشهور محدث ابن شهاب زهري حالات "بده الوسی" کښې راغلې دي. (۳)
 - ④ حميد بن عبدالرحمن: دا مشهور تابعي محدث، حضرت حميد بن عبدالرحمن بن عوف دي. د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب تطوع قيام رمضان من الايمان" کښې تیره شوې ده. (۴)
 - ⑤ ابو هريره رضى الله عنه: د مشهور صحابي حضرت ابو هريره رضى الله عنه تذکره د کتاب الايمان په شروع کښې تیره شوې ده. (۵)
- د حديث شريف ترجمه: حضرت ابو هريره فرمائي چې حضرت ابوبکر صديق رضي الله عنه په مني کښې د اعلان کولو دپاره نورو خلقو سره زه هم اوليرلم، اعلان دا وو چې ددې کال نه پس به هيڅ يو مشرک حج ته نه راځي، نه به څوک بربنډ د کعبه الله طواف کوي. او د حج اکبر ورځ يوم النحر ده او دې ته د "حج اکبر" وئيلو وجه داده چې خلق به دې ته "حج اصغر" وئيلي. نو حضرت ابوبکر رضي الله عنه دې کال باندې خلقو دشمن، ته د معاهدې د ختمولو او ماتولو اطلاع ورکړه. په دې وجه باندې د حجة الوداع په کال هيڅ يو مشرک حج ته رانغې په کوم کال چې نبي کریم صلی الله علیه و آله وسلم حج او کړو. د مشرکانو د منع کولو وجه: پورتنی حديث کښې دا راغلې دی چې مشرکان د بيت الله د حج نه منع کړې شوې وو، ددې وجه علامه مهلب دا بيان کړې ده چې نبي صلی الله علیه و آله وسلم ته دا ويره وه چې

(۱) پورته حواله جات)

(۲) قوله: ان ابا هريرة رضي الله عنه: الحديث، مر تخريجه في الحج، باب لا يطوف بالبيت عريان.....) _

(۳) كشف الباری: ۴۷۹/۱ - ۴۸۰ _

(۴) كشف الباری: ۳۲۶/۱، الحديث الثالث _

(۵) كشف الباری: ۳۱۶/۲ _

(۶) كشف الباری: ۶۵۹/۱ _

مشرکان خداخواسته څه شرارت اوڼه کړې، څه مکر و فريب اوڼه کړې، ددې وجې نه هغوی منع کړې شو چې ددې کال نه پس به هيڅ يو مشرک حج ته نه راځي، دغه شان دې سره دا فائده هم اوښوه چې د الله تعالی په حکم سره د مشرکانو د نجاست نه بيت الله شريف پاک کړې شو، د الله تعالی ارشاد دې: (انما المشركون نجس فلا یقرءوا المسجد الحرام بعد عامهم هذا) ددې نه علاوه د الله تعالی په ارادې سره طواف کول هم د بې لباسۍ په حالت کښې منع کړې شو ځکه چې دا کار د الله تعالی د کور د ادب او د تعظیم نه خلاف دې. (۱) والله اعلم

ترجمة الباب سره د ایت او د حدیث مناسبت: ترجمة الباب سره د آیت کریمه او د حدیث مناسبت په دې معنی کښې دې چې په ترجمه کښې د یو کار متعلق سوال وو چې ددې څه طریقه کیدل پکار دی؟ نو د هغې جواب په آیت کریمه کښې موجود دې، دغه شان په حدیث شریف کښې هم ددې سوال جواب موجود دې.

د فقه حنفی په مشهور کتاب "هدایه" کښې دی:

"وإن صالحهم مدة، ثم رأى نقض الصلح أنفع لهم إلا ما، وقاتلهم لأنه عليه السلام بهذا المواعدة التي كانت بينه وبين أهل مكة، ولأن الصلحة لما تهدت كان النہد جهاداً، وإيفاء العهد ترك الجهاد مورداً ومعنى، فلا بد من النہد تحريزاً عن الغدر، وقد قال عليه السلام: "وفاء لا غدر" (۲) ولا بد من اعتبار مدة يبلغ خبر النہد إلى جميعهم، ويكتفى في ذلك ببعض مدة يتمكن ملكهم بعد عليه بالنہد من إنفاذ الخبر إلى أطراف مملكته لأن بذلك ينتفى الغدر.

قال: وإن بدوا بخيانة قاتلهم، ولم ينہد إليهم إذا كان ذلك باتفاقهم، لأنهم صاروا ناقضين للعهد، فلا حاجة إلى نقضه، بخلاف ما إذا دخل جماعة منهم، فقطعوا الطريق، ولا منعة لهم، حيث لا يكون هذا نقضاً للعهد، ولو كانت لهم منعة، وقاتلوا المسلمين علانية يكون نقضاً للعهد في حقهم، دون غيرهم لأنه بغير إذن ملكهم، ففعلهم لا يلزم غيرهم، حتى لو كان باذن ملكهم صاروا ناقضين للعهد لأنه باتفاقهم معنى" (۳)

(مكتوبة ۲۸)۔

(۱) شرح ابن بطلال، ۵/۳۶۰، ۳۶۱، وفتح الباری: ۶/۲۷۹۔

(۲) قال العلامة الزيلعي رحمه الله عن هذا الحديث (ما ملخصه): لم أجده مرفوعاً، ولا حمد واصحاب السنن وابن حبان من حديث عمرو بن عبسة أنه غزا مع معاوية، فكان يقول: الله أكبر، وفاء لا غدر. "انظر الدراية في تخريج احاديث الهداية للزيلعي: ۳/۳۹۰-۳۹۱، رقم (۵۷۹۵)، وكذا انظر سنن أبي داود، رقم (۲۷۵۹)، والترمذي، رقم (۱۵۸۰)، ومسند احمد، حديث عمرو بن عبسة ۵/۸۰۳، رقم (۱۷۱۴۰)، ومسند الطيالسي ۲/۹-۱۰، رقم (۱۲۵۱)، وسنن النسائي الكبرى: ۵/۲۲۳، كتاب السير، رقم (۸۷۳۲)، وآخرون)۔

(۳) الهداية: ۲/۵۶۳، كتاب السير، باب المواعدة ومن يجوز امانه)۔

۱۶) باب: اِثْمٌ مِّنْ عَاهِدَتُمْ غَدَرَ

د ترجمه الباب مقصد په دې باب کښې امام بخاری د تګنۍ او وعده خلافی گناه بیان کړې ده چې معاهده اوشی او بیا د خپل طرفنه وعده خلافی کول او تګنۍ کول نو دا ډیر لوئې سخت جرم، لویه گناه او حرام کار دې برابره خبره ده که یو مسلمان سره وی یا غیر مسلم سره وی (۱).
قوله: وقوله: والذین عاهدت منهم ثم ینقضون عہدہم فی کل مرة وهم لا

یتقون: / الانفال: ۵۶

او د الله تعالی دا وینا چې تاسو چا سره معاهدې کړې دي، بیا هر ځل هغوی خپله وعده ماتوی او دوی د وعده خلافی د انجام نه نه ویرېږي.

د آیت کریمه شان نزول او تفسیر: قاضی بیضاوی فرمائی چې دلته د وعده خلافو نه مراد د بنو قریظه یهودیان دي، هغوی نبي ﷺ سره معاهده کړې وه چې مونږ به ستاسو خلاف د هیچا څه مدد نه کوو لیکن هغوی بد عہدی او کړه او د اسلحو په ذریعې سره ئې د مشرکانو مدد او کړو، چې کله پوښتنه او شوه او حقیقت حال معلوم شو نو وې وئیل چې زموږ نه هیر شو. بیا ورسره نبي ﷺ صلح او کړه لیکن هغوی وعده خلافی او کړی او د غزوۍ خندق په موقع ئې د نبي ﷺ خلاف د مشرکانو مدد او کړو او مشهور یهودی کعب بن اشرف د مدینې منورې نه د مکې مکرمې سفر صرف د دې وجې نه او کړو چې د مکې مکرمې مشرکان خپل ملګري جوړ کړي (۲).
د آیت کریمه نه دا خبره معلومېږي چې وعده خلافی او د هوکه بازی ډیر لوئې جرم دې (۳)، ورنه داسې به د دې مذمت نه وو شوې، ځکه چې په دې آیت کریمه کښې د یهودیانو د دې کار خرابی او قباحیت بیان کړې شوې دي.

د آیت کریمه او ترجمه الباب مینځ کښې مناسبت: ترجمه الباب سره د آیت کریمه مناسبت واضح دې ځکه چې په ترجمه الباب کښې وعده خلافی ته گناه وئیلې شوې ده، د هغې دلیل په آیت کښې موجود دې چې دا کار ډیر خراب او ناکاره کار دې، د هېڅ یو مسلمان دپاره دا مناسب نه ده چې هغه دا کار لو کړي، د دې وجې نه د دې نه ځان ساتل پکار دی.
د دې نه پس امام بخاری په ترجمه کښې درې حدیثونه ذکر کړي دي، اولنې حدیث د حضرت عبدالله بن عمرو رضی الله عنہما دې.

۳۰۰۷: (۲) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُرَّةَ عَنْ مُشْرُقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

(۱) فتح الباری: ۶/۲۸۰، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۱)۔

(۲) القسطلانی: ۵/۲۴۲، وتفسیر البيضاوی مع حاشيته للشهاب الخفاجی: ۴/۴۹۴، سورة الانفال (۶۵)۔

(۳) عمدة القاری: ۱۵/۱۰۱)۔

(۴) قوله: عن عبدالله.....: الحديث، مر تخريجه في الايمان، باب علامة المنافق، انظر كشف الباری: ۲/۲۸۳)۔

وسلم - «أَرْبَعٌ خِلَالٍ مَنْ كُنَّ فِيهِ كَانَ مُنَافِقًا خَالِصًا مَنْ إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ، وَإِذَا عَاهَدَ غَدَرَ وَإِذَا خَاصَمَ فَجَرَ، وَمَنْ كَانَتْ فِيهِ خَصْلَةٌ مِنْهُنَّ كَانَتْ فِيهِ خَصْلَةٌ مِنَ النِّفَاقِ حَتَّى يَدْعَاهَا». ار: ۱۳۴

رجال الحديث

- ① قتيبة بن سعيد: دا مشهور محدث قتيبة بن سعيد ثقفی بغلانی دی، د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب إفشاء السلام....." کښې تیره شوې ده. (د)
 - ② جریر: دا جریر بن عبد الحمید بن قرط الضبی دی، د دوی حالات په کتاب العلم، "باب من جعل لاهل العلم أياماً معلومة" کښې تیر شوې دی. (د)
 - ③ الأعمش: دا سلیمان بن مهران دی چې په اعمش کوفی سره مشهور دی. د دوی ترجمه په کتاب الايمان، "باب ظلم دون ظلم" کښې راغلې ده. (د)
 - ④ عبدالله بن موه: دا مشهور تابعی حضرت عبدالله بن موه کوفی دی.
 - ⑤ مسروق: دا مشهور تابعی حضرت مسروق ابن اجدع ابو عائشه دی. ددې دواړو حضراتو تذکره په کتاب الايمان، "باب علامة المنافق....." کښې تیره شوې ده. (د)
 - ⑥ عبدالله بن عمرو: دا مشهور صحابی حضرت عبدالله بن عمرو بن العاص رضی الله عنه دی. د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب المسلم من سلم المسلمون....." کښې راغلې دی. (د)
- د حدیث مبارک ترجمه: حضرت عبدالله بن عمرو فرمائی چې نبی فرمائی چې خلور عادتونه او خصلتونه داسې دي چې دا په کوم کس کښې وي نو دا به خالص منافق وي، یعنې چې خبرې کوي او دروغ وائی، وعده او کړې نو د هغې خلاف ورزی او کړې، چا سره عهد او کړې نو بد عهدی او کړې او جنگ کوي نو دې دوران کښې کنخل کوي، د حد نه تجاوز کوي او په کوم کس کښې چې ددې خلورو عادتونه یو عادت وي نو په هغه کښې به د منافقت یو خصلت وي، تردې چې دا یو هم پرېږدي.
- دا حدیث چونکه په کتاب الايمان (د) کښې مکمل وضاحت سره تیر شوې دی، ددې وجې نه دلته صرف په ترجمه باندې بس والې کړې شوې دي.

(^۱) کشف الباری: ۲/۱۸۹ -

(^۲) کشف الباری: ۳/۲۶۸ -

(^۳) کشف الباری: ۲/۲۱ -

(^۴) کشف الباری: ۲/۲۸۰ - ۲۸۱ -

(^۵) کشف الباری: ۱/۶۷۹ -

(^۶) کشف الباری: ۲/۲۷۳ - ۲۷۵ - ۲۸۳ - ۲۹۰ -

ترجمة الباب سره د حديث شريف مطابقت: حضرت عبداللہ بن عمرو رضي الله عنه ددي حديث مطابقت ترجمه الباب سره واضح دي ځكه چې په دي كښې يوه جمله د "واذا احاد غدر" ده چې د منافق خصلت دي، ددي وجې نه په يو حقيقي مؤمن كښې دا څيز نه شي كيدې، لكه څنگه چې نور بيكاره خصلتونه نه دي كيدل پكار دويم حديث مبارك د حضرت علي رضي الله عنه دي.

۳۰۰۸: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ بْنُ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّمِيمِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَلِيٍّ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ مَا كَتَبْنَا عَنْ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - إِلَّا الْقُرْآنَ، وَمَا فِي هَذِهِ الصَّحِيفَةِ، قَالَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «الْمَدِينَةُ حَرَامٌ مَا بَيْنَ عَابِرِ الْإِلَى كَذَا، فَمَنْ أَحْدَثَ حَدَّثًا، أَوْ آوَى مُحَدِّثًا، فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لَا يَقْبَلُ مِنْهُ عَدْلٌ وَلَا صَرْفٌ، وَذِمَّةُ الْمُسْلِمِينَ وَاحِدَةٌ يَسْعَى بِهَا أَذْنَاؤُهُمْ. فَمَنْ أَخْفَرُ مُسْلِمًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لَا يَقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَدْلٌ، وَمَنْ وَالَى قَوْمًا يَغِيرُوا ذِمَّةَ مَوَالِيهِ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لَا يَقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَدْلٌ». [ر: ۱۷۷۱]

رجال الحديث

- ① محمد بن كثير: دا محمد بن كثير بصرى دي. د دوى تذكره په كتاب العلم، "باب الغضب في الموعظة....." كښې تيره شوې ده. (۱)
- ② سفیان: دا مشهور محدث سفیان بن سعيد الثوري دي. د دوى حالات په كتاب الايمان، "باب علامة المنافق" كښې تير شوې دي. (۲)
- علامه عيني رحمته الله دلته سفیان ته ابن عيينه وئيلې دي (عمدة القارى: ۱۵/۱۰۴) دا صحيح نه ده ځكه چې د محمد بن كثير په استاذانو كښې د ابن عيينه نوم نه ملاويږي. او گوري تهذيب الكمال: ۲۱/۳۳۵، دوى ته غالباً ددي خبرې نه مغالطه شوې ده چې د محمد بن كثير په نوم سره يو راوى هم دي چې واقعي د ابن عيينه شاگرد دي او دي ئې شيخ دي نو دا د نظر په سبقت باندې محمول كيدې شي، او گوري تهذيب الكمال: ۲۱/۳۳۹، و: ۱۱/۱۸۷. (۳)
- ③ الاعمش: دا سليمان بن مهران كوفى اسدى دي، د دوى حالات هم په كتاب الايمان، "باب ظلم دون ظلم" كښې راغلي دي. (۴)

① (عمدة القارى: ۱۵/۱۰۱، وشرح القسطلانى: ۵/۲۴۲)

② (قوله: عن علي رضي الله عنه : "الحديث، مر تخريجه فى كتاب العلم، باب كتابة العلم) -

③ (كشف البارى: ۳/۵۳۶)

④ (كشف البارى: ۲/۲۸۷)

⑤ (كشف البارى: ۲/۲۵۱)

③ ابراهیم التیمی: دا ابراهیم بن یزید شریک دې د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب خوف المؤمن من أن يحبط عمله...." کښې تیره شوې ده. (۱)

⑤ ایبه: د ایبه نه مراد یزید بن شریک تیمی کوفی دې. (۲)

⑥ علی: د حضرت علی بن ابی طالب حالات په کتاب العلم، "باب إثم من كذب على...." کښې راغلي دي. (۳)

دا حدیث شریف چونکه وړاندې مختلفو ځایونو کښې تیر شوې دې، هلته ددې تفصیل سره وضاحت هم شوې دې، ددې وجې نه مونږ هغه دلته دوباره نه ذکر کوو. (۴)
ترجمة الباب سره د حدیث مطابقت: د علامه عینی د وینا مطابق ترجمة الباب سره د حدیث مطابقت ددې جملې نه ثابتیږي، "فمن أحدث حدثاً أو آوى محدثاً...." ځکه چې په دین کښې څه نوې خبره پیدا کول، پیدا کوونکی ته پناه ورکول، حفاظت کول وغیره داسې کارونه دي چې په دې کښې د بد عهدئ او د غدر معنی موندلې شي، ددې وجې نه په حدیث شریف کښې مذکوره ټول کسان د لعنت مستحق هم او ګرځیدل. (۵) چې "فعليه لعنة الله والملائكة والناس اجمعين"

او د حافظ صاحب رائي داده چې دا ترجمه ددې جملې "من أخفر مسلماً...." نه ثابتیږي، ځکه چې د اخفار بالخاء المعجمة معنی ده وعده خلافی کول. (۶) نو په دې جمله کښې دا کار ښودلې شوې دې چې مسلمان سره د هوکه او وعده خلافی کول د لعنت او د ملامتیا مستحق څیز دي. والله اعلم بالصواب

دریم حدیث د حضرت ابوهریره رضی الله عنه دې.

۳۰۰۹: قَالَ أَبُو مُوسَى حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا لَمْ تَجْتَبُوا دِينَارًا وَلَا دِرْهَمًا فَقِيلَ لَهُ وَكَيْفَ تَرَى ذَلِكَ كَأَنِّي يَا أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ إِي وَالَّذِي نَفْسُ أَبِي هُرَيْرَةَ بِيَدِهِ عَنْ قَوْلِ الصَّادِقِ الْمُصْذِقِ. قَالَ أَعَمَّ ذَلِكَ قَالَ تُنْتَهَكَ ذِمَّةُ اللَّهِ وَذِمَّةُ رَسُولِهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -، فَيَشُدُّ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ قُلُوبَ أَهْلِ الذِّمَّةِ، فَيَمْنَعُونَ مَا فِي أَيْدِيهِمْ.

(۱) کشف الباری: ۲/۵۴۴ -

(۲) د دوی د حالاتو دپاره اوګوری، کتاب فضائل المدينة، باب حرم المدينة -

(۳) کشف الباری: ۴/۱۴۹ -

(۴) اوګوری، کشف الباری، کتاب العلم: ۴/۲۳۳، و کتاب فضائل المدينة، باب حرم المدينة، و کتاب الحزبة، باب ذمة المسلمين وجوارهم واحدة -

(۵) عمدة القاری: ۱۵/۱۰۲ -

(۶) فتح الباری: ۶/۲۸۰، وارشاد الساری: ۵/۲۴۳ -

رجال الحديث

- ① ابو موسى: دا ابو موسى محمد بن المثنى بن عبيد عنزي بصرى دې د دوى تذکره په کتاب الايمان، "باب خلاوة الايمان" کښې تيره شوې ده. (١)
- ② هاشم بن القاسم: دا ابو النضر هاشم بن قاسم تميمي، کناني، ليشى دې. (٢)
- ③ اسحاق بن سعيد: دا اسحاق بن سعيد بن عمرو بن سعيد بن العاص دې. (٣)
- ④ اييه: دا اييه نه مراد سعيد بن عمرو بن سعيد دې. (٤)
- ⑤ ابو هريره: د حضرت ابو هريره رضي الله عنه حالات په کتاب الايمان کښې شروع کښې تير شوې دي. (٥)
- دا حديث موصول دې يا معلق؟ د صحيح بخارى شريف په اکثرو نسخو کښې تعليقا "قال ابو موسى....." راغلي دي، هم دا خبره اصحاب اطراف (٦) علامه اسماعيلي، امام حميدي (٧) او ابو نعيم هم کړې ده ليکن په بعضي نسخو کښې "حدثنا ابو موسى" راغلي دي چې ددې خبرې طرفته اشاره ده چې دا حديث موصول دې، ليکن دا صحيح نه ده، اولنې قول صحيح دې چې دا حديث معلق دې. (٨)
- پورتني صيغه به په سماع باندې محمول وي يا نه؟ بيا د اصول حديث په عالمانو کښې په دې خبره کښې اختلاف دې چې آيا دا صيغه يعنې قال وغيره د عننه قائم مقام کيدو سره په سماع باندې محمول کيږي يا نه؟ نو بعضي خو دې لره په سماع باندې محمول کوي او بعضي ئې نه محمول کوي ليکن په دې مسئله کښې تحقيقي قول هم دادې چې که د راوي يا د محدث عادت دا وي چې هغه ددې نه سماع مراد اخلي او په دې کښې ئې استعمالوي نو په سماع باندې به محمول وي او که داسې نه وي نو بيا به په سماع باندې محمول نه وي. علامه ابن الصلاح، خطيب، علامه عراقى، حافظ ابن حجر او علامه عيني وغيره دې ته راجح وئيلي دي. (٩)

١ (کشف الباری: ۲/۲۵)۔

٢ (د دوى د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب الوضوء، باب وضع الماء عند الخلاء)۔

٣ (د دوى د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب العيدین، باب ما يکره من حمل السلاح.....)۔

٤ (د دوى د حالاتو دپاره اوگورئ، کتاب الوضوء، باب الاستنجاء بالحجارة)۔

٥ (کشف الباری: ۱/۶۵۹)۔

٦ (تحفة الاشراف بمعرفة الاطراف: ۹۵۰۴/، رقم (۱۳۰۸۷))۔

٧ (الجمع بين الصحيحين: ۲۶۱/۳ افراد البخارى، رقم (۲۵۷۹))۔

٨ (عمدة القارى: ۱۵/۱۰۲، وفتح الباری: ۶/۲۸۰، وارشاد السارى: ۵/۲۴۳)۔

٩ (انظر تدريب الراوى: ۱/۲۱۹، النوع الحادى عشر، الفرع الثالث: التعليق الذى يذكره الحميدى.....، وفتح الباری: ۶۲۸۰، وعمدة القارى: ۱۵/۱۰۲، وايضا انظر قواعد فى علوم الحديث: ۱۶۳-۱۶۴)۔

د مذکوره تعلیق تخریج: دا تعلیق ابونعیم اصفهانی رحمته الله په خپل "مستخرج" کښې، امام احمد رحمته الله په مسند کښې او ابویعلی رحمته الله په خپل مسند کښې موصلاً نقل کړې دي.

قوله: قال: كيف أنتم إذا لم تجتبوا ديناراً، ولا درهماً؟ فقل له: وكيف ترى ذلك كائناً يا أبا هريرة؟ حضرت ابوهريره رضي الله عنه فرماني چې هغه وخت به ستاسو څه حال وي چې کوم وخت تاسو ته په خراج کښې څه درهم، دينار نه ملاويږي؟ نو ورته اووئيږي شو ائې ابوهريره! ستاسو په خيال کښې به دا څنگه او ولې وي؟

د تجتبوا صرفي او لغوي تحقيق: د "تجتبوا" کلمه د باب افتعال نه د جمع مذکر حاضر صيغه ده، په حالت د جزم کښې ده، په مجرد کښې دا د الجهاية. بالحيم والهاء المؤحدة، وبعد الالف ياء. نه مشتق ده، ددې معنی ده مطلقاً ټيکس ليکن دلته ددې نه مراد خراج او جزیه ده، ځکه چې دا هم يو قسم ټيکس دې چې په کفارو باندې لازمولې شي.

په دې جمله کښې حضرت ابوهريره هغه پيشن گوټی ذکر کړې ده کومه چې هغوی د نبی صلی الله علیه و آله نه د مستقبل په باره کښې اوریدلې وه چې آئنده به یو داسې زمانه راشي چې په خراج او جزیه کښې به تاسو ته هېڅ هم نه ملاويږي، اهل ذمه وغیره به تاسو ته ټيکس نه ادا کوي، په دې باندې اوریدونکو د حیرانتیا اظهار او کړو چې ائې ابوهريره! یا داسې هم کیدې شي چې ذميان مونږ ته جزیه وغیره نه ادا کوي؟

قوله: قال: إني والذي نفس أبي هريرة بيده عن قول الصادق المصدوق:

حضرت ابوهريره رضي الله عنه او فرمائیل چې او اقسام دې د هغه ذات چې د چا په قبضه قدرت کښې د ابوهريره روح دې، دا خبره د صادق او مصدوق نه د اوریدلو نه پس تاسو ته کوم.

کلمه د "إني" د همزه کسرې او د یاء سکون سره ده، دا حرف ایجاب دې.

بیا د صادق معنی خو ښکاره ده لیکن د مصدوق څه معنی ده، په دې کښې دوه اقوال دي:

① مصدوق یعنی نبی صلی الله علیه و آله ته چې کومه خبره او ښودلې شوه نور بنسټیا ورته او ښودلې شوه مثلاً جبرائیل چې ورته کومه خبره هم کړې ده نور بنسټیا ئې کړې ده.

② مصدوق په معنی د المصدق (اسم مفعول) یعنی د چا چې تصدیق کړې شوې وي، ددې معنی په صحیح والی کښې هم څه شک نشته.

قوله: قالوا: عمر ذاك؟ خلقو ټپوس او کړو چې داسې به ولې وي یعنی ذميان چې مونږ ته د

(^۱) فتح الباری: ۶/۲۸۰، وتغلیق التعلیق: ۳/۴۸۵، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۲، ومسند الامام احمد: ۲/۳۳۲، رقم

(۸۳۶۸)، مسند ابی هريرة..... ومسند ابی یعلی: ۵/۵۰۶، رقم (۶۶۰۰).

(^۲) عمدة القاری: ۱۵/۱۰۲، وفتح الباری: ۶/۲۸۰، وارشاد الساری: ۵/۲۴۳.

(^۳) ارشاد الساری: ۵/۲۴۳.

(^۴) پورته حواله، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۲، وشرح الکرمانی: ۱۳/۱۴۳.

جزیه را کولو نه انکار کوی نو دا ولی؟

قوله: قال: تنتهك ذمة الله وذمة رسوله صلى الله عليه وسلم فيشد الله عز وجل

قلوب أهل الذمة فيمنعون ما في أيديهم: حضرت ابوهريره رضي الله عنه او فرمائیل: د الله تعالی او د هغه رسول ﷺ سره وعدي او عهد به ماتولي شی نو نتیجه به داشی چې الله تعالی به د ذمیانو زړونه سخت کړی، د هغې نتیجه به بیا دا وی چې دا خلق به تاسو ته جزیه وغیره نه درکوی.

د پورتنی حدیث مبارک په عبارت کښې ددې خبرې وجه ښودلې شوې ده چې ذمیان به د جزیه او خراج ادا کولو نه ولې منکر شی؟ ددې وجه به دا وی چې کوم حقوق اسلام ورکړې دي، هغه به پامال کړې شی، دوی سره به سختی او ظلم کولې شی، چونکه د وعدي پوره والي ضروري دي، الله تعالی او د هغه رسول ﷺ ددې حکم ورکړې دي نو کله چې ددې حکم خلاف ورزی کيږي، دوی د ظلم و ستم نشانه گرځولې کيږي نو د الله تعالی له طرفه به مواخذه هم کيږي، د هغې اثرات به هم وی، ددې نه په حدیث شریف کښې په دې کلماتو سره تعبیر کړې شوې دي، "فيمنعون ما في أيديهم" چې هغوی به تاسو ته جزیه او خراج نه ادا کوی.

"تنتهك" فعل مجهول دي، د باب افتعال نه فعل مضارع مؤنث صيغه ده، ددې معنی ده پرده اخستل، ظلم و ستم او بې حرمتی وغیره، او د "ما في أيديهم" نه مراد جزیه وغیره ده. ^(۱) ددې معنی نور احادیث: امام حمیدي فرمائی چې امام مسلم هم د حضرت ابوهريره رضي الله عنه د باب د حدیث په شان یو مرفوع روایت په بل طریق سره نقل کړې دي. ^(۲) چې د هغې الفاظ دا دي: "منعت العراق درهماً و قفيزاً، ومنعت الشام مديناً و ديناراً، ومنعت مصر إردتها و ديناراً، وعدتم من حيث بدأتم، وعدتم من حيث بدأتم....." ^(۳)

چې "عراق به خپل قفيز او درهم منع کړی، شام به خپل مد او دينار منع کړی، مصر به خپل اردب ^(۴) او دينار منع کړی او تاسو به هلته واپس شی د کوم ځای نه چې تاسو شروع کړې وه..." په دې حدیث شریف کښې افعال خو د ماضی بیان کړې شوي دي لیکن مراد ددې نه مستقبل دي، ځکه چې په دې کښې ددې خبرې طرفته اشاره ده چې دا بیان کړې شوي څیز به خامخا

^(۱) فتح الباری: ۶/۲۸۰، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۲، وشرح القسطلانی: ۵/۲۴۴.

^(۲) فتح الباری: ۶/۲۸۰، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۲، والجمع بین الصحیحین: ۳/۲۶۱، افراد البخاری، رقم (۲۵۷۹)، و: ۳/۲۹۵، افراد مسلم، رقم (۲۶۷۶).

^(۳) أخرجه مسلم فی الفتن، باب لا تقوم الساعة يحسر الفرات عن جبل من ذهب، رقم (۷۲۷۷)، وايضا أخرجه ابو داود، کتاب الخراج.....، باب فی ایقاف ارض السواد و ارض العنوة، رقم (۳۰۳۵).

^(۴) اردب تقريباً د پنځه ويشتو پاؤندو وزن پیمان ده (يو پاؤند تقريباً نیم سير وي)، القاموس الوحید، مادة: اردب.

واقع کيږي نو د مبالغه کولو دپاره د ماضي افعال راوړلې شوې دي چې د مستقبل په معنی کښې اخستلې شوې دي.^(۱)

د حضرت جابر رضي الله عنه نه هم د داسې مفهوم يو حديث روايت دي، فرمائي: ”يوشك اهل العراق ان لا يحيى اليهم قفيز ولا درهم، قال ابو نضرة: قلنا من اين ذاك؟ قال: من قبل العجم ينعون ذاك، ثم قال: يوشك اهل الشام ان لا يحيى اليهم دينار ولا مدي، قلنا: من اين ذاك؟ قال: من قبل الروم.....“^(۲)

يعني ”نزدې ده چې اهل عراق ته به د درهم او د قفيز ادائيگي نه کيږي، د حديث راوي ابو نضره وائي چې مونږ او وئيل چې دا به د چاله طرفه وي؟ هغوی رضي الله عنه او فرمائيل، د عجميانو له طرفه چې هغوی به ددې ادا کول بند کړي. حضرت جابر رضي الله عنه بيا او فرمائيل چې نزدې ده چې اهل شام ته به د دينار او د مدي ادائيگي نه کيږي. مونږ (ابو نضره) تپوس او کړو، دا به د چاله طرفه وي؟ وې فرمائيل، دا به د روميانو له طرفه وي.“

فائده: ددې حديثونو يو معنی او مطلب خو هم هغه دي د کوم چې پورته ذکر اوشو چې د ذميانو له طرفه به خراج او جزیه بنده کړې شي، ددې وجه به داوی چې دوی سره به ناروا سلوک کيږي ليکن ابن الاثير جزري فرمائي چې ددې مطلب دا هم کيدې شي چې نبي صلى الله عليه وسلم په دې حديثونو کښې ددې خبرې پيشن گوئی کړې ده چې دا خلق به ډير زړ اسلام قبول کړي او دا کوم ټيکس او جزیه وغيره چې پرې لازم کړې شوې دي نو دا به د اسلام د قبلولو د وجې نه ختم شي، دغه شان به دا خلق د خپل اسلام په ذريعې سره ددې خراج او ټيکسونو منع کوونکی جوړ شي کوم ټيکسونه وغيره چې په دوی باندې لازم وو.^(۳)

ددې نه پس ابن الاثير جزري هغه مطلب بيان کړو کوم چې امام بخاري په خپل ترجمه الباب کښې ذکر کړې دي.^(۴) دې سره د امام بخاري رائي ته طاقت او قوت ملاويږي.

ترجمه الباب سره د تعليق مناسبت: ترجمه الباب سره د تعليق مناسبت داسې دي چې په ترجمه الباب کښې د وعدې د پوره کولو او د نه پوره کولو په صورت کښې د گناه کار کيدو بيان او کړې شو، ددې حديث نه هم د عهد د پوره کولو فضيلت او د نه پوره کولو په صورت کښې د سزا انجام معلومېږي.

لکه ذميانو سره که د هغوی د وعدې لحاظ او خيال اوساتلې شي، الله تعالی او د هغه رسول صلى الله عليه وسلم چې ورته کوم حقوق ورکړې دي د هغې خيال اوساتلې شي نو ددې ثمره او ميوه به د جزیه او خراج په صورت کښې ملاويږي، ورنه که داسې نه وي نو د ملاويدونکي مال نه به هم مسلمانان محروم شي چې دنيوی نقصان دي او د آخرت نقصان ددې نه علاوه دي.

(۱) فتح الباری: ۶/۲۸۰، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۲۔

(۲) الحديث اخرجه مسلم، كتاب الفتن، باب لا تقوم الساعة حتى يمر الرجل..... رقم (۷۳۱۵)۔

(۳) جامع الاصول في احاديث الرسول: ۱۰/۵۳۔

(۴) جامع الاصول في احاديث الرسول: ۱۰/۵۳۔

باب بلا ترجمه

د ترجمې مقصد دلته دا باب د ترجمې نه بغير دې (۱) او د تير شوې باب په شان فصل دې، دې کښې چې امام بخاری کوم روایتونه نقل کړي دي، د هغې تعلق ددې باب سابقه مضمون د عهد پوره کولو وغیره سره دې (۲).

۳۰۱۱، ۳۰۱۰ (۳) حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا أَبُو حَمْزَةَ قَالَ سَمِعْتُ الْأَعْمَشَ قَالَ سَأَلْتُ أَبَا وَايِلَ شَهِدَتْ صَفِيْنَةَ قَالَ نَعَمْ، فَسَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ حَنِيفٍ يَقُولُ اتَّبَعُوا رَأْيَكُمْ، رَأَيْتُنِي يَوْمَ أَبِي جَنْدَلٍ وَلَوْ أَسْتَطِيعُ أَنْ أُرْدَأَ أَمْرَ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - لَرَدَدْتُه، وَمَا وَضَعْنَا أَسْيَافَنَا عَلَى عَوَاتِقِنَا لَأَمْرٍ يَقْطَعُنَا إِلَّا الْأَسْهَلَ بِنَا إِلَى أَمْرٍ نَعْرِفُهُ غَيْرَ أَمْرِنَا هَذَا.

رجال الحديث

① عبدان: دا عبدالله بن عثمان بن جبلة عبدان دې. د دوی تذکره د بده الوسی په "الحديث الخامس" کښې تیره شوې ده (۴).

② ابو حمزه: دا ابو حمزه محمد بن میمون السکری دې (۵).

③ الاعمش: دا مشهور محدث سلیمان بن مهران دې. د دوی حالات په کتاب الایمان، "باب ظلم دون ظلم" کښې تیر شوې دي (۶).

④ ابو وائل: دا مشهور تابعی بزرگ حضرت ابو وائل شقیق بن سلمه دې. د دوی تذکره په کتاب الایمان، "باب خوف المؤمن من أن يحبط عمله..." کښې تیره شوې ده (۷).

⑤ سهل بن حنيف: دا مشهور انصاری صحابی حضرت سهل بن حنيف بن واهب رضی الله عنه دې (۸).

① قال الحافظ في الفتح (۲۸۱/۶): كذا هو بلا ترجمة عند الجميع (۹).

② پورته حواله، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۲ (۱۰).

③ قوله: سهل.....: الحديث، أخرجه البخاري في نفس هذا الباب، رقم (۳۱۸۲)، وكتاب المغازی، باب غزوة الحديبية، رقم (۴۱۸۹)، وكتاب التفسير، باب قوله: (اذ يباعدونك تحت الشجرة فعلم ما في قلوبهم.....)، رقم (۴۸۴۴)، وكتاب الاعتصام.....، باب ما يذكر من ذم الراي.....، رقم (۷۳۰۸)، ومسلم، كتاب الجهاد، باب صلح الحديبية.....، رقم (۴۶۳۴)، والنسائي في الكبرى، كتاب التفسير، قوله تعالى: (وهو الذي انزل السكينة.....)، رقم (۲/۱۱۵۰۴) (۱۱).

④ كشف الباری: ۱/۴۶۱ (۱۲).

⑤ د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الغسل، باب نفص البدین من..... (۱۳).

⑥ كشف الباری: ۲/۲۵۱ (۱۴).

⑦ كشف الباری: ۲/۵۵۹ (۱۵).

⑧ د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الجنائز، باب من قام لجنازة يهودی (۱۶).

قوله: قال: سئلت أبا وائل شهدت صفين؟ قال: نعم: امام اعمش فرمائی چې ما د ابو وائل نه تپوس او کړو چې ایا تاسو د صفین په جنگ کښې شریک وئ؟ هغوی او فرمائیل، او.

صفین: صفین، بکسرتین و تشدید الفاء. د عراق مشهور دریاب، د فرات په غاړه باندې د رقه او بالس مینځ کښې د یو ځانې نوم دې، دې مقام ته د حضرت علی عليه السلام او د حضرت امیر معاویه عليه السلام د فوجونو مینځ کښې د جنگ د وجې نه شهرت ملاو شو.

دا جنگ په یکم صفر المظفر ۳۷ هجری کښې شوی وو، د فریقینو په تعداد کښې اختلاف دې، د صحیح قول مطابق د حضرت علی عليه السلام په لښکر کښې یولاک شل زره او د حضرت معاویه عليه السلام فوجیان لس زره کم یولاک وو، په دې جنگ کښې دواړو طرفونو ته اویا زره کسان شهیدان شو، چې په دې کښې پنخوشت زره ملگری د حضرت علی عليه السلام او پنځه څلوېښت زره کسان د حضرت معاویه شامل وو، د حضرت علی عليه السلام له طرفه پنخوشت بدری صحابه کرام عليهم السلام هم شهیدان شو.

دا جنگ یو سل لس (۱۱۰) ورځو پورې جاری وو او د فریقینو مینځ کښې لس کم سل ځله جنگونه او مخامخ کیدل اوشو.

قوله: فسمعت سهل بن حنيف يقول: اتهموا رأيكم.....: نو ما د سهل بن حنيف نه واوریدل چې ائې خلقو! تاسو خپله رائې متهم او گنړئ. دا حدیث په مغازی کښې راغلي دي، هلته ددې پوره تشریح هم شوې ده، چې د هغې خلاصه د حدیث د ترجمې سره مونږ دلته ذکر کوو:

”په جنگ صفین کښې چې کله د حضرت علی عليه السلام او حضرت معاویه عليه السلام مینځ کښې جنگ شروع شو نو روړو د حضرت علی عليه السلام ملگری غالب راتلل، نزدې وه چې حضرت معاویه عليه السلام ته مکمل شکست اوشی چې په دې وخت کښې د حضرت عمرو بن العاص عليه السلام په رائې سره په دې خبره باندې اتفاق اوشو چې قرآن کریم به حکم فیصله کوونکې او گرځوو، په دې باندې د حضرت علی عليه السلام بعضې ملگرو اعتراض او کړو چې مونږ په دې وخت کښې غالب یو، په دې باندې حضرت سهل بن حنيف عليه السلام او فرمائیل، ”اتهموا رأيكم“ ائې خلقو! تاسو خپل ځان او خپله رائې هم متهم او گنړئ، ضروری نه ده چې ستاسو دا رائې صحیح وی، کیدې شی چې د مخالف فریق رائې صحیح وی، ځکه چې په صلح حدیبیه کښې زه موجود ووم، هغه وخت زما رائې دا وه چې جنگ کیدل پکار دی او صلح نه، ددې باوجود مونږ خپله رائې پریخوده او د نبی کریم صلی الله علیه و آله په رائې باندې مو عمل او کړو نو د هغې نتیجه او انجام ښه شو حالانکه هلته معامله د اسلام او د کفر وه او دلته معامله د مسلمانو خپل مینځ کښې ده، ددې وجې نه په دې معامله کښې خپله رائې حتمی گنړل او د مسلمانانو په قتل باندې اصرار کول

پکار نه دی او مونږ دا تورې د خه داسې کار دپاره اوچتې کړې نه دی چې هغه څیز مونږ په ویره او خوف کښې اچوی لیکن دا تورې هغه کار زموږ دپاره آسانولې شو لیکن د جنگ صفتین معامله دیره عجیبه شوې ده، ددې نه د خلاصی صورت اوس ذهن ته راځی. (د)

۳۰۱۱ (د) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ عَنْ أَبِيهِ حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو وَائِلٍ قَالَ كُنَّا بِصَقِينَ فَقَامَ سَهْلُ بْنُ حَنِيفٍ فَقَالَ أَيُّهَا النَّاسُ اتَّبِعُوا أَنْفُسَكُمْ فَإِنَّا كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- يَوْمَ الْحُدَيْبِيَّةِ، وَلَوْ نَرَى قِتَالًا لَقَاتَلْنَا، فَجَاءَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَلَسْنَا عَلَى الْحَقِّ وَهُمْ عَلَى الْبَاطِلِ فَقَالَ «بَلَى». فَقَالَ أَلَيْسَ قِتَالُنَا فِي الْجَنَّةِ وَقِتْلَاهُمْ فِي النَّارِ قَالَ «بَلَى». قَالَ فَعَلَى مَا تُعْطِي الدِّينَةَ فِي دِينِنَا أَنْتَرْجِعُ وَلَمَّا يُحْكِمِ اللَّهُ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ فَقَالَ ابْنُ الْخَطَّابِ، إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ، وَلَنْ يُضَيِّعَنِي اللَّهُ أَبَدًا». فَأَنْطَلَقَ عُمَرُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ فَقَالَ لَهُ مِثْلَ مَا قَالَ لِلنَّبِيِّ -صلى الله عليه وسلم- فَقَالَ إِنَّهُ رَسُولُ اللَّهِ، وَلَنْ يُضَيِّعَهُ اللَّهُ أَبَدًا. فَتَرَكْتُ سُورَةَ الْفَتْحِ، فَقَرَأَهَا رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- عَلَى عُمَرَ إِلَى آخِرِهَا. فَقَالَ عُمَرُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَوْفَتَنِي هُوَ قَالَ «نَعَمْ». [۳۹۵۳، ۴۵۶۳، ۶۸۷۸]

رجال الحديث

- ① عبدالله بن محمد: دا امام عبدالله بن محمد بن عبدالله مسندی دې د دوی تذکره په کتاب الایمان، "باب أمور الایمان" کښې تیره شوې ده. (د)
 - ② یحیی بن آدم: دا یحیی بن آدم کوفی دې. (د)
 - ③ یزید بن عبد العزیز: دا ابو عبدالله یزید بن عبد العزیز بن سیاه اسدی (د)، حماني، کوفی دې او د قطبه بن عبد العزیز ورور دې. (د)
- دې دخپل پلار عبد العزیز، اعمش، رقبه من مصلقه، عبید الله بن عمر، اسماعیل بن ابی خالد، هشام بن عروة، مسعر، حجاج بن ارطاة او د محمد بن عمرو بن علقمه وغیره نه روایت کوی.

۱ (اوگوری، کشف الباری، کتاب المغازی، باب غزوة الحديبية.....: ۴۰۰-۴۰۳، نور اوگوره، عمدة القاری: ۱۰۳/۱۵)

۲ (قوله: سهل بن حنيف: الحديث، مر تخريجه آنفا)۔

۳ (کشف الباری: ۶۵۷/۱)۔

۴ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الغسل، باب الغسل بالصاع ونحوه)۔

۵ (قوله: سياه: بكسر السين المهملة، وتخفيف الياء آخر الحروف، وبالياء، وصلا و وقفا، منصرف وغير منصرف، والاصح الانصراف، عمدة القاری: ۱۵/۱۰۴)۔

۶ (تهذيب الكمال: ۱۹۳/۳۲، وتهذيب التهذيب: ۳۴۶/۱۱)۔

او د دوی نه چې کوم خلق روایت کوی نو په هغوی کېنې اسحاق بن منصور سلولی، ابو احمد زبیری، ابو معاویه الضریر، عمرو بن عبد الغفار تمیمی، علی بن میسره رازی، هاشم بن عبد الواحد الجشاس او ابو نعیم رحمهم الله وغیره شامل دي.

امام احمد رحمته الله فرمائی، "ثقة" د

امام یحیی بن معین رحمته الله فرمائی، "ثقة" د

امام ابوداؤد رحمته الله فرمائی، "ثقة" د

امام ذهبی رحمته الله فرمائی، "ثقة" د

ابن حبان رحمته الله دې په کتاب الثقات کېنې ذکر کړې دي.

ددې نه علاوه حافظ ابن حجر، حافظ یعقوب بن سفیان، امام دارقطنی، امام ابوحاتم او امام

ترمذی رحمهم الله او نورو کسانو ورته هم ثقه وئيلي دي.

د امام بخاری رحمته الله نه علاوه امام مسلم، ابوداؤد او نسائی وغیره رحمهم الله هم د دوی نه

روایت اخستلي دي. رحمه الله تعالى رحمة واسعة

④ عبد العزيز: دا عبد العزيز بن سياه اسدي، حماني د، کوفی رحمته الله دي.

دې د خپل والد سياه او د حبيب ابن ابي ثابت، ابن ابي عمره، اعمش، شعبي، مسلم الملائى

الاعور او د حکم بن عتيبه وغیره رحمهم الله نه روایت کوي.

او کوم کسان چې د دوی نه روایت کوي نو په هغوی کېنې ددوی خوښ يزید او عبد الله بن

نمير، ابو معاویه، يعلى بن عبيد، يونس بن بكير، عبيد الله بن موسى، وكيع او ابو نعیم وغیره

رحمهم الله شامل دي.

^۱ (د استاذانو او شاگردانو دپاره اوگورئ، تهذيب الكمال: ۱۹۴/۳۲) _

^۲ (پورته حواله، وتهذيب التهذيب: ۳۴۷/۱۱، والجرح والتعديل: ۹۳۴۳/رقم (۱۱۶۹)) _

^۳ (تاريخ عثمان بن سعيد الدارمي، رقم (۵۷)، پورته حواله) _

^۴ (تهذيب الكمال: ۱۹۵/۳۲، وتهذيب التهذيب: ۳۴۷/۱۱) _

^۵ (الكاشف: ۳۸۷/۲، رقم (۶۳۳۷)) _

^۶ (الثقات: ۶۲۳/۷، وتهذيب الكمال: ۱۹۵/۳۲) _

^۷ (تقريب التهذيب، رقم (۷۷۷۷)، وتعليقات تهذيب الكمال: ۱۹۵/۳۲، وتهذيب التهذيب: ۳۴۷/۱۱، والجرح والتعديل، رقم (۱۱۶۹)، وسنن الترمذی، مناقب عمار بن ياسر، رقم (۳۷۹۹)، وحاشية سبط ابن العجمي على

الكاشف: ۳۸۷/۲، والمعرفة والتاريخ للفسوي: ۱۷۷/۳، الكنى..... ومن يعرف بالكنى) _

^۸ (تهذيب الكمال: ۱۹۵/۳۲، والكاشف: ۳۸۷/۲) _

^۹ (قوله: الحماني: بكسر الملهمة..... وشدة ميم وبنون. انظر تعليقات تهذيب التهذيب: ۳۴۰/۶، وتوضيح المشتبه، باب الجيم: ۴۱۷/۲) _

^{۱۰} (تهذيب الكمال: ۱۴۴/۱۸، وتهذيب ابن حجر: ۳۴۰/۶، والجرح والتعديل: ۴۵۰/۵، رقم (۱۷۸۹)) _

^{۱۱} (د استاذانو او د شاگردانو د تفصيل دپاره اوگورئ، تهذيب الكمال: ۱۴۵/۱۸) _

امام یحیی بن معین رحمته الله او امام ابو داؤد رحمته الله فرمائی، "ثقة" (۱)

ابو حاتم رحمته الله فرمائی، "محلہ الصدق" (۲)

ابن حبان رحمته الله دې په کتاب الثقات کښې ذکر کړې دې (۳)

ابن سعد رحمته الله فرمائی، "کان من خيار الناس، وله احاديث" (۴)

امام ذهبی رحمته الله فرمائی، "شيعي صدوق" (۵)

امام ابو ذرعه رحمته الله فرمائی، "لا باس به، هو من كبار الشيعة" (۶)

د دوی نه علاوه حافظ ابن حجر، امام عجلې، امام ابن نمير او حافظ يعقوب بن سفيان وغيره

رحمهم الله هم د دوی توثيق کړې دې چې دا ثقه دې (۷)

د امام ابو داؤد رحمته الله نه علاوه باقی پنځو امامانو د دوی روایت اخستلې دې (۸)

د ابو جعفر منصور د خلافت دوران کښې وفات شو (۹). رحمه الله رحمة واسعة

⑤ حبيب ابن ابي ثابت: دا حبيب بن ابي ثابت دينار کوفی رحمته الله دې (۱۰)

⑥ ابو وائل: حضرت ابو وائل رحمته الله حالات په کتاب الايمان "باب خوف المؤمن..." کښې راغلې

دې (۱۱)

دا حديث د تير شوي حديث دويم طريق دې، په دې طريق کښې د زور طريق په نسبت تفصيل

لږزيات دې ځکه چې په دې کښې د حضرت ابو جندل په معامله کښې د نبی صلی الله علیه و آله او حضرت

عمر رضی الله عنه مينځ کښې چې کومه مکالمه شوې وه د هغې تذکره په کښې هم شته، چې د هغې

تفصيل په مغازی کښې راغلې دې (۱۲)

(۱) تهذيب الكمال: ۱۴۵/۱۸، وتهذيب التهذيب: ۳۴۱/۶ _

(۲) تهذيب الكمال: ۱۴۶/۱۸، والجرح والتعديل، رقم (۱۷۸۹)، وتهذيب ابن حجر: ۳۴۱/۶ _

(۳) الثقات لابن حبان: ۱۱۴/۷ _

(۴) الطبقات الكبرى: ۳۶۳/۶، وتعليقات تهذيب الكمال: ۱۴۶/۱۸ _

(۵) الكاشف: ۶۵۵/۱، رقم (۳۳۹۱) _

(۶) تهذيب الكمال: ۱۴۶/۱۸، وتهذيب التهذيب: ۳۴۱/۶، والجرح والتعديل: ۴۵۱/۵ _

(۷) تقريب التهذيب، رقم (۴۱۱۴)، وتهذيب التهذيب: ۳۴۱/۶، وتعليقات تهذيب الكمال: ۱۴۶/۱۸ _

(۸) الكاشف: ۶۵۵/۱، وتهذيب الكمال: ۱۴۶/۱۸ _

(۹) الطبقات الكبرى: ۳۶۳/۶ _

(۱۰) د دوی حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الصوم، باب صوم داود عليه السلام _

(۱۱) كشف الباري: ۵۵۹/۲ _

(۱۲) كشف الباري، کتاب المغازی، باب غزوة الحديبية.....: ۳۶۷-۳۶۹ _

ترجمة الباب سره مناسبت: تیر شوي باب کښې امام بخاري رحمته الله دا وئيلي وو چې د غدر او د وعده خلافې انجام بهر حال خراب دي، هم دا نتیجه د حضرت ابو وائل رضي الله عنه ددې حديث نه هم ثابتېږي ځکه چې قريشو د صلح حديبيه نه پنځ کومه وعده خلافې او کړه د هغې نتیجه د هغوی دپاره دا شوه چې د فتح مکې په ذريعې سره مسلمانان په هغوی باندې غالب شو او قریش مقهور او مغلوب شو، ددې نه معلومه شوه چې د وعده خلافې انجام خراب وي او د وعدې د خیال او لحاظ ساتلو انجام غوره وي. لکه علامه عینی رحمته الله وغیره فرمائي:

”تعلق هذا الحديث بالباب المترجم من حيث ما آل امر قریش، في نقضهم العهد من الغلبة عليهم والقهر بفتح مكة فانه يوضح ان مآل الغدر مذموم، ومقابل ذلك مبدوح“ (۱)

۳۰۱۲ (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَسْمَاءَ ابْنَةِ أَبِي بَكْرٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا - قَالَتْ قَدِمْتُ عَلَى أُمِّي وَهِيَ مُشْرِكَةٌ فِي عَهْدِ قُرَيْشٍ، إِذْ عَاهَدُوا رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَمَدَّتْ يَدَهُمْ، مَعَ أَبِيهَا، فَاسْتَفْتَتْ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ أُمِّي قَدِمَتْ عَلَى، وَهِيَ رَاغِبَةٌ، أَفَأَصِلُهَا قَالَ «نَعَمْ، صِلِيهَا». [ر: ۲۴۷۷]

رجال الحديث

① قتيبه بن سعيد: دا شيخ الاسلام قتيبه بن سعيد ثقفي رحمته الله دې د دوی تذکره په کتاب الايمان، باب افشاء السلام من الايمان “کښې تيره شوي ده (۲)

② حاتم بن اسماعيل: دا ابو اسماعيل حاتم بن اسماعيل کوفي رحمته الله دې (۳)

③ هشام بن عروة عن أبيه: د حضرت هشام بن عروة بن زبير بن عوام رحمته الله او د هغوی د والد صاحب يعنی د عروه تذکره په ”بدء الوحي“ او ”کتاب الايمان“، ”باب أحب الدين إلى الله آدمه“ کښې راغلي ده (۴)

⑤ أسماء بنت أبي بكر: د حضرت أسماء بنت أبي بكر رضي الله عنها تفصيلي حالات په کتاب العلم، ”باب من اجاب الفتيا بإشارة اليد“ کښې تير شوي دي (۵)

(۱) عمدة القاري: ۱۵/۱۰۳، وفتح الباري: ۶/۲۸۱-.

(۲) قوله: عن أسماء بنت.....: الحديث، مر تخريجه في الهبة، باب الهدية للمشركين) -.

(۳) كشف الباري: ۲/۱۸۹-.

(۴) د دوی د حالاتو دپاره اوگوري، کتاب الوضوء، باب، بعد استعمال فضل وضوء الناس) -.

(۵) كشف الباري: ۱/۲۹۱، و: ۲/۴۳۲- ۴۴۰-.

(۶) كشف الباري: ۳/۴۸۷-.

قوله: قالت: قدمت علي أمي: حضرت اسماء فرمائی چې زما مور ماته راغله. د حضرت اسماء د مور بی بی مختصر تعارف: دلته د ټولو نه مخکښې خبره خو دا ده چې د حضرت اسماء د مور نوم څه وو؟ په دې کښې مختلف اقوال دي. د ابن سعد، ابوداؤد طیالسی او د حاکم د روایت نه دا معلومېږي چې ددې نوم قتيله (مصفرا) وو. د حضرت عبدالله بن زبیر روایت دي:

”قدمت قتيلة بنت عبد العزی بن سعد من بنی مالک بن حسل علی ابنتها: أسماء بنت أبي بكر فی الهدنة، وكان أبو بكر طلقها فی الجاهلية بهدايا: ذیيب وسمن وقرظ (۱)، فابت اسماء أن تقبل هديتها أو تدخلها فی بیتها، وأرسلت إلى عائشة: سلی رسول الله صلی الله علیه وسلم، فقال: لتدخلها“ (۲) (اللفظ لابن سعد) یعنی ”قتيله بنت عبد العزی بن سعد..... خپلې لور حضرت اسماء بنت ابوبکر (رضی الله عنه) کړه د صلح په ورځو کښې راغله، حضرت ابوبکر (رضی الله عنه) ورته د جاهلیت په زمانه کښې طلاق ورکړې وو، څه سامان ئې هم ځان سره راوړلو مثلاً اوسکې، غوړې او زیورات وغیره. حضرت اسماء (رضی الله عنها) د هدیو د قبولولو نه انکار او کړو او ورته ئې کور ته د راتلو اجازت هم ورنه کړو او د حضرت عائشې (رضی الله عنها) طرفته ئې پیغام اولیږه چې په دې باره کښې د نبی (ﷺ) نه تپوس او کړئ. نبی (ﷺ) او فرمائیل چې هغه دې کور ته داخلیدې شی.“

د پورتنۍ روایت نه چې څنگه دا خبره معلومه شوه چې ددې نوم قتيله وو، نو دا هم معلومه شوه چې دا د حضرت اسماء (رضی الله عنها) حقیقی مور وه، ددې وجې نه دا د حضرت اسماء (رضی الله عنها) رضاعی مور تصور کول وهم دې (۳). او زبیر بن بکار (رضی الله عنه) ددې نوم قیل او ابن ماکوله قتله نقل کړې دي، کیدې شی چې دا چې د تصغیر په طور قتيله جوړ کړې وی (۴). او علامه داودی (رحمته الله علیه) ددې نوم ام بکر نقل کړې دي چې د هغې په باره کښې ابن التین (رحمته الله علیه) فرمائی چې کیدې شی دا کنیت وی (۵).

(۱) د ابوداؤد طیالسی په روایت کښې دا لفظ طاء مهمله سره قط راغلې دي، ددې معنی ده د غوږ والی. غالباً هم دا لفظ صحیح دي، قرظ (طاء معجمه سره) ددې معنی ده گوند، ددې دلته هیڅ مطلب نه جوړېږي، ددې وجې نه مونږ دلته ددې ترجمه په زیوراتو کالو سره کړې ده. ترجیحا لروایة الطیالسی. انظر: ۲۸۹/۲، رقم (۱۷۴۴)، او د حاکم (۵۲۷/۲) په روایت کښې. أقطا راغلې دي، ددې معنی ده پښیر (کچ) ددې معنی احتمال هم کیدې شی.

(۲) الطبقات الکبری: ۲۵۲/۸، ترجمه اسماء بنت ابی بکر، و مسند ابی داود الطیالسی: ۲۸۸/۲-۲۸۹، رقم (۱۷۴۴)، والحاکم: ۵۲۷/۲، رقم (۳۸۰۴)، کتاب التفسیر، سورة الممتحنة، ومطالب العالیة: ۳۸۷/۳، رقم (۳۷۷۸)، سورة الممتحنة من کتاب التفسیر، وجمهرة انساب العرب: ۱۳۷/۱.

(۳) فتح الباری: ۵/۲۳۳.

(۴) پورته حواله، والاکمال لابن ماکولا: ۷/۱۳۰، باب قیلة وقتلة.

(۵) فتح الباری: ۵/۲۳۳.

د حضرت ابوبکر رضی الله عنه خوښي عبدالله رضی الله عنه هم ددې نه وو. (۱)
 قوله: وهي مشرکة: دې حال کښې دا مشرکه وه.
 راجع هم داده چې د حضرت اسماء رضی الله عنها د مور انتقال د شرک په حالت کښې شوې دې،
 بعضې حضراتو چې ددې د اسلام د قبولیت وينا کړې ده نو دا غلطه ده. (۲)
 قوله: في عهد قریش اذ عاهدوا رسول الله صلى الله عليه وسلم ومدتهم: دې
 ورځو کښې چې کله قریشو د نبی صلی الله علیه وسلم سره صلح کړې وه.
 دلته د عهد نه مراد "صلح حدیبیه" ده.
 او مطلب دادې چې حضرت اسماء رضی الله عنها کره مور راغله نو دا د صلح حدیبیه او د فتح مکه
 مینځ کښې چې کوم وخت وو دغه وخت کښې راغلې وه. (۳)
 مع آیها: خپل پلار سره.
 په دې کښې ضمیر مجرور د حضرت اسماء رضی الله عنها طرفته راجع کیږي، یعنی د هغې مور سره د
 هغې نیکه هم وو. او دا غلط او تصحیف دې. صحیح لفظ "ابنها" دې، یعنی خپل ځوڼی سره
 راغلې وه، چې د هغه نوم حارث بن مدرک بن عبید بن عمرو بن مخزوم دې، کما قاله الزیدر بن
 بکار. حافظ ابن حجر رحمته الله فرمائی:
 "ولم أر له ذکر آئی الصحابة، فکانه مات مشرکاً" (۴)
 بیا د حضرت اسماء رضی الله عنها د نیکه په نوم کښې هم اختلاف دې، بعضو وئیلې دی چې
 عبدالعزی نوم دې او هم دا مشهور دې. (۵)
 او د علامه قسطلانی رحمته الله کلام په دې کښې ګډوډ دې لکه کله هغه د عبدالعزی نوم
 لیکي. (۶) او کله د حارث بن مدرک. (۷) لیکن دا غلط دې، اصل کښې خو حارث بن مدرک ئې
 د ځوڼی نوم دې، دغه شان مدرک بن عبید خاوند شو.
 قوله: فاستفتت رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالت: يا رسول الله صلی الله علیه وسلم، إن
 أمی قدمت علی وهي راغبة أفأصلها؟ قال: نعم، صلیها. : نو حضرت اسماء

(۱) پورته حواله.

(۲) فتح الباری: ۵/۲۳۴، وعمدة القاری: ۱۳/۱۷۴، کتاب الهبة، باب الهدية للمشرکین، رقم (۲۶۲۰).

(۳) فتح الباری: ۵/۲۳۴، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۴، وشرح القسطلانی: ۵/۲۴۵.

(۴) فتح الباری: ۵/۲۳۴، وایضا عمدة القاری: ۱۳/۱۷۳، وارشاد الساری: ۴/۳۶۲.

(۵) فتح الباری: ۵/۲۳۴، وعمدة القاری: ۱۳/۱۷۴، والاصابة: ۴/۲۲۹، رقم (۴۶).

(۶) لم اجد له فی شرح القسطلانی.

(۷) شرح القسطلانی: ۵/۲۴۵.

ﷺ نه تپوس اوکړو چې يا رسول الله ﷺ زما مور ماته راغلې ده او ددې خبرې طرفته ميلان لري چې زه ورسره صله رحمې اوکړم؟ نبی ﷺ او فرمائيل، چې بالکل ورسره صله رحمې اوکړه.

د فاستفتت او د قالت ضمير غائب د حضرت اسماء رضی اللہ عنہا طرفته راجع دي او د ابوذر او د حموی په نسخه کښې فاستفتت وقلت ضمير متکلم سره دي. (۱) او د "وهی راغله" دوه معنې دي:

① وهی راغله في ان تاخذ مني بعض المال چې هغه مانه د څه مال اخستلو باره کښې رغبت لري مطلب دا شو چې هغه ماته راغلې ده او ماته د هغې د راتگ مقصد دادې چې زه ورته څه مال ورکړم، يعنې څه پرې خرچ کړم او دا جائز ده چې يو ښځه خپلې مور يا پلار ته څه مال وغيره ورکړي، اگرچه مال د خاوند وي او مور پلار مشرکان وي، په دې باندې امام بخاري رحمه الله په کتاب الادب کښې دوه ترجمې هم قائم کړې دي. (۲)

② وهی راغله في الاسلام چې هغه د اسلام په قبلولو کښې رغبت لري، مطلب دادې چې هغه د اسلام د قبلولو په نيت راغلې ده. (۳)

هم ددې مطلب د بيانولو د وجې نه بعضې حضراتو ددې د مسلمانيدو قول نقل کړې دي، چې هغه ابو موسیٰ رضي الله عنه داسې رد کړې دي چې په هيڅ يو روايت کښې دا منقول نه دی چې دې ښځې اسلام قبول کړې وو، صحيح مطلب هم هغه دي کوم چې پورته تير شو چې دا د مال اخستلو دپاره راغلې وه، ددې وجې نه حضرت اسماء رضي الله عنها تپوس هم کړې وو چې که د اسلام د قبوليت په نيت راغلې وه نو د اجازت ضرورت بالکل نه وو. (۴)

ددې نه علاوه ددې جملې نورې معنې هم بيان کړې شوې دي. (۵)، په هغه ټولو کښې راجح قول دغه اولنې قول دي. کمايدل عليه صنيع البخاري ايضاً

ترجمة الباب سره د حديث شريف مناسبت: ما قبل ترجمة الباب سره ددې حديث تعلق او مناسبت په دې معنی کښې دي چې د غدر نه کولو تقاضه داده چې رسته دارانو سره صله رحمې او ښه سلوک جائز وي، اگرچه هغوی غير مذهب وي او بيشکه دا حديث ددې تقاضې مطابق دي. (۶)

(۱) پورته حواله.

(۲) صحيح بخاري، کتاب الادب، باب صلة الوالد المشرك، وباب صلة المرأة امها ولها زوج، نور اوگوره، كشف الباری، کتاب الادب: ۳۴۲-۳۴۴.

(۳) فتح الباری: ۲۳۴/۵، وعمدة القاری: ۱۷۴/۱۳، وارشاد الساری: ۲۴۵/۵.

(۴) فتح الباری: ۲۳۴/۵، وعمدة القاری: ۱۷۴/۱۳.

(۵) فتح الباری: ۲۳۴/۵.

(۶) عمدة القاری: ۱۰۴/۱۵، وفتح الباری: ۲۸۲/۶.

د حضرت شیخ الحدیث صاحب رائي: لکه څنگه چې تاسو دا خبره او کتله چې امام بخاري رحمه الله دله په ترجمه الباب کښې صرف "باب" وئيلې دې او وړاندې مونږ د بخاري د شارحينو په حوالې سره دا نقل کړې دی چې دا کالفصل من السابق، دې يعنی کوم مقصد چې د ماقبل باب ووهم هغه مقصد ددې باب هم دې او دا ددې تتمه ده. لیکن حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمه الله فرمائی چې ددې باب دپاره دا ترجمه قائمیدې شی "باب مضار الغدر و منافع عدمه.... ای الوفاء" (۱)

يعنی ددې باب د قائمولو مقصد دادې چې د بدعهدۍ، وعده خلافۍ نقصانات او د وعدې د پوره کولو فائدي او مصلحتونه بیان کړې شی.

بیشکه د باب احادیث بالکل ددې ترجمه الباب مطابق او موافق دی، اولنې حدیث چې د هغې تعلق حدیثیه سره وو نو دغه شان به دې ترجمې سره هم موافق شی ځکه چې نبی ﷺ او صحابه کرامو رضی الله عنهم د صلح حدیبیه د شرطونو پوره والې او کړو اگرچه د بعضې کسانو زړونه مطمئن نه وو لیکن د هغې میوه د "فتح مکه" په شکل کښې ښکاره شوه، ددې وجې نه الله تعالی صلح حدیبیې ته فتح مبین او فرمائیل. او دویم حدیث يعنی د حضرت اسماء رضی الله عنها حدیث د هغې تعلق هم د صلح حدیبیه سره دې ځکه چې د حضرت اسماء رضی الله عنها مذكوره مور دې ته راغلې وه نو دغه د صلح حدیبیې ورځې وې، ددې وجې نه مسلمانانو او په خپله حضرت اسماء رضی الله عنها د صلح حدیبیه د شرطونو د لحاظ ساتلو د وجې نه دې ښځې ته هیڅ هم اونه وئیل، هیڅ ضرر او نقصان ئې ورنه کړو بلکه فائده ئې ورته اورسوله حالانکه دا مشرکه ښځه وه او هر قسم کار ورسره ممکن وو، نو ددې نه د وعدې د پوره کولو اهمیت او فائده ښه طریقې سره واضح کیږي. والله اعلم بالصواب

⑧ باب: الْمَصَالِحَةُ عَلَى ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ، أَوْ وَقْتٍ مَعْلُومٍ

د ترجمه الباب مقصد: امام بخاري رحمه الله دله دا فرمائی چې کفارو سره کوم مصلحت او کړې شی نو هغه د دریو ورځو دپاره هم کیدې شی او ددې دپاره څه وخت هم مقرر کیدې شی. (۲) د صلحې زیات مدت څومره دې؟ په مقرر وخت کښې په مصالحت کولو کښې اتفاق دې، په دې کښې څه اختلاف نشته لیکن اختلاف په دې کښې دې چې د مصالحت زیات نه زیات مدت او وخت څومره دې؟

په اتمه اربعه کښې د امام شافعی رحمه الله او په یو روایت کښې د امام احمد رحمه الله رائي داده چې ددې مصالحت زیات نه زیاته موده لس کاله مقرریدې شی، که ددې نه زیاته موده مقرر کړې شو نو هغه به باطله وی، د هغې د زیاتوالي به هیڅ اعتبار نه وی. (۳)

(۱) (الابواب والتراجم للکانهلوی: ۲۰۹/۱)۔

(۲) (عمدة القاری: ۱۵/۱۰۴، وفتح الباری: ۲۸۲/۶)۔

(۳) (المغنی: ۹۲۳۸، رقم (۷۵۹۱)، والام: ۴/۲، ۱۸۹، المهادنة على النظر للمسلمين، رقم (۱۳۳۵۶))۔

دا حضرات استدلال د صلح حدیبیه نه کوی چې نبی ﷺ په صلح حدیبیه کښې لس کال موده مقرر کړې وه، لکه څنگه چې په ابوداؤد او سیرت د ابن اسحاق (کښې د لس کالو وضاحت موجود دي.

او امام اعظم ابوحنیفه، امام مالک او په یو روایت کښې امام احمد رحمهم الله تعالی فرمائی چې که دا موده د لسو کالو نه زیاته وی نو بیا هم جائزه ده، ددې دارومدار د وخت په امام

باندې دي، هغه چې څومره وخت او موده مقررول مناسب گنړی نو هغه مقررولې شی (۱). او د صلح حدیبیه د مودې نه استدلال کول بې محله دي، ځکه چې که حضور اقدس ﷺ لس کاله موده مقرر کړې وه نو ددې نه دا څنگه ثابتې شوه چې ددې نه زیاتوالې ممکن نه دي او نبی ﷺ دا لس کاله موده انتهائی او آخری موده گرځولې دي؟ دغه وخت د مصلحت تقاضه دا وه ددې وجې نه نبی ﷺ لس کاله موده مقرر کړې وه.

دغه شان امام ابوحنیفه رضی الله عنه فرمائی چې دا یو عقد دي چې د لسو کالو دپاره جائز دي نو ددې نه زیاتې مودې دپاره به هم جائز وی لکه څنگه چې په اجاره کښې وی (۲).

۳۰۱۳: (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عُمَانَ بْنِ حَكِيمٍ حَدَّثَنَا شَرِيعُ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُونُسَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ حَدَّثَنِي الْبَرَاءُ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - لَمَّا أَرَادَ أَنْ يَغْتَمِرَ أَرْسَلَ إِلَى أَهْلِ مَكَّةَ يَسْتَأْذِنُهُمْ لِيَدْخُلَ مَكَّةَ، فَاسْتَرْطَوْا عَلَيْهِ أَنْ لَا يُقِيمَ بِهَا إِلَّا ثَلَاثَ لَيَالٍ، وَلَا يَدْخُلَهَا إِلَّا بِجُلْبَانِ السِّلَاحِ، وَلَا يَدْعُو مِنْهُمْ أَحَدًا، قَالَ فَأَخَذَ يَكْتُبُ الشَّرْطَ بَيْنَهُمْ عَلَى بْنِ أَبِي طَالِبٍ، فَكَتَبَ هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ. فَقَالُوا لَوْ عَلِمْنَا أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ لَمْ نَمْنَعَكَ وَلَبَّيْنَاكَ، وَلَكِنْ أَكْتُبْ هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ. فَقَالَ «أَنَا وَاللَّهِ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ وَأَنَا وَاللَّهِ رَسُولُ اللَّهِ». قَالَ وَكَانَ لَا يَكْتُبُ قَالَ فَقَالَ لِعَلِي «أَمْرُ رَسُولِ اللَّهِ». فَقَالَ عَلِي وَاللَّهِ لَا أَفْحَاهُ أَبَدًا. قَالَ «فَأَرْنِيهِ». قَالَ فَأَرَاهُ آيَةً، فَمَحَاهُ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَدِيهِ،

(۱) قال ابن المنذر: اختلف العلماء في المدة التي كانت بين رسول الله ﷺ وبين أهل مكة عام الحديبية؟ قال عروة: كانت أربع سنين، وقال ابن جريج: كانت ثلاث سنين، وقال ابن اسحاق: كانت عشر سنين. انظر تفسير القرطبي: ٤٠/٨.

(۲) امام قرطبي رحمه الله فرمائی: وقال ابن حبيب عن مالك رحمه الله: تجوز مهادنة المشركين السنة والسنتين والثلاث، والى غير مدة. الجامع لاحكام القرآن: ٤١/٨. وانظر ايضا بداية المجتهد: ٤٣٩/٣، الفصل السادس في جواز المهادنة..... والهداية: ٢٠٤/٤. باب المواعدة، من كتاب السير.

(۳) المغني/ ٩٢٣٨.

(۴) قوله: البراء: الحديث، مر تخريجه في كتاب العمرة باب كم اعتمر النبي ﷺ؟.

فَلَمَّا دَخَلَ وَمَضَى الْيَّامُ أَتَوْا عَلِيًّا فَقَالُوا مُرَّصَاحُكَ فَلْيَزْمِلْ. فَذَكَرَ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- فَقَالَ «نَعَمْ» ثُمَّ ارْتَحَلَ. [ار: ۱۶۸۹]

رجال الحديث

- ① احمد بن عثمان بن حكيم: دا ابو عبد الله احمد بن عثمان بن حكيم بن دينار ازدي كوفي رضي الله عنه دي.
- ② شريح بن مسلمه: دا شريح بن مسلمه كوفي رضي الله عنه دي.
- ③ ابراهيم بن يوسف: دا ابراهيم بن يوسف بن ابي اسحاق كوفي رضي الله عنه دي.
- ④ ابي: د اب نه مراد يوسف بن ابي اسحاق رضي الله عنه دي.
- ⑤ ابواسحاق: دا مشهور محدث ابواسحاق عمرو بن عبد الله كوفي سبيعي رضي الله عنه دي. د دوى حالات په كتاب الايمان، "باب الصلوة من الايمان" كښي تير شوي دي.
- ⑥ البواء: د براء بن عازب رضي الله عنه حالات هم په كتاب الايمان كښي پورتنی مذكوره باب كښي تير شوي دي.

د باب د حديث شريف ترجمه: حضرت براء بن عازب رضي الله عنه فرمائي چې كله نبي ﷺ د عمرې د ادا كولو اراده او كړه نو په مكه مكرمه كښي د داخلیدو دپاره ئې د اهل مكه نه اجازت طلب كولو دپاره پيغام واستوو. نو اهل مكه دا شرط اولگوو چې تاسو به دلته صرف درې ورځې قيام كوئ، اسلحه به درسره بند وي او د اهل مكه هيڅ يو كس به هم تاسو ځان ته راتلو ته نه پرېږدي. حضرت براء رضي الله عنه فرمائي چې د فريقينو مينځ كښي كوم شرائط مقرر كړي شو نو دا حضرت علي رضي الله عنه ليكل نو هغوی اوليكل، "هذا ما قاض عليه محمد رسول الله" په دې باندې د مكې مكرمې قريشو او وئيل چې كه زمونږ دا يقين وو چې تاسو د الله تعالى رسول يئ نو مونږ به تاسو منع كړي نه وي او ستاسو نه به مو بيعت كړي وو ليكن دا اوليكي، "هذا ما قاض عليه محمد بن عبد الله" نبي ﷺ او فرمائيل، په خدا قسم زه محمد بن عبد الله يم، په خدائي قسم زه د الله تعالى رسول يم. حضرت براء رضي الله عنه فرمائي چې حضرت علي رضي الله عنه د دې په ليكلو باندې رضا نه وو نو نبي ﷺ ورته او فرمائيل چې د "رسول الله" الفاظ وړان كړه. هغوی او فرمائيل، په خدائي قسم زه به دا كلمات وړان نه كړم. نبي ﷺ او فرمائيل چې ما ته اوبښايه، هغوی ورته اوبښودل نو نبي ﷺ په خپلو لاسونو مباركو باندې هغه وړان كړل. كله چې نبي ﷺ په مكه مكرمه كښي داخل شو او مذكوره ورځې هم تيرې شوې نو كفارو

① د دې څلورو وارو حضرتانو د حالاتو دپاره اوگوري: كتاب الوضوء، باب اذا القى على ظهر المصلي قدر..

② كشف الباري: ۲/۳۷۰.

③ كشف الباري: ۲/۳۷۵.

حضرت علی عليه السلام ته او وئیل چې خپل آقا ته او وایه چې ددې ځانې نه تشریف یوسی، دا خبره هغوی نبي کریم عليه السلام ته او کړه نو نبي عليه السلام او فرمائیل چې صحیح ده، او بیا روان شو. د جلیان معنی او ددې ضبط: ولاید عليها الا بجلبان السلا^۱ په دې کښې جلیان د جیم او د لام ضمه او باء مشدده سره دې، دغه شان د جیم ضمه، د لام سکون او باء مخففه سره هم ضبط کړې شوې دې جلیان د څرمنې هغه تهیلې ته وئیلې شی چې په هغې کښې تیکې د تورې سره کیخودې شی. علامه ابن الاثیر رحمه الله فرمائی "شبه الجواب من الادم، ويوضع فيه السيف مغبوداً" ^(۱) ترجمه الباب سره د حدیث مناسبت: ترجمه الباب سره د باب د حدیث شریف مناسبت په دې جمله کښې دې چې "ان لا یقیم بها الا ثلاث لیل" ^(۲) ددې نه دا ثابتیږي چې د مقررې وخت دپاره صلح کیدې شی.

①۹ باب: المَوَادَعَةُ مِنْ غَيْرِ وَقْتٍ

د ترجمه الباب مقصد: دلته امام بخاری رحمه الله ددې خبرې جواز بیانوی چې د وخت او د مدت د مقررولو نه بغير که صلح او کړې شې نو ددې هم گنجائش شته، که امام په دې کښې مصلحت گنړي او د هغه رأيي وی نو صحیح ده ^(۳) په مذکوره مسئله کښې اختلاف: پورته چې کومه مسئله ذکر شوه نو په دې کښې هم د امامانو اختلاف دي.

① د احنافو، شوافعو او د مالکيه رأيي داده چې د وخت د مقررولو نه بغير هم صلح کول صحیح ده ^(۴)

ددې حضراتو دليل هم هغه حدیث دي کوم چې امام بخاری رحمه الله تعلیقاً ذکر کړې دي، په هغې کښې دی چې نبي عليه السلام اهل خيبر سره د غیر معینه وخت دپاره صلح کړې وه، ددې وجې نه که امام او د اهل رأيي دا خیال وی او ددې ضرورت هم وی چې صلح او کړې شې نو جائز ده، علامه ابن بطال رحمه الله فرمائی:

"ليس في أمر البهانة حد عند أهل العلم لا يجوز غيره، وإنما ذلك على حسب الحاجة والاجتهاد في ذلك إلى الامام وأهل الرأي" ^(۵)

^(۱) القاموس الوحيد، باب الجيم، مادة جلب، وعمدة القاري: ۱۵/۱۰۵، والنهاية في غريب الحديث: ۲۸۲/۱، باب الجيم مع اللام، وكشف المشكل: ۲/۲۵۰، من مسند البراء، رقم (۸۵۸) _

^(۲) عمدة القاري: ۱۵/۱۰۵، د حدیث شریف د مزید وضاحت دپاره اوگوري، كشف الباري، كتاب المغازی، باب صلح الحديبية: ۳۶۵-۳۶۷ _

^(۳) عمدة القاري: ۱۵/۱۰۵، وفتح الباري: ۶/۲۸۲ _

^(۴) پورته حواله جات، وابن بطال: ۵/۳۶۷، وارشاد الساري: ۵/۲۴۶، والام: ۲/۴/۱۸۹، رقم (۱۳۳۵۷) _

^(۵) شرح ابن بطال: ۵/۳۶۷ _

② ددې خلاف ځنا بله ددې خبرې قائل دی چې دغه شان صلح کول صحیح نه دی (وَقَوْلِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «أَقْرَبُكُمْ مَا أَقْرَبَكُمْ اللَّهُ بِهِ» [ر: ۲۲۱۳]) او د نبی ﷺ قول مبارک ترڅو چې الله تعالی تاسو دلته برقرار ساتی نو زه به هم تاسو برقرار ساتم.

د مذکورې تعلیق مقصد: د حضرت عبدالله بن عمر رضی الله عنهما دا حدیث امام بخاری رحمه الله دلتې ده چې دا په وجې نه ذکر کړو چې امام بخاری رحمه الله په ترجمه کېنې کوم موقف اختیار کړو نو چې دا په هغې باندې دلیل شی چې د وخت مقررولو نه بغير هم صلح کول صحیح دی لکه څنگه چې دا حدیث پرې دلالت کوی.

د مذکورې تعلیق تخريج: مذکورې تعلیق امام بخاری رحمه الله په کتاب المزارعة (د کنبې موصولاً نقل کړې دي. ددې موصول روایت یو حصه مصنف دلتې لیکلې ده. (د ددې نه علاوه دا حدیث امام مسلم رحمه الله هم موصولاً نقل کړې دي (د ترجمه الباب سره د تعلیق ماسبت: ترجمه الباب سره د تعلیق مناسبت واضح دي ځکه چې ترجمه الباب د غیر معینه وخت د صلحې کولو د جواز وه او ددې دعوي دلیل په حدیث شریف کېنې موجود دي. والله اعلم بالصواب.

③۰ باب: بَابُ طَرَحِ جَيْفِ الْمُشْرِكِينَ فِي الْبَيْتِ وَلَا يُؤْخَذُ لَهُمْ ثَمَنٌ

د ترجمه الباب مقصد: ددې ترجمه الباب دوه جزونه دي:

① طَرَحِ جَيْفِ الْمُشْرِكِينَ فِي الْبَيْتِ ② وَلَا يُؤْخَذُ لَهُمْ ثَمَنٌ

د اولنې جزء مقصد دادې چې مشرکان د قتل کولو نه پس کوهی ته غورځول هم جائز دی، بلکه غوره کار دي، دې دپاره چې په لاره باندې تیریدونکو خلقو ته تکلیف نه وي په دې شرط چې په دغه کوهی کېنې اوبه نه وي او شاړ کوهی وي، گنې که اوبه په کېنې وي نو بیا په کېنې غورځول جائز نه وي (د دویمه خبره داده چې په دې کېنې د مشرکانو بې عزتی ده او تدفین او تکفین خو اعزاز او اکرام دي او مشرکان ددې اعزاز او اکرام مستحق نه دي.

د جیف ضبط او معنی: جیف. بکس، الحیم وفتح الیاء. د جیفه جمع ده او ددې معنی ده لاش، چې کله

① (المغنی لابن قدامة: ۹۲۳۸/۱، رقم (۷۵۹۰)).

② (الصحيح للبخاری، کتاب المزارعة، باب اذا قال رب الارض: اقرک..... رقم (۲۳۳۸)).

③ (عمدة القاری: ۱۵/۱۰۵، وفتح الباری: ۶/۲۸۲).

④ (الصحيح لمسلم، کتاب المساقاة، باب المساقاة والمعاملة بجزء من التمر..... رقم (۳۹۶۷)).

⑤ (عمدة القاری: ۱۵/۱۰۵، وشرح ابن بطلال: ۵/۳۶۸، وارشاد الساری: ۵/۲۴۶).

بوئی شروع کړی. (۱)

د دویم جزء مقصد دادې چې د مشرکانو د بدنونو او د لاشونو بیع کول جائز نه ده، ددې وجې نه که چرته دوی وارثان د دوی د لاشونو په بدله کښې مال ورکول غواړي نو ددې اخستل به جائز نه وي. (۲) دا د جمهورو مذهب دې، په دې کښې د چا اختلاف منقول نه دي، کما صرح به النووی رحمه الله. (۳)

د جمهورو دلیلونه: ① د دوی یو دلیل د حضرت ابن عباس رضی الله عنهما روایت دې، کوم چې امام ترمذی رحمته الله روایت کړې دې چې مشرکانو او غوښتل چې د یو مشرک سړی بدن واخلې نو نبی صلی الله علیه و آله انکار او فرمائیلو. (۴)

② دویم دلیل هغه واقعیه ده کومه چې ابن اسحاق رحمته الله ذکر کړې ده چې مشرکانو نبی کریم صلی الله علیه و آله ته دا درخواست راوړلو چې مونږ ته د نوفل بن عبدالله بدن راکړه، دې په خندق کښې پریوتلې وو او مړ شوې وو نو نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل، ”لا حاجة لنا فی حسدہ، ولا ثمنہ“ چې مونږ ته نه دده د قیمت ضرورت شته او نه د بدن ابن هشام وائی چې مشرکانو د نوفل بن عبدالله د بدن قیمت لس زره درهمه لگولې وو. (۵)

③ ددې نه علاوه دا وجه هم ده چې دا مرداره ده او د مردارې نه مالک کیدل جائز دی او نه عوض اخستل، لکه څنګه چې د حضرت جابر بن عبدالله رضی الله عنہ په یو حدیث مبارک کښې د مردارې او د بتانو دواړو قیمتونو اخستلو ته ناجائز وئیلې شوې دی. (۶) فرمائی چې د فتح مکې په ورځ رسول الله مبارک صلی الله علیه و آله او فرمائیل:

”إن الله ورسوله حرم بيع الخمر والميتة والخنزير والاصنام....“ (۷)

(۱) عمدة القاری: ۱۵/۱۰۵، والنهایة للجزري: ۱/۳۲۵، باب الجیم مع الیاء.

(۲) عمدة القاری: ۱۵/۱۰۵، وشرح ابن بطلال: ۵/۳۶۸، وارشاد الساری: ۵/۲۴۶.

(۳) قال صلی الله علیه و آله: واما الميتة والخمر والخنزير، فاجمع المسلمون على تحريم بيع كل واحد منها. انظر شرح النووی علی مسلم: ۲/۲۳.

(۴) الجامع للترمذی، ابواب الجهاد، لا تفادی جيفة المشركين، رقم (۱۷۱۵).

(۵) قال ابن اسحاق.....: نوفل بن عبدالله بن المغيرة، سالوا رسول الله صلی الله علیه و آله ان يبيعهم جسده، وكان اقتحم الخندق، فتورط فيه، فقتل، فغلب المسلمون على جسده، فقال رسول الله صلی الله علیه و آله: لا حاجة لنا في جسده ولا بثمانه، فخلی بينه وبينهم. قال ابن هشام: اعطوا رسول الله صلی الله علیه و آله بجسده عشرة آلاف درهم، فيما بلغني عن الزهري. انظر السيرة النبوية: ۳/۲۶۵، قتلى المشركين (في غزوة الخندق).

(۶) ابن بطلال: ۵/۳۶۸، وفتح الباری: ۶/۲۸۳، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۵، والقسطلانی: ۵/۲۴۶.

(۷) الحديث اخرجه البخاری في البيوع، باب بيع الميتة والاصنام، رقم (۲۲۳۶)، ومسلم في صحيحه في المساقاة، باب تحريم بيع الخمر والميتة، رقم (۴۰۴۸-۴۰۴۹)، والترمذی في البيوع، باب في بيع جلود الميتة، رقم (۱۲۹۷)، وابو داود في الاجارة، باب في ثمن الخمر والميتة، رقم (۳۴۸۶)..... [بقية برصفحه آئنده...]

چې "الله تعالی او د هغه رسول د شرابو، مردار، خنزیر او د بتانو بیعه حرامه گرځولې ده" حضرت گنگوهی فرمائی:

"ولا يؤخذ لهم ثمن" فان البيعة وإن كان فيه توهين للمبيع، ولكنه لا يخلو عن اعزاز له أيضاً لما فيه من جعله ذا خطراً إذا البيعة لا يجرى فيها لا رغبة فيه ولا هو ذو خطر، فنهيننا عن بيع أجساد المشركين لئلا يلزم فيه إعزازها" (۱) ددې مطلب دادې چې "د مشرکانو د بدنونو عوض به نه اخستلې کیږي، ددې وجه داده چې د بیع د وجې نه اگرچه د مبيع توهین کیږي لیکن دې سره سره د مبيع اکرام او اعزاز هم کیږي، هغه داسې چې ددې مبيع څه حیثیت وو ددې وجې نه خرڅه شوه، ځکه چې په کومو څیزونو کښې د خلقو رغبت نه وی او څه حیثیت نې نه وی نو د هغې څیزونو بیع خو بالکل هډو کیږي نه، ددې وجې نه مونږ د مشرکانو د بدنونو د اخستلو نه منع کړې شوې یو، دې دپاره چې دې بیع سره د هغوی اعزاز او اکرام لازم رانه شي، نو ددې وجې نه مطلقاً ممانعت او کړې شو، نو دغه شان به په خلقو کښې دې طرف ته نه څه رغبت وی او نه به د خلقو په نزد ددې څه حیثیت وی"

۳۰۱۴: (۱) حَدَّثَنَا عَبْدَانُ بْنُ عُثْمَانَ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ بَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - سَاجِدٌ وَحَوْلَهُ نَاسٌ مِنْ قُرَيْشٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ إِذْ جَاءَ عُقْبَةُ بْنُ أَبِي مُعَيْطٍ بِسَلَى جَزُورٍ، فَقَدَّرَهُ عَلَى ظَهْرِ النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فَلَمْ يَرْفَعْ رَأْسَهُ حَتَّى جَاءَتْ فَاطِمَةُ - عَلَيْهَا السَّلَامُ - فَأَخَذَتْ مِنْ ظَهْرِهِ؛ وَدَعَتْ عَلَى مَنْ صَنَعَ ذَلِكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - «اللَّهُمَّ عَلَيْكَ الْمَلَأَ مِنْ قُرَيْشٍ، اللَّهُمَّ عَلَيْكَ أَبَا جَهْلٍ بْنُ هِشَامٍ، وَعُتْبَةُ بْنُ رَبِيعَةَ، وَشَيْبَةَ بْنَ رَبِيعَةَ، وَعُقْبَةُ بْنُ أَبِي مُعَيْطٍ، وَأُمَيَّةُ بْنُ خَلْفٍ - أَوْ أَبِي بَنٍ خَلْفٍ -». فَلَقَدْ رَأَيْتُهُمْ قَتَلُوا يَوْمَ بَدْرٍ، فَأَلْقَوْا فِي بَيْتٍ، غَيْرَ أُمَيَّةَ أَوْ أَبِي، فَإِنَّهُ كَانَ رَجُلًا ضَعِيفًا، فَلَمَّا جَرَوْهُ تَقَطَّعَتْ أَوْصَالُهُ قَبْلَ أَنْ يُلْقَى فِي الْبَيْتِ. [ر: ۲۲۷]

دا حدیث بعینه هم دې سند سره په کتاب الوضوء (۲) کښې تیر شوې دې. د حدیث مبارک ترجمه: حضرت عبدالله بن مسعود رضی الله عنه فرمائی چې نبی کریم صلی الله علیه و آله په سجده کښې وو او گیر چاپیره د قریشو څه مشرکان ناست وو، اچانک عقبه بن ابی معیط نبی صلی الله علیه و آله ته د اوبښ بچه دانی راوړه او د نبی کریم صلی الله علیه و آله په ملا مبارکه ئې واچوله نو نبی صلی الله علیه و آله خپل سر

بقیه از حاشیه گذشته [والنسانی فی البیوع، باب بیع الخنزیر، رقم (۴۶۶۹)، وابن ماجه فی التجارات، باب مالا یحل بیعه، رقم (۲۱۶۷)] -

(۱) لامع الدراری: ۳۲۸/۷ -

(۲) قوله: عن عبدالله رضی الله عنه: "الحدیث، مر تخریجه فی الوضوء، باب اذا القی علی ظهره....." -

(۳) کتاب الوضوء، باب اذا القی علی ظهر المصلی قدر..... -

مبارک د سجدې نه اوچت نه کړو تردې چې حضرت فاطمه عليها السلام تشریف راوړلو او هغه خیز ئې د نبی کریم صلی الله علیه و آله د ملا مبارکې نه اوچت کړو، کوم خلقو چې دا غلط حرکت کړې وو نو د هغوی دپاره ئې خیرې او فرمائیلې، نبی کریم صلی الله علیه و آله ددې خلقو دپاره خیرې کولو کښې او فرمائیل چې ای الله! دقریشو دا ډله گرفتاره کړه، ای الله! ابو جهل بن هشام، عتبه بن ربیع، شیبه بن ربیع، عقبه بن ابی معیط او امیه بن خلف یا ابی بن خلف «راوی ته شک دې، گرفتار کړه» «راوی حضرت عبدالله وائی چې په خدائې قسم! ما دا ټول اولیدل چې په غزوۀ بدر کښې مردار کړې شو. نو دا ټول کوهی ته او غورځولې شو، علاوه د امیه یا ابی بن خلف نه، د هغې وجه دا شوه چې دې ډیر د ډیل ډول سرې وو، کله چې دې صحابه کرامو رضی الله عنهم رابښکۀ نو دده اندامونه یا جوړونه کهلاؤ شو مخکښې ددې نه چې دې کوهی ته واچولې شی د حدیث شریف د اخروی جزء «فانه کان رجلاً...» تشریح: ددې حدیث په آخری جزء کښې یو لفظ د اوصال راغلې دې، چې د وصل جمع ده، ددې معنی اندام هم دې او جوړ هم (د)، او د مذکوره جملې مطلب دادې چې کله صحابه کرامو رضی الله عنهم امیه بن خلف کوهی ته د غورځولو دپاره رابښکۀ نو ممکنه نه شوه، ځکه چې دده اندامونه مات شوې وو.

ددې بنیادی وجه دا شوې وه چې دا د رمضان المبارک ورځې وې او ډیره گرمی و (د)، نو د مرگ نه پس ډیر وخت پورې په دې حالت کښې پراته وو چې ددې وجې نه ئې بدنونه پرسیدلې وو او تور شوې وو، نو کله چې دوی کوهی ته غورځولې شو نو د امیه بن خلف بدن دروند وو، ددې وجې نه ممکن نه شوه چې دې کوهی ته واچولې شی، ددې وجې نه دې هم په دې حالت باندې پریخودلې شو (د).

ددې حدیث نور تشریحات په کتاب الجهاد او کتاب المغازی کښې راغلې دي (د). ترجمه الباب سره د حدیث شریف مطابقت: د ترجمه الباب اولنی جزء سره خود حدیث مطابقت په دې جمله کښې دې، «..... فالتواني بئر» ددې نه ددې کار وضاحت سره جواز معلومېږي چې په غیر آباد کوهیانو کښې د مشرکانو لاشونه غورځول جائز دي. د ترجمه الباب دویم جزء سره د حدیث مناسبت په دې معنی کښې دې چې عرفاً دا خبره معلومه ده چې که ددې مقتولینو د وارثانو په ذهن کښې دا خبره راتله چې مونږ به مال خرچ کړو نو ددې لاشونو حاصلول به مونږ ته ممکن شی ددې باوجود هغوی ددې کوشش اونه کړو، ځکه چې هغوی ته ددې ښه پته وه چې دا کوشش به ضائع وی، په دې خبره باندې د ترمذی شریف پورتنې مذکوره حدیث هم دلالت کوي (د)، کوم چې مونږ وړاندې بیان کړو،

(۱) مجمع بحار الانوار: ۵/۶۳، مادة وصل، باب: و، ص ()

(۲) کما فی المغازی: وکان یوما حارا، باب دعاء النبی صلی الله علیه و آله علی..... رقم ((۳۹۶۰))

(۳) لامع الدراری وتعلیقاته: ۷/۳۲۸

(۴) کشف الباری، کتاب الجهاد: ۱/۷۳۰-۷۳۳، و کتاب المغازی: ۱۰۰

(۵) په دې حدیث باندې اگرچه کلام شوې دي لیکن دا گواه جوړیدې شی، [بقیه بر صفحه آنده...]

دغه شان د ابن اسحاق رحمته الله روایت هم په دې معامله کېږي واضح دي، د حافظ ابن حجر رحمته الله د قول مطابق په مذکوره مسئله باندې د باب د حدیث نه د امام بخاری رحمته الله استدلال هم ددې نکتې او د عرف په بنیاد باندې دي (د)

د باب د حدیث نه مستنبطه یوه فائده: امام طبري رحمته الله فرماني

”د هر سرې خوا هغه مسلمان وي يا کافر، مړې پتول او ددې دفن کول فرض دي، د خلقو د نظرونو نه د پټ ساتلو دپاره چې هر قسم طريقه اختيارولې شي نو د هغې اختيارول ضروري دي، ددې وجه او دليل د نبی کریم رحمته الله هغه حکم دي په کوم حکم کېږي چې د بدر کوهي کېږي د مشرکانو د غورځولو دپاره وئيلې شوې وو او فراخه ځانې کېږي هغوی وانه چولې شو، ددې وجه نه په دې معامله کېږي د نبی کریم رحمته الله اقتداء او تابعداري کول زيات غوره او مستحب ده ليکن په هر حال کېږي به موقع محل ته کتلې شي، داسې نه چې مسلمانان په کفن دفن کېږي مصروف وي او دشمن پرې دوباره حمله اوکړي.

هرکله چې حربي مشرکانو سره د نبی کریم رحمته الله دا طريقه وه نو هغه مشرکان چې ذميان او اهل عهد دي، که د هغوی يو کس مړ شي، د هغه څوک ولي نه وي، نه ئې څوک د مذهب ملگري او مسلمان موجود وي نو د سنتو په رنډا کېږي دده لاش پتول او دفن کول غوره دي. لکه د حضرت علي رضي الله عنه د والد صاحب ابو طالب په وفات باندې نبی کریم رحمته الله

فرمائيلې وو ”اذهب فواره.....“ (د) چې ”لار شي او هغه پټ کړي“

البته! که د څه مصروفيت يا د بل څه مانع د وجې نه مسلمانان دا اونه کړي نو زما په خيال کېږي په دې کېږي څه حرج نشته ځکه چې د نبی کریم رحمته الله په اکثرو جنگونو کېږي چې په هغې کېږي قتلونه هم شوې وو نو کوم ذکر چې د بدر متعلق اوشو داسې ذکر د يو جنگ متعلق هم نشته چې په هغې کېږي د مشرکانو مړې پټ کړې شوې وي“ (د) والله اعلم بالصواب

بقیه از حاشیه گذشته [اوگوری: جامع ترمذی، ابواب الجهاد، باب لا تفادی جیفه..... رقم (۱۷۱۵)، وفتح الباری: ۲۸۳/۶، وشرح ابن بطلال: ۳۶۸/۵] _

(۱) شرح ابن بطلال: ۳۶۸/۵، والمتواری: ۹۹۱، وفتح الباری: ۲۸۳/۶، وتعلیقات اللامع: ۳۲۸/۷ _

(۲) الحدیث اخرجه ابن ابی شیبہ فی مصنفه: ۳۷۹/۷، و۳۸۱، کتاب الجنائز، باب فی الرجل يموت له القرابة المشرك: يحضره ام لا؟ رقم (۱۱۹۶۲)، وابو داود فی الجنائز، رقم (۳۲۱۴)، والنسائی فی الطهارة، رقم (۱۹۰)، وانظر كذلك تعلیقات محمد عوامه علی المصنف، کتاب الجنائز، باب فی المسلم يغسل المشرك.....

رقم (۱۱۲۶۷)، په دې معنی کېږي نور احادیث هم موجود دي، په سنن بیهقي کېږي د عمر بن یعلی بن مره عن ابيه د طریق نه مروی دي، حضرت یعلی فرماني سافرت مع النبي رحمته الله غیر مره، فماریته من حیفة انسان الا امر بدنه، لا یسأل المسلم هواء کافر“، سنن کبری: ۲۸۶/۳، کتاب الجنائز، باب وجوب العمل فی الجنائز من الغسل....، رقم (۲۱۱۷)

ددې نه علاوه اوگوری: د مصنف ابن ابی شیبه رحمته الله پورتنی ذکر شوې باب: ۳۷۸/۷، ۳۸۱ _

(۳) شرح ابن بطلال: ۳۶۹/۵ _ ۳۷۰ _

۲۱- باب: اِثْمُ الْغَادِرِ لِلْبَرِّ وَالْفَاجِرِ

د ترجمه الباب مقصد په دې باب کښې امام بخاری رحمہ اللہ دا بیانوی چې بدعهدي کول گناه ده، برابره خبره ده که دا بدعهدي یو نیک سړی سره او کړې شی یا یو بد سړی سره او کړې شی، او دغه شان بدعهدي کوونکې په خپله نیک سړې وی یا بد سړې وی، لکه حافظ صاحب او علامه عینی رحمهما الله وغیره لیکي:

قوله: "أَي: سَوَاءٌ كَانَ مِنْ بَرٍّ لَفَاجِرٍ أَوْ مِنْ فَاجِرٍ لِبَرٍّ أَوْ فَاجِرٍ": (د دې وجې نه نجات په هیڅ صورت کښې نشته، په هر حال کښې به گناهگار وی اودا د منافقت علامت دې

حافظ مزید فرمائی چې کوم ترجمه الباب د باب اِثْمُ مِنْ عَاهِدْتُمْ غَدْرَ دَرِّ بَابُونِه وړاندې تیر شو نو دهغې او ددې باب مینځ کښې د عموم خصوص نسبت دې. (د)، مطلب دادې چې وړاندې کوم باب تیر شو نو هغه عام وو او دا باب خاص دې.

او حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمہ اللہ په دواړو بابونو کښې دا فرق بیانوی چې په دې کښې د گناه د نوعیت د اختلاف طرفته اشاره ده چې د غدر مختلف نوعیتونه دی، دې حساب سره ددې گناه هم ده، ددې وجې نه امام بخاری رحمہ اللہ ددې مطلب بیانولو دپاره مختلفې ترجمې قائمې کړې دي (د)

او حضرت گنگوهی رحمہ اللہ د نیک او فاجر د دواړو د ذکر توجیه کوی او فرمائی: لما كان من الامور المنكرة ما لا كراهة فيه اذا ارتكبتها مؤمن كامل في ايمانه، ولا يمكن من ارتكابه الفاسق الغير الامن على ايمانه توهم أن الغدر لعله من هذا القبيل، فرفعه باطلاق الرواية، ولفظ "كل" الدال على العموم (د) ددې مطلب دادې چې په ناکاره کارونو کښې بعضې داسې دي چې که یو مؤمن هغه او کړی نو په کښې هیڅ کراهت نشته، بد نه گنرلې کیږي، لیکن که هم دغه عمل یو فاسق او ناقص مسلمان او کړی نو هغه ته ددې اجازت نه شی ورکولې او هغه ددې نه منع کولې شی، لکه څنگه چې د یوم الشک روژه ده، چونکه د غدر او وعده خلافی متعلق هم چاته دا گمان کیدې شو چې دا کار هم ددې قبیل نه دې چې کامل مؤمن ئې او کړی نو څه باک به په کښې نه وی او غیر کامل، فاسق او ناقص مسلمان ئې او کړی نو هغه به گناهگار وی نو امام بخاری رحمہ اللہ دا وهم د روایت د اطلاق په ذریعې سره او لفظ "کل" چې په عموم باندې دلالت کوی، ددې په ذریعې سره ختم کړې دې چې بدعهدي خواه نیک سړې او کړې یا بد، دواړه به گناهگار وی والله اعلم بالصواب

(فتح الباری: ۶/۲۸۴، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۶) -

(فتح الباری: ۶/۲۸۴) -

(الابواب والتراجم للکانهلوی: ۱/۲۰۹) -

(پورته حواله، ولامع الدراري: ۷/۳۲۹) -

۱۵۰۳ (حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ -۳۱۸- وَعَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- قَالَ «لِكُلِّ غَادِرٍ لَوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» قَالَ أَحَدُهُمَا يَنْصَبُ وَقَالَ الْآخَرُ -يُرَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُعْرَفُ بِهِ-.

رجال الحديث

- ① ابو الوليد: دا ابو الوليد هشام بن عبد الملك طيالسي رحمته الله دې د دوى تذكره په كتاب الايمان، "باب علامة الايمان حب الانصار" كښې تيره شوې ده. (ح)
- ② شعبه: دا امير المؤمنين فى الحديث شعبه بن الحجاج عتكي رحمته الله دې د دوى حالات په كتاب الايمان، "باب المسلم من سلم المسلمون من....." كښې راغلې دى. (ح)
- ③ سليمان الاعمش: دا سليمان بن مهران دې چې په اعمش سره مشهور دې د دوى ترجمه په كتاب الايمان، "باب ظلم دون ظلم" كښې تيره شوې ده. (ح)
- ④ ابو وائل: دا ابو وائل شقيق بن سلمه دې د دوى تذكره په كتاب الايمان، "باب خوف المؤمن من أن يحبط عمله....." كښې تيره شوې ده. (ح)
- ⑤ عبدالله: د مشهور صحابى حضرت عبدالله بن مسعود رحمته الله حالات په كتاب الايمان، "باب ظلم دون ظلم" كښې تير شوې دى. (ح)
- ⑥ ثابت: دا ابو محمد ثابت بن اسلم بنانى دې د دوى تذكره په كتاب العلم "باب القراءة والعرض على المحدث" كښې تيره شوې ده. (ح)
- ⑦ انس: د حضرت انس رحمته الله حالات په كتاب الايمان، "باب من الايمان....." كښې راغلې دى. (ح)

١) قولهما: عن عبدالله رحمته الله، وعن انس رحمته الله: "اما حديث عبدالله فاخرجه البخارى فى هذا الموضع فقط. واخرجه مسلم فى الجهاد، باب فى تحريم الغدر، رقم (٤٥٣٣-٤٥٣٥)، وابن ماجه، كتاب الجهاد، باب الوفاء بالبيعة، رقم (٢٨٧٢)، اما حديث انس فاخرجه البخارى فى هذا الموضع، واخرجه مسلم، كتاب الجهاد، باب تحريم الغدر، رقم (٤٥٣٦). _

٢) كشف البارى: ٣٨/٢ _

٣) كشف البارى: ٦٧٨/١ _

٤) كشف البارى: ٢٥١/٢ _

٥) كشف البارى: ٥٥٩/٢ _

٦) كشف البارى: ٢٥٧/٢ _

٧) كشف البارى: ١٨٣/٣ _

٨) كشف البارى: ٤/٢ _

د حدیث شریف سند سره متعلق یو اهم وضاحت: تاسو گورئ چې دا حدیث دوه صحابه کرام رضی الله عنہم روایت کوی، په پورتنی سند کښې چې د "وعن ثابت....." کوم الفاظ دی، د هغې قائل حضرت شعبه بن الحجاج رضی الله عنه دي، د مسلم شریف په روایت کښې ددې وضاحت موجود دي، چې د هغې طریق دادې، "عبدالرحمن بن مهدی عن شعبه عن ثابت عن انس" (۱) او امام اسماعیلی هم دا روایت د "ابوخلیفه عن ابی الولید شیخ البخاری" طریق سره دوو سندونو سره نقل کړې دي او دواړو ځایونو کښې دا فرمائی چې دې سره په هغه سړي (۲) باندې رد کیږي چا چې دا کار جائز بنودلې دي چې دا په ابو الولید باندې عطف دي، دغه شان به دا روایت د "الاعمش عن ثابت....." د طریق نه شی، حالانکه حقیقت کښې داسې نه ده بلکه دا د "شعبه عن ثابت....." د طریق نه دي. ددې نه علاوه امام مزني رحمته الله علیه هم په تهذیب (۳) کښې د اعمش عن ثابت روایت په بخاری کښې شامل کړې نه دي او په دې باندې ئې د بخاری علامت نه دي لگولې (۴).

قوله: عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: لكل غدر لواء يوم القيامة: د نبی کریم صلی الله علیه و آله نه روایت دي چې هغوی او فرمائیل چې د هر وعده خلاف دپاره به د قیامت په ورځ یو بیرغ وی.

قوله: قال أحدهما ينصب وقال الآخر: يرى يوم القيامة يعرف به: په دواړو کښې یو او فرمائیل چې نصب کولې به شی او دویم او فرمائیل چې څه بنودلې شی نو د هغې نه به پیژندلې شی.

په مسلم شریف کښې چې ددې حدیث کوم روایت دي نو په هغې کښې نه خو کلمه د نصب شته او نه د "یری (۵)" شته. دلته د راویانو شک شوې دي چې یو خو "ينصب" نقل کړې او دویم "یری" نقل کړې دي لیکن دې سره د روایت په صحت باندې څه اثر نه کیږي ځکه چې دواړه روایتونه د بخاری د شرط موافق دي، دلته د شک د ذکر کولو وجه صرف داده چې التباس او نه شی (۶).

(۱) انظر صحيح مسلم، كتاب الجهاد، باب تحريم الغدر، رقم (٤٥٣٦).

(۲) قال به الكرمانی ايضا، انظر شرحه الكواكب الدراري: ١٣٧/١٤٧، وعمدة القاري: ١٥/١٠٦.

(۳) تهذيب الكمال: ٧٧/١٢، (ترجمة سليمان بن مهران الاعمش رضی الله عنه).

(۴) فتح الباری: ٢٨٤/٦.

(۵) پورته حواله، وصحيح مسلم، كتاب الجهاد، باب تحريم الغدر، رقم (٤٥٣٦).

(۶) دا د علامه عيني رحمته الله علیه (١٠٢/١٥٥) رائي ده چې د حضرت عبدالله بن مسعود رضی الله عنه نه روایت کوونکو راویانو ته شک شوې دي لیکن دا څوک دی، دا معلومه نه شوه. البته زمونږ.... [بقیه بر صفحه آنده....]

۱۲:۳۰ (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَقُولُ « لِكُلِّ غَادِرٍ لَوَاءٌ يُنْصَبُ لِيُغْدَرَتِهِ » [۵۸۲۳، ۵۸۲۴، ۶۵۶۵، ۶۶۹۴]

رجال الحديث

- ① سليمان بن حرب: دا سليمان بن حرب الوشحي دې د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب من کره ان يعود في الكفر كما يكره ان....." کښې تیره شوې ده (۲)
- ② حماد: دا حماد بن زيد دې د دوی حالات په کتاب الايمان، "باب المعاصي من امر الجاهلية....." کښې تیره شوې دی (۲)
- ③ ايوب: دا ايوب بن ابی تميمه کيسان سختيانی دې د دوی تذکره په کتاب الايمان، "باب حلاوة الايمان" کښې تیره شوې ده (۲)
- ④ نافع: دا نافع دې چې د ابن عمر مولى دې د دوی تذکره په کتاب العلم، "باب ذكر العلم والفتيا في المسجد" کښې تیره شوې ده (۵)
- ⑤ ابن عمر: د حضرت عبد الله بن عمر حالات په کتاب الايمان، "باب الايمان....." کښې راغلې دي (۲)

قوله: قال: سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول: لكل غادر لواء ينصب

لغدرته: حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما فرمائي چې ماديبي کريم ﷺ نه واوريدل چې دهر وعده خلاف

بقية از حاشیه گذشته] رانې داده چې د اchiedما نه مراد حضرت ابن مسعود او د الآخر نه مراد حضرت انس رضی اللہ عنہ دی، په دې باندې قرینه غالباً دا ده چې امام بخاری رحمه الله دا روایت د دواړو صحابو نه یوځانې نقل کړې دي، ددې وجې نه ددې کلماتو نزدې محمل هم دا دواړه صحابه کیدې شي، خصوصاً چې هرگله د حضرت ابن مسعود رضی اللہ عنہ د روایت صرف یو طریق بیان کړې شوې وی والله اعلم بالصواب (۱) قوله: عن ابن عمر رضی اللہ عنہما: "الحديث، اخرج البخاري، كتاب الادب، باب ما يدعى الناس بأبائهم، رقم (۶۱۷۷-۶۱۷۸)، وكتاب الحيل، باب اذا غصب جاريته فزعم.....، رقم (۶۹۶۶)، وكتاب الفتن، باب اذا قال عند قوم شيئا.....، رقم (۷۱۱۱)، ومسلم، كتاب الجهاد، باب تحريم الغدر، رقم (۴۵۲۹-۴۵۳۲)، وابو داود، ابواب الجهاد، باب في الوفاء بالعهد، رقم (۲۷۵۶)، والترمذي، ابواب السير، باب ما جاء ان لكل غادر لواء.....، رقم (۱۵۸۱)

(۲) كشف الباري: ۱۰۵/۲ -

(۳) كشف الباري: ۲۱۹/۲ -

(۴) كشف الباري: ۲۶/۲ -

(۵) كشف الباري: ۴/۶۵۱ -

(۶) كشف الباري: ۱/۶۳۷ -

دپاره به د قیامت په ورځ، یو بیرغ وی چې د هغه د وعده خلافی د وجې نه به ښخولې شی. د بغدوت په بڼه کې احتمالات د بغدوت په بڼه یا خو یا سببیه ده یا صرف جاره ده، په دواړو صورتونو کې بغدوت مجرور دی او ددې مضاف محذوف دې کومه چې کلمه د سبب ده یا کلمه د قدر ده، ای بسبب بغدوت فی الدنیا او بقدر بغدوت^(۱) مطلب دادې چې د وعده خلاف دپاره کوم بیرغ ښخولې شی نو د هغې وجه او سبب به ددې انسان په دنیا کې وعده خلافی وی.

په دویم صورت کې به مطلب دا شی چې په دنیا کې د وعده خلافی کوم مقدار وی نو د هغې په اندازه به بیرغ هم وی "بقدر بغدوت" ددې دویمې معنې تائید د مسلم شریف د روایت نه هم کیږي، چې په هغې کې د "بقدر بغدوت" (۲) وضاحت دې (۳)

بیرغ به چرته لگولې شی؟ په اکثر روایتونو کې ددې خبرې وضاحت موجود نه دې چې هر وعده خلاف ته د بیرغ ښخولو کومه سزا ورکولې شی نو ددې محل به څه وی؟ البته په مسلم شریف کې چې د حضرت ابوسعید خدری رضی الله عنه کوم روایت دې نو په هغې کې په دې الفاظو سره ددې وضاحت راغلې ده، "لکل غادر لواء عند استه يوم القيامة" (۴) چې ددې محل او مقام به شاته ملا (دېر) باندې پورته ځای وی.

د "لکل غادر لواء" مختلفې معنې او مطلبونه: د قیامت په ورځ چې وعده خلاف ته کوم بیرغ لگولې شی نو ددې وجه به څه وه؟ د حدیث شارحینو ددې مختلف جوابونه ذکر کړي دي:

① علامه تورېشتي رحمته الله علیه فرمائي چې الله تعالی به وعده خلاف سرې په ټول محشر کې د قیامت په ورځ رسوا کړي، په دنیا کې چې ددې کومه وعده خلافی کړې وه د هغې د بیان دپاره به دا بیرغ ولگولې شی چې دا بد عهده دې او په دې سره به دا انسان پیژندلې کیږي، لکه څنگه چې د یو لښکر قائد په خپل بیرغ سره پیژندلې شی (۵)

② علامه ابن المنیر رحمته الله علیه فرمائي چې گویا ددې وعده خلاف انسان سره به ددې قصد او د ارادې خلاف عمل او کړې شی، ځکه چې بیرغ عموماً په سر باندې وی لیکن ددې بیرغ به لاندې وی چې دې ښه دلیل او رسوا شی، ځکه چې سترگې غالباً د بیرغونو طرفته ځي، نو

(۱) عمدة القاری: ۱۵/۱۰۶.

(۲) کما فی حدیث ابی سعید الخدری رضی الله عنه: لکل غادر لواء يوم القيامة، يرفع له بقدر غدره..... "انظر الصحيح لمسلم، کتاب الجهاد، باب تحریم الغدر، رقم (۴۵۳۸)."

(۳) پورته حواله.

(۴) فتح الباری: ۶/۲۸۴.

(۵) انظر، صحيح مسلم، کتاب الجهاد، باب تحریم الغدر، رقم (۴۵۳۷).

(۶) کتاب السیر: ۳/۸۵۹، رقم (۲۷۰۷)، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۶.

ددې وعده خلاف انسان دا کار به هم د قیامت په ورځ ددې سبب وی چې د خلقو سترگې به په دې بیرغونو باندې لگیدلې وی کوم بیرغونه چې ددې بدعهدو دپاره لگولې شوي وی دغه شان به دا خلق ښه ذلیل او رسوا شی (۱)

⑤ امام قرطبی فرمائی چې د "لکل غادر لواء" په دې جمله کښې نبی کریم ﷺ اهل عرب هغه کار سره مخاطب کړې دی کوم کار چې به دې اهل عرب په خپله کوو. لکه د اهل عرب عادت وو چې هغوی به د وفا دپاره سپین بیرغ او د بدعهدۍ دپاره تور بیرغ اوچتولو یعنې دې دواړو رنگونو به په دې کارونو باندې دلالت کوو. دې دپاره چې خلق بدعهدو لره ملامته کړي، مذمت ئې اوکړي، ددې وجې نه د حدیث تقاضه هم داده چې بدعده انسان سره د قیامت په ورځ هم داسې اوشی چې دده دا کار مشهور شی او اهل محشر ئې مذمت بیان کړي. هرچه وفاداری ده نو ددې په باره کښې څه حدیث خو نه دې راغلي لیکن دا څه لرې نه ده چې ددې د تعریف او مدح دپاره هم دغه شان بیرغ پورته کړې شی او خلق ددې خلقو تعریف اوکړي، خصوصاً هرکله چې د نبی کریم ﷺ دپاره "لواء الحمد" ثابت وی ددې وجې نه د لواء الوفاء کیدل هم څه لرې نه ده (۲)

ترجمة الباب سره د درې واړو احادیثو مناسبت: پورته د دریو حدیثونو ذکر راغلي دي، یو د حضرت ابن مسعود، دویم د حضرت انس او دریم حدیث د حضرت ابن عمر رضی الله عنهما، ترجمه الباب سره ددې درې واړو حدیثونو مناسبت په دې کلماتو کښې موجود دي، "لکل غادر لواء" ځکه چې لفظ د "کل" په عموم باندې دلالت کوي، ددې نه دا معلومیږي چې بدعهدی خواه د نیک سړي نه اوشی یا د بدسړي نه لیکن په هر صورت او هر حال کښې مذموم او د ښه کار دې (۳) د حدیث نه راوتلې شوي بعضي فائدي:

غدر او وعده خلافی کول حرام دی: د پورتنی احادیثو نه یو خو دا خبره معلومه شوه چې وعده خلافی حرامه ده. خصوصاً چې هرکله دا کار یو حاکم یا والی اوکړي، ځکه چې ددې کار نقصان او ضرر متعدی وی او د الله تعالی مخلوق ددې نه متاثره کیږي، دویمه وجه داده چې حاکم چونکه د وعدې په پوره کولو باندې قدرت لري، د هغه دپاره څه مانع نه وی، ددې وجې نه چې حاکم هم بدعهدی کوي نو دا ډیره عجیبه او د عقل نه لرې خبره ده

(۱) فتح الباری: ۶/۲۸۴

(۲) پورته حواله، والمفهم لما اشکل من تلخیص کتاب مسلم، باب النهی عن الغدر، من کتاب الجهاد: ۱۱/۵۴

(۳) قال المهبلي: اخبرنا عن عقوبة الغادر يوم القيامة ان يرفع له لواء، ليعرف الناس بغدرته، فينظرون منه بعين المعصية، وهذه عقوبة من نوع ما قال الله في عاقبة الكاذبين على الله: (ويقول الاشهاد هؤلاء الذين كذبوا على ربهم) (هود: ۱۸)، وانما قال البخاري: باب اثم الغادر للبر والفاجر لعموم قوله ﷺ: لكل غادر لواء..... فدخل فيه من غدر من بر او فاجر، دل ان الغدر حرام لجميع الناس، برهم وفاجرهم، لان الغدر ظلم، وظلم الفاجر حرام كظلم البر التقى. انظر شرح ابن بطلال: ۵/۳۷۰-۳۷۱

حضرت قاضی عیاض رحمۃ اللہ علیہ فرمائی، مشہورہ خو دادہ چې دا حدیث مبارک د حاکم او والی په مذمت کښې راغلې دې، چې دوی خپل قوم، رعیت او خپل فوج سره کومې وعدې کړې دي او هغه پوره نه کړي، یا د خپل ولایت او حکومت هغه ضروریات پوره نه کړي، د کومو ضروریاتو ذمه داری چې ئې په خپله اخستلې ده. نو هرکله چې د خیانته او کړو او رعیت سره ئې د نرمۍ او د مهربانۍ سلوک اونه کړو نو د خپلې وعدې او عهد سره غداری او کړه. قاضی عیاض رحمۃ اللہ علیہ مزید فرمائی چې بعضې حضراتو دا وئیلې دي چې د حدیث مراد رعیت لره د امام د نافرمانۍ نه منع کول او بندول دي، لکه د رعیت دپاره دا جائز نه دی چې هغوی د امام خلاف خروج او بغاوت او کړي او د هغه نافرمانی او کړي، ځکه چې په دې سره ډیرې فتنې پیدا کیدې شي. بیا قاضی صاحب رحمۃ اللہ علیہ اولنی قول ته ترجیح ورکوي او فرمائی، ”والصحيح الاول“ (۱)

لیکن حدیث لره یو معنی سره خاص کول مناسب نه دی هرکله چې د دویمې معنی احتمال هم لری، ددې وجې نه حافظ صاحب رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چې معلومه نه ده چې ددې حدیث په عموم باندې حمل کولو کښې څه خیز مانع دې؟ بیا د حدیث راوی حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما په خپله هم ددې نه هغه معنی مراد اخلي کومه چې قاضی عیاض مرجوحه بنودلې ده، لکه د کتاب الفتن په روایت کښې ددې عبارت زیاتوالې هم راغلې دي. ”وإنا قد بايعنا هذا الرجل على بيع الله ورسوله، وإني لا أعلم غدرًا أعظم من أن يبيع رجل على بيع الله ورسوله، ثم ينصب له القتال، وإني لا أعلم أحدًا منكم خلعته، ولا بايع في هذا الأمر الا كانت الفیصل بيني وبينه“ (۲)

مطلب دادې چې مونږ د هغه سړي (یزید بن معاویه) په لاس د الله تعالی او د رسول صلی اللہ علیہ وسلم په شرط باندې بیعت کړې دي او زما په نزد ددې نه زیاته لویه وعده خلافی نشته چې د یو سړي په لاس باندې د الله تعالی او د رسول صلی اللہ علیہ وسلم په شرط سره بیعت او کړې شي بیا هم ورسره جنگ او کړې شي، که ماته په تاسو کښې د چا په باره کښې معلومه شوه چې هغه د یزید بن معاویه بیعت مات کړې دي یا ئې په دې معامله کښې د هغه بیعت اختیار کړې نه دي نو زما او د هغه مینځ کښې به فیصله وي (یعنی زما او د هغه تعلق به ختم وي).

ددې وجې نه حدیث په عموم باندې محمول کول زیات مناسب دی. والله اعلم (۳)
د قیامت په ورځ به کوم نسبت سره اواز کولې شي؟ د باب د حدیث په بعضې طرقو کښې دا الفاظ هم راغلې دي، ”هذه غدره فلان بن فلان“ (۴).

(۱) فتح الباری: ۶/۲۸۴، واکمال المعلم شرح مسلم للقاضی عیاض: ۶/۱۹-۲۰، باب تحریم الغدر)۔

(۲) الصحيح للبخاری، کتاب الفتن، باب اذا قال عند قوم شینا، ثم..... رقم ((۷۱۱))۔

(۳) فتح الباری: ۶/۲۸۴، وبه قال العینی فی العمدة: ۱۵/۱۰۶)۔

(۴) مثلاً اوگوری صحیح بخاری، کتاب الادب، باب ما يدعی الناس بأبائهم، رقم (۶۱۷۷-۶۱۷۸)، وکتاب الفتن، باب من قال عند قوم شینا..... رقم ((۷۱۱))۔

یعنی د بیرغ لگیدو نه پس به د مزید رسوائی او ذلت دپاره دا اعلان هم کیږی چې دا د فلانی چې د فلانی خوی دې دهغه د وعده خلافی نتیجه ده، ددې نه دا معلومیږی چې د قیامت په ورځ به اولاد ته د پلار په نوم سره آواز کولی شی او د طبرانی د یو روایت نه کوم چې د ابوامامه باهلی رضی الله عنه نه روایت دې، نه دا معلومیږی چې اولاد ته به د مور په نوم سره آواز کولی شی.^(۱) ددې تعارض دوه جوابونه دی:

- ① د طبرانی د پورتنی مذکوره روایت سند ډیر زیات ضعیف دی، ددې وجې نه ددې نه استدلال صحیح نه دی او په مقابله کښې د صحیحینو وغیره روایت دې، بیا په ابوداؤد وغیره کښې د حضرت ابوالدرداء رضی الله عنه یو مرفوع حدیث دی، چې په هغې کښې د پلارانو په نومونو سره د بلنې وضاحت دې: "انکم تدعون یوم القیامة باسمائکم واسماء آبائکم، فاحسنوا اسمائکم"^(۲) که دا روایت هم تسلیم کړې شی کوم روایت کښې چې د مور په نوم سره د آواز کیدو تذکره ده نو د باب په حدیث کښې چې کومه خبره ده هغه به ددې عام نه خاص وی، لکه ابن دقیق العید رحمته الله فرمائی: "وان ثبت انهم یدعون بامهاتهم فقد یخص هذا من العموم"^(۳) امام بخاری رحمته الله په دې مسئله باندې په کتاب الادب کښې مستقلة ترجمه هم قائم کړې ده والله اعلم بالصواب

۱۷. ۳۰: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَوْمَ قَتَحٍ

^(۱) المعجم الكبير: ۲۵۰/۸، رقم (۷۹۷۹)، سعيد بن عبد الله الاودي عن ابي امامة، ومجمع الزوائد: ۴۵/۳، الجنائز، باب تلقين الميت بعد دفنه، وقال الهيثمي: وفي اسناده جماعة لم اعرفهم، والجامع الكبير للسيوطي: ۱/ ۳۴۹، حرف الهمزة، رقم (۲۵۷۱)، وتهذيب سنن ابي داود لابن قيم: ۴۵۴/۲، باب ما يدعى الناس.....، واخرج ابن عدي من حديث انس مثله، وقال: منكر، انظر الكمال له: ۳۴۳/۱، ولسان الميزان: ۵۲۳/۱، ترجمة اسحاق بن ابراهيم الطبري، رقم (۱۰۸۳)۔

^(۲) سنن ابي داود، كتاب الادب، باب في تغيير الاسماء، رقم (۴۹۴۸)، والسنن الكبرى للبيهقي: ۹۵۱۵، كتاب الضحايا، باب في حسن الاسماء، رقم (۲۶۹۴)، وشرح السنة للبغوي: ۳۸۲/۶، كتاب الاستئذان.....، باب تحسين الاسماء، رقم (۳۲۵۲)، وموارد الظمان كتاب الادب، باب ما جاء في الاسماء، رقم (۱۹۴۴)، ومسنند احمد: ۱۹۴/۵، رقم (۲۲۰۳۵)، وشعب الایمان: ۳۹۳/۶، باب في حقوق الاولاد... الستون من شعب...، رقم (۸۶۳۳)

^(۳) فتح الباري: ۲۸۴/۶، دغه شان اوگوری، فتح الباري: ۵۶۳/۱۰، وشرح ابن بطال: ۹۳۳۵)۔

^(۴) صحيح بخاری، كتاب الادب، باب ما يدعى الناس بأبائهم، د حدیث مزید وضاحت دپاره اوگوری: کشف الباری، كتاب الادب: ۵۹۶، ۵۹۷، والابواب والتراجم للكاندهلوي: ۱۱۸/۲)۔

^(۵) قوله: عن ابن عباس رضی الله عنه: الحديث، مر تخريجه في الحج، باب لا يحل القتال بمكة)۔

مَكَّةَ «لَا هِجْرَةَ وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ، وَإِذَا اسْتَنْفِرْتُمْ فَانْفِرُوا». وَقَالَ يَوْمَ فَتَحِ مَكَّةَ «إِنَّ هَذَا الْبَلَدَ حَرَمُ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ، فَهُوَ حَرَامٌ بِحُرْمَةِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، وَإِنَّهُ لَمْ يَحِلَّ الْقِتَالُ فِيهِ لِأَحَدٍ قَبْلِي، وَلَمْ يَحِلَّ لِي إِلَّا سَاعَةٌ مِنْ نَهَارٍ، فَهُوَ حَرَامٌ بِحُرْمَةِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، لَا يُعْضَدُ شَوْكُهُ، وَلَا يُنْفَرُ صَيْدُهُ، وَلَا يُلْتَقِطُ لُقْطَتُهُ إِلَّا مَنْ عَرَفَهَا، وَلَا يُخْتَلَى خَلَاةٌ». فَقَالَ الْعَبَّاسُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِلَّا الْإِذْخِرَ، فَإِنَّهُ لِقَيْنِهِمْ وَلِبُيُوتِهِمْ. قَالَ «إِلَّا الْإِذْخِرَ». (ر: ۱۵۱۰)

رجال الحديث

- ① علی بن عبدالله: دا مشهور محدث علی بن عبدالله ابن المدینی رحمہ اللہ دی، د دوی تذکرہ پہ کتاب العلم، ”باب الفہم فی العلم“ کنبی راغلی دی (د).
- ② جریر: دا جریر بن عبد الحمید رحمہ اللہ دی.
- ③ منصور: دا منصور بن معتمر سلمی کوفی رحمہ اللہ دی. ددی دواړو حضراتو تذکرہ پہ کتاب العلم، ”باب من جعل لاهل العلم.....“ کنبی تیرہ شوی دی (د).
- ④ مجاہد: دا لوئی مفسر حضرت مجاہد بن جبرمکی رحمہ اللہ دی. د دوی حالات پہ کتاب العلم، ”باب الفہم فی العلم“ کنبی بیان شوی دی (د).
- ⑤ طاوس: دا طاوس بن کیسان یمانی رحمہ اللہ دی (د).
- ⑥ ابن عباس رضی اللہ عنہما: د حضرت ابن عباس رحمہما اللہ حالات د ”بدم الوسی“ پہ اولنی حدیث کنبی راغلی دی (د).
- د باب خلورم حدیث د حضرت ابن عباس رحمہما اللہ دی، ددی حدیث تشریح وړاندې په مختلفو مقاماتو کنبی تیرہ شوی دی (د).
- ترجمة الباب سره د حدیث شریف مطابقت: ترجمة الباب سره ددی حدیث په مناسبت کنبی څه غموض دی، چې د هغې د لرې کولو دپاره مختلفو حضراتو دا لاندینی اقوال ارشاد فرمائیلي دي:
- ① علامہ کرمانی رحمہ اللہ فرمائی چې ترجمة الباب سره د حدیث مناسبت ددی قول نه کیدی

① (کشف الباری: ۲۹۷/۳)

② (کشف الباری: ۲۶۸/۳-۲۷۲)

③ (کشف الباری: ۳۰۷/۳)

④ (د دوی د حالاتو دپاره اوگوری، کتاب الوضوء، باب من لم ير الوضوء الا من المخرجين.....) -

⑤ (کشف الباری: ۴۳۵/۱، دغه شان اوگوری، کشف الباری: ۲۰۵/۲) -

⑥ (کشف الباری، کتاب الجہاد: ۵۵/۱-۵۶، ۲۴۷، ۲۴۸، ۶۴۸-۱۰۷) -

شی، "وإذا استغفرتم فانفروا" ځکه چې ددې مطلب هم دادې چې حاکمانو او والیانو سره بد عهدی مه کوئ او د دوی مخالفت مه کوئ، ځکه چې امام کله د نفیر د وتلو حکم او کړی نو وتل واجب دی، نو هم دا کار ددې خبرې تقاضه کوی چې وعده خلافی دې حرام وی، "لان ایجاب الوفاء بالخروج مستلزم لتحریم الغدر" (۱)

② علامه کرمانی رحمته الله مزید فرمائی چې یا امام بخاری رحمته الله د ابن عباس رضی الله عنهما دا حدیث دلته نقل کولو سره دې خبرې طرفته اشاره فرمائی چې دې نبی کریم صلی الله علیه و آله په مکه مکرمه کښې قتل وقاتل او جنگ کولو سره څه وعده خلافی نه ده کړې، ځکه چې دا خو د الله تعالی په حکم سره وو، الله تعالی د نبی کریم صلی الله علیه و آله دپاره د ورځې په څه حصه کښې جنگ کول جائز ګرځولې وو، ددې وجې نه څوک دې دا خیال نه کوی چې دې نبی کریم صلی الله علیه و آله په مکه مکرمه کښې جنگ کولو سره بد عهدی کړې ده، ددې وجه ښکاره ده ځکه چې که د الله تعالی اجازت نه وو نو نبی صلی الله علیه و آله دپاره به په مکه مکرمه کښې هیڅکله جنگ کول جائز نه وو،

لکه علامه کرمانی رحمته الله لیکي: "او أشار إلى أن النبي صلى الله عليه وسلم لم يغدر باستحلال القتال بركة بل كان بإحلال الله له ساعة، ولولا ذلك لما جاز له" (۲)

او هم دا رائي د علامه سندھی رحمته الله هم ده (۳)

③ ابن بطال رحمته الله د ترجمه الباب او د حدیث مناسبت بیانولو کښې فرمائی:

د بندګانو دپاره د الله تعالی د حرام کړې شوې څیزونو حیثیت د وعدو او د میثاق په شان دې، ګویا الله تعالی دوی نه ددې خبرې وعده اخستلې ده چې دوی به ددې حرام کړې شوې څیزونو او منهیاتو نه ځان ساتي او دې کښې به نه مبتلا کیږي، نو کوم کس چې ددې خلاف ورزی کوی ګویا هغه دا وعدې پوره نه کړې او الله تعالی سره ئې چې کومه وعده کړې وه نو د هغې خلاف ورزی ئې اوکړه او د وعدو نه پوره کوونکې، د وعدو خلاف ورزی کوونکې په غادرینو او عهد ماتونکو کښې دې (۴)

④ دغه شان کله چې نبی کریم صلی الله علیه و آله مکه مکرمه فتح کړه نو د مکې په اوسیدونکو ئې فضل او احسان اوکړو، برابره خبره ده چې مسلمانان وی یا منافقین او دا خبره واضحه ده چې په

(۱) شرح الکرماني: ۱۴۸/۱۳، وفتح الباری: ۶/۲۸۴، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۷.

(۲) شرح الکرماني: ۱۴۹/۱۳، وفتح الباری: ۶/۲۸۴، وعمدة القاری: ۱۵/۱۰۷.

(۳) صحيح البخاری بحاشية السندی: ۲/۲۰۶، دار المعرفة، بیروت.

(۴) شرح ابن بطال: ۵/۳۷۱، ومثله عن العلامة الكنکوهي رحمته الله فی اللامع (۷/۳۲۹)، حیث قال ومطابقته بالترجمة من حیث انه قال فی خطبته یومئذ: فان دماکم واموالکم علیکم حرام کحرمة یومکم هذا، فی بلدکم هذا، فی شهرکم هذا "فکان التعرض بشئ منها غدرا وهتکا لحرمة الله تعالی" (۵).

هغوی کښې منافقان هم وو، بیا نبی ﷺ دا خبره او فرمائیله چې مکه مکرمه د قیامت پورې د الله تعالی حرمت سره حرامه ده او دا چې دلته د هیچا دپاره قتل و قتال حلال او جائز نه دي، چې هرکله معامله دا ده نو په دې کښې چا سره وعده خلافی کول جائز نه دی، خواه هغه

نیک وی یا بد وی ځکه چې د نبی کریم ﷺ اعلان امان او معافۍ دې ټولو ته شاملې دی. (۵) ابن المنیر رحمه الله فرمائی: ترجمه الباب سره د حدیث مطابقت داسې دي چې نبی کریم ددې خبرې وضاحت کړې دي چې په مکه مکرمه کښې قتل و قتال حرام دي، علاوه د هغه وخت نه د کوم وخت چې الله تعالی په خپله نبی کریم ﷺ ته اجازت ورکړو، ددې هیڅکله دا مطلب نه دي چې دلته مؤمن او صالح وژل حرام دی ځکه چې په دې سره هرځانې او هره ټکړه موصوف ده چې یوځانې کښې هم د یو مؤمن بنده قتل جائز نه دي، بلکه د مکې مکرمې د حرمت تخصیص د هغه فاجر دپاره دي چې د قتل مستحق هم وی چې د داسې کس قتل هم په مکه مکرمه کښې جائز نه دي، ددې وجه هغه عهد دي کوم چې الله تعالی مکې مکرمې سره خاص کړې دي چې دلته د فاجر سړی قتل هم صحیح نه دي.

اوس که یو سړی یو فاجر سره د مکې مکرمې نه علاوه په یو بل ځانې کښې څه وعده او کړی نو دغه وعده پوره کول لازم دی، ددې خلاف کول حرام دی. دغه شان په اولنی حدیث کښې چې د نیک سړی او بد سړی سره د وعده خلافی کولو کوم عموم دي نو هغې کښې به قوت راشی او دواړو سره به وعده خلافی کول حرام او ګرځي. (۶) حافظ ابن حجر رحمه الله فرمائی:

ددې خبرې هم احتمال دي چې امام بخاری ددې حدیث دلته په ذکر کولو سره د هغه سبب طرفته اشاره کړې وی کوم چې د مکې مکرمې د فتح کولو سبب وو. لکه د فتح مکه سبب دا وو چې قریشو د نبی کریم ﷺ ملګري قبيله بنو خزاعه سره وعده خلافی کړې وه، کله چې د بنو خزاعه او بنو بکر (کوم چې د قریشو ملګري وو) مینځ کښې جنگ شروع شو او قریشو د بنو بکر مدد او کړو او په بنو خزاعه باندې دواړو (قریش او بنو بکر) حمله او کړه او ډیر کسان ئې د دوی قتل کړل، دغه شان د قریشو او د نبی کریم ﷺ مینځ کښې چې کومه د لسو کالو د صلحې معاهده شوې وه، هغه قریشو ماته کړه. ددې وعده خلافی انجام د قریشو دپاره داسې ښکاره شو چې مسلمانانو پرې حمله او کړه او مکه مکرمه ئې فتح کړه او قریش ډیر زیات ذلیل او خوار شو او امن و امان ئې طلب کړو، د قوت، عزت، شان و شوکت نه پس خوار او ذلیل شو، تردې چې د اسلام په قبلولو باندې

(۱) شرح ابن بطلال: ۵/۳۷۱.

(۲) المتواری علی تراجم ابواب البخاری: ۲۰۰.

مجبور شو، حالانکه په زړه سره ئې مسلمانیدل نه غوښتل. (۱)
 گویا امام بخاری رحمه الله په ترجمه الباب کښې د "البر" په ذریعې سره د مسلمانانو طرفته او د "الفاجر" په ذریعې سره د بنو خزاعه طرفته اشاره فرمایلي ده ځکه چې په هغوی کښې ډیر کسان دغه وخت پورې مسلمانان شوې نه وو. (۲) والله اعلم بالصواب
 براءت اختتام: د امام بخاری رحمه الله عادت دادې چې هغه د هر کتاب په آخره کښې یو لفظ راوړي چې په اختتام باندې دلالت کوي، دې سره د کتاب د اختتام سره سره د انسان د خاتمې طرفته هم اشاره کیږي چې څنگه دا کتاب ختم شو نو دغه شان به ستاسو د ژوند کتاب هم یوه ورځ ختم شي او بند به شي، ددې وجې نه غافل مه اوسېږئ. (۳)
 دلته براءت اختتام یا د کتاب په خاتمه باندې چې کوم لفظ دلالت کوي نو هغه د حافظ صاحب رحمه الله د قول مطابق په دې جمله کښې دې "فهو حرام بحرمة الله إلى يوم القيامة" لکه په یوم القيامة کښې د انسان د خاتمې طرفته هم اشاره ده. (۴)
 او حضرت شیخ الحدیث صاحب رحمه الله د نورو کلماتو او جملو نه براءت ثابت کړې دې، لکه هغوی فرمائي: ① "فاذا استغفرتم فانفردوا" په دې کښې د براءت اختتام طرفته اشاره ده.
 ② "يوم القيامة" کښې ددې طرفته دلالت دې.
 ③ لفظ د "الاذخر" په براءت باندې دلالت کوي کوم چې د یو خاص قسم گیاه دپاره استعمالیږي، ددې نه استدلال په دې طور سره دې چې په بعضې طرقو کښې ددې نه پس ددې الفاظو زیاتوالي هم روایت شوې دې، "فانه لقیورهم" چې "دا د دوی د قبرونو دپاره دې" په دې کښې د انسان خاتمه یعنی د قبر تذکره موجوده ده.
 ④ یاد اچې جهاد سراسر د مرګ یادونکې دې ځکه چې دا انسان ته مرګ یادوي. (۵) والله اعلم بالصواب

① تفصیلی واقعي دپاره اوګوري، کشف الباری، کتاب المغازی، باب غزوة الفتح، ۴۹۰-۴۹۲، وسيرة ابن هشام، بدء فتح مكة: ۲/۲۶۳)۔

② فتح الباری: ۲۸۵/۶، والابواب والتراجم للکانهلوی: ۱/۲۰۹)۔

③ اوګوري، کشف الباری، بدء الوحی: ۱/۵۵۳)۔

④ فتح الباری: ۵۴۳/۱۳، کتاب التوحید، باب قول الله تعالى: (ونضع الموازين.....)، رقم (۷۵۶۳)۔

⑤ رواه ابن عبد البر من رواية عبد الوارث..... انظر الاستذکار: ۲۳۶/۷، کتاب الجامع، ما جاء فی تحریم المدينة، رقم (۶۷۳/۴۵)، دغه شان اوګوري، الصحيح للبخاری، کتاب الجنائز، باب الاذخر والحشيش فی القبر، رقم (۱۳۴۹)۔

⑥ الابواب والتراجم للکانهلوی: ۱/۲۰۹)۔

د فرض الخمس والجزية والمواذعة خلاصه: کتاب فرض الخمس والجزية کښې ټول احاديث ۱۱۲ دي، چې په هغې کښې ۱۷ معلق او ۹۹ موصول دي. په دې کښې ۲۷ حديثونه وړاندې تير شوي دي او ۴۹ حديثونه داسې دي چې هغه امام بخاري رحمه الله په اول ځل باندې دلته ذکر کړي دي. په اول ځل چې کوم احاديث ذکر کړي شوي دي نو په هغې کښې ۱۲ احاديث داسې دي چې د هغې تخريج امام مسلم رحمه الله نه دي کړي گويا متفق عليه حديثونه ۳۳ دي او په دې کښې د صحابه کرامو رضي الله عنهم او د تابعينو وغيره رضي الله عنهم ۲۰ آثار هم دي. (۱) والله اعلم

وهذا آخر ما اردنا إيراده هنا من شرح احاديث كتاب الخمس والجزية من صحيح البخاري، رحمه الله تعالى، للشيخ الامام المحدث الجليل سليم الله خان، حفظه الله ورعا، وامتعنا الله بطول حياته بصحة وعافية.

وقد وقع الفراغ من تسويد، وإعادة النظر فيه، ثم تصحيح ملازم الطبع يوم الثلاثاء ۲۷ رمضان المبارك ۱۳۳۱ هـ الموافق ۷ سبتمبر ۲۰۱۰ م.

والحمد لله الذي بنعمته تتم الصالحات، وصلى الله على النبي الامي وآله وصحبه وتابعيهم، وسلم عليه ما دامت الارض والسموات.

رتبه و راجع نصوصه وعلق عليه حبيب الله محمدرزكريا عضو قسم التحقيق والتصنيف الاستاذ بالجامعة الفاروقية، ووقفه الله تعالى لاتمام باقي الكتب كما يحبه ويرضاه وهو على كل شي قدير، ولا حول ولا قوة الا بالله العلي العظيم، ويليه ان شاء الله "كتاب بدء الخلق".

...

مصادر ومراجع

- ١- القرآن الكريم
- ٢- الآحاد والمثاني، الامام الحافظ ابو بكر احمد بن عمرو بن ابي عاصم الشيباني، رحمه الله، المتوفى ٢٨٤هـ، دار الكتب العلمية، بيروت.
- ٣- الابواب والتراجم لصحيح البخاري، شيخ الحديث مولانا محمد زكريا الكاندهلوي رحمه الله تعالى، متوفى ١٢٠٢هـ / ١٨٨٢م، ايج ايم سعيد كمپني كراچي.
- ٤- الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، امام ابو حاتم محمد بن حبان بسق رحمه الله تعالى، متوفى ٢٥٢هـ، مؤسسة الرسالة بيروت.
- ٥- احكام القرآن، امام ابو بكر احمد بن علي رازي جصاص، رحمه الله، متوفى ٢٤٠هـ، دار الكتاب العربي و دار الكتب العلمية بيروت، الطبعة الثانية ١٣٢٢هـ.
- ٦- احكام القرآن، الامام ابو بكر محمد بن عبد الله المعروف بابن العربي رحمه الله، المتوفى ٥٣٣هـ، دار الكتب العلمية بيروت، الطبعة الثانية ١٣٢٢هـ.
- ٧- احكام القرآن، تأليف جماعة من العلماء الربانيين، على ضوء ما افاده حكيم الامة اشرف على التهانوي، رحمه الله، ادارة القرآن والعلوم الاسلامية، كراتشي، الطبعة الاولى ١٣١٣هـ.
- ٨- احياء علوم الدين، امام محمد بن محمد الغزالي رحمه الله تعالى، متوفى ٥٠٥هـ، دار احياء التراث العربي بيروت.
- ٩- اخبار المدينة، الامام ابو زيد عمر بن شبة النميري البصري، رحمه الله، المتوفى ٢٣٣هـ، دار الكتب العلمية، بيروت.
- ١٠- اخبار مكة في قديم الزهر و حديثه، الامام ابو عبد الله محمد بن اسحاق السكي الفاكهي، رحمه الله، المتوفى ٢٤٢هـ، دار خضر، بيروت ١٣١٢، الطبعة الثانية.
- ١١- ارشاد الساري شرح صحيح البخاري، ابو العباس شهاب الدين احمد القسطلاني، رحمه الله تعالى، متوفى ٩١٣هـ، المطبعة الكبرى الاميرية مصر، طبع سادس ١٣٠٢هـ.
- ١٢- الاسامي والكنى، الامام ابو عبد الله احمد بن حنبل الشيباني، رحمه الله، المتوفى ٢٢١هـ، مكتبة دار الاقصى، الكويت، الطبعة الاولى ١٣٠٦هـ.
- ١٣- الاستذكار الجامع لمذاهب فقهاء الامصار و علماء الاقطار، ابو عمر يوسف بن عبد الله بن محمد بن عبد البر، رحمه الله تعالى، متوفى ٢٥٣هـ، دار احياء التراث العربي بيروت، الطبعة الاولى ١٣٢١هـ.
- ١٤- الاستيعاب في اسماء الاصحاب (بها مش الاصابة)، ابو عمر يوسف بن عبد الله بن محمد بن عبد البر، رحمه الله تعالى، متوفى ٢٥٣هـ، دار الفكر بيروت، و مطبوع في مجلدين، الطبعة الاولى ١٣٢١هـ.
- ١٥- اسد الغابة في معرفة الصحابة، عز الدين ابو الحسين، علي بن محمد الجزري المعروف بابن الاثير، رحمه الله تعالى، المتوفى ٥٣٠هـ، دار الكتب العلمية بيروت.
- ١٦- الاسماء المبهمة، الخطيب البغدادي، رحمه الله، المتوفى ٢٣٣هـ.

- ١٤- الاشباه والنظائر مع شرحه للحموي، العلامة زين الدين بن ابراهيم المعروف بابن نجيم الحنفي، ر. حبه الله، المتوفى ٥٩٠هـ، ادارة القرآن والعلوم الاسلامية، كراتشي.
- ١٨- اعلام الحديث، امام ابو سليمان حمد بن محمد الخطابي، ر. حبه الله تعالى، متوفى ٥٢٨هـ، مركز احياء التراث الاسلامي جامعة ام القرى مكة المكرمة.
- ١٩- اعلام السنن، علامه ظفر احمد عثمانى، ر. حبه الله تعالى، متوفى ١٣٩٣هـ، ادارة القرآن كراتشي.
- ٢٠- الاقتناع في حل الفاظ ابن شجاع، للامام محمد بن احمد الشربيني الخطيب، ر. حبه الله، المتوفى ٥٩٤هـ، دار الفكر، بيروت ١٢١٥هـ.
- ٢١- اكمال تهذيب الكمال، العلامة الهام علام الدين مغلطاي بن قليج الحنفي، ر. حبه الله، المتوفى ٥٤٣هـ، الفاروق الحديثة للطباعة والنشر، الطبعة الاولى ١٣٢٢هـ.
- ٢٢- الاكمال في رفع الارتياح عن المؤلف والمؤلف في الاسماء والكفى والانساب، الامير الحافظ ابن ماكولا، ر. حبه الله، المتوفى ٥٢٥هـ، دائرة المعارف العثمانية، الهند.
- ٢٣- اكمال المعلم شرح صحيح المسلم، العلامة القاضي ابو الفضل عياض اليحصي ر. حبه الله، المتوفى ٥٣٢هـ، الام (انظر كتاب الام).
- ٢٤- اكمال اكمال المعلم شرح صحيح المسلم، ابو عبد الله محمد بن خليفة الوشائي الابن المالكي، ر. حبه الله تعالى، المتوفى ٨٢٨هـ، دار الكتب العلمية، بيروت.
- ٢٥- الانساب، ابو سعد عبد الكريم بن محمد بن منصور السمعاني، ر. حبه الله تعالى، متوفى ٥٥٣هـ، دار الجنان، بيروت، طبع اول ١٣٠٨هـ / ١٩٨٨ م.
- ٢٦- اوجز المسالك الى مؤطا مالك، شيخ الحديث حضرت مولانا زكريا الكاندهلوي، ر. حبه الله، متوفى ١٢٠٢هـ، مطابق ١٩٨٢ م، دار القلم، دمشق، الطبعة الاولى ١٣٢٢هـ.
- ٢٧- البحر الرائق شرح كنز الدقائق، العلامة بن نجيم المصري الحنفي، ر. حبه الله، المتوفى ٩٤٠هـ، دار الكتب العلمية، بيروت.
- ٢٨- بدائع الصنائع في ترتيب الشرائع، ملك العلماء علام الدين ابو بكر بن مسعود الكاساني، ر. حبه الله تعالى، متوفى ٥٨٤هـ، دار الكتب العلمية، بيروت.
- ٢٩- بداية المجتهد، علامه قاضي ابو الوليد محمد بن احمد بن رشد القرطبي، متوفى ٥٩٥هـ، مصر طبع خاص، ودار الكتب العلمية، بيروت، الطبعة الثانية ١٣٢٢هـ.
- ٣٠- البداية والنهاية، حافظ عماد الدين ابو الفداء اسماعيل بن عمر المعروف بابن كثير، ر. حبه الله تعالى، متوفى ٥٤٢هـ، مكتبة المعارف بيروت، طبع ثاني ١٩٤٤ م.
- ٣١- البدر الساري حاشية فيض الباري، حضرت مولانا بدر عالم ميرٹھی صاحب، ر. حبه الله تعالى، متوفى ١٣٨٥هـ، رباني بکڈھو دھلی، مطبوعه: ١٩٨٠ م.
- ٣٢- بذل المجهود في حل ابو داود، علامه خليل احمد سهارنهوري، ر. حبه الله تعالى، متوفى ١٣٢١هـ، مطبعة ندوة العلماء لکھنؤ ١٣٩٣هـ / ١٩٤٢ م و مرکز الشيخ ابی الحسن الندوی، یوپی، الهند، الطبعة الاولى ١٣٢٤هـ.

- ٢١- البناية شرح الهداية، العلامة بدر الدين عيني محمود بن احمد، رحمه الله تعالى، متوفى ٨٥٥ هـ، دار الكتب العلمية، بيروت، الطبعة الاولى ١٣٦٠ هـ -
- ٢٢- تاج العروس من جواهر القاموس، ابو الفيض سيد محمد بن محمد المعروف بالمرتضى الزبيدي، رحمه الله تعالى، متوفى ١٢٠٥ هـ، دار مكتبة الحياة، بيروت ودار الهداية -
- ٢٣- تاريخ الاسلام اردو، مولانا اكبر شاه نجيب آبادي، نفيس اكيڏمي، اردو بازار كراچي -
- ٢٤- تاريخ الامم والملوك (تاريخ الطبري)، الامام ابو جعفر محمد بن جرير الطبري، رحمه الله، المتوفى ٥٢٣ هـ، دار الكتب العلمية، بيروت، الطبعة الثالثة ١٣٦١ هـ -
- ٢٥- تاريخ بغداد او مدينة السلام، حافظ احمد بن علي المعروف بالخطيب البغدادي، رحمه الله تعالى، متوفى ٥٣٣ هـ، دار الكتاب العربي بيروت -
- ٢٦- تاريخ الطبري، انظر (تاريخ الامم والملوك) -
- ٢٧- تاريخ عثمان بن سعيد الدارمي، المتوفى ٢٨٠ هـ، عن ابي زكريا يحيى بن معين، المتوفى ٢٣٣ هـ، دار البامون للتراث، ١٣٠٠ هـ -
- ٢٨- التاريخ الصغير، امير المؤمنين في الحديث محمد بن اسماعيل البخاري، رحمه الله تعالى، متوفى ٢٥٦ هـ، دار المعرفة بيروت -
- ٢٩- التاريخ الكبير، امير المؤمنين في الحديث محمد بن اسماعيل البخاري، رحمه الله تعالى، متوفى ٢٥٦ هـ، دار الكتب العلمية بيروت -
- ٣٠- تاريخ مدينة دمشق و ذكر فضلها وتسمية من حلها من الاماثل، ابو القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله الشافعي، رحمه الله، المتوفى ٥٤١ هـ، دار الفكر، بيروت ١٩٩٥ م -
- ٣١- تحفة اثنا عشرية (فارسي)، شاه عبدالعزیز محدث دهلوی، رحمه الله، متوفى ١٢٣٩ هـ، سهيل اكيڏمي، لاهور، پاکستان -
- ٣٢- تحفة الاشراف بمعرفة الاطراف، ابو الحجاج جمال الدين يوسف بن عبد الرحمن المزي، رحمه الله تعالى، متوفى ٥٤٢ هـ، المكتب الاسلامي بيروت، طبع دوم ١٣٠٣ هـ -
- ٣٣- تحفة الباري بشرح صحيح البخاري، شيخ الحديث زكريا بن محمد الانصاري، رحمه الله تعالى، المتوفى ٩٢١ هـ، دار الكتب العلمية بيروت، الطبعة الاولى ١٣٢٥ هـ -
- ٣٤- تدريب الراوي بشرح تقريب النواوي، حافظ جلال الدين عبد الرحمن سيوطي رحمه الله تعالى، متوفى ٩١١ هـ، المكتبة العلمية مدينته منورة -
- ٣٥- تذكرة الحفاظ، حافظ ابو عبد الله شمس الدين محمد بن عثمان الذهبي، رحمه الله تعالى، متوفى ٩١١ هـ، دائرة المعارف العثمانية، الهند -
- ٣٦- التصريح بما تواتر في نزول المسيح، امام العصر، المحدث الكبير محمد انور شاه الكشميري، رحمه الله تعالى، المتوفى ١٣٥٢ هـ، مكتبة دار العلوم كراتشي -

- ٢٨ - التعليق المجد المطبوع مع الموطأ لمحمد ، ابو الحسنات محمد عبد العلي اللكنوي ، رحمه الله تعالى ، المتوفى ١٣٠٢ هـ ، قد روى كتب خاانه كراتشي -
- ٢٩ - تعليقات الخطيب على الفتح المطبوع مع فتح الباري ، محب الدين الخطيب ، رحمه الله تعالى
- ٣٠ - تعليقات على بذل المجهود ، شيخ الحديث محمد زكريا كاندهلوي ، رحمه الله تعالى ، المتوفى ١٣٠٢ هـ ، المكتبة التجارية ، ندوة العلماء لکهنؤ الطبعة الثالثة ١٣٩٣ هـ / ١٩٧٣ م ، ومركز الشيخ ابي الحسن الندوي الهند
- ٣١ - تعليقات على تحرير تقرير التهذيب الدكتور بشار عواد معروف ، والشيخ شعيب ارنؤوط ، حفظهما الله ، مؤسسة الرسالة ، بيروت ، الطبعة الاولى ١٣١٤ هـ -
- ٣٢ - تعليقات على تهذيب التهذيب ، المطبوع بذييل تهذيب التهذيب -
- ٣٣ - تعليقات على تهذيب الكمال ، دكتور بشار عواد معروف ، حفظه الله تعالى ، مؤسسة الرسالة ، بيروت ، الطبعة الاولى ١٣١٣ هـ -
- ٣٤ - تعليقات على الكاشف للذهبي ، شيخ محمد عوامه / شيخ احمد محمد نمر الخطيب حفظهما الله ، مؤسسة دار القبلة / مؤسسة علوم القرآن ، الطبعة الاولى ١٣١٣ هـ -
- ٣٥ - تعليقات على كوكب الدرر ، مولانا شيخ الحديث مولانا محمد زكريا كاندهلوي ، رحمه الله تعالى ، المتوفى ١٣٠٢ هـ -
- ٣٦ - تعليقات على لامع الدراري ، شيخ الحديث مولانا محمد زكريا كاندهلوي ، رحمه الله تعالى ، متوفى ١٣٠٢ هـ / ١٩٨٢ م ، مكتبة امداديه ، مکه مکرمه -
- ٣٧ - تعليقات على المصنف ، الشيخ محمد عوامه ، حفظه الله ورعاه ، ادارة القرآن والعلوم الاسلامية ، كراتشي ، الطبعة الثانية ١٣٢٨ هـ -
- ٣٨ - تعليق التعليق ، حافظ احمد بن علي المعروف بابن حجر رحمه الله تعالى ، متوفى ٨٥٢ هـ ، المكتب الاسلامي ، ودار عمار ، والمكتبة الاثرية ، لاهور ، باكستان -
- ٣٩ - تفسير آيات الاحكام من القرآن ، الشيخ محمد علي الصابوني ، حفظه الله ورعاه ، دار الكتب العلمية ، بيروت ، الطبعة الاولى ١٣٢٥ هـ -
- ٤٠ - تفسير البغوي المسى بمعالم التنزيل ، الامام ابو محمد الحسين بن مسعود البغوي ، رحمه الله ، المتوفى ٥١٦ هـ ، دار المعرفة ، بيروت -
- ٤١ - تفسير البيضاوي مع حاشية الشهاب ، الامام ابو سعيد عبد الله بن عمر البيضاوي ، رحمه الله ، المتوفى ٦٨١ هـ ، دار الكتب العلمية ، بيروت ، الطبعة الاولى ١٣١٤ هـ -
- تفسير الثعلبي (النظر الكشف والبيان) -
- ٤٢ - تفسير السمرقندي المسى بحر العلوم ، الامام الفقيه نصر بن محمد ابو الليث السمرقندي ، رحمه الله ، المتوفى ٢٤٥ هـ ، دار الكتب العلمية ، بيروت -
- ٤٣ - تفسير السمعاني ابو المظفر منصور بن محمد السمعاني رحمه الله المتوفى ٢٢٨ هـ دار الوطن الرياض ١٣١٨ هـ

- ٢٠ - تفسير الطبري (جامع البيان) ، امام محمد بن جرير الطبري ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٢١٠ هـ ، دار المعرفة ، بيروت .
- ٢١ - تفسير القرآن العظيم ، حافظ ابو الفداء عماد الدين اسماعيل بن عمر ابن كثير دمشقي ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٤٤٢ هـ ، دار احياء الكتب العربية .
- ٢٢ - تفسير القرطبي (الجامع لاحكام القرآن) ، امام ابو عبد الله محمد بن احمد الانصاري القرطبي ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٦٤١ هـ ، دار الفكر ، بيروت .
- ٢٣ - التفسير الكبير ، (تفسير الرازي او مفاتيح الغيب) ، الامام ابو عبد الله فخر الدين محمد بن عمر الرازي ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٦٠٦ هـ ، مكتب الاعلام الاسلامي ، ايران .
- ٢٤ - تفسير المنار ، السيد الامام محمد رشيد رضا المصري ، رحمه الله ، المتوفى ١٣٤٥ م ، دار الكتب العلمية ، بيروت ، الطبعة الثانية ، ١٣٣٦ هـ .
- ٢٥ - تفسير النسفي (مدارك التنزيل وحقائق التأويل) ، ابو البركات عبد الله بن احمد النسفي ، رحمه الله ، المتوفى ٤١٠ هـ ، المكتبة العلمية ، لاهور ، باكستان .
- ٢٦ - تقريب التهذيب ، حافظ ابن حجر عسقلاني ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٤٥٢ هـ ، دار الكتب العلمية ، بيروت ، الطبعة الاولى ١٣١٣ هـ .
- ٢٧ - تقريرات الرافي السبابة : التحرير المختار لرد المحتار ، الامام العلامة عبد القادر بن مصطفى البيساري الرافي الحنفي ، رحمه الله ، المتوفى ١٣٢٢ هـ ، مكتبة رشيديه ، كوثه .
- ٢٨ - التقرير والتحرير في علم الاصول ، الجامع بين اصطلاح الحنفية والشافعية ، ابن امير الحاج ، رحمه الله ، المتوفى ٨٤٩ هـ ، دار الفكر ، بيروت ، الطبعة الاولى ١٣١٤ هـ .
- ٢٩ - تكملة فتح الملهم ، مولانا محمد تقي عثمان صاحب مدظلهم ، مكتبة دار العلوم كراچی و دار احياء التراث العربي ، بيروت ، الطبعة الاولى ١٣٣١ هـ .
- ٣٠ - تلخيص الحبير في تخريج احاديث الرافي الكبير ، حافظ ابن حجر عسقلاني رحمه الله ، متوفى ٨٥٤ هـ ، دار نشر الكتب الاسلامية لاهور ، دار الكتب العلمية ، بيروت ١٣١٩ هـ .
- ٣١ - تلخيص المستدرک (مع المستدرک) ، حافظ شمس الدين محمد بن احمد عثمان ذهبي رحمه الله تعالى ، متوفى ٤٣٨ هـ ، دار الفكر بيروت .
- ٣٢ - التمهيد لما في الموطأ من المعاني والاسانيد ، حافظ ابو عمر يوسف بن عبد الله بن محمد عبد البر مالكي ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٤٣٣ هـ ، المكتبة التجارية ، مكة المكرمة .
- ٣٣ - تنزيه الشريعة المرفوعة عن الاحاديث الشنيعة البوضوعة ، الامام ابو الحسن علي بن محمد ابن عراق الكنتاني ، رحمه الله تعالى ، المتوفى ٩٣٣ هـ ، دار الكتب العلمية ، بيروت ، الطبعة الثانية ١٣٠١ هـ .
- ٣٤ - تنوير المقباس من تفسير ابن عباس ، المنسوب الى عبد الله بن عباس رضي الله عنهما ، المتوفى ٦٨ هـ ، جمعه محمد بن يعقوب الفيروز آبادي ، رحمه الله ، المتوفى ٨١٤ هـ ، دار الكتب العلمية ، بيروت .
- ٣٥ - توضيح المشيئة ، حافظ شمس الدين ذهبي ، رحمه الله ، متوفى ٤٣٨ هـ ، دار الكتب العلمية ، بيروت ، الطبعة الاولى ١٣٢٢ هـ .

- ٨٠- تهذيب الاسماء واللغات . امام معي الدين ابو زكريا يحيى بن شرف النووي . رحمه الله تعالى . متوفى ١٢٤٦هـ . ادارة الطباعة المنيرية .
- ٨١- تهذيب تاريخ دمشق الكبير . الامام الحافظ ابو القاسم علي المعروف بابن عساكر الشافعي . رحمه الله . المتوفى ٥٥١هـ . دار المسيرة . بيروت . الطبعة الثانية ١٣٩٩هـ .
- ٨٢- تهذيب التهذيب . حافظ ابن حجر عسقلاني . رحمه الله تعالى . متوفى ٨٥٢هـ . دائرة المعارف النظامية . حيدر آباد دكن ١٣٢٥هـ .
- ٨٣- تهذيب سنن ابي داود . الامام ابن قيم الجوزية . رحمه الله . المتوفى ٧٥١هـ . مطبعة انصار السنة المحمدية . ١٣٦٤هـ .
- ٨٤- تهذيب الكمال . حافظ جمال الدين ابو الحجاج يوسف بن عبد الرحمن مزي . رحمه الله تعالى . متوفى ٧٦٢هـ . مؤسسة الرسالة . طبع اول . ١٢١٣هـ .
- ٨٥- الثقات (كتاب الثقات) . حافظ ابو حاتم محمد بن حبان بسقي . رحمه الله . متوفى ٢٥٢هـ . دائرة المعارف العثمانية . حيدر آباد . ١٣٩٣هـ .
- ٨٦- جامع الاصول من حديث الرسول . علامه مجد الدين ابو السعادات المبارك بن محمد بن الاثير الجزري . رحمه الله . متوفى ٦٠٦هـ . دار الفكر . بيروت .
- جامع البيان (ديكهنه) . تفسير الطبري
- ٨٧- جامع الترمذي . (سنن ترمذي) . امام ابو عيسى محمد بن عيسى بن سورة الترمذي . رحمه الله تعالى . متوفى ٢٦٩هـ . سعيد كراچي / دار احياء التراث العربي .
- ٨٨- الجامع الصغير من احاديث البشير النذير . الامام جلال الدين السيوطي . رحمه الله . المتوفى ٩١١هـ . دار الكتب العلمية . بيروت .
- الجامع لاحكام القرآن (تفسير القرطبي) .
- ٨٩- جامع المسانيد والسنن . الامام الحافظ عبد الرحمن بن ابي حاتم الرازي . رحمه الله . المتوفى ٤٤٣هـ . دار الفكر . بيروت . الطبعة الثانية . ١٣٢٣هـ .
- ٩٠- الجرح والتعديل . الامام الحافظ عبد الرحمن بن ابي حاتم الرازي . رحمه الله تعالى . المتوفى ٣٣٤هـ . دار الكتب العلمية . بيروت . الطبعة الثانية . ١٣٢٣هـ .
- ٩١- جمع الجوامع (الجامع الكبير و الجامع الصغير و زوائد) . الامام جلال الدين السيوطي . رحمه الله . المتوفى ٩١١هـ . دار الكتب العلمية . بيروت . الطبعة الاولى ١٣٢١هـ .
- ٩٢- جمهرة النساب العرب . ابو محمد علي بن احمد بن سعد بن حزم الاندلسي . رحمه الله . المتوفى ٢٥٦هـ . دار الكتب العلمية . بيروت . ١٣٢٢هـ . الطبعة الثالثة .
- ٩٣- الجوهرية النقي في الرد على البيهقي . المطبوع في ذيل السنن الكبرى . العلامة علام الدين الشهيد بابن التركماني . رحمه الله . المتوفى ٤٣٥هـ . نشر السنة . ملتان . باكستان
- حاشية ابن عابدين (النظر رد المحتار)
- ٩٤- حاشية الجمل على الجلالين (الفتوحات الالهية) . الامام العلامة سليمان الجمل رحمه الله المتوفى ١٣٠٢هـ . قندلي

- ٩١- حاشية الدسوقي على الشرح الكبير . الامام العلامة محمد بن احمد الدسوقي المالكي . رحمه الله . المتوفى ١١٣٠ هـ . دار الكتب العلمية . الطبعة الثانية . ١٣٢٢ -
- ٩٢- حاشية سبط ابن العجى على الكاشف . امام برهان الدين ابراهيم بن محمد سبط ابن العجى الحلبي . رحمه الله . متوفى ٨٣١ هـ . شركة دار القبلة / مؤسسة علوم القرآن -
- ٩٣- حاشية السندی على البخاری . امام ابو الحسن نور الدين محمد بن عبد الهادي السندی . رحمه الله تعالى . متوفى ١١٣٨ هـ . دار المعرفة . بيروت -
- ٩٤- حاشية السندی على مسلم . المطبوع مع صحيح مسلم . الامام ابو الحسن السندی . رحمه الله . متوفى ١١٣٨ هـ . قديمي كتب خانه كراتشي -
- ١٠٠- حاشية السهارنفوري . المطبوع مع صحيح البخاري . مولانا احمد علي السهارنفوري . رحمه الله تعالى . متوفى ١٢٩٤ هـ . طبع قديمي -
- ١٠١- حاشية الشهاب المسماة : عناية القاضي وكفاية الراضي . علي البيضاوي . القاضي شهاب الدين احمد بن محمد بن عمر الخفاجي . رحمه الله . المتوفى ١٠٦٩ هـ . دار الكتب العلمية . بيروت -
- ١٠٢- الحاوي في سيرة الامام الطحاوي . المطبوع مع شرح معاني الآثار . امام اهل السنة العلامة محمد زاهد الكوثري . رحمه الله -
- ١٠٣- الخصائص الكبرى . الامام جلال الدين السيوطي . رحمه الله تعالى . ٩١١ هـ . دار الكتب العلمية . بيروت -
- ١٠٤- خصائص نبوي شرح شمائل ترمذي (اردو) شيخ الحديث محمد زكريا كاندهلوي رحمه الله متوفى ١٢٠٢ هـ
- ١٠٥- خلاصة الخزرجي . (خلاصة تذهيب تهذيب الكمال) . علامه صفی الدین خزرجی . رحمه الله تعالى . متوفى ٩٢٣ هـ . بعد . مكتب المطبوعات الاسلامية بحلب -
- ١٠٦- دائرة معارف اسلاميه (اردو) . اساتذہ جامعہ پنجاب . دانش گاہ پنجاب . لاہور . نقش ثانی ١٩٨٠ م -
- ١٠٧- الدر المختار . علامه علام الدين محمد بن علي بن محمد الحصكفي . رحمه الله تعالى . متوفى ١٠٨٨ هـ . مكتبه عارفین . پاکستان چوک کراچی -
- ١٠٨- الديباج على صحيح مسلم بن الحجاج . ابو الفضل عبد الرحمن بن ابی بکر جلال الدين السيوطي . رحمه الله . المتوفى ٩١١ هـ . ادارة القرآن كراتشي . الطبعة الاولى . ١٣١٢ هـ -
- ١١٠- ديوان الحماسة (المحشى) . ابو تمام حبيب بن اوس الطائي . رحمه الله . المتوفى ٢٠٢ هـ . دار الحديث ملتان . پاکستان -
- ١١١- ذخائر المواريث في الدلالة على مواضع الحديث . العلامة عبد الغني بن اسماعيل بن عبد الغني النابلسي . رحمه الله . متوفى ١٢٢٢ هـ . دار المعرفة . بيروت -
- ١١٢- رد المحتار . علامه محمد امين بن عمر بن عبد العزيز عابدين شامي . رحمه الله . متوفى ١٢٥٢ هـ . مكتبه رشيديه . کوئٹہ -
- ١١٣- رسالة شرح تراجم ابواب البخاري . (مطبوعه مع صحيح البخاري) . حضرت مولانا شاه ولي الله . رحمه الله . متوفى ١١٤٦ هـ . قديمي -

- ١١٣- رفع الحاجب عن مختصر ابن الحاجب، تاج الدين ابو النصر عبد الوهاب بن علي السبكي، رحمه الله، المتوفى ٥٤٤هـ، عالم الكتب، بيروت، الطبعة الاولى ١٣١٩هـ -
روائع البيان (انظر تفسير آيات الاحكام) -
- ١١٥- روح المعاني في تفسير القرآن العظيم و السبع المثاني، ابو الفضل شهاب الدين سيد محمود آلوسي بغدادي، رحمه الله تعالى، متوفى ١٣٤٠هـ، مكتبة امداديه، ملتان -
- ١١٦- الروض الالوف في تفسير احاديث السيرة النبوية لابن هشام، الامام المحدث ابو القاسم عبد الرحمن السهيلي، رحمه الله، المتوفى ٥٥٨هـ، عبد التواب اكيذهي، ملتان -
- ١١٧- زاد المعاد من هدى خير العباد، حافظ شمس الدين ابو عبد الله بن ابي بكر المعروف بابن القيم، رحمه الله، متوفى ٥٤١هـ، مؤسسة الرسالة -
- ١١٨- سبل السلام شرح بلوغ المرام، السيد الامام محمد بن اسماعيل الصنعاني المعروف بالامير، رحمه الله، المتوفى ١١٨٢هـ، دار احياء التراث العربي، بيروت، الطبعة الخامسة -
- ١١٩- سنن ابن ماجه، امام ابو عبد الله محمد بن ماجه، رحمه الله تعالى، متوفى ٢٤٣هـ، قديسي / دار الكتاب المصري قاهرة -
- ١٢٠- سنن ابي داود، امام ابو داود سليمان بن الاشعث السجستاني، رحمه الله تعالى، متوفى ٢٤٥هـ، الحج ايم سعيد كميني / دار احياء السنة النبوية -
- ١٢١- سنن الدار قطني، حافظ ابو الحسن علي بن عمر الدارقطني، رحمه الله تعالى، متوفى ٢٨٥هـ، دار نشر الكتب العلمية، بيروت، الطبعة الثانية، ١٣٢٢هـ / ٢٠٠٢م -
- ١٢٢- سنن الدارمي، امام ابو محمد عبد الله بن عبد الرحمن الدارمي، رحمه الله تعالى، متوفى ٢٥٥هـ، قديسي -
- ١٢٣- سنن سعيد بن منصور، الامام الحافظ سعيد بن منصور بن شعبة الخراساني المكي، رحمه الله، المتوفى ٢٢٤هـ، دار الكتب العلمية، بيروت -
- ١٢٤- السنن الصغرى للنسائي، امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعيب النسائي، رحمه الله تعالى، متوفى ٢٤٢هـ، قديسي / دار السلام رياض -
- ١٢٥- السنن الكبرى للبيهقي، امام حافظ ابو بكر احمد بن الحسين بن علي البيهقي، رحمه الله تعالى، متوفى ٢٥٨هـ، دار الكتب العلمية بيروت -
- ١٢٦- سير اعلام النبلاء، حافظ ابو عبد الله شمس الدين محمد بن احمد بن عثمان ذهبي، رحمه الله تعالى، متوفى ٤٢٨هـ، مؤسسة الرسالة -
- ١٢٧- سير اعلام النبلاء، حافظ ابو عبد الله شمس الدين محمد بن احمد بن عثمان ذهبي، رحمه الله، متوفى ٤٢٨هـ، مؤسسة الرسالة -
- السير الكبير (انظر كتاب السير الكبير) -
- ١٢٨- السيرة الحلبية (السان العيون)، علامه علي بن برهان الدين الحلبي، رحمه الله، المتوفى ١٠٢٢هـ، المكتبة الاسلامية، بيروت -

- ١٣١- السيرة النبوية . الامام ابو محمد عبد الملك بن هشام المعافري . رحمه الله . متوفى ٥٢٣ هـ . مطبعة مصطفى الباني الحلبي بمصر . ١٣٥٥ هـ . والمكتبة العلمية . بيروت .
- ١٣٠- شرح علل الترمذي . الامام الحافظ ابن رجب الحنبلي . رحمه الله . المتوفى ٤٩٥ هـ .
- ١٣١- الشرح الكبير . للامام الدردير المالكي . رحمه الله . المتوفى ١٢٠١ هـ . المطبوع من حيث المتن مع حاشية الدسوقي . رحمه الله . دار الكتب العلمية . بيروت .
- ١٣٢- شرح التوضيح (التلويح) . العلامة سعد الدين التفتازاني الشافعي . رحمه الله . المتوفى ٤٣٣ هـ . مير محمد كتب خانه . كراچی .
- ١٣٣- شرح ابن بطلال . امام ابو الحسن علي بن خلف بن عبد الملك المعروف بابن بطلال . رحمه الله تعالى . متوفى ٢٢٩ هـ . مكتبة الرشد . الرياض . الطبعة الاولى . ١٣٢٠ هـ .
- ١٣٣- شرح الزرقاني على الموطأ . شيخ محمد بن عبد الباقي بن يوسف الزرقاني المصري . رحمه الله . متوفى ١١٣٢ هـ . دار الفكر . بيروت .
- ١٣٥- شرح السنة . الامام المحدث ابو محمد الحسين بن مسعود البغوي . رحمه الله . ٥٢١ هـ . دار الكتب العلمية . بيروت . الطبعة الثانية . ١٣٢٢ هـ .
- شرح الطيبي (ديكهي) . الكاشف عن حقائق السنن
- ١٣٦- شرح سنن ابن ماجه المسوي ب انجاح الحاجة . الشيخ عبد الغني المجددي الدهلوي . رحمه الله . المتوفى ١٢٩٥ هـ . وتعليقات لفخر الحسن المحدث الكنگوهي . رحمه الله . قديمي كتب خانه . كراتشي .
- ١٣٤- شرح السيرة الكبير الامام محمد بن احمد السرخسي رحمه الله المتوفى ٢٩٠ هـ دار الكتب العلمية بيروت
- شرح الشفاء (انظر : نسيم الرياض)
- شرح القسطلاني (ديكهي) ارشاد الساري
- ١٣٨- شرح الكرماني (الكوكب الدراري) علامه شمس الدين محمد بن يوسف بن علي الكرماني . رحمه الله تعالى . متوفى ٤٨٦ هـ . دار احياء التراث العربي بيروت .
- ١٣٩- شرح مشكل الآثار . الامام المحدث ابو جعفر احمد بن محمد سلامة الطحاوي . رحمه الله تعالى . المتوفى ٣٢١ هـ . مؤسسة الرسالة بيروت . الطبعة الثانية ١٣٢٤ هـ .
- ١٤٠- شرح معاني الآثار الامام المحدث ابو جعفر احمد بن محمد بن سلامة الطحاوي رحمه الله . المتوفى ٣٢١ هـ . مير محمد كتب خانه آرام باغ . كراچی .
- ١٣١- شرح النقاية . الامام علي بن محمد سلطان القاري الحنفي . رحمه الله . المتوفى ١٠١٣ هـ . الحج ايم سعيد كهنی . كراچی .
- ١٣٢- شرح النووي على صحيح مسلم امام ابو زكريا يحيى بن شرف النووي رحمه الله تعالى المتوفى ٦٤٦ هـ قديمي
- ١٣٣- الشفاء بتعريف حقوق المصطفى . للامام القاضي عياض المالكي اليحصبي . رحمه الله . المتوفى ٥٢٢ هـ . دار الكتب العلمية . بيروت . الطبعة الثانية . ١٣٢٢ هـ .

- ١٣٢- الشماثل المحمدية . الامام ابو عيسى محمد بن عيسى بن سورة الترمذي رحمه الله . المتوفى ٢٤٩ هـ . دار الكتب العلمية بيروت ١٣٢٤ هـ .
- ١٣٥- الصحاح (قاموس عربي - عربي) . الامام اسماعيل بن حماد الجوهري . رحمه الله . المتوفى ٢٣٣ هـ . دار المعرفة . بيروت . الطبعة الثانية . ١٣٢٨ هـ .
- ١٣٦- الصحيح للبخاري . امام ابو عبد الله محمد بن اسمعيل البخاري . رحمه الله تعالى . المتوفى ٢٥٢ هـ . قديس كتب خانه . كراچی / دار السلام . رياض . الطبعة الاولى ١٣١٤ هـ .
- ١٣٧- الصحيح لمسلم . امام مسلم بن الحجاج القشيري النيسابوري . رحمه الله تعالى . متوفى ٢٦١ هـ . قديس كتب خانه . كراچی / دار السلام . رياض .
- الضعفاء الكبير (انظر كتاب الضعفاء الكبير) .
- ١٣٨- الطبقات الكبرى . الامام ابو محمد بن سعد . رحمه الله . المتوفى ٢٣٠ هـ . دار صادر بيروت .
- ١٣٩- طرح التثريب في شرح التقريب . امام زين الدين . ابو الفضل عبد الرحيم بن الحسين العراقي . المتوفى ٨٠٦ هـ . وولده الحافظ ابو زرعة العراقي . المتوفى ٨٣٦ هـ . مكتبة نزار مصطفى الباز . مكة المكرمة .
- ١٤٠- العلل الواردة في الاحاديث النبوية . الشيخ الامام ابو الحسن علي بن عمر الدارقطني . رحمه الله . المتوفى ٣٨٥ هـ . دار طيبة . الطبعة الثانية . ١٣٣٢ هـ .
- ١٤١- العلل المتناهية في الاحاديث الواهية . الامام عبد الرحمن ابن الجوزي . رحمه الله . المتوفى ٥٩٤ هـ .
- ١٤٢- عمدة القاري . الامام بدر الدين ابو محمد بن محمود احمد العيني . رحمه الله . متوفى ٨٥٥ هـ . ادارة الطباعة المنيرية .
- ١٤٣- غريب الحديث . الامام احمد بن محمد الخطابي البستي . رحمه الله . المتوفى ٢٨٨ هـ . جامعة ام القرى . مكة المكرمة . ١٣٠٢ هـ .
- ١٤٤- الفاروق . مولانا شبلي نعماني . دار الاشاعت . كراچی .
- ١٤٥- فتاوى قاضي خان بهامش الفتاوى الهندية (العالمگيريه) . الامام فخر الدين حسن بن منصور الفرغاني . رحمه الله . المتوفى ٥٩٢ هـ . نوراني كتب خانه پشاور .
- ١٤٦- الفتاوى الهندية (العالمگيريه) . العلامة الامام الشيخ نظام و جماعة من علماء الهند . نوراني كتب خانه . پشاور .
- ١٤٧- فتح الباري شرح صحيح البخاري . الامام زين الدين عبد الرحمن بن احمد ابن رجب الحنبلي . رحمه الله تعالى . المتوفى ٤٩٥ هـ . دار الكتب العلمية . بيروت . الطبعة الاولى ١٣٢٤ هـ .
- ١٤٨- فتح الباري . حافظ احمد بن علي المعروف بابن حجر العسقلاني . رحمه الله تعالى . متوفى ٨٥٢ هـ . دار الفكر بيروت .
- ١٤٩- فتح الملهم شيخ الاسلام علامه شبير احمد عثمانى رحمه الله متوفى ١٣٣٩ هـ دار احياء التراث العربي بيروت
- ١٥٠- فتح القدير . (تفسير) الجامع بين فني الرواية و الدراية من علم التفسير . الامام محمد بن علي الشوكاني . رحمه الله تعالى . المتوفى ١٢٥٠ هـ . دار الكتب العلمية . بيروت .

- ٣١- فتح القدير ، امام كمال الدين محمد بن عبد الواحد المعروف بابن الهمام ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٥٨٦١ هـ ، مكتبة رشيدية ، كوثته -
- ٣٢- فتوح البلدان ، الامام الجغرافي احمد بن يحيى بن جابر بن داود البلاذري ، رحمه الله ، المتوفى ٥٢٤٩ هـ ، دار الكتب العلمية ، بيروت ، ١٢٠٢ هـ -
- ٣٣- الفردوس بمأثور الخطاب ، ابو شجاع شيرويه بن شهر دار بن شيرويه الديلمي الهمداني ، الملقب بـ الكيا ، رحمه الله ، المتوفى ٥٥٩ هـ ، دار الكتب العلمية ، بيروت -
- ٣٤- الفقه الحنفي وادلته ، الشيخ اسعد محمد سعيد الصاغري ، حفظه الله ، دار الكلم الطيب ، بيروت ، الطبعة الثالثة ، ١٣٢٢ هـ -
- ٣٥- فيض الباري ، امام العصر علامه انور شاه كشميري ، رحمه الله تعالى ، متوفى ١٣٥٢ هـ ، مطبعة دار المأمون ، الطبعة الاولى -
- ٣٦- فيض القدير شرح الجامع الصغير ، العلامة محمد عبد الرؤوف المناوي ، رحمه الله ، المتوفى ١٠٣١ هـ ، دار الكتب العلمية ، الطبعة الثالثة ، ١٣٢٤ هـ -
- ٣٧- القاموس الوحيد ، مولانا وحيد الزمان بن مسيح الزمان قاسمي كيراني ، رحمه الله تعالى ، متوفى ١٣١٥ هـ / ١٩٩٥ م ، ادارة اسلاميات لاهور - كراچي -
- ٣٨- قواعد في علوم الحديث العلامة المحقق ظفر احمد العثماني رحمه الله المتوفى ١٣٣٣ هـ ادارة القرآن كراچي -
- ٣٩- الكاشف ، شمس الدين ابو عبد الله محمد بن احمد بن عثمان ذهبي ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٤٢٨ هـ ، شركة دار القبلة / مؤسسة علوم القرآن ، طبع اول ١٣١٣ هـ -
- ٤٠- الكاشف عن حقائق السنن ، (شرح الطيبي) امام شرف الدين حسين بن محمد بن عبد الله الطيبي ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٤٢٣ هـ ، ادارة القرآن كراچي -
- ٤١- الكامل في التاريخ ، علامه ابو الحسن عز الدين علي بن محمد ابن الاثير الجوزي ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٣٠ هـ ، دار الكتب العربي بيروت -
- ٤٢- الكامل في ضعفاء الرجال ، امام حافظ ابو احمد عبد الله بن عدي جرجاني رحمه الله تعالى ، متوفى ٣٢٥ هـ ، دار الفكر ، بيروت -
- كتاب اخبار المدينة (النظر : اخبار المدينة)
- كتاب اخبار مكة (النظر : اخبار مكة)
- كتاب الاسماء البهية (النظر : الاسماء البهية) -
- ٤٣- كتاب الام (الامر) ، امام محمد بن ادريس الشافعي ، رحمه الله ، متوفى ٢٠٢ هـ ، دار المعرفة ، بيروت ، طبع ١٩٤٣ / ١٩٤٣ م -
- ٤٤- كتاب الاموال امام حميد بن مخلد بن قتيبة ابن زنجويه رحمه الله المتوفى ٢٥١ هـ مركز فيصل للبحوث
- ٤٥- كتاب الاموال ، الامام ابو حميد القاسم بن سلام الهروي الازدي ، رحمه الله ، المتوفى ٣٢٢ هـ ، دار الفكر ، بيروت ، ١٢٠٨ هـ -

- ١٤٦- كتاب الخراج، الامام ابو يوسف، يعقوب القاضى، رحمه الله، المتوفى ١٨٢ هـ.
- ١٤٧- كتاب الخراج، الامام يحيى بن آدم القرشى، رحمه الله، المتوفى ٢٠٢ هـ، المكتبة العلمية، لاهور، باكستان، الطبعة الاولى، ١٩٤٢ م.
- ١٤٨- كتاب السيرة الكبير الامام محمد بن الحسن الشيبانى رحمه الله المتوفى ١٨٩ هـ، دار الكتب العلمية بيروت.
- ١٤٩- كتاب السنة، الامام الحافظ ابو بكر احمد بن عمرو بن ابى حاتم الضحاك بن مخلد الشيبانى، رحمه الله، المتوفى ٢٨٤ هـ، دار الكتب العلمية، بيروت.
- ١٥٠- كتاب الضعفاء الكبير، ابو جعفر محمد بن عمر بن موسى بن حماد العقيلي المكي، رحمه الله تعالى، متوفى ٢٢٢ هـ، دار الكتب العلمية، بيروت.
- ١٥١- كتاب العين، الامام ابو عبد الرحمن خليل بن احمد الفراهيدى، رحمه الله، المتوفى ١٤٠ هـ، دارو مكتبة الهلال.
- ١٥٢- كتاب المبسوط، الامام شمس الائمة ابو بكر محمد بن ابى سهل السرخسى، رحمه الله، المتوفى ٢٨٢ هـ، دار المعرفة، بيروت، الطبعة الثالثة، ١٣٩٨ هـ.
- ١٥٣- كتاب المجروحين من المحدثين، الامام محمد بن حبان البستي، رحمه الله، المتوفى ٢٥٢ هـ، دار الصيغى، الرياض، الطبعة الاولى، ١٣٢٠ هـ.
- ١٥٤- كتاب المغازى، الامام محمد بن عمر الواقدي، رحمه الله، المتوفى ٢٠٤ هـ، مؤسسة الاعلى، بيروت.
- ١٥٥- كتاب الميسر في شرح مصابيح السنة، الامام ابو عبد الله الحسن التوريشقى، رحمه الله، المتوفى ٣١١ هـ، مكتبة مصطفى نزار الباز، مكة المكرمة، الطبعة الاولى ١٣٢٢ هـ.
- ١٥٦- الكتب الستة (موسوعة الحديث الشريف) بأشراف ومراجعة فضيلة الشيخ صالح بن عبد العزيز آل الشيخ، دار السلام، الرياض.
- ١٥٧- الكاشف عن حقائق غوامض التنزيل، الامام جابر الله محمود بن عمر الزمخشري، المتوفى ٥٢٨ هـ، دار الكتاب العربى، بيروت، لبنان.
- ١٥٨- كشف الاستار عن زوائد البزار على الكتب الستة، الحافظ نور الدين على بن ابى بكر الهيثقى ٨٠٤ هـ، بتحقيق الشيخ حبيب الرحمن الاعطى، مؤسسة الرسالة، الطبعة الثانية، ١٢٠٢ هـ.
- ١٥٩- كشف البارى، شيخ الحديث حضرت مولانا سليم الله خان صاحب مدظله، مكتبة فاروقيه، كراچي.
- ١٦٠- كشف الخفاء ومزيل الالباس، شيخ اسماعيل بن محمد عجلونى، رحمه الله، متوفى ١٢٣٢ هـ، دار احياء التراث العربى، بيروت.
- ١٦١- الكشف و البيان، المعروف ب (تفسير الثعلبى)، الامام العلامة ابو اسحاق احمد بن محمد بن ابراهيم، رحمه الله، المتوفى ٢٢٨ هـ، دار الكتب العلمية، بيروت، الطبعة الاولى، ١٣٢٥ هـ.
- ١٦٢- كنز العمال، علامه علاء الدين على المتقى بن حسام الدين الهندى، رحمه الله تعالى، متوفى ٩٤٥ هـ، مكتبة التراث الاسلامى، حلب.
- ١٦٣- الكوثر الجارى الى رياض احاديث البغارى، الامام احمد بن اسماعيل الكوراني الحنفى، رحمه الله، المتوفى ٨٤٣ هـ، دار احياء التراث العربى بيروت، الطبعة الاولى، ١٣٢٩ هـ.

- ١٩٥- الكواكب الدراري حضرت مولانا رشيد احمد گنگوہی رحمہ اللہ تعالیٰ . متوفی ١٣٣٣ھ . ادارة القرآن کراچی
الکواكب الدراري (دیکھئے . شرح الکرماني)
- ١٩٦- لامع الدراري حضرت مولانا رشيد احمد گنگوہی رحمہ اللہ تعالیٰ متوفی ١٣٣٣ھ . مکتبہ امدادیہ مکہ مکرمہ
- ١٩٧- لسان العرب . ابو الفضل جمال الدين محمد بن مكرم ابن منظور افريق مصری . رحمہ اللہ تعالیٰ .
متوفی ٨١١ھ . نشر ادب الجوزة . قم . ایران . ١٣٠٥ھ و دار صادر . بیروت .
- ١٩٨- لسان البیزان . الحافظ احمد بن علی المعروف بابن حجر العسقلانی . رحمہ اللہ . متوفی ٨٥٢ھ . بتحقيق
الشيخ عبد الفتاح . رحمہ اللہ . دار البشائر الاسلامیة . الطبع الاول . ١٣٣٣ھ .
- ١٩٩- المؤطا . الامام مالک بن انس . رحمہ اللہ تعالیٰ . المتوفی ١٨٩ھ . دار احیاء التراث العربی بیروت .
- ٢٠٠- المؤطا . الامام محمد الحسن الشیبانی رحمہ اللہ . المتوفی ١٨٩ھ . قدیمی کتب خانہ کراچی .
- ٢٠١- المتواری علی تراجم ابواب البخاری . علامہ ناصر الدین احمد بن محمد المعروف بابن المنیر
الاسکندرانی . رحمہ اللہ تعالیٰ . متوفی ٦٨٣ھ . مظہری کتب خانہ کراچی .
- ٢٠٢- مجمع بحار الانوار . علامہ محمد بن طاہر پٹنی . رحمہ اللہ تعالیٰ . متوفی ٩٨٢ھ . دائرة المعارف العثمانیہ
حیدرآباد . ١٣٩٥ھ .
- ٢٠٣- مجمع الزوائد امام نور الدین علی بن ابی بکری الہیثمی رحمہ اللہ تعالیٰ متوفی ٨٠٤ھ . دار الفکر . بیروت
- ٢٠٤- المجموع (شرح المہذب) . امام معی الدین ابو زکریا یحییٰ بنی شرف النووی رحمہ اللہ تعالیٰ . متوفی
٥٢٤ھ . شركة من علماء الازهر .
- ٢٠٥- مجموعہ رسائل ابن عابدین . العلامة المحقق السيد محمد امین آفندی الشہر بابن عابدین .
رحمہ اللہ . المتوفی ١٢٥٢ھ . مکتبہ عثمانیہ . کوئٹہ .
- ٢٠٦- المحل . علامہ ابو محمد علی احمد بن سعید بن حزم رحمہ اللہ تعالیٰ . متوفی ٢٥٢ھ . المکتب التجاری
بیروت / دارالکتب العلمیہ بیروت .
- ٢٠٧- المدونة الکبری . الامام مالک بن انس رحمہ اللہ . المتوفی ١٨٩ھ . دار صادر . بیروت .
- ٢٠٨- مرقاة المفاتیح (شرح مشکوة المصابیح) . علامہ نور الدین علی بن سلطان القاری رحمہ اللہ تعالیٰ .
متوفی ١٠١٣ھ . امدادیہ ملتان و دارالکتب العلمیہ بیروت .
- ٢٠٩- المستدرک علی الصحیحین . حافظ ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ الحاکم النیسابوری . رحمہ اللہ
تعالیٰ . متوفی ٢٠٥ھ . دار الفکر . بیروت .
- ٢١٠- مسند ابی داؤد الطیالسی . الامام المحدث سلیمان بن داؤد بن الجارود رحمہ اللہ . متوفی ٢٠٢ھ . دار
الکتب العلمیہ . بیروت . الطبعة الاولى ١٣٢٥ھ .
- مسند ابی یعلیٰ الوصلی . الامام شیخ الاسلام ابو یعلیٰ احمد بن علی الوصلی . رحمہ اللہ . المتوفی ٢٠٤ھ . دار
الکتب العلمیہ . بیروت . الطبعة الاولى . ١٣١٨ھ .
- ٢١١- مسند احمد . امام احمد بن حنبل . رحمہ اللہ تعالیٰ . متوفی ٢٤١ھ . المکتب الاسلامی . دار صادر . بیروت

- ٢١٣ - مسند اسحاق بن راهويه . الامام اسحاق بن ابراهيم بن مخلد بن راهويه الحنظلي . رحمه الله . المتوفى ١٢٣٨ هـ . مكتبة الايمان . المدينة المنورة . الطبعة الاولى ، ١٤١٣ هـ .
- ٢١٤ - مسند البزار (البحر الزخاں) . الامام ابو بكر احمد بن عمرو بن عبد الخالق البزار . رحمه الله . المتوفى ٢٤٢ هـ . مؤسسة علوم القرآن مكتبة العلوم والحكيم بيروت . والمدينة المنورة . ١٤٠٩ هـ . الطبعة الاولى
- ٢١٥ - مسند الحميدي . امام ابو بكر عبد الله بن الزبير الحميدي . رحمه الله . متوفى ٢٢٩ هـ . المكتبة السلفية . مدينة منورة .
- ٢١٦ - المسوى مع المصنف . الامام ولي الله الدهلوي . رحمه الله . المتوفى ١١٤٦ هـ . كتب خانة رحيمية . دہلی .
- ٢١٧ - مشارق الانوار على صحاح الآثار . القاضي ابو الفضل عياض بن موسى بن عياض اليحصبي البسقي المالكي . رحمه الله . المتوفى ٥٤٢ هـ . دار التراث .
- ٢١٨ - مشكاة المصابيح . شيخ ابو عبد الله ولي الدين خطيب محمد بن عبد الله . رحمه الله . متوفى ٥٣٤ هـ . بعد . قديس .
- ٢١٩ - المصنف لابن ابي شيبة . حافظ عبد الله بن محمد بن ابي شيبة المعروف بابن بكر بن ابي شيبة . رحمه الله تعالى . متوفى ٢٣٥ هـ . بتحقيق الشيخ محمد عوامة . حفظه الله . دار قرطبة . بيروت . الطبعة الاولى . ١٣٢٤ هـ
- ٢٢٠ - المصنف لعبد الرزاق . الامام عبد الرزاق بن همام صناعي . رحمه الله تعالى . متوفى ٢١١ هـ . مجلس على كراچی . ودار الكتب العلمية . بيروت .
- ٢٢١ - المطالب العالیة بزوائد المسانيد الثمانية . الحافظ ابن حجر العسقلاني . رحمه الله تعالى . المتوفى ٨٥٢ هـ . دار الباز . مكة المكرمة .
- ٢٢٢ - معالم السنن . الامام ابو سليمان حمد بن محمد الخطابي . رحمه الله تعالى . المتوفى ٢٨٨ هـ . مطبعة انصار السنة المحمدية . ١٣٣٨ م / ١٣٧٤ هـ .
- ٢٢٣ - المعجم الاوسط . الامام ابو القاسم سليمان بن احمد الطبراني . رحمه الله تعالى . المتوفى ٣٢٠ هـ . دار الحرمين . القاهرة . ١٤١٥ هـ .
- ٢٢٤ - معجم البلدان . علامه ابو عبد الله ياقوت حموي رومي . رحمه الله تعالى . متوفى ٣٢٦ هـ . دار احیاء التراث العربي . بيروت .
- ٢٢٥ - معجم الصحابة . الامام الحافظ ابو الحسين عبد الباقي بن قانع البغدادي . رحمه الله تعالى . المتوفى ٥٢١ هـ . مكتبة نزار مصطفى الباز . مكة المكرمة . الرياض . الطبعة الاولى . ١٤١٨ هـ .
- ٢٢٦ - المعجم الكبير امام سليمان بن احمد بن ايوب الطبراني رحمه الله تعالى متوفى ٣٢٠ هـ دار الفكر . بيروت
- ٢٢٧ - المعجم الفهرس لالفاظ الحديث النبوي . أ - وي - منسك . وي - پ - منسج . مطبعة بريل في مدينة ليدن ١٣٧٥ م .
- ٢٢٨ - معجم مقاييس اللغة . امام احمد بن فارس بن زكريا قزويني رازی . رحمه الله تعالى . متوفى ٣٧٥ هـ . دار الفكر . بيروت .
- ٢٢٩ - المعجم الوسيط . دكتور ابراهيم الس . دكتور عبد الحليم منتصر . عطية الصوالحي . محمد خلف الله احمد . مجمع اللغة العربية . دمشق .

- ٣٠- المعرفة و التاريخ . ابو يوسف يعقوب بن سفيان القسوى الفارسى . رحمه الله . المتوفى ٢٢٤ هـ . دار الكتب العلمية . بيروت . ١٤١٩ هـ .
- ٣١- معرفة السنن و الآثار . الامام ابو احمد بن الحسين البيهقي . رحمه الله . المتوفى ٢٥٨ هـ . دار الكتب العلمية . بيروت .
- ٣٢- معرفة الصحابة . الامام الحافظ ابو نعيم احمد بن عبد الله الاصبهاني . رحمه الله تعالى . المتوفى ٣٣٠ هـ . دار الكتب العلمية . بيروت . الطبعة الاولى . ١٣٣٢ هـ .
- مغازى الواقدي (انظر كتاب المغازى) .
- ٣٣- المغرب . ابو الفتح ناصر الدين مطرزي . رحمه الله تعالى . المتوفى ٦١٠ هـ . ادارة دعوة الاسلام . كراتشي .
- ٣٤- المغنى . امام موفق الدين ابو محمد عبد الله بن احمد بن قدامة . رحمه الله تعالى . متوفى ٥٣٠ هـ . دار الفكر . بيروت .
- مفاتيح الغيب (انظر التفسير الكبير) .
- ٣٥- المفردات في غريب القرآن . العلامة حسين بن محمد المعروف بالراغب الاصفهاني . رحمه الله . المتوفى ٥٠٢ هـ . قديمي كتب خانه . كراتشي .
- ٣٦- المفهم لما اشكل من تلخيص كتاب مسلم . الامام ابو العباس احمد بن عمر بن ابراهيم القرطبي . رحمه الله . المتوفى ٦٥٦ هـ . مقدمة فتح الباري (ديكهنه . هدى السارى) .
- ٣٧- مكمل اكمال الاكمال . الامام ابو عبد الله محمد بن محمد بن يوسف السنوسى . رحمه الله تعالى . المتوفى ٨٩٥ هـ . دار الكتب العلمية . بيروت .
- ٣٨- المتنظم في تاريخ الملوك و الامم . الامام ابو الفرج عبد الرحمن بن علي بن محمد ابن الجوزى . رحمه الله . المتوفى ٥٩٤ هـ . دار صادر . بيروت . ١٣٥٨ هـ . الطبعة الاولى .
- ٣٩- المنتقى شرح المؤطا . القاضى ابو الوليد سليمان بن خلف الباقى . رحمه الله . المتوفى ٢٣٣ هـ . دار الكتب العلمية . بيروت . الطبعة الاولى . ١٣٢٠ هـ .
- ٤٠- منهاج السنة النبوية . الامام الهمام ابو العباس احمد ابن تيمية الحراني . رحمه الله . المتوفى ٧٢٨ هـ . مؤسسة قرطبة . ١٣٠٦ . الطبعة الاولى .
- ٤١- موارد الظمان الى زوائد ابن حبان . الامام ابو الحسن علي بن ابى بكر الهيثمى . رحمه الله . المتوفى ٨٠٤ هـ . دار الكتب العلمية . بيروت .
- ٤٢- المواهب اللدنية المطبوع مع الشائيل المحمدية . الامام الشيخ ابراهيم بن محمد بن احمد الشافعى البيهجورى . رحمه الله تعالى . المتوفى ١٢٤٤ هـ . فاروقى كتب خانه . ملتان .
- ٤٣- الموضوعات . الامام ابو الفرج عبد الرحمن ابن الجوزى . رحمه الله تعالى . المتوفى ٥٩٤ هـ . قرآن محل . اردو بازار كراتشي . و دار الكتب العلمية . بيروت . الطبعة الثانية . ١٣٣٢ هـ .

- ٢٢٢- موسوعة الامام الشافعي (كتاب الام)، الامام المحدث الفقيه محمد بن ادريس الشافعي، رحمه الله تعالى، المتوفى ٢٠٤هـ، دار قتيبة، الطبعة الثانية، ١٣٢٢هـ.
- ٢٢٥- ميزان الاعتدال في نقد الرجال، حافظ شمس الدين محمد احمد بن عثمان ذهبي، رحمه الله تعالى، متوفى ٤٧٨هـ، دار احياء التراث العربية، مصر، ١٣٨٢هـ.
- ٢٢٦- نسيم الرياض في شرح شفاء القاضي عياض، الامام شهاب الدين احمد بن محمد بن عمر الخفاجي، رحمه الله تعالى، المتوفى ١٠٣٩هـ، دار الكتب العلمية بيروت، الطبعة الاولى، ١٣٣١هـ.
- ٢٢٧- نصب الراية في تخريج احاديث الهداية، الحافظ جمال الدين عبد الله بن يوسف الزيلعي، رحمه الله تعالى، المتوفى ٤٧٣هـ، مؤسسة الريان، بيروت/ دار القبلة للثقافة الاسلامية، جدة، الطبعة الاولى، ١٣١٨هـ.
- ٢٢٨- النكت الطرائق على الاطراف، الامام الحافظ احمد بن علي بن حجر العسقلاني، رحمه الله تعالى، متوفى ٨٥٢هـ، المكتب الاسلامي، بيروت.
- ٢٢٩- النهاية في غريب الحديث و الاثر، علامه مجد الدين ابو السعادات المبارك بن محمد ابن الاثير، رحمه الله تعالى، متوفى ٦٠٦هـ، دار احياء التراث العربي بيروت.
- ٢٣٠- الوابل الصيب في الكلم الطيب، ابو عبد الله محمد بن ابي بكر الزرعي الدمشقي، المعروف بابن القيم، رحمه الله تعالى، المتوفى ٤٥١هـ، دار الكتاب العربي، بيروت الطبعة الاولى، ١٣٠٥هـ.
- ٢٣١- وفيات الاعيان، قاضي شمس الدين احمد بن محمد المعروف بابن خلكان، رحمه الله تعالى، متوفى ٦٨١هـ، دار صادر، بيروت.
- ٢٣٢- الهداية، برهان الدين ابو الحسن علي بن ابي بكر المرغيناني، رحمه الله تعالى، متوفى ٥٥٣هـ، مكتبة شركت عليه، ملتان، ومكتبة البشري، كراتشي، الطبعة الاولى، ١٣٢٨هـ.
- ٢٣٣- هدى الساري (مقدمة فتح الباري)، حافظ ابن حجر عسقلاني، رحمه الله تعالى، متوفى ٥٥٣هـ، دار السلام، الرياض، الطبعة الاولى، ١٣٣١هـ.